धम्मगिरि-पालि-गन्थमाला

[देवनागरी]

दीघनिकाये

लीनत्थप्पकासना

पठमो भागो

सीलक्खन्धवग्गटीका

गन्थकारो

भदन्तायरियो धम्मपालत्थेरो

विपश्यना विशोधन विन्यास

इगतपुरी

१९९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मगिरि-पालि-गन्थमाला

[देवनागरी]

दीघनिकाये

लीनत्थप्पकासना

पठमो भागो

सीलक्खन्धवग्गटीका

गन्थकारो

भदन्ताचरियो धम्मपालत्थेरो

विपश्यना विशोधन विन्यास

इगतपुरी

१९९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मगिरि-पालि-गन्थमाला –७
[देवनागरी]

दीघनिकाय एवं तत्संबंधित पालि साहित्य ग्यारह ग्रंथों में प्रकाशित किया गया है।

प्रथम आवृत्तिः १९९८
ताइवान में मुद्रित, १२०० प्रतियां

मूल्य : अनमोल
यह ग्रंथ निःशुल्क वितरण हेतु है, विक्रयार्थ नहीं।

सर्वाधिकार मुक्त। पुनर्मुद्रण का स्वागत है।
इस ग्रंथ के किसी भी अंश के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति आवश्यक नहीं।

ISBN 81-7414-056-5

यह ग्रंथ छट्ठ संगायन संस्करण के पालि ग्रंथ से लिप्यंतरित है।
इस ग्रंथ को ***विपश्यना विशोधन विन्यास*** *के भारत एवं म्यंमा स्थित पालि विद्वानों ने देवनागरी में लिप्यंतरित कर संपादित किया। कंप्यूटर में निवेशन और पेज-सेटिंग का कार्य* ***विपश्यना विशोधन विन्यास,*** *भारत में हुआ।*

प्रकाशक :
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी, महाराष्ट्र – ४२२ ४०३, भारत
फोन : (९१-२५५३) ८४०७६, ८४०८६ फैक्स : (९१-२५५३) ८४१७६

सह-प्रकाशक, मुद्रक एवं दायक :
दि कारपोरेट बॉडी ऑफ दि बुद्ध एज्युकेशनल फाउंडेशन
११ वीं मंजिल, ५५ हंग चाउ एस. रोड, सेक्टर १, ताइपे, ताइवान आर.ओ.सी.
फोन : (८८६-२)२३९५-११९८, फैक्स : (८८६-२)२३९१-३४१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Dhammagiri-Pāli-Ganthamālā

[Devanāgarī]

Dīghanikāye

Līnatthappakāsanā

Paṭhamo Bhāgo

Sīlakkhandhavagga-Ṭīkā

Ganthakāro
Bhadantācariyo Dhammapālatthero

Devanāgarī edition of
the Pāli text of the Chaṭṭha Saṅgāyana

Published by
Vipassana Research Institute
Dhammagiri, Igatpuri -422403, India

Co-published, Printed and Donated by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow S. Rd. Sec 1, Taipei, Taiwan R.O.C.
Tel: (886-2)23951198, Fax: (886-2)23913415

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Dhammagiri-Pāli-Ganthamālā—7
[Devanāgarī]

The Dīgha Nikāya and related literature is being published together in eleven volumes.

First Edition: 1998
Printed in Taiwan, 1200 copies

Price: Priceless
This set of books is for free distribution, not to be sold.

No Copyright—Reproduction Welcome.
All parts of this set of books may be freely reproduced without prior permission.

ISBN 81-7414-056-5

This volume is prepared from the Pāli text of the Chaṭṭha Saṅgāyana edition. Typing and typesetting on computers have been done by ***Vipassana Research Institute****, India. MS was transcribed into Devanāgarī and thoroughly examined by the scholars of* ***Vipassana Research Institute*** *in Myanmar and India.*

Publisher:
Vipassana Research Institute
Dhammagiri, Igatpuri, Maharashtra - 422 403, India
Tel: (91-2553) 84076, 84086, 84302 Fax: (91-2553) 84176

Co-publisher, Printer and Donor:
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow S. Rd. Sec 1, Taipei, Taiwan R.O.C.
Tel: (886-2)23951198, Fax: 886-23913415

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसय-सूची

प्रस्तुत ग्रंथ
Present Text
संकेत-सूची

गन्थारम्भकथावण्णना १
निदानकथावण्णना १८
पठममहासङ्गीतिकथावण्णना १९
१. ब्रह्मजालसुत्तवण्णना ३२
परिब्बाजककथावण्णना ३२
चूळसीलवण्णना ५६
मज्झिमसीलवण्णना १११
महासीलवण्णना ११५
पुब्बन्तकप्पिकसस्सतवादवण्णना ११७
एकच्चसस्सतवादवण्णना १३४
अन्तानन्तवादवण्णना १४१
अमराविक्खेपवादवण्णना १४३
अधिच्चसमुप्पन्नवादवण्णना १४६
अपरन्तकप्पिकवादवण्णना १५०
सञ्ञीवादवण्णना १५०
असञ्ञी नेवसञ्ञीनासञ्ञीवाद-वण्णना १५२
उच्छेदवादवण्णना १५३
दिट्ठधम्मनिब्बानवादवण्णना १५५
परितस्सितविप्फन्दितवारवण्णना १५९
फस्सपच्चयवारवण्णना १६०
नेतंठानंविज्जतिवारवण्णना १६०
दिट्ठिगतिकाधिट्ठानवट्टकथावण्णना १६१
विवट्टकथादिवण्णना १६४
पकरणनयवण्णना १६६
सोळसहारवण्णना १६८
देसनाहारवण्णना १६८
विचयहारवण्णना १६९
युत्तिहारवण्णना १६९
पदट्ठानहारवण्णना १७०
लक्खणहारवण्णना १७१
चतुब्यूहहारवण्णना १७१
आवत्तहारवण्णना १७४
विभत्तिहारवण्णना १७५
परिवत्तहारवण्णना १७६
वेवचनहारवण्णना १७६
पञ्ञत्तिहारवण्णना १७७
ओतरणहारवण्णना १७८
सोधनहारवण्णना १७९
अधिट्ठानहारवण्णना १७९
परिक्खारहारवण्णना १८०
समारोपनहारवण्णना १८०
पञ्चविधनयवण्णना १८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नन्दियावट्टनयवण्णना	१८१
तिपुक्खलनयवण्णना	१८१
सीहविक्कीळितनयववण्णना	१८२
दिसालोचनअङ्कुसनयद्वयवण्णना	१८३
सासनपट्ठानवण्णना	१८३
२. सामञ्ञफलसुत्तवण्णना	**१८४**
राजामच्चकथावण्णना	१८४
कोमारभच्चजीवककथावण्णना	१९०
सामञ्ञफलपुच्छावण्णना	१९२
पूरणकस्सपवादवण्णना	१९५
मक्खलिगोसालवादवण्णना	१९७
अजितकेसकम्बलवादवण्णना	२००
पकुधकच्चायनवादवण्णना	२०२
निगण्ठनाटपुत्तवादवण्णना	२०३
सञ्चयबेलट्ठपुत्तवादवण्णना	२०४
पठमसन्दिट्ठिकसामञ्ञफलवण्णना	२०४
दुतियसन्दिट्ठिकसामञ्ञफलवण्णना	२०५
पणीततरसामञ्ञफलवण्णना	२०६
चूळमज्झिममहासीलवण्णना	२१४
इन्द्रियसंवरकथावण्णना	२१४
सतिसम्पजञ्ञकथावण्णना	२१५
सन्तोसकथावण्णना	२२५
नीवरणप्पहानकथावण्णना	२२६
पठमज्झानकथावण्णना	२३२
दुतियज्झानकथावण्णना	२३३
ततियज्झानकथावण्णना	२३३
चतुत्थज्झानकथावण्णना	२३४
विपस्सनाञाणकथावण्णना	२३५
मनोमयिद्धिञाणकथावण्णना	२३६
इद्धिविधञाणादिककथावण्णना	२३७
आसवक्खयञाणकथावण्णना	२३८
अजातसत्तुउपासकत्तपटिवेदनाकथा-वण्णना	२४१
सरणगमनकथावण्णना	२४५
३. अम्बट्ठसुत्तवण्णना	**२५३**
अद्धानगमनवण्णना	२५३
पोक्खरसातिवत्थुवण्णना	२५५
अम्बट्ठमाणवकथावण्णना	२५७
पठमइब्भवादवण्णना	२६२
दुतियइब्भवादवण्णना	२६४
ततियइब्भवादवण्णना	२६४
दासिपुत्तवादवण्णना	२६५
अम्बट्ठवंसकथावण्णना	२६८
खत्तियसेट्ठभाववण्णना	२६९
विज्जाचरणकथावण्णना	२७०
चतुअपायमुखकथावण्णना	२७१
पुब्बकइसिभावानुयोगवण्णना	२७२
द्वेलक्खणदस्सनवण्णना	२७४
पोक्खरसातिबुद्धूपसङ्कमनवण्णना	२७५
पोक्खरसातिउपासकत्तपटिवेदनाकथा-वण्णना	२७६
४. सोणदण्डसुत्तवण्णना	**२७७**
सोणदण्डगुणकथावण्णना	२७७
बुद्धगुणकथावण्णना	२८०
सोणदण्डपरिवितक्कवण्णना	२८२
ब्राह्मणपञ्ञत्तिवण्णना	२८२
सीलपञ्ञाकथावण्णना	२८२
सोणदण्डउपासकत्तपटिवेदनाकथा-वण्णना	२८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. कूटदन्तसुत्तवण्णना २८५
महाविजितराजयञ्ञकथावण्णना २८५
चतुपरिक्खारवण्णना २८७
अट्ठपरिक्खारवण्णना २८८
चतुपरिक्खारादिवण्णना २८९
निच्चदानअनुकुलयञ्ञवण्णना २९२
कूटदन्तउपासकत्तपटिवेदनाकथा-
वण्णना २९७
६. महालिसुत्तवण्णना २९८
ब्राह्मणदूतवत्थुवण्णना २९८
ओट्ठद्धलिच्छवीवत्थुवण्णना २९८
एकंसभावितसमाधिवण्णना ३००
चतुअरियफलवण्णना ३०१
अरियअट्ठङ्गिकमग्गवण्णना ३०१
द्वेपब्बजितवत्थुवण्णना ३०३
७. जालियसुत्तवण्णना ३०५
द्वेपब्बजितवत्थुवण्णना ३०५
८. महासीहनादसुत्तवण्णना ३०८
अचेलकस्सपवत्थुवण्णना ३०८
समनुयुञ्जापनकथावण्णना ३११
अरियअट्ठङ्गिकमग्गवण्णना ३१२
तपोपक्कमकथावण्णना ३१३
तपोपक्कमनिरत्थकथावण्णना ३१५
सीलसमाधिपञ्ञासम्पदावण्णना ३१५
सीहनादकथावण्णना ३१६
तित्थियपरिवासकथावण्णना ३१८
९. पोट्ठपादसुत्तवण्णना ३२०
पोट्ठपादपरिब्बाजकवत्थुवण्णना ३२०
अभिसञ्ञानिरोधकथावण्णना ३२२
अहेतुकसञ्ञुप्पादनिरोधकथावण्णना ३२४
सञ्ञाअत्तकथावण्णना ३३०
चित्तहत्थिसारिपुत्तपोट्ठपादवत्थुवण्णना ३३३
एकंसिकधम्मवण्णना ३३४
तयोअत्तपटिलाभवण्णना ३३५
१०. सुभसुत्तवण्णना ३४०
सुभमाणवकवत्थुवण्णना ३४०
सीलक्खन्धवण्णना ३४२
समाधिक्खन्धवण्णना ३४२
११. केवट्टसुत्तवण्णना ३४४
केवट्टगहपतिपुत्तवत्थुवण्णना ३४४
इद्धिपाटिहारियवण्णना ३४५
आदेसनापाटिहारियवण्णना ३४५
अनुसासनीपाटिहारियवण्णना ३४५
भूतनिरोधेसकवत्थुवण्णना ३४६
१२. लोहिच्चसुत्तवण्णना ३५०
लोहिच्चब्राह्मणवत्थुवण्णना ३५०
लोहिच्चब्राह्मणानुयोगवण्णना ३५१
तयोचोदनारहवण्णना ३५१
नचोदनारहसत्थुवण्णना ३५२
१३. तेविज्जसुत्तवण्णना ३५४
मग्गामग्गकथावण्णना ३५४
अचिरवतीनदीउपमाकथावण्णना ३५६
संसन्दनकथावण्णना ३५८
ब्रह्मलोकमग्गदेसनावण्णना ३५९
सद्दानुक्कमणिका [१]
गाथानुक्कमणिका [४३]
संदर्भ-सूची [४५]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो !

चिरस्थायी हो सद्धर्म !

द्वेमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे द्वे? सुनिक्खित्तञ्च पदब्यञ्जनं अत्थो च सुनीतो। सुनिक्खित्तस्स, भिक्खवे, पदब्यञ्जनस्स अत्थोपि सुनयो होति।

अ० नि० १.२.२१, अधिकरणवग्ग

भिक्षुओ, दो बातें हैं जो कि सद्धर्म के कायम रहने का, उसके विकृत न होने का, उसके अंतर्धान न होने का कारण बनती हैं। कौनसी दो बातें ? धर्म वाणी सुव्यवस्थित, सुरक्षित रखी जाय और उसके सही, स्वाभाविक, मौलिक अर्थ कायम रखे जांय। भिक्षुओ, सुव्यवस्थित, सुरक्षित वाणी से अर्थ भी स्पष्ट, सही कायम रहते हैं।

...ये वो मया धम्मा अभिञ्ञा देसिता, तत्थ सब्बेहेव सङ्गम्म समागम्म अत्थेन अत्थं ब्यञ्जनेन ब्यञ्जनं सङ्गायितब्बं न विवदितब्बं, यथयिदं ब्रह्मचरियं अद्धनियं अस्स चिरट्ठितिकं...।

दी० नि० ३.१७७, पासादिकसुत्त

...जिन धर्मों को तुम्हारे लिए मैंने स्वयं अभिज्ञात करके उपदेशित किया है, उसे अर्थ और ब्यंजन सहित सब मिल-जुल कर, बिना विवाद किये संगायन करो, जिससे कि यह धर्माचरण चिर स्थायी हो...।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत ग्रंथ

दीघनिकाय साधना की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह भगवान बुद्ध के चौंतीस दीर्घाकार उपदेशों का संग्रह है जो कि तीन खंडों में विभक्त है– **सीलक्खन्धवग्ग, महावग्ग, पाथिकवग्ग।** इन उपदेशों में शील, समाधि तथा प्रज्ञा पर सरल ढंग से प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। व्यावहारिक जीवन में आगत वस्तुओं एवं घटनाओं से जुड़ी हुई उपमाओं के सहारे इसमें साधना के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डाला गया है।

बुद्ध की देशना सरल तथा हृदयस्पर्शी हुआ करती थी। उनकी यह शैली व्याख्यात्मिका थी पर कभी-कभी धर्म को सुबोध बनाने के लिये 'चूळनिद्देस' एवं 'महानिद्देस' जैसी अट्ठकथाओं का उन्होंने सृजन किया। प्रथम धर्मसंगीति में बुद्धवचन के संगायन के साथ इनका भी संगायन हुआ। तदनंतर उनके अन्य वचनों पर भी अट्ठकथाएं तैयार हुईं। जब स्थविर महेन्द्र बुद्धवचन को लेकर श्रीलंका गये, तो वे अपने साथ इन अट्ठकथाओं को भी ले गये। श्रीलंकावासियों ने इन अट्ठकथाओं को सिंहली भाषा में सुरक्षित रखा। पांचवी सदी के मध्य में बुद्धघोष ने उनका पालि में पुनः परिवर्तन किया।

दीघनिकाय के अर्थों को प्रकाश में लाते हुए बुद्धघोष ने **'सुमङ्गलविलासिनी'** नामक दीघनिकाय-अट्ठकथा का प्रणयन किया। यह भी तीन भागों में विभक्त है।

इन अट्ठकथाओं की पुनः व्याख्या करते हुए भदंत आचार्य धम्मपाल थेर ने **'लीनत्थप्पकासना'** नामक दीघनिकाय अट्ठकथा-टीका तीन भागों में लिखी। इसके प्रथम भाग **सीलक्खन्धवग्गटीका** का मुद्रित संस्करण आपके सम्मुख प्रस्तुत है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन विपश्यी साधकों और विशोधकों के लिए अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

निदेशक,
विपश्यना विशोधन विन्यास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Dīghanikāye

Līnatthappakāsanā

Paṭhamo Bhāgo

Sīlakkhandhavagga-Ṭīkā

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ciraṃ Tiṭṭhatu Saddhammo!

May the Truth-based Dhamma Endure for A Long Time !

"Dveme, Bhikkhave, Dhammā saddhammassa ṭhitiyā asammosāya anantaradhānāya saṃvattanti. Katame dve? Sunikkhittañca padabyañjanaṃ attho ca sunīto. Sunikkhittassa, Bhikkhave, padabyañjanassa atthopi sunayo hoti."

A. N. 1. 2. 21, Adhikaraṇavagga

"There are two things, O monks, which make the Truth-based Dhamma endure for a long time, without any distortion and without (fear of) eclipse. Which two? Proper placement of words and their natural interpretation. Words properly placed help also in their natural interpretation."

...ye vo mayā dhammā abhiññā desitā, tattha sabbeheva saṅgamma samāgamma atthena atthaṃ byañjanena byañjanaṃ saṅgāyitabbaṃ na vivaditabbaṃ, yathayidaṃ brahmacariyaṃ addhaniyaṃ assa ciraṭṭhitikaṃ...

D. N. 3.177, Pāsādikasutta

...the dhammas (truths) which I have taught to you after realizing them with my super-knowledge, should be recited by all, in concert and without dissension, in a uniform version collating meaning with meaning and wording with wording. In this way, this teaching with pure practice will last long and endure for a long time...

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Present Text

Līnatthappakāsanā Vol. I (Sīlakkhandhavagga-Ṭīkā)

The *Dīgha Nikāya* is an important collection from the perspective of meditation practice. It contains thirty-four important long discourses of the Buddha, divided into three sections-the *Sīlakkhandhavagga, Mahāvagga* and *Pāthikavagga*. In these discourses a lot of material related to *sīla, samādhi* and *pañña* is available. Various aspects of practice have been elucidated by means of similes drawn from familiar objects and the everyday life of the times.

The Buddha's teachings were simple and endearing. His distinctive style was self-explanatory but, still, in order to make the Dhamma all the more lucid, he introduced the use of *aṭṭhakathā* (commentaries), such as the *Cūḷaniddesa* and the *Mahāniddesa*. These were recited, along with the discourses of the Buddha, at the first Dhamma Council. In time the other *aṭṭhakathā* commenting on all his discourses came into being.

When Ven. Mahinda conveyed the words of the Buddha to Sri Lanka he also took the *aṭṭhakathā* with him. The Sinhalese monks preserved these *aṭṭhakathā* in their own language. Later on, when they had been lost in India, Ven. Buddhaghosa was able to translate them back to Pāli, during the middle of the fifth century A.D. He then compiled the commentary on the *Dīgha Nikāya* in three volumes to help clarify the meaning of the *Dīgha Nikāya*. To furthur explain and clarify some of the points, Ven. Dhammapāla wrote a sub-commentary *(ṭīkā)* on Buddhaghosa's work known as *Līnatthappakāsanā* in three volumes.

We sincerely hope that this publication *Līnatthappakāsanā* volume one: *Sīlakkhandhavagga-Ṭīkā* will provide immense benefit to practitioners of Vipassana as well as research scholars.

Director,
Vipassana Research Institute,
Igatpuri, India.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The Pāli alphabets in Devanāgarī and Roman characters:

Vowels:

अ	a	आ	ā	इ	i	ई	ī	उ	u	ऊ	ū

ए	e	ओ	o

Consonants with Vowel अ (a):

क	ka	ख	kha	ग	ga	घ	gha	ङ	ṅa
च	ca	छ	cha	ज	ja	झ	jha	ञ	ña
ट	ṭa	ठ	ṭha	ड	ḍa	ढ	ḍha	ण	ṇa
त	ta	थ	tha	द	da	ध	dha	न	na
प	pa	फ	pha	ब	ba	भ	bha	म	ma

य	ya	र	ra	ल	la	व	va	स	sa	ह	ha	ळ	ḷa

One nasal sound (niggahīta): अं aṃ

Vowels in combination with consonants "k" and "kh": (exceptions: रु ru, रू rū)

क	ka	का	kā	कि	ki	की	kī	कु	ku	कू	kū	के	ke	को	ko
ख	kha	खा	khā	खि	khi	खी	khī	खु	khu	खू	khū	खे	khe	खो	kho

Conjunct-consonants:

क्क	kka	क्ख	kkha	क्य	kya	क्र	kra	क्ल	kla	क्व	kva
ख्य	khya	ख्व	khva	ग्ग	gga	ग्घ	ggha	ग्य	gya	ग्र	gra
ग्व	gva	ङ्क	ṅka	ङ्ख	ṅkha	ङ्ख्य	ṅkhya	ङ्ग	ṅga	ङ्घ	ṅgha
च्च	cca	च्छ	ccha	ज्ज	jja	ज्झ	jjha	ञ्ञ	ñña	ञ्ह	ñha
ञ्च	ñca	ञ्छ	ñcha	ञ्ज	ñja	ञ्झ	ñjha	ट्ट	ṭṭa	ट्ठ	ṭṭha
ड्ड	ḍḍa	ड्ढ	ḍḍha	ण्ट	ṇṭa	ण्ठ	ṇṭha	ण्ड	ṇḍa	ण्ण	ṇṇa
ण्य	ṇya	ण्ह	ṇha	त्त	tta	त्थ	ttha	त्य	tya	त्र	tra
त्व	tva	द्द	dda	द्ध	ddha	द्म	dma	द्य	dya	द्र	dra
द्व	dva	ध्य	dhya	ध्व	dhva	न्त	nta	न्त्व	ntva	न्थ	ntha
न्द	nda	न्द्र	ndra	न्ध	ndha	न्न	nna	न्य	nya	न्व	nva
न्ह	nha	प्प	ppa	प्फ	ppha	प्य	pya	प्ल	pla	ब्ब	bba
ब्भ	bbha	ब्य	bya	ब्र	bra	म्प	mpa	म्फ	mpha	म्ब	mba
म्भ	mbha	म्म	mma	म्य	mya	म्ह	mha	य्य	yya	व्य	vya
य्ह	yha	ल्ल	lla	ल्य	lya	ल्ह	lha	व्ह	vha	स्त	sta
स्त्र	stra	स्न	sna	स्य	sya	स्स	ssa	स्म	sma	स्व	sva
ह्म	hma	ह्य	hya	ह्व	hva	ळ्ह	ḷha				

१ 1	२ 2	३ 3	४ 4	५ 5	६ 6	७ 7	८ 8	९ 9	० 0

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Notes on the pronunciation of Pāli

Pāli was a dialect of northern India in the time of Gotama the Buddha. The earliest known script in which it was written was the Brāhmī script of the third century B.C. After that it was preserved in the scripts of the various countries where Pāli was maintained. In Roman script, the following set of diacritical marks has been established to indicate the proper pronunciation.

The alphabet consists of forty-one characters: eight vowels, thirty-two consonants and one nasal sound (niggahīta).

Vowels (a line over a vowel indicates that it is a long vowel):

a - as the "a" in about	ā - as the "a" in father
i - as the "i" in mint	ī - as the "ee" in see
u - as the "u" in put	ū - as the "oo" in cool

e is pronounced as the "ay" in day, except before double consonants when it is pronounced as the "e" in bed: *deva, mettā;*
o is pronounced as the "o" in no, except before double consonants when it is pronounced slightly shorter: *loka, phoṭṭhabba.*

Consonants are pronounced mostly as in English.

g - as the "g" in get
c - soft like the "ch" in church
v - a very soft -v- or -w-

All aspirated consonants are pronounced with an audible expulsion of breath following the normal unaspirated sound.

th - not as in 'three'; rather 't' followed by 'h' (outbreath)
ph - not as in 'photo'; rather 'p' followed by 'h' (outbreath)

The retroflex consonants: ṭ, ṭh, ḍ, ḍh, ṇ are pronounced with the tip of the tongueturned back; and ḷ is pronounced with the tongue retroflexed, almost a combined 'rl' sound.

The dental consonants: t, th, d, dh, n are pronounced with the tongue touching the upper front teeth.

The nasal sounds:

ṅ - guttural nasal, like -ng- as in singer
ñ - as in Spanish señor
ṇ - with tongue retroflexed
ṃ - as in hung, ring

Double consonants are very frequent in Pāli and must be strictly pronounced as long consonants, thus -nn- is like the English 'nn' in "unnecessary".

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत-सूची

अ० नि० = अङ्गुत्तरनिकाय
अट्ठ० = अट्ठकथा
अनु टी० = अनुटीका
अप० = अपदान
अभि० टी० = अभिनवटीका
इतिवु० = इतिवुत्तक
उदा० = उदान
कङ्खा० टी० = कङ्खावितरणी टीका
कथाव०=कथावत्थु
खु० नि० = खुद्दकनिकाय
खु० पा० = खुद्दकपाठ
चरिया० पि० = चरियापिटक
चूळनि० = चूळनिद्देस
चूळव० = चूळवग्ग
जा० = जातक
टी० = टीका
थेरगा०=थेरगाथा
थेरीगा०=थेरीगाथा
दी० नि० = दीघनिकाय
ध० प० = धम्मपद
ध० स० = धम्मसङ्गणी
धातु०=धातुकथा
नेत्ति० = नेत्तिपकरण
पटि० म० = पटिसम्भिदामग्ग
पट्ठा० = पट्ठान
परि० = परिवार
पाचि० = पाचित्तिय
परा० = पाराजिक
पु० टी० = पुराणटीका
पु० प० = पुग्गलपञ्ञत्ति
पे० व० = पेतवत्थु
पेटको० = पेटकोपदेस
बु० वं० = बुद्धवंस
म० नि० = मज्झिमनिकाय
महाव० = महावग्ग
महानि० = महानिद्देस
मि० प० = मिलिन्दपञ्ह
मूल टी० = मूलटीका
यम० = यमक
वि० व० = विमानवत्थु
वि० वि० टी० = विमतिविनोदनी टीका
वि० सङ्ग० अट्ठ० = विनयसङ्गह अट्ठकथा
विनय वि० टी० = विनयविनिच्छय टीका
विभं० = विभङ्ग
विसुद्धि० = विसुद्धिमग्ग
सं० नि० = संयुत्तनिकाय
सारत्थ० टी० = सारत्थदीपनी टीका
सु० नि० = सुत्तनिपात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीघनिकाये

लीनत्थप्पकासना

पठमो भागो

सीलक्खन्धवग्गटीका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।। नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।।

दीघनिकाये

सीलक्खन्धवग्गटीका

गन्थारम्भकथावण्णना

संवण्णनारम्भे रतनत्तयवन्दना संवण्णेतब्बस्स धम्मस्स पभवनिस्सयविसुद्धिपटिवेदनत्थं, तं पन धम्मसंवण्णनासु विञ्ञूनं बहुमानुप्पादनत्थं, तं सम्मदेव तेसं उग्गहधारणादिक्कमलद्धब्बाय सम्मापटिपत्तिया सब्बहितसुखनिप्फादनत्थं। अथ वा मङ्गलभावतो, सब्बकिरियासु पुब्बकिच्चभावतो, पण्डितेहि सम्माचरितभावतो, आयतिं परेसं दिट्ठानुगतिआपज्जनतो च संवण्णनायं रतनत्तयपणामकिरिया। अथ वा रतनत्तयपणामकरणं पूजनीयपूजापुञ्ञविसेसनिब्बत्तनत्थं, तं अत्तनो यथालद्धसम्पत्तिनिमित्तकस्स कम्मस्स बलानुप्पादनत्थं, अन्तरा च तस्स असङ्कोचनत्थं, तदुभयं अनन्तरायेन अट्ठकथाय परिसमापनत्थं। इदमेव च पयोजनं आचरियेन इधाधिप्पेतं। तथा हि वक्खति– "इति मे पसन्नमतिनो...पे०... तस्सानुभावेना"ति। वत्थुत्तयपूजा हि निरतिसयपुञ्ञक्खेत्तसम्बुद्धिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपरिमेय्यप्पभावो पुञ्ञातिसयोति बहुविधन्तरायेपि लोकसन्निवासे अन्तरायनिबन्धनसकलसंकिलेसविद्धंसनाय पहोति, भयादिउपद्दवञ्च निवारेति। यथाह –

“पूजारहे पूजयतो, बुद्धे यदि व सावके”तिआदि (ध० प० १.१९५; अप० १.१०.१), तथा –

“ये भिक्खवे बुद्धे पसन्ना, अग्गे ते पसन्ना। अग्गे खो पन पसन्नानं अग्गो विपाको होती”तिआदि (अ० नि० १.४.३४; इतिवु० ९०)।

“बुद्धोति कित्तयन्तस्स, काये भवति या पीति।
वरमेव हि सा पीति, कसिणेनपि जम्बुदीपस्स।।
धम्मोति...पे०... सङ्घोति...पे०... दीपस्सा”ति।। (दी० नि० अट्ठ० १.६)

तथा –

“यस्मिं, महानाम, समये अरियसावको तथागतं अनुस्सरति, नेवस्स तस्मिं समये रागपरियुट्ठितं चित्तं होति, न दोस...पे०... न मोहपरियुट्ठितं चित्तं होती”तिआदि (अ० नि० २.६.१०; ३.११.११),

“अरञ्ञे रुक्खमूले वा...पे०...
भयं वा छम्भितत्तं वा,
लोमहंसो न हेस्सती”ति।। (सं० नि० १.१.२४९) च

तत्थ यस्स वत्थुत्तयस्स वन्दनं कत्तुकामो, तस्स गुणातिसययोगसन्दस्सनत्थं **“करुणासीतलहदय”**न्तिआदिना गाथत्तयमाह। गुणातिसययोगेन हि वन्दनारहभावो, वन्दनारहे च कता वन्दना यथाधिप्पेतप्पयोजनं साधेतीति। तत्थ यस्सा देसनाय संवण्णनं कत्तुकामो, सा न विनयदेसना विय करुणाप्पधाना, नापि अभिधम्मदेसना विय पञ्ञाप्पधाना, अथ खो करुणापञ्ञाप्पधानाति तदुभयप्पधानमेव ताव सम्मासम्बुद्धस्स थोमनं कातुं तंमूलकत्ता सेसरतनानं “करुणासीतलहदय”न्तिआदि वुत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ किरतीति करुणा, परदुक्खं विक्खिपति, अपनेतीति अत्थो। अथ वा किणातीति करुणा, परदुक्खे सति कारुणिकं हिंसति, विबाधतीति अत्थो, परदुक्खे सति साधूनं कम्पनं हदयखेदं करोतीति वा करुणा। अथ वा कमिति सुखं, तं रुन्धतीति करुणा। एसा हि परदुक्खापनयनकामतालक्खणा, अत्तसुखनिरपेक्खताय कारुणिकानं सुखं रुन्धति विबन्धतीति। करुणाय सीतलं करुणासीतलं, करुणासीतलं हदयं अस्साति करुणासीतलहदयो, तं **करुणासीतलहदयं**। तत्थ किञ्चापि परेसं हितोपसंहारसुखादिअपरिहानिच्छनसभावताय, ब्यापादारतीनं उजुविपच्चनीकताय च सत्तसन्तानगतसन्तापविच्छेदनाकारप्पवत्तिया मेत्तामुदितानम्पि चित्तसीतलभावकारणता उपलब्भति, तथापि दुक्खापनयनाकारप्पवत्तिया परूपतापासहनरसा अविहिंसाभूता करुणा विसेसेन भगवतो चित्तस्स चित्तपस्सद्धि विय सीतीभावनिमित्तन्ति वुत्तं "**करुणासीतलहदय**"न्ति। करुणामुखेन वा मेत्तामुदितानम्पि हदयसीतलभावकारणता वुत्ताति दट्ठब्बं।

अथ वा असाधारणञाणविसेसनिबन्धनभूता सातिसयं निरवसेसञ्च सब्बञ्ञुतञ्ञाणं विय सविसयब्यापिताय महाकरुणाभावं उपगता करुणाव भगवतो अतिसयेन हदयसीतलभावहेतूति आह "**करुणासीतलहदय**"न्ति। अथ वा सतिपि मेत्तामुदितानं सातिसये हदयसीतीभावनिबन्धनत्ते सकलबुद्धगुणविसेसकारणताय तासम्पि कारणन्ति करुणाव भगवतो हदयसीतलभावकारणं वुत्ता। करुणानिदाना हि सब्बेपि बुद्धगुणा। करुणानुभावनिब्बापियमानसंसारदुक्खसन्तापस्स हि भगवतो परदुक्खापनयनकामताय अनेकानिपि असङ्ख्येय्यानि कप्पानं अकिलन्तरूपस्सेव निरवसेसबुद्धकरधम्मसम्भरणनियतस्स समधिगतधम्माधिपतेय्यस्स च सन्निहितेसुपि सत्तसङ्खारसमुपनीतहदयूपतापनिमित्तेसु न ईसकम्पि चित्तसीतीभावस्सञ्ञथत्तमहोसीति। एतस्मिञ्च अत्थविकप्पे तीसुपि अवत्थासु भगवतो करुणा सङ्गहिताति दट्ठब्बं।

पजानातीति पञ्ञा, यथासभावं पकारेहि पटिविज्झतीति अत्थो। पञ्ञाव ञेय्यावरणप्पहानतो पकारेहि धम्मसभावावजोतनट्ठेन पज्जोतोति पञ्ञापज्जोतो, सवासनप्पहानतो विसेसेन हतं समुग्घाटितं विहतं, पञ्ञापज्जोतेन विहतं पञ्ञापज्जोतविहतं। मुय्हन्ति तेन, सयं वा मुय्हति, मोहनमत्तमेव वा तन्ति मोहो, अविज्जा, स्वेव विसयसभावपटिच्छादनतो अन्धकारसरिक्खताय तमो वियाति तमो, पञ्ञापज्जोतविहतो मोहतमो एतस्साति पञ्ञापज्जोतविहतमोहतमो, तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्ञापज्जोतविहतमोहतमं। सब्बेसम्पि हि खीणासवानं सतिपि पञ्ञापज्जोतेन अविज्जान्धकारस्स विहतभावे सद्धाधिमुत्तेहि विय दिट्ठिप्पत्तानं सावकेहि, पच्चेकसम्बुद्धेहि च सवासनप्पहानेन सम्मासम्बुद्धानं किलेसप्पहानस्स विसेसो विज्जतीति सातिसयेन अविज्जाप्पहानेन भगवन्तं थोमेन्तो आह "**पञ्ञापज्जोतविहतमोहतम**"न्ति।

अथ वा अन्तरेन परोपदेसं अत्तनो सन्ताने अच्चन्तं अविज्जान्धकारविगमस्स निब्बत्तितत्ता, तत्थ च सब्बञ्ञुताय, बलेसु च वसीभावस्स समधिगतत्ता, परसन्ततियञ्च धम्मदेसनातिसयानुभावेन सम्मदेव तस्स पवत्तितत्ता भगवाव विसेसतो मोहतमविगमेन थोमेतब्बोति आह "**पञ्ञापज्जोतविहतमोहतम**"न्ति। इमस्मिञ्च अत्थविकप्पे "**पञ्ञापज्जोतो**"ति पदेन भगवतो पटिवेधपञ्ञा विय देसनापञ्ञापि सामञ्ञनिद्देसेन एकसेसनयेन वा सङ्गहिताति दट्ठब्बं।

अथ वा भगवतो ञाणस्स ञेय्यपरियन्तिकत्ता सकलञेय्यधम्मसभावाबोधनसमत्थेन अनावरणञाणसङ्खातेन पञ्ञापज्जोतेन सब्बञेय्यधम्मसभावच्छादकस्स मोहन्धकारस्स विधमितत्ता अनञ्ञसाधारणो भगवतो मोहतमविनासोति कत्वा वुत्तं "**पञ्ञापज्जोतविहतमोहतम**"न्ति। एत्थ च मोहतमविधमनन्ते अधिगतत्ता अनावरणञाणं कारणूपचारेन सकसन्ताने मोहतमविधमनं दट्ठब्बं। अभिनीहारसम्पत्तिया सवासनप्पहानमेव हि किलेसानं "ञेय्यावरणप्पहान"न्ति, परसन्ताने पन मोहतमविधमनस्स कारणभावतो अनावरणञाणं "मोहतमविधमन"न्ति वुच्चतीति।

किं पन कारणं अविज्जाविग्घातो येवेको पहानसम्पत्तिवसेन भगवतो थोमनानिमित्तं गय्हति, न पन सातिसयनिरवसेसकिलेसप्पहानन्ति? तप्पहानवचनेनेव तदेकट्ठताय सकलसंकिलेसगणसमुग्घातजोतितभावतो। न हि सो तादिसो किलेसो अत्थि, यो निरवसेसअविज्जाप्पहानेन न पहीयतीति। अथ वा विज्जा विय सकलकुसलधम्मसमुप्पत्तिया निरवसेसाकुसलधम्मनिब्बत्तिया, संसारप्पवत्तिया च अविज्जा पधानकारणन्ति तब्बिग्घातवचनेन सकलसंकिलेसगणसमुग्घातो वुत्तोयेव होतीति वुत्तं "**पञ्ञापज्जोतविहतमोहतम**"न्ति।

नरा च अमरा च नरामरा, सह नरामरेहीति सनरामरो, सनरामरो च सो लोको चाति सनरामरलोको, तस्स गरुति सनरामरलोकगरु, तं **सनरामरलोकगरुं**। एतेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवमनुस्सानं विय तदवसिट्ठसत्तानम्पि यथारहं गुणविसेसावहतो भगवतो उपकारितं दस्सेति। न चेत्थ पधानापधानभावो चोदेतब्बो। अञ्ञो हि सद्दक्कमो, अञ्ञो अत्थक्कमो। एदिसेसु हि समासपदेसु पधानम्पि अप्पधानं विय निद्दिसीयति यथा– "सराजिकाय परिसाया"ति (अप० अट्ठ० १.८२)। कामञ्चेत्थ सत्तसङ्खारभाजनवसेन तिविधो लोको, गरुभावस्स पन अधिप्पेतत्ता गरुकरणसमत्थस्सेव युज्जनतो सत्तलोकस्सवसेन अत्थो गहेतब्बो। सो हि लोकियन्ति एत्थ पुञ्ञपापानि तब्बिपाको चाति "लोको"ति वुच्चति। अमरग्गहणेन चेत्थ उपपत्तिदेवा अधिप्पेता।

अथ वा समूहत्थो लोक-सद्दो समुदायवसेन लोकीयति पञ्ञापीयतीति। सह नरेहीति सनरा, सनरा च ते अमरा चेति सनरामरा, तेसं लोकोति सनरामरलोकोति पुरिमनयेनेव योजेतब्बं। अमर-सद्देन चेत्थ विसुद्धिदेवापि सङ्गय्हन्ति। ते हि मरणाभावतो परमत्थतो अमरा। नरामरानंयेव च गहणं उक्कट्ठनिद्देसवसेन, यथा– "सत्था देवमनुस्सान"न्ति (दी० नि० १.१५७)। तथा हि सब्बानत्थपरिहरणपुब्बङ्गमाय निरवसेसहितसुखविधानतप्पराय निरतिसयाय पयोगसम्पत्तिया सदेवमनुस्साय पजाय अच्चन्तुपकारिताय, अपरिमितनिरुपमप्पभावगुणविसेससमङ्गिताय च सब्बसत्तुत्तमो भगवा अपरिमाणासु लोकधातूसु अपरिमाणानं सत्तानं उत्तमं गारवट्ठानं, तेन वुत्तं– **"सनरामरलोकगरु"**न्ति।

सोभनं गतं गमनं एतस्साति **सुगतो**। भगवतो हि वेनेय्यजनुपसङ्कमनं एकन्तेन तेसं हितसुखनिप्फादनतो सोभनं, तथा लक्खणानुब्यञ्जन (दी० नि० २.३३; ३.१९८-२००; म० नि० २.३८५, ३८६) पटिमण्डितरूपकायतायदुतविलम्बितखलितानुकड्ढन-निप्पीळनुक्कुटिककुटिलाकुलतादिदोसरहितं विलासितराजहंसवसभवारणमिगराजगमनं कायगमनं ञाणगमनञ्च विपुलनिम्मलकरुणासतिवीरियादिगुणविसेससहितमभिनीहारतो याव महाबोधि अनवज्जताय सोभनमेवाति।

अथ वा सयम्भुञाणेन सकलम्पि लोकं परिञ्ञाभिसमयवसेन परिजानन्तो ञाणेन सम्मा गतो अवगतोति **सुगतो**। तथा लोकसमुदयं पहानाभिसमयवसेन पजहन्तो अनुप्पत्तिधम्मतं आपादेन्तो सम्मा गतो अतीतोति **सुगतो**। लोकनिरोधं निब्बानं सच्छिकिरियाभिसमयवसेन सम्मा गतो अधिगतोति **सुगतो**। लोकनिरोधगामिनिपटिपदं भावनाभिसमयवसेन सम्मा गतो पटिपन्नोति **सुगतो**। सोतापत्तिमग्गेन ये किलेसा पहीना, ते किलेसे न पुनेति, न पच्चेति, न पच्चागच्छतीति **सुगतो**तिआदिना नयेन अयमत्थो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विभावेतब्बो। अथ वा सुन्दरं ठानं सम्मासम्बोधिं निब्बानमेव वा गतो अधिगतोति **सुगतो।** यस्मा वा भूतं तच्छं अत्थसञ्हितं विनेय्यानं यथारहं कालयुत्तमेव च धम्मं भासति, तस्मा सम्मा गदतीति **सुगतो,** द-कारस्स त-कारं कत्वा। इति सोभनगमनतादीहि सुगतो, तं **सुगतं।**

पुञ्ञपापकम्मेहि उपपज्जनवसेन गन्तब्बतो गतियो, उपपत्तिभवविसेसा। ता पन निरयादिवसेन पञ्चविधा, ताहि सकलस्सापि भवगामिकम्मस्स अरियमग्गाधिगमेन अविपाकारहभावकरणेन निवत्तितत्ता भगवा पञ्चहिपि गतीहि सुट्ठु मुत्तो विसंयुत्तोति आह – "**गतिविमुत्त**"न्ति। एतेन भगवतो कत्थचिपि गतिया अपरियापन्नतं दस्सेति, यतो भगवा "देवातिदेवो"ति वुच्चति, तेनेवाह –

"येन देवूपपत्यस्स, गन्धब्बो वा विहङ्गमो।
यक्खत्तं येन गच्छेय्यं, मनुस्सत्तञ्च अब्बजे।
ते मय्हं आसवा खीणा, विद्धस्ता विनळीकता"ति।। (अ० नि० १.४.३६)

तंतंगतिसंवत्तनकानञ्हि कम्मकिलेसानं अग्गमग्गेन बोधिमूलेयेव सुप्पहीनत्ता नत्थि भगवतो गतिपरियापन्नताति अच्चन्तमेव भगवा सब्बभवयोनिगतिविञ्ञाणट्ठितिसत्तावास-सत्तनिकायेहि सुपरिमुत्तो, तं **गतिविमुत्तं। वन्दे**ति नमामि, थोमेमीति वा अत्थो।

अथ वा **गतिविमुत्त**न्ति अनुपादिसेसनिब्बानधातुप्पत्तिया भगवन्तं थोमेति। एत्थ हि द्वीहाकारेहि भगवतो थोमना वेदितब्बा – अत्तहितसम्पत्तितो, परहितपटिपत्तितो च। तेसु अत्तहितसम्पत्ति अनावरणञाणाधिगमतो, सवासनानं सब्बेसं किलेसानं अच्चन्तप्पहानतो, अनुपादिसेसनिब्बानप्पत्तितो च वेदितब्बा। परहितपटिपत्ति लाभसक्कारादिनिरपेक्खचित्तस्स सब्बदुक्खनिय्यानिकधम्मदेसनातो, विरुद्धेसुपि निच्चं हितज्झासयतो, ञाणपरिपाककालागमनतो च। सा पनेत्थ आसयतो पयोगतो च दुविधा परहितपटिपत्ति, तिविधा च अत्तहितसम्पत्ति पकासिता होति। कथं? "करुणासीतलहदय"न्ति एतेन आसयतो परहितपटिपत्ति, सम्मा गदनत्थेन सुगत-सद्देन पयोगतो परहितपटिपत्ति, "पञ्ञापज्जोतविहतमोहतमं गतिविमुत्त"न्ति एतेहि चतुसच्चपटिवेधत्थेन च सुगत-सद्देन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिविधापि अत्तहितसम्पत्ति, अवसिट्ठेन, "पञ्ञापज्जोतविहतमोहतम"न्ति एतेन च सब्बापि अत्तहितसम्पत्तिपरहितपटिपत्ति पकासिता होतीति।

अथ वा तीहाकारेहि भगवतो थोमना वेदितब्बा– हेतुतो, फलतो, उपकारतो च। तत्थ **हेतु** महाकरुणा, सा पठमपदेन निदस्सिता। **फलं** चतुब्बिधं– ञाणसम्पदा, पहानसम्पदा, आनुभावसम्पदा, रूपकायसम्पदा चाति। तासु ञाणप्पहानसम्पदा दुतियपदेन सच्चप्पटिवेधत्थेन च सुगत-सद्देन पकासिता होन्ति। आनुभावसम्पदा ततियपदेन, रूपकायसम्पदा यथावुत्तकायगमनसोभनत्थेन सुगत-सद्देन, लक्खणानुब्यञ्जनपारिपूरिया (दी० नि० २.३३; ३.१९८-२००; म० नि० २.३८५-३८६) विना तदभावतो। **उपकारो** अन्तरं अबाहिरं करित्वा तिविधयानमुखेन विमुत्तिधम्मदेसना, सो सम्मा गदनत्थेन सुगत-सद्देन पकासितो होतीति वेदितब्बं।

तत्थ "करुणासीतलहदय"न्ति एतेन सम्मासम्बोधिया मूलं दस्सेति। महाकरुणासञ्चोदितमानसो हि भगवा संसारपङ्कतो सत्तानं समुद्धरणत्थं कताभिनीहारो अनुपुब्बेन पारमियो पूरेत्वा अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अधिगतोति करुणा सम्मासम्बोधिया मूलं। "पञ्ञापज्जोतविहतमोहतम"न्ति एतेन सम्मासम्बोधिं दस्सेति। अनावरणञाणपदट्ठानञ्हि मग्गञाणं, मग्गञाणपदट्ठानञ्च अनावरणञाणं "सम्मासम्बोधी"ति वुच्चतीति। सम्मा गदनत्थेन सुगत-सद्देन सम्मासम्बोधिया पटिपत्तिं दस्सेति, लीनुद्धच्च-पतिट्ठानायूहनकामसुखल्लिकत्तकिलमथानुयोगसस्सतुच्छेदाभिनिवेसादिअन्तद्वयरहिताय करुणा-पञ्ञापरिग्गहिताय मज्झिमाय पटिपत्तिया पकासनतो सुगत-सद्दस्स। इतरेहि सम्मासम्बोधिया पधानाप्पधानभेदं पयोजनं दस्सेति। संसारमहोघतो सत्तसन्तारणञ्चेत्थ पधानं पयोजनं, तदञ्ञमप्पधानं। तेसु पधानेन परहितप्पटिपत्तिं दस्सेति, इतरेन अत्तहितसम्पत्तिं, तदुभयेन अत्तहिताय पटिपन्नादीसु (पु० प० २४, १७३) चतूसु पुग्गलेसु भगवतो चतुत्थपुग्गलभावं दस्सेति। तेन च अनुत्तरदक्खिणेय्यभावं उत्तमवन्दनीयभावं, अत्तनो च वन्दनकिरियाय खेत्तङ्गतभावं दस्सेति।

एत्थ च करुणाग्गहणेन लोकियेसु महग्गतभावप्पत्तासाधारणगुणदीपनतो भगवतो सब्बलोकियगुणसम्पत्ति दस्सिता होति, पञ्ञाग्गहणेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानमग्ग-ञाणदीपनतो सब्बलोकुत्तरगुणसम्पत्ति। तदुभयग्गहणसिद्धो हि अत्थो "सनरामरलोकगरु"न्तिआदिना विपञ्चीयतीति। करुणाग्गहणेन च उपगमनं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरुपक्किलेसं दस्सेति, पञ्ञाग्गहणेन अपगमनं। तथा करुणाग्गहणेन लोकसमञ्ञानुरूपं भगवतो पवत्तिं दस्सेति, लोकवोहारविसयत्ता करुणाय, पञ्ञाग्गहणेन समञ्ञायान-विधावनं। सभावानवबोधेन हि धम्मानं समञ्ञं अतिधावित्वा सत्तादिपरामसनं होतीति। तथा करुणाग्गहणेन महाकरुणासमापत्तिविहारं दस्सेति, पञ्ञाग्गहणेन तीसु कालेसु अप्पटिहतञाणं, चतुसच्चञाणं, चतुप्पटिसम्भिदाञाणं, चतुवेसारज्जञाणं। करुणाग्गहणेन महाकरुणासमापत्तिञाणस्स गहितत्ता सेसासाधारणञाणानि, छ अभिञ्ञा, अट्ठसु परिसासु (म० नि० १.१५१) अकम्पनञाणानि, दस बलानि, चुद्दस बुद्धञाणानि, सोळस ञाणचरिया, अट्ठारस बुद्धधम्मा, (दी० नि० अट्ठ० ३.३०५; विभं० मूल० टी० गन्थारम्भवण्णनाय) चतुचत्तारीस ञाणवत्थूनि, (सं० नि० १.२.३४) सत्तसत्तति ञाणवत्थूनीति (सं० नि० १.२.३४) एवमादीनं अनेकेसं पञ्ञाप्पभेदानं वसेन ञाणचारं दस्सेति।

तथा करुणाग्गहणेन चरणसम्पत्तिं, पञ्ञाग्गहणेन विज्जासम्पत्तिं। करुणाग्गहणेन सत्ताधिपतिता, पञ्ञाग्गहणेन धम्माधिपतिता। करुणाग्गहणेन लोकनाथभावो, पञ्ञाग्गहणेन अत्तनाथभावो। तथा करुणाग्गहणेन पुब्बकारिभावो, पञ्ञाग्गहणेन कतञ्ञुता। तथा करुणाग्गहणेन अपरन्तपता, पञ्ञाग्गहणेन अनत्तन्तपता। करुणाग्गहणेन वा बुद्धकरधम्मसिद्धि, पञ्ञाग्गहणेन बुद्धभावसिद्धि। तथा करुणाग्गहणेन परेसं तारणं, पञ्ञाग्गहणेन सयं तारणं। तथा करुणाग्गहणेन सब्बसत्तेसु अनुग्गहचित्तता, पञ्ञाग्गहणेन सब्बधम्मेसु विरत्तचित्तता दस्सिता होति। सब्बेसञ्च बुद्धगुणानं करुणा आदि, तन्निदानभावतो। पञ्ञा परियोसानं, ततो उत्तरिकरणीयाभावतो। इति आदिपरियोसानदस्सनेन सब्बे बुद्धगुणा दस्सिता होन्ति। तथा करुणाग्गहणेन सीलक्खन्धपुब्बङ्गमो समाधिक्खन्धो दस्सितो होति। करुणानिदानञ्हि सीलं, ततो पाणातिपातादिविरतिप्पवत्तितो, सा च झानत्तयसम्पयोगिनीति। पञ्ञावचनेन पञ्ञाक्खन्धो। सीलञ्च सब्बबुद्धगुणानमादि, समाधि मज्झे, पञ्ञा परियोसानन्ति। एवम्पि आदिमज्झपरियोसानकल्याणा सब्बे बुद्धगुणा दस्सिता होन्ति, नयतो दस्सितत्ता। एसो एव हि निरवसेसतो बुद्धगुणानं दस्सनुपायो, यदिदं नयग्गाहणं। अञ्ञथा को नाम समत्थो भगवतो गुणे अनुपदं निरवसेसतो दस्सेतुं। तेनेवाह –

> “बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं,
> कप्पम्पि चे अञ्ञमभासमानो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीयेथ कप्पो चिरदीघमन्तरे,
वण्णो न खीयेथ तथागतस्सा''ति।। (दी० नि० अट्ठ० १.३०४; दी० नि० अट्ठ० ३.१४१; म० नि० अट्ठ० ३.४२५, उदा० अट्ठ० ५३; बु० वं० अट्ठ० ४.४; चरिया० पि० अट्ठ० निदानकथायं, पकिण्णककथायं; अप० अट्ठ० २.६.२०)

तेनेव च आयस्मता सारिपुत्तत्थेरेनापि बुद्धगुणपरिच्छेदनं पति अनुयुत्तेन ''नो हेतं भन्ते''ति (दी० नि० २.१४५) पटिक्खिपित्वा, ''अपि च मे भन्ते धम्मन्वयो विदितो''ति (दी० नि० २.१४६) वुत्तं।

एवं सङ्खेपेन सकलसब्बञ्ञुगुणेहि भगवन्तं अभित्थवित्वा इदानि सद्धम्मं थोमेतुं **''बुद्धोपी''**तिआदिमाह। तत्थ **बुद्धो**ति कत्तुनिद्देसो। **बुद्धभाव**न्ति कम्मनिद्देसो। **भावेत्वा, सच्छिकत्वा**ति च पुब्बकालकिरियानिद्देसो। **य**न्ति अनियमतो कम्मनिद्देसो। **उपगतो**ति अपरकालकिरियानिद्देसो। **वन्दे**ति किरियानिद्देसो, **त**न्ति नियमनं। **धम्म**न्ति वन्दनकिरियाय कम्मनिद्देसो। **गतमलं, अनुत्तर**न्ति च तब्बिसेसनं।

तत्थ बुद्ध-सद्दस्स ताव ''बुज्झिता सच्चानीति बुद्धो, बोधेता पजायाति बुद्धो''तिआदिना (महानि० १९२; चूळनि० ९५-९७; पटि० म० १.१६२) निद्देसनयेन अत्थो वेदितब्बो। अथ वा सवासनाय अञ्ञाणनिद्दाय अच्चन्तविगमतो, बुद्धिया वा विकसितभावतो बुद्धवाति **बुद्धो,** जागरणविकसनत्थवसेन। अथ वा कस्सचिपि ञेय्यधम्मस्स अनवबुद्धस्स अभावेन ञेय्यविसेसस्स कम्मभावेन अग्गहणतो कम्मवचनिच्छाय अभावेन अवगमनत्थवसेनेव कत्तुनिद्देसो लब्भतीति बुद्धवाति बुद्धो, यथा ''दिक्खितो न ददाती''ति, अत्थतो पन पारमितापरिभावितो सयम्भूञाणेन सह वासनाय विहतविद्धस्तनिरवसेसकिलेसो महाकरुणासब्बञ्ञुतञ्ञाणादिअपरिमेय्य गुणगणाधारो खन्धसन्तानो बुद्धो। यथाह –

''बुद्धोति यो सो भगवा सयम्भू अनाचरियको पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु सामं सच्चानि अभिसम्बुज्झि, तत्थ च सब्बञ्ञुतं पत्तो, बलेसु च वसीभाव''न्ति (महानि० १९२; चूळनि० ९५-९७; पटि० म० १.१६२)।

अपि-सद्दो सम्भावने, तेन ''एवं गुणविसेसयुत्तो सोपि नाम भगवा''ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वक्खमानगुणे धम्मे सम्भावनं दीपेति। **बुद्धभाव**न्ति सम्मासम्बोधिं। **भावेत्वा**ति उप्पादेत्वा, वड्ढेत्वा च। **सच्छिकत्वा**ति पच्चक्खं कत्वा। **उपगतो**ति पत्तो, अधिगतोति अत्थो, एतस्स "बुद्धभाव"न्ति एतेन सम्बन्धो। **गतमल**न्ति विगतमलं, निद्दोसन्ति अत्थो। **वन्दे**ति पणमामि, थोमेमि वा। **अनुत्तर**न्ति उत्तररहितं, लोकुत्तरन्ति अत्थो। **धम्म**न्ति यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने अपायतो च, संसारतो च अपतमाने कत्वा धारयतीति धम्मो।

अयञ्हेत्थ सङ्खेपत्थो– एवं विविधगुणसमन्नागतो बुद्धोपि भगवा यं अरियसङ्खातं धम्मं भावेत्वा, फलनिब्बानसङ्खातं पन सच्छिकत्वा अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अधिगतो, तमेतं बुद्धानम्पि बुद्धभावहेतुभूतं सब्बदोसमलरहितं अत्तनो उत्तरितराभावेन अनुत्तरं पटिवेधसद्धम्मं नमामीति। परियत्तिसद्धम्मस्सापि तप्पकासनत्ता इध सङ्गहो दट्ठब्बो। अथ वा "अभिधम्मनयसमुद्दं भावेत्वा अधिगच्छि, तीणि पिटकानि सम्मसी"ति च अट्ठकथायं वुत्तत्ता परियत्तिधम्मस्सापि सच्छिकिरियासम्मसनपरियायो लब्भतीति सोपि इध वुत्तो येवाति दट्ठब्बो। तथा "यं धम्मं भावेत्वा, सच्छिकत्वा"ति च वुत्तत्ता बुद्धकरधम्मभूताहि पारमिताहि सह पुब्बभागे अधिसीलसिक्खादयोपि इध धम्म-सद्देन सङ्गहिताति वेदितब्बा। तापि हि विगतपटिपक्खताय विगतमला, अनञ्ञसाधारणताय अनुत्तरा चाति। तथा हि सत्तानं सकलवट्टदुक्खनिस्सरणाय कतमहाभिनीहारो महाकरुणाधिवासपेसलज्झासयो पञ्ञाविसेसपरियोदातनिम्मलानं दानदमसञ्ञमादीनं उत्तमधम्मानं सततसहस्साधिकानि कप्पानं चत्तारि असङ्खेय्यानि सक्कच्चं निरन्तरं निरवसेसं भावनापच्चक्खकरणेहि कम्मादीसु अधिगतवसीभावो, अच्छरियाचिन्तेय्यमहानुभावो, अधिसीलअधिचित्तानं परमुक्कंसपारमिप्पत्तो भगवा पच्चयाकारे चतुवीसतिकोटिसतसहस्समुखेन महावजिरञाणं पेसेत्वा अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धोति।

एत्थ च "भावेत्वा"ति एतेन विज्जासम्पदाय धम्मं थोमेति, 'सच्छिकत्वा'ति एतेन विमुत्तिसम्पदाय। तथा पठमेन झानसम्पदाय, दुतियेन विमोक्खसम्पदाय। पठमेन वा समाधिसम्पदाय, दुतियेन समापत्तिसम्पदाय। अथ वा पठमेन खयञाणभावेन, दुतियेन अनुप्पादञाणभावेन। पुरिमेन वा विज्जूपमताय, दुतियेन वजिरूपमताय। पुरिमेन वा विरागसम्पत्तिया, दुतियेन निरोधसम्पत्तिया। तथा पठमेन निय्यानभावेन, दुतियेन निस्सरणभावेन। पठमेन वा हेतुभावेन, दुतियेन असङ्खतभावेन। पठमेन वा दस्सनभावेन, दुतियेन विवेकभावेन। पठमेन वा अधिपतिभावेन, दुतियेन अमतभावेन धम्मं थोमेति। अथ वा "यं धम्मं भावेत्वा बुद्धभावं उपगतो"ति एतेन स्वाक्खातताय धम्मं थोमेति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"सच्छिकत्वा"ति एतेन सन्दिट्ठिकताय। तथा पुरिमेन अकालिकताय, पच्छिमेन एहिपस्सिकताय। पुरिमेन वा ओपनेय्यिकताय, पच्छिमेन पच्चत्तं वेदितब्बताय धम्मं थोमेति।

"गतमल"न्ति इमिना संकिलेसाभावदीपनेन धम्मस्स परिसुद्धतं दस्सेति, "अनुत्तर"न्ति एतेन अञ्ञस्स विसिट्ठस्स अभावदीपनेन विपुलपरिपुण्णतं। पठमेन वा पहानसम्पदं धम्मस्स दस्सेति, दुतियेन पभावसम्पदं। भावेतब्बताय वा धम्मस्स गतमलभावो योजेतब्बो। भावनागुणेन हि सो दोसानं समुग्घातको होतीति। सच्छिकातब्बभावेन अनुत्तरभावो योजेतब्बो। सच्छिकिरियानिब्बत्तितो हि तदुत्तरिकरणीयाभावतो अनञ्ञसाधारणताय अनुत्तरोति। तथा "भावेत्वा"ति एतेन सह पुब्बभागसीलादीहि सेक्खा सीलसमाधिपञ्ञाक्खन्धा दस्सिता होन्ति, "सच्छिकत्वा"ति एतेन सह असङ्खताय धातुया असेक्खा सीलसमाधिपञ्ञाक्खन्धा दस्सिता होन्तीति।

एवं सङ्खेपेनेव सब्बधम्मगुणेहि सद्धम्मं अभित्थवित्वा, इदानि अरियसङ्घं थोमेतुं **"सुगतस्सा"**तिआदिमाह। तत्थ **सुगतस्सा**ति सम्बन्धनिद्देसो, तस्स "पुत्तान"न्ति एतेन सम्बन्धो। **ओरसान**न्ति पुत्तविसेसनं। **मारसेनमथनान**न्ति ओरसपुत्तभावे कारणनिद्देसो, तेन किलेसप्पहानमेव भगवतो ओरसपुत्तभावकारणं अनुजानातीति दस्सेति। **अट्ठन्न**न्ति गणनपरिच्छेदनिद्देसो, तेन च सतिपि तेसं सत्तविसेसभावेन अनेकसतसहस्ससङ्ख्यभावे इमं गणनपरिच्छेदं नातिवत्तन्तीति दस्सेति, मग्गट्ठफलट्ठभावानतिवत्तनतो। **समूह**न्ति समुदायनिद्देसो। **अरियसङ्घ**न्ति गुणविसिट्ठसङ्घातभावनिद्देसो, तेन असतिपि अरियपुग्गलानं कायसामग्गियं अरियसङ्घभावं दस्सेति, दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहतभावतो। तत्थ उरसि भवा जाता, संवद्धा च ओरसा। यथा हि सत्तानं ओरसपुत्ता अत्तजातताय पितुसन्तकस्स दायज्जस्स विसेसेन भागिनो होन्ति, एवमेतेपि अरियपुग्गला सम्मासम्बुद्धस्स सवनन्ते अरियाय जातिया जातताय भगवतो सन्तकस्स विमुत्तिसुखस्स, अरियधम्मरतनस्स च एकन्तभागिनोति ओरसा विय **ओरसा**। अथ वा भगवतो धम्मदेसनानुभावेन अरियभूमिं ओक्कममाना, ओक्कन्ता च अरियसावका भगवतो उरोवायामजनिताभिजातताय निप्परियायेन "ओरसपुत्ता"ति वत्तब्बतं अरहन्ति। सावकेहि पवत्तियमानापि हि धम्मदेसना भगवतो "धम्मदेसना" इच्चेव वुच्चति, तंमूलकत्ता, लक्खणादिविसेसाभावतो च।

यदिपि अरियसावकानं अरियमग्गाधिगमसमये भगवतो विय तदन्तरायकरणत्थं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवपुत्तमारो, मारवाहिनी वा न एकन्तेन अपसादेति, तेहि पन अपसादेतब्बताय कारणे विमथिते तेपि विमथिता एव नाम होन्तीति आह– **"मारसेनमथनान"**न्ति। इमस्मिं पनत्थे 'मारमारसेनमथनान'न्ति वत्तब्बे "मारसेनमथनान"न्ति एकदेससरूपेकसेसो कतोति दट्ठब्बं। अथ वा खन्धाभिसङ्खारमारानं विय देवपुत्तमारस्सापि गुणमारणे सहायभावूपगमनतो किलेसबलकायो "सेना"ति वुच्चति। यथाह– "कामा ते पठमा सेना"तिआदि (सु० नि० ४३८; महानि० २८, ६८; चूळनि० ४७)। सा च तेहि दियड्ढसहस्सभेदा, अनन्तभेदा वा किलेसवाहिनी सतिधम्मविचयवीरियसमथादिगुणपहरणेहि ओधिसो विमथिता, विहता, विद्धस्ता चाति **मारसेनमथना,** अरियसावका। एतेन तेसं भगवतो अनुजातपुत्ततं दस्सेति।

आरकत्ता किलेसेहि, अनये न इरियनतो, अये च इरियनतो अरिया, निरुत्तिनयेन। अथ वा सदेवकेन लोकेन "सरण"न्ति अरणीयतो उपगन्तब्बतो, उपगतानञ्च तदत्थसिद्धितो अरिया, अरियानं सङ्घोति अरियसङ्घो, अरियो च सो, सङ्घो चाति वा अरियसङ्घो, तं **अरियसङ्घं**। भगवतो अपरभागे बुद्धधम्मरतनानम्पि समधिगमो सङ्घरतनाधीनोति अस्स अरियसङ्घस्स बहूपकारतं दस्सेतुं इधेव **"सिरसा वन्दे"**ति वुत्तन्ति दट्ठब्बं।

एत्थ च "सुगतस्स ओरसानं पुत्तान"न्ति एतेन अरियसङ्घस्स पभवसम्पदं दस्सेति, "मारसेनमथनान"न्ति एतेन पहानसम्पदं, सकलसंकिलेसप्पहानदीपनतो। "अट्ठन्नम्पि समूह"न्ति एतेन ञाणसम्पदं, मग्गट्ठफलट्ठभावदीपनतो। "अरियसङ्घ"न्ति एतेन पभवसम्पदं दस्सेति, सब्बसङ्घानं अग्गभावदीपनतो। अथ वा "सुगतस्स ओरसानं पुत्तान"न्ति अरियसङ्घस्स विसुद्धनिस्सयभावदीपनं, "मारसेनमथनान"न्ति सम्माउजुञायसामीचिप्पटिपन्न-भावदीपनं, "अट्ठन्नम्पि समूह"न्ति आहुनेय्यादिभावदीपनं, "अरियसङ्घ"न्ति अनुत्तरपुञ्ञक्खेत्तभावदीपनं। तथा "सुगतस्स ओरसानं पुत्तान"न्ति एतेन अरियसङ्घस्स लोकुत्तरसरणगमनसब्भावं दीपेति। लोकुत्तरसरणगमनेन हि ते भगवतो ओरसपुत्ता जाता। "मारसेनमथनान"न्ति एतेन अभिनीहारसम्पदासिद्धं पुब्बभागे सम्मापटिपत्तिं दस्सेति। कताभिनीहारा हि सम्मा पटिपन्ना मारं, मारपरिसं वा अभिविजिनन्ति। "अट्ठन्नम्पि समूह"न्ति एतेन विद्धस्तविपक्खे सेक्खासेक्खधम्मे दस्सेति, पुग्गलाधिट्ठानेन मग्गफलधम्मानं पकासितत्ता। "अरियसङ्घ"न्ति अग्गदक्खिणेय्यभावं दस्सेति। सरणगमनञ्च सावकानं सब्बगुणानमादि, सपुब्बभागप्पटिपदा सेक्खा सीलक्खन्धादयो मज्झे, असेक्खा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीलक्खन्धादयो परियोसानन्ति आदिमज्झपरियोसानकल्याणा सङ्खेपतो सब्बे अरियसङ्घगुणा पकासिता होन्ति।

एवं गाथात्तयेन सङ्खेपतो सकलगुणसङ्कित्तनमुखेन रतनत्तयस्स पणामं कत्वा, इदानि तं निपच्चकारं यथाधिप्पेते पयोजने परिणामेन्तो **"इति मे"**तिआदिमाह। तत्थ रतिजननट्ठेन **रतनं,** बुद्धधम्मसङ्घा। तेसञ्हि "इतिपि सो भगवा"तिआदिना यथाभूतगुणे आवज्जन्तस्स अमताधिगमहेतुभूतं अनप्पकं पीतिपामोज्जं उप्पज्जति। यथाह –

"यस्मिं, महानाम, समये अरियसावको तथागतं अनुस्सरति, नेवस्स तस्मिं समये रागपरियुट्ठितं चित्तं होति, न दोसपरियुट्ठितं चित्तं होति, न मोहपरियुट्ठितं चित्तं होति, उजुगतमेवस्स तस्मिं समये चित्तं होति तथागतं आरब्भ। उजुगतचित्तो खो पन, महानाम, अरियसावको लभति अत्थवेदं, लभति धम्मवेदं, लभति धम्मूपसंहितं पामोज्जं, पमुदितस्स पीति जायती"तिआदि (अ० नि० २.६.१०; अ० नि० ३.११.११)।

चित्तीकतादिभावो वा रतनट्ठो। वुत्तञ्हेतं –

"चित्तीकतं महग्घञ्च, अतुलं दुल्लभदस्सनं।
अनोमसत्तपरिभोगं, रतनं तेन वुच्चती"ति॥ (खु० पा० अट्ठ० ६.३; दी० नि० अट्ठ० २.३३; सु० नि० अट्ठ० १.२२६; महानि० अट्ठ० ५०)

चित्तीकतभावादयो च अनञ्ञसाधारणा बुद्धादीसु एव लब्भन्तीति। वन्दनाव **वन्दनामयं,** यथा "दानमयं, सीलमय"न्ति (दी० नि० ३.३०५; इतिवु० ६०; नेत्ति० ३४)। वन्दना चेत्थ कायवाचाचित्तेहि तिण्णं रतनानं गुणनिन्नता, थोमना वा। पुज्जभवफलनिब्बत्तनतो **पुञ्ञं,** अत्तनो सन्तानं पुणातीति वा। **सुविहतन्तरायो**ति सुट्ठु विहतन्तरायो, एतेन अत्तनो पसादसम्पत्तिया, रतनत्तयस्स च खेत्तभावसम्पत्तिया तं पुञ्ञं अत्थप्पकासनस्स उपघातकउपद्दवानं विहनने समत्थन्ति दस्सेति। **हुत्वा**ति पुब्बकालकिरिया, तस्स "अत्थं पकासयिस्सामी"ति एतेन सम्बन्धो। **तस्सा**ति यं रतनत्तयवन्दनामयं पुञ्ञं, तस्स। **आनुभावेना**ति बलेन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं रतनत्तयस्स निपच्चकारकरणे पयोजनं दस्सेत्वा, इदानि यस्सा धम्मदेसनाय अत्थं संवण्णेतुकामो, तस्सा ताव गुणाभित्थवनवसेन उपञ्ञापनत्थं **"दीघस्सा"**तिआदि वुत्तं। तत्थ **दीघसुत्तङ्कितस्सा**ति दीघप्पमाणसुत्तलक्खितस्स, एतेन "दीघो"ति अयं इमस्स आगमस्स अत्थानुगता समञ्ञाति दस्सेति। ननु च सुत्तानियेव आगमो, कस्स पन सुत्तेहि अङ्कनन्ति ? सच्चमेतं परमत्थतो, सुत्तानि पन उपादायपञ्ञत्तो आगमो। यथा हि अत्थब्यञ्जनसमुदाये "सुत्त"न्ति वोहारो, एवं सुत्तसमुदाये "आगमो"ति वोहारो। पटिच्चसमुप्पादादिनिपुणत्थसब्भावतो **निपुणस्स**। आगमिस्सन्ति एत्थ, एतेन, एतस्मा वा अत्तत्थपरत्थादयोति आगमो, आगमो च सो वरो चाति **आगमवरो,** आगमसम्मतेहि वा वरोति **आगमवरो,** तस्स। बुद्धानं अनुबुद्धा **बुद्धानुबुद्धा,** बुद्धानं सच्चपटिवेधं अनुगम्म पटिविद्धसच्चा अग्गसावकादयो अरिया। तेहि अत्थसंवण्णनावसेन, गुणसंवण्णनावसेन च संवण्णितस्स। अथ वा बुद्धा च अनुबुद्धा च **बुद्धानुबुद्धा**ति योजेतब्बं। सम्मासम्बुद्धेनेव हि तिण्णम्पि पिटकानं अत्थवण्णनाक्कमो भासितो, या "पकिण्णकदेसना"ति वुच्चति, ततो सङ्गायनादिवसेन सावकेहीति आचरिया वदन्ति।

सद्धावहगुणस्साति बुद्धादीसु पसादावहसम्पत्तिकस्स। अयञ्हि आगमो ब्रह्मजालादीसु (दी० नि० १.५-७, २६-२८) सीलदिट्ठादीनं अनवसेसनिद्देसादिवसेन, महापदानादीसु (दी० नि० २.३-५) पुरिमबुद्धानम्पि गुणनिद्देसादिवसेन, पाथिकसुत्तादीसु (दी० नि० ३.३,४) तित्थिये निमद्दित्वा अप्पटिवत्तियसीहनाद नदनादिवसेन, अनुत्तरियसुत्तादीसु (अ० नि० २.६.८) च विसेसतो बुद्धगुणविभावनेन रतनत्तये सातिसयप्पसादं आवहति। संवण्णनासु चायं आचरियस्स पकति, या तंतंसंवण्णनासु आदितो तस्स तस्स संवण्णेतब्बस्स धम्मस्स विसेसगुणकित्तनेन थोमना। तथा हि **पपञ्चसूदनीसारत्थप्पकासिनी-मनोरथपूरणीसु अट्ठसालिनी**आदीसु च यथाक्कमं "परवादमथनस्स ञाणप्पभेदजननस्स धम्मकथिकपुङ्गवानं विचित्तप्पटिभानजननस्स तस्स गम्भीरञाणेहि ओगाळ्हस्स अभिण्हसो नानानयविचित्तस्स अभिधम्मस्सा"तिआदिना थोमना कता।

अत्थो कथीयति एतायाति अत्थकथा, सा एव **अट्ठकथा,** त्थ-कारस्स **ट्ठ**-कारं कत्वा, यथा "दुक्खस्स पीळनट्ठो"ति (पटि० म० २.८)। **आदितो** तिआदिम्हि पठमसङ्गीतियं। छळभिञ्ञताय परमेन चित्तवसीभावेन समन्नागतत्ता, झानादीसु पञ्चविधवसितासब्भावतो **च वसिनो,** थेरा महाकस्सपादयो। तेसं **सतेहि पञ्चहि। या**ति या अट्ठकथा। **सङ्गीता**ति अत्थं पकासेतुं युत्तट्ठाने "अयं एतस्स अत्थो, अयं एतस्स अत्थो"ति सङ्गहेत्वा वुत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुसङ्गीता च यसत्थेरादीहि **पच्छापि** दुतियततियसङ्गीतीसु, इमिना अत्तनो संवण्णनाय आगमनसुद्धिं दस्सेति ।

सीहस्स लानतो गहणतो **सीहळो,** सीहकुमारो । तंवंसजातताय तम्बपण्णिदीपे खत्तियानं, तेसं निवासताय तम्बपण्णिदीपस्स च सीहळभावो वेदितब्बो । **आभता**ति जम्बुदीपतो आनीता । **अथा**ति पच्छा । अपरभागे हि असङ्करत्थं सीहळभासाय अट्ठकथा ठपिताति । तेनस्स मूलट्ठकथा सब्बसाधारणा न होतीति इदं अत्थप्पकासनं एकन्तेन करणीयन्ति दस्सेति । तेनेवाह – "**दीपवासीनमत्थाया**"ति । तत्थ **दीपवासीन**न्ति जम्बुदीपवासीनं । **दीपवासीन**न्ति वा सीहळदीपवासीनं अत्थाय सीहळभासाय ठपिताति योजना ।

अपनेत्वानाति कञ्चुकसदिसं सीहळभासं अपनेत्वा । **ततो**ति अट्ठकथातो । **अह**न्ति अत्तानं निद्दिसति । **मनोरमं भास**न्ति मागधभासं । सा हि सभावनिरुत्तिभूता पण्डितानं मनं रमयतीति । तेनेवाह – "**तन्तिनयानुच्छविक**"न्ति, पाळिगतिया अनुलोमिकं पाळिभासायानुविधायिनिन्ति अत्थो । **विगतदोस**न्ति असभावनिरुत्तिभासन्तररहितं ।

समयं अविलोमेन्तोति सिद्धन्तं अविरोधेन्तो, एतेन अत्थदोसाभावमाह । अविरुद्धत्ता एव हि थेरवादापि इध पकासियिस्सन्ति । **थेरवंसपदीपान**न्ति थिरेहि सीलक्खन्धादीहि समन्नागतत्ता थेरा, महाकस्सपादयो । तेहि आगता आचरियपरम्परा थेरवंसो, तप्परियापन्ना हुत्वा आगमाधिगमसम्पन्नत्ता पञ्ञापज्जोतेन तस्स समुज्जलनतो **थेरवंसपदीपा,** महाविहारवासिनो थेरा, तेसं । विविधेहि आकारेहि निच्छीयतीति विनिच्छयो, गण्ठिट्ठानेसु खीलमद्दनाकारेन पवत्ता विमतिच्छेदकथा । सुट्ठु निपुणो सण्हो विनिच्छयो एतेसन्ति **सुनिपुणविनिच्छया** । अथ वा विनिच्छिनोतीति विनिच्छयो, यथावुत्तविसयं ञाणं । सुट्ठु निपुणो छेको विनिच्छयो एतेसन्ति **सुनिपुणविनिच्छया,** एतेन महाकस्सपादिथेरपरम्पराभतो, ततोयेव च अविपरीतो सण्हसुखुमो महाविहारवासीनं विनिच्छयोति तस्स पमाणभूततं दस्सेति ।

सुजनस्स चाति **च**-सद्दो सम्पिण्डनत्थो, तेन न केवलं जम्बुदीपवासीनमेव अत्थाय, अथ खो साधुजनतोसनत्थञ्चाति दस्सेति, तेन च तम्बपण्णिदीपवासीनम्पि अत्थायाति अयमत्थो सिद्धो होति, उग्गहणादिसुकरताय तेसम्पि बहुपकारत्ता । **चिरट्ठितत्थ**न्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिरट्ठितिअत्थं, चिरकालट्ठितियाति अत्थो। इदञ्हि अत्थप्पकासनं अविपरीतब्यञ्जनसुनिक्खेपस्स अत्थसुनयस्स च उपायभावतो सद्धम्मस्स चिरट्ठितिया संवत्तति। वुत्तञ्हेतं भगवता –

"द्वेमे, भिक्खवे, धम्मा सद्धम्मस्स ठितिया असम्मोसाय अनन्तरधानाय संवत्तन्ति। कतमे द्वे? सुनिक्खत्तञ्च पदब्यञ्जनं, अत्थो च सुनीतो"ति (अ० नि० १.२.२१)।

यं अत्थवण्णनं कत्तुकामो, तस्सा महत्तं परिहरितुं **"सीलकथा"**तिआदि वुत्तं। तेनेवाह – **"न तं इध विचारयिस्सामी"**ति। अथ वा यं अट्ठकथं कत्तुकामो, तदेकदेसभावेन विसुद्धिमग्गो च गहेतब्बोति कथिकानं उपदेसं करोन्तो तत्थ विचारितधम्मे उद्देसवसेन दस्सेति **"सीलकथा"** तिआदिना। तत्थ **सीलकथा**ति चारित्तवारित्तादिवसेन सीलवित्थारकथा। **धुतधम्मा**ति पिण्डपातिकङ्गादयो (विसुद्धि० १.२२; थेरगा० अट्ठ० २.८४५, ८४९) तेरस किलेसधुननकधम्मा। **कम्मट्ठानानि सब्बानी**ति पाळियं आगतानि अट्ठतिंस, अट्ठकथायं द्वेति निरवसेसानि योगकम्मस्स भावनाय पवत्तिट्ठानानि। **चरियाविधानसहितो**ति रागचरितादीनं सभावादिविधानेन सहितो। **झानानि** चत्तारि रूपावचरज्झानानि, **समापत्तियो** चतस्सो अरूपसमापत्तियो। अट्ठपि वा पटिलद्धमत्तानि **झानानि,** समापज्जनवसीभावप्पत्तिया **समापत्तियो। झानानि** वा रूपारूपावचरज्झानानि, **समापत्तियो** फलसमापत्तिनिरोधसमापत्तियो।

लोकियलोकुत्तरभेदा छ अभिञ्ञायो **सब्बा अभिञ्ञायो।** ञाणविभङ्गादीसु आगतनयेन एकविधादिना पञ्ञाय सङ्कलेत्वा सम्पिण्डेत्वा निच्छयो **पञ्ञासङ्कलननिच्छयो।**

पच्चयधम्मानं हेतादीनं पच्चयुप्पन्नधम्मानं हेतुपच्चयादिभावो पच्चयाकारो, तस्स देसना **पच्चयाकारदेसना,** पटिच्चसमुप्पादकथाति अत्थो। सा पन घनविनिब्भोगस्स सुदुक्करताय सण्हसुखुमा, निकायन्तरलद्धिसङ्कररहिता, एकत्तनयादिसहिता च तत्थ विचारिताति आह – **"सुपरिसुद्धनिपुणनया"**ति। पटिसम्भिदादीसु आगतनयं अविस्सज्जेत्वाव विचारितत्ता **अविमुत्ततन्ति मग्गा।**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इति पन सब्बन्ति इति-सद्दो परिसमापने, **पन**-सद्दो वचनालङ्कारे, एतं सब्बन्ति अत्थो। **इधाति** इमिस्सा अट्ठकथायं। **न विचारयिस्सामि,** पुनरुत्तिभावतोति अधिप्पायो।

इदानि तस्सेव अविचारणस्स एकन्तकारणं निद्धारेन्तो **"मज्झे विसुद्धिमग्गो"**तिआदिमाह। तत्थ **"मज्झे ठत्वा"**ति एतेन मज्झेभावदीपनेन विसेसतो चतुन्नं आगमानं साधारणट्ठकथा विसुद्धिमग्गो, न सुमङ्गलविलासिनीआदयो विय असाधारणट्ठकथाति दस्सेति। "विसेसतो"ति इदं विनयाभिधम्मानम्पि विसुद्धिमग्गो यथारहं अत्थवण्णना होति येवाति कत्वा वुत्तं।

इच्चेवाति इति एव। **तम्पी**ति विसुद्धिमग्गम्पि। **एताया**ति सुमङ्गलविलासिनिया। एत्थ च "सीहळदीपं आभता"तिआदिना अत्थप्पकासनस्स निमित्तं दस्सेति, "दीपवासीनमत्थाय, सुजनस्स च तुट्ठत्थं, चिरट्ठितत्थञ्च धम्मस्सा"ति एतेन पयोजनं, अवसिट्ठेन करणप्पकारं। सीलकथादीनं अविचारणम्पि हि इध करणप्पकारो एवाति।

गन्थारम्भकथावण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निदानकथावण्णना

विभागवन्तानं सभावविभावनं विभागदस्सनवसेनेव होतीति पठमं ताव वग्गसुत्तवसेन विभागं दस्सेतुं **"तत्थ दीघागमो नामा"**तिआदिमाह। तत्थ **तत्था**ति "दीघस्स आगमवरस्स अत्थं पकासयिस्सामी"ति यदिदं वुत्तं, तस्मिं वचने। यस्स अत्थं पकासयिस्सामीति पटिञ्ञातं, सो **दीघागमो नाम** वग्गसुत्तवसेन एवं विभागोति अत्थो। अथ वा **तत्था**ति "दीघागमनिस्सितमत्थ"न्ति एतस्मिं वचने। यो दीघागमो वुत्तो, सो वग्गादिवसेन एदिसोति अत्थो। अत्तनो संवण्णनाय पठममहासङ्गीतियं निक्खित्तानुक्कमेनेव पवत्तभावदस्सनत्थं **"तस्स वग्गेसु...पे०... वुत्तं निदानमादी"**ति आह। कस्मा पन चतूसु आगमेसु दीघागमो पठमं सङ्गीतो, तत्थ च सीलक्खन्धवग्गो आदितो निक्खित्तो, तस्मिञ्च ब्रह्मजालन्ति? नायमनुयोगो कत्थचिपि न पवत्तति, अपि च सद्धावहगुणतो दीघनिकायो पठमं सङ्गीतो। सद्धा हि कुसलधम्मानं बीजं। यथाह– "सद्धा बीजं तपो वुट्ठी"ति, (सं० नि० १.१.१९७; सु० नि० ७७) सद्धावहगुणता चस्स दस्सितायेव। किञ्च कतिपयसुत्तसङ्गहतो, अप्पपरिमाणतो च गहणधारणादिसुखतो। तथाहेस चतुत्तिंससुत्तसङ्गहो चतुसट्ठिभाणवारपरिमाणो च। सीलकथाबाहुल्लतो पन सीलक्खन्धवग्गो पठमं निक्खित्तो। सीलञ्हि सासनस्स आदि, सीलपतिट्ठानत्ता सब्बगुणानं। तेनेवाह– "तस्मा तिह, त्वं भिक्खु, आदिमेव विसोधेहि कुसलेसु धम्मेसु। को चादि कुसलानं धम्मानं? सीलञ्च सुविसुद्धं"न्तिआदि (सं० नि० ३.५.३९५)। एतेन चस्स वग्गस्स अन्वत्थसञ्ञता वुत्ता होति। दिट्ठिविनिवेठनकथाभावतो पन सुत्तन्तपिटकस्स निरवसेसदिट्ठिविभजनं ब्रह्मजालं पठमं निक्खित्तन्ति दट्ठब्बं। तेपिटके हि बुद्धवचने ब्रह्मजालसदिसं दिट्ठिगतानि निग्गुम्बं निज्जटं कत्वा विभत्तसुत्तं नत्थीति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पठममहासङ्गीतिकथावण्णना

यस्सा पठममहासङ्गीतियं निक्खित्तानुक्कमेन संवण्णनं कत्तुकामो, तं, तस्सा च तन्तिआरुळ्हाय इध वचने कारणं दस्सेन्तो **"पठममहासङ्गीति...पे०... वेदितब्बा"**ति आह। तत्थ यथापच्चयं तत्थ तत्थ देसितत्ता, पञ्ञत्तत्ता च विप्पकिण्णानं धम्मविनयानं सङ्गहेत्वा गायनं कथनं सङ्गीति, एतेन तंतंसिक्खापदानं सुत्तानञ्च आदिपरियोसानेसु, अन्तरन्तरा च सम्बन्धवसेन ठपितं सङ्गीतिकारवचनं सङ्गहितं होति। महाविसयत्ता, पूजनीयत्ता च महती सङ्गीति महासङ्गीति, पठमा महासङ्गीति पठममहासङ्गीति, तस्सा पवत्तिकालो पठममहासङ्गीतिकालो, तस्मिं **पठममहासङ्गीतिकाले**। **निदानन्ति** च देसनं देसकालादिवसेन अविदितं विदितं कत्वा निदस्सेतीति निदानं। सत्तानं दस्सनानुत्तरियसरणादिपटिलाभहेतुभूतासु विज्जमानासुपि अञ्ञासु भगवतो किरियासु "बुद्धो बोधेय्य"न्ति (बुद्ध० वं० अट्ठ० रतनचङ्कमनकण्डवण्णना; चरिया० पि० उद्धानगाथावण्णना) पटिञ्ञाय अनुलोमतो वेनेय्यानं मग्गफलप्पत्तीनं हेतुभूता किरिया निप्परियायेन बुद्धकिच्चन्ति आह– **"धम्मचक्कप्पवत्तनञ्हि आदिं कत्वा"**ति। तत्थ सद्धिन्द्रियादिधम्मोयेव पवत्तनट्ठेन चक्कन्ति **धम्मचक्कं**। अथ वा चक्कन्ति आणा, धम्मतो अनपेतत्ता धम्मञ्च तं चक्कञ्चाति **धम्मचक्कं**, धम्मेन ञायेन चक्कन्तिपि **धम्मचक्कं**। यथाह–

> "धम्मञ्च पवत्तेति चक्कञ्चाति धम्मचक्कं, चक्कञ्च पवत्तेति धम्मञ्चाति धम्मचक्कं, धम्मेन पवत्तेतीति धम्मचक्कं, धम्मचरियाय पवत्तेतीति धम्मचक्क"न्तिआदि (पटि० म० २, ३९, ४१)।

"कतबुद्धकिच्चे"ति एतेन बुद्धकत्तब्बस्स कस्सचिपि असेसितभावं दस्सेति। ननु च सावकेहि विनीतापि विनेय्या भगवतायेव विनीता होन्ति, यतो सावकभासितं सुत्तं "बुद्धवचन"न्ति वुच्चति, सावकविनेय्या च न ताव विनीताति? नायं दोसो तेसं विनयनुपायस्स सावकेसु ठपितत्ता। तेनेवाह–

> "न तावाहं, पापिम, परिनिब्बायिस्सामि, याव मे भिक्खू न सावका भविस्सन्ति वियत्ता विनीता विसारदा बहुस्सुता धम्मधरा...पे०... उप्पन्नं परप्पवादं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सह धम्मेन सुनिग्गहितं निग्गहेत्वा सप्पाटिहारियं धम्मं देसेस्स''न्तिआदि (दी० नि० २.१६८; सं० नि० ३.५.८२२; उदा० ५१)।

''कुसिनाराय''न्तिआदि भगवतो परिनिब्बुतदेसकालविसेसदस्सनं ''अपरिनिब्बुतो भगवा''ति गाहस्स मिच्छाभावदस्सनत्थं, लोके जातसंवद्धभावदस्सनत्थञ्च। तथा हि मनुस्सभावस्स सुपाकटकरणत्थं महाबोधिसत्ता चरिमभवे दारपरिग्गहादीनिपि करोन्तीति। *उपादीयते कम्मकिलेसेहीति उपादि, विपाकक्खन्धा कटत्ता च रूपं। सो पन उपादि* किलेसाभिसङ्खारमारनिम्मथनेन निब्बानप्पत्तियं अनोस्सट्ठो, इध खन्धमच्चुमारनिम्मथनेन ओस्सट्ठो निस्सेसितोति अयं **अनुपादिसेसा,** निब्बानधातु। **निब्बानधातू**ति चेत्थ निब्बुतिमत्तं अधिप्पेतं, इत्थम्भूतलक्खणे चायं करणनिद्देसो। **''धातुभाजनदिवसे''**ति इदं न ''सन्निपतितान''न्ति एतस्स विसेसनं, उस्साहजननस्स पन विसेसनं, ''धातुभाजनदिवसे भिक्खूनं उस्साहं जनेसी''ति। धातुभाजनदिवसतो हि पुरिमपुरिमतरदिवसेसु भिक्खू समागताति। अथ वा धातुभाजनदिवसे **सन्निपतितानं** कायसामग्गीवसेन सहितानन्ति अत्थो। सङ्घस्स थेरो **सङ्घत्थेरो,** सो पन सङ्घो किं परिमाणानन्ति आह– **''सत्तन्नं भिक्खुसतसहस्सान''**न्ति। निच्चसापेक्खताय हि एदिसेसु समासो होतियेव, यथा– ''देवदत्तस्स गरुकुल''न्ति।

आयस्मा महाकस्सपो पुन दुल्लभभावं मञ्ञमानो भिक्खूनं उस्साहं जनेसीति सम्बन्धो। ''धातुभाजनदिवसे सन्निपतितान''न्ति इदं ''भिक्खूनं उस्साहं जनेसी''ति एत्थ ''भिक्खून''न्ति इमिनापि पदेन सम्बन्धनीयं। सुभद्देन वुड्ढपब्बजितेन वुत्तवचनमनुस्सरन्तोति सम्बन्धो। तत्थ **अनुस्सरन्तो** धम्मसंवेगवसेनाति अधिप्पायो। ''सद्धम्मं अन्तरधापेय्युं सङ्गायेय्यं...पे०... चिरट्ठितिकं तस्स किमञ्ञं आणण्यं भविस्सती''ति एतेसं पदानं ''इति चिन्तयन्तो''ति एतेन सम्बन्धो। तथा ''यञ्चाह''न्ति एतस्स ''अनुग्गहितो पसंसितो''ति एतेन सम्बन्धो। **यं पापभिक्खू**ति एत्थ **य**न्ति निपातमत्तं, कारणनिद्देसो वा, येन कारणेन अन्तरधापेय्युं, तदेतं कारणं विज्जतीति अत्थो, **अद्धनिय**न्ति अद्धानमग्गगामि, अद्धानक्खमन्ति अत्थो।

यञ्चाहन्ति एत्थ **य**न्ति यस्मा, येन कारणेनाति वुत्तं होति, किरियापरामसनं वा एतं, तेन ''अनुग्गहितो पसंसितो''ति एत्थ अनुग्गण्हनं पसंसनञ्च परामसति। **''चीवरे साधारणपरिभोगेना''**ति एत्थ ''अत्तना समसमट्ठपनेना''ति इध अत्तना-सद्दं आनेत्वा चीवरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्तना साधारणपरिभोगेनाति योजेतब्बं। यस्स येन हि सम्बन्धो दूरट्ठम्पि च तस्स तन्ति अथ वा भगवता चीवरे साधारणपरिभोगेन भगवता अनुग्गहितोति योजनीयं, एतस्सापि हि करणनिद्देसस्स सहयोगकत्तुत्थजोतकत्तसम्भवतो। **यावदे**ति यावदेव, यत्तकं कालं, यत्तके वा समापत्तिविहारे, अभिञ्ञाविहारे वा आकङ्खन्तो विहरामि चेव वोहरामि च, तथा कस्सपोपीति अत्थो। इदञ्च नवानुपुब्बविहारछळभिञ्ञभावसामञ्ञेन थुतिमत्तं वुत्तन्ति दट्ठब्बं। न हि आयस्मा महाकस्सपो भगवा विय देवसिकं चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससङ्ख्या समापत्तियो समापज्जति, यमकपाटिहारियादिवसेन वा अभिञ्ञायो वळञ्जेतीति। तेनेवाह– "नवानुपुब्बविहारछळभिञ्ञाप्पभेदे"ति। **तस्स किमञ्ञं आणण्यं भविस्सति,** अञ्ञत्र धम्मविनयसङ्गायनाति अधिप्पायो। **"ननु मं भगवा"**तिआदिना वुत्तमेवत्थं उपमावसेन विभावेति।

ततो परन्ति ततो भिक्खूनं उस्साहजननतो परतो। **पुरे अधम्मो दिप्पती**ति अपिनाम दिब्बति, याव अधम्मो धम्मं पटिबाहितुं समत्थो होति, ततो पुरेतरमेवाति अत्थो। आसन्ने अनिच्छिते हि अयं पुरे-सद्दो। **दिप्पती**ति च दिप्पिस्सति। पुरेसद्दसन्नियोगेन हि अनागतत्थे अयं वत्तमानप्पयोगो, यथा– "पुरा वस्सति देवो"ति।

"सकलनवङ्गसत्थुसासनपरियत्तिधरे...पे०... एकूनपञ्चसते परिग्गहेसी"ति एतेन सुक्खविपस्सकखीणासवपरियन्तानं यथावुत्तपुग्गलानं सतिपि आगमाधिगमसब्भावे सह पटिसम्भिदाहि पन तेविज्जादिगुणयुत्तानं आगमाधिगमसम्पत्तिया उक्कंसगतत्ता सङ्गीतिया बहुपकारतं दस्सेति। **इदं वुत्तं** सङ्गीतिक्खन्धके, (पारा० ४३७) **अपच्चक्खं नाम नत्थि** पगुणप्पवत्तिभावतो, समन्तपासादिकायं पन "असम्मुखा पटिग्गहितं नाम नत्थी"ति (पारा० अट्ठ० पठममहासङ्गीतिकथा) वुत्तं, तं "द्वे सहस्सानि भिक्खुतो"ति वुत्तम्पि भगवतो सन्तिके पटिग्गहितमेवाति कत्वा वुत्तं। **चतुरासीतिसहस्सानी**ति धम्मक्खन्धे सन्धायाह। **पवत्तिनो**ति पगुणानि। आनन्दत्थेरस्स नवप्पायाय परिसाय विब्भमनेन महाकस्सपत्थेरो एवमाह– **"न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी"**ति। तत्थ **मत्त**न्ति पमाणं। छन्दा आगमनं वियाति पदविभागो। **"किञ्चापि सेक्खो"**ति इदं न सेक्खानं अगतिगमनसब्भावेन वुत्तं, असेक्खानमेव पन उच्चिनितत्ताति दट्ठब्बं। पठममग्गेनेव हि चत्तारि अगतिगमनानि पहीयन्तीति। **"अभब्बो छन्दा...पे०... अगतिं गन्तु"**न्ति च धम्मसङ्गीतिया तस्स योग्यभावदस्सनेन विज्जमानगुणकथनं। **परियत्तो**ति अधीतो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गावो चरन्ति एत्थाति गोचरो, गोचरो विय **गोचरो,** भिक्खाचरणट्ठानं। **विसभागपुग्गलो** सुभद्दसदिसो। **सत्तिपञ्जरन्ति** सत्तिखग्गादिहत्थेहि पुरिसेहि मल्लराजूनं भगवतो धातुआरक्खकरणं सन्धायाह। **तं पलिबोधं छिन्दित्वा तं करणीयं करोतूति** सङ्गाहकेन छिन्दितब्बं छिन्दित्वा एकन्तकरणीयं करोतूति अत्थो। **महाजनन्ति** बहुजनं। **गन्धकुटिं वन्दित्वा** परिभोगचेतियभावतोति अधिप्पायो। **यथा तन्ति** यथा अञ्ञोपि यथावुत्तसभावो, एवन्ति अत्थो। **संवेजेसीति** "ननु भगवता पटिकच्चेव अक्खातं– 'सब्बेहेव पियेहि मनापेहि नानाभावो विनाभावो' "तिआदिना (दी० नि० २.१८३; सं० नि० ३.५.३७९; अ० नि० ३.१०.४८; चूळव० ४३७) संवेगं जनेसि। **उस्सन्नधातुकन्ति** उपचितदोसं। **भेसज्जमत्ताति** अप्पकं भेसज्जं। अप्पत्थो हि अयं मत्ता-सद्दो, "मत्तासुखपरिच्चागो"तिआदीसु (ध० प० २९०) विय। **दुतियदिवसेति** देवताय संवेजितदिवसतो, जेतवनविहारं पविट्ठदिवसतो वा दुतियदिवसे। आणाव चक्कं **आणाचक्कं**।

एतदग्गन्ति एसो अग्गो। लिङ्गविपल्लासेन हि अयं निद्देसो। **यदिदन्ति** च यो अयं, यदिदं खन्धपञ्चकन्ति वा योजेतब्बं। "पठमं आवुसो उपालि पाराजिकं कत्थ पञ्ञत्त"न्ति कस्मा वुत्तं, ननु तस्स सङ्गीतिया पुरिमकाले पठमभावो न युत्तोति? नो न युत्तो, भगवता पञ्ञत्तानुक्कमेन पातिमोक्खुद्देसानुक्कमेन च पठमभावस्स सिद्धत्ता। येभुय्येन हि तीणि पिटकानि भगवतो धरमानकाले ठितानुक्कमेनेव सङ्गीतानि, विसेसतो विनयाभिधम्मपिटकानीति दट्ठब्बं। **"वत्थुम्पि पुच्छी"**तिआदि 'कत्थ पञ्ञत्त'न्तिआदिना दस्सितेन सह तदवसिट्ठम्पि सङ्गहेत्वा दस्सनवसेन वुत्तं। **पठमपाराजिकेति** पठमपाराजिकपाळियं (पारा० २४), तेनेवाह– **"न हि तथागता एकब्यञ्जनम्पि निरत्थकं वदन्ती"**ति।

जातकादिके खुद्दकनिकायपरियापन्ने, येभुय्येन च धम्मनिद्देसभूते तादिसे अभिधम्मपिटके सङ्गण्हितुं युत्तं, न पन दीघनिकायादिप्पकारे सुत्तन्तपिटके, नापि पञ्ञत्तिनिद्देसभूते विनयपिटकेति दीघभाणका "जातकादीनं अभिधम्मपिटके सङ्गहो"ति वदन्ति। चरियापिटकबुद्धवंसानञ्चेत्थ अग्गहणं, जातकगतिकत्ता। मज्झिमभाणका पन "अट्ठुप्पत्तिवसेन देसितानं जातकादीनं यथानुलोमदेसनाभावतो तादिसे सुत्तन्तपिटके सङ्गहो युत्तो, न पन सभावधम्मनिद्देसभूते यथाधम्मसासने अभिधम्मपिटके"ति जातकादीनं सुत्तन्तपिटकपरियापन्नतं कथयन्ति। तत्थ च युत्तं विचारेत्वा गहेतब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं निमित्तपयोजनकालदेसकारककरणप्पकारेहि पठमं सङ्गीतिं दस्सेत्वा इदानि तत्थ ववत्थापितसिद्धेसु धम्मविनयेसु नानप्पकारकोसल्लत्थं एकविधादिभेदे दस्सेतुं "**एवमेत**"न्तिआदिमाह। तत्थ **विमुत्तिरस**न्ति विमुत्तिगुणं, विमुत्तिसम्पत्तिकं वा, अग्गफलनिप्फादनतो, विमुत्तिकिच्चं वा, किलेसानं अच्चन्तं विमुत्तिसम्पादनतो। केचि पन "विमुत्तिअस्साद"न्ति वदन्ति।

किञ्चापि अविसेसेन सब्बम्पि बुद्धवचनं किलेसविनयनेन विनयो, यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने अपायपतनादितो धारणेन धम्मो, इधाधिप्पेते पन धम्मविनये निद्धारेतुं "**तत्थ विनयपिटक**"न्तिआदिमाह। **अवसेसं बुद्धवचनं धम्मो,** खन्धादिवसेन सभावधम्मदेसना-बाहुल्लतो। अथ वा यदिपि धम्मोयेव विनयोपि, परियत्तियादिभावतो, विनयसद्दसन्निधाने पन भिन्नाधिकरणभावेन पयुत्तो धम्म-सद्दो विनयतन्तिविधुरं तन्तिं दीपेति यथा "पुञ्ञञाणसम्भारा, गोबलिबद्ध"न्ति च।

"**अनेकजातिसंसार**"न्ति अयं गाथा भगवता अत्तनो सब्बञ्ञुतञ्ञाणपदट्ठानं अरहत्तप्पत्तिं पच्चवेक्खन्तेन एकूनवीसतिमस्स पच्चवेक्खणञाणस्स अनन्तरं भासिता। तेनाह "**इदं पठमबुद्धवचन**"न्ति। इदं किर सब्बबुद्धेहि अविजहितं उदानं। अयमस्स सङ्खेपत्थो – अहं इमस्स अत्तभावगेहस्स कारकं तण्हावड्ढकिं **गवेसन्तो** येन ञाणेन तं दट्ठुं सक्का, तस्स बोधिञाणस्सत्थाय दीपङ्करपादमूले कताभिनीहारो एत्तकं कालं **अनेकजातिसंसारं** अनेकजातिसतसहस्ससङ्ख्यं संसारवट्टं **अनिब्बिसं** तं ञाणं अविन्दन्तो अलभन्तोयेव **सन्धाविस्सं** संसरिं। यस्मा जराब्याधिमरणमिस्सताय **जाति** नामेसा पुनप्पुनं उपगन्तुं **दुक्खा,** न च सा तस्मिं अदिट्ठे निवत्तति, तस्मा तं गवेसन्तो सन्धाविस्सन्ति अत्थो। **दिट्ठोसी**ति इदानि मया सब्बञ्ञुतञ्ञाणं पटिविज्झन्तेन दिट्ठो असि। **पुन गेह**न्ति पुन इमं अत्तभावसङ्खातं मम गेहं। **न काहसि** न करिस्ससि। तव **सब्बा** अवसेसाकिलेस**फासुका** मया **भग्गा**। इमस्स तया कतस्स अत्तभावगेहस्स **कूटं** अविज्जासङ्खातं कण्णिकमण्डलं **विसङ्खतं** विद्धंसितं। **विसङ्खारं** निब्बानं आरम्मणकरणवसेन **गतं** अनुपविट्ठं इदानि मम चित्तं, अहञ्च तण्हानं खयसङ्खातं अरहत्तमग्गं **अज्झगा** अधिगतो पत्तोस्मीति। अयं मनसा पवत्तितधम्मानमादि। "**यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा**"ति (उदा० १, २, ३) अयं पन वाचाय पवत्तितधम्मानं आदीति वदन्ति। अन्तोजप्पनवसेन किर भगवा "अनेकजातिसंसार"न्तिआदिमाह (ध० प० १५३)। "**पाटिपददिवसे**"ति इदं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"सब्बञ्ञुभावप्पत्तस्सा"ति न एतेन सम्बन्धितब्बं, "पच्चवेक्खन्तस्स उप्पन्ना"ति एतेन पन सम्बन्धितब्बं। विसाखपुण्णमायमेव हि भगवा पच्चूससमये सब्बञ्ञुतं पत्तोति।

वयधम्माति अनिच्चलक्खणमुखेन दुक्खानत्तलक्खणम्पि सङ्खारानं विभावेति "यदनिच्चं तं दुक्खं, यं दुक्खं तदनत्ता"ति (सं० नि० २.३.१५; पटि० म० २.१०) वचनतो। लक्खणत्तयविभावननयेनेव च तदारम्मणं विपस्सनं दस्सेन्तो सब्बतित्थियानं अविसयभूतं बुद्धावेणिकं चतुसच्चकम्मट्ठानाधिट्ठानं अविपरीतं निब्बानगामिनिप्पटिपदं पकासेतीति दट्ठब्बं। इदानि तत्थ सम्मापटिपत्तियं नियोजेति **"अप्पमादेन सम्पादेथा"**ति। अथ वा **"वयधम्मा सङ्खारा"**ति एतेन सङ्खेपेन संवेजेत्वा **"अप्पमादेन सम्पादेथा"**ति सङ्खेपेनेव निरवसेसं सम्मापटिपत्तिं दस्सेति। अप्पमादपदञ्हि सिक्खात्तयसङ्गहितं केवलपरिपुण्णं सासनं परियादियित्वा तिट्ठतीति।

पठमसङ्गीतियं असङ्गीतं सङ्गीतिक्खन्धककथावत्थुप्पकरणादि। केचि पन "सुभसुत्तम्पि (दी० नि० १.४४४) पठमसङ्गीतियं असङ्गीत"न्ति वदन्ति, तं पन न युज्जति। पठमसङ्गीतितो पुरेतरमेव हि आयस्मता आनन्देन जेतवने विहरन्तेन सुभस्स माणवस्स भासितन्ति।

दळ्हिकम्मसिथिलीकरणप्पयोजना यथाक्कमं पकतिसावज्जपण्णत्तिसावज्जेसु सिक्खापदेसु। **तेना**ति विविधनयत्तादिना। **एत**न्ति विविधविसेसनयत्ताति गाथावचनं। **एतस्सा**ति विनयस्स।

अत्तत्थपरत्थादिभेदेति यो तं सुत्तं सज्झायति, सुणाति, वाचेति, चिन्तेति, देसेति च, सुत्तेन सङ्गहितो सीलादिअत्थो तस्सापि होति, तेन परस्स साधेतब्बतो परस्सापि होतीति, तदुभयं तं सुत्तं **सूचेति** दीपेति। तथा दिट्ठधम्मिकसम्परायिके लोकियलोकुत्तरञ्चाति एवमादिभेदे अत्थे **आदि**-सद्देन सङ्गण्हाति। **अत्थ**-सद्दो चायं हितपरियायवचनं, 'न भासितत्थवचनं, यदि सिया, सुत्तं अत्तनोपि भासितत्थं सूचेति, परस्सापीति अयमत्थो वुत्तो सिया। सुत्तेन च यो अत्थो पकासितो सो तस्सेव होतीति, न तेन परत्थो सूचितो होति, तेन सूचेतब्बस्स परत्थस्स निवत्तेतब्बस्स अभावा अत्थगहणञ्च न कत्तब्बं। अत्तत्थपरत्थविनिम्मुत्तस्स भासितत्थस्स अभावा आदिग्गहणञ्च न कत्तब्बं। तस्मा यथावुत्तस्स हितपरियायस्स अत्थस्स सुत्ते असम्भवतो सुत्तधारस्स पुग्गलस्स वसेन अत्तत्थपरत्था वुत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ वा सुत्तं अनपेक्खित्वा ये अत्तत्थादयो अत्थप्पभेदा वुत्ता "न हञ्ञदत्थत्थिपसंसलाभा"ति एतस्स पदस्स निद्देसे (महानि० ६३; चूळनि० ८५) "अत्तत्थो, परत्थो, उभयत्थो, दिट्ठधम्मिको अत्थो, सम्परायिको अत्थो, उत्तानो अत्थो, गम्भीरो अत्थो, गूळ्हो अत्थो, पटिच्छन्नो अत्थो, नेय्यो अत्थो, नीतो अत्थो, अनवज्जो अत्थो, निक्किलेसो अत्थो, वोदानो अत्थो, परमत्थो"ति ते सुत्तं सूचेतीति अत्थो। इमस्मिं अत्थविकप्पे **अत्थ**-सद्दो भासितत्थपरियायोपि होति। एत्थ हि पुरिमका पञ्च अत्थप्पभेदा हितपरियाया, ततो परे छ भासितत्थभेदा, पच्छिमका पन उभयसभावा। तत्थ दुरधिगमताय विभावने अलद्धगाधो **गम्भीरो**। न विवटो **गूळ्हो**। मूलुदकादयो विय पंसुना अक्खरसन्निवेसादिना तिरोहितो **पटिच्छन्नो**। निद्धारेत्वा ञापेतब्बो **नेय्यो**। यथारुतवसेन वेदितब्बो **नीतो**। **अनवज्जनिक्किलेसवोदाना** परियायवसेन वुत्ता, कुसलविपाककिरियाधम्मवसेन वा। **परमत्थो** निब्बानं, धम्मानं अविपरीतसभावो एव वा। अथ वा "अत्तना च अप्पिच्छो होती"ति अत्तत्थं, "अप्पिच्छाकथञ्च परेसं कत्ता होती"ति परत्थं सूचेति। एवं "अत्तना च पाणातिपाता पटिविरतो होती"तिआदि (अ० नि० १.४.९९, २६५) सुत्तानि योजेतब्बानि। विनयाभिधम्मेहि च विसेसेत्वा सुत्त-सद्दस्स अत्थो वत्तब्बो। तस्मा वेनेय्यज्झासयवसप्पवत्ताय देसनाय अत्तहितपरहितादीनि सातिसयं पकासितानि होति तप्परभावतो, न आणाधम्मसभाववसप्पवत्तायाति इदमेव च **"अत्थानं सूचनतो सुत्त"**न्ति वुत्तं।

सुत्ते च आणाधम्मसभावा च वेनेय्यज्झासयं अनुवत्तन्ति, न विनयाभिधम्मेसु विय वेनेय्यज्झासयो आणाधम्मसभावे। तस्मा वेनेय्यानं एकन्तहितपटिलाभसंवत्तनिका सुत्तन्तदेसना होतीति **"सुवुत्ता चेत्था"**तिआदि वुत्तं। **पसवती**ति फलति। **"सुत्ताणा"**ति एतस्स अत्थं पकासेतुं **"सुट्ठु च ने तायती"**ति वुत्तं। अत्तत्थादिविधानेसु च सुत्तस्स पमाणभावो, अत्तत्थादीनञ्च सङ्गाहकत्तं योजेतब्बं तदत्थप्पकासनपधानत्ता सुत्तस्स। विनयाभिधम्मेहि विसेसनञ्च योजेतब्बं। **एतन्ति** "अत्थानं सूचनतो"तिआदिकं अत्थवचनं। **एतस्सा**ति सुत्तस्स।

अभिक्कमन्तीति एत्थ **अभि**-सद्दो कमनकिरियाय वुड्ढिभावं अतिरेकतं दीपेति, **अभिञ्ञाता अभिलक्खिता**ति एत्थ ञाणलक्खणकिरियानं सुपाकटताविसेसं, **अभिक्कन्तेना**ति एत्थ कन्तिया अधिकत्तं विसिट्ठतन्ति युत्तं किरियाविसेसकत्ता उपसग्गस्स। **अभिराजा अभिविनये**ति पन पूजितपरिच्छिन्नेसु राजविनयेसु **अभि**-सद्दो पवत्ततीति कथमेतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युज्जेय्याति ? पूजनपरिच्छेदनकिरियादीपनतो, ताहि च किरियाहि राजविनयानं युत्तत्ता। एत्थ हि अतिमालादीसु अति-सद्दो विय, अभि-सद्दो यथा सह साधनेन किरियं वदतीति अभिराजअभिविनय-सद्दा सिद्धा, एवं अभिधम्मसद्दे अभि-सद्दो सह साधनेन वुड्डियादिकिरियं दीपेतीति अयमत्थो दस्सितोति दट्ठब्बो।

भावनाफरणवुड्डीहि **वुड्डिमन्तोपि धम्मा वुत्ता। आरम्मणादीही**ति आरम्मणसम्पयुत्तकम्मद्वारपटिपदादीहि। **अविसिट्ठ**न्ति अञ्ञमञ्ञविसिट्ठेसु विनयसुत्ताभिधम्मेसु अविसिट्ठं समानं। तं पिटकसद्दन्ति अत्थो। **यथावुत्तेना**ति "एवं दुविधत्थेना"तिआदिना वुत्तप्पकारेन।

कथेतब्बानं अत्थानं देसकायत्तेन आणादिविधिना अतिसज्जनं पबोधनं **देसना।** सासितब्बपुग्गलगतेन यथापराधादिसासितब्बभावेन अनुसासनं विनयनं **सासनं।** कथेतब्बस्स संवरासंवरादिनो अत्थस्स कथनं वचनपटिबद्धताकरणं **कथा।** कथीयति वा एत्थाति **कथा।** संवरासंवरस्स कथा **संवरासंवरकथा।** एस नयो इतरेसुपि। **भेद-**सद्दो विसुं विसुं योजेतब्बो "देसनाभेदं सासनभेदं कथाभेदञ्च यथारहं परिदीपये"ति। **भेद**न्ति च नानत्तन्ति अत्थो। सिक्खा च पहानानि च गम्भीरभावो च **सिक्खाप्पहानगम्भीरभावं,** तञ्च परिदीपये। एत्थ **यथा**ति उपारम्भनिस्सरणधम्मकोसरक्खणहेतुपरियापुणनं सुप्पटिपत्ति दुप्पटिपत्तीति एतेहि पकारेहि। आणं पणेतुं अरहतीति **आणारहो** सम्मासम्बुद्धत्ता। वोहारपरमत्थानम्पि सब्भावतो आह **आणाबाहुल्लतो**ति। इतो परेसुपि एसेव नयो। **पचुरापराधा** सेय्यसकादयो। **अज्झासयो** आसयोव अत्थतो दिट्ठि, ञाणञ्च। वुत्तञ्चेतं –

"सस्सतुच्छेददिट्ठि च, खन्ति चेवानुलोमिके।
यथाभूतञ्च यं ञाणं, एतं आसयसद्दित"न्ति।। (विसुद्धि० टी० १.१३६)

अनुसया कामरागभवरागदिट्ठिपटिघविचिकिच्छामानाविज्जावसेन सत्त अनागता किलेसा, अतीता पच्चुप्पन्ना च तथेव वुच्चन्ति। न हि कालभेदेन धम्मानं सभावभेदो अत्थीति। **चरिया**ति छ मूलचरिया, अन्तरभेदेन अनेकविधा, संसग्गवसेन तेसट्ठि होन्ति। ते पन अम्हेहि **असम्मोहन्तरधानसुत्तटीकायं** विभागतो दस्सिता, अत्थिकेहि ततो गहेतब्बा। अथ वा **चरिया**ति चरितं, तं सुचरितदुच्चरितवसेन दुविधं। **अधिमुत्ति** नाम सत्तानं पुब्बपरिचयवसेन अभिरुचि, सा दुविधा हीनपणीतभेदेन। घनविनिब्भोगाभावतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठिमानतण्हावसेन **"अहं ममा"ति सञ्जिनो**। महन्तो संवरो **असंवरो**। बुड्ढिअत्थो हि अय'मकारो यथा "असेक्खा धम्मा"ति (ध० स० ११)।

तीसुपि चेतेसु एते धम्मत्थदेसना पटिवेधाति एत्थ तन्तिअत्थो तन्तिदेसना तन्तिअत्थपटिवेधो च तन्तिविसया होन्तीति विनयपिटकादीनं अत्थदेसनापटिवेधाधारभावो युत्तो, पिटकानि पन तन्ति येवाति तेसं धम्माधारभावो कथं युज्जेय्याति ? तन्तिसमुदायस्स अवयवतन्तिया आधारभावतो। अवयवस्स हि समुदायो आधारभावेन वुच्चति, यथा– "रुक्खे साखा"ति। धम्मादीनञ्च दुक्खोगाहभावतो तेहि विनयादयो गम्भीराति विनयादीनञ्च चतुब्बिधो गम्भीरभावो वुत्तो। तस्मा धम्मादयो एव दुक्खोगाहत्ता गम्भीरा, न विनयादयोति न चोदेतब्बमेतं समुखेन, विसयविसयीमुखेन च विनयादीनंयेव गम्भीरभावस्स वुत्तत्ता। धम्मो हि विनयादयो, तेसं विसयो अत्थो, धम्मत्थविसया च देसनापटिवेधोति। तत्थ पटिवेधस्स दुक्करभावतो धम्मत्थानं, देसनाञाणस्स दुक्करभावतो देसनाय च दुक्खोगाहभावो वेदितब्बो, पटिवेधस्स पन उप्पादेतुं असक्कुणेय्यत्ता, तब्बिसयञाणुप्पत्तिया च दुक्करभावतो दुक्खोगाहता वेदितब्बा।

"हेतुम्हि ञाणं धम्मपटिसम्भिदा"ति एतेन वचनेन धम्मस्स हेतुभावो कथं ञातब्बोति ? **"धम्मपटिसम्भिदा"**ति एतस्स समासपदस्स अवयवपदत्थं दस्सेन्तेन **"हेतुम्हि ञाण"**न्ति वुत्तत्ता। "धम्मे पटिसम्भिदा"ति एत्थ हि "धम्मे"ति एतस्स अत्थं दस्सेन्तेन "हेतुम्ही"ति वुत्तं, "पटिसम्भिदा"ति एतस्स च अत्थं दस्सेन्तेन "ञाण"न्ति। तस्मा हेतुधम्म-सद्दा एकत्था, ञाणपटिसम्भिदा-सद्दा चाति इममत्थं वदन्तेन साधितो धम्मस्स हेतुभावो, अत्थस्स हेतुफलभावो च एवमेव दट्ठब्बो।

यथाधम्मन्ति चेत्थ **धम्म**-सद्दो हेतुं हेतुफलञ्च सब्बं सङ्गण्हाति। सभाववाचको हेस, न परियत्तिहेतुभाववाचको, तस्मा **यथाधम्म**न्ति यो यो अविज्जासङ्खारादिधम्मो, तस्मिं तस्मिन्ति अत्थो। धम्मानुरूपं वा **यथाधम्मं**। देसनापि हि पटिवेधो विय अविपरीतसविसयविभावनतो धम्मानुरूपं पवत्तति, यतो 'अविपरीताभिलापो'ति वुच्चति। **धम्माभिलापो**ति अत्थब्यञ्जनको अविपरीताभिलापो, एतेन "तत्र धम्मनिरुत्ताभिलापे ञाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा"ति (विभं० ७१८) एत्थ वुत्तं सभावधम्मनिरुत्तिं दस्सेति, सद्दसभावत्ता देसनाय। तथा हि निरुत्तिपटिसम्भिदाय परित्तारम्मणादिभावो **पटिसम्भिदाविभङ्गपाळियं** (विभं० ७४९) वुत्तो। अट्ठकथायञ्च "तं सभावनिरुत्तिं सद्दं आरम्मणं कत्वा"तिआदिना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(विभं० अट्ठ० ६४२) सद्दारम्मणता दस्सिता। "इमस्स अत्थस्स अयं सद्दो वाचको"ति वचनवचनीये ववत्थपेत्वा तंतंवचनीय विभावनवसेन पवत्तितो हि सद्दो देसनाति। **"अनुलोमादिवसेन वा कथन"**न्ति एतेन तस्सा धम्मनिरुत्तिया अभिलापं कथनं तस्स वचनस्स पवत्तनं दस्सेति। **"अधिप्पायो"**ति एतेन "देसनाति पञ्ञत्ती"ति एतं वचनं धम्मनिरुत्ताभिलापं सन्धाय वुत्तं, न तब्बिनिमुत्तं पञ्ञत्तिं सन्धायाति दस्सेति।

ननु च "धम्मो तन्ती"ति इमस्मिं पक्खे धम्मस्स सद्दसभावत्ता धम्मदेसनानं विसेसो न सियाति? न, तेसं तेसं अत्थानं बोधकभावेन ञातो, उग्गहणादिवसेन च पुब्बे ववत्थापितो सद्दप्पबन्धो धम्मो, पच्छा परेसं अवबोधनत्थं पवत्तितो तदत्थप्पकासको सद्दो देसनाति। अथ वा यथावुत्तसद्दसमुट्ठापको चित्तुप्पादो देसना, मुसावादादयो विय। "वचनस्स पवत्तन"न्ति च यथावुत्तचित्तुप्पादवसेन युज्जति। सो हि वचनं पवत्तेति, तञ्च तेन पवत्तीयति देसीयति। "सो च लोकियलोकुत्तरो"ति एवं वुत्तं अभिसमयं येन पकारेन अभिसमेति, यं अभिसमेति, यो च तस्स सभावो, तेहि पाकटं कातुं **"विसयतो असम्मोहतो च अत्थानुरूपं धम्मेसू"**तिआदिमाह। तत्थ हि विसयतो अत्थादिअनुरूपं धम्मादीसु अवबोधो अविज्जादिधम्मसङ्खारादिअत्थतदुभयपञ्ञापनारम्मणो **लोकियो अभिसमयो,** असम्मोहतो अत्थादिअनुरूपं धम्मादीसु अवबोधो निब्बानारम्मणो मग्गसम्पयुत्तो यथावुत्तधम्मत्थपञ्ञत्तीसुसम्मोहविद्धंसनो **लोकुत्तरो अभिसमयो**ति। अभिसमयतो अञ्ञम्पि पटिवेधत्थं दस्सेतुं **"तेसं तेसं वा"**तिआदिमाह। 'पटिवेधनं पटिवेधो'ति इमिना हि वचनत्थेन अभिसमयो, 'पटिविज्झीयतीति पटिवेधो'ति इमिना तंतंरूपादिधम्मानं अविपरीतसभावो च "पटिवेधो"ति वुच्चतीति।

यथावुत्तेहि धम्मादीहि पिटकानं गम्भीरभावं दस्सेतुं **"इदानि यस्मा एतेसु पिटकेसू"**तिआदिमाह। **यो चेत्था**ति एतेसु तंतंपिटकगतेसु धम्मादीसु यो पटिवेधो, एतेसु च पिटकेसु तेसं तेसं धम्मानं यो अविपरीतसभावोति योजेतब्बं। दुक्खोगाहता च अविज्जासङ्खारादीनं धम्मत्थानं दुप्पटिविज्झताय, तेसं पञ्ञापनस्स दुक्करभावतो तंदेसनाय, पटिवेधनसङ्खातस्स पटिवेधस्स उप्पादनविसयिकरणानं असक्कुणेय्यत्ता, अविपरीतसभावसङ्खातस्स पटिवेधस्स दुविञ्ञेय्यताय एव वेदितब्बा।

यन्ति यं परियत्तिदुग्गहणं सन्धाय वुत्तं। **अत्थन्ति** भासितत्थं, पयोजनत्थञ्च। **न उपपरिक्खन्ती**ति न विचारेन्ति। **न निज्झानं खमन्ती**ति निज्झानपञ्ञं नक्खमन्ति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निज्झायित्वा पञ्ञाय दिस्वा रोचेत्वा गहेतब्बा न होन्तीति अधिप्पायो। **इती**ति एवं एताय परियत्तिया। **वादप्पमोक्खानिसंसा** अत्तनो उपरि परेहि आरोपितवादस्स निग्गहस्स पमोक्खप्पयोजना हुत्वा धम्मं परियापुणन्ति, **वादप्पमोक्खा** वा निन्दापमोक्खा। **यस्स चत्थाया**ति यस्स च सीलादिपूरणस्स अनुपादाविमोक्खस्स वा अत्थाय **धम्मं परियापुणन्ति** ञायेन परियापुणन्तीति अधिप्पायो। **अस्सा**ति अस्स धम्मस्स। **नानुभोन्ती**ति न विन्दन्ति। तेसं ते धम्मा दुग्गहितत्ता उपारम्भमानदब्बमक्खपलासादिहेतुभावेन **दीघरत्तं अहिताय दुक्खाय संवत्तन्ति।** भण्डागारे नियुत्तो भण्डागारिको, भण्डागारिको विय भण्डागारिको, धम्मरतनानुपालको। अञ्ञत्थं अनपेक्खित्वा भण्डागारिकस्सेव सतो परियत्ति **भण्डागारिकपरियत्ति।**

"**तासंयेवा**"ति अवधारणं पापुणितब्बानं छळभिञ्ञाचतुप्पटिसम्भिदादीनं विनये पभेदवचनाभावं सन्धाय वुत्तं। **वेरञ्जकण्डे** (पारा० १२) हि तिस्सो विज्जाव विभत्ता। दुतिये पन "**तासंयेवा**"ति अवधारणं चतस्सो पटिसम्भिदा अपेक्खित्वा कतं, न तिस्सो विज्जा। ता हि छसु अभिञ्ञासु अन्तोगधाति सुत्ते विभत्ता येवाति।

दुग्गहितं गण्हाति, "तथाहं भगवता धम्मं देसितं आजानामि, यथा तदेविदं विञ्ञाणं सन्धावति संसरति अनञ्ञ"न्तिआदिना (म० नि० १.३९६)। **धम्मचिन्त**न्ति धम्मसभावविचारणं, "चित्तुप्पादमत्तेनेव दानं होति, सयमेव चित्तं अत्तनो आरम्मणं होति, सब्बं चित्तं असभावधम्मारम्मण"न्ति च एवमादि। **तेस**न्ति तेसं पिटकानं।

एतन्ति एतं बुद्धवचनं। अत्थानुलोमतो **अनुलोमिको।** अनुलोमिकतंयेव विभावेतुं "**कस्मा पना**"तिआदि वुत्तं। **एकनिकायम्पी**ति एकसमूहम्पि। पोणिका चिक्खल्लिका च खत्तिया, तेसं निवासो **पोणिकनिकायो चिक्खल्लिकनिकायो** च।

नवप्पभेदन्ति एत्थ कथं नवप्पभेदं? सगाथकञ्हि सुत्तं गेय्यं, निग्गाथकञ्च सुत्तं वेय्याकरणं, तदुभयविनिमुत्तञ्च सुत्तं उदानादिविसेससञ्ञारहितं नत्थि, यं सुत्तङ्गं सिया, मङ्गलसुत्तादीनञ्च (खु० पा० ५.२; सु० नि० २२५) सुत्तङ्गसङ्गहो न सिया, गाथाभावतो, धम्मपदादीनं विय, गेय्यङ्गसङ्गहो वा सिया, सगाथकत्ता, सगाथवग्गस्स विय, तथा उभतोविभङ्गादीसु सगाथकप्पदेसानन्ति? वुच्चते –

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"सुत्तन्ति सामञ्ञविधि, विसेसविधयो परे।
सनिमित्ता निरुळ्हत्ता सहताञ्ञेन नाञ्ञतो"।। (सारत्थ० टी० १.पठममहासङ्गीतिकथावण्णना)

सब्बस्सापि हि बुद्धवचनस्स **सुत्तन्ति** अयं **सामञ्ञविधि।** तेनेवाह आयस्मा महाकच्चानो नेत्तियं– "नवविधसुत्तन्तपरियेट्ठी"ति (नेत्ति० सङ्गहवार)। "एत्तकं तस्स भगवतो सुत्तागतं सुत्तपरियापन्नं, (पाचि० २५५, १२४२) सकवादे पञ्चसुत्तसतानी"ति (ध० स० अट्ठ० निदानकथा; कथाव० अट्ठ० निदानकथा) एवमादि च एतस्स अत्थस्स साधकं।

विसेसविधयो परे सनिमित्ता तदेकदेसेसु गेय्यादयो विसेसविधयो तेन तेन निमित्तेन पतिट्ठिता। तथा हि गेय्यस्स सगाथकत्तं तब्भावनिमित्तं। लोकेपि हि ससिलोकं सगाथकं (नेत्ति० अट्ठ० १३) चुण्णियगन्थं 'गेय्य'न्ति वदन्ति। गाथाविरहे पन सति पुच्छं कत्वा विस्सज्जनभावो वेय्याकरणस्स तब्भावनिमित्तं। पुच्छाविस्सज्जनञ्हि 'ब्याकरण'न्ति वुच्चति, ब्याकरणमेव वेय्याकरणं। एवं सन्ते सगाथकादीनम्पि पुच्छं कत्वा विस्सज्जनवसेन पवत्तानं वेय्याकरणभावो आपज्जतीति? नापज्जति, गेय्यादिसञ्ञानं अनोकासभावतो, 'गाथाविरहे सती'ति विसेसितत्ता च। तथा हि धम्मपदादीसु केवलं गाथाबन्धेसु, सगाथकत्तेपि सोमनस्सञाणमयिकगाथायुत्तेसु, 'वुत्तञ्हेत'न्तिआदिवचनसम्बन्धेसु, अब्भुतधम्मपटिसंयुत्तेसु च सुत्तविसेसेसु यथाक्कमं गाथाउदानइतिवुत्तकअब्भुतधम्मसञ्ञा पतिट्ठिता, तथा सतिपि गाथाबन्धभावे भगवतो अतीतासु जातीसु चरियानुभावप्पकासकेसु जातकसञ्ञा, सतिपि पञ्हाविस्सज्जनभावे, सगाथकत्ते च केसुचि सुत्तन्तेसु वेदस्स लभापनतो वेदल्लसञ्ञा पतिट्ठिताति एवं तेन तेन सगाथकत्तादिना निमित्तेन तेसु तेसु सुत्तविसेसेसु गेय्यादिसञ्ञा पतिट्ठिताति विसेसविधयो सुत्तङ्गतो परे गेय्यादयो। यं पनेत्थ गेय्यङ्गादिनिमित्तरहितं, तं सुत्तङ्गं विसेससञ्ञापरिहारेन सामञ्ञसञ्ञाय पवत्तनतोति। ननु च सगाथकं सुत्तं गेय्यं, निग्गाथकं सुत्तं वेय्याकरणन्ति सुत्तङ्गं न सम्भवतीति चोदना तदवत्था वाति? न तदवत्था, सोधितत्ता। सोधितञ्हि पुब्बे गाथाविरहे सति पुच्छाविस्सज्जनभावो वेय्याकरणस्स तब्भावनिमित्तन्ति।

यञ्च वुत्तं– "गाथाभावतो मङ्गलसुत्तादीनं (खु० पा० ५.१, २, ३) सुत्तङ्गसङ्गहो न सिया"ति, तं न, **निरुळ्हत्ता।** निरुळ्हो हि मङ्गलसुत्तादीनं सुत्तभावो। न हि तानि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मपदबुद्धवंसादयो विय गाथाभावेन पञ्ञातानि, अथ खो सुत्तभावेन। तेनेव हि अट्ठकथायं "सुत्तनामक"न्ति नामग्गहणं कतं। यञ्च पन वुत्तं– "सगाथकत्ता गेय्यङ्गसङ्गहो सिया"ति, तदपि नत्थि, यस्मा **सहताञ्ञेन**। सह गाथाहीति हि सगाथकं। सहभावो नाम अत्थतो अञ्ञेन होति, न च मङ्गलसुत्तादीसु कथाविनिमुत्तो कोचि सुत्तपदेसो अत्थि, यो 'सह गाथाही'ति वुच्चेय्य, न च समुदायो नाम कोचि अत्थि, यदपि वुत्तं– "उभतोविभङ्गादीसु सगाथकप्पदेसानं गेय्यङ्गसङ्गहो सिया"ति तदपि न, अञ्ञतो। अञ्ञा एव हि ता गाथा जातकादिपरियापन्नत्ता। अतो न ताहि उभतोविभङ्गादीनं गेय्यङ्गभावोति। एवं सुत्तादीनं अङ्गानं अञ्ञमञ्ञसङ्कराभावो वेदितब्बो।

"अयं धम्मो...पे०... अयं विनयो, इमानि चतुरासीति धम्मक्खन्धसहस्सानी"ति बुद्धवचनं धम्मविनयादिभेदेन ववत्थपेत्वा सङ्गायन्तेन महाकस्सपप्पमुखेन वसिगणेन अनेकच्छरियपातुभावपटिमण्डिताय सङ्गीतिया इमस्स दीघागमस्स पठममज्झिमबुद्धवचनादिभावो ववत्थापितोति दस्सेति, **"एवमेतं अभेदतो"**तिआदिना।

निदानकथावण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. ब्रह्मजालसुत्तवण्णना

परिब्बाजककथावण्णना

एवं पठममहासङ्गीतिं दस्सेत्वा यदत्थं सा इध दस्सिता, इदानि तं निगमनवसेन दस्सेतुं "**इमिस्सा**"तिआदिमाह।

१. एत्तावता च ब्रह्मजालस्स साधारणतो बाहिरनिदानं दस्सेत्वा इदानि अब्भन्तरनिदानं संवण्णेतुं "**तत्थ एव**"न्तिआदि वुत्तं। अथ वा छहि आकारेहि संवण्णना कातब्बा सम्बन्धतो पदतो पदविभागतो पदत्थतो अनुयोगतो परिहारतो चाति। तत्थ **सम्बन्धो** नाम देसनासम्बन्धो। यं लोकिया "उम्मुग्घातो"ति वदन्ति। सो पन पाळिया निदानपाळिवसेन, निदानपाळिया पन सङ्गीतिवसेन वेदितब्बोति पठममहासङ्गीतिं दस्सेन्तेन निदानपाळिया सम्बन्धस्स दस्सितत्ता पदादिवसेन संवण्णनं करोन्तो "**एवन्ति निपातपद**"न्तिआदिमाह। "**मेतिआदीनी**"ति एत्थ अन्तरा-सद्द-च-सद्दानं निपातपदभावो, वत्तब्बो, न वा वत्तब्बो तेसं नयग्गहणेन गहितत्ता, तदवसिट्ठानं आपटि-सद्दानं आदि-सद्देन सङ्गण्हनतो। "**पदविभागो**"ति पदानं विसेसो, न पन पदविग्गहो। अथ वा पदानि च पदविभागो च **पदविभागो,** पदविग्गहो च पदविभागो च **पदविभागो**ति वा एकसेसवसेन पदपदविग्गहापि पदविभाग सद्देन वुत्ताति वेदितब्बं। तत्थ पदविग्गहो "भिक्खूनं सङ्घो"तिआदिभेदेसु पदेसु दट्ठब्बो।

अत्थतोति पदत्थतो। तं पन पदत्थं अत्थुद्धारक्कमेन पठमं एवं-सद्दस्स दस्सेन्तो "**एवंसद्दो तावा**"तिआदिमाह। **अवधारणादी**ति एत्थ **आदि**-सद्देन इदमत्थपुच्छापरिमाणादिअत्थानं सङ्गहो दट्ठब्बो। तथा हि "एवंगतानि, एवंविधो, एवमाकारो"तिआदीसु इदं-सद्दस्स अत्थे एवं-सद्दो। गत-सद्दो हि पकारपरियायो, तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधाकार-सद्दा च। तथा हि विधयुत्तगत-सद्दे लोकिया पकारत्थे वदन्ति। "एवं नु खो, न नु खो, किं नु खो, कथं नु खो"ति, "एवं सु ते सुन्हाता सुविलित्ता कप्पितकेसमस्सु, आमुत्तमालाभरणा ओदातवत्थवसना पञ्चहि कामगुणेहि समप्पिता समङ्गीभूता परिचारेन्ति, सेय्यथापि त्वं एतरहि साचरियकोति ? नो हिदं भो गोतमा"ति च आदीसु पुच्छायं। "एवं लहुपरिवत्तं, एवं आयुपरियन्तो"ति च आदीसु परिमाणे। ननु च "एवं नु खो, एवं सु ते, एवं आयुपरियन्तो"ति एत्थ एवं-सद्देन पुच्छनाकारपरिमाणाकारानं वुत्तत्ता आकारत्थो एव एवं-सद्दो ति ? न, विसेससब्भावतो। आकारमत्तवाचको हेत्थ आकारत्थोति अधिप्पेतो, यथा "एवं ब्याखोतिआदीसु पन न आकारविसेसवाचको एवञ्च कत्वा "एवं जातेन मच्चेना"तिआदीनि उपमादीसु उदाहरणानि उपपन्नानि होन्ति। तथा हि "यथापि...पे०... बहु"न्ति ? एत्थ पुप्फरासिट्ठानियतो मनुस्सुपपत्तिसप्पुरिसूपनिस्सयसद्धम्मसवनयोनिसोमनसिकारभोगसम्पत्ति-आदिदानादिपुञ्ञकिरियाहेतुसमुदायतो सोभासुगन्धतादिगुणयोगतो मालागुणसदिसियो पहूता पुञ्ञकिरिया मरितब्बसभावताय मच्चेन सत्तेन कत्तब्बाति जोदितत्ता पुप्फरासिमालागुणाव उपमा, तेसं उपमाकारो यथा-सद्देन अनियमतो वुत्तोति एवं-सद्दो उपमाकारनिगमनत्थोति वत्तुं युत्तं। सो पन उपमाकारो नियमियमानो अत्थतो उपमाव होतीति आह **"उपमायं आगतो"**ति।

तथा **एवं** इमिना आकारेन **"अभिक्कमितब्ब"**न्तिआदिना उपदिसियमानाय समणसारुप्पाय आकप्पसम्पत्तिया यो तत्थ उपदिसनाकारो, सो अत्थतो उपदेसोयेवाति वुत्तं **"एवं ते...पे०... उपदेसे"**ति। तथा **एवमेतं भगवा, एवमेतं सुगता**ति एत्थ च भगवता यथावुत्तमत्थं अविपरीततो जानन्तेहि कतं तत्थ संविज्जमानगुणानं पकारेहि हंसनं उदग्गताकरणं **सम्पहंसनं,** यो तत्थ सम्पहंसनाकारोति योजेतब्बं। **एवमेवं पनायन्ति** एत्थ गरहणाकारोति योजेतब्बं। सो च गरहणाकारो "वसली"तिआदि खुंसनसद्दसन्निधानतो इध एवं-सद्देन पकासितोति विञ्ञायति। यथा चेत्थ, एवं उपमाकारादयोपि उपमादिवसेन वुत्तानं पुप्फरासिआदिसद्दानं सन्निधानतोति दट्ठब्बं। **एवञ्च वदेही**ति "यथाहं वदामि, एवं समणं आनन्दं वदेही"ति वदनाकारो इदानि वत्तब्बो एवं-सद्देन निदस्सीयतीति निदस्सनत्थो वुत्तो। **एवं नो**ति एत्थापि तेसं यथावुत्तधम्मानं अहितदुक्खावहभावे सन्निट्ठानजननत्थं अनुमतिग्गहणवसेन "संवत्तन्ति, नो वा, कथं वा एत्थ होती"ति पुच्छाय कताय "एवं नो एत्थ होती"ति वुत्तत्ता तदाकारसन्निट्ठानं एवं-सद्देन विभावितन्ति विञ्ञायति, सो पन तेसं धम्मानं अहिताय दुक्खाय संवत्तनाकारो नियमियमानो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवधारणत्थो होतीति आह **"एवं नो एत्थ होतीति आदीसु अवधारणे"**ति। **एवं भन्ते**ति पन धम्मस्स साधुकं सवनमनसिकारे सन्नियोजितेहि भिक्खूहि अत्तनो तत्थ ठितभावस्स पटिजाननवसेन वुत्तत्ता एत्थ एवं-सद्दो वचनसम्पटिच्छनत्थो वुत्तो, तेन एवं भन्ते, साधु भन्ते, सुट्ठु भन्तेति वुत्तं होति।

नानानयनिपुणन्ति एकत्तनानत्तअब्यापारएवंधम्मतासङ्खाता, नन्दियावट्ट तिपुक्खल-सीहविक्कीळितअङ्कुसदिसालोचनसङ्खाता वा आधारादिभेदवसेन नानाविधा नया नानानया, नया वा पाळिगतियो, ता च पञ्ञत्तिअनुपञ्ञत्तिआदिवसेन संकिलेस-भागियादिलोकियादितदुभयवोमिस्सतादिवसेन कुसलादिवसेन खन्धादिवसेन सङ्गहादिवसेन समयविमुत्तादिवसेन ठपनादिवसेन कुसलमूलादिवसेन तिकपट्ठानादिवसेन च नानप्पकाराति नानानया, तेहि निपुणं सण्हसुखुमन्ति नानानयनिपुणं। आसयोव अज्झासयो, ते च सस्सतादिभेदेन, तत्थ च अप्परजक्खतादिवसेन अनेका, अत्तज्झासयादयो एव वा समुट्ठानं उप्पत्तिहेतु एतस्साति **अनेकज्झासयसमुट्ठानं। अत्थब्यञ्जनसम्पन्न**न्ति अत्थब्यञ्जनपरिपुण्णं उपनेतब्बाभावतो, सङ्कासनपकासनविवरणविभजनउत्तानीकरणपञ्ञत्तिवसेन छहि अत्थपदेहि, अक्खरपदब्यञ्जनाकारनिरुत्तिनिद्देसवसेन छहि ब्यञ्जनपदेहि च समन्नागतन्ति वा अत्थो दट्ठब्बो।

विविधपाटिहारियन्ति एत्थ पाटिहारियपदस्स वचनत्थं "पटिपक्खहरणतो रागादिकिलेसापनयनतो पाटिहारिय"न्ति वदन्ति। भगवतो पन पटिपक्खा रागादयो न सन्ति, ये हरितब्बा। पुथुज्जनानम्पि विगतूपक्किलेसे अट्ठगुणसमन्नागते चित्ते हतपटिपक्खे इद्धिविधं पवत्तति, तस्मा तत्थ पवत्तवोहारेन च न सक्का इध "पाटिहारिय"न्ति वत्तुं। सचे पन महाकारुणिकस्स भगवतो वेनेय्यगता च किलेसा पटिपक्खा, तेसं हरणतो "पाटिहारिय"न्ति वुत्तं, एवं सति युत्तमेतं। अथ वा भगवतो च सासनस्स च पटिपक्खा तित्थिया, तेसं हरणतो **पाटिहारियं।** ते हि दिट्ठिहरणवसेन, दिट्ठिप्पकासने असमत्थभावेन च इद्धिआदेसनानुसासनीहि हरिता अपनीता होन्तीति। **"पटी"**ति वा अयं सद्दो "पच्छा"ति एतस्स अत्थं बोधेति "तस्मिं पटिपविट्ठम्हि, अञ्ञो आगञ्छि ब्राह्मणो"तिआदीसु विय, तस्मा समाहिते चित्ते, विगतूपक्किलेसे च कतकिच्चेन पच्छा हरितब्बं पवत्तेतब्बन्ति पटिहारियं, अत्तनो वा उपक्किलेसेसु चतुत्थज्झानमग्गेहि हरितेसु पच्छा हरणं पटिहारियं। इद्धिआदेसनानुसासनियो च विगतूपक्किलेसेन, कतकिच्चेन च सत्तहितत्थं पुन पवत्तेतब्बा, हरितेसु च अत्तनो उपक्किलेसेसु परसत्तानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपक्किलेसहरणानि होन्तीति पटिहारियानि भवन्ति। पटिहारियमेव **पाटिहारियं**। पटिहारिये वा इद्धिआदेसनानुसासनीसमुदाये भवं एकेकं **"पाटिहारिय"**न्ति वुच्चति। पटिहारियं वा चतुत्थज्झानं मग्गो च पटिपक्खहरणतो, तत्थ जातं, तस्मिं वा निमित्तभूते, ततो वा आगतन्ति **पाटिहारियं**। तस्स पन इद्धिआदिभेदेन विसयभेदेन च बहुविधस्स भगवतो देसनाय लब्भमानत्ता आह "विविधपाटिहारिय"न्ति।

न अञ्ञथाति भगवतो सम्मुखा सुताकारतो न अञ्ञथाति अत्थो, न पन भगवतो देसिताकारतो। अचिन्तेय्यानुभावा हि भगवतो देसना। एवञ्च कत्वा "सब्बप्पकारेन को समत्थो विञ्ञातु"न्ति इदं वचनं समत्थितं होति। धारणबलदस्सनञ्च न विरुज्झति सुताकाराविरज्झनस्स अधिप्पेतत्ता। न हेत्थ अत्थन्तरतापरिहारो द्विन्नम्पि अत्थानं एकविसयत्ता, इतरथा थेरो भगवतो देसनाय सब्बथा पटिग्गहणे समत्थो असमत्थो चाति आपज्जेय्याति।

"यो परो न होति, सो अत्ता"ति एवं वुत्ताय नियकज्झत्तसङ्खाताय ससन्ततियं वत्तनतो तिविधोपि मे-सद्दो किञ्चापि एकस्मिंयेव अत्थे दिस्सति, करणसम्पदानसामिनिद्देसवसेन पन विज्जमानभेदं सन्धायाह **"मे-सद्दो तीसु अत्थेसु दिस्सती"**ति।

किञ्चापि उपसग्गो किरियं विसेसेति, जोतकभावतो पन सतिपि तस्मिं सुत-सद्दो एव तं तमत्थं अनुवदतीति अनुपसग्गस्स सुत-सद्दस्स अत्थुद्धारे सउपसग्गस्स गहणं न विरुज्झतीति दस्सेन्तो **"सउपसग्गो च अनुपसग्गो चा"**ति आह। **अस्साति** सुत-सद्दस्स। कम्मभावसाधनानि इध सुत-सद्दे सम्भवन्तीति वुत्तं **"उपधारितन्ति वा उपधारणन्ति वा अत्थो"**ति। **मयाति अत्थे सतीति** यदा मेसद्दस्स कत्तुवसेन करणनिद्देसो, तदाति अत्थो। **ममाति अत्थे सतीति** यदा सम्बन्धवसेन सामिनिद्देसो, तदा।

सुतसद्दसन्निधाने पयुत्तेन एवंसद्देन सवनकिरियाजोतकेन भवितब्बन्ति वुत्तं **"एवन्ति सोतविञ्ञाणादिविञ्ञाणकिच्चनिदस्सन"**न्ति। **आदि**-सद्देन सम्पटिच्छनादीनं पञ्चद्वारिकविञ्ञाणानं तदभिनिहटानञ्च मनोद्वारिकविञ्ञाणानं गहणं वेदितब्बं। सब्बेसम्पि वाक्यानं एवकारत्थसहितत्ता **"सुत"**न्ति एतस्स सुतं एवाति अयमत्थो लब्भतीति आह **"अस्सवनभावपटिक्खेपतो"**ति, एतेन अवधारणेन निराकतं दस्सेति। यथा च सुतं सुतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवाति नियमेतब्बं, तं सम्मा सुतं होतीति आह **"अनूनाधिकाविपरीतग्गहणनिदस्सन"**न्ति। अथ वा "सद्दन्तरत्थापोहनवसेन सद्दो अत्थं वदती"ति **सुत**न्ति असुतं न होतीति अयमेतस्स अत्थोति वुत्तं **"अस्सवनभावपटिक्खेपतो"**ति, इमिना दिट्ठादिविनिवत्तनं करोति। इदं वुत्तं होति। न इदं मया दिट्ठं, न सयम्भुञाणेन सच्छिकतं, अथ खो सुतं, तञ्च खो सम्मदेवाति। तेनेवाह "अनूनाधिकाविपरीतग्गहणनिदस्सन"न्ति। अवधारणत्थे वा एवं-सद्दे अयं अत्थयोजना करीयतीति तदपेक्खस्स सुत-सद्दस्स अयमत्थो वुत्तो **"अस्सवनभावपटिक्खेपतो"**ति। तेनेव आह "अनूनाधिकाविपरीतग्गहणनिदस्सन"न्ति। सवनसद्दो चेत्थ कम्मत्थो वेदितब्बो सुय्यतीति।

एवं सवनहेतुसुणन्तपुग्गलसवनविसेसवसेन पदत्तयस्स एकेन पकारेन अत्थयोजनं दस्सेत्वा इदानि पकारन्तरेहिपि तं दस्सेतुं **"तथा एव"**न्तिआदि वुत्तं। तत्थ **तस्सा**ति या सा भगवतो सम्मुखा धम्मस्सवनाकारेन पवत्ता मनोद्वारविञ्ञाणवीथि, तस्सा। सा हि नानप्पकारेन आरम्मणे पवत्तितुं समत्था। तथा च वुत्तं **"सोतद्वारानुसारेना"**ति। **नानप्पकारेना**ति वक्खमानानं अनेकविहितानं ब्यञ्जनत्थग्गहणानानाकारेन, एतेन इमिस्सा योजनाय आकारत्थो एवं-सद्दो गहितोति दीपेति। **पवत्तिभावप्पकासन**न्ति पवत्तिया अत्थिभावप्पकासनं। **"सुतन्ति धम्मप्पकासन"**न्ति यस्मिं आरम्मणे वुत्तप्पकारा विञ्ञाणवीथि नानप्पकारेन पवत्ता, तस्स धम्मत्ता वुत्तं, न सुतसद्दस्स धम्मत्थत्ता। वुत्तस्सेवत्थस्स पाकटीकरणं **"अयञ्हेत्था"**तिआदि। तत्थ **विञ्ञाणवीथिया**ति करणत्थे करणवचनं। **मया**ति कत्तुअत्थे।

"एवन्ति निद्दिसितब्बप्पकासन"न्ति निदस्सनत्थं एवं-सद्दं गहेत्वा वुत्तं निदस्सेतब्बस्स निद्दिसितब्बत्ताभावाभावतो, तेन एवं-सद्देन सकलम्पि सुत्तं पच्चामट्ठन्ति दस्सेति। सुत-सद्दस्स किरियासद्दत्ता, सवनकिरियाय च साधारणविञ्ञाणप्पबन्धपटिबद्धत्ता तत्थ च पुग्गलवोहारोति वुत्तं **"सुतन्ति पुग्गलकिच्चप्पकासन"**न्ति। न हि पुग्गलवोहाररहिते धम्मप्पबन्धे सवनकिरिया लब्भतीति।

"यस्स चित्तसन्तानस्सा"तिआदिपि आकारत्थमेव एवं-सद्दं गहेत्वा पुरिमयोजनाय अञ्ञथा अत्थयोजनं दस्सेतुं वुत्तं। तत्थ **आकारपञ्ञत्ती**ति उपादापञ्ञत्ति एव, धम्मानं पवत्तिआकारुपादानवसेन तथा वुत्ता। **"सुतन्ति विसयनिद्देसो"**ति सोतब्बभूतो धम्मो सवनकिरियाकत्तुपुग्गलस्स सवनकिरियावसेन पवत्तिट्ठानन्ति कत्वा वुत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तसन्तानविनिमुत्तस्स परमत्थतो कस्सचि कत्तु अभावेपि सद्दवोहारेन बुद्धिपरिकप्पितभेदवचनिच्छाय चित्तसन्तानतो अञ्ञं विय तंसमङ्गिं कत्वा वुत्तं "**चित्तसन्तानेन तंसमङ्गिनो**"ति। सवनकिरियाविसयोपि सोतब्बधम्मो सवनकिरियावसेन पवत्तचित्तसन्तानस्स इध परमत्थतो कत्तुभावतो, सवनवसेन चित्तप्पवत्तिया एव वा सवनकिरियाभावतो तंकिरियाकत्तु च विसयो होतीति कत्वा वुत्तं "**तंसमङ्गिनो कत्तु विसये**"ति। सुताकारस्स च थेरस्स सम्मानिच्छितभावतो आह "**गहणसन्निट्ठान**"न्ति, एतेन वा अवधारणत्थं एवं-सद्दं गहेत्वा अयं अत्थयोजना कताति दट्ठब्बं।

पुब्बे सुतानं नानाविहितानं सुत्तसङ्खातानं अत्थब्यञ्जनानं उपधारितरूपस्स आकारस्स निदस्सनस्स अवधारणस्स वा पकासनसभावो एवं-सद्दोति तदाकारादिउपधारणस्स पुग्गलपञ्ञत्तिया उपादानभूतधम्मप्पबन्धब्यापारताय वुत्तं "**एवन्ति पुग्गलकिच्चनिद्देसो**"ति। सवनकिरिया पन पुग्गलवादिनोपि विञ्ञाणनिरपेक्खा नत्थीति विसेसतो विञ्ञाणब्यापारोति आह "**सुतन्ति विञ्ञाणकिच्चनिद्देसो**"ति। मेति सद्दप्पवत्तिया एकन्तेनेव सत्तविसयत्ता, विञ्ञाणकिच्चस्स च तत्थेव समोदहितब्बतो "**मेति उभयकिच्चयुत्तपुग्गलनिद्देसो**"ति वुत्तं। अविज्जमानपञ्ञत्तिविज्जमानपञ्ञत्तिसभावा यथाक्कमं एवं-सद्द सुत-सद्दानं अत्थाति ते तथारूपपञ्ञत्तिउपादानब्यापारभावेन दस्सेन्तो आह "**एवन्ति पुग्गलकिच्चनिद्देसो। सुतन्ति विञ्ञाणकिच्चनिद्देसो**"ति। एत्थ च करणकिरियाकत्तुकम्मविसेसप्पकासनवसेन पुग्गलब्यापार-विसयपुग्गलब्यापारनिदस्सनवसेन गहणाकारगाहकतब्बिसयविसेसनिद्देसवसेन कत्तुकरण ब्यापारकत्तुनिद्देसवसेन च दुतियादयो चतस्सो अत्थयोजना दस्सिताति दट्ठब्बं।

सब्बस्सापि सद्दाधिगमनीयस्स अत्थस्स पञ्ञत्तिमुखेनेव पटिपज्जितब्बत्ता, सब्बपञ्ञत्तीनञ्च विज्जमानादिवसेन छसु पञ्ञत्तिभेदेसु अन्तोगधत्ता तेसु "एव"न्तिआदीनं पञ्ञत्तीनं सरूपं निद्धारेन्तो आह "**एवन्ति च मेति चा**"तिआदि। तत्थ एवन्ति च मेति च वुच्चमानस्स अत्थस्स आकारादिनो, धम्मानञ्च असल्लक्खणभावतो अविज्जमानपञ्ञत्तिभावोति आह "**सच्चिकट्ठपरमत्थवसेन अविज्जमानपञ्ञत्ती**"ति। तत्थ **सच्चिकट्ठपरमत्थवसेनाति** भूतत्थउत्तमत्थवसेन। इदं वुत्तं होतियो मायामरीचिआदयो विय अभूतत्थो, अनुस्सवादीहि गहेतब्बो विय अनुत्तमत्थो च न होति, सो रूपसद्दादिसभावो रुप्पनानुभवनादिसभावो वा अत्थो "सच्चिकट्ठो, परमत्थ चा"ति वुच्चति, न तथा एवं मेति पदानमत्थोति, एतमेवत्थं पाकटतरं कातुं "**किञ्हेत्थ त**"न्तिआदि वुत्तं। **सुतन्ति** पन सद्दायतनं सन्धायाह "**विज्जमानपञ्ञत्ती**"ति। तेनेव हि "**यञ्हि तमेत्थ सोतेन उपलद्ध**"न्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुत्तं, "सोतद्वारानुसारेन उपलद्ध"न्ति पन वुत्ते अत्थब्यञ्जनादिसब्बं लब्भति। **तं तं उपादाय वत्तब्बतो**ति सोतपथं आगते धम्मे उपादाय तेसं उपधारिताकारादिनो पच्चामसनवसेन "एव"न्ति, ससन्ततिपरियापन्ने खन्धे उपादाय "मे"ति वत्तब्बत्ताति अत्थो। दिट्ठादिसभावरहिते सद्दायतने पवत्तमानोपि सुतवोहारो "दुतियं ततिय"न्तिआदिको विय पठमादीनि दिट्ठमुतविञ्ञाते अपेक्खित्वा पवत्तोति आह **"दिट्ठादीनि उपनिधाय वत्तब्बतो"**ति। असुतं न होतीति हि "सुत"न्ति पकासितो यमत्थोति।

अत्तना पटिविद्धा सुत्तस्स पकारविसेसा "एव"न्ति थेरेन पच्चामट्ठाति आह **"असम्मोहं दीपेती"**ति। **"नानप्पकारपटिवेधसमत्थो होती"**ति एतेन वक्खमानस्स सुत्तस्स नानप्पकारतं दुप्पटिविज्झतञ्च दस्सेति। **"सुतस्स असम्मोसं दीपेती"**ति सुताकारस्स याथावतो दस्सियमानत्ता वुत्तं। **असम्मोहेना**ति सम्मोहाभावेन, पञ्ञाय एव वा सवनकालसम्भूताय तदुत्तरकालपञ्ञासिद्धि, एवं **असम्मोसेना**ति एत्थापि वत्तब्बं। ब्यञ्जनानं पटिविज्झितब्बो आकारो नातिगम्भीरो, यथासुतधारणमेव तत्थ करणीयन्ति सतिया ब्यापारो अधिको, पञ्ञा तत्थ गुणीभूताति वुत्तं **"पञ्ञापुब्बङ्गमाया"**तिआदि पञ्ञाय पुब्बङ्गमाति कत्वा। पुब्बङ्गमता चेत्थ पधानभावो "मनोपुब्बङ्गमा"तिआदीसु विय, पुब्बङ्गमताय वा चक्खुविञ्ञाणादीसु आवज्जनादीनं विय अप्पधानत्ते पञ्ञा पुब्बङ्गमा एतिस्साति अयम्पि अत्थो युज्जति, एवं **"सतिपुब्बङ्गमाया"**ति एत्थापि वुत्तनयानुसारेन यथासम्भवमत्थो वेदितब्बो। **अत्थब्यञ्जनसम्पन्नस्सा**ति अत्थब्यञ्जनपरिपुण्णस्स, सङ्कासनपकासनविवरणविभजन-उत्तानीकरणपञ्ञत्तिवसेन छहि अत्थपदेहि, अक्खरपदब्यञ्जनाकारनिरुत्तिनिद्देसवसेन छहि ब्यञ्जनपदेहि च समन्नागतस्साति वा अत्थो दट्ठब्बो।

योनिसोमनसिकारं दीपेतीति एवं-सद्देन वुच्चमानानं आकारनिदस्सनावधारणत्थानं अविपरीतसद्धम्मविसयत्ताति अधिप्पायो। **"अविक्खेपं दीपेती"**ति "ब्रह्मजालं कत्थ भासित"न्तिआदि पुच्छावसेन पकरणप्पत्तस्स वक्खमानस्स सुत्तस्स सवनं समाधानमन्तरेन न सम्भवतीति कत्वा वुत्तं। **"विक्खित्तचित्तस्सा"**तिआदि तस्सेवत्थस्स समत्थनवसेन वुत्तं। **सब्बसम्पत्तिया**ति अत्थब्यञ्जनदेसकपयोजनादिसम्पत्तिया। अविपरीतसद्धम्मविसयेहि विय आकारनिदस्सनावधारणत्थेहि योनिसोमनसिकारस्स, सद्धम्मस्सवनेन विय च अविक्खेपस्स यथा योनिसोमनसिकारेन फलभूतेन अत्तसम्मापणिधिपुब्बेकतपुञ्ञतानं सिद्धि वुत्ता तदविनाभावतो, एवं अविक्खेपेन फलभूतेन कारणभूतानं सद्धम्मस्सवनसप्पुरिसूपनिस्सयानं सिद्धि दस्सेतब्बा सिया अस्सुतवतो, सप्पुरिसूपनिस्सयरहितस्स च तदभावतो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"न हि विक्खित्तचित्तो"तिआदिना समत्थनवचनेन पन अविक्खेपेन कारणभूतेन सप्पुरिसूपनिस्सयेन च फलभूतस्स सद्धम्मस्सवनस्स सिद्धि दस्सिता। अयं पनेत्थ अधिप्पायो युत्तो सियासद्धम्मस्सवनसप्पुरिसूपनिस्सया न एकन्तेन अविक्खेपस्स कारणं बाहिरङ्गत्ता, अविक्खेपो पन सप्पुरिसूपनिस्सयो विय सद्धम्मस्सवनस्स एकन्तकारणन्ति। एवम्पि अविक्खेपेन सप्पुरिसूपनिस्सयसिद्धिजोतना न समत्थिताव, नो न समत्थिता विक्खित्तचित्तानं सप्पुरिसपयिरुपासनाभावस्स अत्थसिद्धत्ता। एत्थ च पुरिमं फलेन कारणस्स सिद्धिदस्सनं नदीपूरेन विय उपरि वुट्ठिसब्भावस्स, दुतियं कारणेन फलस्स सिद्धिदस्सनं दट्ठब्बं एकन्तेन वस्सिना विय मेघवुट्ठानेन वुट्ठिप्पवत्तिया।

भगवतो वचनस्स अत्थब्यञ्जनपभेदपरिच्छेदवसेन सकलसासनसम्पत्तिओगाहनाकारो निरवसेसपरहितपारिपूरिकारणन्ति वुत्तं **"एवं भद्दको आकारो"**ति। यस्मा न होतीति सम्बन्धो। **पच्छिमचक्कद्वयसम्पत्ति**न्ति अत्तसम्मापणिधिपुब्बेकतपुञ्ञतासङ्खातं गुणद्वयं। अपरापरं वुत्तिया चेत्थ चक्कभावो, चरन्ति एतेहि सत्ता सम्पत्तिभवेसूति वा। ये सन्धाय वुत्तं "चत्तारिमानि भिक्खवे चक्कानि, येहि समन्नागतानं देवमनुस्सानं चतुचक्कं वत्तती"तिआदि। पुरिमपच्छिमभावो चेत्थ देसनाक्कमवसेन दट्ठब्बो। **पच्छिमचक्कद्वयसिद्धिया**ति पच्छिमचक्कद्वयस्स अत्थिताय। सम्मापणिहितत्तो पुब्बे च कतपुञ्ञो सुद्धासयो होति तदसुद्धिहेतूनं किलेसानं दूरीभावतोति आह **"आसयसुद्धि सिद्धा होती"**ति। तथा हि वुत्तं "सम्मापणिहितं चित्तं, सेय्यसो नं ततो करे"ति, "कतपुञ्ञोसि त्वं आनन्द, पधानं अनुयुञ्ज खिप्पं होहिसि अनासवोति च। तेनेवाह **"आसयसुद्धिया अधिगमब्यत्तिसिद्धी"**ति। **पयोगसुद्धिया**ति योनिसोमनसिकारपुब्बङ्गमस्स धम्मस्सवनपयोगस्स विसदभावेन। तथा चाह **"आगमब्यत्तिसिद्धी"**ति। सब्बस्स वा कायवचीपयोगस्स निद्दोसभावेन। परिसुद्धकायवचीपयोगो हि विप्पटिसाराभावतो अविक्खित्तचित्तो परियत्तियं विसारदो होतीति।

"नानप्पकारपटिवेधदीपकेना"तिआदिना अत्थब्यञ्जनेसु थेरस्स एवं-सद्द सुत-सद्दानं असम्मोहासम्मोसदीपनतो चतुपटिसम्भिदावसेन अत्थयोजनं दस्सेति। तत्थ **"सोतब्बप्पभेदपटिवेधदीपकेना"**ति एतेन अयं सुत-सद्दो एवं-सद्दसन्निधानतो, वक्खमानापेक्खाय वा सामञ्ञेनेव सोतब्बधम्मविसेसं आमसतीति दस्सेति। मनोदिट्ठिकरणापरियत्तिधम्मानं अनुपेक्खनसुप्पटिवेधा विसेसतो मनसिकारपटिबद्धाति ते वुत्तनयेन योनिसोमनसिकारदीपकेन एवं-सद्देन योजेत्वा, सवनधारणवचीपरिचया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियत्तिधम्मानं विसेसेन सोतावधानपटिबद्धाति ते अविक्खेपदीपकेन सुत-सद्देन योजेत्वा दस्सेन्तो सासनसम्पत्तिया धम्मस्सवने उस्साहं जनेति। तत्थ धम्माति परियत्तिधम्मा। **मनसानुपेक्खिता**ति "इध सीलं कथितं, इध समाधि, इध पञ्ञा, एत्तका एत्थ अनुसन्धियो"तिआदिना नयेन मनसा अनुपेक्खिता। **दिट्ठिया सुप्पटिविद्धा**ति निज्झानक्खन्तिभूताय, ञातपरिञ्ञासङ्खाताय वा दिट्ठिया तत्थ तत्थ वुत्तरूपारूपधम्मे "इति रूपं, एत्तकं रूप"न्तिआदिना सुट्ठु ववत्थपेत्वा पटिविद्धा।

"**सकलेन वचनेना**"ति पुब्बे तीहि पदेहि विसुं विसुं योजितत्ता वुत्तं। **असप्पुरिसभूमि**न्ति अकतञ्ञुतं "इधेकच्चो पापभिक्खु तथागतप्पवेदितं धम्मविनयं परियापुणित्वा अत्तनो दहती"ति एवं वुत्तं अनरियवोहारावत्थं। सा एव अनरियवोहारावत्था **असद्धम्मो**। ननु च आनन्दत्थेरस्स "ममेदं वचन"न्ति अधिमानस्स, महाकस्सपत्थेरादीनञ्च तदासङ्काय अभावतो असप्पुरिसभूमिसमतिक्कमादिवचनं निरत्थकं ति ? नयिदं एवं "एवं मे सुत"न्ति वदन्तेन अयम्पि अत्थो विभावितोति दस्सनतो। केचि पन "देवतानं परिवितक्कापेक्खं तथावचनन्ति एदिसी चोदना अनवकासा"ति वदन्ति। तस्मिं किर खणे एकच्चानं देवतानं एवं चेतसो परिवितक्को उदपादि "तथागतो च परिनिब्बुतो, अयञ्च आयस्मा देसनाकुसलो, इदानि धम्मं देसेति, सक्यकुलप्पसुतो तथागतस्स भाता चूळपितुपुत्तो, किं नु खो सयं सच्छिकत धम्मं देसेति, उदाहु भगवतोयेव वचनं यथासुत"न्ति। एवं तदासङ्कितप्पकारतो असप्पुरिसभूमिसमोक्कमादितो अतिक्कमादि विभावितन्ति। **अत्तनो अदहन्तो**ति "ममेत"न्ति अत्तनि अट्ठपेन्तो। **अप्पेती**ति निदस्सेति। दिट्ठधम्मिकसम्परायिकपरमत्थेसु यथारहं सत्ते नेतीति नेत्ति, धम्मोयेव नेत्ति **धम्मनेत्ति**।

दळ्हतरनिविट्ठा विचिकिच्छा **कङ्खा**। नातिसंसप्पनं मतिभेदमत्तं **विमति**। **अस्सद्धियं विनासेति** भगवतो देसितत्ता, सम्मुखा चस्स पटिग्गहितत्ता, खलितदुरुत्तादिग्गहणदोसाभावतो च। एत्थ च पठमादयो तिस्सो अत्थयोजना आकारादिअत्थेसु अग्गहितविसेसमेव एवं-सद्दं गहेत्वा दस्सिता, ततो परा तिस्सो आकारत्थमेव एवं-सद्दं गहेत्वा विभाविता। पच्छिमा पन तिस्सो यथाक्कमं आकारत्थं निदस्सनत्थं अवधारणत्थञ्च एवं-सद्दं गहेत्वा योजिताति दट्ठब्बं।

एक-सद्दो अञ्ञसेट्ठासहायसङ्ख्यादीसु दिस्सति। तथाहेस "सस्सतो अत्ता च लोको

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च, इदमेव सच्चं मोघमञ्ञन्ति इत्थेके अभिवदन्ती"तिआदीसु अञ्ञत्थे दिस्सति, "चेतसो एकोदिभाव"न्तिआदीसु सेट्ठत्थे, "एको वूपकट्ठो"तिआदीसु असहाये, "एकोव खो भिक्खवे खणो च समयो च ब्रह्मचरियवासाया"तिआदीसु सङ्ख्यं, इधापि सङ्ख्यन्ति दस्सेन्तो आह **"एकन्ति गणनपरिच्छेदनिद्देसो"**ति। **कालञ्च समयञ्चा**ति युत्तकालञ्च पच्चयसामग्गिञ्च। **खणो**ति ओकासो। तथागतुप्पादादिको हि मग्गब्रह्मचरियस्स ओकासो तप्पच्चयपटिलाभहेतुत्ता। खणो एव च **समयो**। यो "खणो"ति च "समयो"ति च वुच्चति, सो एको वाति हि अत्थो। **महासमयो**ति महासमूहो। **समयोपि खो**ति सिक्खापदपूरणस्स हेतुपि। **समयप्पवादके**ति दिट्ठिप्पवादके। तत्थ हि निसिन्ना तित्थिया अत्तनो अत्तनो समयं पवदन्तीति। **अत्थाभिसमया**ति हितपटिलाभा। अभिसमेतब्बोति अभिसमयो, अभिसमयो अत्थोति **अभिसमयट्ठो**ति पीळन आदीनि अभिसमेतब्बभावेन एकीभावं उपनेत्वा वुत्तानि। अभिसमयस्स वा पटिवेधस्स विसयभूतभावो **अभिसमयट्ठो**ति तानेव तथा एकत्तेन वुत्तानि। तत्थ **पीळनं** दुक्खसच्चस्स तं समङ्गीनो हिंसनं अविप्फारिकताकरणं। **सन्तापो**दुक्खदुक्खतादिवसेन सन्तापनं परिदहणं।

तत्थ सहकारीकारणं सन्निज्झ समेति समवेतीति **समयो,** समवायो। समेति समागच्छति मग्गब्रह्मचरियमेत्थ तदाधारपुग्गलेहीति **समयो,** खणो। समेति एत्थ, एतेनव संगच्छति सत्तो, सभावधम्मो वा सहजातादीहि, उप्पादादीहि वाति **समयो,** कालो। धम्मप्पवत्तिमत्तताय अत्थतो अभूतोपि हि कालो धम्मप्पवत्तिया अधिकरणं, करणं विय च कप्पनामत्तसिद्धेन रूपेन वोहरीयतीति। समं, सह वा अवयवानं अयनं पवत्ति अवट्ठानन्ति **समयो,** समूहो, यथा "समुदायो"ति। अवयवसहावट्ठानमेव हि समूहोति। अवसेसपच्चयानं समागमे एति फलं एतस्मा उप्पज्जति पवत्तति चाति **समयो,** हेतु यथा "समुदयो"ति। समेति संयोजनभावतो सम्बन्धो एति अत्तनो विसये पवत्तति, दळ्हग्गहणभावतो वा संयुत्ता अयन्ति पवत्तन्ति सत्ता यथाभिनिवेसं एतेनाति **समयो,** दिट्ठि। दिट्ठिसंयोजनेन हि सत्ता अतिविय बज्झन्तीति। समिति सङ्गति समोधानन्ति **समयो,** पटिलाभो। समस्स यानं, सम्मा वा यानं अपगमोति **समयो,** पहानं। अभिमुखं ञाणेन एतब्बो अभिसमेतब्बोति अभिसमयो, धम्मानं अविपरीतो सभावो। अभिमुखभावेन सम्मा एति गच्छति बुज्झतीति अभिसमयो, धम्मानं यथाभूतसभावावबोधो। एवं तस्मिं तस्मिं अत्थे समय-सद्दस्स पवत्ति वेदितब्बा। समय-सद्दस्स अत्थुद्धारे अभिसमय-सद्दस्स उदाहरणं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। **अस्सा**ति समय-सद्दस्स। **कालो अत्थो** समवायादीनं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थानं इध असम्भवतो देसदेसकपरिसानं विय सुत्तस्स निदानभावेन कालस्स अपदिसितब्बतो च।

कस्मा पनेत्थ अनियामितवसेनेव कालो निद्दिट्ठो, न उतुसंवच्छरादिवसेन नियमेत्वाति आह **"तत्थ किञ्चापी"**तिआदि। उतुसंवच्छरादिवसेन नियमं अकत्वा समय-सद्दस्स वचने अयम्पि गुणो लद्धो होतीति दस्सेन्तो **"ये वा इमे"**तिआदिमाह। सामञ्ञजोतना हि विसेसे अवतिट्ठतीति। तत्थ **दिट्ठधम्मसुखविहारसमयो** देवसिकं झानसमापत्तीहि वीतिनामनकालो, विसेसतो सत्तसत्ताहानि। **पकासा**ति दससहस्सिलोकधातुया पकम्पनओभासपातुभावादीहि पाकटा। यथावुत्तप्पभेदेसुयेव समयेसु एकदेसं पकारन्तरेहि सङ्गहेत्वा दस्सेतुं **"यो चाय"**न्तिआदिमाह। तथा हि ञाणकिच्चसमयो अत्तहितपटिपत्तिसमयो च **अभिसम्बोधिसमयो**। अरियतुण्हिभावसमयो **दिट्ठधम्मसुखविहारसमयो**। करुणाकिच्चपरहितपटिपत्तिधम्मिकथासमयो **देसनासमयेव**।

करणवचनेन निद्देसो कतो यथाति सम्बन्धो। **तत्था**ति अभिधम्मविनयेसु। **तथा**ति भुम्मकरणेहि। **अधिकरणत्थ** आधारत्थो। भावो नाम किरिया, किरियाय किरियन्तरलक्खणं **भावेनभावलक्खणं**। तत्थ यथा कालो सभावधम्मपरिच्छिन्नो सयं परमत्थतो अविज्जमानोपि आधारभावेन पञ्ञातो तङ्खणप्पवत्तानं ततो पुब्बे परतो च अभावतो "पुब्बण्हे जातो, सायन्हे गच्छती"ति, च आदीसु, समूहो च अवयवविनिमुत्तो अविज्जमानोपि कप्पनामत्तसिद्धो अवयवानं आधारभावेन पञ्ञापीयति "रुक्खे साखा, यवरासियं सम्भूतो"तिआदीसु, एवं इधापीति दस्सेन्तो आह **"अधिकरणञ्हि...पे०... धम्मान"**न्ति। यस्मिं काले, धम्मपुञ्जे वा कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, तस्मिंयेव काले, धम्मपुञ्जे च फस्सादयोपि होन्तीति अयञ्हि तत्थ अत्थो। यथा च गावीसु दुय्हमानासु गतो, दुद्धासु आगतोति दोहनकिरियाय गमनकिरिया लक्खीयति, एवं इधापि "यस्मिं समये, तस्मिं समये"ति च वुत्ते सतीति अयमत्थो विञ्ञायमानो एव होति पदत्थस्स सत्ताविरहाभवतोति समयस्स सत्ताकिरियाय चित्तस्स उप्पादकिरिया, फस्सादीनं भवनकिरिया च लक्खीयति। **यस्मिं समये**ति यस्मिं नवमे खणे, योनिसोमनसिकारादिहेतुम्हि, पच्चयसमवाये वा सति कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, तस्मिंयेव खणे, हेतुम्हि, पच्चयसमवाये च सति फस्सादयोपि होन्तीति उभयत्थ समय-सद्दे भुम्मनिद्देसो कतो लक्खणभूतभावयुत्तोति दस्सेन्तो आह **"खण...पे०... लक्खीयती"**ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेतुअत्थो करणत्थो च सम्भवति "अन्नेन वसति, अज्झेनेन वसति, फरसुना छिन्दति, कुदालेन खणती"तिआदीसु विय। वीतिक्कमञ्हि सुत्वा भिक्खुसङ्घं सन्निपातापेत्वा ओतिण्णवत्थुकं पुग्गलं पटिपुच्छित्वा, विगरहित्वा च तं तं वत्थुं ओतिण्णकालं अनतिक्कमित्वा तेनेव कालेन सिक्खापदानि पञ्ञपेन्तो भगवा विहरति सिक्खापदपञ्ञत्तिहेतुञ्च अपेक्खमानो ततियपाराजिकादीसु वियाति।

अच्चन्तमेव आरम्भतो पट्ठाय याव देसनानिट्ठानं परहितपटिपत्तिसङ्खातेन **करुणाविहारेन। तदत्थजोतनत्थ**न्ति अच्चन्तसंयोगत्थजोतनत्थं। **उपयोगवचननिद्देसो कतो** यथा "मासं अज्झेती"ति।

पोराणाति अट्ठकथाचरिया। **अभिलापमत्तभेदो**ति वचनमत्तेन विसेसो। तेन सुत्तविनयेसु विभत्तिब्यतयो कतोति दस्सेति।

सेट्ठन्ति सेट्ठवाचकं वचनं सेट्ठन्ति वुत्तं सेट्ठगुणसहचरणतो। तथा **उत्तम**न्ति एत्थापि। **गारवयुत्तो**ति गरुभावयुत्तो गरुगुणयोगतो, गरुकरणारहताय वा **गारवयुत्तो।**

वुत्तोयेव न पन इध वत्तब्बो विसुद्धिमग्गस्स इमिस्सा अट्ठकथाय एकदेसभावतोति अधिप्पायो।

अपिच भगे वनि, वमीति वा भगवा, भगे सीलादिगुणे वनि भजि सेवि, ते वा विनेय्यसन्तानेसु "कथं नु खो उप्पज्जेय्यु"न्ति वनि याचि पत्थयीति भगवा, भगं वा सिरिं, इस्सरियं, यसञ्च वमि खेलपिण्डं विय छड्डयीति भगवा। तथा हि भगवा हत्थगतं सिरिं, चतुद्दीपिस्सरियं, चक्कवत्तिसम्पत्तिसन्निस्सयञ्च सत्तरतनसमुज्जलं यसं अनपेक्खो परिच्चजीति। अथ वा भानि नाम नक्खत्तानि, तेहि समं गच्छन्ति पवत्तन्तीति भगा, सिनेरुयुगन्धरादिगता भाजनलोकसोभा। ते भगवा वमि तप्पटिबद्धछन्दरागप्पहानेन पजहतीति एवम्पि भगे वमीति भगवा।

"धम्मसरीरं पच्चक्खं करोती"ति "यो वो आनन्द मया धम्मो च विनयो च देसितो पञ्ञत्तो, सो वो ममच्चयेन सत्था"ति वचनतो धम्मस्स सत्थुभावपरियायो विज्जतीति कत्वा वुत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वजिरसङ्घातसमानकायो परेहि अभेज्जसरीरत्ता। न हि भगवतो रूपकाये केनचि अन्तरायो सक्का कातुन्ति। **देसनासम्पत्तिं निद्दिसति** वक्खमानस्स सकलसुत्तस्स "एव"न्ति निद्दिसनतो। **सावकसम्पत्तिं** निद्दिसति पटिसम्भिदाप्पत्तेन पञ्चसु ठानेसु भगवता एतदग्गे ठपितेन मया महासावकेन सुतं, तञ्च खो मयाव सुतं, न अनुस्सवितं, न परम्पराभतन्ति इमस्सत्थस्स दीपनतो। **कालसम्पत्तिं** निद्दिसति "भगवा"ति पदस्स सन्निधाने पयुत्तस्स समय-सद्दस्स कालस्स बुद्धुप्पादपटिमण्डितभावदीपनतो। बुद्धुप्पादपरमा हि कालसम्पदा। तेनेतं वुच्चति –

"कप्पकसाये कलियुगे, बुद्धुप्पादो अहो महच्छरियं।
हुतावहमज्झे जातं, समुदितमकरन्दमरविन्द"न्ति।।

भगवाति देसकसम्पत्तिं निद्दिसति गुणविसिट्ठसत्तुत्तमगारवाधिवचनतो।

विज्जन्तरिकायाति विज्जुनिच्छरणक्खणे। **अन्तरतो**ति हदये। **अन्तरा**ति आरब्भ निप्फत्तीनं वेमज्झे। **अन्तरिकाया**ति अन्तराळे। एत्थ च "तदन्तरं को जानेय्य, एतेसं अन्तरा कप्पा, गणनातो असङ्खिया, अन्तरन्तरा कथं ओपातेती"ति च आदीसु विय कारणवेमज्झेसु वत्तमाना अन्तरा-सद्दा एव उदाहरितब्बा सियुं, न पन चित्तखणविवरेसु वत्तमाना अन्तरन्तरिका-सद्दा। अन्तरा-सद्दस्स हि अयं अत्थुद्धारोति। अयं पनेत्थ अधिप्पायो सिया– येसु अत्थेसु अन्तरा-सद्दो वत्तति, तेसु अन्तरसद्दोपि वत्ततीति समानत्थत्ता अन्तरा-सद्दत्थे वत्तमानो अन्तर-सद्दो उदाहटो, अन्तरा-सद्दो एव वा "यस्सन्तरतो"ति एत्थ गाथासुखत्थं रस्सं कत्वा वुत्तोति दट्ठब्बं। अन्तरा-सद्दो एव पन इक-सद्देन पदं वड्ढेत्वा "अन्तरिका"ति वुत्तोति एवमेत्थ उदाहरणोदाहरितब्बानं विरोधाभावो दट्ठब्बो। **अयोजियमाने उपयोगवचनं न पापुणाति** सामिवचनस्स पसङ्गे अन्तरा-सद्दयोगेन उपयोगवचनस्स इच्छितत्ता। तेनेवाह **"अन्तरासद्देन युत्तत्ता उपयोगवचनं कत"**न्ति।

"नियतो सम्बोधिपरायणो, अट्ठानमेतं भिक्खवे अनवकासो, यं दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो सञ्चिच्च पाणं जीविता वोरोपेय्य, "नेतं ठानं विज्जती" तिआदिवचनतो दिट्ठिसीलानं नियतसभावत्ता सोतापन्नापि अञ्ञमञ्ञं दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहता, पगेव सकदागामिआदयो। "तथारूपाय दिट्ठिया दिट्ठिसामञ्ञगतो विहरति, तथारूपेसु सीलेसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीलसामञ्ञगतो विहरती''ति वचनतो पुथुज्जनानम्पि दिट्ठिसीलसामञ्ञेन संहतभावो लब्भतियेव।

सुप्पियोपि खोति एत्थ **खो**-सद्दो अवधारणत्थो ''अस्सोसि खो''तिआदीसु विय। तेन अद्धानमग्गपटिपन्नो अहोसियेव, नास्स मग्गपटिपत्तिया कोचि अन्तरायो अहोसीति अयमत्थो दीपितो होति। **तत्रा**ति वा कालस्स पटिनिद्देसो। सोपि हि ''एकं समय''न्ति पुब्बे अधिकतो। यञ्हि समयं भगवा अन्तरा राजगहञ्च नाळन्दञ्च अद्धानमग्गपटिपन्नो, तस्मिंयेव समये सुप्पियोपि तं मग्गं पटिपन्नो अवण्णं भासति, ब्रह्मदत्तो च वण्णं भासतीति। परियायति परिवत्ततीति **परियायो,** वारो। परियायेति देसेतब्बमत्थं पटिपादेतीति **परियायो,** देसना। परियायति अत्तनो फलं परिग्गहेत्वा पवत्ततीति **परियायो,** कारणन्ति एवं परियाय-सद्दस्स वारादीसु पवत्ति वेदितब्बा। **कारणेना**ति कारणपतिरूपकेन। तथा हि वक्खति ''अकारणमेव कारणन्ति वत्वा''ति। कस्मा पनेत्थ ''अवण्णं भासती''ति, ''वण्णं भासती''ति च वत्तमानकालनिद्देसो कतो, ननु सङ्गीतिकालतो सो अवण्णवण्णानं भासितकालो अतीतोति? सच्चमेतं, ''अद्धानमग्गपटिपन्नो होती''ति एत्थ होति-सद्दो विय अतीतकालत्थो भासति-सद्दो च दट्ठब्बो। अथ वा यस्मिं काले तेहि अवण्णो वण्णो च भासीयति, तं अपेक्खित्वा एवं वुत्तं। एवञ्च कत्वा ''तत्राति कालस्स पटिनिद्देसो''ति इदञ्च वचनं समत्थितं होति।

अकारणन्ति अयुत्तिं, अनुपपत्तिन्ति अत्थो। न हि अरसरूपतादयो दोसा भगवति संविज्जन्ति, धम्मसङ्घानञ्च दुरक्खातदुप्पटिपन्नतादयोति। **अकारण**न्ति वा युत्तकारणरहितं, पटिञ्ञामत्तन्ति अधिप्पायो। इमस्मिञ्च अत्थे **कारणन्ति वत्वा**ति कारणं वाति वत्वाति अत्थो। अरसरूपादीनञ्चेत्थ जातिवुड्ढेसु अभिवादनादिसामीचिकम्माकरणं **कारणं,** तथा उत्तरिमनुस्सधम्मालमरियञाणदस्सनाभावस्स सुन्दरिकामगुणादिनवबोधो, संसारस्स आदिकोटिया अपञ्ञायनपटिञ्ञा, अब्याकतवत्थुब्याकरणन्ति एवमादयो, तथा असब्बञ्ञुतादीनं कमावबोधादयो यथारहं निद्धारेतब्बा। **तथा तथा**ति जातिवुड्ढानं अनभिवादनादिआकारेन।

अवण्णं भासमानोति अवण्णंभासनहेतु। हेतुअत्थो हि अयं मान-सद्दो। **अनयब्यसनं पापुणिस्सति** एकन्तमहासावज्जत्ता रतनत्तयोपवादस्स। तेनेवाह–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"यो निन्दियं पसंसति,
तं वा निन्दति यो पसंसियो।
विचिनाति मुखेन सो कलिं,
कलिना तेन सुखं न विन्दती"ति।।

"अम्हाकं आचरियो"तिआदिना ब्रह्मदत्तस्स संवेगुप्पत्तिं, अत्तनो आचरिये कारुञ्ञप्पवत्तिञ्च दस्सेत्वा किञ्चापि अन्तेवासिना आचरियस्स अनुकूलेन भवितब्बं, अयं पन पण्डितजातिकत्ता न एदिसेसु तं अनुवत्ततीति, इदानि तस्स कम्मस्सकतञ्ञाणप्पवत्तिं दस्सेन्तो **"आचरिये खो पना"**तिआदिमाह। **वण्णं भासितुं आरद्धो** "अपिनामायं एत्तकेनापि रतनत्तयावण्णतो ओरमेय्या"ति। वण्णीयतीति **वण्णो,** गुणो। वण्णनं गुणसङ्कित्तनन्ति **वण्णो,** पसंसा। **संञ्जूळ्हा**ति गन्थिता, निबन्धिताति अत्थो। अतित्थेन पक्खन्दो धम्मकथिकोति न वत्तब्बो अपरिमाणगुणत्ता बुद्धादीनं, निरवसेसानञ्च तेसं इध पकासनं पाळिसंवण्णनायेव सम्पज्जतीति। **अनुस्सवादी**ति एत्थ **आदि-**सद्देन आकारपरिवितक्कदिट्ठिनिज्झानक्खन्तियो सङ्गण्हाति। **अत्तनो थामेन वण्णं अभासि,** न पन बुद्धादीनं गुणानुरूपन्ति अधिप्पायो। असङ्ख्यय्यापरिमितप्पभेदा हि बुद्धादीनं गुणा। वुत्तञ्हेतं –

"बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं,
कप्पम्पि चे अञ्ञमभासमानो।
खीयेथ कप्पो चिरदीघमन्तरे,
वण्णो न खीयेथ तथागतस्सा"ति।।

इधापि वक्खति "अप्पमत्तकं खो पनेत"न्तिआदि।

इति ह तेति एत्थ **इती**ति वुत्तप्पकारपरामसनं। **ह-**कारो निपातमत्तन्ति आह **"एवं ते"**ति।

इरियापथानुबन्धनेन अनुबन्धा होन्ति, न पन सम्मापटिपत्तिअनुबन्धनेनाति अधिप्पायो। **तस्मिं काले**ति यस्मिं संवच्छरे उतुम्हि मासे पक्खे वा भगवा तं अद्धानमग्गं पटिपन्नो, तस्मिं काले। तेनेव हि किरियाविच्छेददस्सनवसेन "राजगहे पिण्डाय चरती"ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्तमानकालनिद्देसो कतो। **सो**ति एवं राजगहे वसमानो भगवा। **तं दिवस**न्ति यं दिवसं अद्धानमग्गपटिपन्नो, तं दिवसं। **तं अद्धानं पटिपन्नो** नाळन्दायं वेनेय्यानं विविध हितसुखनिप्फत्तिं आकङ्खमानो इमिस्सा च अट्ठुप्पत्तिया तिविधसीलालङ्कतं नानाविधकुहनलपनादिमिच्छाजीवविद्धंसनं द्वासट्ठिदिट्ठिजालविनिवेठनं दससहस्सिलोकधातुपकम्पनं ब्रह्मजालसुत्तन्तं देसेस्सामीति। एत्तावता "कस्मा पन भगवा तं अद्धानं पटिपन्नो"ति चोदना विसोधिता होति। "कस्मा च सुप्पियो अनुबन्धो"ति अयं पन चोदना "भगवतो तं मग्गं पटिपन्नभावं अजानन्तो"ति एतेन विसोधिता होति। न हि सो भगवन्तं दट्ठुमेव इच्छतीति। तेनेवाह **"सचे पन जानेय्य, नानुबन्धेय्या"**ति।

नीलपीतलोहितोदातमञ्जिट्ठपभस्सरवसेन **"छब्बण्णरस्मियो।** **"समन्ता असीतिहत्थप्पमाणे"**ति तासं रस्मीनं पकतिया पवत्तिट्ठानवसेन वुत्तं। **"तस्मिं किर समये"**ति च तस्मिं अद्धानगमनसमये बुद्धसिरिया अनिगूहितभावदस्सनत्थं वुत्तं। न हि तदा तस्सा निगूहने पक्कुसातिअभिगमनादीसु विय किञ्चिपि कारणं अत्थीति। **रतनावेळं** रतनवटंसकं। **चीनपिट्ठचुण्णं** सिन्धनचुण्णं।

ब्यामप्पभापरिक्खेपविलासिनी च **अस्स** भगवतो **लक्खणमाला**ति महापुरिसलक्खणानि अञ्ञमञ्ञपटिबद्धत्ता एवमाह। द्वत्तिंसाय चन्दमण्डलानं माला केनचि गन्थेत्वा ठपिता यदि सियाति परिकप्पनवसेनाह **"गन्थेत्वा ठपितद्वत्तिंसचन्दमालाया"**ति। सिरिं अभिभवन्ती इवाति सम्बन्धो। एस नयो **सूरियमालाया**तिआदीसुपि। **महाथेरा**ति महासावके सन्धायाह। एवं गच्छन्तं भगवन्तं भिक्खू च दिस्वा अथ अत्तनो परिसं अवलोकेसीति सम्बन्धो। **"यस्मा पनेसा"**तिआदिना "कस्मा च सो रतनत्तयस्स अवण्णं भासती"ति चोदनं विसोधेति। **इती**ति एवं, वुत्तप्पकारेनाति अत्थो। **इमेहि द्वीही**ति लाभपरिवारहानिं निगमनवसेन दस्सेति। भगवतो विरोधानुनयाभाववीमंसनत्थं एते अवण्णं वण्णञ्च भासन्तीति अपरे। "मारेन अन्वाविट्ठा एवं करोन्ती"ति च वदन्ति।

२. अम्बलट्ठिकाय अविदूरे भवत्ता उय्यानं **अम्बलट्ठिका** यथा "वरुणानगरं, गोदागामो"ति। केचि पन **"अम्बलट्ठिका**ति यथावुत्तनयेनेव एकगामो"ति वदन्ति। तेसं मते **अम्बलट्ठिकाय**न्ति समीपत्थे भुम्मवचनं। **राजागारकं** वेस्सवणमहाराजदेवायतनन्ति एके। **बहुपरिस्सयो**ति बहुपद्दवो। **"सद्धिं अन्तेवासिना ब्रह्मदत्तेन माणवेना"ति वुत्तं** सीहळट्ठकथायं। तञ्च खो पाळि आरुळ्हवसेनेव, न पन तदा सुप्पियस्स परिसाय अभावतो। कस्मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पनेत्थ ब्रह्मदत्तोयेव पाळि आरुळ्हो, न सुप्पियस्स परिसाति? पयोजनाभावतो। यथा चेतं, एवं अञ्ञम्पि एदिसं पयोजनाभावतो सङ्गीतिकारेहि न सङ्गहितन्ति दट्ठब्बं। केचि पन "**वुत्तन्ति** पाळियं वुत्त"न्ति वदन्ति, तं न युज्जति पाळिआरुळ्हवसेन पाळियं वुत्तन्ति आपज्जनतो। तस्मा यथावुत्तनयेनेवेत्थ अत्थो गहेतब्बो। परिवारेत्वा निसिन्नो होतीति सम्बन्धो।

३. कथाधम्मोति कथासभावो, **कथाधम्मो** उपपरिक्खाविधीति केचि। नीयतीति नयो, अत्थो। सद्दसत्थं अनुगतो नयो **सद्दनयो।** तत्थ हि अनभिण्हवुत्तिके अच्छरिय-सद्दो इच्छितो। तेनेवाह "**अन्धस्स पब्बतारोहणं विया**"ति। **अच्छरायोग्गन्ति अच्छरियन्ति** निरुत्तिनयो, सो पन यस्मा पोराणट्ठकथायं आगतो, तस्मा आह "**अट्ठकथानयो**ति। यावञ्चिदं सुप्पटिविदिताति सम्बन्धो, तस्स यत्तकं सुट्ठु पटिविदिता, तं एत्तकन्ति न सक्का अम्हेहि पटिविज्झितुं, अक्खातुं वाति अत्थो। तेनेवाह "**तेन सुप्पटिविदितताय अप्पमेय्यतं दस्सेती**"ति।

पकतत्थपटिनिद्देसो तं-सद्दोति तस्स "भगवता"तिआदीहि पदेहि समानाधिकरणभावेन वुत्तस्स येन अभिसम्बुद्धभावेन भगवा पकतो सुपाकटो च होति, तं अभिसम्बुद्धभावं सद्धिं आगमनपटिपदाय अत्थभावेन दस्सेन्तो "**यो सो...पे०... अभिसम्बुद्धो**"ति आह। सतिपि ञाणदस्सन-सद्दानं इध पञ्ञावेवचनभावे तेन तेन विसेसेन नेसं सविसयविसेसप्पवत्तिदस्सनत्थं असाधारणञाणविसेसवसेन विज्जत्तयवसेन विज्जाभिञ्ञानावरणवसेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणमंसचक्खुवसेन पटिवेधदेसनाञाणवसेन च तदत्थं योजेत्वा दस्सेन्तो "**तेसं तेस**"न्तिआदिमाह। तत्थ **आसयानुसयं जानता** आसयानुसयञाणेन। **सब्बञेय्यधम्मं पस्सता** सब्बञ्ञुतानावरणञाणेहि।

पुब्बेनिवासादीहीति पुब्बेनिवासासवक्खयञाणेहि। **पटिवेधपञ्ञाया**ति अरियमग्गपञ्ञाय। **अरीनन्ति** किलेसारीनं, पञ्चविधमारानं वा, सासनपच्चत्थिकानं वा अञ्ञतित्थियानं, तेसं हननं पाटिहारियेहि अभिभवनं, अप्पटिभानताकरणं, अज्झुपेक्खनञ्च। केसिविनयसुत्तञ्चेत्थ निदस्सनं।

तथा ठानाठानादीनि **जानता,** यथाकम्मूपगे सत्ते **पस्सता,** सवासनानं आसवानं खीणत्ता **अरहता,** अभिञ्ञेय्यादिभेदे धम्मे अभिञ्ञेय्यादितो अविपरीतावबोधतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मासम्बुद्धेन। अथ वा तीसु कालेसु अप्पटिहतञाणताय **जानता,** तिण्णम्पि कम्मानं ञाणानुपरिवत्तितो निसम्मकारिताय **पस्सता,** दवादीनम्पि अभावसाधिकाय पहानसम्पदाय **अरहता,** छन्दादीनं अहानिहेतुभूताय अपरिक्खयपटिभानसाधिकाय सब्बञ्ञुताय **सम्मासम्बुद्धेना**ति एवं दसबलट्ठारसावेणिकबुद्धधम्मेहिपि योजना वेदितब्बा।

यदिपि हीनकल्याणभेदेन दुविधाव अधिमुत्ति पाळियं वुत्ता, पवत्तिआकारवसेन पन अनेकभेदभिन्नाति आह **"नानाधिमुत्तिकता"**ति। सा पन अधिमुत्ति अज्झासयधातु, तदपि तथा तथा दस्सनं खमनं रोचनञ्चाति आह **"नानाज्झासयता...पे०... रुचिता"**ति। **नानाधिमुत्तिकतञाणेना**ति चेत्थ सब्बञ्ञुतञाणं अधिप्पेतं, न दसबलञाणन्ति आह **"सब्बञ्ञुतञाणेना"**ति। **इति ह मे**ति एत्थ एवं-सद्दत्थो **इति**-सद्दो, **ह**-कारो निपातमत्तं सरलोपो च कतोति दस्सेतुं वुत्तं **"एवं इमे"**ति।

४. **अरहत्तमग्गेन समुग्घातं कतं,** यतो "नत्थि अब्यावटमनो"ति बुद्धधम्मेसु वुच्चति। **वीतिनामेत्वा** फलसमापत्तीहि। **निवासेत्वा** विहारनिवासनपरिवत्तनवसेन। **"कदाचि एकको"**तिआदि तेसं तेसं विनेय्यानं विनयनानुकूलं भगवतो उपसङ्कमदस्सनं। पादनिक्खेपसमये भूमिया समभावापत्ति सुप्पतिट्ठितपादताय निस्सन्दफलं, न इद्धिनिम्मानं। **"ठपितमत्ते दक्खिणपादे"**ति बुद्धानं सब्बदक्खिणताय वुत्तं। **अरहत्ते** पतिट्ठहन्तीति सम्बन्धो।

दुल्लभा सम्पत्तीति सतिपि मनुस्सत्तपटिलाभे पतिरूपदेसवास-इन्द्रियावेकल्लसद्धापटिलाभादयो गुणा दुल्लभाति अत्थो। **चातुमहाराजिकभवन**न्ति चातुमहाराजिकदेवलोके सुञ्ञविमानानि गच्छन्तीति अत्थो। एस नयो **तावतिंसभवना**दीसुपि। **कालयुत्त**न्ति इमिस्सा वेलाय इमस्स एवं वत्तब्बन्ति तंतंकालानुरूपं। **समययुत्त**न्ति तस्सेव वेवचनं, अट्ठुप्पत्तिअनुरूपं वा। अथ वा **समययुत्त**न्ति हेतूदाहरणसहितं। कालेन सापदेसञ्हि भगवा धम्मं देसेति। **उतुं गण्हपेति,** न पन मलं पक्खालेतीति अधिप्पायो। न हि भगवतो काये रजोजल्लं उपलिम्पतीति।

किलासुभावो किलमथो। सीहसेय्यं कप्पेति सरीरस्स किलासुभावमोचनत्थन्ति योजेतब्बं। **"बुद्धचक्खुना लोकं वोलोकेती"**ति इदं पच्छिमयामे भगवतो बहुलआचिण्णवसेन वुत्तं। अप्पेकदा अवसिट्ठबलञाणेहि सब्बञ्ञुतञाणेन च भगवा तमत्थं साधेतीति। "इमे दिट्ठिट्ठाना"तिआदिदेसना **सीहनादो**। तेसं "वेदनापच्चया तण्हा"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिआदिना **पच्चयाकारं समोधानेत्वा।** **"सिनेरुं उक्खिपन्तो विय नभं पहरन्तो विय चा"**ति इदं ब्रह्मजालदेसनाय अनञ्ञसाधारणत्ता सुदुक्करतादस्सनत्थं वुत्तं। **एत**न्ति "येन, तेना"ति एतं पदद्वयं। **येना**ति वा हेतुम्हि करणवचनं, **येन** कारणेन **सो** मण्डलमाळो उपसङ्कमितब्बो, **तेन** कारणेन उपसङ्कमीति अत्थो, कारणं पन "इमे भिक्खू"तिआदिना अट्ठकथायं वुत्तंएव। **कट्ठ**न्ति निसीदनयोग्यं दारुक्खन्धं।

पुरिमोति "कतमाय नु भवथा"ति एवं वुत्तो अत्थो। **का च पन वो**ति एत्थ **च**-सद्दो ब्यतिरेके। तेन यथापुच्छिताय कथाय वक्खमानं विप्पकतभावं जोतेति। **पन**-सद्दो वचनालङ्कारो। याय हि कथाय ते भिक्खू सन्निसिन्ना, सा एव अन्तराकथाभूता विप्पकता विसेसेन पुन पुच्छीयतीति। **अञ्ञा**ति अन्तरासद्दस्स अत्थमाह। अञ्ञत्थे हि अयं अन्तरा-सद्दो "भूमन्तरं समयन्तर"न्तिआदीसु विय। **अन्तरा**ति वा वेमज्झेति अत्थो। ननु च तेहि भिक्खूहि सा कथा यथाधिप्पायं "इति ह मे"तिआदिना निट्ठपिता येवाति? न निट्ठापिता भगवतो उपसङ्कमनेन उपच्छिन्नत्ता। यदि हि भगवा तस्मिं खणे न उपसङ्कमेय्य भिय्योपि तप्पटिबद्धायेव कथा पवत्तेय्युं, भगवतो उपसङ्कमनेन पन न पवत्तेसुं। तेनेवाह **अयं खो...पे०... अनुप्पत्तो"**ति। कस्मा पनेत्थ धम्मविनयसङ्गहे करियमाने निदानवचनं, ननु भगवतो वचनमेव सङ्गहेतब्बन्ति? वुच्चतेदेसनाय ठितिअसम्मोससद्धेय्यभावसम्पादनत्थं। कालदेसदेसकवत्थुधम्मपटिग्गाहकपटिबद्धा हि देसना चिरट्ठितिका होति, असम्मोसधम्मा सद्धेय्या च। देसकालकत्तुसोतुनिमित्तेहि उपनिबन्धो विय वोहारविनिच्छयो, तेनेव चायस्मता महाकस्सपेन "ब्रह्मजालं आवुसो आनन्द कत्थ भासित"न्तिआदिना देसादिपुच्छासु कतासु तासं विस्सज्जनं करोन्तेन धम्मभण्डागारिकेन निदानं भासितन्ति तयिदमाह **"काल...पे०... निदानं भासित"**न्ति।

अपिच सत्थुसिद्धिया निदानवचनं। तथागतस्स हि भगवतो पुब्बरचनानुमानागमतक्काभावतो सम्मासम्बुद्धत्तसिद्धि। सम्मासम्बुद्धभावेन हिस्स पुब्बरचनादीनं अभावो सब्बत्थ अप्पटिहतञाणचारताय, एकप्पमाणत्ता च ञेय्यधम्मेसु। तथा आचरियमुट्ठिधम्ममच्छरियसत्थुसावकानुरोधाभावतो खीणासवत्तसिद्धि। खीणा सवताय हिस्स आचरियमुट्ठिआदीनं अभावो, विसुद्धा च परानुग्गहप्पवत्ति। इति देसकदोसभूतानं दिट्ठिचारित्तसम्पत्तिदूसकानं अविज्जातण्हानं अभावसूचकेहि, ञाणप्पहानसम्पदाभि ब्यञ्जनकेहि च सम्बुद्धविसुद्धभावेहि पुरिमवेसारज्जद्वयसिद्धि, ततो एव च अन्तरायिकनिय्यानिकधम्मेसु सम्मोहाभावसिद्धितो पच्छिमवेसारज्जद्वयसिद्धीति भगवतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुवेसारज्जसमन्नागमो, अत्तहितपरहितप्पटिपत्ति च पकासिता होति निदानवचनेन सम्पत्तपरिसाय अज्झासयानुरूपं ठानुप्पत्तिकप्पटिभानेन धम्मदेसनादीपनतो, "जानता पस्सता"तिआदि वचनतो च। तेन वुत्तं "सत्थुसिद्धिया निदानवचन"न्ति।

तथा सत्थुसिद्धिया निदानवचनं। ञाणकरुणापरिग्गहितसब्बकिरियस्स हि भगवतो नत्थि निरत्थिका पवत्ति, अत्तहितत्था वा, तस्मा परेसंयेव अत्थाय पवत्तसब्बकिरियस्स सम्मासम्बुद्धस्स सकलम्पि कायवचीमनोकम्मं सत्थुभूतं, न कब्यरचनादिसासनभूतं। तेन वुत्तं "सत्थुसिद्धिया निदानवचन"न्ति। अपिच सत्थुनो पमाणभूतताविभावनेन सासनस्स पमाणभावसिद्धिया निदानवचनं। "भगवता"ति हि इमिना तथागतस्स गुणविसिट्ठसत्तुत्तमादिभावदीपनेन, "जानता"तिआदिना आसयानुसयञाणादिपयोगदीपनेन च अयमत्थो साधितो होति। इदमेत्थ निदानवचनपयोजनस्स मुखमत्तदस्सनं। को हि समत्थो बुद्धानुबुद्धेन धम्मभण्डागारिकेन भासितस्स निदानस्स पयोजनानि निरवसेसतो विभावेतुन्ति।

निदानवण्णना निट्ठिता।

५. **निक्खित्तस्सा**ति देसितस्स। देसनापि हि देसेतब्बस्स सीलादिअत्थस्स विनेय्यसन्तानेसु निक्खिपनतो "निक्खेपो"ति वुच्चति। तत्थ यथा अनेकसतअनेकसहस्सभेदानिपि सुत्तन्तानि संकिलेसभागियादिसासनप्पट्ठाननयेन सोळसविधतं नातिवत्तन्ति, एवं अत्तज्झासयादिसुत्तनिक्खेपवसेन चतुब्बिधभावन्ति आह **"चत्तारो सुत्तनिक्खेपा"**ति। कामञ्चेत्थ अत्तज्झासयस्स, अट्ठुप्पत्तिया च परज्झासयपुच्छाहि सद्धिं संसग्गभेदो सम्भवति अज्झासयपुच्छानुसन्धिसब्भावतो, अत्तज्झासयअट्ठुप्पत्तीनं पन अञ्ञमञ्ञं संसग्गो नत्थीति नयिध निरवसेसो वित्थारनयो सम्भवति, तस्मा "चत्तारो सुत्तनिक्खेपा"ति वुत्तं। अथ वा यदिपि अट्ठुप्पत्तिया अज्झासयेन सिया संसग्गभेदो, तदन्तोगधत्ता पन सेसनिक्खेपानं मूलनिक्खेपवसेन चत्तारोव दस्सिताति दट्ठब्बं। सो पनायं सुत्तनिक्खेपो सामञ्ञभावतो पठमं विचारेतब्बो, तस्मिं विचारिते यस्सा अट्ठुप्पत्तिया इदं सुत्तं निक्खित्तं, तस्सा विभागवसेन "ममं वा भिक्खवे"तिआदिना (दी० नि० १.५, ६), "अप्पमत्तकं खो पनेत"न्तिआदिना (दी० नि० १.७), "अत्थि भिक्खवे"तिआदिना (दी० नि० १.२८) च पवत्तानं सुत्तानं सुत्तपदेसानं वण्णना वुच्चमाना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंतंअनुसन्धिदस्सनसुखताय सुविञ्ञेय्या होतीति आह **"सुत्तनिक्खेपं विचारेत्वा वुच्चमाना पाकटा होती"**ति ।

"सुत्तनिक्खेपा"तिआदीसु निक्खिपनं निक्खेपो, सुत्तस्स निक्खेपो सुत्तस्स कथनं **सुत्तनिक्खेपो,** सुत्तदेसनाति अत्थो । निक्खिपीयतीति वा निक्खेपो, सुत्तंयेव निक्खेपो **सुत्तनिक्खेपो ।** अत्तनो अज्झासयो अत्तज्झासयो, सो अस्स अत्थि सुत्तदेसनाकारणभूतोति **अत्तज्झासयो ।** अत्तनो अज्झासयो एतस्साति वा **अत्तज्झासयो । परज्झासयो**ति एत्थापि एसेव नयो । पुच्छाय वसो पुच्छावसो, सो एतस्स अत्थीति **पुच्छवसिको ।** अरणीयतो अत्थो, सुत्तदेसनाय वत्थु । अत्थस्स उप्पत्ति अत्थुप्पत्ति, अत्थुप्पत्तियेव अट्ठुप्पत्ति, सा एतस्स अत्थीति **अट्ठुप्पत्तिको ।** अथ वा निक्खिपीयति सुत्तं एतेनाति **सुत्तनिक्खेपो,** अत्तज्झासयादि एव । एतस्मिं पन अत्थविकप्पे अत्तनो अज्झासयो **अत्तज्झासयो,** परेसं अज्झासयो **परज्झासयो,** पुच्छीयतीति पुच्छा, पुच्छितब्बो अत्थो । सोतब्बवसप्पवत्तं धम्मप्पटिग्गाहकानं वचनं पुच्छावसिका, तदेव निक्खेपसद्दापेक्खाय पुल्लिङ्गवसेन वुत्तं **"पुच्छावसिको"**ति । तथा अट्ठुप्पत्तियेव **"अट्ठुप्पत्तिको"**ति एवम्पेत्थ अत्थो वेदितब्बो ।

एत्थ च परेसं इन्द्रियपरिपाकादिकारणनिरपेक्खता अत्तज्झासयस्स विसुं निक्खेपभावो युत्तो । तेनेवाह **"केवलं अत्तनो अज्झासयेनेव कथेती"**ति । परज्झासयपुच्छावसिकानं पन परेसं अज्झासयपुच्छानं देसनानिमित्तभूतानं उप्पत्तियं पवत्तितानं कथं अट्ठुप्पत्तियं अनवरोधो, पुच्छावसिकअट्ठुप्पत्तिकानं वा परज्झासयानुरोधेन पवत्तितदेसनत्ता कथं परज्झासये अनवरोधोति न चोदेतब्बमेतं । परेसञ्हि अभिनीहारपरिपुच्छादिविनिमुत्तस्सेव सुत्तदेसनाकारणुप्पादस्स अट्ठुप्पत्तिभावेन गहितत्ता परज्झासयपुच्छावसिकानं विसुं गहणं । तथा हि धम्मदायादसुत्तादीनं (म० नि० १.२९) आमिसुप्पादादिदेसनानिमित्तं "अट्ठुप्पत्ती"ति वुच्चति । परेसं पुच्छं विना अज्झासयमेव निमित्तं कत्वा देसितो परज्झासयो, पुच्छावसेन देसितो पुच्छावसिकोति पाकटो यमत्थोति । **अत्तनो अज्झासयेनेव कथेसि** धम्मतन्तिठपनत्थन्ति दट्ठब्बं । **सम्मप्पधानसुत्तन्तहारको**ति अनुपुब्बेन निद्दिट्ठानं संयुत्तके सम्मप्पधानपटिसंयुत्तानं सुत्तानं आवळि, तथा **इद्धिपादहारकादि । विमुत्तिपरिपाचनीया धम्मा** सद्धिन्द्रियादयो । **अभिनीहार**न्ति पणिधानं ।

वण्णावण्णेति एत्थ "अच्छरियं आवुसो"तिआदिना भिक्खुसङ्घेन वुत्तो वण्णोपि सङ्गहितो, तं पन अट्ठुप्पत्तिं कत्वा "अत्थि भिक्खवे अञ्ञे च धम्मा"तिआदिना उपरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसनं आरभिस्सतीति। "ममं वा भिक्खवे परे वण्णं भासेय्यु"न्ति इमिस्सा देसनाय ब्रह्मदत्तेन वुत्तवण्णो अट्ठुप्पत्तीति कत्वा वुत्तं **"अन्तेवासी वण्णं। इति इमं वण्णावण्णं अट्ठुप्पत्तिं कत्वा"**ति। **वा**-सद्दो उपमानसमुच्चयसंसयववस्सग्गपदपूरणविकप्पादीसु बहूसु अत्थेसु दिस्सति। तथा हेस "पण्डितो वापि तेन सो"तिआदीसु (ध० प० ६३) उपमाने दिस्सति, सदिसभावेति अत्थो। "तं वापि धीरा मुनि वेदयन्ती"तिआदीसु (सु० नि० २०३) समुच्चये, "के वा इमे, कस्स वा"तिआदीसु (पारा० २९६) संसये, "अयं वा इमेसं समणब्राह्मणानं सब्बबालो सब्बमूळ्हो"तिआदीसु ववस्सग्गे, "न वायं कुमारको मत्तमञ्ञासी"तिआदीसु (सं० नि० १.२.१५४) पदपूरणे, "ये हि केचि भिक्खवे समणा वा ब्राह्मणा वा"तिआदीसु (म० नि० १.१७०) विकप्पे, इधायं विकप्पेयेवाति दस्सेन्तो आह **"वा-सद्दो विकप्पनत्थो"**ति। **पर**-सद्दो अत्थेव अञ्ञत्थे "अहञ्चेव खो पन धम्मं देसेय्यं, परे च मे न आजानेय्यु"न्तिआदीसु (दी० नि० २.६४, ६५; म० नि० १.२८१; म० नि० २.२२३; सं० नि० १.१.१७२; महाव० ४, ८) अत्थि अधिके "इन्द्रियपरोपरियत्तञाण"न्तिआदीसु (पटि० म० मातिका ६८, १.१११) अत्थि पच्छाभागे "परतो आगमिस्सती"तिआदीसु। अत्थि पच्चनीकभावे "उप्पन्नं परप्पवादं सह धम्मेन सुनिग्गहितं निग्गहेत्वा"तिआदीसु (दी० नि० २.१६८)। इधापि पच्चनीकभावेति दस्सेन्तो आह **"परेति पटिविरुद्धा"**ति।

ईदिसेसुपीति एत्थ **पि**-सद्दो सम्भावने, तेन रतनत्तयनिमित्तम्पि अकुसलचित्तप्पवत्ति न कातब्बा, पगेव वट्टामिसलोकामिसनिमित्तन्ति दस्सेति। सभावधम्मतो अञ्ञस्स कत्तुअभावजोतनत्थं आहनतीति कत्तुअत्थे आघातसद्दं दस्सेति, तत्थ **आहनती**ति हिंसति विबाधति, उपतापेति चाति अत्थो। आहनति एतेन, आहननमत्तं वा **आघातो**ति करणभावत्थापि सम्भवन्तियेव। एवं अवयवभेदनेन आघात-सद्दस्स अत्थं वत्वा इदानि तत्थ परियायेनपि अत्थं दस्सेन्तो **"कोपस्सेतं अधिवचन"**न्ति आह। अयञ्च नयो **"अप्पच्चयो अनभिरद्धी"**तिआदीसुपि यथासम्भवं वत्तब्बो। **अप्पतीता होन्ति तेना**ति पाकटपरियायेन अप्पच्चय-सद्दस्स अत्थदस्सनं, तंमुखेन पन न पच्चेति तेनाति **अप्पच्चयो**ति दट्ठब्बं। **अभिराधयती**ति साधयति। **द्वीही**ति आघातअनभिरद्धिपदेहि। **एकेना**ति अप्पच्चयपदेन। **सेसान**न्ति सञ्ञाविञ्ञाणक्खन्धानं, सञ्ञाविञ्ञाणअवसिट्ठसङ्खारक्खन्धसङ्खातानं वा। **करण**न्ति उप्पादनं। आघातादीनञ्हि पवत्तिया पच्चयसमवायनं इध "करण"न्ति वुत्तं, तं पन अत्थतो उप्पादनमेव। अनुप्पादनञ्हि सन्धाय भगवता "न करणीया"ति वुत्तन्ति। **पटिक्खित्तमेव** एकुप्पादेकवत्थुकेकारम्मणेकनिरोधभावतो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थाति तस्मिं मनोपदोसे। **तुम्हे**न्ति "तुम्हाक"न्ति इमिना समानत्थो एको सद्दो "यथा अम्हाक"न्ति इमिना समानत्थो "अम्ह"न्ति अयं सद्दो। यथाह, "तस्मा हि अम्हं दहरा न मिय्यरे"ति (जा० १.९.९३, ९९)। **"अन्तरायो"**ति इदं मनोपदोसस्स अकरणीयताय कारणवचनं। यस्मा तुम्हाकंयेव च भवेय्य तेन कोपादिना पठमज्झानादीनं अन्तरायो, तस्मा ते कोपादिपरियायेन वुत्ता आघातादयो न करणीयाति अत्थो। तेन नाहं "सब्बञ्ञू"ति इस्सरभावेन तुम्हे ततो निवारेमि, अथ खो इमिना नाम कारणेनाति दस्सेति। तं पन कारणवचनं यस्मा आदीनवविभावनं होति, तस्मा आह **"आदीनवं दस्सेन्तो"**ति। **"अपि नु तुम्हे"**तिआदिना मनोपदोसो न कालन्तरभाविनोयेव हितसुखस्स अन्तरायकरो, अथ खो तङ्खणप्पवत्तिरहस्सपि हितसुखस्स अन्तरायकरोति मनोपदोसे आदीनवं दळ्हतरं कत्वा दस्सेति। **येसं केसञ्चि** "परे"तिआदीसु विय न पटिविरुद्धानंयेवाति अत्थो। तेनेवाह **"कुपितो"**तिआदि।

अन्धतमन्ति अन्धभावकरतमं। **य**न्ति यत्थ। भुम्मत्थे हि एतं पच्चत्तवचनं। यस्मिं काले कोधो सहते नरं, अन्धतमं तदा होतीति सम्बन्धो। **य**न्ति वा कारणवचनं, यस्मा कोधो उप्पज्जमानो नरं अभिभवति, तस्मा अन्धतमं तदा होति, यदा कोधोति अत्थो यंतंसद्दानं एकन्तसम्बन्धिभावतो। अथ वा **य**न्ति किरियाय परामसनं। **कोधो सहते**ति यदेतं कोधस्स सहनं अभिभवनं, एतं अन्धकारतमभवनन्ति अत्थो। अथ वा यं नरं कोधो सहते अभिभवति, तस्स अन्धतमं तदा होति, ततो च कुद्धो अत्थं न जानाति, कुद्धो धम्मं न पस्सतीति। **अन्तरतो**ति अब्भन्तरतो, चित्ततो वा।

"इदञ्चिदञ्च कारण"न्ति इमिना सब्बञ्ञू एव अम्हाकं सत्था अविपरीतधम्मदेसनत्ता, स्वाक्खातो धम्मो एकन्तनिय्यानिकत्ता, सुप्पटिपन्नो सङ्घो संकिलेसरहितत्ताति इममत्थं दस्सेति। **"इदञ्चिदञ्च कारण"**न्ति एतेन च "न सब्बञ्ञू"तिआदिवचनं अभूतं अतच्छन्ति निब्बेठितं होति। **दुतियं पद**न्ति "अतच्छ"न्ति पदं। **पठमस्सा**ति "अभूत"न्ति पदस्स। **चतुत्थञ्चा**ति "न च पनेतं अम्हेसु संविज्जती"ति पदं। **ततियस्सा**ति "नत्थि चेतं अम्हेसू"ति पदस्स। **अवण्णेयेवा**ति कारणपतिरूपकं वत्वा दोसपतिट्ठापनवसेन निन्दने एव। **न सब्बत्था**ति केवलं अक्कोसनखुंसनवम्भनादीसु न एकन्तेन निब्बेठनं कातब्बन्ति अत्थो। वुत्तमेवत्थं **"यदि ही"**तिआदिना पाकटं कत्वा दस्सेति।

६. **आनन्द**न्ति पमोदन्ति **एतेन** धम्मेन तंसमङ्गिनो सत्ताति आनन्द-सद्दस्स करणत्थतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस्सेति। सोभनं मनो अस्साति सुमनो, सोभनं वा मनो सुमनो, तस्स भावो सोमनस्सन्ति तदञ्ञधम्मानम्पि सम्पयुत्तानं सोमनस्सभावो आपज्जतीति? नापज्जति रुळ्हीसद्दत्ता यथा "पङ्कज"न्ति दस्सेन्तो **"चेतसिकसुखस्सेतं अधिवचन"**न्ति आह। उब्बिलयतीति उब्बिलं, भिन्दति पुरिमावत्थाय विसेसं आपज्जतीति अत्थो। उब्बिलमेव उब्बिलावितं, तस्स भावो **उब्बिलावितत्तं।** याय उप्पन्नाय कायचित्तं वातपूरितभस्ता विय उद्धुमायनाकारप्पत्तं होति, तस्सा गेहस्सिताय ओदग्गियपीतिया एतं अधिवचनं। तेनेवाह **"उद्धच्चावहाया"**तिआदि। इधापि "किञ्चापि तेसं भिक्खूनं उब्बिलावितमेव नत्थि, अथ खो आयतिं कुलपुत्तानं एदिसेसुपि ठानेसु अकुसलुप्पत्तिं पटिसेधेन्तो धम्मनेत्तिं ठपेती"ति, **"द्वीहि पदेहि सङ्खारक्खन्धो, एकेन वेदनाक्खन्धो वुत्तो"**ति एत्थ "तेसं वसेन सेसानम्पि सम्पयुत्तधम्मानं करणं पटिक्खित्तमेवा"ति च अट्ठकथायं, **"पि-सद्दो** सम्भावने"तिआदिना इध च वुत्तनयेन अत्थो यथासम्भवं वेदितब्बो। **"तुम्हंयेवस्स तेन अन्तरायो"**ति एत्थापि "अन्तरायोति इद"न्तिआदिना हेट्ठा अवण्णपक्खे वुत्तनयेन अत्थो वेदितब्बो।

कस्मा पनेतन्ति च वक्खमानंयेव अत्थं मनसि कत्वा चोदेति। आचरियो **"सच्चं वण्णित"**न्ति तमत्थं पटिजानित्वा **"तं पन नेक्खम्मनिस्सित"**न्तिआदिना परिहरति। तत्थ **एत**न्ति आनन्दादीनं अकरणीयतावचनं। ननु भगवता वण्णितन्ति सम्बन्धो। **कसिणेना**ति कसिणताय सकलभावेन। केचि पन **"जम्बुदीपस्सा**ति करणे सामिवचन"न्ति वदन्ति, तेसं मतेन कसिणजम्बुदीप-सद्दानं समानाधिकरणभावो दट्ठब्बो। **तस्मा**ति यस्मा गेहस्सितपीतिसोमनस्सं झानादीनं अन्तरायकरं, तस्मा। वुत्तञ्हेतं भगवता "सोमनस्सं पाहं देवानं इन्द दुविधेन वदामि सेवितब्बम्पि असेवितब्बम्पी"ति (दी० नि० २.३५९)। **"अयञ्ही"**तिआदि येन सम्पयुत्ता पीति अन्तरायकरी, तं दस्सनत्थं वुत्तं। तत्थ "इदञ्हि लोभसहगतं पीतिसोमनस्स"न्ति वत्तब्बं सिया, पीतिग्गहणेन पन सोमनस्सम्पि गहितमेव होति सोमनस्सरहिताय पीतिया अभावतोति पीतियेव गहितात्ति दट्ठब्बं। अथ वा सेवितब्बासेवितब्बविभागवचनतो सोमनस्सस्स पाकटो अन्तरायकरभावो, न तथा पीतियाति पीतियेव लोभसहगतत्तेन विसेसेत्वा वुत्ता। **"लुद्धो अत्थ"**न्तिआदिगाथानं "कुद्धो अत्थ"न्तिआदि गाथासु विय अत्थो दट्ठब्बो।

"ममं वा भिक्खवे परे वण्णं भासेय्युं, धम्मस्स वा वण्णं भासेय्युं, सङ्घस्स वा वण्णं भासेय्युं, तत्र चे तुम्हे अस्सथ आनन्दिनो सुमना उब्बिलाविता, अपि नु तुम्हे परेसं सुभासितदुब्भासितं आजानेय्याथाति। नो हेतं भन्ते"ति अयं **ततियवारो,** सो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसनाकाले नीहरित्वा देसेतब्बपुग्गलाभावतो देसनाय अनागतोपि तदत्थसम्भवतो अत्थतो आगतोयेवाति दट्ठब्बो यथा तं कथावत्थुपकरणं वित्थारवसेनाति अधिप्पायो। **"अत्थतो आगतो येवा"**ति एतेन संवण्णनाकाले तथा बुज्झनकसत्तानं वसेन सो वारो आनेत्वा वत्तब्बोति दस्सेति। **"यथेव ही"**तिआदिना तमेवत्थसम्भवं विभावेति। **वुत्तनयेना**ति "तत्र तुम्हेहीति तस्मिं वण्णे तुम्हेही"तिआदिना, "दुतियं पदं पठमस्स पदस्स, चतुत्थञ्च ततियस्स वेवचन"न्तिआदिना च वुत्तनयेन।

चूळसीलवण्णना

७. **निवत्तो** अमूलकत्ता विस्सज्जेतब्बताभावतो। **अनुवत्ततियेव** विस्सज्जेतब्बताय अधिकतभावतो। **अनुसन्धिं दस्सेस्सति** "अत्थि भिक्खवे"तिआदिना। ओरन्ति वा अपरभागो "ओरतो भोगं, ओरं पार"न्तिआदीसु विय। अथ वा हेट्ठाअत्थो **ओर**-सद्दो "ओरं आगमनाय ये पच्चया, ते ओरम्भागियानि संयोजनानी"तिआदीसु विय। सीलञ्हि समाधिपञ्ञायो अपेक्खित्वा अपरभागो, हेट्ठाभूतञ्च होतीति। **सीलमत्तक**न्ति एत्थ **मत्त**-सद्दो अप्पकत्थो वा "भेसज्जमत्ता"तिआदीसु (दी० नि० १.४४७) विय। विसेसनिवत्तिअत्थो वा "अवितक्कविचारमत्ता धम्मा (ध० स० तिकमातिका ६), मनोमत्ता धातु मनोधातू"ति च आदीसु विय। "अप्पमत्तकं, ओरमत्तक"न्ति पदद्वयेन सामञ्ञतो वुत्तोयेव हि अत्थो सीलमत्तकन्ति विसेसवसेन वुत्तो। अथ वा सीलेनपि तदेकदेसस्सेव सङ्गहणत्थं अप्पकत्थवाचको, विसेसनिवत्तिअत्थो एव वा "सीलमत्तक"न्ति एत्थ **मत्त**-सद्दो वुत्तो। तथा हि इन्द्रियसंवरपच्चयसन्निस्सितसीलानि इध देसनं अनारुळ्हानि। न हि तानि पातिमोक्खआजीवपारिसुद्धिसीलानि विय सब्बपुथुज्जनेसु पाकटानीति। **"उस्साहं कत्वा"**ति एतेन **"वदमानो"**ति एत्थ सतिअत्थं मान-सद्दं दस्सेति।

अलङ्करणं विभूसनं **अलङ्कारो,** कुण्डलादिपसाधनं वा। ऊनट्ठानपूरणं **मण्डनं। मण्डने**ति मण्डनहेतु। अथ वा मण्डतीति मण्डनो, मण्डनजातिको पुरिसो। बहुवचनत्थे च इदं एकवचनं, मण्डनसीलेसूति अत्थो। **परिपूरकारी**ति एत्थ **इति**-सद्दो आदिअत्थो, पकारत्थो वा, तेन सकलम्पि सीलथोमन सुत्तं दस्सेति। **चन्दन**न्ति चन्दनसहचरणतो चन्दनगन्धो, तथा **तगरा**दीसुपि। **सतञ्च गन्धो**ति एत्थ गन्धो वियाति गन्धोति वुत्तो सीलनिबन्धनो थुतिघोसो। सीलञ्हि कित्तिया निमित्तं। यथाह "सीलवतो सीलसम्पन्नस्स कल्याणो कित्तिसद्दो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भुग्गच्छती''ति (दी० नि० २.१५०; अ० नि० २.५.२१३; महाव० २८५)। **पवायतीति** पकासति। गन्धाव **गन्धजाता।**

''अप्पकं बहुक''न्ति इदं परापारं विय अञ्ञमञ्ञं उपनिधाय वुच्चतीति आह **''उपरिगुणे उपनिधाया''**ति। **सीलञ्हीति** एत्थ **हि**-सद्दो हेतुअत्थो, तेन इदं दस्सेति ''यस्मा सीलं किञ्चापि पतिट्ठाभावेन समाधिस्स बहुकारं, पभावादिगुणविसेसे पनस्स उपनिधाय कलम्पि न उपेति, तथा समाधि च पञ्ञाया''ति। तेनेवाह **''तस्मा''**तिआदि। इदानि ''कथ''न्ति पुच्छित्वा समाधिस्स आनुभावं वित्थारतो विभावेति। **''अभि...पे०... मूले''**ति इदं यमकपाटिहारियस्स सुपाकटभावदस्सनत्थं, अञ्ञेहि बोधिमूलञातिसमागमादीसु कतपाटिहारियेहि विसेसनत्थञ्च वुत्तं। यमकपाटिहारियकरणत्थाय हि भगवतो चित्ते उप्पन्ने तदनुच्छविकं ठानं इच्छितब्बन्ति रतनमण्डपादि सक्कस्स देवरञ्ञो आणाय विस्सकम्मुना निम्मितन्ति वदन्ति, भगवताव निम्मितन्ति अपरे। ''यो कोचि एवरूपं पाटिहारियं कातुं समत्थो अत्थि चे, आगच्छतू''ति चोदनासदिसत्ता वुत्तं **''अत्तादानपरिदीपन''**न्ति। तत्थ **अत्तादानं** अनुयोगो, तित्थियानं तथा कातुं असमत्थत्ता, ''करिस्सामा''ति पुब्बे उट्ठितत्ता **तित्थियपरिमद्दनं।**

उपरिमकायतोतिआदि पटिसम्भिदामग्गे (पटि० म० १.११६)।

तत्थायं पाळिसेसो –

''हेट्ठिमकायतो अग्गिक्खन्धो पवत्तति, उपरिमकायतो उदकधारा पवत्तति। पुरत्थिमकायतो अग्गि, पच्छिमकायतो उदकं। पच्छिमकायतो अग्गि, पुरत्थिमकायतो उदकं। दक्खिणअक्खितो अग्गि, वामअक्खितो उदकं। वामअक्खितो अग्गि, दक्खिणअक्खितो उदकं। दक्खिणकण्णसोततो अग्गि, वामकण्णसोततो उदकं। वामकण्णसोततो अग्गि, दक्खिणकण्णसोततो उदकं। दक्खिणनासिकासोततो अग्गि, वामनासिकासोततो उदकं। वामनासिकासोततो अग्गि, दक्खिणनासिकासोततो उदकं। दक्खिणअंसकूटतो अग्गि, वामअंसकूटतो उदकं। वामअंसकूटतो अग्गि, दक्खिणअंसकूटतो उदकं। दक्खिणहत्थतो अग्गि, वामहत्थतो उदकं। वामहत्थतो अग्गि, दक्खिणहत्थतो उदकं। दक्खिणपस्सतो अग्गि, वामपस्सतो उदकं। वामपस्सतो अग्गि, दक्खिणपस्सतो उदकं। दक्खिणपादतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गि, वामपादतो उदकं। वामपादतो अग्गि, दक्खिणपादतो उदकं। अङ्गुलङ्गुलेहि अग्गि, अङ्गुलन्तरिकाहि उदकं। अङ्गुलन्तरिकाहि अग्गि, अङ्गुलङ्गुलेहि उदकं। एकेकलोमतो अग्गि, एकेकलोमतो उदकं। लोमकूपतो लोमकूपतो अग्गिक्खन्धो पवत्तति, लोमकूपतो लोमकूपतो उदकधारा पवत्तती''ति (पटि० म० १.११६)।

अट्ठकथायं पन ''एकेकलोमकूपतो''ति आगतं।

''**छन्नं वण्णानन्ति आदिनयप्पवत्त**''न्ति एत्थापि नीलानं पीतकानं लोहितकानं ओदातानं मञ्जिट्ठानं पभस्सरानन्ति अयं पाळिसेसो। ''**सुवण्णवण्णा रस्मियो**''ति इदं तासं येभुय्यताय वुत्तं। **वित्थारेतब्ब**न्ति एत्थापि ''सत्था तिट्ठति, निम्मितो चङ्कमति वा निसीदति वा सेय्यं वा कप्पेती''तिआदिना चतूसु इरियापथेसु एकेकमूलका सत्थुवसेन चत्तारो, निम्मितवसेन चत्तारोति सब्बेव अट्ठ वारे वित्थारेतब्बं।

मधुपायासन्ति मधुसित्तं पायासं। अत्ता मित्तो मज्झत्तो वेरीति चतूसु सीमसम्भेदवसेन **चतुरङ्गसमन्नागतं मेत्ताकम्मट्ठानं**। ''चतुरङ्गसमन्नागत''न्ति इदं पन ''वीरियाधिट्ठान''न्ति एतेनापि योजेतब्बं। तत्थ ''कामं तचो च न्हारु चा''तिआदिपाळि (म० नि० २.१८४; सं० नि० १.२.२२; अ० नि० १.२.५; अ० नि० ३.८.१३; महानि० १९६) वसेन चतुरङ्गसमन्नागतता वेदितब्बा। ''किच्छं वतायं लोको आपन्नो''तिआदिना (दी० नि० २.५७; सं० नि० १.२.४) जरामरणमुखेन **पच्चयाकारे ञाणं ओतारेत्वा। आनापानचतुत्थज्झान**न्ति एत्थापि ''सब्बबुद्धानं आचिण्ण''न्ति पदं विभत्तिविपरिणामं कत्वा योजेतब्बं। तम्पि हि सब्बबुद्धानं आचिण्णमेवाति वदन्ति। छत्तिंसकोटिसतसहस्समुखेन महावजिरञाणगब्भं गण्हापेन्तो **विपस्सनं वड्ढेत्वा**। द्वत्तिंसदोणगण्हनप्पमाणं कुण्डं **कोलम्बो**। दरिभागो **कन्दरो**। चक्कवाळपादेसु महासमुद्दो **चक्कवाळमहासमुद्दो**।

''**दुवे पुथुज्जना**''तिआदि पुथुज्जने लब्भमानविभागदस्सनत्थं वुत्तं, न मूलपरियायवण्णनादीसु विय पुथुज्जनविसेसनिद्धारणत्थं। सब्बोपि हि पुथुज्जनो भगवतो उपरि गुणे विभावेतुं न सक्कोति, तिट्ठतु पुथुज्जनो, सावकपच्चेकबुद्धानम्पि अविसया बुद्धगुणा। तथा हि वक्खति ''सोतापन्ना''तिआदि (दी० नि० अट्ठ० १.८)। वाचुग्गतकरणं **उग्गहो**। अत्थपरिपुच्छनं **परिपुच्छा**। अट्ठकथावसेन अत्थस्स सवनं **सवनं**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्यञ्जनत्थानं सुनिक्खेपसुदस्सनेन धम्मस्स परिहरणं **धारणं**। एवं सुतधातपरिचितानं मनसानुपेक्खनं **पच्चवेक्खणं**। बहूनं नानप्पकारानं किलेसानं सक्कायदिट्ठिया च अविहतत्ता ता जनेन्ति, ताहि वा जनिताति **पुथुज्जना**। अविघातमेव वा **जन**-सद्दो वदति। **पुथु सत्थारानं मुखुल्लोकिकाति** एत्थ पुथू जना सत्थुपटिञ्ञा एतेसन्ति **पुथुज्जनाति** वचनत्थो। **पुथु...पे०... अवुट्ठिताति** एत्थ जनेतब्बा, जायन्ति वा एत्थाति जना, गतियो। पुथू जना एतेसन्ति **पुथुज्जना**। इतो परे जायन्ति एतेहीति जना, अभिसङ्खारादयो। ते एतेसं पुथू विज्जन्तीति **पुथुज्जना**। अभिसङ्खरणादि अत्थो एव वा **जन**-सद्दो दट्ठब्बो। कामरागभवरागदिट्ठिअविज्जा **ओघा**। रागग्गिआदयो **सन्तापा**। तेयेव, सब्बेपि वा किलेसा **परिळाहा**। **पुथु पञ्चसु कामगुणेसु रत्ताति** एत्थ जायतीति जनो, रागो गेधोति एवं आदिको। पुथु जनो एतेसन्ति **पुथुज्जना,** पुथूसु वा जना जाता रत्ताति एवं रागादिअत्थो एव वा **जन**-सद्दो दट्ठब्बो। **पलिबुद्धाति** सम्बुद्धा, उपद्दुता वा। **"पुथूनं गणनपथमतीतान"**न्तिआदिना पुथू जना **पुथुज्जनाति** दस्सेति।

येहि गुणविसेसेहि निमित्तभूतेहि भगवति **तथागत**-सद्दो पवत्तो, तंदस्सनत्थं **"अट्ठहि कारणेहि भगवा तथागतो"**तिआदिमाह। गुणनेमित्तकानेव हि भगवतो सब्बानि नामानि। यथाह –

"असङ्ख्येय्यानि नामानि, सगुणेन महेसिनो।
गुणेन नाममुद्धेय्यं, अपि नामसहस्सतो"ति।। (ध० स० अट्ठ० १३१३; उदा० अट्ठ० ५३; पटि० म० अट्ठ० १.१.७६)

तथा आगतोति एत्थ आकारनियमनवसेन ओपम्मसम्पटिपादनत्थो **तथा**-सद्दो। सामञ्ञजोतनाय विसेसावट्ठानतो पटिपदागमनत्थो **आगत**-सद्दो, न ञाणगमनत्थो "तथलक्खणं आगतो"तिआदीसु (दी० नि० अट्ठ० १.७; म० नि० अट्ठ० १.१२; सं० नि० अट्ठ० २.४.७८; अ० नि० अट्ठ० १.१.१७०; उदा० अट्ठ० १८; पटि० म० अट्ठ० १.१.३७; थेरगा० अट्ठ० १.३; इतिवु० अट्ठ० ३८; महानि० अट्ठ० १४) विय, नापि कायगमनादिअत्थो "आगतो खो महासमणो, मागधानं गिरिब्बज"न्तिआदीसु (महाव० ६२) विय। तत्थ यदाकारनियमनवसेन ओपम्मसम्पटिपादनत्थो तथा-सद्दो, तं करुणापधानत्ता महाकरुणामुखेन पुरिमबुद्धानं आगमनपटिपदं उदाहरणवसेन सामञ्ञतो दस्सेन्तो यंतंसद्दानं एकन्तसम्बन्धभावतो **"यथा सब्बलोक...पे०... आगता"**ति आह। तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन पटिपदं महापदानसुत्तादीसु (दी० नि० २.४) सम्बहुलनिद्देसेन सुपाकटानं आसन्नानञ्च विपस्सीआदीनं छन्नं सम्मासम्बुद्धानं वसेन निदस्सेन्तो **"यथा विपस्सी भगवा"**तिआदिमाह। तत्थ **येन अभिनीहारेना**ति मनुस्सत्तलिङ्गसम्पत्ति-हेतुसत्थारदस्सनपब्बज्जाअभिञ्ञादिगुणसम्पत्तिअधिकारछन्दानं वसेन अट्ठङ्गसमन्नागतेन कायप्पणिधानमहापणिधानेन। सब्बेसञ्हि बुद्धानं कायप्पणिधानं इमिनाव अभिनीहारेन समिज्झतीति। एवं महाभिनीहारवसेन "तथागतो"ति पदस्स अत्थं दस्सेत्वा इदानि पारमीपूरणवसेन दस्सेतुं **"यथा विपस्सी भगवा...पे०... कस्सपो भगवा दानपारमिं पूरेत्वा"**तिआदिमाह।

एत्थ च सुत्तन्तिकानं महाबोधियानपटिपदाय कोसल्लजननत्थं पारमीसु अयं वित्थारकथा – का पनेता पारमियो ? केनट्ठेन पारमियो ? कतिविधा चेता ? को तासं कमो ? कानि लक्खणरसपच्चुपट्ठानपदट्ठानानि ? को पच्चयो ? को संकिलेसो ? किं वोदानं ? को पटिपक्खो ? का पटिपत्ति ? को विभागो ? को सङ्गहो ? को सम्पादनूपायो ? कित्तकेन कालेन सम्पादनं ? को आनिसंसो ? किं चेतासं फलन्ति ?

तत्रिदं विस्सज्जनं – **का पनेता पारमियो**ति। तण्हामानादीहि अनुपहता करुणूपायकोसल्लपरिग्गहिता दानादयो गुणा पारमियो।

केनट्ठेन पारमियोति दानसीलादिगुणविसेसयोगेन सत्तुत्तमताय परमा महासत्ता बोधिसत्ता, तेसं भावो, कम्मं वा पारमी, दानादिकिरिया। अथ वा परतीति परमो, दानादिगुणानं पूरको पालको च बोधिसत्तो। परमस्स अयं, परमस्स वा भावो, कम्मं वा पारमी, दानादिकिरियाव। अथ वा परं सत्तं अत्तनि मवति बन्धति गुणविसेसयोगेन, परं वा अधिकतरं मज्जति सुज्झति संकिलेसमलतो, परं वा सेट्ठं निब्बानं विसेसेन मयति गच्छति, परं वा लोकं पमाणभूतेन ञाणविसेसेन इधलोकं विय मुनाति परिच्छिन्दति, परं वा अतिविय सीलादिगुणगणं अत्तनो सन्ताने मिनोति पक्खिपति, परं वा अत्तभूततो धम्मकायतो अञ्ञं, पटिपक्खं वा तदनत्थकरं किलेसचोरगणं मिनाति हिंसतीति परमो, महासत्तो। "परमस्स अय"न्तिआदि वुत्तनयेनेव योजेतब्बं। पारे वा निब्बाने मज्जति सुज्झति सत्ते च सोधेति, तत्थ वा सत्ते मवति बन्धति योजेति, तं वा मयति गच्छति गमेति च, मुनाति वा तं याथावतो, तत्थ वा सत्ते मिनोति पक्खिपति, किलेसारिं वा

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सत्तानं तत्थ मिनाति हिंसतीति पारमी, महापुरिसो। तस्स भावो, कम्मं वा पारमिता, दानादिकिरियाव। इमिना नयेन पारमीनं सद्दत्थो वेदितब्बो।

कतिविधाति सङ्खेपतो दसविधा, ता पन **पाळियं** सरूपतो आगतायेव। यथाह –

"विचिनन्तो तदा दक्खिं, पठमं दानपारमि"न्तिआदि (बु० वं० ११६)।

यथा चाह –

"कति नु खो भन्ते बुद्धकारका धम्मा? दस खो सारिपुत्त बुद्धकारका धम्मा। कतमे दस? दानं खो सारिपुत्त बुद्धकारको धम्मो, सीलं नेक्खम्मं पञ्ञा वीरियं खन्ति सच्चमधिट्ठानं मेत्ता उपेक्खा बुद्धकारको धम्मो, इमे खो सारिपुत्त दस बुद्धकारका धम्माति। इदमवोच भगवा, इदं वत्वान सुगतो अथापरं एतदवोच सत्था –

'दानं सीलञ्च नेक्खम्मं, पञ्ञा वीरियेन पञ्चमं।
खन्ति सच्चं अधिट्ठानं, मेत्तुपेक्खाति ते दसा'ति"।।

केचि पन "छब्बिधा"ति वदन्ति, तं एतासं सङ्गहवसेन वुत्तं। सो पन सङ्गहो परतो आविभविस्सति।

को तासं कमोति एत्थ **कमो** नाम देसनाक्कमो, सो च पठमसमादानहेतुको, समादानं पविचयहेतुकं, इति यथा आदिम्हि पविचिता समादिन्ना च, तथा देसिता। तत्थ च दानं सीलस्स बहूपकारं सुकरञ्चाति तं आदिम्हि वुत्तं। दानं सीलपरिग्गहितं महप्फलं होति महानिसंसन्ति दानानन्तरं सीलं वुत्तं। सीलं नेक्खम्मपरिग्गहितं, नेक्खम्मं पञ्ञापरिग्गहितं, पञ्ञा वीरियपरिग्गहिता, वीरियं खन्तिपरिग्गहितं, खन्ति सच्चपरिग्गहिता, सच्चं अधिट्ठानपरिग्गहितं, अधिट्ठानं मेत्तापरिग्गहितं, मेत्ता उपेक्खापरिग्गहिता महप्फला होति महानिसंसाति मेत्तानन्तरं उपेक्खा वुत्ता। उपेक्खा पन करुणापरिग्गहिता, करुणा च उपेक्खापरिग्गहिताति वेदितब्बा। कथं पन महाकारुणिका बोधिसत्ता सत्तेसु उपेक्खका होन्तीति? उपेक्खितब्बयुत्तेसु कञ्चि कालं उपेक्खका होन्ति,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न पन सब्बत्थ, सब्बदा चाति केचि। अपरे पन न सत्तेसु उपेक्खका, सत्तकतेसु पन विप्पकारेसु उपेक्खका होन्तीति।

अपरो नयो – पचुरजनेसुपि पवत्तिया सब्बसत्तसाधारणत्ता, अप्पफलत्ता, सुकरत्ता च आदिम्हि **दानं** वुत्तं। सीलेनदायकपटिग्गाहकसुद्धितो, परानुग्गहं वत्वा परपीळानिवत्तिवचनतो, किरियधम्मं वत्वा अकिरियधम्मवचनतो, भोगसम्पत्तिहेतुं वत्वा भवसम्पत्तिहेतुवचनतो च दानस्स अनन्तरं **सीलं** वुत्तं। नेक्खम्मेन सीलसम्पत्तिसिद्धितो, कायवचीसुचरितं वत्वा मनोसुचरितवचनतो, विसुद्धसीलस्स सुखेनेव झानसमिज्झनतो, कम्मापराधप्पहानेन पयोगसुद्धिं वत्वा किलेसापराधप्पहानेन आसयसुद्धिवचनतो, वीतिक्कमप्पहानेन चित्तस्स परियुट्ठानप्पहानवचनतो च सीलस्स अनन्तरं **नेक्खम्मं** वुत्तं। पञ्ञाय नेक्खम्मस्स सिद्धिपरिसुद्धितो, झानाभावे पञ्ञाभाववचनतो। समाधिपदट्ठाना हि पञ्ञा, पञ्ञापच्चुपट्ठानो च समाधि। समथनिमित्तं वत्वा उपेक्खानिमित्तवचनतो, परहितज्झानेन परहितकरणूपायकोसल्लवचनतो च नेक्खम्मस्स अनन्तरं **पञ्ञा** वुत्ता। वीरियारम्भेन पञ्ञाकिच्चसिद्धितो, सत्तसुञ्ञताधम्मनिज्झानक्खन्तिं वत्वा सत्तहिताय आरम्भस्स अच्छरियतावचनतो, उपेक्खानिमित्तं वत्वा पग्गहनिमित्तवचनतो, निसम्मकारितं वत्वा उट्ठानवचनतो च। निसम्मकारिनो हि उट्ठानं फलविसेसमावहतीति पञ्ञाय अनन्तरं **वीरियं** वुत्तं।

वीरियेन तितिक्खासिद्धितो। वीरियवा हि आरद्धवीरियत्ता सत्तसङ्खारेहि उपनीतं दुक्खं अभिभुय्य विहरति वीरियस्स तितिक्खालङ्कारभावतो। वीरियवतो हि तितिक्खा सोभति। पग्गहनिमित्तं वत्वा समथनिमित्तवचनतो, अच्चारम्भेन उद्धच्चदोसप्पहानवचनतो। धम्मनिज्झानक्खन्तिया हि उद्धच्चदोसो पहीयति। वीरियवतो सातच्चकरणवचनतो। खन्तिबहुलो हि अनुद्धतो सातच्चकारी होति। अप्पमादवतो परहितकिरियारम्भे पच्चुपकारतण्हाभाववचनतो। याथावतो धम्मनिज्झाने हि सति तण्हा न होति। परहितारम्भे परमेपि परकतदुक्खसहनभाववचनतो च वीरियस्स अनन्तरं **खन्ति** वुत्ता। सच्चेन खन्तिया चिराधिट्ठानतो, अपकारिनो अपकारखन्तिं वत्वा तदुपकारकरणे अविसंवादवचनतो, खन्तिया अपवादवाचाविकम्पनेन भूतवादिताय अविजहनवचनतो, सत्तसुञ्ञताधम्मनिज्झानक्खन्तिं वत्वा तदुपब्रूहितञाणसच्चवचनतो च खन्तिया अनन्तरं **सच्चं** वुत्तं। अधिट्ठानेन सच्चसिद्धितो। अचलाधिट्ठानस्स हि विरति सिज्झति। अविसंवादितं वत्वा तत्थ अचलभाववचनतो। सच्चसन्धो हि दानादीसु पटिञ्ञानुरूपं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निच्चलोव पवत्तति। ञाणसच्चं वत्वा सम्भारेसु पवत्तिनिट्ठापनवचनतो। यथाभूतञाणवा हि बोधिसम्भारेसु अधितिट्ठति, ते च निट्ठापेति पटिपक्खेहि अकम्पियभावतोति सच्चस्स अनन्तरं **अधिट्ठानं** वुत्तं। मेत्ताय परहितकरणसमादानाधिट्ठानसिद्धितो, अधिट्ठानं वत्वा हितूपसंहारवचनतो। बोधिसम्भारे हि अधितिट्ठमानो मेत्ताविहारी होति। अचलाधिट्ठानस्स समादानाविकोपनतो, समादानसम्भवतो च अधिट्ठानस्स अनन्तरं **मेत्ता** वुत्ता। उपेक्खाय मेत्ताविसुद्धितो, सत्तेसु हितूपसंहारं वत्वा तदपराधेसु उदासीनतावचनतो, मेत्ताभावनं वत्वा तन्निस्सन्दभावनावचनतो, "हितकामसत्तेपि उपेक्खको"ति अच्छरियगुणभाववचनतो च मेत्ताय अनन्तरं **उपेक्खा** वुत्ताति एवमेतासं कमो वेदितब्बो।

कानि लक्खणरसपच्चुपट्ठानपदट्ठानानीति? एत्थ अविसेसेन ताव सब्बापि पारमियो परानुग्गहलक्खणा, परेसं उपकारकरणरसा, अविकम्पनरसा वा, हितेसितापच्चुपट्ठाना, बुद्धत्तपच्चुपट्ठाना वा, महाकरुणापदट्ठाना, करुणूपायकोसल्लपदट्ठाना वा।

विसेसेन पन यस्मा करुणूपायकोसल्लपरिग्गहिता अत्तुपकरणपरिच्चागचेतना **दानपारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितं कायवचीसुचरितं अत्थतो अकत्तब्बविरति, कत्तब्बकरणचेतनादयो च **सीलपारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितो आदीनवदस्सनपुब्बङ्गमो कामभवेहि निक्खमनचित्तुप्पादो **नेक्खम्मपारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितो धम्मानं सामञ्ञविसेसलक्खणावबोधो **पञ्ञापारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितो कायचित्तेहि परहितारम्भो **वीरियपारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितं सत्तसङ्खारापराधसहनं अदोसप्पधानो तदाकारप्पवत्तो चित्तुप्पादो **खन्तिपारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितं विरतिचेतनादिभेदं अविसंवादनं **सच्चपारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितं अचलसमादानाधिट्ठानं तदाकारप्पवत्तो चित्तुप्पादो **अधिट्ठानपारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितो लोकस्स हितूपसंहारो अत्थतो अब्यापादो **मेत्तापारमिता**। करुणूपायकोसल्लपरिग्गहिता अनुनयपटिघविद्धंसिनी इट्ठानिट्ठेसु सत्तसङ्खारेसु समप्पवत्ति **उपेक्खापारमिता**।

तस्मा परिच्चागलक्खणं **दानं,** देय्यधम्मे लोभविद्धंसनरसं, अनासत्तिपच्चुपट्ठानं, भवविभवसम्पत्तिपच्चुपट्ठानं वा, परिच्चजितब्बवत्थुपदट्ठानं। सीलनलक्खणं **सीलं,** समाधानलक्खणं, पतिट्ठानलक्खणञ्चाति वुत्तं होति। दुस्सील्यविद्धंसनरसं, अनवज्जरसं वा, सोचेय्यपच्चुपट्ठानं, हिरोत्तप्पपदट्ठानं। कामतो भवतो च निक्खमनलक्खणं **नेक्खम्मं,**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदादीनवविभावनरसं, ततो एव विमुखभावपच्चुपट्ठानं, संवेगपदट्ठानं। यथासभावपटिवेधलक्खणा **पञ्ञा,** अक्खलितपटिवेधलक्खणा वा कुसलिस्सासखित्तउसुपटिवेधो विय, विसयोभासनरसा पदीपो विय, असम्मोहपच्चुपट्ठाना अरञ्ञगतसुदेसको विय, समाधिपदट्ठाना, चतुसच्चपदट्ठाना वा। उस्साहलक्खणं **वीरियं,** उपत्थम्भनरसं, असंसीदनपच्चुपट्ठानं, वीरियारम्भवत्थु (अ० नि० ३.८.८०) पदट्ठानं, संवेगपदट्ठानं वा। खमनलक्खणा **खन्ति,** इट्ठानिट्ठसहनरसा, अधिवासनपच्चुपट्ठाना, अविरोधपच्चुपट्ठाना वा, यथाभूतदस्सनपदट्ठाना। अविसंवादनलक्खणं **सच्चं,** याथावविभावनरसं [यथासभावविभावनरसं (चरिया० पि० अट्ठ० पतिण्णककथाय)], साधुतापच्चुपट्ठानं, सोरच्चपदट्ठानं। बोधिसम्भारेसु अधिट्ठानलक्खणं **अधिट्ठानं,** तेसं पटिपक्खाभिभवनरसं, तत्थ अचलतापच्चुपट्ठानं, बोधिसम्भारपदट्ठानं। हिताकारप्पवत्तिलक्खणा **मेत्ता,** हितूपसंहाररसा, आघातविनयनरसा वा, सोम्मभावपच्चुपट्ठाना, सत्तानं मनापभावदस्सनपदट्ठाना। मज्झत्ताकारप्पवत्तिलक्खणा **उपेक्खा,** समभावदस्सनरसा, पटिघानुनयवूपसमपच्चुपट्ठाना, कम्मस्सकतापच्चवेक्खणपदट्ठाना। एत्थ च करुणूपायकोसल्लपरिग्गहितता दानादीनं परिच्चागादिलक्खणस्स विसेसनभावेन वत्तब्बा, यतो तानि पारमीसङ्ख्यं लभन्तीति।

को पच्चयोति अभिनीहारो पच्चयो। यो हि अयं "मनुस्सत्तं लिङ्गसम्पत्ती"तिआदि (बुद्ध० वं० २.५९) अट्ठधम्मसमोधानसम्पादितो "तिण्णो तारेय्यं, मुत्तो मोचेय्यं, बुद्धो बोधेय्यं, सुद्धो सोधेय्यं, दन्तो दमेय्यं, सन्तो समेय्यं, अस्सत्थो अस्सासेय्यं, परिनिब्बुतो परिनिब्बापेय्य"न्तिआदिना (चरिया० पि० अट्ठ० पकिण्णककथाय) पवत्तो अभिनीहारो, सो अविसेसेन सब्बपारमीनं पच्चयो। तप्पवत्तिया हि उद्धं पारमीनं पविचयुपट्ठानसमादानाधिट्ठाननिप्फत्तियो महापुरिसानं सम्भवन्ति।

यथा च अभिनीहारो, एवं महाकरुणा, उपायकोसल्लञ्च। तत्थ **उपायकोसल्लं** नाम दानादीनं बोधिसम्भारभावस्स निमित्तभूता पञ्ञा, याहि करुणूपायकोसल्लताहि महापुरिसानं अत्तसुखनिरपेक्खता, निरन्तरं परहितकरणपसुतता, सुदुक्करेहिपि महाबोधिसत्तचरितेहि विसादाभावो, पसादसम्बुद्धिदस्सनसवनानुस्सरणावत्थासुपि सत्तानं हितसुखपटिलाभहेतुभावो च सम्पज्जति। तथा हि पञ्ञाय बुद्धभावसिद्धि, करुणाय बुद्धकम्मसिद्धि। पञ्ञाय सयं तरति, करुणाय परे तारेति। पञ्ञाय परदुक्खं परिजानाति, करुणाय परदुक्खपटिकारं आरभति। पञ्ञाय च दुक्खे निब्बिन्दति, करुणाय दुक्खं सम्पटिच्छति। तथा पञ्ञाय परिनिब्बानाभिमुखो होति, करुणाय तं न पापुणाति। तथा करुणाय संसाराभिमुखो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होति, पञ्ञाय तत्र नाभिरमति। पञ्ञाय च सब्बत्थ विरज्जति, करुणानुगतत्ता न च न सब्बेसं अनुग्गहाय पवत्तो, करुणाय सब्बेपि अनुकम्पति, पञ्ञानुगतत्ता न च न सब्बत्थ विरत्तचित्तो। पञ्ञाय च अहंकारममंकाराभावो, करुणाय आलसियदीनताभावो। तथा पञ्ञाकरुणाहि यथाक्कमं अत्तपरनाथता, धीरवीरभावो, अनत्तन्तपअपरन्तपता, अत्तहितपरहितनिप्फत्ति, निब्भयाभिंसनकभावो, धम्माधिपतिलोकाधिपतिता, कतञ्ञुपुब्बकारिभावो, मोहतण्हाविगमो, विज्जाचरणसिद्धि, बलवेसारज्जनिप्फत्तीति सब्बस्सापि पारमिताफलस्स विसेसेन उपायभावतो पञ्ञाकरुणा पारमीनं पच्चयो। इदञ्च द्वयं पारमीनं विय पणिधानस्सापि पच्चयो।

तथा उस्साहउम्मङ्गअवत्थानहितचरिया च पारमीनं पच्चयोति वेदितब्बा, या बुद्धभावस्स उप्पत्तिट्ठानताय **"बुद्धभूमियो"**ति पवुच्चन्ति। यथाह –

"कति पन भन्ते बुद्धभूमियो? चतस्सो खो सारिपुत्त बुद्धभूमियो। कतमा चतस्सो? उस्साहो च होति वीरियं, उमङ्गो च होति पञ्ञाभावना, अवत्थानञ्च होति अधिट्ठानं, मेत्ताभावना च होति हितचरिया। इमा खो सारिपुत्त चतस्सो बुद्धभूमियो"ति (सु० नि० अट्ठ० १.खग्गविसाणसुत्तवण्णनायम्पि)।

तथा नेक्खम्मपविवेकअलोभादोसामोहनिस्सरणप्पभेदा छ अज्झासया। वुत्तञ्हेतं –

"नेक्खम्मज्झासया च बोधिसत्ता कामे दोसदस्साविनो, पविवेक...पे०... सङ्गणिकाय, अलोभ...पे०... लोभे, अदोस...पे०... दोसे, अमोह...पे०... मोहे, निस्सरणज्झासया च बोधिसत्ता सब्बभवेसु दोसदस्साविनो"ति (विसुद्धि० अट्ठ० १.४९ वाक्यखन्धेपि)।

तस्मा एते बोधिसत्तानं छ अज्झासया दानादीनं पच्चयाति वेदितब्बा। न हि लोभादीसु आदीनवदस्सनेन, अलोभादिअधिकभावेन च विना दानादिपारमियो सम्भवन्ति। अलोभादीनञ्हि अधिकभावेन परिच्चागादिनिन्नचित्तता अलोभज्झासयादिताति। यथा चेते, एवं दानज्झासयतादयोपि। यथाह –

"कति पन भन्ते बोधाय चरन्तानं बोधिसत्तानं अज्झासया? दस खो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारिपुत्त बोधाय चरन्तानं बोधिसत्तानं अज्झासया। कतमे दस? दानज्झासया सारिपुत्त बोधिसत्ता मच्छेरे दोसदस्साविनो, सील...पे०... उपेक्खज्झासया सारिपुत्त बोधिसत्ता सुखदुक्खेसु दोसदस्साविनो''ति।

एतेसु हि मच्छेरअसंवरकामविचिकिच्छाकोसज्जअक्खन्तिविसंवादअनधिट्ठान-ब्यापादसुखदुक्खसङ्खातेसु आदीनवदस्सनपुब्बङ्गमा दानादिनिन्नचित्ततासङ्खाता दानज्झासयतादयो दानादिपारमीनं निब्बत्तिया कारणन्ति। तथा अपरिच्चागपरिच्चागादीसु यथाक्कमं आदीनवानिसंसपच्चवेक्खणा दानादिपारमीनं पच्चयो।

तत्थायं पच्चवेक्खणाविधि – खेत्तवत्थुहिरञ्ञसुवण्णगोमहिंसदासिदासपुत्तदारादि-परिग्गहब्यासत्तचित्तानं सत्तानं खेत्तादीनं वत्थुकामभावेन बहुपत्थनीयभावतो, राजचोरादिसाधारणभावतो, विवादाधिट्ठानतो, सपत्तकरणतो, निस्सारतो, पटिलाभपरिपालनेसु परविहेठनहेतुतो, विनासनिमित्तञ्च सोकादिअनेकविहितब्यसनावहतो, तदासत्तिनिदानञ्च मच्छेरमलपरियुट्ठितचित्तानं अपायूपपत्तिसम्भवतोति एवं विविधविपुलानत्थावहा एते अत्था नाम, तेसं परिच्चागोयेवेको सोत्थिभावोति परिच्चागे अप्पमादो करणीयो।

अपिच ''याचको याचमानो अत्तनो गुय्हस्स आचिक्खनतो मय्हं विस्सासिको''ति च ''पहाय गमनीयं अत्तनो सन्तकं गहेत्वा परलोकं याहीति मय्हं उपदेसको''ति च ''आदित्ते विय अगारे मरणग्गिना आदित्ते लोके ततो मय्हं सन्तकस्स अपवाहकसहायो''ति च ''अपवाहितस्स चस्स निज्झायनिक्खेपट्ठानभूतो''ति च ''दानसङ्खाते कल्याणकम्मस्मिं सहायभावतो, सब्बसम्पत्तीनं अग्गभूताय परमदुल्लभाय बुद्धभूमिया सम्पत्तिहेतुभावतो च परमो कल्याणमित्तो''ति च पच्चवेक्खितब्बं।

तथा ''उळारे कम्मनि अनेनाहं सम्भावितो, तस्मा सा सम्भावना अवितथा कातब्बा''ति च ''एकन्तभेदिताय जीवितस्स अयाचितेनपि मया दातब्बं, पगेव याचितेना''ति च ''उळारज्झासयेहि गवेसित्वापि दातब्बो, सयमेवागतो मम पुञ्ञेना''ति च ''याचकस्स दानापदेसेन मय्हमेवायमनुग्गहो''ति च ''अहं विय अयं सब्बोपि लोको मया अनुग्गहेतब्बो''ति च ''असति याचके कथं मय्हं दानपारमी पूरेय्या''ति च ''याचकानमेवत्थाय मया सब्बो परिग्गहेतब्बो''ति च ''अयाचित्वा मम सन्तकं याचका सयमेव कदा गण्हेय्यु''न्ति च ''कथमहं याचकानं पियो चस्सं मनापो''ति च ''कथं वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते मय्हं पिया चस्सु मनापा''ति च ''कथं वाहं ददमानो, दत्वापि च अत्तमनो अस्सं पमुदितो पीतिसोमनस्सजातो''ति च ''कथं वा मे याचका भवेय्युं, उळारो च दानज्झासयो''ति च ''कथं वाहमयाचितोयेव याचकानं हदयमञ्ञाय ददेय्य''न्ति च ''सति धने याचके च अपरिच्चागो महती मय्हं वञ्चना''ति च ''कथं वाहं अत्तनो अङ्गानि जीवितं वापि याचकानं परिच्चजेय्य''न्ति च पच्चवेक्खितब्बं।

अपिच ''अत्थो नामायं निरपेक्खं दायकं अनुगच्छति यथा तं निरपेक्खं खेपकं किटको''ति अत्थे निरपेक्खताय चित्तं उप्पादेतब्बं। याचमानो पन यदि पियपुग्गलो होति, ''पियो मं याचती''ति सोमनस्सं उप्पादेतब्बं। अथ उदासीनपुग्गलो होति, ''अयं मं याचमानो अद्धा इमिना परिच्चागेन मित्तो होती''ति सोमनस्सं उप्पादेतब्बं। ददन्तोपि हि याचकानं पियो होतीति। अथ पन वेरीपुग्गलो याचति, ''पच्चत्थिको मं याचति, अयं मं याचमानो अद्धा इमिना परिच्चागेन वेरीपि पियो मित्तो होती''ति विसेसतो सोमनस्सं उप्पादेतब्बं। एवं पियपुग्गले विय मज्झत्तवेरीपुग्गलेसुपि मेत्तापुब्बङ्गमं करुणं उपट्ठपेत्वाव दातब्बं।

सचे पनस्स चिरकालपरिभावितत्ता लोभस्स देय्यधम्मविसया लोभधम्मा उप्पज्जेय्युं, तेन बोधिसत्तपटिञ्ञेन इति पटिसञ्चिक्खितब्बं ''ननु तया सप्पुरिस सम्बोधाय अभिनीहारं करोन्तेन सब्बसत्तानं उपकारत्थाय अयं कायो निस्सट्ठो, तप्परिच्चागमयञ्च पुञ्ञं, तत्थ नाम ते बाहिरेपि वत्थुस्मिं अतिसङ्गप्पवत्ति हत्थिसिनानसदिसी होति, तस्मा तया न कत्थचि सङ्गो उप्पादेतब्बो। सेय्यथापि नाम महतो भेसज्जरुक्खस्स तिट्ठतो मूलं मूलत्थिका हरन्ति, पपटिकं, तचं, खन्धं, विटपं, सारं, साखं, पलासं, पुप्फं, फलं फलत्थिका हरन्ति, न तस्स रुक्खस्स 'मय्हं सन्तकं एते हरन्ती''ति वितक्कसमुदाचारो होति, एवमेव सब्बलोकहिताय उस्सुक्कमापज्जन्तेन मया महादुक्खे अकतञ्ञुके निच्चासुचिम्हि काये परेसं उपकाराय विनियुज्जमाने अणुमत्तोपि मिच्छावितक्को न उप्पादेतब्बो, को वा एत्थ विसेसो अज्झत्तिकबाहिरेसु महाभूतेसु एकन्तभेदनविकिरणविद्धंसनधम्मेसु, केवलं पन सम्मोहविजम्भितमेतं, यदिदं 'एतं मम, एसोहमस्मि, एसो मे अत्ता'ति अभिनिवेसो। तस्मा बाहिरेसु विय अज्झत्तिकेसुपि करचरणनयनादीसु, मंसादीसु च अनपेक्खेन हुत्वा 'तंतदत्थिका हरन्तू'ति निस्सट्ठचित्तेन भवितब्ब''न्ति। एवं पटिसञ्चिक्खतो चस्स बोधाय पहितत्तस्स कायजीवितेसु निरपेक्खस्स अप्पकसिरेनेव कायवचीमनोकम्मानि सुविसुद्धानि होन्ति। सो विसुद्धकायवचीमनोकम्मन्तो विसुद्धाजीवो ञायपटिपत्तियं ठितो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयापायुपायकोसल्लसमन्नागमेन भिय्योसो मत्ताय देय्यधम्मपरिच्चागेन, अभयदानसद्धम्मदानेहि च सब्बसत्ते अनुग्गण्हितुं समत्थो होतीति। अयं ताव **दानपारमियं** पच्चवेक्खणानयो।

सीलपारमियं पन एवं पच्चवेक्खितब्बं– इदञ्हि सीलं नाम गङ्गोदकादीहि विसोधेतुं असक्कुणेय्यस्स दोसमलस्स विक्खालनजलं, हरिचन्दनादीहि विनेतुं असक्कुणेय्यरागादिपरिळाहविनयनं, हारमकुटकुण्डलादीहि पचुरजनालङ्कारेहि असाधारणो साधूनं अलङ्कारविसेसो, सब्बदिसावायनतो अकित्तिमो, सब्बकालानुरूपो च सुरभिगन्धो, खत्तियमहासालादीहि देवताहि च वन्दनीयादिभावावहनतो परमो वसीकरणमन्तो, चातुमहाराजिकादि देवलोकारोहनसोपानपन्ति, झानाभिञ्ञानं अधिगमुपायो, निब्बानमहानगरस्स सम्पापकमग्गो, सावकबोधिपच्चेकबोधिसम्मासम्बोधीनं पतिट्ठानभूमि, यं यं वा पनिच्छितं पत्थितं, तस्स तस्स समिज्झनूपायभावतो चिन्तामणिकप्परुक्खादिके च अतिसेति। वुत्तञ्हेतं भगवता "इज्झति भिक्खवे सीलवतो चेतोपणिधि विसुद्धत्ता"ति (अ० नि० ३.८.३५)। अपरम्पि वुत्तं "आकङ्खेय्य चे भिक्खवे भिक्खु सब्रह्मचारीनं पियो च अस्सं मनापो च गरु च भावनीयो चाति, सीलेस्वेवस्स परिपूरकारी"तिआदि (म० नि० १.६१), तथा "अविप्पटिसारत्थानि खो आनन्द कुसलानि सीलानी"ति (अ० नि० ३.१०.१; ११.१), "पञ्चिमे गहपतयो आनिसंसा सीलवतो सीलसम्पदाया"ति (दी० नि० २.१५०; उदा० ७६; महाव० १८५) सुत्तानञ्च वसेन सीलस्स गुणा पच्चवेक्खितब्बा, तथा अग्गिक्खन्धोपमसुत्तादीनं (अ० नि० २.७.७२) वसेन सीलविरहे आदीनवा।

पीतिसोमनस्सनिमित्ततो, अत्तानुवादपरानुवाददण्डदुग्गतिभयाभावतो, विञ्ञूहि पासंसभावतो, अविप्पटिसारहेतुतो, सोत्थिट्ठानतो, अभिजनसापतेय्याधिपतेय्यायुरूपट्ठान-बन्धुमित्तसम्पत्तीनं अतिसयनतो च सीलं पच्चवेक्खितब्बं। सीलवतो हि अत्तनो सीलसम्पदाहेतु महन्तं पीतिसोमनस्सं उप्पज्जति "कतं वत मया कुसलं, कतं कल्याणं, कतं भीरुत्ताण"न्ति। तथा सीलवतो अत्ता न उपवदति, न परे विञ्ञू, दण्डदुग्गतिभयानं सम्भवोयेव नत्थि, "सीलवा पुरिसपुग्गलो कल्याणधम्मो"ति विञ्ञूनं पासंसो होति। तथा सीलवतो य्वायं "कतं वत मया पापं, कतं लुद्दं, कतं किब्बिस"न्ति दुस्सीलस्स विप्पटिसारो उप्पज्जति, सो न होति। सीलञ्च नामेतं अप्पमादाधिट्ठानतो, भोगब्यसनादिपरिहारमुखेन महतो अत्थस्स साधनतो, मङ्गलभावतो च परमं सोत्थिट्ठानं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निहीनजच्चोपि सीलवा खत्तियमहासालादीनं पूजनीयो होतीति कुलसम्पत्तिं अतिसेति सीलसम्पदा, "तं किं मञ्ञसि महाराज, इध ते अस्स पुरिसो दासो कम्मकरो"तिआदि (दी० नि० १.१८३) वचनञ्चेत्थ साधकं। चोरादीहि असाधारणतो, परलोकानुगमनतो, महप्फलभावतो, समथादिगुणाधिट्ठानतो च बाहिरधनं अतिसेति सीलं, परमस्स चित्तिस्सरियस्स अधिट्ठानभावतो खत्तियादीनं इस्सरियं अतिसेति सीलं। सीलनिमित्तञ्हि तंतंसत्तनिकायेसु सत्तानं इस्सरियं वस्ससतदीघप्पमाणतो जीविततो एकाहम्पि सीलवतो जीवितस्स विसिट्ठतावचनतो, सति च जीविते सिक्खानिक्खेपस्स मरणतावचनतो सीलं जीविततो विसिट्ठतरं। वेरीनम्पि मनुञ्ञभावावहनतो, जरारोगविपत्तीहि अनभिभवनीयतो च रूपसम्पत्तिं अतिसेति सीलं। पासादहम्मियादिट्ठानविसेसे, राजयुवराजसेनापतिआदिट्ठानविसेसे च अतिसेति सीलं सुखविसेसाधिट्ठानभावतो। सभावसिनिद्धे सन्तिकावचरेपि बन्धुजने मित्तजने च अतिसेति एकन्तहितसम्पादनतो, परलोकानुगमनतो च। "न तं माता पिता कयिरा"तिआदि (ध० प० ४३) वचनञ्चेत्थ साधकं। तथा हत्थिअस्सरथादिभेदेहि, मन्तागदसोत्थानप्पयोगेहि च दुरारक्खं अत्तानं आरक्खभावेन सीलमेव विसिट्ठतरं अत्ताधीनतो, अपराधीनतो, महाविसयतो च। तेनेवाह "धम्मो हवे रक्खति धम्मचारि"न्तिआदि (जा० १.९.१०२)। एवमनेकगुणसमन्नागतं सीलन्ति पच्चवेक्खन्तस्स अपरिपुण्णा चेव सीलसम्पदा पारिपूरिं गच्छति अपरिसुद्धा च पारिसुद्धिं।

सचे पनस्स दीघरत्तं परिचयेन सीलपटिपक्खा धम्मा दोसादयो अन्तरन्तरा उप्पज्जेय्युं, तेन बोधिसत्तपटिञ्ञेन एवं पटिसञ्चिक्खितब्बं "ननु तया सम्बोधाय पणिधानं कतं, सीलविकलेन च न सक्का लोकियापि सम्पत्तियो पापुणितुं, पगेव लोकुत्तरा, सब्बसम्पत्तीनं पन अग्गभूताय सम्मासम्बोधिया अधिट्ठानभूतेन सीलेन परमुक्कंसगतेन भवितब्बं। तस्मा 'किकीव अण्ड'न्तिआदिना (विसुद्धि० १.१९; दी० नि० अट्ठ० १.७) वुत्तनयेन सम्मा सीलं परिरक्खन्तेन सुट्ठु तया पेसलेन भवितब्बं। अपि च तया धम्मदेसनाय यानत्तये सत्तानं अवतारणपरिपाचनानि कातब्बानि, सीलविकलस्स च वचनं न पच्चेतब्बं होति असप्पायाहारविचारस्स विय वेज्जस्स तिकिच्छनं, तस्मा कथाहं सद्धेय्यो हुत्वा सत्तानं अवतारणपरिपाचनानि करेय्य"न्ति सभावपरिसुद्धसीलेन भवितब्बं। किञ्च "झानादिगुणविसेसयोगेन मे सत्तानं उपकारकरणसमत्थता, पञ्ञापारमीआदिपरिपूरणञ्च, झानादयो च गुणा सीलपारिसुद्धिं विना न सम्भवन्ती"ति सम्मदेव सीलं परिसोधेतब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा "सम्बाधो घरावासो रजोपथो"तिआदिना (दी० नि० १.१९१; म० नि० १.२९१; सं० नि० १.२.१५४; म० नि० २.१०) घरावासे "अट्ठिकङ्कलूपमा कामा"तिआदिना (म० नि० १.२३४; पाचि० ४१७; महानि० ३, ६;), "मातापि पुत्तेन विवदती"तिआदिना (म० नि० १.१६८, १७८) च कामेसु "सेय्यथापि पुरिसो इणं आदाय कम्मन्ते पयोजेय्या"तिआदिना (दी० नि० १.२१८) कामच्छन्दादीसु आदीनवदस्सनपुब्बङ्गमा वुत्तविपरियायेन "अब्भोकासो पब्बज्जा"तिआदिना (दी० नि० १.१.९१; सं० नि० १.१५४) पब्बज्जादीसु आनिसंसपटिसङ्खावसेन **नेक्खम्मपारमियं** पच्चवेक्खणा वेदितब्बा। अयमेत्थ सङ्खेपत्थो, वित्थारो पन दुक्खक्खन्ध (म० नि० १.१६३) वीमंससुत्तादि (म० नि० १.४८७) वसेन दुक्खक्खन्धआसिविसोपमसुत्तादिवसेन (चरिया० पि० अट्ठ० पकिण्णककथायं) वेदितब्बो।

तथा "पञ्ञाय विना दानादयो धम्मा न विसुज्झन्ति, यथासकं ब्यापारसमत्था च न होन्ती"ति पञ्ञागुणा मनसि कातब्बा। यथेव हि जीवितेन विना सरीरयन्तं न सोभति, न च अत्तनो किरियासु पटिपत्तिसमत्थं होति, यथा च चक्खादीनि इन्द्रियानि विञ्ञाणेन विना यथासकं विसयेसु किच्चं कातुं नप्पहोन्ति, एवं सद्धादीनि इन्द्रियानि पञ्ञाय विना सकिच्चपटिपत्तियं असमत्थानीति परिच्चागादिपटिपत्तियं पञ्ञा पधानकारणं। उम्मीलितपञ्ञाचक्खुका हि महासत्ता अत्तनो अङ्गपच्चङ्गानिपि दत्वा अनत्तुक्कंसका, अपरवम्भका च होन्ति, भेसज्जरुक्खा विय विकप्परहिता कालत्तयेपि सोमनस्सजाता। पञ्ञावसेन उपायकोसल्लयोगतो परिच्चागो परहितप्पवत्तिया दानपारमिभावं उपेति। अत्तत्थञ्हि दानं वुड्ढिसदिसं होति।

तथा पञ्ञाय अभावेन तण्हादिसंकिलेसावियोगतो सीलस्स विसुद्धियेव न सम्भवति, कुतो सब्बञ्ञुगुणाधिट्ठानभावो। पञ्ञवा एव च घरावासे कामगुणेसु संसारे च आदीनवं, पब्बज्जाय झानसमापत्तियं निब्बाने च आनिसंसं सुट्ठु सल्लक्खेन्तो पब्बजित्वा झानसमापत्तियो निब्बत्तेत्वा निब्बाननिन्नो, परे च तत्थ पतिट्ठपेतीति।

वीरियञ्च पञ्ञारहितं यदिच्छितमत्थं न साधेति दुरारम्भभावतो। वरमेव हि अनारम्भो दुरारम्भतो, पञ्ञासहितेन पन वीरियेन न किञ्चि दुरधिगमं उपायपटिपत्तितो। तथा पञ्ञवा एव परापकारादिअधिवासकजातियो होति, न दुप्पञ्ञो। पञ्ञाविरहितस्स च परेहि उपनीता अपकारा खन्तिया पटिपक्खमेव अनुब्रूहेन्ति, पञ्ञवतो पन ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खन्तिसम्पत्तिया परिब्रूहनवसेन अस्सा थिरभावाय संवत्तन्ति। पञ्ञवा एव तीणि सच्चानि तेसं कारणानि पटिपक्खे च यथाभूतं जानित्वा परेसं अविसंवादको होति। तथा पञ्ञाबलेन अत्तानं उपत्थम्भेत्वा धितिसम्पदाय सब्बपारमीसु अचलसमादानाधिट्ठानो होति, पञ्ञवा एव च पियमज्झत्तवेरीविभागं अकत्वा सब्बत्थ हितूपसंहारकुसलो होति। तथा पञ्ञावसेन लाभादिलोकधम्मसन्निपाते निब्बिकारताय मज्झत्तो होति। एवं सब्बासं पारमीनं पञ्ञाव पारिसुद्धिहेतूति पञ्ञागुणा पच्चवेक्खितब्बा।

अपिच पञ्ञाय विना न दस्सनसम्पत्ति, अन्तरेन च दिट्ठिसम्पदं न सीलसम्पदा, सीलदिट्ठिसम्पदारहितस्स न समाधिसम्पदा, असमाहितेन च न सक्का अत्तहितमत्तम्पि साधेतुं, पगेव उक्कंसगतं परहितन्ति परहिताय पटिपन्नेन "ननु तया सक्कच्चं पञ्ञापारिसुद्धियं आयोगो करणीयो"ति बोधिसत्तेन अत्ता ओवदितब्बो। पञ्ञानुभावेन हि महासत्तो चतुरधिट्ठानाधिट्ठितो चतूहि सङ्गहवत्थूहि (दी० नि० ३.२१०, ३१३; अ० नि० १.१०.३२) लोकं अनुग्गण्हन्तो सत्ते निय्यानिकमग्गे अवतारेति, इन्द्रियानि च नेसं परिपाचेति। तथा पञ्ञाबलेन खन्धायतनादीसु पविचयबहुलो पवत्तिनिवत्तियो याथावतो परिजानन्तो दानादयो गुणे विसेसनिब्बेधभागियभावं नयन्तो बोधिसत्तसिक्खाय परिपूरकारी होतीति एवमादिना अनेकाकारवोकारे पञ्ञागुणे ववत्थपेत्वा पञ्ञापारमी अनुब्रूहेतब्बा।

तथा दिस्समानपारानिपि लोकियानि कम्मानि निहीनवीरियेन पापुणितुं असक्कुणेय्यानि, अगणितखेदेन पन आरद्धवीरियेन दुरधिगमं नाम नत्थि। निहीनवीरियो हि "संसारमहोघतो सब्बसत्ते सन्तारेस्सामी"ति आरभितुमेव न सक्कुणोति। मज्झिमो आरभित्वा अन्तरावोसानमापज्जति। उक्कट्ठवीरियो पन अत्तसुखनिरपेक्खो आरम्भपारं अधिगच्छतीति वीरियसम्पत्ति पच्चवेक्खितब्बा। अपिच "यस्स अत्तनोयेव संसारपङ्कतो समुद्धरणत्थमारम्भो, तस्सापि वीरियस्स सिथिलभावेन मनोरथानं मत्थकप्पत्ति न सक्का सम्भावेतुं, पगेव सदेवकस्स लोकस्स समुद्धरणत्थं कताभिनीहारेना"ति च "रागादीनं दोसगणानं मत्तमहागजानं विय दुन्निवारयभावतो, तन्निदानानञ्च कम्मसमादानानं उक्खित्तासिकवधकसदिसभावतो, तन्निमित्तानञ्च दुग्गतीनं सब्बदा विवटमुखभावतो, तत्थ नियोजकानञ्च पापमित्तानं सदा सन्निहितभावतो, तदोवादकारिताय च बालस्स पुथुज्जनभावस्स सति सम्भवे युत्तं सयमेव संसारदुक्खतो निस्सरितु"न्ति च "मिच्छावितक्का वीरियानुभावेन दूरी भवन्ती"ति च "यदि पन सम्बोधि अत्ताधीनेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरियेन सक्का समधिगन्तुं, किमेत्थ दुक्कर''न्ति च एवमादिना नयेन वीरियस्स गुणापच्चवेक्खितब्बा।

तथा ''खन्ति नामायं निरवसेसगुणपटिपक्खस्स कोधस्स विधमनतो गुणसम्पादने साधूनमप्पटिहतमायुधं, पराभिभवने समत्थानं अलङ्कारो, समणब्राह्मणानं बलसम्पदा, कोधग्गिविनयनी उदकधारा, कल्याणस्स कित्तिसद्दस्स सञ्जातिदेसो, पापपुग्गलानं वचीविसवूपसमकरो मन्तागदो, संवरे ठितानं परमा धीरपकति, गम्भीरासयताय सागरो, दोसमहासागरस्स वेला, अपायद्वारस्स पिधानकवाटं, देवब्रह्मलोकानं आरोहणसोपानं, सब्बगुणानं अधिवासनभूमि, उत्तमा कायवचीमनोविसुद्धी''ति मनसि कातब्बं। अपि च ''एते सत्ता खन्तिसम्पत्तिया अभावतो इध चेव तपन्ति, परलोके च तपनीयधम्मानुयोगतो''ति च ''यदिपि परापकारनिमित्तं दुक्खं उप्पज्जति, तस्स पन दुक्खस्स खेत्तभूतो अत्तभावो, बीजभूतञ्च कम्मं मयाव अभिसङ्खत''न्ति च ''तस्स दुक्खस्स आणण्यकारणमेत''न्ति च ''अपकारके असति कथं मय्हं खन्तिसम्पदा सम्भवती''ति च ''यदिपायं एतरहि अपकारको, अयं नाम पुब्बे अनेन मय्हं उपकारो कतो''ति च ''अपकारो एव वा खन्तिनिमित्तताय उपकारो''ति च ''सब्बेपिमे सत्ता मय्हं पुत्तसदिसा, पुत्तकतापराधेसु च को कुज्झिस्सती''ति च ''येन कोधभूतावेसेन अयं मय्हं अपरज्झति, सो कोधभूतावेसो मया विनेतब्बो''ति च ''येन अपकारेन इदं मय्हं दुक्खं उप्पन्नं, तस्स अहम्पि निमित्त''न्ति च ''येहि धम्मेहि अपराधो कतो, यत्थ च कतो, सब्बेपि ते तस्मिंयेव खणे निरुद्धा, कस्सिदानि केन कोधो कातब्बो''ति च ''अनत्तताय सब्बधम्मानं को कस्स अपरज्झती''ति च पच्चवेक्खन्तेन खन्तिसम्पदा ब्रूहेतब्बा।

यदि पनस्स दीघरत्तं परिचयेन परापकारनिमित्तको कोधो चित्तं परियादाय तिट्ठेय्य, इति पटिसञ्चिक्खितब्बं ''खन्ति नामेसा परापकारस्स पटिपक्खपटिपत्तीनं पच्चुपकारकारण''न्ति च ''अपकारो च मय्हं दुक्खुप्पादनेन दुक्खुपनिसाय सद्धाय, सब्बलोके अनभिरतिसञ्ञाय च पच्चयो''ति च ''इन्द्रियपकतिरेसा, यदिदं इट्ठानिट्ठविसयसमायोगो, तत्थ अनिट्ठविसयसमायोगो मय्हं न सियाति तं कुतेत्थ लब्भा''ति च ''कोधवसिको सत्तो कोधेन उम्मत्तो विक्खित्तचित्तो, तत्थ किं पच्चपकारेना''ति च ''सब्बे पिमे सत्ता सम्मासम्बुद्धेन ओरसपुत्ता विय परिपालिता, तस्मा न तत्थ मया चित्तकोपोपि कातब्बो''ति च ''अपराधके च सति गुणे गुणवति मया न कोपो कातब्बो''ति च ''असति गुणे विसेसेन करुणायितब्बो''ति च ''कोपेन च मय्हं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणयसा निहीयन्ती''ति च ''कुज्झनेन मय्हं दुब्बण्णदुक्खसेय्यादयो सपत्तकन्ता आगच्छन्ती''ति च ''कोधो च नामायं सब्बाहितकारको सब्बहितविनासको बळवा पच्चत्थिको''ति च ''सति च खन्तिया न कोचि पच्चत्थिको''ति च ''अपराधकेन अपराधनिमित्तं यं आयतिं लद्धब्बं दुक्खं, सति च खन्तिया मय्हं तदभावो''ति च ''चिन्तनेन कुज्झन्तेन च मया पच्चत्थिकोयेव अनुवत्तितो होती''ति च ''कोधे च मया खन्तिया अभिभूते तस्स दासभूतो पच्चत्थिको सम्मदेव अभिभूतो होती''ति च ''कोधनिमित्तं खन्तिगुणपरिच्चागो मय्हं न युत्तो''ति च ''सति च कोधे गुणविरोधिनि (गुणविरोधपच्चनीधम्मे चरिया० पि० अट्ठ० पकिण्णककथायं) किं मे सीलादिधम्मा पारिपूरिं गच्छेय्युं, असति च तेसु कथाहं सत्तानं उपकारबहुलो पटिञ्ञानुरूपं उत्तमं सम्पत्तिं पापुणिस्सामी''ति च ''खन्तिया च सति बहिद्धा विक्खेपाभावतो समाहितस्स सब्बे सङ्खारा अनिच्चतो दुक्खतो सब्बे धम्मा अनत्ततो निब्बानञ्च असङ्खतामतसन्तपणीतादिभावतो निज्झानं खमन्ति 'बुद्धधम्मा च अचिन्तेय्यापरिमेय्यपभावा'ति'', ततो च ''अनुलोमियं खन्तियं ठितो 'केवला इमे च अत्तत्तनियभावरहिता धम्ममत्ता यथासकं पच्चयेहि उप्पज्जन्ति वयन्ति, न कुतोचि आगच्छन्ति, न कुहिञ्चि गच्छन्ति, न च कत्थचि पतिट्ठिता, न चेत्थ कोचि कस्सचि ब्यापारो'ति अहंकारममंकारानधिट्ठानता निज्झानं खमति, येन बोधिसत्तो बोधिया नियतो अनावत्तिधम्मो होती''ति एवमादिना खन्तिपारमियं पच्चवेक्खणा वेदितब्बा।

तथा ''सच्चेन विना सीलादीनं असम्भवतो, पटिञ्ञानुरूपं पटिपत्तिया अभावतो च सच्चधम्मातिक्कमे च सब्बपापधम्मानं समोसरणतो, असच्चसन्धस्स अप्पच्चयिकभावतो, आयतिञ्च अनादेय्यवचनतावहनतो, सम्पन्नसच्चस्स च सब्बगुणाधिट्ठानभावतो, सच्चाधिट्ठानेन सब्बबोधिसम्भारानं पारिसुद्धिपारिपूरिसमन्वायतो, सभावधम्माविसंवादनेन सब्बबोधिसम्भारकिच्चकरणतो, बोधिसत्तपटिपत्तिया च परिनिप्फत्तितो''तिआदिना **सच्चपारमिया** सम्पत्तियो पच्चवेक्खितब्बा।

तथा ''दानादीसु दळ्हसमादानं, तम्पटिपक्खसन्निपाते च नेसं अचलावत्थानं, तत्थ च थिरभावं विना न दानादिसम्भारा सम्बोधिनिमित्ता सम्भवन्ती''तिआदिना **अधिट्ठाने** गुणा पच्चवेक्खितब्बा।

तथा ''अत्तहितमत्ते अवतिट्ठन्तेनापि सत्तेसु हितचित्ततं विना न सक्का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इधलोकपरलोकसम्पत्तियो पापुणितुं, पगेव सब्बसत्ते निब्बानसम्पत्तियं पतिट्ठापेतुकामेना''ति च ''पच्छा सब्बसत्तानं लोकुत्तरसम्पत्तिं आकङ्खन्तेन इदानि लोकियसम्पत्तिं आकङ्खा युत्तरूपा''ति च ''इदानि आसयमत्तेन परेसं हितसुखूपसंहारं कातुं असक्कोन्तो कदा पयोगेन तं साधेस्सामी''ति च ''इदानि मया हितसुखूपसंहारेन संवड्ढिता पच्छा धम्मसंविभागसहाया मय्हं भविस्सन्ती''ति च ''एतेहि विना न मय्हं बोधिसम्भारा सम्भवन्ति, तस्मा सब्बबुद्धगुणविभूतिनिप्फत्तिकारणत्ता मय्हं एते परमं पुञ्ञक्खेत्तं अनुत्तरं कुसलायतनं उत्तमं गारवट्ठान''न्ति च ''सविसेसं सत्तेसु सब्बेसु हितज्झासयता पच्चुपट्ठपेतब्बा, किञ्च करुणाधिट्ठानतोपि सब्बसत्तेसु मेत्ता अनुब्रूहेतब्बा। विमरियादीकतेन हि चेतसा सत्तेसु हितसुखूपसंहारनिरतस्स तेसं अहितदुक्खापनयनकामता बलवती उप्पज्जति दळ्हमूला, करुणा च सब्बेसं बुद्धकारकधम्मानमादि चरणं पतिट्ठा मूलं मुखं पमुख''न्ति एवमादिना **मेत्ताय** गुणा पच्चवेक्खितब्बा।

तथा ''उपेक्खाय अभावे सत्तेहि कता विप्पकारा चित्तस्स विकारं उप्पादेय्युं, सति च चित्तविकारे दानादिसम्भारानं सम्भवोयेव नत्थी''ति च ''मेत्तासिनेहेन सिनेहिते चित्ते उपेक्खाय विना सम्भारानं पारिसुद्धि न होती''ति च ''अनुपेक्खको सम्भारेसु पुञ्ञसम्भारं तब्बिपाकञ्च सत्तहितत्थं परिणामेतुं न सक्कोती''ति च ''उपेक्खाय अभावे देय्यपटिग्गाहकेसु विभागं अकत्वा परिच्चजितुं न सक्कोती''ति च ''उपेक्खारहितेन जीवितपरिक्खारानं जीवितस्स च अन्तरायं अमनसिकरित्वा संवरविसोधनं कातुं न सक्का''ति च ''उपेक्खावसेन अरतिरतिसहस्सेव नेक्खम्मबलसिद्धितो, उपपत्तितो इक्खनवसेनेव सब्बसम्भारकिच्चनिप्फत्तितो, अच्चारद्धस्स वीरियस्स अनुपेक्खने पधानकिच्चाकरणतो, उपेक्खतोयेव तितिक्खानिज्झानसम्भवतो, उपेक्खावसेन सत्तसङ्खारानं अविसंवादनतो, लोकधम्मानं अज्झुपेक्खनेन समादिन्नधम्मेसु अचलाधिट्ठानसिद्धितो, परापकारादीसु अनाभोगवसेनेव मेत्ताविहारनिप्फत्तितोति सब्बबोधिसम्भारानं समादानाधिट्ठानपारिपूरिनिप्फत्तियो उपेक्खानुभावेन सम्पज्जन्ती''ति एवं आदिना नयेन **उपेक्खापारमी** पच्चवेक्खितब्बा। एवं अपरिच्चागपरिच्चागादीसु यथाक्कमं आदीनवानिसंसपच्चवेक्खणा दानादिपारमीनं पच्चयोति वेदितब्बा।

तथा सपरिक्खारा पञ्चदस चरणधम्मा पञ्च च अभिञ्ञायो। तत्थ **चरणधम्मा** नाम सीलसंवरो, इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता, भोजने मत्तञ्ञुता, जागरियानुयोगो, सत्त सद्धम्मा, चत्तारि झानानि च। तेसु सीलादीनं चतुन्नं तेरसपि धुतधम्मा, अप्पिच्छतादयो च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिक्खारो। सद्धम्मेसु **सद्धाय** बुद्धधम्मसङ्घसीलचागदेवतूपसमानुस्सतिलूखपुग्गलपरिवज्जनसिनिद्धपुग्गलसेवनपसादनीयधम्मपच्चवेक्खणतदधिमुत्तता **परिक्खारो, हिरोत्तप्पानं** अकुसलादीनवपच्चवेक्खणअपायादीनवपच्चवेक्खणकुसलधम्मुपत्थम्भनभावपच्चवेक्खणहिरोत्तप्परहितपुग्गलपरिवज्जनहिरोत्तप्पसम्पन्नपुग्गलसेवनतदधिमुत्तता, **बाहुसच्चस्स** पुब्बयोगपरिपुच्छकभावसद्धम्माभियोगअनवज्जविज्जाट्ठानादिपरिचयपरिपक्किन्द्रियताकिलेसदूरीभावअप्पस्सुतपरिवज्जनबहुस्सुतसेवनतदधिमुत्तता, **वीरियस्स** अपायभयपच्चवेक्खणगमनवीथिपच्चवेक्खणधम्ममहत्तपच्चवेक्खणथिनमिद्धविनोदनकुसीतपुग्गलपरिवज्जनआरद्धवीरियपुग्गलसेवनसम्मप्पधानपच्चवेक्खणतदधिमुत्तता, **सतिया** सतिसम्पजञ्ञमुट्ठस्सतिपुग्गलपरिवज्जनउपट्ठितस्सतिपुग्गलसेवनतदधिमुत्तता, **पञ्ञाय** परिपुच्छकभाववत्थुविसदकिरियाइन्द्रियसमत्तपटिपादनदुप्पञ्ञपुग्गलपरिवज्जनपञ्ञवन्तपुग्गलसेवनगम्भीरञाणचरियपच्च-वेक्खणतदधिमुत्तता, चतुन्नं झानानं सीलादिचतुक्कं अट्ठतिंसाय आरम्मणेसु पुब्बभागभावना, आवज्जनादिवसीभावकरणञ्च **परिक्खारो।** तत्थ सीलादीहि पयोगसुद्धिया सत्तानं अभयदाने, आसयसुद्धिया आमिसदाने, उभयसुद्धिया च धम्मदाने समत्थो होतीतिआदिना चरणादीनं दानादिसम्भारानं पच्चयभावो यथारहं निद्धारेतब्बो, अतिवित्थारभयेन न निद्धारयिम्ह। एवं सम्पत्तिचक्कादयोपि दानादीनं पच्चयोति वेदितब्बा।

को संकिलेसोति अविसेसेन तण्हादीहि परामट्ठभावो पारमीनं संकिलेसो, विसेसेन देय्यपटिग्गाहकविकप्पा दानपारमिया संकिलेसो, सत्तकालविकप्पा सीलपारमिया, कामभवतदुपसमेसु अभिरतिअनभिरतिविकप्पा नेक्खम्मपारमिया, "अहं ममा"ति विकप्पा पञ्ञापारमिया, लीनुद्धच्चविकप्पा वीरियपारमिया, अत्तपरविकप्पा खन्तिपारमिया, अदिट्ठादीसु दिट्ठादिविकप्पा सच्चपारमिया, बोधिसम्भारतब्बिपक्खेसु दोसगुणविकप्पा अधिट्ठानपारमिया, हिताहितविकप्पा मेत्तापारमिया, इट्ठानिट्ठविकप्पा उपेक्खापारमिया संकिलेसोति वेदितब्बो।

किं वोदानन्ति तण्हादीहि अनुपघातो, यथावुत्तविकप्पविरहो च एतासं वोदानन्ति वेदितब्बं। अनुपहता हि तण्हामानदिट्ठिकोधूपनाहमक्खपलासइस्सामच्छरियमायासाठेय्यथम्भसारम्भमदपमादादीहि किलेसेहि देय्यपटिग्गाहकविकप्पादिरहिता च दानादिपारमियो परिसुद्धा पभस्सरा भवन्तीति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को पटिपक्खोति अविसेसेन सब्बेपि किलेसा सब्बेपि अकुसला धम्मा एतासं पटिपक्खो, विसेसेन पन पुब्बे वुत्ता मच्छेरादयोति वेदितब्बा। अपिच देय्यपटिग्गाहकदानफलेसु अलोभादोसामोहगुणयोगतो लोभदोसमोहपटिपक्खं दानं, कायादिदोसवङ्कापगमनतो लोभादिपटिपक्खं सीलं, कामसुखपरूपघातअत्तकिलमथपरिवज्जनतो दोसत्तयपटिपक्खं नेक्खम्मं, लोभादीनं अन्धीकरणतो, ञाणस्स च अनन्धीकरणतो लोभादिपटिपक्खा पञ्ञा, अलीनानुद्धतआयारम्भवसेन लोभादिपटिपक्खं वीरियं, इट्ठानिट्ठसुञ्ञतानं खमनतो लोभादिपटिपक्खा खन्ति, सतिपि परेसं उपकारे अपकारे च यथाभूतप्पवत्तिया लोभादिपटिपक्खं सच्चं, लोकधम्मे अभिभुय्य यथासमादिन्नेसु सम्भारेसु अचलनतो लोभादिपटिपक्खं अधिट्ठानं, नीवरणविवेकतो लोभादिपटिपक्खा मेत्ता, इट्ठानिट्ठेसु अनुनयपटिघविद्धंसनतो, समप्पवत्तितो च लोभादिपटिपक्खा उपेक्खाति दट्ठब्बं।

का पटिपत्तीति सुखूपकरणसरीरजीवितपरिच्चागेन भयापनूदनेन धम्मोपदेसेन च बहुधा सत्तानं अनुग्गहकरणं दाने पटिपत्ति। तत्थायं वित्थारनयो– "इमिनाहं दानेन सत्तानं आयुवण्णसुखबलपटिभानादिसम्पत्तिं रमणीयं अग्गफलसम्पत्तिं निप्फादेय्य"न्ति अन्नदानं देति, तथा सत्तानं कम्मकिलेसपिपासवूपसमाय पानं देति, तथा सुवण्णवण्णताय, हिरोत्तप्पालङ्कारस्स च निप्फत्तिया वत्थानि देति, तथा इद्धिविधस्स चेव निब्बानसुखस्स च निप्फत्तिया यानं देति, तथा सीलगन्धनिप्फत्तिया गन्धं, बुद्धगुणसोभानिप्फत्तिया मालाविलेपनं, बोधिमण्डासननिप्फत्तिया आसनं, तथागतसेय्यानिप्फत्तिया सेय्यं, सरणभावनिप्फत्तिया आवसथं, पञ्चचक्खुपटिलाभाय पदीपेय्यं देति। ब्यामप्पभानिप्फत्तिया रूपदानं, ब्रह्मस्सरनिप्फत्तिया सद्ददानं, सब्बलोकस्स पियभावाय रसदानं, बुद्धसुखुमालभावाय फोट्ठब्बदानं, अजरामरणभावाय भेसज्जदानं, किलेसदासब्यविमोचनत्थं दासानं भुजिस्सतादानं, सद्धम्माभिरतिया अनवज्जखिड्डारतिहेतुदानं, सब्बेपि सत्ते अरियाय जातिया अत्तनो पुत्तभावूपनयनाय पुत्तदानं, सकलस्स लोकस्स पतिभावूपगमनाय दारदानं, सुभलक्खणसम्पत्तिया सुवण्णमणिमुत्तापवाळादिदानं, अनुब्यञ्जनसम्पत्तिया नानाविधविभूसनदानं, सद्धम्मकोसाधिगमाय वित्तकोसदानं, धम्मराजभावाय रज्जदानं, झानादिसम्पत्तिया आरामुय्यानादिवनदानं, चक्कङ्कितेहि पादेहि बोधिमण्डूपसङ्कमनाय चरणदानं, चतुरोघनित्थरणाय सत्तानं सद्धम्महत्थदानत्थं हत्थदानं, सद्धिन्द्रियादिपटिलाभाय कण्णनासादिदानं, समन्तचक्खुपटिलाभाय चक्खुदानं, "दस्सनसवनानुस्सरणपारिचरियादीसु सब्बकालं सब्बसत्तानं हितसुखावहो, सब्बलोकेन च उपजीवितब्बो मे कायो भवेय्या"ति मंसलोहितादिदानं, "सब्बलोकुत्तमो भवेय्य"न्ति उत्तमङ्गदानं देति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं ददन्तो च न अनेसनाय देति, न परोपघातेन, न भयेन, न लज्जाय, न दक्खिणेय्यरोसनेन, न पणीते सति लूखं, न अत्तुक्कंसनेन, न परवम्भनेन, न फलाभिकङ्खाय, न याचकजिगुच्छाय, न अचित्तीकारेन देति, अथ खो सक्कच्चं देति, सहत्थेन देति, कालेन देति, चित्तिं कत्वा देति, अविभागेन देति, तीसु कालेसु सोमनस्सितो देति। ततोयेव दत्वा न पच्छानुतापी होति, न पटिग्गाहकवसेन मानावमानं करोति, पटिग्गाहकानं पियसमुदाचारो होति वदञ्ञू याचयोगो सपरिवारदायी। तञ्च दानसम्पत्तिं सकललोकहितसुखाय परिणामेति, अत्तनो च अकुप्पाय विमुत्तिया, अपरिक्खयस्स छन्दस्स, अपरिक्खयस्स वीरियस्स, अपरिक्खयस्स समाधानस्स, अपरिक्खयस्स ञाणस्स, अपरिक्खयाय सम्मासम्बोधिया परिणामेति। इमञ्च दानपारमिं पटिपज्जन्तेन महासत्तेन जीविते, भोगेसु च अनिच्चसञ्ञा पच्चुपट्ठपेतब्बा, सत्तेसु च महाकरुणा। एवञ्हि भोगे गहेतब्बसारं गण्हन्तो आदित्तस्मा विय अगारस्मा सब्बं सापतेय्यं, अत्तानञ्च बहि नीहरन्तो न किञ्चि सेसेति, निरवसेसतो निस्सज्जतियेव। अयं ताव **दानपारमिया** पटिपत्तिक्कमो।

सीलपारमिया पन यस्मा सब्बञ्ञुसीलालङ्कारेहि सत्ते अलङ्करितुकामेन अत्तनोयेव ताव सीलं विसोधेतब्बं, तस्मा सत्तेसु तथा दयापन्नचित्तेन भवितब्बं, यथा सुपिनन्तेनपि न आघातो उप्पज्जेय्य। परूपकारनिरतताय परसन्तको अलगद्दो विय न परामसितब्बो। अब्रह्मचरियतोपि आराचारी, सत्तविधमेथुन संयोगविरतो, पगेव परदारगमनतो। सच्चं हितं पियं परिमितमेव च कालेन धम्मिं कथं भासिता होति, अनभिज्झालु अब्यापन्नो अविपरीतदस्सनो सम्मासम्बुद्धे निविट्ठसद्धो निविट्ठपेमो। इति चतुरापायवट्टदुक्खपथेहि अकुसलकम्मपथेहि, अकुसलधम्मेहि च ओरमित्वा सग्गमोक्खपथेसु कुसलकम्मपथेसु पतिट्ठितस्स सुद्धासयपयोगताय यथाभिपत्थिता सत्तानं हितसुखूपसञ्हिता मनोरथा सीघं अभिनिप्फज्जन्ति।

तत्थ हिंसानिवत्तिया सब्बसत्तानं अभयदानं देति, अप्पकसिरेनेव मेत्ताभावनं सम्पादेति, एकादस मेत्तानिसंसे अधिगच्छति, अप्पाबाधो होति अप्पातङ्को दीघायुको सुखबहुलो, लक्खणविसेसे पापुणाति, दोसवासनञ्च समुच्छिन्दति। तथा अदिन्नादाननिवत्तिया चोरादिअसाधारणे उळारे भोगे अधिगच्छति, अनासङ्कनीयो पियो मनापो विस्ससनीयो, विभवसम्पत्तीसु अलग्गचित्तो परिच्चागसीलो, लोभवासनञ्च समुच्छिन्दति। अब्रह्मचरियनिवत्तिया अलोभो होति सन्तकायचित्तो, सत्तानं पियो होति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनापो अपरिसङ्कनीयो, कल्याणो चस्स कित्तिसद्दो अब्भुग्गच्छति, अलग्गचित्तो होति मातुगामेसु अलुद्धासयो, नेक्खम्मबहुलो, लक्खणविसेसे अधिगच्छति, लोभवासनञ्च समुच्छिन्दति।

मुसावादनिवत्तिया सत्तानं पमाणभूतो होति पच्चयिको थेतो आदेय्यवचनो देवतानं पियो मनापो सुरभिगन्धमुखो आरक्खियकायवचीसमाचारो, लक्खणविसेसे च अधिगच्छति, किलेसवासनञ्च समुच्छिन्दति। पेसुञ्ञनिवत्तिया परूपक्कमेहि अभेज्जकायो होति अभेज्जपरिवारो, सद्धम्मे च अभिज्जनकसद्धो, दळ्हमित्तो भवन्तरपरिचितानम्पि सत्तानं एकन्तपियो, असंकिलेसबहुलो। फरुसवाचानिवत्तिया सत्तानं पियो होति मनापो सुखसीलो मधुरवचनो सम्भावनीयो, अट्ठङ्गसमन्नागतो चस्स सरो (म० नि० २.३८७) निब्बत्तति। सम्फप्पलापनिवत्तिया च सत्तानं पियो होति मनापो गरुभावनीयो च आदेय्यवचनो च परिमितालापो, महेसक्खो च होति महानुभावो, ठानुप्पत्तिकेन पटिभानेन पञ्हानं ब्याकरणकुसलो, बुद्धभूमियञ्च एकाय एव वाचाय अनेकभासानं सत्तानं अनेकेसं पञ्हानं ब्याकरणसमत्थो होति।

अनभिज्झालुताय इच्छितलाभी होति, उळारेसु च भोगेसु रुचिं पटिलभति, खत्तियमहासालादीनं सम्मतो होति, पच्चत्थिकेहि अनभिभवनीयो, इन्द्रियवेकल्लं न पापुणाति, अप्पटिपुग्गलो च होति। अब्यापादेन पियदस्सनो होति सत्तानं सम्भावनीयो, परहिताभिनन्दिताय च सत्ते अप्पकसिरेनेव पसादेति, अलूखसभावो च होति मेत्ताविहारी, महेसक्खो च होति महानुभावो। मिच्छादस्सनाभावेन कल्याणे सहाये पटिलभति, सीसच्छेदम्पि पापुणन्तो पापकम्मं न करोति, कम्मस्सकतादस्सनतो अकोतूहलमङ्गलिको च होति, सद्धम्मे चस्स सद्धा पतिट्ठिता होति मूलजाता, सद्दहति च तथागतानं बोधिं, समयन्तरेसु नाभिरमति उक्कारट्ठाने विय राजहंसो, लक्खणत्तयपरिजाननकुसलो होति, अन्ते च अनावरणञाणलाभी, याव बोधिं न पापुणाति, ताव तस्मिं तस्मिं सत्तनिकाये उक्कट्ठुक्कट्ठो च होति, उळारुळारसम्पत्तियो पापुणाति।

"इति हिदं सीलं नाम सब्बसम्पत्तीनं अधिट्ठानं, सब्बबुद्धगुणानं पभवभूमि, सब्बबुद्धकरधम्मानमादि चरणं मुखं पमुख"न्ति बहुमानं उप्पादेत्वा कायवचीसंयमे, इन्द्रियदमने, आजीवसम्पदाय, पच्चयपरिभोगे च सतिसम्पजञ्ञबलेन अप्पमत्तेन लाभसक्कारसिलोकं मित्तमुखपच्चत्थिकं विय सल्लक्खेत्वा "किकीव अण्ड"न्तिआदिना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(विसुद्धि० १.१९; दी० नि० अट्ठ० १.७) वुत्तनयेन सक्कच्चं सीलं सम्पादेतब्बं। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन **विसुद्धिमग्गे** (विसुद्धि० १.६) वुत्तनयेन वेदितब्बो। तञ्च पनेतं सीलं न अत्तनो दुग्गतिपरिकिलेसविमुत्तिया, सुगतियम्पि, न रज्जसम्पत्तिया, नचक्कवत्ति-नदेव-नसक्क-नमार-नब्रह्मसम्पत्तिया, नापि अत्तनो तेविज्जतादिहेतु, न पच्चेकबोधिया, अथ खो सब्बञ्ञुभावेन सब्बसत्तानं अनुत्तरसीलालङ्कारसम्पादनत्थमेवाति परिणामेतब्बं।

तथा सकलसंकिलेसनिवासट्ठानताय, पुत्तदारादीहि महासम्बाधताय, कसिवणिज्जादिनानाविधकम्मन्ताधिट्ठानब्याकुलताय च घरावासस्स नेक्खम्मसुखादीनं अनोकासतं, कामानञ्च "सत्थधारालग्गमधुबिन्दु विय च अवलेय्हमाना परित्तस्सादा विपुलानत्थानुबन्धा"ति च "विज्जुलतोभासेन गहेतब्बं नच्चं विय परित्तकालोपलब्भा, उम्मत्तकालङ्कारो विय विपरीतसञ्ञाय अनुभवितब्बा, करीसावच्छादनसुखं विय पटिकारभूता, उदकतेमितङ्गुलिया उस्सावकोदकपानं विय अतित्तिकरा, छातज्झत्तभोजनं विय साबाधा, बलिसामिसं विय ब्यसनसन्निपातकारणा, अग्गिसन्तापो विय कालत्तयेपि दुक्खुप्पत्तिहेतुभूता, मक्कटालेपो विय बन्धनिमित्ता घातकावच्छादनकिमिलयो विय अनत्थच्छादना, सपत्तगामवासो विय भयट्ठानभूता, पच्चत्थिकपोसको विय किलेसमारादीनं आमिसभूता, छणसम्पत्तियो विय विपरिणामदुक्खा, कोटरग्गि विय अन्तोदाहका, पुराणकूपावलम्बबीरणमधुपिण्डं विय अनेकादीनवा, लोणूदकपानं विय पिपासहेतुभूता, सुरामेरयं विय नीचजनसेविता, अप्पस्सादताय अट्ठिकङ्कलूपमा"तिआदिना च नयेन आदीनवं सल्लक्खेत्वा तब्बिपरियायेन नेक्खम्मे आनिसंसं पस्सन्तेन नेक्खम्मपविवेकउपसमसुखादीसु निन्नपोणपब्भारचित्तेन नेक्खम्मपारमी पूरेतब्बा।

तथा यस्मा पञ्ञा आलोको विय अन्धकारेन, मोहेन सह न वत्तति, तस्मा मोहकारणानि ताव बोधिसत्तेन परिवज्जितब्बानि। तत्थिमानि मोहकारणानि – अरति तन्दी विजम्भिता आलसियं गणसङ्गणिकारामता निद्दासीलता अनिच्छयसीलता ञाणस्मिं अकुतूहलता मिच्छाधिमानो अपरिपुच्छकता कायस्स न सम्मापरिहारो असमाहितचित्तता दुप्पञ्ञानं पुग्गलानं सेवना पञ्ञवन्तानं अपयिरुपासना अत्तपरिभवो मिच्छाविकप्पो विपरीताभिनिवेसो कायदळ्हीबहुलता असंवेगसीलता पञ्च नीवरणानि। सङ्खेपतो ये वा पन धम्मे आसेवतो अनुप्पन्ना पञ्ञा न उप्पज्जति, उप्पन्ना परिहायति, इति इमानि सम्मोहकारणानि परिवज्जन्तेन बाहुसच्चे झानादीसु च योगो करणीयो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थायं बाहुसच्चस्स विसयविभागो– पञ्च खन्धा द्वादसायतनानि, अट्ठारस धातुयो चत्तारि सच्चानि बावीसतिन्द्रियानि द्वादसपदिको पटिच्चसमुप्पादो, तथा सतिपट्ठानादयो कुसलादिधम्मप्पकारभेदा च। यानि च लोके अनवज्जानि विज्जट्ठानानि, ये च सत्तानं हितसुखविधानयोग्या ब्याकरणविसेसा। इति एवं पकारं सकलमेव सुतविसयं उपायकोसल्लपुब्बङ्गमाय पञ्ञाय सतिवीरियुपत्थम्भकारणाय साधुकं उग्गहणसवनधारणपरिचयपरिपुच्छाहि ओगाहेत्वा तत्थ च परेसं पतिट्ठपनेन सुतमया पञ्ञा निब्बत्तेतब्बा, तथा खन्धादीनं सभावधम्मानं आकारपरिवितक्कनमुखेन ते निज्झानं खमापेन्तेन चिन्तामया, खन्धादीनंयेव पन सलक्खणसामञ्ञलक्खणपरिग्गहवसेन लोकियं परिञ्ञं निब्बत्तेन्तेन पुब्बभागभावनापञ्ञा सम्पादेतब्बा। एवञ्हि "नामरूपमत्तमिदं यथारहं पच्चयेहि उप्पज्जति चेव निरुज्झति च, न एत्थ कोचि कत्ता वा कारेता वा, हुत्वा अभावट्ठेन अनिच्चं, उदयब्बयपटिपीळनट्ठेन दुक्खं, अवसवत्तनट्ठेन अनत्ता"ति अज्झत्तिकबाहिरे धम्मे निब्बिसेसं परिजानन्तो तत्थ आसङ्गं पजहित्वा, परे च तत्थ तं जहापेत्वा केवलं करुणावसेनेव याव न बुद्धगुणा हत्थतलं आगच्छन्ति, ताव यानत्तये सत्ते अवतारणपरिपाचनेहि पतिट्ठापेन्तो, झानविमोक्खसमाधिसमापत्तियो च वसीभावं पापेन्तो पञ्ञाय अतिविय मत्थकं पापुणातीति।

तथा सम्मासम्बोधिया कताभिनीहारेन महासत्तेन "को नु अज्ज पुञ्ञञाणसम्भारो उपचितो, किञ्च मया कतं परहित"न्ति दिवसे दिवसे पच्चवेक्खन्तेन सत्तहितत्थं उस्साहो करणीयो, सब्बेसम्पि सत्तानं उपकाराय अत्तनो कायं जीवितञ्च ओस्सज्जितब्बं, सब्बेपि सत्ता अनोधिसो मेत्ताय करुणाय च फरितब्बा, या काचि सत्तानं दुक्खुप्पत्ति, सब्बा सा अत्तनि पाटिकङ्खितब्बा, सब्बेसञ्च सत्तानं पुञ्ञं अब्भनुमोदितब्बं, बुद्धमहन्तता अभिण्हं पच्चवेक्खितब्बा, यञ्च किञ्चि कम्मं करोति कायेन वाचाय वा, तं सब्बं बोधिनिन्नचित्तपुब्बङ्गमं कातब्बं। इमिना हि उपायेन बोधिसत्तानं अपरिमेय्यो पुञ्ञभागो उपचीयति। अपिच सत्तानं परिभोगत्थं परिपालनत्थञ्च अत्तनो सरीरं जीवितञ्च परिच्चजित्वा खुप्पिपासासीतुण्हवातातपादिदुक्खपटिकारो परियेसितब्बो। यञ्च यथावुत्तदुक्खपटिकारजं सुखं अत्तना पटिलभति, तथा रमणीयेसु आरामुय्यानपासादतलादीसु, अरञ्ञायतनेसु च कायचित्तसन्तापाभावेन अभिनिब्बुतत्ता सुखं विन्दति, यञ्च सुणाति बुद्धानुबुद्धपच्चेकबुद्धबोधिसत्तानं दिट्ठधम्मसुखविहारभूतं झानसमापत्तिसुखं, तं सब्बं सत्तेसु अनोधिसो उपसंहरति। अयं ताव असमाहितभूमियं नयो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाहितो पन अत्तना यथानुभूतं विसेसाधिगमनिब्बत्तं पीतिपस्सद्धिसुखं सब्बसत्तेसु अधिमुच्चति, तथा महति संसारदुक्खे, तन्निमित्तभूते च किलेसाभिसङ्खारदुक्खे निमुग्गं सत्तनिकायं दिस्वा तत्थपि छेदनभेदनफालनपिसनग्गिसन्तापादिजनिता दुक्खा तिब्बा खरा कटुका वेदना निरन्तरं चिरकालं वेदियन्ते नारके, अञ्ञमञ्ञं कुज्झनसन्तापनविहेठनहिंसनपराधीनतादीहि दुक्खं अनुभवन्ते तिरच्छाने, जोतिमाला'कुलसरीरे उद्धबाहुविरवन्ते उक्कामुखे खुप्पिपासादीहि डय्हमाने च वन्तखेळादिआहारे च महादुक्खं वेदयमाने पेते च परियेट्ठिमूलकं महन्तं अनयब्यसनं पापुणन्ते हत्थच्छेदादिकारणयोगेन दुब्बण्णदुद्दसिकदलिद्दतादिभावेन खुप्पिपासादियोगेन बलवन्तेहि अभिभवनीयतो, परेसं वहनतो, पराधीनतो च नारके पेते तिरच्छाने च अतिसयन्ते अपायदुक्खनिब्बिसेसं दुक्खं अनुभवन्ते मनुस्से च तथा विसयविसपरिभोगविक्खित्तचित्तताय रागादिपरियुट्ठानेन डय्हमाने वायुवेगसमुट्ठित-जालासमिद्धसुक्खकट्ठसन्निपाते अग्गिक्खन्धे विय अनुपसन्तपरिळाहवुत्तिके अनिहतपराधीने कामावचरदेवे च महता वायामेन विदूरमाकासं विगाहितसकुन्ता विय, बलवन्तेहि खित्तसरा विय च "सतिपि चिरप्पवत्तियं अनच्चन्तिकताय पातपरियोसाना अनतिक्कन्तजातिजरामरणा एवा"ति रूपावचरारूपावचरदेवे च पस्सन्तेन मेत्ताय करुणाय च अनोधिसो सत्ता फरितब्बा। एवं कायेन वाचाय मनसा च बोधिसम्भारे निरन्तरं उपचिनन्तेन उस्साहो पवत्तेतब्बो।

अपिच "अचिन्तेय्यापरिमितविपुलोळारविमलनिरुपमनिरुपक्किलेसगुणनिचयनिदान-भूतस्स बुद्धभावस्स उस्सक्कित्वा सम्पहंसनयोग्यं वीरियं नाम अचिन्तेय्यानुभावमेव। यं न पचुरजना सोतुम्पि सक्कुणन्ति, पगेव पटिपज्जितुं। तथा हि तिविधा अभिनीहारचित्तुप्पत्ति, चतस्सो बुद्धभूमियो, चत्तारि सङ्गहवत्थूनि (दी० नि० ३.२१०, ३१३; अ० नि० १.४.३२), करुणोकासता, बुद्धधम्मेसु निज्झानक्खन्ति, सब्बधम्मेसु निरुपलेपो, सब्बसत्तेसु पुत्तसञ्ञा, संसारदुक्खेहि अपरिखेदो, सब्बदेय्यधम्मपरिच्चागो, तेन च निरतिमानता, अधिसीलसिक्खादिअधिट्ठानं, तत्थ च अचलता, कुसलकिरियासु पीतिपामोज्जं, विवेकनिन्नचित्तता, झानानुयोगो, अनवज्जसुतेन अतित्ति, यथासुतस्स धम्मस्स परेसं हितज्झासयेन देसना, सत्तानं ञाये निवेसनं, आरम्भदळ्हता, धीरवीरभावो, परापवादपरापकारेसु विकाराभावो, सच्चाधिट्ठानं, समापत्तीसु वसीभावो, अभिञ्ञासु बलप्पत्ति, लक्खणत्तयावबोधो, सतिपट्ठानादीसु अभियोगेन लोकुत्तरमग्गसम्भारसम्भरणं, नवलोकुत्तरावक्कन्ती"ति एवमादिका सब्बा बोधिसम्भारपटिपत्ति वीरियानुभावेनेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समिज्झतीति अभिनीहारतो याव महाबोधि अनोस्सज्जन्तेन सक्कच्चं निरन्तरं वीरियं सम्पादेतब्बं। सम्पज्जमाने च वीरिये खन्तिआदयो दानादयो च सब्बेपि बोधिसम्भारा तदधीनवुत्तिताय सम्पन्ना एव होन्तीति। खन्तिआदीसुपि इमिना नयेन पटिपत्ति वेदितब्बा।

इति सत्तानं सुखूपकरणपरिच्चागेन बहुधा अनुग्गहकरणं दानेन पटिपत्ति, सीलेन तेसं जीवितसापतेय्यदाररक्खअभेदपियहितवचनाविहिंसादिकरणानि, नेक्खम्मेन नेसं आमिसपटिग्गहणधम्मदानादिना अनेकधा हितचरिया, पञ्ञाय तेसं हितकरणूपायकोसल्लं, वीरियेन तत्थ उस्साहारम्भअसंहीरानि, खन्तिया तदपराधसहनं, सच्चेन तेसं अवञ्चनतदुपकारकिरियासमादानाविसंवादनादि, अधिट्ठानेन तदुपकारकरणे अनत्थसम्पातेपि अचलनं, मेत्ताय तेसं हितसुखानुचिन्तनं, उपेक्खाय तेसं उपकारापकारेसु विकारानापत्तीति एवं अपरिमाणे सत्ते आरब्भ अनुकम्पितसब्बसत्तस्स बोधिसत्तस्स पुथुज्जनेहि असाधारणो अपरिमाणो पुञ्ञञाणसम्भारूपचयो एत्थ पटिपत्तीति वेदितब्बं। यो चेतासं पच्चयो वुत्तो, तस्स च सक्कच्चं सम्पादनं।

को विभागोति दस पारमियो, दस उपपारमियो, दस परमत्थपारमियोति समत्तिंस पारमियो। तत्थ कताभिनीहारस्स बोधिसत्तस्स परहितकरणाभिनिन्नआसयप्पयोगस्स कण्हधम्मवोकिण्णा सुक्कधम्मा पारमियो, तेहि अवोकिण्णा सुक्का धम्मा उपपारमियो, अकण्हा असुक्का परमत्थपारमियोति केचि। समुदागमनकालेसु पूरियमाना पारमियो, बोधिसत्तभूमियं पुण्णा उपपारमियो, बुद्धभूमियं सब्बाकारपरिपुण्णा परमत्थपारमियो। बोधिसत्तभूमियं वा परहितकरणतो पारमियो, अत्तहितकरणतो उपपारमियो, बुद्धभूमियं बलवेसारज्जसमधिगमेन उभयहितपरिपूरणतो परमत्थपारमियोति एवं आदिमज्झपरियोसानेसु पणिधानारम्भपरिनिट्ठानेसु तेसं विभागोति अपरे। दोसुपसमकरुणापकतिकानं भवसुखविमुत्तिसुखपरमसुखप्पत्तानं पुञ्ञूपचयभेदतो तब्बिभागोति अञ्ञे।

लज्जासतिमानापस्सयानं लोकुत्तरधम्माधिपतीनं सीलसमाधिपञ्ञागरुकानं तारिततरिततारयितूनं अनुबुद्धपच्चेकबुद्धसम्मासम्बुद्धानं पारमी, उपपारमी, परमत्थपारमीति बोधित्तयप्पत्तितो यथावुत्तविभागोति केचि। चित्तपणिधितो याव वचीपणिधि, ताव पवत्ता सम्भारा पारमियो, वचीपणिधितो याव कायपणिधि, ताव पवत्ता उपपारमियो, कायपणिधितो पभुति परमत्थपारमियोति अपरे। अञ्ञे पन "परपुञ्ञानुमोदनवसेन पवत्ता सम्भारा पारमियो, परेसं कारापनवसेन पवत्ता उपपारमियो, सयं करणवसेन पवत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमत्थपारमियो''ति वदन्ति। तथा भवसुखावहो पुञ्ञञाणसम्भारो पारमी, अत्तनो निब्बानसुखावहो उपपारमी, परेसं तदुभयसुखावहो परमत्थपारमीति एके।

पुत्तदारधनादिउपकरणपरिच्चागो पन दानपारमी, अत्तनो अङ्गपरिच्चागो दानउपपारमी, अत्तनो जीवितपरिच्चागो दानपरमत्थपारमी। तथा पुत्तदारादिकस्स तिविधस्सपि हेतु अवीतिक्कमनवसेन तिस्सो सीलपारमियो, तेसु एव तिविधेसु वत्थूसु आलयं उपच्छिन्दित्वा निक्खमनवसेन तिस्सो नेक्खम्मपारमियो, उपकरणङ्गजीविततण्हं समूहनित्वा सत्तानं हिताहितविनिच्छयकरणवसेन तिस्सो पञ्ञापारमियो, यथावुत्तभेदानं परिच्चागादीनं वायमनवसेन तिस्सो वीरियपारमियो, उपकरणङ्गजीवितन्तरायकरानं खमनवसेन तिस्सो खन्तिपारमियो, उपकरणङ्गजीवितहेतु सच्चापरिच्चागवसेन तिस्सो सच्चपारमियो, दानादिपारमियो अकुप्पाधिट्ठानवसेनेव समिज्झन्तीति उपकरणादिविनासेपि अचलाधिट्ठानवसेन तिस्सो अधिट्ठानपारमियो, उपकरणादिउपघातकेसुपि सत्तेसु मेत्ताय अविजहनवसेन तिस्सो मेत्तापारमियो, यथावुत्तवत्थुत्तयस्स उपकारापकारेसु सत्तसङ्खारेसु मज्झत्ततापटिलाभवसेन तिस्सो उपेक्खापारमियोति एवमादिना एतासं विभागो वेदितब्बो।

को सङ्गहोति एत्थ पन यथा एता विभागतो तिंसविधापि दानपारमीआदिभावतो दसविधा, एवं दानसीलखन्तिवीरियझानपञ्ञासभावेन छब्बिधा। एतासु हि नेक्खम्मपारमी सीलपारमिया सङ्गहिता तस्सा पब्बज्जाभावे, नीवरणविवेकभावे पन झानपारमिया, कुसलधम्मभावे छहिपि सङ्गहिता। सच्चपारमी सीलपारमिया एकदेसोयेव वचीसच्चविरतिसच्चपक्खे, ञाणसच्चपक्खे पन पञ्ञापारमिया सङ्गहिता। मेत्तापारमी झानपारमिया एव, उपेक्खापारमी झानपञ्ञापारमीहि, अधिट्ठानपारमी सब्बाहिपि सङ्गहितापि।

एतेसञ्च दानादीनं छन्नं गुणानं अञ्ञमञ्ञं सम्बन्धानं पञ्चदसयुगळादीनि पञ्चदसयुगळादिसाधकानि होन्ति सेय्यथिदं ? दानसीलयुगळेन परहिताहितानं करणाकरणयुगळसिद्धि, दानखन्तियुगळेन अलोभादोसयुगळसिद्धि, दानवीरिययुगळेन चागसुतयुगळसिद्धि, दानझानयुगळेन कामदोसप्पहानयुगळसिद्धि, दानपञ्ञायुगळेन अरिययानधुरयुगळसिद्धि, सीलखन्तिद्वयेन पयोगासयसुद्धिद्वयसिद्धि, सीलवीरियद्वयेन भावनाद्वयसिद्धि, सीलझानद्वयेन दुस्सील्यपरियुट्ठानप्पहानद्वयसिद्धि, सीलपञ्ञाद्वयेन दानद्वयसिद्धि, खन्तिवीरिययुगळेन खमातेजद्वयसिद्धि, खन्तिझानयुगळेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विरोधानुरोधप्पहानयुगळसिद्धि, खन्तिपञ्ञायुगळेन सुञ्ञताखन्तिपटिवेधदुकसिद्धि, वीरियझानदुकेन पग्गाहाविक्खेपदुकसिद्धि, वीरियपञ्ञादुकेन सरणदुकसिद्धि, झानपञ्ञादुकेन यानदुकसिद्धि। दानसीलखन्तित्तिकेन लोभदोसमोहप्पहानत्तिकसिद्धि, दानसीलवीरियत्तिकेन भोगजीवितकायसारादानत्तिकसिद्धि, दानसीलझानत्तिकेन पुञ्ञकिरियवत्थुत्तिकसिद्धि, दानसीलपञ्ञातिकेन आमिसाभयधम्मदानत्तिकसिद्धीति एवं इतरेहिपि तिकेहि चतुक्कादीहि च यथासम्भवं तिकानि चतुक्कादीनि च योजेतब्बानि।

एवं छब्बिधानम्पि पन इमासं पारमीनं चतूहि अधिट्ठानेहि सङ्गहो वेदितब्बो। सब्बपारमीनं समूहसङ्गहतो हि चत्तारि अधिट्ठानानि। सेय्यथिदं– सच्चाधिट्ठानं, चागाधिट्ठानं, उपसमाधिट्ठानं, पञ्ञाधिट्ठानन्ति। तत्थ अधितिट्ठति एतेन, एत्थ वा अधितिट्ठति, अधिट्ठानमत्तमेव वा तन्ति अधिट्ठानं। सच्चञ्च तं अधिट्ठानञ्च, सच्चस्स वा अधिट्ठानं, सच्चं अधिट्ठानं एतस्साति वा सच्चाधिट्ठानं। एवं सेसेसुपि। तत्थ अविसेसतो ताव लोकुत्तरगुणे कताभिनीहारस्स अनुकम्पितसब्बसत्तस्स महासत्तस्स परिञ्ञानुरूपं सब्बपारमिपरिग्गहतो सच्चाधिट्ठानं, तेसं पटिपक्खपरिच्चागतो चागाधिट्ठानं, सब्बपारमितागुणेहि उपसमतो उपसमाधिट्ठानं, तेहियेव परहितोपायकोसल्लतो पञ्ञाधिट्ठानं। विसेसतो पन "अत्थिकजनं अविसंवादेत्वा दस्सामी"ति पटिजानतो, पटिञ्ञं अविसंवादेत्वा दानतो, दानं अविसंवादेत्वा अनुमोदनतो, मच्छरियादिपटिपक्खपरिच्चागतो, देय्यपटिग्गाहकदानदेय्यधम्मक्खयेसु लोभदोसमोहभयवूपसमतो, यथारहं यथाकालं यथाविधानञ्च दानतो, पञ्ञुत्तरतो च कुसलधम्मानं चतुरधिट्ठानपदट्ठानं दानं। तथा संवरसमादानस्स अवीतिक्कमतो, दुस्सील्यपरिच्चागतो, दुच्चरितवूपसमतो, पञ्ञुत्तरतो च चतुरधिट्ठानपदट्ठानं सीलं। यथापटिञ्ञं खमनतो, परापराधविकप्पपरिच्चागतो, कोधपरियुट्ठानवूपसमतो, पञ्ञुत्तरतो च चतुरधिट्ठानपदट्ठाना खन्ति। पटिञ्ञानुरूपं परहितकरणतो, विसादपरिच्चागतो, अकुसलधम्मानं वूपसमतो, पञ्ञुत्तरतो च चतुरधिट्ठानपदट्ठानं वीरियं। पटिञ्ञानुरूपं लोकहितानुचिन्तनतो, नीवरणपरिच्चागतो, चित्तवूपसमतो, पञ्ञुत्तरतो च चतुरधिट्ठानपदट्ठानं झानं। यथापटिञ्ञं परहितूपायकोसल्लतो, अनुपायकिरियापरिच्चागतो, मोहजपरिळाहवूपसमतो, सब्बञ्ञुतापटिलाभतो च चतुरधिट्ठानपदट्ठाना पञ्ञा।

तत्थ ञेय्यपटिञ्ञानुविधानेहि सच्चाधिट्ठानं, वत्थुकामकिलेसकामपरिच्चागेहि चागाधिट्ठानं, दोसदुक्खवूपसमेहि उपसमाधिट्ठानं, अनुबोधपटिवेधेहि पञ्ञाधिट्ठानं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिविधसच्चपरिग्गहितं दोसत्तयविरोधि सच्चाधिट्ठानं, तिविधचागपरिग्गहितं दोसत्तयविरोधि चागाधिट्ठानं, तिविधवूपसमपरिग्गहितं दोसत्तयविरोधि उपसमाधिट्ठानं, तिविधञाणपरिग्गहितं दोसत्तयविरोधि पञ्ञाधिट्ठानं। सच्चाधिट्ठानपरिग्गहितानि चागूपसमपञ्ञाधिट्ठानानि अविसंवादनतो, पटिञ्ञानुविधानतो च। चागाधिट्ठानपरिग्गहितानि सच्चूपसमपञ्ञाधिट्ठानानि पटिपक्खपरिच्चागतो, सब्बपरिच्चागफलत्ता च। उपसमाधिट्ठानपरिग्गहितानि सच्चचागपञ्ञाधिट्ठानानि किलेसपरिळाहूपसमतो, कामूपसमतो, कामपरिळाहूपसमतो च। पञ्ञाधिट्ठानपरिग्गहितानि सच्चचागूपसमाधिट्ठानानि ञाणपुब्बङ्गमतो, ञाणानुपरिवत्तनतो चाति एवं सब्बापि पारमियो सच्चप्पभाविता चागपरिब्यञ्जिता उपसमोपब्रूहिता पञ्ञापरिसुद्धा। सच्चञ्हि एतासं जनकहेतु, चागो परिग्गाहकहेतु, उपसमो परिवुड्ढिहेतु, पञ्ञा पारिसुद्धिहेतु। तथा आदिम्हि सच्चाधिट्ठानं सच्चपटिञ्ञत्ता, मज्झे चागाधिट्ठानं कतपणिधानस्स परहिताय अत्तपरिच्चागतो, अन्ते उपसमाधिट्ठानं सब्बूपसमपरियोसानत्ता, आदिमज्झपरियोसानेसु पञ्ञाधिट्ठानं तस्मिं सति सम्भवतो, असति अभावतो, यथापटिञ्ञञ्च भावतो।

तत्थ महापुरिसा अत्तहितपरहितकरेहि गरुपियभावकरेहि सच्चचागाधिट्ठानेहि गिहिभूता आमिसदानेन परे अनुग्गण्हन्ति। तथा अत्तहितपरहितकरेहि गरुपियभावकरेहि उपसमपञ्ञाधिट्ठानेहि च पब्बजितभूता धम्मदानेन परे अनुग्गण्हन्ति।

तत्थ अन्तिमभवे बोधिसत्तस्स चतुरधिट्ठानपरिपूरणं। परिपुण्णचतुरधिट्ठानस्स हि चरिमकभवूपपत्तीति एके। तत्र हि गब्भोक्कन्तिठितिअभिनिक्खमनेसु पञ्ञाधिट्ठानसमुदागमेन सतो सम्पजानो सच्चाधिट्ठानपारिपूरिया सम्पतिजातो उत्तराभिमुखो सत्तपदवीतिहारेन गन्त्वा सब्बा दिसा ओलोकेत्वा सच्चानुपरिवत्तिना वचसा "अग्गोहमस्मि लोकस्स, जेट्ठो...पे०... सेट्ठोहमस्मि लोकस्सा"ति (दी० नि० २.३१; म० नि० ३.२०७) तिक्खत्तुं सीहनादं नदि, उपसमाधिट्ठानसमुदागमेन जिण्णातुरमतपब्बजितदस्साविनो चतुधम्मपदेसकोविदस्स योब्बनारोग्यजीवितसम्पत्तिमदानं उपसमो, चागाधिट्ठानसमुदागमेन महतो ञातिपरिवट्टस्स हत्थगतस्स च चक्कवत्तिरज्जस्स अनपेक्खपरिच्चागोति।

दुतिये ठाने अभिसम्बोधियं चतुरधिट्ठानं परिपुण्णन्ति केचि। तत्थ हि यथापटिञ्ञं सच्चाधिट्ठानसमुदागमेन चतुन्नं अरियसच्चानं अभिसमयो, ततो हि सच्चाधिट्ठानं परिपुण्णं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चागाधिट्ठानसमुदागमेन सब्बकिलेसोपक्किलेसपरिच्चागो, ततो हि चागाधिट्ठानं परिपुण्णं। उपसमाधिट्ठानसमुदागमेन परमूपसमसम्पत्ति, ततो हि उपसमाधिट्ठानं परिपुण्णं। पञ्ञाधिट्ठानसमुदागमेन अनावरणञाणपटिलाभो, ततो हि पञ्ञाधिट्ठानं परिपुण्णन्ति, तं असिद्धं अभिसम्बोधियापि परमत्थभावतो।

ततिये ठाने धम्मचक्कप्पवत्तने (सं० नि०३.५.१०८१; महाव० १३; पटि० म० २.३०) चतुरधिट्ठानं परिपुण्णन्ति अञ्ञे। तत्थ हि सच्चाधिट्ठानसमुदागतस्स द्वादसहि आकारेहि अरियसच्चदेसनाय सच्चाधिट्ठानं परिपुण्णं, चागाधिट्ठानसमुदागतस्स सद्धम्ममहायागकरणेन चागाधिट्ठानं परिपुण्णं। उपसमाधिट्ठानसमुदागतस्स सयं उपसन्तस्स परेसं उपसमनेन उपसमाधिट्ठानं परिपुण्णं, पञ्ञाधिट्ठानसमुदागतस्स विनेय्यानं आसयादिपरिजाननेन पञ्ञाधिट्ठानं परिपुण्णन्ति, तदपि असिद्धं अपरियोसितत्ता बुद्धकिच्चस्स।

चतुत्थे ठाने परिनिब्बाने चतुरधिट्ठानपरिपुण्णन्ति अपरे। तत्र हि परिनिब्बुतत्ता परमत्थसच्चसम्पत्तिया सच्चाधिट्ठानपरिपूरणं, सब्बूपधिपटिनिस्सग्गेन चागाधिट्ठानपरिपूरणं, सब्बसङ्खारूपसमेन उपसमाधिट्ठानपरिपूरणं, पञ्ञापयोजनपरिनिट्ठानेन पञ्ञाधिट्ठानपरिपूरणन्ति।

तत्र महापुरिसस्स विसेसेन मेत्ताखेत्ते अभिजातियं सच्चाधिट्ठानसमुदागतस्स सच्चाधिट्ठानपरिपूरणमभिब्यत्तं, विसेसेन करुणाखेत्ते अभिसम्बोधियं पञ्ञाधिट्ठानसमुदागतस्स पञ्ञाधिट्ठानपरिपूरणमभिब्यत्तं, विसेसेन मुदिताखेत्ते धम्मचक्कप्पवत्तने (सं० नि० ३.५.१०८१; महाव० १३; पटि० म० २.३०) चागाधिट्ठानसमुदागतस्स चागाधिट्ठानपरिपूरणमभिब्यत्तं, विसेसेन उपेक्खाखेत्ते परिनिब्बाने उपसमाधिट्ठानसमुदागतस्स उपसमाधिट्ठानपरिपूरणमभिब्यत्तन्ति दट्ठब्बं।

तत्रपि सच्चाधिट्ठानसमुदागतस्स संवासेन सीलं वेदितब्बं, चागाधिट्ठानसमुदागतस्स संवोहारेन सोचेय्यं वेदितब्बं, उपसमाधिट्ठानसमुदागतस्स आपदासु थामो वेदितब्बो, पञ्ञाधिट्ठानसमुदागतस्स साकच्छाय पञ्ञा वेदितब्बा। एवं सीलाजीवचित्तदिट्ठिविसुद्धियो वेदितब्बा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा सच्चाधिट्ठानसमुदागमेन दोसा अगतिं न गच्छति अविसंवादनतो, चागाधिट्ठानसमुदागमेन लोभा अगतिं न गच्छति अनभिसङ्गतो, उपसमाधिट्ठानसमुदागमेन भया अगतिं न गच्छति अनपराधतो, पञ्ञाधिट्ठानसमुदागमेन मोहा अगतिं न गच्छति यथाभूतावबोधतो।

तथा पठमेन अदुट्ठो अधिवासेति, दुतियेन अलुद्धो पटिसेवति, ततियेन अभीतो परिवज्जेति, चतुत्थेन असम्मूळ्हो विनोदेति। पठमेन नेक्खम्मसुखप्पत्ति, इतरेहि पविवेकउपसमसम्बोधिसुखप्पत्तियो होन्तीति दट्ठब्बा। तथा विवेकजपीतिसुखसमाधिज-पीतिसुखअप्पीतिजकायसुखसतिपारिसुद्धिजउपेक्खासुखप्पत्तियो एतेहि चतूहि यथाक्कमं होन्तीति। एवमनेकगुणानुबन्धेहि चतूहि अधिट्ठानेहि सब्बपारमिसमूहसङ्गहो वेदितब्बो। यथा च चतूहि अधिट्ठानेहि सब्बपारमिसङ्गहो, एवं करुणापञ्ञाहिपीति दट्ठब्बं। सब्बोपि हि बोधिसम्भारो करुणापञ्ञाहि सङ्गहितो। करुणापञ्ञापरिग्गहिता हि दानादिगुणा महाबोधिसम्भारा भवन्ति बुद्धत्तसिद्धिपरियोसानाति एवमेतासं सङ्गहो वेदितब्बो।

को सम्पादनूपायोति सकलस्सापि पुञ्ञादिसम्भारस्स सम्मासम्बोधिं, उद्दिस्स **अनवसेससम्भरणं** अवेकल्लकारितायोगेन, तत्थ च **सक्कच्चकारिता** आदरबहुमानयोगेन, **सातच्चकारिता** निरन्तरपयोगेन, चिरकालादियोगो च अन्तरा अवोसानापज्जनेनाति चतुरङ्गयोगो एतासं सम्पादनूपायो। अपिच समासतो कताभिनीहारस्स अत्तनि सिनेहस्स परियादानं, परेसु च सिनेहस्स परिवड्ढनं एतासं सम्पादनूपायो। सम्मासम्बोधिसमधिगमाय हि कतमहापणिधानस्स महासत्तस्स याथावतो परिजाननेन सब्बेसु धम्मेसु अनुपलित्तस्स अत्तनि सिनेहो परिक्खयं परियादानं गच्छति, महाकरुणासमायोगवसेन पन पिये पुत्ते विय सब्बसत्ते सम्पस्समानस्स तेसु मेत्तासिनेहो परिवड्ढति। ततो च तंतदावत्थानुरूप'मत्तपरसन्तानेसु लोभदोसमोहविगमेन विदूरीकतमच्छरियादि-बोधिसम्भारपटिपक्खो महापुरिसो दानपियवचनअत्थचरियासमानत्ततासङ्खातेहि चतूहि सङ्गहवत्थूहि (दी० नि० ३.२१०; अ० नि० १.४.३२) चतुरधिट्ठानानुगतेहि अच्चन्तं जनस्स सङ्गहकरणवसेन उपरि यानत्तये अवतारणं परिपाचनञ्च करोति। महासत्तानञ्हि महापञ्ञा महाकरुणा च दानेन अलङ्कता; दानं पियवचनेन; पियवचनं अत्थचरियाय; अत्थचरिया समानत्तताय अलङ्कता सङ्गहिता च। सब्बभूतत्तभूतस्स हि बोधिसत्तस्स सब्बत्थ समानसुखदुक्खताय समानत्ततासिद्धि। बुद्धभूतो पन तेहेव सङ्गहवत्थूहि चतुरधिट्ठानपरिपूरिताभिबुद्धेहि जनस्स अच्चन्तिकसङ्गहकरणेन अभिविनयनं करोति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दानञ्हि सम्मासम्बुद्धानं चागाधिट्ठानेन परिपूरिताभिबुद्धं; पियवचनं सच्चाधिट्ठानेन; अत्थचरिया पञ्ञाधिट्ठानेन; समानत्तता उपसमाधिट्ठानेन परिपूरिताभिबुद्धा। तथागतानञ्हि सब्बसावकपच्चेकबुद्धेहि समानत्तता परिनिब्बाने। तत्र हि तेसं अविसेसतो एकीभावो। तेनेवाह "नत्थि विमुत्तिया नानत्त"न्ति।

होन्ति चेत्थ –

"सच्चो चागी उपसन्तो, पञ्ञवा अनुकम्पको,
सम्भतसब्बसम्भारो, कं नामत्थं न साधये।।

महाकारुणिको सत्था, हितेसी च उपेक्खको,
निरपेक्खो च सब्बत्थ, अहो अच्छरियो जिनो।।

विरत्तो सब्बधम्मेसु, सत्तेसु च उपेक्खको,
सदा सत्तहिते युत्तो, अहो अच्छरियो जिनो।।

सब्बदा सब्बसत्तानं, हिताय च सुखाय च,
उय्युत्तो अकिलासू च, अहो अच्छरियो जिनो"ति।। (चरिया० पि० अट्ठ० ३२० पकिण्णककथा)

कित्तकेन कालेन सम्पादनन्ति हेट्ठिमेन ताव परिच्छेदेन चत्तारि असङ्ख्येय्यानि कप्पसतसहस्सञ्च, मज्झिमेन अट्ठासङ्ख्येय्यानि कप्पसतसहस्सञ्च, उपरिमेन सोळसासङ्ख्येय्यानि कप्पसतसहस्सञ्च, एते च भेदा यथाक्कमं पञ्ञाधिकसद्धाधिकवीरियाधिकवसेन ञातब्बा। पञ्ञाधिकानञ्हि सद्धा मन्दा होति, पञ्ञा तिक्खा। सद्धाधिकानं पञ्ञा मज्झिमा होति, वीरियाधिकानं पञ्ञा मन्दा। पञ्ञानुभावेन च सम्मासम्बोधि अभिगन्तब्बाति अट्ठकथायं वुत्तं। अविसेसेन पन विमुत्तिपरिपाचनीयानं धम्मानं तिक्खमज्झिममुदुभावेन तयोपेते भेदा युत्ताति वदन्ति। तिविधा हि बोधिसत्ता अभिनीहारक्खणे भवन्ति उग्घटितञ्ञूविपञ्चितञ्ञूनेय्यभेदेन। तेसु उग्घटितञ्ञू सम्मासम्बुद्धस्स सम्मुखा चतुप्पदिकं गाथं सुणन्तो ततियपदे अपरियोसितेयेव छअभिञ्ञाहि सह पटिसम्भिदाहि अरहत्तं पत्तुं समत्थुपनिस्सयो होति, दुतियो सत्थु सम्मुखा चतुप्पदिकं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथं सुणन्तो अपरियोसितेयेव चतुत्थपदे छहि अभिञ्ञाहि अरहत्तं पत्तुं समत्थुपनिस्सयो होति, इतरो भगवतो सम्मुखा चतुप्पदिकं गाथं सुत्वा परियोसिताय गाथाय छहि अभिञ्ञाहि अरहत्तं पत्तुं समत्थुपनिस्सयो भवति। तयोपेते विना कालभेदेन कताभिनीहारलद्धब्याकरणा पारमियो पूरेन्ता यथाक्कमं यथावुत्तभेदेन कालेन सम्मासम्बोधिं पापुणन्ति। तेसु तेसु पन कालभेदेसु अपरिपुण्णेसु ते ते महासत्ता दिवसे दिवसे वेस्सन्तरदानसदिसं दानं देन्तापि तदनुरूपे सीलादिसब्बपारमिधम्मे आचिनन्तापि अन्तरा बुद्धा भविस्सन्तीति अकारणमेतं। कस्मा? ञाणस्स अपरिपच्चनतो। परिच्छिन्नकालनिप्फादितं विय हि सस्सं परिच्छिन्नकाले परिनिप्फादिता सम्मासम्बोधि। तदन्तरा पन सब्बुस्साहेन वायमन्तेनापि न सक्का पापुणितुन्ति पारमिपारिपूरी यथावुत्तकालविसेसं विना न सम्पज्जतीति वेदितब्बं।

को आनिसंसोति ये ते कताभिनीहारानं बोधिसत्तानं –

> "एवं सब्बङ्गसम्पन्ना, बोधिया नियता नरा।
> संसरं दीघमद्धानं, कप्पकोटिसतेहिपि।
> अवीचिम्हि नुप्पज्जन्ति, तथा लोकन्तरेसु चा"ति।। आदिना (अभि० अट्ठ० १.निदानकथा; अप० अट्ठ० १.दूरेनिदानकथा; जा० अट्ठ० १.दूरेनिदानकथा; बु० वं० अट्ठ० २७.दूरेनिदानकथा; चरिया० पि० अट्ठ० पकिण्णककथा) –

अट्ठारस अभब्बट्ठानानुपगमनप्पकारा आनिसंसा संवण्णिता। ये च "सतो सम्पजानो आनन्द बोधिसत्तो तुसिताकाया चवित्वा मातुकुच्छिं ओक्कमी"तिआदिना (म० नि० ३.१९९) सोळस अच्छरियब्भुतधम्मप्पकारा, ये च "सीतं ब्यपगतं होति, उण्हञ्च उपसम्मती"तिआदिना (बु० वं० ८३), "जायमाने खो सारिपुत्त बोधिसत्ते अयं दससहस्सिलोकधातु सङ्कम्पति सम्पकम्पति सम्पवेधती"तिआदिना च द्वत्तिंस पुब्बनिमित्तप्पकारा, ये वा पनञ्ञेपि "बोधिसत्तानं अधिप्पायसमिज्झनं कम्मादीसु वसीभावो"ति एवमादयो तत्थ तत्थ जातकबुद्धवंसादीसु दस्सितप्पकारा आनिसंसा, ते सब्बेपि एतासं आनिसंसा, तथा यथानिदस्सितभेदा अलोभादोसादिगुणयुगळादयो चाति वेदितब्बा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किं फलन्ति समासतो ताव सम्मासम्बुद्धभावो एतासं फलं, वित्थारतो पन द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खण- (दी० नि० २.२४ आदयो; ३.१६८ आदयो; म० नि० २.३८५) असीतिअनुब्यञ्जनब्यामप्पभादिअनेकगुणगणसमुज्जलरूपकायसम्पत्तिअधिट्ठाना दसबलचतुवेसारज्जछअसाधारणञाणअट्ठारसावेणिकबुद्धधम्म- (दी० नि० अट्ठ० ३.३०५; मूलटी० २.सुत्तन्तभाजनीयवण्णना) -पभुतिअनेकसतसहस्सगुणसमुदयोपसोभिनी धम्मकायसिरी, यावता पन बुद्धगुणा ये अनेकेहिपि कप्पेहि सम्मासम्बुद्धेनापि वाचाय परियोसापेतुं न सक्का, इदं एतासं **फल**न्ति अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन बुद्धवंसचरियापिटकजातकमहापदानसुत्तादीनं वसेन वेदितब्बो।

यथावुत्ताय पटिपदाय यथावुत्तविभागानं पारमीनं पूरितभावं सन्धायाह **"समतिंस पारमियो पूरेत्वा"**ति। सतिपि महापरिच्चागानं दानपारमिभावे परिच्चागविसेसभावदस्सनत्थञ्चेव सुदुक्करभावदस्सनत्थञ्च **"पञ्च महापरिच्चागे"**ति विसुं गहणं, ततोयेव च अङ्गपरिच्चागतो विसुं नयनपरिच्चागग्गहणं, परिग्गहपरिच्चागभावसामञ्ञेपि धनरज्जपरिच्चागतो पुत्तदारपरिच्चागग्गहणञ्च कतं। गतपच्चागतिकवत्तसङ्खाताय पुब्बभागपटिपदाय सद्धिं अभिञ्ञासमापत्तिनिप्फादनं **पुब्बयोगो।** दानादीसुयेव सातिसयपटिपत्तिनिप्फादनं **पुब्बचरिया,** या चरियापिटकसङ्गहिता। अभिनीहारो **पुब्बयोगो,** दानादिपटिपत्ति, कायविवेकवसेन एकचरिया वा **पुब्बचरिया**ति केचि। दानादीनञ्चेव अप्पिच्छतादीनञ्च संसारनिब्बानेसु आदीनवानिसंसादीनञ्च विभावनवसेन सत्तानं बोधित्तये पतिट्ठापनपरिपाचनवसेन पवत्ता कथा **धम्मक्खानं।** ञातीनं अत्थचरिया **ञातत्थचरिया,** सापि करुणायनवसेनेव। **आदि**-सद्देन लोकत्थचरियादयो सङ्गण्हाति। कम्मस्सकताञाणवसेन, अनवज्जकम्मायतनविज्जाट्ठानपरिचयवसेन, खन्धायतनादि-परिचयवसेन, लक्खणत्तयतीरणवसेन च ञाणचारो **बुद्धिचरिया,** सा पन अत्थतो पञ्ञापारमीयेव, ञाणसम्भारदस्सनत्थं विसुं गहणं। **कोटि**न्ति परियन्तो, उक्कंसोति अत्थो। चत्तारो सतिपट्ठाने भावेत्वा ब्रूहेत्वाति सम्बन्धो। तत्थ **भावेत्वा**ति उप्पादेत्वा। **ब्रूहेत्वा**ति वड्ढेत्वा। सतिपट्ठानादिग्गहणेन आगमनपटिपदं मत्थकं पापेत्वा दस्सेति, विपस्सनासहगता एव वा सतिपट्ठानादयो दट्ठब्बा। एत्थ च "येन अभिनीहारेना"तिआदिना आगमनपटिपदाय आदिं दस्सेति, "दानपारमी"तिआदिना मज्झं, "चत्तारो सतिपट्ठाने"तिआदिना परियोसानन्ति वेदितब्बं।

सम्पतिजातोति हत्थतो मुच्चित्वा मुहुत्तजातो, न मातुकुच्छितो निक्खन्तमत्तो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निक्खन्तमत्तञ्हि महासत्तं पठमं ब्रह्मानो सुवण्णजालेन पटिग्गण्हिंसु, तेसं हत्थतो चत्तारो महाराजानो अजिनप्पवेणिया, तेसं हत्थतो मनुस्सा दुकूलचुम्बटकेन पटिग्गण्हिंसु, मनुस्सानं हत्थतो मुञ्चित्वा पथवियं पतिट्ठितोति **यथाह** भगवा महापदानदेसनायं। **सेतम्हि छत्ते**ति दिब्बसेतच्छत्ते। **अनुहीरमाने**ति धारियमाने। एत्थ च छत्तग्गहणेनेव खग्गादीनि पञ्च ककुधभण्डानिपि (जा० २.१९.७२) वुत्तानेवाति वेदितब्बं। खग्गतालवण्टमोरहत्थक-वाळबीजनीउण्हीसपट्टापि हि छत्तेन सह तदा उपट्ठिता अहेसुं। छत्तादीनियेव च तदा पञ्ञायिंसु, न छत्तादिगाहका। **सब्बा च दिसा**ति दसपि दिसा। नयिदं सब्बदिसाविलोकनं सत्तपदवीतिहारुत्तरकालं दट्ठब्बं। महासत्तो हि मनुस्सानं हत्थतो मुच्चित्वा पुरत्थिमदिसं ओलोकेसि, तत्थ देवमनुस्सा गन्धमालादीहि पूजयमाना "महापुरिस इध तुम्हेहि सदिसोपि नत्थि, कुतो उत्तरितरो"ति आहंसु। एवं चतस्सो दिसा, चतस्सो अनुदिसा, हेट्ठा, उपरीति सब्बा दिसा अनुविलोकेत्वा सब्बत्थ अत्तना सदिसं अदिस्वा "अयं उत्तरा दिसा"ति तत्थ सत्तपदवीतिहारेन अगमासि। **आसभिन्ति** उत्तमं। **अग्गो**ति सब्बपठमो। **जेट्ठो सेट्ठो**ति च तस्सेव वेवचनं। **अयमन्तिमा जाति, नत्थि दानि पुनब्भवो**ति इमस्मिं अत्तभावे पत्तब्बं अरहत्तं ब्याकासि।

"**अनेकेसं विसेसाधिगमानं पुब्बनिमित्तभावेना**"ति सङ्खित्तेन वुत्तमत्थं "**यञ्ही**"तिआदिना वित्थारतो दस्सेति। तत्थ **एत्था**ति –

"अनेकसाखञ्च सहस्समण्डलं,
छत्तं मरू धारयुमन्तलिक्खे।
सुवण्णदण्डा वीतिपतन्ति चामरा,
न दिस्सरे चामरछत्तगाहका"ति।। (सु० नि० ६९३)

इमिस्सा गाथाय। सब्बञ्ञुतञ्ञाणमेव सब्बत्थ अप्पटिहतचारताय अनावरणञाणन्ति आह "**सब्बञ्ञुतानावरणञाणपटिलाभस्सा**"ति। "**तथा अयं भगवापि गतो...पे०... पुब्बनिमित्तभावेना**"ति एतेन अभिजातियं धम्मतावसेन उप्पज्जनविसेसा सब्बबोधिसत्तानं साधारणाति दस्सेति। पारमितानिस्सन्दा हि तेति।

विक्कमीति अगमासि। **मरू**ति देवा। **समा**ति विलोकनसमताय समा सदिसियो। महापुरिसो हि यथा एकं दिसं विलोकेसि, एवं सेसा दिसापि, न कत्थचि विलोकने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विबन्धो तस्स अहोसीति। **समा**ति वा विलोकेतुं युत्ताति अत्थो। न हि तदा बोधिसत्तस्स विरूपबीभच्छविसमरूपानि विलोकेतुं अयुत्तानि दिसासु उपट्ठहन्तीति।

"एवं तथागतो"ति कायगमनट्ठेन गत-सद्देन तथागत-सद्दं निद्दिसित्वा इदानि ञाणगमनट्ठेन तं दस्सेतुं **"अथ वा"**तिआदिमाह। तत्थ **नेक्खम्मेना**ति अलोभप्पधानेन कुसलचित्तुप्पादेन। कुसला हि धम्मा इध नेक्खम्मं, न पब्बज्जादयो, "पठमज्झानेना"ति च वदन्ति। **पहाया**ति पजहित्वा। **गतो** अधिगतो, पटिपन्नो उत्तरिविसेसन्ति अत्थो। **पहाया**ति वा पहानहेतु, पहानलक्खणं वा। हेतुलक्खणत्थो हि अयं पहाय-सद्दो। "कामच्छन्दादिप्पहानहेतुकं गतो"ति हेत्थ वुत्तं गमनं अवबोधो, पटिपत्ति एव वा। कामच्छन्दादिप्पहानेन च तं लक्खीयति। एस नयो **"पदालेत्वा"**तिआदीसुपि। **अब्यापादेना**ति मेत्ताय। **आलोकसञ्ञाया**ति विभूतं कत्वा मनसिकरणेन उपट्ठितआलोकसञ्जाननेन। **अविक्खेपेना**ति समाधिना। **धम्मववत्थानेना**ति कुसलादिधम्मानं याथावविनिच्छयेन, "सप्पच्चयनामरूपववत्थानेना"तिपि वदन्ति।

एवं कामच्छन्दादिनीवरणप्पहानेन "अभिज्झं लोके पहाया"तिआदिना (विभं० ५०८) वुत्ताय पठमज्झानस्स पुब्बभागपटिपदाय भगवतो तथागतभावं दस्सेत्वा इदानि सह उपायेन अट्ठहि समापत्तीहि, अट्ठारसहि च महाविपस्सनाहि तं दस्सेतुं **"ञाणेना"**तिआदिमाह। नामरूपपरिग्गहकङ्खावितरणानञ्हि विबन्धभूतस्स मोहस्स दूरीकरणेन ञातपरिञ्ञायं ठितस्स अनिच्चसञ्ञादयो सिज्झन्ति, तथा झानसमापत्तीसु अभिरतिनिमित्तेन पामोज्जेन, तत्थ अनभिरतिया विनोदिताय झानादि समधिगमोति समापत्तिविपस्सनानं अरतिविनोदनअविज्जापदालनादि उपायो, उप्पटिपाटिनिद्देसो पन नीवरणसभावाय अविज्जाय हेट्ठा नीवरणेसुपि सङ्गहदस्सनत्थन्ति दट्ठब्बं। समापत्तिविहारप्पवेसविबन्धनेन नीवरणानि कवाटसदिसानीति आह **"नीवरणकवाटं उग्घाटेत्वा"**ति। "रत्तिं वितक्केत्वा विचारेत्वा दिवा कम्मन्ते पयोजेती"ति वुत्तट्ठाने विय वितक्कविचारा धूमायनाति अधिप्पेताति आह **"वितक्कविचारधूम"**न्ति। किञ्चापि पठमज्झानूपचारेयेव च दुक्खं, चतुत्थज्झानूपचारेयेव सुखं पहीयति, अतिसयप्पहानं पन सन्धायाह **"चतुत्थज्झानेन सुखदुक्खं पहाया"**ति।

अनिच्चस्स, अनिच्चन्ति अनुपस्सना **अनिच्चानुपस्सना,** तेभूमकधम्मानं अनिच्चतं गहेत्वा पवत्ताय विपस्सनायेतं नामं। **निच्चसञ्ञ**न्ति सङ्खतधम्मे "निच्चा, सस्सता"ति एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवत्तमिच्छासञ्ञं, सञ्ञासीसेन दिट्ठिचित्तानम्पि गहणं दट्ठब्बं। एस नयो इतो परेसुपि। **निब्बिदानुपस्सनाया**ति सङ्खारेसु निब्बिज्जनाकारेन पवत्ताय अनुपस्सनाय। **नन्दि**न्ति सप्पीतिकतण्हं। तथा **विरागानुपस्सनाया**ति विरज्जनाकारेन पवत्ताय अनुपस्सनाय। **निरोधानुपस्सनाया**ति सङ्खारानं निरोधस्स अनुपस्सनाय। "ते सङ्खारा निरुज्झन्तियेव, आयतिं समुदयवसेन न उप्पज्जन्ती"ति एवं वा अनुपस्सना **निरोधानुपस्सना**। तेनेवाह "निरोधानुपस्सनाय निरोधेति, नो समुदेती"ति। मुञ्चितुकम्यता हि अयं बलप्पत्ताति। पटिनिस्सज्जनाकारेन पवत्ता अनुपस्सना **पटिनिस्सग्गानुपस्सना**। पटिसङ्खा सन्तिट्ठना हि अयं। **आदान**न्ति निच्चादिवसेन गहणं। सन्ततिसमूहकिच्चारम्मणानं वसेन एकत्तग्गहणं **घनसञ्ञा। आयूहनं** अभिसङ्खरणं। अवत्थाविसेसापत्ति **विपरिणामो। धुवसञ्ञ**न्ति थिरभावग्गहणं। **निमित्त**न्ति समूहादिघनवसेन, सकिच्चपरिच्छेदताय च सङ्खारानं सविग्गहग्गहणं। **पणिधि**न्ति रागादिपणिधिं, सा पनत्थतो तण्हानं वसेन सङ्खारेसु निन्नता।

अभिनिवेसन्ति अत्तानुदिट्ठिं। अनिच्चदुक्खादिवसेन सब्बधम्मतीरणं **अधिपञ्ञाधम्मविपस्सना। सारादानाभिनिवेस**न्ति असारे सारग्गहणविपल्लासं। "इस्सरकुत्तादिवसेन लोको समुप्पन्नो"ति अभिनिवेसो **सम्मोहाभिनिवेसो।** केचि पन "अहोसिं नु खो अहमतीतमद्धानन्तिआदिना पवत्तसंसयापत्ति **सम्मोहाभिनिवेसो"**ति वदन्ति। सङ्खारेसु लेणताणभावग्गहणं **आलयाभिनिवेसो।** "आलयरता आलयसमुदिता"ति वचनतो आलयो तण्हा, सायेव चक्खादीसु रूपादीसु च अभिनिविसनवसेन पवत्तिया **आलयाभिनिवेसो**ति केचि। "एवंविधा सङ्खारा पटिनिस्सज्जीयन्ती"ति पवत्तं ञाणं **पटिसङ्खानुपस्सना।** वट्टतो विगतत्ता विवट्टं निब्बानं, तत्थ आरम्मणकरणसङ्खातेन अनुपस्सनेन पवत्तिया **विवट्टानुपस्सना** गोत्रभु। **संयोगाभिनिवेस**न्ति संयुज्जनवसेन सङ्खारेसु अभिनिविसनं। **दिट्ठेकट्ठे**ति दिट्ठिया सहजातेकट्ठे, पहानेकट्ठे च। **"ओळारिके"**ति उपरिमग्गवज्झे किलेसे अपेक्खित्वा वुत्तं, अञ्ञथा दस्सनपहातब्बापि दुतियमग्गवज्झेहि ओळारिकाति। **अणुसहगते**ति अणुभूते, इदं हेट्ठिममग्गवज्झे अपेक्खित्वा वुत्तं। **सब्बकिलेसे**ति अवसिट्ठसब्बकिलेसे। न हि पठमादिमग्गेहि पहीना किलेसा पुन पहीयन्तीति।

कक्खळत्तं कठिनभावो। **पग्घरणं** द्रवभावो। लोकियवायुना भस्तस्स विय येन तंतंकलापस्स उद्धुमायनं, थम्भभावो वा, तं **वित्थम्भनं।** विज्जमानेपि कलापन्तरभूतानं कलापन्तरभूतेहि असम्फुट्ठभावे, तंतंभूतविवित्तता रूपपरियन्तो आकासोति येसं यो परिच्छेदो, तेहि सो असम्फुट्ठोव, अञ्ञथा भूतानं परिच्छेदसभावो न सिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ब्यापीभावापत्तितो। अब्यापिता हि असम्फुट्ठताति। यस्मिं कलापे भूतानं परिच्छेदो, तेहि असम्फुट्ठभावो **असम्फुट्ठलक्खणं**। तेनाह भगवा आकासधातुनिद्देसे "असम्फुट्ठं चतूहि महाभूतेही"ति (ध० स० ६३७)।

विरोधिपच्चयसन्निपाते विसदिसुप्पत्ति **रुप्पनं**। चेतनापधानत्ता सङ्खारक्खन्धधम्मानं चेतनावसेनेतं वुत्तं **"सङ्खारानं अभिसङ्खरणलक्खण"**न्ति। तथा हि सुत्तन्तभाजनीये सङ्खारक्खन्धविभङ्गे "चक्खुसम्फस्सजा चेतना"तिआदिना (विभं० ९२) चेतनाव विभत्ता, अभिसङ्खरणलक्खणा च चेतना। यथाह "तत्थ कतमो पुञ्ञाभिसङ्खारो ? कुसला चेतना कामावचरा"तिआदि (विभं० २२६)। **फरणं** सविप्फारिकता। **अस्सद्धियेति** अस्सद्धियहेतु, निमित्तत्थे भुम्मं। एस नयो **"कोसज्जे"**तिआदीसु। **वूपसमलक्खणन्ति** कायचित्तपरिळाहूपसमलक्खणं। लीनुद्धच्चरहिते अधिचित्ते पवत्तमाने पग्गहनिग्गहसम्पहंसनेसु अब्यावटताय अज्झुपेक्खनं **पटिसङ्खानं** पक्खपातुपच्छेदतो।

मुसावादादीनं विसंवादनादिकिच्चताय लूखानं अपरिग्गाहकानं पटिपक्खभावतो परिग्गाहिका सम्मावाचा सिनिद्धभावतो सम्पयुत्तधम्मे, सम्मावाचापच्चयसुभासितानं सोतारञ्च पुग्गलं परिग्गण्हातीति सा परिग्गहलक्खणा सम्मावाचा। कायिककिरिया किञ्चि कत्तब्बं समुट्ठापेति। सयञ्च समुट्ठहनं घटनं होतीति सम्माकम्मन्तसङ्खाता विरति समुट्ठानलक्खणा दट्ठब्बा, सम्पयुत्तधम्मानं वा उक्खिपनं समुट्ठापनं कायिककिरियाय भारुक्खिपनं विय। जीवमानस्स सत्तस्स, सम्पयुत्तधम्मानं वा जीवितिन्द्रियवुत्तिया, आजीवस्सेव वा सुद्धि **वोदानं**। ससम्पयुत्तधम्मस्स चित्तस्स संकिलेसपक्खे पतितुं अदत्वा सम्मदेव पग्गण्हनं **पग्गहो**।

"सङ्खारा"ति इध चेतना अधिप्पेताति वुत्तं **"सङ्खारानं चेतनालक्खण"**न्ति। **नमनं** आरम्मणाभिमुखभावो। **आयतनं** पवत्तनं। आयतनानं वसेन हि आयसङ्खातानं चित्तचेतसिकानं पवत्ति। **तण्हाय हेतुलक्खणन्ति** वट्टस्स जनकहेतुभावो, मग्गस्स पन निब्बानसम्पापकत्तन्ति अयमेव तेसं विसेसो।

तथलक्खणं अविपरीतसभावो। **एकरसो** अञ्ञमञ्ञानतिवत्तनं अनूनाधिकभावो। **युगनद्धा** समथविपस्सनाव, "सद्धापञ्ञा पग्गहाविक्खेपा"तिपि वदन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खिणोति किलेसेति **खयो,** मग्गो। अनुप्पादपरियोसानताय **अनुप्पादो,** फलं। **पस्सद्धि** किलेसवूपसमो।

छन्दस्साति कत्तुकम्यताछन्दस्स। **मूललक्खणं** पतिट्ठाभावो। **समुट्ठापनलक्खणं** आरम्मणपटिपादकताय सम्पयुत्तधम्मानं उप्पत्तिहेतुता। **समोधानं** विसयादिसन्निपातेन गहेतब्बाकारो, या "सङ्गती"ति वुच्चति। समं सह ओदहन्ति अनेन सम्पयुत्तधम्माति वा **समोधानं,** फस्सो। समोसरन्ति सन्निपतन्ति एत्थाति **समोसरणं।** वेदनाय विना अप्पवत्तमाना सम्पयुत्तधम्मा वेदनानुभवननिमित्तं समोसटा विय होन्तीति एवं वुत्तं। गोपानसीनं कूटं विय सम्पयुत्तानं पामोक्खभावो **पमुखलक्खणं।** ततो, तेसं वा सम्पयुत्तधम्मानं उत्तरि पधानन्ति **तदुत्तरि।** पञ्ञुत्तरा हि कुसला धम्मा। **विमुत्तियाति** फलस्स। तञ्हि सीलादिगुणसारस्स परमुक्कंसभावेन सारं। अयञ्च लक्खणविभागो छधातुपञ्चझानङ्गादिवसेन तंतंसुत्तपदानुसारेन, पोराणट्ठकथाय आगतनयेन च कतोति दट्ठब्बं। तथा हि वुत्तोपि कोचि धम्मो परियायन्तरप्पकासनत्थं पुन दस्सितो, ततो एव च "छन्दमूलका कुसला धम्मा मनसिकारसमुट्ठाना, फस्ससमोधाना, वेदनासमोसरणा"ति, "पञ्ञुत्तरा कुसला धम्मा"ति, "विमुत्तिसारमिदं ब्रह्मचरिय"न्ति, "निब्बानोगधञ्हि आवुसो ब्रह्मचरियं निब्बानपरियोसान"न्ति च सुत्तपदानं वसेन **"छन्दस्स मूललक्खण"**न्तिआदि वुत्तं।

तथधम्मा नाम चत्तारि अरियसच्चानि अविपरीतसभावत्ता। **तथानि** तंसभावत्ता। **अवितथानि** अमुसासभावत्ता। **अनञ्ञथानि** अञ्ञाकाररहितत्ता।

जातिपच्चयसम्भूतसमुदागतट्ठोति जातिपच्चया सम्भूतं हुत्वा सहितस्स अत्तनो पच्चयानुरूपस्स उद्धं उद्धं आगतभावो, अनुपवत्तत्थोति अत्थो। अथ वा सम्भूतट्ठो च समुदागतट्ठो च सम्भूतसमुदागतट्ठो, न जातितो जरामरणं न होति, न च जातिं विना अञ्ञतो होतीति जातिपच्चयसम्भूतट्ठो। इत्थञ्च जातितो समुदागच्छतीति जातिपच्चयसमुदागतट्ठो। या या जाति यथा यथा पच्चयो होति, तदनुरूपं पातुभावोति अत्थो। **अविज्जाय सङ्खारानं पच्चयट्ठोति** एत्थापि न अविज्जा सङ्खारानं पच्चयो न होति, न च अविज्जं विना सङ्खारा उप्पज्जन्ति। या या अविज्जा येसं येसं सङ्खारानं यथा यथा पच्चयो होति, अयं अविज्जाय सङ्खारानं पच्चयट्ठो, पच्चयभावोति अत्थो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवा तं जानाति पस्सतीति सम्बन्धो। **तेना**ति भगवता। तं विभज्जमानन्ति योजेतब्बं। **तन्ति** रूपायतनं। **इट्ठानिट्ठादी**ति **आदि**-सद्देन मज्झत्तं सङ्गण्हाति, तथा अतीतानागतपच्चुप्पन्नपरित्तअज्झत्तबहिद्धातदुभयादिभेदं। **लब्भमानकपदवसेना**ति "रूपायतनं दिट्ठं सद्दायतनं सुतं गन्धायतनं रसायतनं फोट्ठब्बायतनं मुतं, सब्बं रूपं मनसा विञ्ञात"न्ति (ध० स० ९६६) वचनतो दिट्ठपदञ्च विञ्ञातपदञ्च रूपारम्मणे लब्भति। "रूपारम्मणं इट्ठं अनिट्ठं मज्झत्तं परित्तं अतीतं अनागतं पच्चुप्पन्नं अज्झत्तं बहिद्धा दिट्ठं विञ्ञातं रूपं रूपायतनं रूपधातु वण्णनिभा सनिदस्सनं सप्पटिघं नीलं पीतक"न्ति एवमादीहि **अनेकेहि नामेहि। "तेरसहि वारेही"**ति रूपकण्डे (ध० स० ६१४ आदयो) आगते तेरस निद्देसवारे सन्धायाह। एकेकस्मिञ्च वारे चतुन्नं चतुन्नं ववत्थापननयानं वसेन **"द्विपञ्ञासाय नयेही"**ति आह। **तथमेव** अविपरीतदस्सिताय, अप्पटिवत्तियदेसनताय च। **जानामि अब्भञ्ञासि**न्ति वत्तमानातीतकालेसु ञाणप्पवत्तिदस्सनेन अनागतेपि ञाणप्पवत्ति वुत्तायेवाति दट्ठब्बा। **विदित**-सद्दो अनामट्ठकालविसेसो वेदितब्बो, "दिट्ठं सुतं मुत"न्तिआदीसु (ध० स० ९६६) विय। **न उपट्ठासी**ति अत्तत्तनियवसेन न उपगच्छि। यथा रूपारम्मणादयो धम्मा यंसभावा यंपकारा च, तथा ने पस्सति जानाति गच्छतीति **तथागतो**ति एवं पदसम्भवो वेदितब्बो। केचि पन "निरुत्तिनयेन पिसोदरादिपक्खेपेन वा दस्सी-सद्दस्स लोपं, आगत-सद्दस्स चागमं कत्वा **तथागतो**"ति वण्णेन्ति।

निद्दोसताय **अनुपवज्जं**। पक्खिपितब्बाभावेन **अनूनं**। अपनेतब्बाभावेन **अनधिकं। अत्थब्यञ्जनादिसम्पत्तिया **सब्बाकारपरिपुण्णं। नो अञ्ञथा**ति "तथेवा"ति वुत्तमेवत्थं ब्यतिरेकेन सम्पादेति। तेन यदत्थं भासितं, एकन्तेन तदत्थनिप्फादनतो यथा भासितं भगवता, तथेवाति अविपरीतदेसनतं दस्सेति। **"गदत्थो"**ति एतेन तथं गदतीति तथागतोति **द**-कारस्स **त**-कारो कतो निरुत्तिनयेनाति दस्सेति।

तथा गतमस्साति **तथागतो,** गतन्ति च कायस्स वाचाय वा पवत्तीति अत्थो। **तथा**ति च वुत्ते **यंतं**-सद्दानं अब्यभिचारिसम्बन्धिताय "यथा"ति अयमत्थो उपट्ठितोयेव होति। कायवचीकिरियानञ्च अञ्ञमञ्ञानुलोमेन वचनिच्छायं, कायस्स वाचा, वाचाय च कायो सम्बन्धीभावेन उपतिट्ठतीति इममत्थं दस्सेन्तो आह **"भगवतो ही"**तिआदि। इमस्मिं पन अत्थे तथावादिताय **तथागतो**ति अयम्पि अत्थो सिद्धो होति। सो पन पुब्बे पकारन्तरेन दस्सितोति आह **"एवं तथाकारिताय तथागतो"**ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"**तिरियं अपरिमाणासु लोकधातूसू**"ति एतेन यदेके "तिरियं विय उपरि अधो च सन्ति लोकधातुयो"ति वदन्ति, तं पटिसेधेति। देसनाविलासोयेव **देसनाविलासमयो** यथा "पुञ्ञमयं, दानमय"न्तिआदीसु।

उपसग्गनिपातानं वाचकसद्दसन्निधाने तदत्थजोतनभावेन पवत्तनतो गत-सद्दोयेव अवगतत्थं अतीतत्थञ्च वदतीति आह "**गतोति अवगतो अतीतो**"ति। अथ वा अभिनीहारतो पट्ठाय याव सम्बोधि, एत्थन्तरे महाबोधियानपटिपत्तिया हानठानसंकिलेसनिवत्तीनं अभावतो यथा पणिधानं, तथा गतो अभिनीहारानुरूपं पटिपन्नोति **तथागतो**। अथ वा महिद्धिकताय, पटिसम्भिदानं उक्कंसाधिगमेन अनावरणताय च कत्थचि पटिघाताभावतो यथा रुचि, तथा कायवचीचित्तानं गतानि गमनानि पवत्तियो एतस्साति **तथागतो**। यस्मा च लोके विधयुत्तगतपकार-सद्दा समानत्था दिस्सन्ति, तस्मा यथा विधा विपस्सीआदयो भगवन्तो, अयम्पि भगवा तथा विधोति **तथागतो**। यथा युत्ता च ते भगवन्तो अयम्पि भगवा तथा युत्तोति **तथागतो**। अथ वा यस्मा सच्चं तच्छं तथन्ति ञाणस्सेतं अधिवचनं, तस्मा तथेन ञाणेन आगतोति **तथागतो**ति। एवम्पि तथागत-सद्दस्स अत्थो वेदितब्बो –

"पहाय कामादिमले यथा गता,
समाधिञाणेहि विपस्सिआदयो।
महेसिनो सक्यमुनी जुतिन्धरो,
तथागतो तेन **तथागतो** मतो।।

तथञ्च धातायतनादिलक्खणं,
सभावसामञ्ञविभागभेदतो।
सयम्भुञाणेन जिनो समागतो,
तथागतो वुच्चति सक्यपुङ्गवो।।

तथानि सच्चानि समन्तचक्खुना,
तथा इदप्पच्चयता च सब्बसो।
अनञ्ञनेय्येन यतो विभाविता,
याथावतो तेन जिनो **तथागतो**।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनेकभेदासुपि लोकधातुसु,
जिनस्स रूपायतनादिगोचरे।
विचित्तभेदं तथमेव दस्सनं,
तथागतो तेन समन्तलोचनो।।

यतो च धम्मं तथमेव भासति,
करोति वाचायनुलोम मत्तनो।
गुणेहि लोकं अभिभुय्य इरियति,
तथागतो तेनपि लोकनायको।।

यथाभिनीहारमतो यथारुचि,
पवत्तवाचातनुचित्तभावतो।
यथाविधा येन पुरा महेसिनो,
तथाविधो तेन जिनो **तथागतो**''ति।। (इतिवु० अट्ठ० ३८)

सङ्गहगाथा मुखमत्तमेव। कस्मा? अप्पमादपदं विय सकलधम्मपटिपत्तिया सब्बबुद्धगुणानं सङ्गाहकत्ता। तेनेवाह **''सब्बाकारेना''**तिआदि।

''तं कतमन्ति पुच्छती''ति एतेन ''कतमञ्च तं भिक्खवे''तिआदिवचनस्स सामञ्ञतो पुच्छाभावो दस्सितो अविसेसतो हि तस्स पुच्छाविसेसभावआपनत्थं महानिद्देसे आगता सब्बाव पुच्छा अत्थुद्धारनयेन दस्सेति **''तत्थ पुच्छा नामा''**तिआदिना। तत्थ **तत्था**ति ''तं कतमन्ति पुच्छती''ति एत्थ यदेतं सामञ्ञतो पुच्छावचनं, तस्मिं।

लक्खणन्ति ञातुं इच्छितो यो कोचि सभावो। **''अञ्ञात''**न्ति येन केनचि ञाणेन अञ्ञातभावमाह, **''अदिट्ठ''**न्ति दस्सनभूतेन ञाणेन पच्चक्खं विय अदिट्ठतं। **''अतुलित''**न्ति ''एत्तकमेत''न्ति तुलनभूतेन अतूलिततं, **''अतीरित''**न्ति तीरणभूतेन अकतञाणकिरियासमापनतं, **''अविभूत''**न्ति ञाणस्स अपाकटभावं, **''अविभावित''**न्ति ञाणेन अपाकटीकतभावं। अदिट्ठं जोतीयति एतायाति **अदिट्ठजोतना।** दिट्ठं संसन्दीयति एतायाति **दिट्ठसंसन्दना,** साकच्छावसेन विनिच्छयकरणं। विमति छिज्जति एतायाति **विमतिच्छेदना।** अनुमतिया पुच्छा **अनुमतिपुच्छा।** ''तं किं मञ्ञथ भिक्खवे''तिआदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुच्छाय हि "का तुम्हाकं अनुमती"ति अनुमति पुच्छिता होति। **कथेतुकम्यता**ति कथेतुकम्यताय।

८. सरसेनेव पतनसभावस्स अन्तरा एव अतीव पातनं **अतिपातो,** सणिकं पतितुं अदत्वा सीघं पातनन्ति अत्थो। अतिक्कम्म वा सत्थादीहि अभिभवित्वा पातनं **अतिपातो। सत्तो**ति खन्धसन्तानो। तत्थ हि सत्तपञ्ञत्ति। **जीवितिन्द्रिय**न्ति रूपारूपजीवितिन्द्रियं। रूपजीवितिन्द्रिये हि विकोपिते इतरम्पि तंसम्बन्धताय विनस्सति। कस्मा पनेत्थ "पाणस्स अतिपातो, पाणोति चेत्थ वोहारतो सत्तो"ति च एकवचननिद्देसो कतो, ननु निरवसेसानं पाणानं अतिपाततो विरति इध अधिप्पेता। तथा हि वक्खति "सब्बपाणभूतहितानुकम्पीति सब्बे पाणभूते"तिआदिना (दी० नि० अट्ठ० १.चूळसीलवण्णना) बहुवचननिद्देसन्ति? सच्चमेतं, पाणभावसामञ्ञवसेन पनेत्थ एकवचननिद्देसो कतो, सब्बसद्दसन्निधानेन तत्थ पुथुत्तं विञ्ञायमानमेवाति सामञ्ञनिद्देसं अकत्वा भेदवचनिच्छावसेन बहुवचननिद्देसो कतोति। किञ्च भिय्योसामञ्ञतो संवरसमादानं, तब्बिसेसतो संवरभेदोति इमस्स विसेसस्स ञापनत्थं अयं वचनभेदो कतोति वेदितब्बो। याय चेतनाय वत्तमानस्स जीवितिन्द्रियस्स निस्सयभूतेसु महाभूतेसु उपक्कमकरणहेतु तं महाभूतप्पच्चया उप्पज्जनकमहाभूता नुप्पज्जिस्सन्ति, सा तादिसप्पयोगसमुट्ठापिका चेतना पाणातिपातो। लद्धुपक्कमानि हि भूतानि इतरभूतानि विय न विसदानीति समानजातियानं कारणं न होन्तीति। **"कायवचीद्वारान"**न्ति एतेन मनोद्वारे पवत्ताय वधकचेतनाय पाणातिपातभावं पटिक्खिपति।

पयोगवत्थुमहन्ततादीहि महासावज्जता तेहि पच्चयेहि उप्पज्जमानाय चेतनाय बलवभावतो वेदितब्बा। यथाधिप्पेतस्स हि पयोगस्स सहसा निप्फादनवसेन किच्चसाधिकाय बहुक्खत्तुं पवत्तजवनेहि लद्धासेवनाय च सन्निट्ठापकचेतनाय वसेन पयोगस्स महन्तभावो। सतिपि कदाचि खुद्दके चेव महन्ते च पाणे पयोगस्स समभावे महन्तं हनन्तस्स चेतना तिब्बतरा उप्पज्जतीति वत्थुस्स महन्तभावो। इति उभयं पेतं चेतनाय बलवभावेनेव होति। तथा हि हन्तब्बस्स महागुणभावेन तत्थ पवत्तउपकारचेतना विय खेत्तविसेसनिब्बत्तिया अपकारचेतनापि बलवती, तिब्बतरा च उप्पज्जतीति तस्सा महासावज्जता दट्ठब्बा। तस्मा पयोगवत्थुआदिपच्चयानं अमहत्तेपि महागुणतादिपच्चयेहि चेतनाय बलवभावादिवसेनेव महासावज्जभावो वेदितब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्भरीयन्ति एतेहीति **सम्भारा,** अङ्गानि। तेसु पाणसञ्ञितावधकचित्तानि पुब्बभागियानिपि होन्ति। **उपक्कमो** वधकचेतनासमुट्ठापितो। पञ्चसम्भारवती पाणातिपातचेतनाति सा पञ्चसम्भारविनिमुत्ता दट्ठब्बा। **विज्जामयो** मन्तपरिजप्पनपयोगो आथब्बणिकादीनं विय। **इद्धिमयो** कम्मविपाकजिद्धिमयो दाठाकोटकादीनं विय। **अतिविय पपञ्चो**ति अतिमहावित्थारो।

एत्थाह – खणे खणे निरुज्झनसभावेसु सङ्खारेसु को हन्ति, को वा हञ्ञति, यदि चित्तचेतसिकसन्तानो, सो अरूपताय न छेदनभेदनादिवसेन विकोपनसमत्थो, नापि विकोपनीयो, अथ रूपसन्तानो, सो अचेतनताय कट्ठकलिङ्गरूपमोति न तत्थ छेदनादिना पाणातिपातो लब्भति यथा मतसरीरे, पयोगोपि पाणातिपातस्स पहरणप्पकारादि अतीतेसु वा सङ्खारेसु भवेय्य अनागतेसु वा पच्चुप्पन्नेसु वा, तत्थ न ताव अतीतानागतेसु सम्भवति तेसं अभावतो, पच्चुप्पन्नेसु च सङ्खारानं खणिकत्ता सरसेनेव निरुज्झनसभावताय विनासाभिमुखेसु निप्पयोजनो पयोगो सिया, विनासस्स च कारणरहितत्ता न पहरणप्पकारादिपयोगहेतुकं मरणं, निरीहकताय च सङ्खारानं कस्स सो पयोगो, खणिकत्ता वधाधिप्पायसमकालभिज्जनकस्स किरियापरियोसानकालानवट्ठानतो कस्स वा पाणातिपातकम्मबद्धोति।

वुच्चते – यथावुत्तवधकचेतनासहितो सङ्खारानं पुञ्जो सत्तसङ्खातो हन्ता, तेन पवत्तितवधकपयोगनिमित्तं अपगतुस्माविञ्ञाणजीवितिन्द्रियो मतवोहारप्पवत्तिनिबन्धो यथावुत्तवधप्पयोगाकरणे उप्पज्जनारहो रूपारूपधम्मसमूहो हञ्ञति, केवलो वा चित्तचेतसिकसन्तानो। वधप्पयोगाविसयभावेपि तस्स पञ्चवोकारभवे रूपसन्तानाधीनवुत्तिताय रूपसन्ताने परेन पयोजितजीवितिन्द्रियुपच्छेदकपयोगवसेन तन्निब्बत्तिविबन्धकविसदिसरूपुप्पत्तिया विहते विच्छेदो होतीति न पाणातिपातस्स असम्भवो, नापि अहेतुको पाणातिपातो, न च पयोगो निप्पयोजनो पच्चुप्पन्नेसु सङ्खारेसु कतपयोगवसेन तदनन्तरं उप्पज्जनारहस्स सङ्खारकलापस्स तथा अनुप्पत्तितो, खणिकानं सङ्खारानं खणिकमरणस्स इध मरणभावेन अनधिप्पेतत्ता, सन्ततिमरणस्स च यथावुत्तनयेन सहेतुकभावतो न अहेतुकं मरणं, न च कत्तुरहितो पाणातिपातप्पयोगो निरीहकेसुपि सङ्खारेसु सन्निहिततामत्तेन उपकारकेसु अत्तनो अनुरूपफलुप्पादननियतेसु कारणेसु कत्तुवोहारसिद्धितो यथा "पदीपो पकासेति निसाकरो चन्दिमा"ति च, न च केवलस्स वधाधिप्पायसहभुनो चित्तचेतसिककलापस्स पाणातिपातो इच्छितो सन्तानवसेन अवट्ठितस्सेव पटिजाननतो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्तानवसेन पवत्तमानानञ्च पदीपादीनं अत्थकिरियासिद्धि दिस्सतीति अत्थेव पाणातिपातेन कम्मबद्धो। अयञ्च विचारो अदिन्नादानादीसुपि यथासम्भवं विभावेतब्बो।

"**पहीनकालतो पट्ठाय विरतोवा**"ति एतेन पहानहेतुका इधाधिप्पेता समुच्छेदविरतीति दस्सेति। कम्मक्खयञाणेन हि पाणातिपातदुस्सील्यस्स पहीनत्ता भगवा अच्चन्तमेव ततो पटिविरतोति वुच्चति समुच्छेदवसेन पहानविरतीनं अधिप्पेतत्ता। किञ्चापि पहानविरमणानं पुरिमपच्छिमकालता नत्थि, मग्गधम्मानं पन सम्मादिट्ठिआदीनं सम्मावाचादीनञ्च पच्चयपच्चयुप्पन्नभावे अपेक्खिते सहजातानम्पि पच्चयपच्चयुप्पन्नभावेन गहणं पुरिमपच्छिमभावेनेव होतीति गहणप्पवत्तिआकारवसेन पच्चयभूतेसु सम्मादिट्ठिआदीसु पहायकधम्मेसु पहानकिरियाय पुरिमकालवोहारो, पच्चयुप्पन्नासु च विरतीसु विरमणकिरियाय अपरकालवोहारो च होतीति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। पहानं वा समुच्छेदवसेन, विरति पटिप्पस्सद्धिवसेन योजेतब्बा। अथ वा पाणो अतिपातीयति एतेनाति **पाणातिपातो,** पाणघातहेतुभूतो धम्मसमूहो। को पनेसो? अहिरिकानोत्तप्पदोसमोहविहिंसादयो किलेसा। ते हि भगवा अरियमग्गेन पहाय समुग्घाटेत्वा पाणातिपातदुस्सील्यतो अच्चन्तमेव पटिविरतोति वुच्चति किलेसेसु पहीनेसु किलेसनिमित्तस्स कम्मस्स अनुप्पज्जनतो। "अदिन्नादानं पहाया"तिआदीसुपि एसेव नयो। **विरतोवा**ति अवधारणेन तस्सा विरतिया कालादिवसेन अपरियन्ततं दस्सेति। यथा हि अञ्ञे समादिन्नविरतिकापि अनवट्ठितचित्तताय लाभजीवितादिहेतु समादानं भिन्दन्ति, न एवं भगवा। भगवा पन सब्बसो पहीनपाणातिपातत्ता अच्चन्तविरतो एवाति। **वीतिक्कमिस्सामी**ति अनवज्जधम्मेहि वोकिण्णा अन्तरन्तरा उप्पज्जनका दुब्बलाकुसला। यस्मा पन कायवचीपयोगं उपलभित्वा "इमस्स किलेसा उप्पन्ना"ति विञ्ञुना सक्का ञातुं, तस्मा ते इमिना परियायेन "**चक्खुसोतविञ्ञेय्या**"ति वुत्ताति दट्ठब्बा। **कायिका**ति पाणातिपातादिनिप्फादके बलवाकुसले सन्धायाह।

गोत्तवसेन लद्धवोहारोति सम्बन्धो। **दीपेतुं वट्टति** ब्रह्मदत्तेन भासितवण्णस्स अनुसन्धिदस्सनवसेन इमिस्सा देसनाय आरद्धत्ता। तत्थायं दीपना– "पाणातिपातं पहाय पाणातिपाता पटिविरतो समणस्स गोतमस्स सावकसङ्घो निहितदण्डो निहितसत्थो"ति वित्थारेतब्बं। ननु च धम्मस्सापि वण्णो ब्रह्मदत्तेन भासितो? सच्चं भासितो, सो पन सम्मासम्बुद्धप्पभवत्ता, अरियसङ्घाधारत्ता च धम्मस्स धम्मानुभावसिद्धत्ता च तेसं तदुभयदीपनेनेव दीपितो होतीति विसुं न उद्धटो। सद्धम्मानुभावेनेव हि भगवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्खुसङ्घो च पाणातिपातादिप्पहानसमत्थो अहोसि, देसना पन आदितो पट्ठाय एवं आगताति।

एत्थायं अधिप्पायो– "अत्थि भिक्खवे अञ्ञे च धम्मा"तिआदिना अनञ्ञसाधारणे बुद्धगुणे आरब्भ उपरि देसनं वड्ढेतुकामो भगवा आदितो पट्ठाय "तथागतस्स वण्णं वदमानो वदेय्या"तिआदिना बुद्धगुणवसेनेव देसनं आरभि, न भिक्खुसङ्घवसेनाति। एसा हि भगवतो देसनाय पकति, यं एकरसेनेव देसनं दस्सेतुं लब्भमानस्सापि कस्सचि अग्गहणं। तथा हि रूपकण्डे दुकादीसु तन्निद्देसेसु च हदयवत्थु न गहितं। इतरवत्थूहि असमानगतिकत्ता देसनाभेदो होतीति। यथा हि चक्खुविञ्ञाणादीनि एकन्ततो चक्खादिनिस्सयानि, न एवं मनोविञ्ञाणं एकन्तेन हदयवत्थुनिस्सयं, निस्सितवसेन च वत्थुदुकादिदेसना पवत्ता "अत्थि रूपं चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थु, अत्थि रूपं न चक्खुविञ्ञाणस्स वत्थू"तिआदिना। यम्पि एकन्ततो हदयवत्थुनिस्सयं, तस्स वसेन "अत्थि रूपं मनोविञ्ञाणस्स वत्थू"तिआदिना दुकादीसु वुच्चमानेसुपि न तदनुरूपा आरम्मणदुकादयो सम्भवन्ति। न हि "अत्थि रूपं मनोविञ्ञाणस्स आरम्मणं, अत्थि रूपं न मनोविञ्ञाणस्स आरम्मण"न्ति सक्का वत्तुन्ति वत्थारम्मणदुका भिन्नगतिका सियुन्ति न एकरसा देसना भवेय्याति। तथा निक्खेपकण्डे चित्तुप्पादविभागेन अवुच्चमानत्ता अवितक्कअविचारपदविस्सज्जने "विचारो चा"ति वत्तुं न सक्काति अवितक्कविचारमत्तपदविस्सज्जने लब्भमानोपि वितक्को न उद्धटो, अञ्ञथा "वितक्को चा"ति वत्तब्बं सिया।

दण्डनसङ्घातस्स दण्डस्स परविहेठनस्स विवज्जितभावदीपनत्थं दण्डसत्थानं निक्खेपवचनन्ति आह **"परूपघातत्थाया"**तिआदि। **विहेठनभावतो**ति विहिंसनभावतो। "भिक्खुसङ्घवसेनापि दीपेतुं वट्टती"ति वुत्तत्ता तम्पि एकदेसेन दीपेन्तो **"यं पन भिक्खू"**तिआदिमाह।

लज्जीति एत्थ वुत्तलज्जाय ओत्तप्पम्पि वुत्तमेवाति दट्ठब्बं। न हि पापजिगुच्छनं पापुत्तासनरहितं, पापभयं वा अलज्जनं अत्थीति। धम्मगरुताय वा बुद्धानं, धम्मस्स च अत्ताधीनत्ता अत्ताधिपतिभूता लज्जाव वुत्ता, न पन लोकाधिपति ओत्तप्पं। "दयं मेत्तचित्ततं आपन्नो"ति कस्मा वुत्तं, ननु दया-सद्दो "दयापन्नो"तिआदीसु करुणाय पवत्ततीति ? सच्चमेतं, अयं पन दया-सद्दो अनुरक्खणमत्थं अन्तोनीतं कत्वा पवत्तमानो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेत्ताय करुणाय च पवत्ततीति इध मेत्ताय पवत्तमानो वुत्तो। मिदति सिनिय्हतीति मेत्ता, मेत्ता एतस्स अत्थीति मेत्तं, मेत्तं चित्तं एतस्साति मेत्तचित्तो, तस्स भावो **मेत्तचित्तता,** मेत्ता इच्चेव अत्थो। **"सब्बपाणभूतहितानुकम्पी"**ति एतेन तस्सा विरतिया सत्तवसेन अपरियन्ततं दस्सेति। **पाणभूते**ति पाणजाते। **अनुकम्पको**ति करुणायनको। यस्मा पन मेत्ता करुणाय विसेसपच्चयो होति, तस्मा वुत्तं **"ताय एव दयापन्नताया"**ति। एवं येहि धम्मेहि पाणातिपाता विरति सम्पज्जति, तेहि लज्जामेत्ताकरुणाहि समङ्गीभावो दस्सितो। **विहरती**ति एवंभूतो हुत्वा एकस्मिं इरियापथे उप्पन्नं दुक्खं अञ्ञेन इरियापथेन विच्छिन्दित्वा हरति पवत्तेति, अत्तभावं वा यापेतीति अत्थो। तेनेवाह **"इरियति यपेति यापेति पालेती"**ति।

आचारसीलमत्तकन्ति साधुजनाचारसीलमत्तकं, तेन इन्द्रियसंवरादिगुणेहिपि लोकियपुथुज्जनो तथागतस्स वण्णं वत्तुं न सक्कोतीति दस्सेति। तथा हि इन्द्रियसंवरपच्चयपरिभोगसीलानि इध सीलकथायं न विभत्तानि।

परसंहरणन्ति परस्स सन्तकहरणं। थेनो वुच्चति चोरो, तस्स भावो **थेय्यं**। इधापि खुद्दके परसन्तके अप्पसावज्जं, महन्ते महासावज्जं। कस्मा ? पयोगमहन्तताय, वत्थुगुणानं पन समभावे सति किलेसानं उपक्कमानञ्च मुदुताय अप्पसावज्जं, तिब्बताय महासावज्जन्ति अयम्पि नयो योजेतब्बो।

साहत्थिकादयोति एत्थ मन्तपरिजप्पनेन परसन्तकहरणं विज्जामयो, विना मन्तेन कायवचीपयोगेन परसन्तकस्स आकड्ढनं तादिसइद्धानुभावेन इद्धिमयो पयोगो।

सेसन्ति "पहाय पटिविरतो"ति एवमादिकं। तञ्हि पुब्बे वुत्तनयं। किञ्चापि नयिध सिक्खापदवोहारेन विरति वुत्ता, इतो अञ्ञेसु पन सुत्तपदेसेसु विनयाभिधम्मेसु च पवत्तवोहारेन विरतियो चेतना च अधिसीलसिक्खादीनं अधिट्ठानभावतो, तेसु अञ्ञतरकोट्ठासभावतो च सिक्खापदन्ति आह **"पठमसिक्खापदे"**ति। कामञ्चेत्थ "लज्जी दयापन्नो"ति न वुत्तं, अधिकारवसेन पन अत्थतो वा वुत्तमेवाति वेदितब्बं। यथा हि लज्जादयो पाणातिपातप्पहानस्स विसेसप्पच्चयो, एवं अदिन्नादानप्पहानस्सापीति, तस्मा सापि पाळि आनेत्वा वत्तब्बा। एसेव नयो इतो परेसुपि। अथ वा "सुचिभूतेना"ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतेन हिरोत्तप्पादीहि समन्नागमो, अहिरिकादीनञ्च पहानं वुत्तमेवाति "लज्जी"तिआदि न वुत्तन्ति दट्ठब्बं।

असेट्ठचरियन्ति असेट्ठानं हीनानं, असेट्ठं वा लामकं निहीनं वुत्तिं, मेथुनन्ति अत्थो। "**ब्रह्मं सेट्ठं आचार**"न्ति मेथुनविरतिमाह। "**आराचारी मेथुना**"ति एतेन "इध ब्राह्मण एकच्चो...पे०... न हेव खो मातुगामेन सद्धिं द्वयंद्वयसमापत्तिं समापज्जति, अपिच खो मातुगामस्स उच्छादनपरिमद्दनन्हापनसम्बाहनं सादियति, सो तं अस्सादेति, तं निकामेति, तेन च वित्तिं आपज्जती"तिआदिना (अ० नि० २.७.५०) वुत्ता सत्तविधमेथुनसंयोगापि पटिविरति दस्सिताति दट्ठब्बा। इधापि असद्धम्मसेवनाधिप्पायेन कायद्वारप्पवत्ता मग्गेनमग्गपटिपत्तिसमुट्ठापिका चेतना अब्रह्मचरियं, मिच्छाचारे पन अगमनीयट्ठानवीतिक्कमचेतनाति योजेतब्बं। तत्थ अगमनीयट्ठानं नाम पुरिसानं मातुरक्खितादयो दस, धनक्कीतादयो दसाति वीसति इत्थियो। इत्थीसु पन दसन्नं धनक्कितादीनं सारक्खसपरिदण्डानञ्च वसेन द्वादसन्नं अञ्ञे पुरिसा। गुणविरहिते विप्पटिपत्ति अप्पसावज्जा, महागुणे महासावज्जा। गुणरहितेपि च अभिभवित्वा पवत्ति महासावज्जा, उभिन्नं समानच्छन्दभावेपि किलेसानं उपक्कमानञ्च मुदुताय अप्पसावज्जा, तिब्बताय महासावज्जाति वेदितब्बा। तस्स द्वे सम्भारा सेवेतुकामताचित्तं, मग्गेनमग्गपटिपत्तीति। मिच्छाचारे पन अगमनीयट्ठानता, सेवनाचित्तं मग्गेनमग्गपटिपत्ति, सादियनञ्चाति चत्तारो। "अभिभवित्वा वीतिक्कमने मग्गेनमग्गपटिपत्तिअधिवासने सतिपि पुरिमुप्पन्नसेवनाभिसन्धिपयोगाभावतो अभिभुय्यमानस्स मिच्छाचारो न होती"ति वदन्ति। सेवनाचित्ते सति पयोगाभावो न पमाणं इत्थिया सेवनापयोगस्स येभुय्येन अभावतो, इत्थिया पुरेतरं उपट्ठापितसेवनाचित्तायपि मिच्छाचारो न सियाति आपज्जति पयोगाभावतो। तस्मा पुरिसस्स वसेन उक्कंसतो चत्तारो वुत्ताति दट्ठब्बं, अञ्ञथा इत्थिया पुरिसकिच्चकरणकाले पुरिसस्सपि सेवनापयोगाभावतो मिच्छाचारो न सियाति एके। इदं पनेत्थ सन्निट्ठानं– अत्तनो रुचिया पवत्तितस्स तयो, बलक्कारेन पवत्तितस्स तयो, अनवसेसग्गहणेन पन चत्तारोति। एको पयोगो साहत्थिकोव।

९. कम्मपथप्पत्तं दस्सेतुं "**अत्थभञ्जनको**"ति वुत्तं। **वचीपयोगो कायपयोगो वा**ति **मुसा**-सद्दस्स किरियापधानतं दस्सेति। **विसंवादनाधिप्पायो** पुब्बभागक्खणे तङ्खणे च। वुत्तञ्हि "पुब्बेवस्स होति 'मुसा भणिस्स'न्ति, भणन्तस्स होति 'मुसा भणामी'ति" (पारा० २०५)। एतञ्हि द्वयं अङ्गभूतं, इतरं पन होतु वा मा वा, अकारणमेतं। **अस्सा**ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसंवादकस्स। यथावुत्तं पयोगभूतं मुसा वदति विञ्ञापेति, समुट्ठापेति वा एतायाति **चेतना मुसावादो।**

पुरिमनये लक्खणस्स अब्यापितताय, मुसा-सद्दस्स च विसंवदितब्बत्थवाचकत्तसम्भवतो परिपुण्णं कत्वा मुसावादलक्खणं दस्सेतुं **"मुसाति अभूतं अतच्छं वत्थू"**तिआदिना दुतियनयो आरद्धो। इमस्मिञ्च नये मुसा वदीयति वुच्चति एतायाति **चेतना मुसावादो। "यमत्थं भञ्जती"**ति वत्थुवसेन मुसावादस्स अप्पसावज्जमहासावज्जतमाह। यस्स अत्थं भञ्जति, तस्स अप्पगुणताय अप्पसावज्जो, महागुणताय महासावज्जोति अदिन्नादाने विय गुणवसेनापि योजेतब्बं। किलेसानं मुदुतिब्बतावसेनापि अप्पसावज्जमहासावज्जता लब्भतियेव।

अत्तनो सन्तकं अदातुकामताय, पूरणकथानयेन च विसंवादनपुरेक्खारस्सेव मुसावादो। तत्थ पन चेतना बलवती न होतीति अप्पसावज्जता वुत्ता। अप्पताय ऊनस्स अत्थस्स पूरणवसेन पवत्ता कथा **पूरणकथा।**

तज्जोति तस्सारुप्पो, विसंवादनानुरूपोति अत्थो। **"वायामो"**ति वायामसीसेन पयोगमाह। विसंवादनाधिप्पायेन पयोगे कतेपि परेन तस्मिं अत्थे अविञ्ञाते विसंवादनस्स असिज्झनतो परस्स तदत्थविजाननं एको सम्भारो वुत्तो। केचि पन "अभूतवचनं विसंवादनचित्तं परस्स तदत्थविजाननन्ति तयो सम्भारा"ति वदन्ति। **किरियासमुट्ठापकचेतनाक्खणेयेव मुसावादककम्मुना बज्झति** सन्निट्ठापकचेतनाय निब्बत्तत्ता, सचेपि दन्धताय विचारेत्वा परो तमत्थं जानातीति अधिप्पायो।

"सच्चतो थेततो"तिआदीसु (म० नि० १.१९) विय **थेत-**सद्दो थिरपरियायो, थिरभावो च सच्चवादिताय अधिकतत्ता कथावसेन वेदितब्बोति आह **"थिरकथोति अत्थो"**ति। **नथिरकथो**ति यथा हलिद्दिरागादयो अनवट्ठितसभावताय न थिरा, एवं न थिरा कथा यस्स सो न थिरकथोति हलिद्दिरागादयो यथा कथाय उपमा होन्ति, एवं योजेतब्बं। एस नयो **"पासाणलेखा विया"**तिआदीसुपि।

सद्धा अयति पवत्तति एत्थाति सद्धायो, सद्धायो एव **सद्धायिको** यथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"वेनयिको"ति (अ० नि० ३.८.११; पारा० ८)। सद्धाय वा अयितब्बो **सद्धायिको,** सद्धेय्योति अत्थो। **वत्तब्बतं आपज्जति** विसंवादनतोति अधिप्पायो।

सुञ्ञभावन्ति पीतिविरहितताय रित्ततं। **सा पिसुणवाचाति** यायं यथावुत्ता सद्दसभावा वाचा, सा पियसुञ्ञकरणतो पिसुणवाचाति निरुत्तिनयेन अत्थमाह। पिसतीति वा पिसुणा, समग्गे सत्ते अवयवभूते वग्गे भिन्ने करोतीति अत्थो।

फरुसन्ति सिनेहाभावेन लूखं। **सयम्पि फरुसाति** दोमनस्ससमुट्ठितत्ता सभावेनपि कक्कसा। एत्थ च फरुसं करोतीति फलूपचारेन, फरुसयतीति वा वाचाय फरुस-सद्दप्पवत्ति वेदितब्बा। **सयम्पि फरुसाति** परेसं मम्मच्छेदवसेन पवत्तिया एकन्तनिट्ठुरताय सभावेन, कारणवोहारेन च वाचाय फरुस-सद्दप्पवत्ति दट्ठब्बा। ततोयेव च **नेव कण्णसुखा।** अत्थविपन्नताय **न हदयङ्गमा।**

येन सम्फं पलपतीति येन पलापसङ्खातेन निरत्थकवचनेन सुखं हितञ्च फलति विदरति विनासेतीति "सम्फ"न्ति लद्धनामं अत्तनो परेसञ्च अनुपकारकं यं किञ्चि पलपति।

संकिलिट्ठचित्तस्साति लोभेन दोसेन वा विबाधितचित्तस्स, उपतापितचित्तस्स वा, दूसितचित्तस्साति अत्थो। **चेतना पिसुणवाचा** पिसुणं वदन्ति एतायाति। यस्स यतो भेदं करोति, तेसु अभिन्नेसु अप्पसावज्जं, भिन्नेसु महासावज्जं, तथा किलेसानं मुदुतिब्बताविसेसेसु।

यस्स पेसुञ्ञं उपसंहरति, सो भिज्जतु वा मा वा, तस्स अत्थस्स विञ्ञापनमेव पमाणन्ति आह **"तदत्थविजानन"**न्ति, कम्मपथप्पत्ति पन भिन्ने एव।

अनुप्पदाताति अनुबलप्पदाता, अनुवत्तनवसेन वा पदाता। कस्स पन अनुवत्तनं पदानञ्च? "सहितान"न्ति वुत्तत्ता "सन्धानस्सा"ति विञ्ञायति। तेनेवाह **"सन्धानानुप्पदाता"**ति। यस्मा पन अनुवत्तनवसेन सन्धानस्स पदानं आधानं, रक्खणं वा दळ्हीकरणं होति, तेन वुत्तं **"दळ्हीकम्मं कत्ताति अत्थो"**ति। आरमन्ति एत्थाति **आरामो,**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रमितब्बट्ठानं। यस्मा पन आकारेन विनापि अयमेवत्थो लब्भति, तस्मा वुत्तं **"समग्गरामोतिपि पाळि, अयमेवेत्थ अत्थो"**ति।

मम्मानि विय मम्मानि, येसु फरुसवाचाय छुपितमत्तेसु दुट्ठारूसु विय घट्टितेसु चित्तं अधिमत्तं दुक्खप्पत्तं होति। कानि पन तानि? जातिआदीनि अक्कोसवत्थूनि। तानि छिज्जन्ति, भिज्जन्ति वा येन कायवचीपयोगेन, सो **मम्मच्छेदको।** एकन्तेन फरुसचेतना फरुसवाचा फरुसं वदति एतायाति। कथं पन एकन्तफरुसचेतना होति? दुट्ठचित्तताय। **तस्मा**ति एकन्तफरुसचेतनाय एव फरुसवाचाभावस्स। **मम्मच्छेदको** सवनफरुसतायाति अधिप्पायो। **चित्तसण्हताय फरुसवाचा न होति** कम्मपथ'प्पत्तत्ता, कम्मभावं पन न सक्का वारेतुन्ति। एवं अन्वयवसेन चेतनाफरुसताय फरुसवाचं साधेत्वा इदानि तमेव पटिपक्खनयेन साधेतुं **"वचनसण्हताया"**तिआदि वुत्तं। **सा** फरुसवाचा। **यन्ति** यं पुग्गलं। एत्थापि कम्मपथभावं अप्पत्ता अप्पसावज्जा, इतरा महासावज्जा, तथा किलेसानं मुदुतिब्बताभावे। केचि पन "यं उद्दिस्स फरुसवाचा पयुज्जन्ति, तस्स सम्मुखाव सीसं एती"ति, एके "परम्मुखापि फरुसवाचा होतियेवा"ति वदन्ति। तत्थायमधिप्पायो युत्तो सिया– सम्मुखा पयोगे अगारवादीनं बलवभावतो सिया चेतना बलवती, परस्स च तदत्थजाननं, न तथा असम्मुखाति। यथा पन अक्कोसिते मते आळहने कता खमना उपवादन्तरायं निवत्तेति, एवं "परम्मुखा पयुत्तापि फरुसवाचा होतियेवा"ति सक्का विञ्ञातुन्ति। **कुपितचित्त**न्ति अक्कोसाधिप्पायेनेव कुपितचित्तं, न मरणाधिप्पायेन। मरणाधिप्पायेन हि चित्तकोपे सति ब्यापादोयेव होतीति। **एत्था**ति–

"नेलङ्गो सेतपच्छादो, एकारो वत्तती रथो।
अनीघं पस्स आयन्तं, छिन्नसोतं अबन्धन"न्ति।। (सं० नि० २.४.३४७;
उदा० ६५)

इमिस्सा गाथाय। सीलञ्हेत्थ "नेलङ्ग"न्ति वुत्तं। तेनेवाह चित्तो गहपति "नेलङ्गन्ति खो भन्ते सीलानमेतं अधिवचन"न्ति (सं० नि० २.४.३४७)। **सुकुमारा**ति अफरुसताय मुदुका। **पुरस्सा**ति एत्थ **पुर**-सद्दो तन्निवासीवाचको दट्ठब्बो "गामो आगतो"तिआदीसु विय। तेनेवाह **"नगरवासीन"**न्ति। मनं अप्पायति वड्ढेतीति **मनापा।** तेन वुत्तं **"चित्तवुड्ढिकरा"**ति। **आसेवनं** भावनं बहुलीकरणं। यं गाहयितुं पवत्तितो, तेन अग्गहिते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पसावज्जो गहिते महासावज्जोति, इधापि किलेसानं मुदुतिब्बतावसेनापि अप्पसावज्जमहासावज्जता लब्भतियेव।

"**कालवादी**"तिआदि सम्फप्पलापा पटिविरतस्स पटिपत्तिदस्सनं। यथा हि "पाणातिपाता पटिविरतो"तिआदि पाणातिपातप्पहानपटिपत्तिदस्सनं। "पाणातिपातं पहाय विहरती"ति हि वुत्ते कथं पाणातिपातप्पहानं होतीति? अपेक्खासब्भावतो "पाणातिपाता पटिविरतो होती"ति वुत्तं, सा पन विरति कथन्ति आह "निहितदण्डो निहितसत्थो"ति, तञ्च दण्डसत्थनिधानं कथन्ति वुत्तं "लज्जी"तिआदि, एवं उत्तरुत्तरं पुरिमस्स पुरिमस्स उपायसन्दस्सनं, तथा अदिन्नादानादीसु यथासम्भवं योजेतब्बं। तेन वुत्तं "कालवादीतिआदि सम्फप्पलापा पटिविरतस्स पटिपत्तिदस्सन"न्ति। अत्थसञ्हितापि हि वाचा अयुत्तकालप्पयोगेन अत्थावहा न सियाति अनत्थविञ्ञापनवाचं अनुलोमेति, तस्मा सम्फप्पलापं पजहन्तेन अकालवादिता परिवज्जेतब्बाति वुत्तं "**कालवादी**"ति। कालेन वदन्तेनापि उभयानत्थसाधनतो अभूतं परिवज्जेतब्बन्ति आह "**भूतवादी**"ति। भूतञ्च वदन्तेन यं इधलोकपरलोकहितसम्पादकं, तदेव वत्तब्बन्ति दस्सेतुं "**अत्थवादी**"ति वुत्तं। अत्थं वदन्तेनापि न लोकियधम्मसन्निस्सितमेव वत्तब्बं, अथ खो लोकुत्तरधम्मसन्निस्सितं पीति दस्सेतुं "**धम्मवादी**"ति वुत्तं। यथा च अत्थो लोकुत्तरधम्मसन्निस्सितो होति, तं दस्सनत्थं "**विनयवादी**"ति वुत्तं। पातिमोक्खसंवरो सतिसंवरो ञाणसंवरो खन्तिसंवरो वीरियसंवरोति हि पञ्चन्नं संवरानं, तदङ्गविनयो विक्खम्भनविनयो समुच्छेदविनयो पटिप्पस्सद्धिविनयो निस्सरणविनयोति पञ्चन्नं विनयानञ्च वसेन वुच्चमानो अत्थो निब्बानाधिगमहेतुभावतो लोकुत्तरधम्मसन्निस्सितो होतीति।

एवं गुणविसेसयुत्तो च अत्थो वुच्चमानो देसनाकोसल्ले सति सोभति, किच्चकरो च होति, नाञ्ञथाति दस्सेतुं "**निधानवतिं वाचं भासिता**"ति वुत्तं। इदानि तं देसनाकोसल्लं विभावेतुं "**कालेना**"तिआदिमाह। अज्झासयट्ठुप्पत्तीनं पुच्छाय च वसेन ओतिण्णे देसनाविसये एकंसादिब्याकरणविभागं सल्लक्खेत्वा ठपनाहेतुदाहरणसंसन्दनानि तंतंकालानुरूपं विभावेन्तिया परिमितपरिच्छिन्नरूपाय विपुलतरगम्भीरुदारपहूतत्थ-वित्थारसङ्गाहकाय देसनाय परे यथाज्झासयं परमत्थसिद्धियं पतिट्ठापेन्तो "देसनाकुसलो"ति वुच्चतीति एवमेत्थ अत्थयोजना वेदितब्बा।

१०. एवं पटिपाटिया सत्त मूलसिक्खापदानि विभजित्वा सतिपि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिज्झादिप्पहानस्स संवरसीलसिक्खासङ्गहे उपरिगुणसङ्गहतो, लोकियपुथुज्जनाविसयतो च उत्तरदेसनाय सङ्गण्हितुं तं परिहरित्वा पचुरजनपाकटं आचारसीलमेव विभजन्तो भगवा **"बीजगामभूतगामसमारम्भा"**तिआदिमाह। तत्थ **गामो**ति समूहो। ननु च रुक्खादयो चित्तरहितताय न जीवा, चित्तरहितता च परिप्फन्दाभावतो, छिन्ने विरुहनतो, विसदिसजातिकभावतो, चतुयोनिअप्परियापन्नतो च वेदितब्बा, वुड्ढि पन पवाळसिलालवणानम्पि विज्जतीति न तेसं जीवभावे कारणं, विसयग्गहणञ्च परिकप्पनामत्तं सुपनं विय चिञ्चादीनं, तथा दोहळादयो, तत्थ कस्मा बीजगामभूतगामसमारम्भा पटिविरति इच्छितातिं ? समणसारुप्पतो, सन्निस्सितसत्तानुरक्खणतो च। तेनेवाह "जीवसञ्ञिनो हि मोघपुरिसा मनुस्सा रुक्खस्मि"न्तिआदि (पाचि० ८९)। **नीलतिणरुक्खादिकस्सा**ति अल्लतिणस्स चेव अल्लरुक्खादिकस्स च। **आदि-**सद्देन ओसधिगच्छलतादयो वेदितब्बा।

एकं भत्तं एकभत्तं, तं अस्स अत्थीति **एकभत्तिको,** एकस्मिं दिवसे एकवारमेव भुञ्जनको। तयिदं रत्तिभोजनोपि सियाति तन्निवत्तनत्थमाह **"रत्तूपरतो"**ति। एवम्पि अपरण्हभोजीपि सिया एकभत्तिकोति तदासङ्कानिवत्तनत्थं **"विरतो विकालभोजना"**ति वुत्तं। अरुणुग्गमनतो पट्ठाय याव मज्झन्हिका, अयं बुद्धानं आचिण्णसमाचिण्णो भोजनस्स कालो नाम, तदञ्ञो विकालो। **अट्ठकथायं** पन दुतियपदेन रत्तिभोजनस्स पटिक्खित्तत्ता अपरण्हो "विकालो"ति वुत्तो।

सङ्खेपतो "सब्बपापस्स अकरण"न्तिआदि (दी० नि० २.९०; ध० प० १८३; नेत्ति० ३०, ५०, ११६, १२४) नयप्पवत्तं भगवतो सासनं अच्चन्तछन्दरागप्पवत्तितो नच्चादीनं दस्सनं न अनुलोमेतीति आह **"सासनस्स अननुलोमत्ता"**ति। अत्तना पयोजियमानं, परेहि पयोजापियमानञ्च नच्चं नच्चभावसामञ्ञतो पाळियं एकेनेव नच्च-सद्देन गहितं, तथा गीतवादित-सद्देन चाति आह **"नच्चननच्चापनादिवसेना"**ति। **आदि-**सद्देन गायनगायापनवादनवादापनानि सङ्गण्हाति। दस्सनेन चेत्थ सवनम्पि सङ्गहितं विरूपेकसेसनयेन। आलोचनसभावताय वा पञ्चन्नं विञ्ञाणानं सवनकिरियायपि दस्सनसङ्खेपसब्भावतो **"दस्सना"** इच्चेव वुत्तं। अविसूकभूतस्स गीतस्स सवनं कदाचि वट्टतीति आह **"विसूकभूता दस्सना"**ति। तथा हि वुत्तं परमत्थजोतिकाय **खुद्दकपाठट्ठकथाय** (खु० पा० अट्ठ० पच्छिमपञ्चसिक्खापदवण्णना) "धम्मूपसंहितम्पि चेत्थ गीतं वट्टति, गीतूपसंहितो धम्मो न वट्टती"ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उच्चाति उच्चसद्देन समानत्थं एकं सद्दन्तरं, सेति एत्थाति **सयनं**। उच्चासयनं महासयनञ्च समणसारुप्परहितं अधिप्पेतन्ति आह **"पमाणातिक्कन्तं, अकप्पियत्थरण"**न्ति। आसन्दादिआसनञ्चेत्थ सयनेन सङ्गहितन्ति दट्ठब्बं। यस्मा पन आधारे पटिक्खित्ते तदाधारकिरिया पटिक्खित्ताव होति, तस्मा "उच्चासयनमहासयना" इच्चेव वुत्तं, अत्थतो पन तदुपभोगभूत निसज्जानिपज्जनेहि विरति दस्सिताति दट्ठब्बा। उच्चासयनसयनमहासयनसयनाति वा एतस्मिं अत्थे एकसेसनयेन अयं निद्देसो कतो यथा "नामरूपपच्चया सळायतन"न्ति (म० नि० ३.१२६; सं० नि० १.२.१; उदा० १)। आसनकिरियापुब्बकत्ता सयनकिरियाय सयनग्गहणेनेव आसनं गहितन्ति वेदितब्बं।

अञ्ञेहि गाहापने उपनिक्खित्तसादियने च पटिग्गहणत्थो लब्भतीति आह **"न उग्गण्हापेति, न उपनिक्खित्तं सादीयती"**ति। अथ वा तिविधं पटिग्गहणं कायेन वाचाय मनसा। तत्थ कायेन पटिग्गहणं उग्गण्हनं, वाचाय पटिग्गहणं उग्गहापनं, मनसा पटिग्गहणं सादियनन्ति तिविधम्पि पटिग्गहणं सामञ्ञनिद्देसेन, एकसेसनयेन वा गहेत्वा "पटिग्गहणा"ति वुत्तन्ति आह **"नेव नं उग्गण्हाती"**तिआदि। एस नयो **"आमकधञ्ञपटिग्गहणा"**तिआदीसुपि। नीवारादिउपधञ्ञस्स सालियादिमूलधञ्ञन्तोगधत्ता वुत्तं **"सत्तविधस्सा"**ति। "अनुजानामि भिक्खवे पञ्च वसानि भेसज्जानि अच्छवसं मच्छवसं सुसुकावसं सूकरवसं गद्रभवस"न्ति (महाव० २६२) वुत्तत्ता इदं ओदिस्स अनुञ्ञातं नाम, तस्स पन "काले पटिग्गहित"न्ति (महाव० २६२) वुत्तत्ता पटिग्गहणं वट्टतीति आह **"अञ्ञत्र ओदिस्स अनुञ्ञाता"**ति।

अक्कमतीति निप्पीळेति। पुब्बभागे अक्कमतीति सम्बन्धो। **हदय**न्ति नाळिआदिमानभाजनानं अब्भन्तरं। तिलादीनं नाळिआदीहि मिननकाले उस्सापितसिखायेव **सिखा,** तस्सा **भेदो** हापनं। **केची**ति सारसमासाचरिया, उत्तरविहारवासिनो च।

वधोति मुट्ठिप्पहारकसाताळनादीहि हिंसनं, विहेठनन्ति अत्थो। विहेठनत्थोपि हि वधसद्दो दिस्सति "अत्तानं वधित्वा वधित्वा"तिआदीसु (पाचि० ८८०)। यथा हि अप्पटिग्गहभावसामञ्ञे सतिपि पब्बजितेहि अप्पटिग्गहितब्बवत्थुविसेसभावसन्दस्सनत्थं इत्थिकुमारिदासिदासादयो विभागेन वुत्ता, एवं परस्सहरणभावतो अदिन्नादानभावसामञ्ञे सतिपि तुलाकूटादयो अदिन्नादानविसेसभावदस्सनत्थं विभागेन वुत्ता, न एवं पाणातिपातपरियायस्स वधस्स पुनग्गहणे पयोजनं अत्थि। "तत्थ सयङ्कारो, इध परंकारो"ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च न सक्का वत्तुं "कायवचीपयोगसमुट्ठापिका चेतना छप्पयोगा"ति च वुत्तत्ता। तस्मा यथावुत्तोयेव अत्थो सुन्दरतरो। अट्ठकथायं पन "वधोति मारण"न्ति वुत्तं, तम्पि पोथनमेव सन्धायाति च सक्का विञ्ञातुं मारण-सद्दस्स विहिंसनेपि दिस्सनतो।

एत्तावतााति "पाणातिपातं पहाया"तिआदिना "छेदन...पे०... सहसाकारा पटिविरतो"ति एतपरिमाणेन पाठेन। अन्तराभेदं अग्गहेत्वा पाळियं आगतनयेन छब्बीसतिसिक्खापदसङ्गहं येभुय्येन सिक्खापदानं अविभत्तत्ता **चूळसीलं** नाम। देसनावसेन हि इध चूळमज्झिमादिभावो अधिप्पेतो, न धम्मवसेन। तथा हि इध सङ्खित्तेन उद्दिट्ठानं सिक्खापदानं अविभत्तानं विभजनवसेन मज्झिमसीलदेसना पवत्ता। तेनेवाह **"मज्झिमसीलं वित्थारेन्तो"**ति।

चूळसीलवण्णना निट्ठिता।

मज्झिमसीलवण्णना

११. तत्थ **यथाति** ओपम्मत्थे निपातो। **वाति** विकप्पनत्थे। **पनाति** वचनालङ्कारे। **एकेति** अञ्ञे। **भोन्तोति** साधूनं पियसमुदाहारो। साधवो हि परे "भोन्तो"ति वा, "देवानं पिया"ति वा "आयस्मन्तो"ति वा समालपन्ति। यं किञ्चि पब्बज्जं उपगता **समणा**। जातिमत्तेन **ब्राह्मणा**। इदं वुत्तं होति– उस्साहं कत्वा मम वण्णं वदमानोपि पुथुज्जनो "पाणातिपातं पहाय पाणातिपाता पटिविरतो"तिआदिना परानुद्देसिकनयेन वा यथा पनेके भोन्तो समणब्राह्मणभावं पटिजानमाना, परेहि च तथासम्भावियमाना तदनुरूपपटिपत्तिं अजाननतो, असमत्थतो च न अभिसम्भुणन्ति, न एवमयं, अयं पन समणो गोतमो सब्बथापि समणसारुप्पपटिपदं पूरेसियेवाति एवं अञ्ञुद्देसिकनयेन वा सब्बथापि आचारसीलमत्तमेव वदेय्युं, न तदुत्तरिन्ति।

बीजगामभूतगामसमारम्भपदे सद्दक्कमेन अप्पधानभूतोपि बीजगामभूतगामो निद्दिसितब्बताय पधानभावं पटिलभति। अञ्ञो हि सद्दक्कमो अञ्ञो अत्थक्कमोति आह **"कतमो सो बीजगामभूतगामो"**ति। तस्मिञ्हि विभत्ते तब्बिसयताय समारम्भोपि विभत्तोव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होतीति। तेनेवाह भगवा **"मूलबीज"**न्तिआदि। मूलमेव बीजं **मूलबीजं,** मूलं बीजं एतस्सातिपि **मूलबीजं।** सेसेसुपि एसेव नयो। **फळुबीज**न्ति पब्बबीजं। पच्चयन्तरसमवाये सदिसफलुप्पत्तिया विसेसकारणभावतो विरुहणसमत्थे सारफले निरुळ्हो **बीज-सद्दो** तदत्थसंसिद्धिया मूलादीसुपि केसुचि पवत्ततीति मूलादितो निवत्तनत्थं एकेन बीज-सद्देन विसेसेत्वा वुत्तं **"बीजबीज"**न्ति। "रूपरूपं, दुक्खदुक्ख"न्ति (सं० नि० २.४.३२७) च यथा। कस्मा पनेत्थ बीजगामभूतगामं पुच्छित्वा बीजगामो एव विभत्तोति? न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं। ननु अवोचुम्ह "मूलमेव बीजं मूलबीजं, मूलं बीजं एतस्सातिपि मूलबीजन्ति"। तत्थ पुरिमेन बीजगामो निद्दिट्ठो, दुतियेन भूतगामो, दुविधोपेस सामञ्ञनिद्देसेन, मूलबीजञ्च मूलबीजञ्च मूलबीजन्ति एकसेसनयेन वा पाळियं निद्दिट्ठोति वेदितब्बो। तेनेवाह **"सब्बञ्हेत"**न्तिआदि।

१२. **"सन्निधिकतस्सा"**ति एतेन "सन्निधिकारपरिभोग"न्ति एत्थ **कार-सद्दस्स** कम्मत्थतं दस्सेति। यथा वा "आचयंगमिनो"ति वत्तब्बे अनुनासिकलोपेन "आचयगामिनो"ति (ध० स० १०) निद्देसो कतो, एवं "सन्निधिकारं परिभोग"न्ति वत्तब्बे अनुनासिकलोपेन "सन्निधिकारपरिभोग"न्ति वुत्तं, सन्निधिं कत्वा परिभोगन्ति अत्थो।

सम्मा किलेसे लिखतीति **सल्लेखो,** सुत्तन्तनयेन पटिपत्ति। परियायति कप्पीयतीति **परियायो,** कप्पियवाचानुसारेन पटिपत्ति। किलेसेहि आमसितब्बतो **आमिसं,** यं किञ्चि उपभोगारहं वत्थु। तेनेवाह **"आमिसन्ति वुत्तावसेस"**न्ति। नयदस्सनञ्हेतं सन्निधिवत्थूनं। **उदककद्दमे**ति उदके च कद्दमे च। **अच्छथा**ति निसीदथ। **गीवायामक**न्ति गीवं आयमित्वा, यथा च भुत्ते अतिभुत्तताय गीवा आयमितब्बाव होति, एवन्ति अत्थो। **चतुभागमत्त**न्ति कुडुबमत्तं। **"कप्पियकुटिय"**न्तिआदि विनयवसेन वुत्तं।

१३. **एत्तकम्पी**ति विनिच्छयविचारणावत्थुकित्तनम्पि। **पयोजनमत्तमेवा**ति पदत्थयोजनमत्तमेव। यस्स पन पदस्स वित्थारकथं विना न सक्का अत्थो विञ्ञातुं, तत्थ वित्थारकथापि पदत्थसङ्गहमेव गच्छति। कुतूहलवसेन पेक्खितब्बतो **पेक्खा,** नटसत्थविधिना नटानञ्च पयोगो। नटसमूहेन पन जनसमूहे करणवसेन **"नटसमज्ज"**न्ति वुत्तं, सारसमासे "पेक्खा मह"न्ति वुत्तं। **घनताळं** नाम दण्डमयताळं, सिलासलाकताळं वा। **एके**ति सारसमासाचरिया, उत्तरविहारवासिनो च। यथा चेत्थ, एवं इतो परेसुपि "एके"ति आगतट्ठानेसु। **चतुरस्सअम्बणकताळं** नाम रुक्खसारदण्डादीसु येन केनचि चतुरस्सअम्बणकं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्वा चतूसु पस्सेसु चम्मेन ओनन्धित्वा कतवादितं। **अब्भोक्किरणं** रङ्गबलीकरणं, या "नन्दी"ति वुच्चति। **सोभनकरन्ति** सोभनकरणं, "सोभनघरक"न्ति सारसमासे वुत्तं। चण्डालानमिदन्ति **चण्डालं**। साणे उदकेन तेमेत्वा अञ्ञमञ्ञं आकोटनकीळा **साणधोवनं**। **इन्दजालेनाति** अट्ठिधोवनमन्तं परिजप्पित्वा यथा परे अट्ठीनियेव पस्सन्ति, एवं तचादीनं अन्तरधापनमायाय। **सकटब्यूहादीति** **आदि**-सद्देन चक्कपदुमकळीरब्यूहादिं सङ्गण्हाति।

१४. **पदानीति** सारीनं पतिट्ठानट्ठानानि। **दसपदं** नाम द्वीहि पन्तीहि वीसतिया पदेहि कीळनजूतं। **पासकं** वुच्चति छसु पस्सेसु एकेकं याव छक्कं दस्सेत्वा कतकीळनकं, तं वट्टेत्वा यथालद्धं एककादिवसेन सारियो अपनेन्ता उपनेन्ता च कीळन्ति। घटेन कीळा **घटिकाति** एके। बहूसु सलाकासु विसेसरहितं एकं सलाकं गहेत्वा तासु पक्खिपित्वा पुन तस्सेव उद्धरणं **सलाकहत्थन्ति** एके। पण्णेन वंसाकारेन कता **नाळिका**। तेनेवाह **"तं धमन्ता"**ति। "पुच्छन्तस्स मुखागतं अक्खरं गहेत्वा नट्ठमुत्ति लाभालाभादिजाननकीळा **अक्खरिका"**तिपि वदन्ति। "वादितानुरूपं नच्चनं गायनं वा **यथावज्जं"** तिपि वदन्ति। "एवं कते जयो भविस्सति, अञ्ञथा पराजयो"ति जयपराजये पुरक्खत्वा पयोगकरणवसेन परिहारपथादीनम्पि **जूतपमादट्ठानभावो** वेदितब्बो। पञ्चीरादीहिपि वंसादीहि कातब्बकिच्चसिद्धिअसिद्धिजयपराजयावहो पयोगो वुत्तोति दट्ठब्बं। **"यथावज्ज"**न्ति च काणादीहि सदिसताकारदस्सनेहि जयपराजयवसेन जूतकीळितभावेन वुत्तं।

१५. **वाळरूपानीति** आहरिमानि वाळरूपानि। "अकप्पियमञ्चोव **पल्लङ्को"**ति सारसमासे। **वानविचित्तन्ति** भित्तिच्छदादिवसेन वानेन विचित्रं। रुक्खतूललतातूलपोटकीतूलानं वसेन **तिण्णं तूलानं**। उद्दलोमियं **केचीति** सारसमासाचरिया, उत्तरविहारवासिनो च। तथा एकन्तलोमियं। **कोसेय्यकट्टिस्समयन्ति** कोसेय्यकस्सटमयं। **सुद्धकोसेय्यन्ति** रतनपरिसिब्बनरहितं। **"ठपेत्वा तूलिक"**न्ति एतेन रतनपरिसिब्बनरहितापि तूलिका न वट्टतीति दीपेति। **"रतनपरिसिब्बितानी"**ति इमिना यानि रतनपरिसिब्बितानि, तानि भूमत्थरणवसेन, यथानुरूपं मञ्चपीठादीसु च उपनेतुं वट्टतीति दीपितं होति। **अजिनचम्मेहीति** अजिनमिगचम्मेहि। तानि किर चम्मानि सुखुमानि, तस्मा दुपट्टतिपट्टानि कत्वा सिब्बन्ति। तेन वुत्तं **"अजिनप्पवेणी"**ति। **वुत्तनयेनाति** विनये वुत्तनयेन।

१६. **अलङ्कारञ्जनमेव** न भेसज्जं मण्डनानुयोगस्स अधिप्पेतत्ता। माला-सद्दो सासने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुद्धपुप्फेसुपि निरुळ्होति आह **"बद्धमाला वा"**ति। **मत्तिककक्क**न्ति ओसधेहि अभिसङ्खतं योगमत्तिककक्कं। **चलिते**ति कुपिते। **लोहिते सन्निसिन्ने**ति दुट्ठलोहिते खीणे।

१७. दुग्गतितो संसारतो च निय्याति एतेनाति निय्यानं, सग्गमग्गो मोक्खमग्गो च। तं निय्यानं अरहति, निय्याने वा नियुत्ता, निय्यानं वा फलभूतं एतिस्सा अत्थीति निय्यानिका, वचीदुच्चरितसंकिलेसतो निय्यातीति वा ई-कारस्स रस्सत्तं, य-कारस्स च क-कारं कत्वा निय्यानिका, चेतनाय सद्धिं सम्फप्पलापा वेरमणि। तप्पटिपक्खतो अनिय्यानिका, तस्सा भावो अनिय्यानिकत्तं, तस्मा **अनिय्यानिकत्ता। तिरच्छानभूता**ति तिरोकरणभूता। **कम्मट्ठानभावे**ति अनिच्चतापटिसंयुत्तचतुसच्चकम्मट्ठानभावे। सह अत्थेनाति **सात्थकं,** हितपटिसंयुत्तन्ति अत्थो। **विसिखा**ति घरसन्निवेसो, विसिखागहणेन च तन्निवासिनो गहिता "गामो आगतो"तिआदीसु विय। तेनेवाह "सूरा समत्था"ति, "सद्धा पसन्ना"ति च। कुम्भट्ठानापदेसेन कुम्भदासियो वुत्ताति आह **"कुम्भदासीकथा वा"**ति। उप्पत्तिठितिसम्भारादिवसेन लोकं अक्खायतीति **लोकक्खायिका।**

१८. सहितन्ति पुब्बापराविरुद्धं।

१९. दूतस्स कम्मं दूतेय्यं, तस्स कथा **दूतेय्यकथा।**

२०. तिविधेनाति सामन्तजप्पनइरियापथसन्निस्सितपच्चयपटिसेवनभेदतो तिप्पकारेन। **विम्हापयन्ती**ति "अहो अच्छरियपुरिसो"ति अत्तनि परेसं विम्हयं उप्पादेन्ति। **लपन्ती**ति अत्तानं, दायकं वा उक्खिपित्वा यथा सो किञ्चि ददाति, एवं उक्काचेत्वा कथेन्ति। निमित्तेन चरन्ति, निमित्तं वा करोन्तीति **नेमित्तिका** निमित्तन्ति च परेसं पच्चय दानसञ्ञुप्पादकं कायवचीकम्मं वुच्चति। निप्पिंसन्तीति निप्पेसा, निप्पेसायेव **निप्पेसिका,** निप्पेसोति च सठपुरिसो विय लाभसक्कारत्थं अक्कोसखुंसनुप्पण्डनपरपिट्ठिमंसिकतादि।

मज्झिमसीलवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महासीलवण्णना

२१. अङ्गानि आरब्भ पवत्तता अङ्गसहचरितं सत्थं **"अङ्ग"**न्ति वुत्तं। **निमित्त**न्ति एत्थापि एसेव नयो। केचि पन **"अङ्ग**न्ति अङ्गविकार"न्ति वदन्ति, परेसं अङ्गविकारदस्सनेनापि लाभालाभादिविज्जाति। **पण्डुराजा**ति दक्खिणामधुराधिपति। **"महन्तान"**न्ति एतेन अप्पकं निमित्तं, महन्तं निमित्तं उप्पातोति दस्सेति। **इदं नाम पस्सती**ति यो वसभं कुञ्जरं पासादं पब्बतं वा आरुळ्हं सुपिने अत्तानं पस्सति, तस्स इदं नाम फलं होतीति। **सुपिनक**न्ति सुपिनसत्थं। अङ्गसम्पत्तिविपत्तिदस्सनमत्तेन आदिसनं वुत्तं **"अङ्ग"**न्ति इमिना, **"लक्खण"**न्ति इमिना पन महानुभावतानिप्फादकअङ्गलक्खणविसेसदस्सनेनाति अयमेतेसं विसेसोति। **अहते**ति नवे। **इतो पट्ठाया**ति देवरक्खसमनुस्सादिभेदेन विविधवत्थभागे इतो वा एत्तो वा सञ्छिन्ने इदं नाम भोगादि होतीति। **दब्बिहोमदीनि** होमस्सुपकरणादिविसेसेहि फलविसेसदस्सनवसेन पवत्तानि। **अग्गिहोमं** वुत्तावसेससाधनवसेन पवत्तं होमं। **अङ्गलट्ठि**न्ति सरीरं। अब्भिनो सत्थं **अब्भेय्यं,** मासुरक्खेन कतो गन्थो **मासुरक्खो। भूरिविज्जा** सस्सबुद्धिकरणविज्जाति सारसमासे। **सपक्खक...पे०... चतुप्पदान**न्ति पिङ्गलमक्खिकादिसपक्खक घरगोलिकादि-अपक्खकदेवमनुस्सकोञ्चादिद्विपदककण्टकजम्बुकादिचतुप्पदानं।

२३. **"असुकदिवसे"**ति "पक्खस्स दुतिये ततिये"तिआदि तिथिवसेन वुत्तं। **असुकनक्खत्तेना**ति रोहिणीआदिनक्खत्तयोगवसेन।

२४. **उक्कानं पतन**न्ति उक्कोभासानं पतनं। वातसङ्घातेसु हि वेगेन अञ्ञमञ्ञं सङ्घट्टेन्तेसु दीपकोभासो विय ओभासो उप्पज्जित्वा आकासतो पतति, तत्थायं उक्कापातवोहारो। **अविसुद्धता** अब्भमहिकादीहि।

२५. **धारानुपवेच्छनं** वस्सनं। हत्थेन अधिप्पेतविञ्ञापनं **हत्थमुद्दा,** तं पन अङ्गुलिसङ्कोचनेन गणनायेव। पारसिक मिलक्खकादयो विय नवन्तवसेन गणना **अच्छिद्दकगणना। सदुप्पादनादी**ति **आदि**-सद्देन वोकलनभागहारादिके सङ्गण्हाति। **चिन्तावसेना**ति वत्थुं अनुसन्धिञ्च सयमेव चिरेन चिन्तेत्वा करणवसेन **चिन्ताकवि** वेदितब्बो, किञ्चि सुत्वा सुतेन अस्सुतं अनुसन्धेत्वा करणवसेन **सुतकवि,** कञ्चि अत्थं उपधारेत्वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स सङ्खिपनवित्थारणादिवसेन **अत्थकवि,** यं किञ्चि परेन कतं कब्बं नाटकं वा दिस्वा तं सदिसमेव अञ्ञं अत्तनो ठानुप्पत्तिकपटिभानेन करणवसेन **पटिभानकवि** वेदितब्बो।

२६. परिग्गहभावेन दारिकाय गण्हापनं **आवाहनं।** तथा दापनं **विवाहनं।** देसन्तरे दिगुणतिगुणादिगहणवसेन भण्डप्पयोजनं **पयोगो।** तत्थ वा अञ्ञत्थ वा यथाकालपरिच्छेदं वड्ढिगहणवसेन पयोजनं **उद्धारो।** "भण्डमूलरहितानं वाणिज्जं कत्वा एत्तकेनुदयेन सह मूलं देथाति धनदानं **पयोगो,** तावकालिकदानं **उद्धारो**"ति च वदन्ति। **तीहि कारणेही**ति एत्थ वातेन, पाणकेहि वा गब्भे विनस्सन्ते न पुरिमकम्मुना ओकासो कतो, तप्पच्चया कम्मं विपच्चति। सयमेव पन कम्मुना ओकासे कते न एकन्तेन वातो पाणका वा अपेक्खितब्बाति कम्मस्स विसुं कारणभावो वुत्तोति दट्ठब्बं। **निब्बापनीय**न्ति उपसमकरं। **पटिकम्म**न्ति यथा ते न खादन्ति, तथा पटिकरणं। **परिवत्तनत्थ**न्ति आवुधादिना सह उक्खित्तहत्थस्स उक्खिपनवसेन परिवत्तनत्थं। इच्छितत्थस्स देवताय कण्णे कथनवसेन जप्पनं **कण्णजप्पन**न्ति। **आदिच्चपारिचरिया**ति करवीरमालाहि पूजं कत्वा सकलदिवसं आदिच्चाभिमुखावट्ठानेन आदिच्चस्स परिचरणं। "सिरव्हायन"न्ति केचि पठन्ति, तस्सत्थोमन्तं परिजप्पित्वा सिरसा इच्छितस्स अत्थस्स अव्हायनन्ति।

२७. **समिद्धिकाले**ति आयाचितस्स अत्थस्स सिद्धिकाले। **सन्तिपटिस्सवकम्म**न्ति देवतायाचनाय या सन्ति पटिकत्तब्बा, तस्सा पटिञ्ञापटिस्सवकम्मकरणं, सन्तिया आयाचनप्पयोगोति अत्थो। **तस्मि**न्ति पटिस्सवफलभूते यथाभिपत्थितकम्मस्मिं, यं "सचे मे इदं नाम समिज्झिस्सती"ति वुत्तं। **तस्सा**ति सन्तिपटिस्सवस्स, यो "पणिधी"ति च वुत्तो। यथापटिस्सवञ्हि उपहारे कते पणिधि आयाचना कता निय्यातिता होतीति। **अच्छन्दिकभावमत्त**न्ति इत्थिया अकामकभावमत्तं। **लिङ्ग**न्ति पुरिसलिङ्गं। **बलिकम्मकरणं** उपद्दवपटिबाहनत्थञ्चेव वड्ढिआवहनत्थञ्च। **दोसान**न्ति पित्तादिदोसानं। एत्थ च **वमन**न्ति पच्छड्डनं अधिप्पेतं। **उद्धंविरेचन**न्ति वमनं "उद्धं दोसानं नीहरण"न्ति वुत्तत्ता। तथा **विरेचन**न्ति विरेचनमेव। **अधोविरेचन**न्ति पन सुद्धिवत्थिकसावत्थिआदि वत्थिकिरियापि अधिप्पेता "अधो दोसानं नीहरण"न्ति वुत्तत्ता। **सीसविरेचनं** सेम्हनीहरणादि। **पटलानी**ति अक्खिपटलानि। **सलाकवेज्जकम्म**न्ति अक्खिवेज्जकम्मं, इदं वुत्तावसेससालाकियसङ्गहणत्थं वुत्तन्ति दट्ठब्बन्ति। तप्पनादयोपि हि सालाकियानेवाति। मूलानि पधानानि रोगूपसमे समत्थानि भेसज्जानि **मूलभेसज्जानि,** मूलानं वा ब्याधीनं भेसज्जानि **मूलभेसज्जानि।** मूलानुबन्धवसेन हि दुविधो ब्याधि। मूलरोगे च तिकिच्छिते येभुय्येन इतरं वूपसमतीति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"कायतिकिच्छनं दस्सेती"ति इदं कोमारभच्चसल्लकत्तसालाकियादिकरणविसेसभूततन्तीनं तत्थ तत्थ वुत्तत्ता पारिसेसवसेन वुत्तं, तस्मा तदवसेसाय तन्तियापि इध सङ्गहो दट्ठब्बो। सब्बानि चेतानि आजीवहेतुकानियेव इधाधिप्पेतानि "मिच्छाजीवेन जीविकं कप्पेन्ती"ति वुत्तत्ता। यं पन तत्थ तत्थ पाळियं **"इति वा"**ति वुत्तं, तत्थ **इती**ति पकारत्थे निपातो, **वा**-इति विकप्पनत्थे। इदं वुत्तं होति इमिना पकारेन, इतो अञ्ञे न वाति। तेन यानि इतो बाहिरकपब्बजिता सिप्पायतनविज्जाट्ठानादीनि जीविकोपायभूतानि आजीवपकता उपजीवन्ति, तेसं परिग्गहो कतोति वेदितब्बो।

महासीलवण्णना निट्ठिता।

पुब्बन्तकप्पिकसस्सतवादवण्णना

२८. **भिक्खुसङ्घेन वुत्तवण्णो** नाम "यावञ्चिदं तेन भगवता"तिआदिना वुत्तवण्णो। एत्थायं सम्बन्धो – न भिक्खवे एत्तका एव बुद्धगुणा, ये तुम्हाकं पाकटा, अपाकटा पन "अत्थि भिक्खवे अञ्ञे धम्मा"ति वित्थारो। तत्थ "इमे दिट्ठिट्ठाना एवं गहिता"तिआदिना सस्सतादिदिट्ठिट्ठानानं यथागहिताकारसुञ्ञतभावप्पकासनतो, "तञ्च पजाननं न परामसती"ति सीलादीनञ्च अपरामासनिय्यानिकभावदीपनेन निच्चसारादिविरहप्पकासनतो, यासु वेदनासु अवीतरागताय बाहिरकानं एतानि दिट्ठिविप्फन्दितानि सम्भवन्ति, तेसं पच्चयभूतानञ्च सम्मोहादीनं वेदककारकसभावाभावदस्सनमुखेन सब्बधम्मानं अत्तत्तनियताविरहदीपनतो, अनुपादापरिनिब्बानदीपनतो च अयं देसना सुञ्ञताविभावनप्पधानाति आह **"सुञ्ञतापकासनं आरभी"**ति। **परियत्ती**ति विनयादिभेदभिन्ना तन्ति। **देसना**ति तस्सा तन्तिया मनसाववत्थापिताय विभावना, यथाधम्मं धम्माभिलापभूता वा पञ्ञापना, अनुलोमादिवसेन वा कथनन्ति परियत्तिदेसनानं विसेसो पुब्बेयेव ववत्थापितोति आह **"देसनायं परियत्तिय"**न्ति। **एवं आदीसू**ति एत्थ **आदि**-सद्देन सच्चसभावसमाधिपञ्ञापकतिपुञ्ञआपत्तिञेय्यादयो सङ्गय्हन्ति। तथा हि अयं धम्म-सद्दो "चतुन्नं भिक्खवे धम्मानं अननुबोधा"तिआदीसु (दी० नि० २.१८६; अ० नि० १.४.१) सच्चे वत्तति, "कुसला धम्मा अकुसला धम्मा"तिआदीसु (ध० स० १) सभावे, "एवंधम्मा ते भगवन्तो अहेसु"न्तिआदीसु (सं० नि० ३.५.३७८) समाधिम्हि, "सच्चं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मो धिति चागो, स वे पेच्च न सोचती''तिआदीसु (सु० नि० १९०) पञ्ञाय, ''जातिधम्मानं भिक्खवे सत्तानं एवं इच्छा उप्पज्जती''तिआदीसु (म० नि० ३.३७३; पटि० म० १.३३) पकतियं, ''धम्मो सुचिण्णो सुखमावहाती''तिआदीसु (सु० नि० १८४; थेरगा० ३०३; जा० १.१०.१०२) पुञ्ञे, ''चत्तारो पाराजिका धम्मा''तिआदीसु (पारा० २३३) आपत्तियं, ''सब्बे धम्मा सब्बाकारेन बुद्धस्स भगवतो ञाणमुखे आपाथं आगच्छन्ती''तिआदीसु (महानि० १५६; चूळनि० ८५; पटि० म० ३.६) ञेय्ये वत्तति (म० नि० अट्ठ० १.सुत्तनिक्खेपवण्णना; अभि० अट्ठ० १.तिकमातिकापदवण्णना; बु० वं० अट्ठ० रतनचङ्कमनकण्डवण्णना)। **धम्मा होन्तीति** सुञ्ञा धम्ममत्ता होन्तीति अत्थो।

''**दुद्दसा**''ति एतेनेव तेसं धम्मानं दुक्खोगाहता पकासिता होति। सचे पन कोचि अत्तनो पमाणं अजानन्तो ञाणेन ते धम्मे ओगाहितुं उस्साहं करेय्य, तस्स तं ञाणं अप्पतिट्ठमेव मकसतुण्डसूचि विय महासमुद्देति आह ''**अलब्भनेय्यपतिट्ठा**''ति। अलब्भनेय्या पतिट्ठा एत्थाति अलब्भनेय्यपतिट्ठाति पदविग्गहो वेदितब्बो। अलब्भनेय्यपतिट्ठानं ओगाहितुं असक्कुणेय्यताय ''एत्तका एते ईदिसा चा''ति पस्सितुं न सक्काति वुत्तं ''**गम्भीरत्ता एव दुद्दसा**''ति। ये पन दट्ठुमेव न सक्का, तेसं ओगाहित्वा अनुबुज्झने कथा एव नत्थीति आह ''**दुद्दसत्ता एव दुरनुबोधा**''ति। सब्बपरिळाहपटिप्पस्सद्धिमत्थके समुप्पन्नत्ता, निब्बुतसब्बपरिळाहसमापत्तिसमोकिण्णत्ता च **निब्बुतसब्बपरिळाहा। सन्तारम्मणानि** मग्गफलनिब्बानानि अनुपसन्तसभावानं किलेसानं सङ्खारानञ्च अभावतो। अथ वा समूहतविक्खेपताय निच्चसमाहितस्स मनसिकारस्स वसेन तदारम्मणधम्मानं सन्तभावो वेदितब्बो कसिणुग्घाटिमाकासतब्बिसयविञ्ञाणानं अनन्तभावो विय। अविरज्झित्वा निमित्तपटिवेधो विय इस्सासानं अविरज्झित्वा धम्मानं यथाभूतसभावबोधो सादुरसो महारसो च होतीति आह **अतित्तिकरणट्ठेना**ति। पटिवेधप्पत्तानं, तेसु च बुद्धानंयेव सब्बाकारेन विसयभावूपगमनतो न तक्कबुद्धिया गोचराति आह ''**उत्तमञाणविसयत्ता**''तिआदि। ''**निपुणा**''ति ञेय्येसु तिक्खविसदवुत्तिया छेका। यस्मा पन सो छेकभावो आरम्मणे अप्पटिहतवुत्तिताय सुखुमञेय्यगहणसमत्थताय सुपाकटो होति, तेन वुत्तं ''**सण्हसुखुमसभावत्ता**''ति।

अपरो नयो– विनयपण्णत्तिआदिगम्भीरनेय्यविभावनतो **गम्भीरा।** कदाचि असङ्ख्येय्यमहाकप्पे अतिक्कमित्वापि दुल्लभदस्सनताय **दुद्दसा।** दस्सनञ्चेत्थ पञ्ञाचक्खुवसेनेव वेदितब्बं। धम्मन्वयसङ्खातस्स अनुबोधस्स कस्सचिदेव सम्भवतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरनुबोधा। सन्तसभावतो, वेनेय्यानञ्च गुणसम्पदानं परियोसानत्ता **सन्ता**। अत्तनो च पच्चयेहि पधानभावं नीतताय **पणीता**। समधिगतसच्चलक्खणताय अतक्केहि, अतक्केन वा ञाणेन अवचरितब्बताय **अतक्कावचरा**। निपुणं, निपुणे वा अत्थे सच्चप्पच्चयाकारादिवसेन विभावनतो **निपुणा**। लोके अग्गपण्डितेन सम्मासम्बुद्धेन वेदीयन्ति पकासीयन्तीति **पण्डितवेदनीया**। अनावरणञाणपटिलाभतो हि भगवा "सब्बविदू हं अस्मि, (ध० प० ३५३; महाव० ११; कथाव० ४०५) दसबलसमन्नागतो भिक्खवे तथागतो"तिआदिना (सं० नि० १.२.२१) अत्तनो सब्बञ्ञुतादिगुणे पकासेति। तेनेवाह **"सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदेती"**ति।

तत्थ किञ्चापि सब्बञ्ञुतञ्ञाणं फलनिब्बानानि विय सच्छिकातब्बसभावं न होति, आसवक्खयञाणे पन अधिगते अधिगतमेव होतीति तस्स पच्चक्खकरणं सच्छिकिरियाति आह **"अभिविसिट्ठेन ञाणेन पच्चक्खं कत्वा"**ति। **अभिविसिट्ठेन ञाणेना**ति च हेतुअत्थे करणवचनं, अभिविसिट्ठञाणाधिगमहेतूति अत्थो। **अभिविसिट्ठञाणन्**ति वा पच्चवेक्खणञाणे अधिप्पेते करणवचनम्पि युज्जतियेव। पवेदनञ्चेत्थ अञ्ञाविसयानं सच्चादीनं देसनाकिच्चसाधनतो, "एकोम्हि सम्मासम्बुद्धो"तिआदिना (महाव० ११; कथाव० ४०५) पटिजाननतो च वेदितब्बं। **वदमाना**ति एत्थ सत्तिअत्थो **मान**-सद्दो, वत्तुं उस्साहं करोन्तोति अत्थो। एवंभूता च वत्तुकामा नाम होन्तीति आह **"वण्णं वत्तुकामा"**ति। सावसेसं वदन्तोपि विपरीतं वदन्तो विय "सम्मा वदती"ति न वत्तब्बोति आह **"अहापेत्वा"**ति, तेन अनवसेसत्थो इध **सम्मा**-सद्दोति दस्सेति। **"वत्तुं सक्कुणेय्यु"**न्ति इमिना "वदेय्यु"न्ति सकत्थदीपनभावमाह। एत्थ च किञ्चापि भगवतो दसबलादिञाणानिपि अनञ्ञसाधारणानि, सप्पदेसविसयत्ता पन तेसं ञाणानं न तेहि बुद्धगुणा अहापेत्वा गहिता नाम होन्ति, निप्पदेसविसयत्ता पन सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स तस्मिं गहिते सब्बेपि बुद्धगुणा गहिता एव नाम होन्तीति इममत्थं दस्सेति **"येहि...पे०... वदेय्यु"**न्ति। पुथूनि आरम्मणानि एतस्साति **पुथुआरम्मणं,** सब्बारम्मणत्ताति अधिप्पायो। अथ वा पुथुआरम्मणारम्मणतोति एतस्मिं अत्थे "पुथुआरम्मणतो"ति वुत्तं, एकस्स आरम्मण-सद्दस्स लोपं कत्वा "ओट्ठमुखो **कामावचर**"न्ति आदीसु विय, तेनस्स पुथुञाणकिच्चसाधकतं दस्सेति। तथा हेतं तीसु **कालेसु** अप्पटिहतञाणं, चतुयोनिपरिच्छेदकञाणं, पञ्चगतिपरिच्छेदकञाणं, छसु असाधारणञाणेसु सेसासाधारणञाणानि, सत्तअरियपुग्गलविभावकञाणं, अट्ठसुपि परिसासु अकम्पनञाणं, नवसत्तावासपरिजाननञाणं, दसबलञाणन्ति एवमादीनं अनेकसतसहस्सभेदानं ञाणानं यथासम्भवं किच्चं साधेतीति। **"पुनप्पुनं उप्पत्तिवसेना"**ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स कमवुत्तितं दस्सेति। कमेनापि हि तं विसयेसु पवत्तति, न सकिंयेव यथा बाहिरका वदन्ति "सकिंयेव सब्बञ्ञू सब्बं जानाति, न कमेना"ति।

यदि एवं अचिन्तेय्यापरिमेय्यभेदस्स ञेय्यस्स परिच्छेदवता एकेन ञाणेन निरवसेसतो कथं पटिवेधोति, को वा एवमाह "परिच्छेदवन्तं बुद्धञाण"न्ति। अनन्तञ्हि तं ञाणं ञेय्यं विय। वुत्तञ्हेतं "यावतकं ञेय्यं तावतकं ञाणं। यावतकं ञाणं, तावतकं ञेय्य"न्ति (महानि० १५६; चूळनि० ८५; पटि० म० ३.५)। एवम्पि जातिभूमिसभावादिवसेन दिसादेसकालादिवसेन च अनेकभेदभिन्ने ञेय्ये कमेन गय्हमाने अनवसेसपटिवेधो न सम्भवति येवाति, नयिदमेवं। कस्मा ? यं किञ्चि भगवता ञातुं इच्छितं सकलं एकदेसो वा। तत्थ अप्पटिहतचारताय पच्चक्खतो ञाणं पवत्तति, विक्खेपाभावतो च भगवा सब्बकालं समाहितोव ञातुं, इच्छितस्स पच्चक्खभावो न सक्का निवारेतुं "आकङ्खापटिबद्धं बुद्धस्स भगवतो ञाण"न्तिआदि (महानि० १५६; चूळनि० ८५; पटि० म० ३.५) वचनतो, न चेत्थ दूरतो चित्तपटं पस्सन्तानं विय, "सब्बे धम्मा अनत्ता"ति विपस्सन्तानं विय च अनेकधम्मावबोधकाले अनिरूपितरूपेन भगवतो ञाणं पवत्ततीति गहेतब्बं अचिन्तेय्यानुभावताय बुद्धञाणस्स। तेनेवाह "बुद्धविसयो अचिन्तेय्यो"ति (अ० नि० १.४.७७)। इदं पनेत्थ सन्निट्ठानंसब्बाकारेन सब्बधम्मावबोधनसमत्थस्स आकङ्खापटिबद्धवुत्तिनो अनावरणञाणस्स पटिलाभेन भगवा सन्तानेन सब्बधम्मपटिवेधसमत्थो अहोसि सब्बनेय्यावरणस्स पहानतो, तस्मा सब्बञ्ञू, न सकिंयेव सब्बधम्मावबोधतो, यथा सन्तानेन सब्बइन्धनस्स दहनसमत्थताय पावको "सब्बभू"ति वुच्चतीति।

ववत्थापनवचनन्ति सन्निट्ठापनवचनं, अवधारणवचनन्ति अत्थो। **अञ्ञे वा**ति एत्थ अवधारणेन निवत्तितं दस्सेति **"न पाणातिपाता वेरमणिआदयो"**ति, अयञ्च **एव**-सद्दो अनियतदेसताय च-सद्दो विय यत्थ वुत्तो, ततो अञ्ञत्थापि वचनिच्छावसेन उपतिट्ठतीति आह **"गम्भीरा वा"**तिआदि। **सब्बपदेही**ति याव "पण्डितवेदनीया"ति इदं पदं, ताव सब्बपदेहि। **सावकपारमिञाण**न्ति सावकानं दानादिपारिपूरिया निप्फन्नं विज्जत्तयछळभिञ्ञाचतुप्पटिसम्भिदादिभेदं ञाणं। **ततो**ति सावकपारमिञाणतो। **तत्था**ति सावकपारमिञाणे। **ततोपी**ति अनन्तरनिद्दिट्ठतो पच्चेकबुद्धञाणतोपि, को पन वादो सावकपारमिञाणतोति अधिप्पायो। एत्थायं अत्थयोजना– किञ्चापि सावकपारमिञाणं हेट्ठिमसेक्खञाणं पुथुज्जनञाणञ्च उपादाय गम्भीरं, पच्चेकबुद्धञाणं उपादाय न तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गम्भीरन्ति "गम्भीरमेवा"ति न सक्का वत्तुं। तथा पच्चेकबुद्धञाणम्पि सब्बञ्ञुतञ्ञाणं उपादायाति तत्थ ववत्थानं न लब्भति, सब्बञ्ञुतञ्ञाणधम्मा पन सावकपारमिञाणादीनं विय किञ्चि उपादाय अगम्भीरभावाभावतो गम्भीरा वाति। यथा चेत्थ ववत्थानं दस्सितं, एवं सावकपारमिञाणं दुद्दसं, पच्चेकबुद्धञाणं पन ततो दुद्दसतरन्ति तत्थ ववत्थानं नत्थीतिआदिना ववत्थानसब्भावो नेतब्बो। तेनेवाह **"तथा दुद्दसाव...पे०... वेदितब्ब"**न्ति।

कस्मा पनेतं एवं आरद्धं ति एत्थायं अधिप्पायो– भवतु ताव निरवसेसबुद्धगुणविभावनूपायभावतो सब्बञ्ञुतञ्ञाणं एकम्पि पुथुनिस्सयारम्मणञाण-किच्चसिद्धिया "अत्थि भिक्खवे अञ्ञेव धम्मा"तिआदिना बहुवचनेन उद्दिट्ठं, तस्स पन विस्सज्जनं सच्चपच्चयाकारादिविसेसवसेन अनञ्ञसाधारणेन विभजननयेन अनारभित्वा सनिस्सयानं दिट्ठीनं विभजनवसेन कस्मा आरद्धन्ति। तत्थ यथा सच्चपच्चयाकारादीनं विभजनं अनञ्ञसाधारणं, सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्सेव विसयो, एवं निरवसेसेन दिट्ठिगतविभजनम्पीति दस्सेतुं **"बुद्धानञ्ही"**तिआदि आरद्धं। तत्थ **ठानानी**ति कारणानि। **गज्जितं महन्तं होती**ति देसेतब्बस्स अत्थस्स अनेकविधताय, दुविञ्ञेय्यताय च नानानयेहि पवत्तमानं देसनागज्जितं महन्तं विपुलं, बहुभेदञ्च होति। **ञाणं अनुपविसती**ति ततो एव च देसनाञाणं देसेतब्बधम्मे विभागसो कुरुमानं अनुपविसति, ते अनुपविस्स ठितं विय होतीति अत्थो।

बुद्धञाणस्स महन्तभावो पञ्ञायतीति एवंविधस्स नाम धम्मस्स देसकं पटिवेधकञ्चाति बुद्धानं देसनाञाणस्स पटिवेधञाणस्स च उळारभावो पाकटो होति। एत्थ च किञ्चापि "सब्बं वचीकम्मं बुद्धस्स भगवतो ञाणपुब्बङ्गमं ञाणानुपरिवत्ती"ति (महानि० ६९; चूळनि० ८५; पटि० म० ३.५; नेत्ति० १४) वचनतो सब्बापि भगवतो देसना ञाणरहिता नत्थि, सीहसमानवुत्तिताय च सब्बत्थ समानुस्साहप्पवत्ति देसेतब्बधम्मवसेन पन देसना विसेसतो ञाणेन अनुपविट्ठा गम्भीरतरा च होतीति दट्ठब्बं। कथं पन विनयपण्णत्तिं पत्वा देसना तिलक्खणाहता सुञ्ञतापटिसंयुत्ता होतीति? तत्थापि च सन्निसिन्नपरिसाय अज्झासयानुरूपं पवत्तमाना देसना सङ्खारानं अनिच्चतादिविभावनी, सब्बधम्मानं अत्तत्तनियताभावप्पकासनी च होति। तेनेवाह **"अनेकपरियायेन धम्मिं कथं कत्वा"**तिआदि।

भूमन्तरन्ति धम्मानं अवत्थाविसेसञ्च ठानविसेसञ्च। तत्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवत्थाविसेसोसतिआदिधम्मानं सतिपट्ठानिन्द्रियबलबोज्झङ्गमग्गङ्गादिभेदो। **ठानविसेसो** कामावचरादिभेदो। **पच्चयाकार**पदस्स अत्थो हेट्ठा वुत्तोयेव। **समयन्तर**न्ति दिट्ठिविसेसा, नानाविहिता दिट्ठियोति अत्थो, अञ्ञसमयं वा। **एवं ओतिण्णे वत्थुस्मि**न्ति एवं लहुकगरुकादिवसेन तदनुरूपे ओतिण्णे वत्थुस्मिं **सिक्खापदपञ्ञापनं।**

यदिपि कायानुपस्सनादिवसेन सतिपट्ठानादयो सुत्तन्तपिटकेपि (दी० नि० २.३७४; म० नि० १.१०७) विभत्ता, सुत्तन्तभाजनीयादिवसेन पन अभिधम्मेयेव ते सविसेसं विभत्ताति आह **"इमे चत्तारो सतिपट्ठाना...पे०... अभिधम्मपिटकं विभजित्वा"**ति। तत्थ **"सत्त फस्सा"**ति सत्तविञ्ञाणधातुसम्पयोगवसेन वुत्तं। तथा **"सत्त वेदना"**तिआदीसुपि। **लोकुत्तरा धम्मा नामा**ति एत्थ **इति-**सद्दो आदिअत्थो, पकारत्थो वा, तेन वुत्तावसेसं अभिधम्मे आगतं धम्मानं विभजितब्बाकारं सङ्गण्हाति। चतुवीसति समन्तपट्ठानानि एत्थाति **चतुवीसतिसमन्तपट्ठानं,** अभिधम्मपिटकं। एत्थ पच्चयनयं अग्गहेत्वा धम्मवसेनेव समन्तपट्ठानस्स चतुवीसतिविधता वुत्ता। यथाह –

"तिकञ्च पट्ठानवरं दुकुत्तमं,
दुकतिकञ्चेव तिकदुकञ्च।
तिकतिकञ्चेव दुकदुकञ्च,
छ अनुलोमम्हि नया सुगम्भीरा।। (पट्ठा० १.पच्चयनिद्देस ४१, ४४, ४८, ५२)

तथा –

तिकञ्च...पे०... छ पच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा।
तिकञ्च...पे०... छ अनुलोमपच्चनीयम्हि नया सुगम्भीरा।
तिकञ्च...पे०... पच्चनीयानुलोमम्हि नया सुगम्भीरा"ति।। (पट्ठा० १.पच्चयनिद्देस ४४, ५२)

एवं धम्मवसेन चतुवीसतिभेदेसु तिकपट्ठानादीसु एकेकं पच्चयनयेन अनुलोमादिवसेन चतुब्बिधं होतीति छन्नवुति समन्तपट्ठानानि। तत्थ पन धम्मानुलोमे तिकपट्ठाने कुसलत्तिके पटिच्चवारे पच्चयानुलोमे हेतुमूलके हेतुपच्चयवसेन एकूनपञ्ञास पुच्छानया सत्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विस्सज्जननयाति आदिना दस्सियमाना अनन्तभेदा नयाति आह **"अनन्तनय"**न्ति। होति चेत्थ –

"पट्ठानं नाम पच्चेकं धम्मानं अनुलोमादिम्हि तिकदुकादीसु या पच्चयमूलविसिट्ठा चतुनयतो सत्तधा गती"ति।

नवहाकारेहीति उप्पादादीहि नवहि पच्चयाकारेहि। तत्थ उप्पज्जति एतस्मा फलन्ति **उप्पादो,** उप्पत्तिया कारणभावो। सति च अविज्जाय सङ्खारा उप्पज्जन्ति, न असति, तस्मा **अविज्जा सङ्खारानं उप्पादो हुत्वा पच्चयो होति।** तथा अविज्जाय सति सङ्खारा पवत्तन्ति धरन्ति, निविसन्ति च, ते अविज्जाय सति फलं भवादीसु खिपन्ति, आयूहन्ति फलुप्पत्तिया घटन्ति, संयुज्जन्ति अत्तनो फलेन, यस्मिं सन्ताने सयञ्च उप्पन्ना, तं पलिबुन्धन्ति, पच्चयन्तरसमवाये उदयन्ति उप्पज्जन्ति, हिनोति च सङ्खारानं कारणभावं गच्छति, पटिच्च अविज्जं सङ्खारा अयन्ति पवत्तन्तीति एवं अविज्जाय सङ्खारानं कारणभावूपगमनविसेसा उप्पादादयो वेदितब्बा। तथा सङ्खारादीनं विञ्ञाणादीसु।

उप्पादट्ठितीतिआदीसु च तिट्ठति एतेनाति ठिति, कारणं। उप्पादो एव ठिति **उप्पादट्ठिति।** एस नयो सेसेसुपि। यस्मा अयोनिसोमनसिकारो, "आसवसमुदया अविज्जासमुदयो"ति (म० नि० १.१०३) वचनतो आसवा च अविज्जाय पच्चयो, तस्मा वुत्तं **"उभोपेते धम्मा पच्चयसमुप्पन्ना"**ति। **पच्चयपरिग्गहे पञ्ञा**ति सङ्खारानं अविज्जाय च उप्पादादिके पच्चयाकारे परिच्छिन्दित्वा गहणवसेन पवत्ता पञ्ञा। **धम्मट्ठितिञाण**न्ति धम्मानं पच्चयुप्पन्नानं पच्चयभावतो धम्मट्ठितिसङ्खाते पटिच्चसमुप्पादे ञाणं। पच्चयधम्मा हि पटिच्चसमुप्पादे "द्वादस पटिच्चसमुप्पादा"ति वचनतो द्वादस पच्चया। अयञ्च नयो न पच्चुप्पन्ने एव, अथ खो अतीतानागतकालेपि, न च अविज्जाय एव सङ्खारेसु, अथ खो सङ्खारादीनम्पि विञ्ञाणादीसु लब्भतीति परिपुण्णं कत्वा पच्चयाकारस्स विभत्तभावं दस्सेतुं **"अतीतम्पि अद्धान"**न्तिआदि पाळिं आरभि। पट्ठाने (पट्ठा० १.पच्चयनिद्देस १) दस्सिता हेतादिपच्चया एवेत्थ उप्पादादिपच्चयाकारेहि गहिताति ते यथासम्भवं नीहरित्वा योजेतब्बा, अतिवित्थारभयेन पन न योजयिम्ह।

तस्स तस्स धम्मस्साति तस्स तस्स सङ्खारादिपच्चयुप्पन्नधम्मस्स। **तथा तथा पच्चयभावेनाति** उप्पादादिहेतादिपच्चयभावेन। अतीतपच्चुप्पन्नानागतवसेन तयो अद्धा काला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतस्साति **तियद्धं।** हेतुफलफलहेतुहेतुफलवसेन तयो सन्धी एतस्साति **तिसन्धिं।** सङ्खिप्पन्ति एत्थ अविज्जादयो विञ्ञाणादयो चाति सङ्खेपो, कम्मं विपाको च। सङ्खिप्पन्ति एत्थाति वा सङ्खेपो, अविज्जादयो विञ्ञाणादयो च। कोट्ठासपरियायो वा **सङ्खेप-**सद्दो। अतीते कम्मसङ्खेपादिवसेन चत्तारो सङ्खेपा एतस्साति **चतुसङ्खेपं।** सरूपतो अवुत्तापि तस्मिं तस्मिं सङ्खेपे आकिरीयन्ति अविज्जासङ्खारादिग्गहणेहि पकासीयन्तीति आकारा, अतीते हेतुआदीनं वा पकारा आकारा, ते सङ्खेपे पञ्च पञ्च कत्वा वीसतिआकारा एतस्साति **वीसताकारं।**

खत्तियादिभेदेन अनेकभेदभिन्नापि सस्सतवादिनो जातिसतसहस्सानुस्सरणादिनो अभिनिवेसहेतुनो वसेन चत्तारोव होन्ति, न ततो उद्धं अधोति सस्सतवादादीनं परिमाणपरिच्छेदस्स अनञ्ञविसयतं दस्सेतुं **"चत्तारो जना"**तिआदिमाह। तत्थ **चत्तारो जना**ति चत्तारो जनसमूहा। **इदं निस्साया**ति इदं इदप्पच्चयताय सम्मा अग्गहणं, तत्थापि च हेतुफलभावेन सम्बन्धानं सन्ततिघनस्स अभेदितत्ता परमत्थतो विज्जमानम्पि भेदनिबन्धनं नानत्तनयं अनुपधारेत्वा गहितं एकत्तग्गहणं निस्साय। **इदं गण्हन्ती**ति इदं सस्सतग्गहणं अभिनिविस्स वोहरन्ति, इमिना नयेन एकच्चसस्सतवादादयोपेत्थ यथासम्भवं योजेत्वा वत्तब्बा। **भिन्दित्वा**ति "आतप्पमन्वाया"तिआदिना विभजित्वा "तयिदं भिक्खवे तथागतो पजानाती"तिआदिना विमद्दित्वा **निज्जटं निगुम्बं कत्वा** दिट्ठिजटाविजटनेन दिट्ठिगुम्बविवरणेन च।

"तस्मा"तिआदिना बुद्धगुणे आरब्भ देसनाय समुट्ठितत्ता सब्बञ्ञुतञ्ञाणं उद्दिसित्वा देसनाकुसलो भगवा समयन्तरविग्गाहणवसेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणमेव विस्सज्जेतीति दस्सेति। **"सन्ती"**ति इमिना तेसं दिट्ठिगतिकानं विज्जमानताय अविच्छिन्नतं, ततो च नेसं मिच्छागाहतो सिथिलकरणविवेचनेहि अत्तनो देसनाय किच्चकारितं, अवितथतञ्च दीपेति धम्मराजा।

२९. अत्थीति "संविज्जन्ती"ति इमिना समानत्थो पुथुवचनविसयो एको निपातो "अत्थि इमस्मिं काये केसा"तिआदीसु (दी० नि० २.३७७; म० नि० १.११०; म० नि० ३.१५४; सं० नि० २.४.१२७; खु० पा० ३.१) विय। सस्सतादिवसेन पुब्बन्तं कप्पेन्तीति **पुब्बन्तकप्पिका।** यस्मा पन ते तं पुब्बन्तं पुरिमसिद्धेहि तण्हादिट्ठिकप्पेहि कप्पेत्वा, आसेवनबलवताय विचित्तवुत्तिताय च विकप्पेत्वा अपरभागसिद्धेहि अभिनिवेसभूतेहि तण्हादिट्ठिग्गाहेहि गण्हन्ति अभिनिविसन्ति परामसन्ति, तस्मा वुत्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"पुब्बन्तं कप्पेत्वा विकप्पेत्वा गण्हन्ती"ति। तण्हुपादानवसेन वा कप्पनग्गहणानि वेदितब्बानि। तण्हापच्चया हि उपादानं। **कोट्ठासेसू**ति एत्थ कोट्ठासादीसूति अत्थो वेदितब्बो। पदपूरणसमीपउम्मग्गादीसुपि हि **अन्त**-सद्दो दिस्सति। तथा हि "इङ्घ त्वं सुत्तन्ते वा गाथायो वा अभिधम्मं वा परियापुणस्सु (पाचि० ४४२), सुत्तन्ते ओकासं कारापेत्वा"ति (पाचि० १२२१) च आदीसु पदपूरणे अन्त-सद्दो वत्तति, गामन्तं ओसरेय्य, (पारा० ४०९; चूळव० ३४३) गामन्तसेनासन"न्तिआदीसु समीपे, "कामसुखल्लिकानुयोगो एको अन्तो, अत्थीति खो कच्चान अयमेको अन्तो"तिआदीसु (सं० नि० १.२.१५; २.३.९०) उम्मग्गेति।

कप्प-सद्दो महाकप्पसमन्तभावकिलेसकामवितक्ककालपञ्ञत्तिसदिसभावादीसु वत्ततीति आह **"सम्बहुलेसु अत्थेसु वत्तती"**ति। तथा हेस "चत्तारिमानि भिक्खवे कप्पस्स असङ्ख्येय्यानी"तिआदीसु (अ० नि० १.४.१५६) महाकप्पे वत्तति, "केवलकप्पं वेळुवनं ओभासेत्वा"तिआदीसु (सं० नि० १.९४) समन्तभावे, "सङ्कप्पो कामो, रागो कामो, सङ्कप्परागो कामो"तिआदीसु (महानि० १; चूळनि० ८) किलेसकामे, "तक्को वितक्को सङ्कप्पो"तिआदीसु (ध० स० ७) वितक्के, "येन सुदं निच्चकप्पं विहरामी"तिआदीसु (म० नि० १.३८७) काले, "इच्चायस्मा कप्पो"तिआदीसु (सु० नि० १०९०; चूळनि० ११३) पञ्ञत्तियं, "सत्थुकप्पेन वत किर भो सावकेन सद्धिं मन्तयमाना न जानिम्हा"तिआदीसु (म० नि० १.२६०) सदिसभावे वत्ततीति। **वुत्तम्पि चेत**न्ति महानिद्देसं (महानि० २८) सन्धायाह। **तण्हादिट्ठिवसेना**ति दिट्ठिया उपनिस्सयभूताय सहजाताय अभिनन्दनभूताय च तण्हाय, सस्सतादिआकारेन अभिनिविसन्तस्स मिच्छागाहस्स च वसेन। पुब्बेनिवुत्थधम्मविसयाय कप्पनाय अधिप्पेतत्ता अतीतकालवाचको इध पुब्ब-सद्दो, रूपादिखन्धविनिमुत्तस्स कप्पनावत्थुनो अभावा अन्त-सद्दो च भागवाचकोति आह **"अतीतं खन्धकोट्ठास"**न्ति। **"कप्पेत्वा"**ति च तस्मिं पुब्बन्ते तण्हायनाभिनिवेसानं समत्थनं परिनिट्ठापनमाह। **ठिता**ति तस्सा लद्धिया अविजहनं। **आरब्भा**ति आलम्बित्वा। विसयो हि तस्सा दिट्ठिया पुब्बन्तो। विसयभावतो एव हि सो तस्सा आगमनट्ठानं, आरम्मणपच्चयो चाति वुत्तं **"आगम्म पटिच्चा"**ति।

अधिवचनपदानीति पञ्ञत्तिपदानि। दासादीसु सिरिवड्ढकादि-सद्दा विय वचनमत्तमेव अधिकारं कत्वा पवत्तिया अधिवचनं पञ्ञत्ति। अथ वा अधि-सद्दो उपरिभावे, वुच्चतीति वचनं, उपरि वचनं अधिवचनं, उपादाभूतरूपादीनं उपरि पञ्ञापियमाना उपादापञ्ञत्तीति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थो, तस्मा पञ्ञत्तिदीपकपदानीति अत्थो दट्ठब्बो। पञ्ञत्तिमत्तञ्हेतं वुच्चति, यदिदं "अत्ता, लोको"ति च, न रूपवेदनादयो विय परमत्थो। अधिकवुत्तिताय वा अधिवुत्तियोति दिट्ठियो वुच्चन्ति। अधिकञ्हि सभावधम्मेसु सस्सतादिं पकतिआदिदब्बादिं जीवादिं कायादिञ्च अभूतमत्थं अज्झारोपेत्वा दिट्ठियो पवत्तन्तीति।

३०. **अभिवदन्ती**ति "इदमेव सच्चं, मोघमञ्ञ"न्ति (म० नि० २.१८७, २०३, ४२७; म० नि० ३.२७, २९) अभिनिविसित्वा वदन्ति "अयं धम्मो, नायं धम्मो"तिआदिना विवदन्ति। अभिवदनकिरियाय अज्जापि अविच्छेदभावदस्सनत्थं वत्तमानकालवचनं। दिट्ठि एव **दिट्ठिगतं** "मुत्तगतं, म० नि० २.११९; अ० नि० ३.९.११) सङ्खारगत"न्तिआदीसु (महानि० ४१) विय। गन्तब्बाभावतो वा दिट्ठिया गतमत्तं, दिट्ठिया गहणमत्तन्ति अत्थो। दिट्ठिप्पकारो वा **दिट्ठिगतं।** लोकिया हि विधयुत्तगतपकार-सद्दे समानत्थे इच्छन्ति। एकेकस्मिञ्च "अत्ता"ति, "लोको"ति च गहणविसेसं उपादाय पञ्ञापनं होतीति आह **"रूपादीसु अञ्ञतरं अत्ता च लोको चाति गहेत्वा"**ति। **अमरं निच्चं धुव**न्ति सस्सतवेवचनानि। मरणाभावेन वा **अमरं,** उप्पादाभावेन सब्बथापि अत्थिताय **निच्चं,** थिरट्ठेन विकाराभावेन **धुवं। "यथाहा"**तिआदिना यथावुत्तमत्थं निद्देसपटिसम्भिदापाळीहि विभावेति। अयञ्च अत्थो "रूपं अत्ततो समनुपस्सति, वेदनं, सञ्ञं, सङ्खारे, विञ्ञाणं अत्ततो समनुपस्सती"ति इमिस्सा पञ्चविधाय सक्कायदिट्ठिया वसेन वुत्तो। "रूपवन्तं अत्तान"न्तिआदिकाय पन पञ्चदसविधाय सक्कायदिट्ठिया वसेन चत्तारो चत्तारो खन्धे "अत्ता"ति गहेत्वा तदञ्ञं "लोको"ति पञ्ञपेन्तीति अयम्पि अत्थो लब्भति। तथा एकं खन्धं "अत्ता"ति गहेत्वा तदञ्ञे अत्तनो उपभोगभूतो लोकोति, ससन्ततिपतिते वा खन्धे "अत्ता"ति गहेत्वा तदञ्ञे "लोको"ति पञ्ञपेन्तीति एवम्पेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। एत्थाह– सस्सतो वादो एतेसन्ति कस्मा वुत्तं, ननु तेसं अत्ता लोको च सस्सतोति अधिप्पेतो, न वादो ति? सच्चमेतं, सस्सतसहचरितताय पन "वादो सस्सतो"ति वुत्तं यथा "कुन्ता पचरन्ती"ति। सस्सतो इति वादो एतेसन्ति वा इति-सद्दलोपो दट्ठब्बो। अथ वा सस्सतं वदन्ति "इदमेव सच्च"न्ति अभिनिविस्स वोहरन्तीति सस्सतवादा, सस्सतदिट्ठिनोति एवम्पेत्थ अत्थो दट्ठब्बो।

३१. **आतापनं** किलेसानं विबाधनं पहानं। **पदहनं** कोसज्जपक्खे पतितुं अदत्वा चित्तस्स उस्सहनं। **अनुयोगो** यथा समाधि विसेसभागियतं पापुणाति, एवं वीरियस्स बहुलीकरणं। इध उपचारप्पनाचित्तपरिदमनवीरियानं अधिप्पेतत्ता आह **"तिप्पभेदं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरिय''न्ति। नप्पमज्जति एतेनाति **अप्पमादो,** असम्मोसो। सम्मा उपायेन मनसि करोति कम्मट्ठानं एतेनाति **सम्मामनसिकारो** ञाणन्ति आह **''वीरियञ्च सतिञ्च ञाणञ्चा''**ति। **एत्थाति** ''आतप्प...पे०... मनसिकारं अन्वाया''ति इमस्मिं पाठे। सीलविसुद्धिया सद्धिं चतुन्नं रूपावचरज्झानानं अधिगमनपटिपदा वत्तब्बा, सा पन विसुद्धिमग्गे वित्थारतो वुत्ताति आह **''सङ्खेपत्थो''**ति। **''तथारूप''**न्ति चुद्दसविधेहि चित्तदमनेहि रूपावचरचतुत्थज्झानस्स दमिततं वदति।

समाधानादिअट्ठङ्गसमन्नागतरूपावचरचतुत्थज्झानस्स योगिनो समाधिविजम्भनभूता लोकियाभिञ्ञा **ञानानुभावो। ''ञानादीन''**न्ति इदं ञानलाभिस्स विसेसेन ञानधम्मा आपाथं आगच्छन्ति, तंमुखेन सेसधम्माति इममत्थं सन्धाय वुत्तं। **जनकभावं पटिक्खिपति।** सति हि जनकभावे रूपादिधम्मानं विय सुखादिधम्मानं विय, च पच्चयायत्तवुत्तिताय उप्पादवन्तता विञ्ञायति, उप्पादे च सति अवस्सम्भावी निरोधोति अनवकासाव निच्चता सियाति। **कूटट्ठ**-सद्दो वा लोके अच्चन्तनिच्चे निरुळ्हो दट्ठब्बो। **''एसिकट्ठायिट्ठितो''**ति एतेन यथा एसिका वातप्पहारादीहि न चलति, एवं न केनचि विकारं आपज्जतीति विकाराभावमाह, **''कूटट्ठो''**ति इमिना पन अनिच्चताभावं। विकारोपि विनासोयेवाति आह, **''उभयेनपि लोकस्स विनासाभावं दीपेती''**ति। **''विज्जमानमेवा''**ति एतेन कारणे फलस्स अत्थिभावदस्सनेन अभिब्यत्तिवादं दीपेति। **निक्खमती**ति च अभिब्यत्तिं गच्छतीति अत्थो। कथं पन विज्जमानोयेव पुब्बे अनभिब्यत्तो अभिब्यत्तिं गच्छतीति ? यथा अन्धकारेन पटिच्छन्नो घटो आलोकेन अभिब्यत्तिं गच्छति।

इदमेत्थ विचारेतब्बं– किं करोन्तो आलोको घटं पकासेतीति वुच्चति, यदि घटविसयं बुद्धिं करोन्तो, बुद्धिया अनुप्पन्नाय उप्पत्तिदीपनतो अभिब्यत्तिवादो हायति। अथ घटबुद्धिया आवरणभूतं अन्धकारं विधमन्तो, एवम्पि अभिब्यत्तिवादो हायतियेव। सति हि घटबुद्धिया अन्धकारो कथं तस्सा आवरणं होतीति, यथा घटस्स अभिब्यत्ति न युज्जति, एवं अत्तनोपि। तत्थापि हि यदि इन्द्रियविसयादिसन्निपातेन अनुप्पन्नाय बुद्धिया उप्पत्ति, उप्पत्तिवचनेनेव अभिब्यत्तिवादो हायति, तथा सस्सतवादो। अथ बुद्धिप्पवत्तिया आवरणभूतस्स अन्धकारट्ठानियस्स मोहस्स विधमनेन। सति बुद्धिया कथं मोहो आवरणन्ति, किञ्चि भेदसम्भवतो। न हि अभिब्यञ्जनकानं चन्दसूरियमणिपदीपादीनं भेदेन अभिब्यञ्जितब्बानं घटादीनं भेदो होति, होति च विसयभेदेन बुद्धिभेदोति भिय्योपि अभिब्यत्ति न युज्जतियेव, न चेत्थ वुत्तिकप्पना युत्ता वुत्तिया वुत्तिमतो च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनञ्ञथानुजाननतोति। **ते च सत्ता सन्धावन्ती**ति ये इध मनुस्सभावेन अवट्ठिता, तेयेव देवभावादिउपगमनेन इतो अञ्ञत्थ गच्छन्ति, अञ्ञथा कतस्स कम्मस्स विनासो, अकतस्स च अब्भागमो आपज्जेय्याति अधिप्पायो।

अपरापरन्ति अपरस्मा भवा अपरं भवं। **एवं सङ्कं गच्छन्ती**ति अत्तनो निच्चसभावत्ता न चुतूपपत्तियो, सब्बब्यापिताय नापि सन्धावनसंसरणानि, धम्मानंयेव पन पवत्तिविसेसेन एवं सङ्ख्यं गच्छन्ति, एवं वोहरीयन्तीति अधिप्पायो। एतेन अवट्ठितसभावस्स अत्तनो, धम्मिनो च धम्ममत्तं उप्पज्जति चेव विनस्सति चाति इमं विपरिणामवादं दस्सेति। यं पनेत्थ वत्तब्बं, तं परतो वक्खाम। **अत्तनो वादं भिन्दती**ति सन्धावनादिवचनसिद्धाय अनिच्चताय पुब्बे पटिञ्ञातं सस्सतवादं भिन्दति, विद्धंसेतीति अत्थो। **सस्सतिसम**न्ति वा एतस्स सस्सतं थावरं निच्चकालन्ति अत्थो दट्ठब्बो।

हेतुं दस्सेन्तोति येसं "सस्सतो"ति अत्तानञ्च लोकञ्च पञ्ञपेति अयं दिट्ठिगतिको, तेसं हेतुं दस्सेन्तोति अत्थो। न हि अत्तनो दिट्ठिया पच्चक्खकतमत्थं अत्तनोयेव साधेति, अत्तनो पन पच्चक्खकतेन अत्थेन अत्तनो अप्पच्चक्खभूतम्पि अत्थं साधेति। अत्तना हि यथानिच्छितं परेहि विञ्ञापेति, न अनिच्छितं। "**हेतुं दस्सेन्तो**"ति एत्थ इदं हेतुदस्सनं–एतेसु अनेकेसु जातिसतसहस्सेसु एकोवायं मे अत्ता, लोको च अनुस्सरणसब्भावतो। यो हि यमत्थं अनुभवति, सो एव तं अनुस्सरति, न अञ्ञो। न हि अञ्ञेन अनुभूतमत्थं अञ्ञो अनुस्सरितुं सक्कोति यथा तं बुद्धरक्खितेन अनुभूतं धम्मरक्खितो। यथा चेतासु, एवं इतो पुरिमतरासुपि जातीसूति। कस्मा सस्सतो मे अत्ता च लोको च। यथा च मे, एवं अञ्ञेसम्पि सत्तानं सस्सतो अत्ता च लोको चाति? सस्सतवसेन दिट्ठिगहनं पक्खन्दो दिट्ठिगतिको परेपि तत्थ पतिट्ठपेति, पाळियं पन "अनेकविहितानि अधिवुत्तिपदानि अभिवदन्ति। सो एवं आहा"ति च वचनतो परानुमानवसेन इध हेतुदस्सनं अधिप्पेतन्ति विञ्ञायति। **कारण**न्ति तिविधं कारणं सम्पापकं निब्बत्तकं ञापकन्ति। तत्थ अरियमग्गो निब्बानस्स सम्पापकं कारणं, बीजं अङ्कुरस्स निब्बत्तकं कारणं, पच्चयुप्पन्नतादयो अनिच्चतादीनं ञापकं कारणं, इधापि ञापककारणमेव अधिप्पेतं। ञापको हि ञापेतब्बत्थविसयस्स ञाणस्स हेतुभावतो कारणन्ति। तदायत्तवुत्तिताय तं ञाणं तिट्ठति तत्थाति "**ठान**"न्ति, वसति तत्थ पवत्ततीति "**वत्थू**"ति च वुच्चति। तथा हि भगवता वत्थु-सद्देन उद्दिसित्वापि ठानसद्देन निद्दिट्ठन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२-३३. दुतियततियवादानं पठमवादतो नत्थि विसेसो ठपेत्वा कालविसेसन्ति आह **"उपरि वादद्वयेपि एसेव नयो"**ति। यदि एवं कस्मा सस्सतवादो चतुधा विभत्तो, ननु अधिच्चसमुप्पन्निकवादो विय दुविधेनेव विभजितब्बो सियाति आह **"मन्दपञ्ञो हि तित्थियो"**तिआदि।

३४. **तक्कयती**ति ऊहयति, सस्सतादिआकारेन तस्मिं तस्मिं आरम्मणे चित्तं अभिनिरोपेतीति अत्थो। **तक्को**ति आकोटनलक्खणो विनिच्छयलक्खणो वा दिट्ठिट्ठानभूतो वितक्को। **वीमंसा** नाम विचारणा, सा पनेत्थ अत्थतो पञ्ञापतिरूपको लोभसहगतचित्तुप्पादो, मिच्छाभिनिवेसो वा अयोनिसोमनसिकारो, पुब्बभागे वा दिट्ठिविप्फन्दितन्ति दट्ठब्बा। तेनेवाह **"तुलना रुच्चना खमना"**ति। परियाहननं वितक्कस्स आरम्मणऊहनं एवाति आह **"तेन तेन पकारेन तक्केत्वा"**ति। **अनुविचरित**न्ति वीमंसाय अनुपवत्तितं, वीमंसानुगतेन वा विचारेन अनुमज्जितं। पटि पटि भातीति पटिभानं, यथासमिहिताकारविसेसविभावको चित्तुप्पादो। पटिभानतो जातं पटिभानं, सयं अत्तनो पटिभानं **सयं पटिभानं।** तेनेवाह **"अत्तनो पटिभानमत्तसञ्जात"**न्ति। **मत्त**-सद्देन विसेसाधिगमादयो निवत्तेति।

"अनागतेपि एवं भविस्सती"ति इदं न इधाधिप्पेततक्कीवसेनेव वुत्तं, लाभीतक्किनो एवम्पि सम्भवतीति सम्भवदस्सनवसेन वुत्तन्ति दट्ठब्बं। यं किञ्चि अत्तना पटिलद्धं रूपादि सुखादि च इध लब्भतीति लाभो, न झानादिविसेसो। **"एवं सति इदं होती"**ति अनिच्चेसु भावेसु अञ्ञो करोति, अञ्ञो पटिसंवेदेतीति आपज्जति, तथा च सति कतस्स विनासो, अकतस्स च अब्भागमो सिया। निच्चेसु पन भावेसु यो करोति, सो पटिसंवेदेतीति न दोसो आपज्जतीति तक्किकस्स युत्तिगवेसनाकारं दस्सेति।

तक्कमत्तेनेवाति आगमाधिगमादीनं अनुस्सवादीनञ्च अभावा सुद्धतक्केनेव। ननु च विसेसलाभिनोपि सस्सतवादिनो अत्तनो विसेसाधिगमहेतु अनेकेसु जातिसतसहस्सेसु दससु संवट्टविवट्टेसु चत्तालीसाय संवट्टविवट्टेसु यथानुभूतं अत्तनो सन्तानं तप्पटिबद्धञ्च "अत्ता, लोको"ति च अनुस्सरित्वा ततो पुरिमपुरिमतरासुपि जातीसु तथाभूतस्स अत्थितानुवितक्कनमुखेन सब्बेसम्पि सत्तानं तथाभावानुवितक्कनवसेनेव सस्सताभिनिवेसिनो जाता, एवञ्च सति सब्बोपि सस्सतवादी अनुस्सुतिजातिस्सरतक्किका विय अत्तनो उपलद्धवत्थुनिबन्धनेन तक्कनेन पवत्तवादत्ता तक्कीपक्खेयेव तिट्ठेय्य, अवस्सञ्च वुत्तप्पकारं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तक्कनमिच्छितब्बं, अञ्ञथा विसेसलाभी सस्सतवादी एकच्चसस्सतिकपक्खं, अधिच्चसमुप्पन्निकपक्खं वा भजेय्याति ? न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं, यस्मा विसेसलाभीनं खन्धसन्तानस्स दीघदीघतरदीघतमकालानुस्सरणं सस्सतग्गाहस्स असाधारणकारणं। तथा हि "अनेकविहितं पुब्बेनिवासं अनुस्सरामि। इमिनामहमेतं जानामी"ति अनुस्सरणमेव पधानकारणभावेन दस्सितं। यं पन तस्स "इमिनामहमेतं जानामी"ति पवत्तं तक्कनं, न तं इध पधानं अनुस्सरणं पति तस्स अप्पधानभूतत्ता। यदि एवं अनुस्सवादीनम्पि पधानभावो आपज्जतीति चे ? न, तेसं सच्छिकिरियाय अभावेन तक्कपधानत्ता, पधानकारणेन च निद्देसो निरुळ्हो सासने लोके च यथा "चक्खुविञ्ञाणं, यवङ्कुरो"ति च।

अथ वा विसेसाधिगमनिबन्धनरहितस्स तक्कनस्स विसुं सस्सतग्गाहे कारणभावदस्सनत्थं विसेसाधिगमो विसुं सस्सतग्गाहकारणं वत्तब्बो, सो च मन्दमज्झतिक्खपञ्ञावसेन तिविधोति भगवता सब्बतक्किनो तक्कीभावसामञ्ञेन एकज्झं गहेत्वा चतुधा ववत्थापितो सस्सतवादो। यदिपि अनुस्सवादिवसेन तक्किकानं विय मन्दपञ्ञादीनम्पि हीनादिवसेन अनेकभेदसब्भावतो विसेसलाभीनम्पि बहुधा भेदो सम्भवति, सब्बे पन विसेसलाभिनो मन्दपञ्ञादिवसेन तयो रासी कत्वा तत्थ उक्कट्ठवसेन अनेकजातिसतसहस्सदससंवट्टविवट्टचत्तारीससंवट्टविवट्टानुस्सरणेन अयं विभागो वुत्तो। तीसुपि रासीसु ये हीनमज्झपञ्ञा, ते वुत्तपरिच्छेदतो ऊनकमेव अनुस्सरन्ति। ये पन तत्थ उक्कट्ठपञ्ञा, ते वुत्तपरिच्छेदं अतिक्कमित्वा नानुस्सरन्तीति एवं पनायं देसना। तस्मा अञ्ञतरभेदसङ्गहवसेनेव भगवता चत्तारिट्ठानानि विभत्तानीति ववत्थिता सस्सतवादीनं चतुब्बिधता। न हि इध सावसेसं धम्मं देसेति धम्मराजा।

३५. **"अञ्ञतरेना"**ति एतस्स अत्थं दस्सेतुं **"एकेना"**ति वुत्तं। **वा**-सद्दस्स पन अनियमत्थतं दस्सेतुं **"द्वीहि वा तीहि वा"**ति वुत्तं। तेन चतूसु ठानेसु यथारहं एकच्चं एकच्चस्स पञ्ञापने सहकारीकारणन्ति दस्सेति। किं पनेतानि वत्थूनि अभिनिवेसस्स हेतु, उदाहु पतिट्ठापनस्स। किञ्चेत्थ यदि ताव अभिनिवेसस्स, कस्मा अनुस्सरणतक्कनानियेव गहितानि, न सञ्ञाविपल्लासादयो। तथाहि विपरीतसञ्ञा अयोनिसोमनसिकारअसप्पुरिसूपनिस्सयअसद्धम्मस्सवनादीनि मिच्छादिट्ठिया पवत्तनट्ठानानि। अथ पतिट्ठापनस्स अधिगमयुत्तियो विय आगमोपि वत्थुभावेन वत्तब्बो, उभयत्थापि "नत्थि इतो बहिद्धा"ति वचनं न युज्जतीति ? न। कस्मा ? अभिनिवेसपक्खे ताव अयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठिगतिको असप्पुरिसूपनिस्सयअसद्धम्मस्सवनेहि अयोनिसो उम्मुज्जित्वा विपल्लाससञ्ञो रूपादिधम्मानं खणे खणे भिज्जनसभावस्स अनवबोधतो धम्मयुत्तिं अतिधावन्तो एकत्तनयं मिच्छा गहेत्वा यथावुत्तानुस्सरणतक्केहि खन्धेसु "सस्सतो अत्ता च लोको चा"ति (दी० नि० १.३१) अभिनिवेसं जनेसि। इति आसन्नकारणत्ता, पधानकारणत्ता, तग्गहणेनेव च इतरेसम्पि गहितत्ता अनुस्सरणतक्कनानियेव इध गहितानि। पतिट्ठापनपक्खे पन आगमोपि युत्तिपक्खेयेव ठितो विसेसतो बाहिरकानं तक्कगाहिभावतोति अनुस्सरणतक्कनानियेव दिट्ठिया वत्थुभावेन गहितानि। किञ्च भिय्यो दुविधं लक्खणं परमत्थधम्मानं सभावलक्खणं सामञ्ञलक्खणञ्चाति। तत्थ सभावलक्खणावबोधो पच्चक्खञाणं, सामञ्ञलक्खणावबोधो अनुमानञाणं, आगमो च सुतमयाय पञ्ञाय साधनतो अनुमानञाणमेव आवहति, सुतानं पन धम्मानं आकारपरिवितक्कनेन निज्झानक्खन्तियं ठितो चिन्तामयं पञ्ञं निब्बत्तेत्वा अनुक्कमेन भावनाय पच्चक्खञाणं अधिगच्छतीति एवं आगमोपि तक्कविसयं नातिक्कमतीति तग्गहणेन गहितोवाति वेदितब्बो। सो अट्ठकथायं अनुस्सुतितक्कग्गहणेन विभावितोति युत्तं एविदं "नत्थि इतो बहिद्धा"ति। "अनेकविहितानि अधिवुत्तिपदानि अभिवदन्ति, सस्सतं अत्तानञ्च लोकञ्च पञ्ञपेन्ती"ति (दी० नि० १.३०) च वचनतो पतिट्ठापनवत्थूनि इधाधिप्पेतानीति दट्ठब्बं।

३६. **दिट्ठियेव दिट्ठिट्ठानं** परमवज्जताय अनेकविहितानं अनत्थानं हेतुभावतो। यथाह "मिच्छादिट्ठिपरमाहं भिक्खवे वज्जं वदामी"ति (अ० नि० १.१.३१०) **"यथाहा"**तिआदिना पटिसम्भिदापाळिया (पटि० म० १.१२४) दिट्ठिया ठानविभागं दस्सेति। तत्थ **खन्धापि दिट्ठिट्ठानं** आरम्मणट्ठेन "रूपं अत्ततो समनुपस्सती"तिआदि (सं० नि० २.३.८१, ३४५) वचनतो। **अविज्जापि दिट्ठिट्ठानं** उपनिस्सयादिभावेन पवत्तनतो। यथाह "अस्सुतवा भिक्खवे पुथुज्जनो अरियानं अदस्सावी अरियधम्मस्स अकोविदो"तिआदि (म० नि० १.२; पटि० म० १.१३०)। **फस्सोपि दिट्ठिट्ठानं।** यथा चाह "तदपि फस्सपच्चया, (दी० नि० १.११८ आदयो) फुस्स फुस्स पटिसंवेदेन्ती"ति (दी० नि० १.१४४) च। **सञ्ञापि दिट्ठिट्ठानं।** वुत्तञ्चेतं "सञ्ञानिदाना हि पपञ्चसङ्खा, (सु० नि० ८८०; महानि० १०९) पथवितो सञ्ञत्वा"ति (म० नि० १.२) च आदि। **वितक्कोपि दिट्ठिट्ठानं।** वुत्तम्पि चेतं "तक्कञ्च दिट्ठीसु पकप्पयित्वा, सच्चं मुसाति द्वयधम्ममाहू"ति (सु० नि० ८९२) "तक्की होति वीमंसी"ति (दी० नि० १.३४) च आदि। **अयोनिसोमनसिकारोपि दिट्ठिट्ठानं।** तेनाह भगवा "तस्स एवं अयोनिसो मनसि करोतो छन्नं दिट्ठीनं अञ्ञतरा दिट्ठि उप्पज्जति। 'अत्थि मे अत्ता'ति वा अस्स सच्चतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेततो दिट्ठि उप्पज्जती''तिआदि (म० नि० १.१९)। समुट्ठाति एतेनाति समुट्ठानं समुट्ठानभावो **समुट्ठानट्ठो**। **पवत्तिता**ति परसन्तानेसु उप्पादिता। **परिनिट्ठापिता**ति अभिनिवेसस्स परियोसानं मत्थकं पापितानि अत्थो। ''**आरम्मणवसेना**''ति अट्ठसु दिट्ठिट्ठानेसु खन्धे सन्धायाह। **पवत्तनवसेना**ति अविज्जादयो। **आसेवनवसेना**ति पापमित्तपरतोघोसादीनम्पि सेवनं लब्भतियेव। अथ वा **एवंगतिका**ति एवंगमना, एवंनिट्ठाति अत्थो। इदं वुत्तं होति– इमे दिट्ठिसङ्खाता दिट्ठिट्ठाना एवं परमत्थतो असन्तं अत्तानं सस्सतभावञ्चस्स अज्झारोपेत्वा गहिता, परामट्ठा च बाललपना याव पण्डिता न समनुयुञ्जन्ति, ताव गच्छन्ति पवत्तन्ति। पण्डितेहि समनुयुञ्जियमाना पन अनवट्ठितवत्थुका अविमद्दक्खमा सूरियुग्गमने उस्सावबिन्दू विय खज्जोपनका विय च भिज्जन्ति विनस्सन्ति चाति।

तत्थायं अनुयुञ्जने सङ्खेपकथा– यदि हि परेन परिकप्पितो अत्ता लोको वा सस्सतो सिया, तस्स निब्बिकारताय पुरिमरूपाविजहनतो कस्सचि विसेसाधानस्स कातुं असक्कुणेय्यताय अहिततो निवत्तनत्थं, हिते च पटिपत्तिअत्थं उपदेसो एव निप्पयोजनो सिया सस्सतवादिनो, कथं वा सो उपदेसो पवत्तीयति विकाराभावतो, एवञ्च अत्तनो अजटाकासस्स विय दानादिकिरिया हिंसादिकिरिया च न सम्भवति। तथा सुखस्स दुक्खस्स अनुभवननिबन्धो एव सस्सतवादिनो न युज्जति कम्मबद्धाभावतो, जातिआदीनञ्च असम्भवतो कुतो विमोक्खो, अथ पन धम्ममत्तं तस्स उप्पज्जति चेव विनस्सति च, यस्स वसेनायं किरियादिवोहारोति वदेय्य, एवम्पि पुरिमरूपाविजहनेन अवट्ठितस्स अत्तनो धम्ममत्तन्ति न सक्का सम्भावेतुं, ते वा पनस्स धम्मा अवत्थाभूता अञ्ञे वा सियुं अनञ्ञे वा। यदि अञ्ञे, न ताहि तस्स उप्पन्नाहिपि कोचि विसेसो अत्थि। याहि करोति पटिसंवेदेति चवति उपपज्जति चाति इच्छितं, तस्मा तदवत्थो एव यथावुत्तदोसो। किञ्च धम्मकप्पनापि निरत्थिका सिया, अथानञ्ञे उप्पादविनासवन्तीहि अवत्थाहि अनञ्ञस्स अत्तनो तासं विय उप्पादविनाससब्भावतो कुतो निच्चतावकासो, तासम्पि वा अत्तनो विय निच्चताति बन्धविमोक्खानं असम्भवो एवाति न युज्जतियेव सस्सतवादो। न चेत्थ कोचि वादी धम्मानं सस्सतभावे परिसुद्धं युत्तिं वत्तुं समत्थो, युत्तिरहितञ्च वचनं न पण्डितानं चित्तं आराधेतीति। तेन वुत्तं ''याव पण्डिता न समनुयुञ्जन्ति, ताव गच्छन्ति पवत्तन्ती''ति। कम्मवसेन अभिमुखो सम्परेति एत्थाति **अभिसम्परायो**, परोलोको।

''**सब्बञ्ञुतञ्ञाणञ्चा**''ति इदं इध सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स विभजियमानत्ता वुत्तं, तस्मिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा वुत्ते तदधिट्ठानतो आसवक्खयञाणं, तदविनाभावतो सब्बम्पि वा भगवतो दसबलादिञाणं गहितमेव होतीति कत्वा। **पजानन्तोपीति** **पि**-सद्दो सम्भावने, तेन **"तञ्चा"**ति एत्थ वुत्तं च-सद्दत्थमाह। इदं वुत्तं होति– तं दिट्ठिगततो उत्तरितरं सारभूतं सीलादिगुणविसेसम्पि तथागतो नाभिनिविसति, को पन वादो वट्टामिसेति। **"अह"**न्ति दिट्ठिवसेन वा तं परामसनाकारमाह। **पजानामीति** एत्थ **इति**-सद्दो पकारत्थो, तेन "मम"न्ति तण्हावसेन परामसनाकारं दस्सेति। धम्मसभावं अतिक्कमित्वा परतो आमसनं **परामासो**। न हि तं अत्थि, खन्धेसु यं "अह"न्ति वा, "मम"न्ति वा गहेतब्बं सिया। यो पन परामासो तण्हादयोव, ते च भगवतो बोधिमूलेयेव पहीनाति आह **"परामासकिलेसान"**न्तिआदि। **अपरामासतोति** वा निब्बुतिवेदनस्स हेतुवचनं, **"विदिता"**ति इदं पदं अपेक्खित्वा कत्तरि सामिवचनं, अपरामसनहेतु परामासरहिताय पटिपत्तिया तथागतेन सयमेव असङ्खतधातु अधिगताति एवं वा एत्थ अत्थो दट्ठब्बो।

"यासु वेदनासू"तिआदिना भगवतो देसनाविलासं दस्सेति। तथा हि खन्धायतनादिवसेन अनेकविधासु चतुसच्चदेसनासु सम्भवन्तीसुपि अयं तथागतानं देसनासु पटिपत्ति, यं दिट्ठिगतिका मिच्छापटिपत्तिया दिट्ठिगहनं पक्खन्दाति दस्सनत्थं वेदनायेव परिञ्ञाय भूमिदस्सनत्थं उद्धटा। **कम्मट्ठानन्ति** चतुसच्चकम्मट्ठानं। **यथाभूतं विदित्वाति** विपस्सनापञ्ञाय वेदनाय समुदयादीनि आरम्मणपटिवेधवसेन मग्गपञ्ञाय असम्मोहपटिवेधवसेन जानित्वा, पटिविज्झित्वाति अत्थो। **पच्चयसमुदयट्ठेनाति** "इमस्मिं सति इदं होति, इमस्सुप्पादा इदं उप्पज्जती"ति (म० नि० १.४०४; सं० नि० १.२.२१; उदा० १) वुत्तलक्खणेन अविज्जादीनं पच्चयानं उप्पादेन चेव मग्गेन असमुग्घातेन च। **निब्बत्तिलक्खणन्ति** उप्पादलक्खणं, जातिन्ति अत्थो। **पञ्चन्नं लक्खणानन्ति** एत्थ चतुन्नं पच्चयानम्पि उप्पादलक्खणमेव गहेत्वा वुत्तन्ति गहेतब्बं, यस्मा पच्चयलक्खणम्पि लब्भतियेव, तथा चेव संवण्णितं। **पच्चयनिरोधट्ठेनाति** एत्थापि वुत्तनयानुसारेन अत्थो वेदितब्बो। **यन्ति** यस्मा, **यं** वा सुखं सोमनस्सं। **पटिच्चाति** आरम्मणपच्चयादिभूतं वेदनं लभित्वा। **अयन्ति** सुखसोमनस्सानं पच्चयभावो, सुखसोमनस्समेव वा, "अस्सादो"ति पदं पन अपेक्खित्वा पुल्लिङ्गनिद्देसो। अयञ्हेत्थ सङ्खेपत्थो– पुरिमुप्पन्नं वेदनं आरब्भ सोमनस्सुप्पत्तियं यो पुरिमवेदनाय अस्सादेतब्बाकारो सोमनस्सस्सादनाकारो, अयं अस्सादोति। कथं पन वेदनं आरब्भ सुखं उप्पज्जतीति? चेतसिकसुखस्स अधिप्पेतत्ता नायं दोसो। विसेसनं हेत्थ सोमनस्सग्गहणं सुखं सोमनस्सन्ति "रुक्खो सिंसपा"ति यथा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"**अनिच्चा**"ति इमिना सङ्खारदुक्खतावसेन उपेक्खावेदनाय, सब्बवेदनासुयेव वा आदीनवमाह, इतरेहि इतरदुक्खतावसेन यथाक्कमं दुक्खसुखवेदनानं, अविसेसेन वा तीणिपि पदानि सब्बासम्पि वेदनानं वसेन योजेतब्बानि। **अयन्ति** यो वेदनाय हुत्वा अभावट्ठेन अनिच्चभावो, उदयब्बयपटिपीळनट्ठेन दुक्खभावो, जराय मरणेन चाति द्वेधा विपरिणामेतब्बभावो च, अयं वेदनाय आदीनवो, यतो वा आदीनं परमकारुञ्ञं वाति पवत्ततीति। **वेदनाय निस्सरणन्ति** एत्थ **वेदनायाति** निस्सक्कवचनं, याव वेदनापटिबद्धं छन्दरागं न पजहति, तावायं पुरिसो वेदनं अल्लीनोयेव होति। यदा पन तं छन्दरागं पजहति, तदायं पुरिसो वेदनाय निस्सटो विसंयुत्तो होतीति छन्दरागप्पहानं वेदनाय निस्सरणं वुत्तं। एत्थ च वेदनाग्गहणेन वेदनाय सहजातनिस्सयारम्मणभूता च रूपारूपधम्मा गहिता एव होन्तीति पञ्चन्नम्पि उपादानक्खन्धानं गहणं दट्ठब्बं। वेदनासीसेन पन देसना आगता, तत्थ कारणं वुत्तमेव, लक्खणहारनयेन वा अयमत्थो विभावेतब्बो। तत्थ वेदनाग्गहणेन गहिता पञ्चुपादानक्खन्धा दुक्खसच्चं, वेदनानं समुदयग्गहणेन गहिता अविज्जादयो समुदयसच्चं, अत्थङ्गमनिस्सरणपरियायेहि निरोधसच्चं, "यथाभूतं विदित्वा"ति एतेन मग्गसच्चन्ति एवमेत्थ चत्तारि सच्चानि वेदितब्बानि। कामुपादानमूलकत्ता सेसुपादानानं, पहीने च कामुपादाने उपादानसेसाभावतो "**विगतछन्दरागताय अनुपादानो**"ति वुत्तं। **अनुपादाविमुत्तोति** अत्तनो मग्गफलुप्पत्तिं भगवा दस्सेति। "वेदनान"न्तिआदिना हि यस्सा धम्मधातुया सुप्पटिविद्धत्ता इमं दिट्ठिगतं सकारणं सगतिकं पभेदतो विभजितुं समत्थो अहोसि, तस्स सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स सद्धिं पुब्बभागपटिपदाय उप्पत्तिभूमिं दस्सेति धम्मराजा।

पठमभाणवारवण्णना निट्ठिता।

एकच्चसस्सतवादवण्णना

३८. सत्तेसु सङ्खारेसु च एकच्चं सस्सतं एतस्साति एकच्चसस्सतो, एकच्चसस्सतवादो। सो एतेसं अत्थीति **एकच्चसस्सतिका**। ते पन यस्मा एकच्चसस्सतो वादो दिट्ठि एतेसन्ति एकच्चसस्सतवादा नाम होन्ति, तस्मा तमत्थं दस्सेन्तो आह "**एकच्चसस्सतवादा**"ति। इमिना नयेन **एकच्चअसस्सतिका** दिपदस्सपि अत्थो वेदितब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ननु च "एकच्चसस्सतिका"ति वुत्ते तदञ्ञस्स एकच्चस्स असस्सततासन्निट्ठानं सिद्धमेव होतीति? सच्चं सिद्धमेव होति अत्थतो, न पन सद्दतो। तस्मा सुपाकटं कत्वा दस्सेतुं "एकच्चअसस्सतिका"ति वुत्तं। न हि इध सावसेसं कत्वा धम्मं देसेति धम्मस्सामी। **इधा**ति "एकच्चसस्सतिका"ति इमस्मिं पदे। **गहिता**ति वुत्ता, तथा चेव अत्थो दस्सितो। **इधा**ति वा इमिस्सा देसनाय। तथा हि पुरिमका तयो वादा सत्तवसेन, चतुत्थो सङ्खारवसेन विभत्तो। **"सङ्खारेकच्चसस्सतिका"**ति इदं तेहि सस्सतभावेन गय्हमानानं धम्मानं याथावसभावदस्सनवसेन वुत्तं, न पनेकच्चसस्सतिकमतदस्सनवसेन। तस्स हि सस्सताभिमतं असङ्खतमेवाति लद्धि। तेनेवाह "चित्तन्ति वा...पे०... ठस्सती"ति। न हि यस्स भावस्स पच्चयेहि अभिसङ्खतभावं पटिजानाति, तस्सेव निच्चधुवादिभावो अनुम्मत्तकेन सक्का पटिञ्ञातुं। एतेन "उप्पादवयधुवतायुत्तभावा सिया निच्चा, सिया अनिच्चा सिया न वत्तब्बा"तिआदिना पवत्तस्स सत्तभङ्गवादस्स अयुत्तता विभाविता होति।

तत्थायं अयुत्तताविभावना– यदि "येन सभावेन यो धम्मो अत्थीति वुच्चति, तेनेव सभावेन सो धम्मो नत्थी"तिआदिना वुच्चेय्य, सिया अनेकन्तवादो। अथ अञ्ञेन, सिया न अनेकन्तवादो। न चेत्थ देसन्तरादिसम्बन्धभावो युत्तो वत्तुं तस्स सब्बलोकसिद्धत्ता, विवादाभावतो। ये पन वदन्ति "यथा सुवण्णघटेन मकुटे कते घटभावो नस्सति, मकुटभावो उप्पज्जति, सुवण्णभावो तिट्ठतियेव, एवं सब्बभावानं कोचि धम्मो नस्सति, कोचि धम्मो उप्पज्जति, सभावो पन तिट्ठती"ति। ते वत्तब्बा "किं तं सुवण्णं, यं घटे मकुटे च अवट्ठितं, यदि रूपादि, सो सद्दो विय अनिच्चो। अथ रूपादि समूहो, समूहो नाम सम्मुतिमत्तं। न तस्स अत्थिता नत्थिता निच्चता वा लब्भती"ति अनेकन्तवादो न सिया। धम्मानञ्च धम्मिनो अञ्ञथानञ्ञथासु दोसो वुत्तोयेव सस्सतवादविचारणायं। तस्मा सो तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बो। अपिच निच्चानिच्चनवत्तब्बरूपो अत्ता लोको च परमत्थतो विज्जमानतापटिजाननतो यथा निच्चादीनं अञ्ञतरं रूपं, यथा वा दीपादयो। न हि दीपादीनं उदयब्बयसभावानं निच्चानिच्चनवत्तब्बसभावता सक्का विञ्ञातुं, जीवस्स निच्चादीसु अञ्ञतरं रूपं वियाति एवं सत्तभङ्गस्स विय सेसभङ्गानम्पि असम्भवोयेवाति सत्तभङ्गवादस्स अयुत्तता वेदितब्बा।

एत्थ च "इस्सरो निच्चो, अञ्ञे सत्ता अनिच्चा"ति एवं पवत्तवादा सत्तेकच्चसस्सतिका सेय्यथापि इस्सरवादा। "परमाणवो निच्चा धुवा, अणुकादयो अनिच्चा"ति एवं पवत्तवादा सङ्खारेकच्चसस्सतिका सेय्यथापि काणादा। ननु "एकच्चे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मा सस्सता, एकच्चे असस्सता''ति एतस्मिं वादे चक्खादीनं असस्सततासन्निट्ठानं यथासभावावबोधो एव, तयिदं कथं मिच्छादस्सनन्ति, को वा एवमाह ''चक्खादीनं असस्सतभावसन्निट्ठानं मिच्छादस्सन''न्ति ? असस्सतेसुयेव पन केसञ्चि धम्मानं सस्सतभावाभिनिवेसो इध मिच्छादस्सनं। तेन पन एकवारे पवत्तमानेन चक्खादीनं असस्सतभावावबोधो विदूसितो संसट्ठभावतो विससंसट्ठो विय सप्पिमण्डो सकिच्चकरणासमत्थताय सम्मादस्सनपक्खे ठपेतब्बतं नारहतीति। असस्सतभावेन निच्छितापि वा चक्खुआदयो समारोपितजीवसभावा एव दिट्ठिगतिकेहि गय्हन्तीति तदवबोधस्स मिच्छादस्सनभावो न सक्का निवारेतुं। तेनेवाह **''चक्खुं इतिपि...पे०... कायो इतिपि अयं मे अत्ता''**तिआदि। एवञ्च कत्वा असङ्गताय सङ्गताय च धातुया वसेन यथाक्कमं ''एकच्चे धम्मा सस्सता, एकच्चे असस्सता''ति एवं पवत्तो विभज्जवादोपि एकच्चसस्सतवादो आपज्जतीति एवंपकारा चोदना अनवकासा होति अविपरीतधम्मसभावसम्पटिपत्तिभावतो।

कामञ्चेत्थ पुरिमवादेपि असस्सतानं धम्मानं ''सस्सता''ति गहणं विसेसतो मिच्छादस्सनं, सस्सतानं पन ''सस्सता''ति गाहो न मिच्छादस्सनं यथासभावग्गहणभावतो। असस्सतेसुयेव पन ''केचिदेव धम्मा सस्सता, केचि असस्सता''ति गहेतब्बधम्मेसु विभागप्पवत्तिया इमस्स वादस्स वादन्तरता वुत्ता, न चेत्थ ''समुदायन्तोगधत्ता एकदेसस्स सप्पदेससस्सतग्गाहो निप्पदेससस्सतग्गाहे समोधानं गच्छती''ति सक्का वत्तुं वादी तब्बिसयविसेसवसेन वादद्वयस्स पवत्तत्ता। अञ्ञे एव हि दिट्ठिगतिका ''सब्बे धम्मा सस्सता''ति अभिनिविट्ठा, अञ्ञे ''एकच्चसस्सता''ति। सङ्खारानं अनवसेसपरियादानं, एकदेसपरिग्गहो च वादद्वयस्स परिब्यत्तोयेव। किञ्च भिय्यो अनेकविधसमुस्सये एकविधसमुस्सये च खन्धपबन्धे अभिनिवेसभावतो। चतुब्बिधोपि हि सस्सतवादी जातिविसेसवसेन नानाविधरूपकायसन्निस्सये एव अरूपधम्मपुञ्जे सस्सताभिनिवेसी जातो अभिञ्ञाणेन अनुस्सवादीहि च रूपकायभेदग्गहणतो। तथा च वुत्तं ''ततो चुतो अमुत्र उदपादि''न्ति (दी० नि० १.३२) ''चवन्ति उपपज्जन्ती''ति च आदि। विसेसलाभी एकच्चसस्सतिको अनुपधारितभेदसमुस्सयेव धम्मपबन्धे सस्सताकारग्गहणेन अभिनिविसनं जनेसि एकभवपरियापन्नखन्धसन्तानविसयत्ता तदभिनिवेसस्स। तथा च तीसुपि वादेसु ''तं पुब्बेनिवासं अनुस्सरति, ततो परं नानुस्सरती''ति एत्तकमेव वुत्तं, तक्कीनं पन सस्सतेकच्चसस्सतवादीनं सस्सताभिनिवेसविसेसो रूपारूपधम्मविसयताय सुपाकटोयेवाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. **दीघस्स कालस्स अतिक्कमेना**ति विवट्टविवट्टट्ठायीनं अपगमेन। अनेकत्थत्ता धातूनं **सं**-सद्देन युत्तो **वट्ट**-सद्दो विनासवाचीति आह **"विनस्सती"**ति, सङ्खयवसेन वत्ततीति अत्थो। विपत्तिकरमहामेघसमुप्पत्तितो पट्ठाय हि याव अणुसहगतोपि सङ्खारो न होति, ताव लोको संवट्टतीति वुच्चति। **लोको**ति चेत्थ पथवीआदिभाजनलोको अधिप्पेतो। **उपरिब्रह्मलोकेसू**ति परित्तसुभादीसु रूपीब्रह्मलोकेसु। अग्गिना हि कप्पवुट्ठानं इधाधिप्पेतं बहुलं पवत्तनतो। तेनेवाह भगवा "आभस्सरसंवत्तनिका होन्ती"ति। **अरूपेसु वा**ति **वा**-सद्देन संवट्टमानलोकधातूहि अञ्ञलोकधातूसु वाति विकप्पनं वेदितब्बं। न हि "सब्बे अपायसत्ता तदा रूपारूपभवेसु उप्पज्जन्ती"ति सक्का विञ्ञातुं अपायेसु दीघतमायुकानं मनुस्सलोकूपत्तिया असम्भवतो। सतिपि सब्बसत्तानं अभिसङ्खारमनसा निब्बत्तभावे बाहिरपच्चयेहि विना मनसाव निब्बत्तत्ता "मनोमया"ति वुच्चन्ति रूपावचरसत्ता। यदि एवं कामभवे ओपपातिकसत्तानम्पि मनोमयभावो आपज्जतीति? नापज्जति अधिचित्तभूतेन अतिसयमनसा निब्बत्तसत्तेसु मनोमयवोहारतोति दस्सन्तो आह **"झानमनेन निब्बत्तत्ता मनोमया"**ति। एवं अरूपावचरसत्तानम्पि मनोमयभावो आपज्जतीति चे? न, तत्थ बाहिरपच्चयेहि निब्बत्तेतब्बतासङ्काय एव अभावतो, "मनसाव निब्बत्ता"ति अवधारणासम्भवतो। निरुळ्हो वायं लोके मनोमयवोहारो रूपावचरसत्तेसु। तथा हि "अन्नमयो पानमयो मनोमयो आनन्दमयो विञ्ञाणमयो"ति पञ्चधा अत्तानं वेदवादिनो वदन्ति। उच्छेदवादेपि वक्खति "दिब्बो रूपी मनोमयो"ति (दी० नि० १.८६)। सोभना पभा एतेसु सन्तीति **सुभा**। **"उक्कंसेना"**ति आभस्सरदेवे सन्धायाह, परित्ताभा अप्पमाणाभा पन द्वे चत्तारो च कप्पे तिट्ठन्ति। **अट्ठकप्पे**ति अट्ठ महाकप्पे।

४०. **सण्ठाती**ति सम्पत्तिकरमहामेघसमुप्पत्तितो पट्ठाय पथवीसन्धारकुदकतंसन्धारकवायुमहापथवीआदीनं समुप्पत्तिवसेन ठाति, "सम्भवति" इच्चेव वा अत्थो अनेकत्थत्ता धातूनं। **पकतिया**ति सभावेन, तस्स "सुञ्ञ"न्ति इमिना सम्बन्धो। तत्थ कारणमाह **"निब्बत्तसत्तानं नत्थिताया"**ति, अनुप्पन्नत्ताति अत्थो, तेन यथा एकच्चानि विमानानि तत्थ निब्बत्तसत्तानं चुतत्ता सुञ्ञानि होन्ति, न एवमिदन्ति दस्सेति। ब्रह्मपारिसज्जब्रह्मपुरोहितमहाब्रह्मानो ब्रह्मकायिका, तेसं निवासो भूमिपि **"ब्रह्मकायिका"**ति वुत्ता। कम्मं उपनिस्सयवसेन पच्चयो एतिस्साति **कम्मपच्चया**। अथ वा तत्थ निब्बत्तसत्तानं विपच्चनककम्मस्स सहकारीपच्चयभावतो, कम्मस्स पच्चयाति **कम्मपच्चया**। उतु समुट्ठानं एतिस्साति **उतुसमुट्ठाना**। **"कम्मपच्चयउतुसमुट्ठाना"**ति वा पाठो, कम्मसहायो पच्चयो, कम्मस्स वा सहायभूतो पच्चयो कम्मपच्चयो, सोव उतु कम्मपच्चयउतु, सो समुट्ठानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतिस्साति योजेतब्बं। **एत्थाति** "ब्रह्मविमान"न्ति वुत्ताय ब्रह्मकायिकभूमिया। कथं पणीताय दुतियज्झानभूमियं ठितानं हीनाय पठमज्झानभूमिया उपपत्ति होतीति आह **"अथ सत्तान"**न्तिआदि। **ओतरन्तीति** उपपज्जनवसेन हेट्ठाभूमिं गच्छन्ति।

अप्पायुकेति यं उळारं पुञ्ञकम्मं कतं, तस्स उप्पज्जनारहविपाकपबन्धतो अप्पपरिमाणायुके। **आयुप्पमाणेनेवाति** परमायुप्पमाणेनेव। किं पनेतं परमायु नाम, कथं वा तं परिच्छिन्नपमाणन्ति? वुच्चते– यो तेसं तेसं सत्तानं तस्मिं तस्मिं भवविसेसे पुरिमसिद्धभवपत्थनूपनिस्सयवसेन सरीरावयववण्णसण्ठानपमाणादिविसेसा विय तंतंगतिनिकायादीसु येभुय्येन नियतपरिच्छेदो गब्भसेय्यककामावचरदेवरूपावचरसत्तानं सुक्कसोणितउतुभोजनादि उतुआदिपच्चयुप्पन्नपच्चयूपत्थम्भितो विपाकपबन्धस्स ठितिकालनियमो, सो यथासकं खणमत्तावट्ठायीनम्पि अत्तनो सहजातानं रूपारूपधम्मानं ठपनाकारवुत्तिताय पवत्तकानि रूपारूपजीवितिन्द्रियानि यस्मा न केवलं नेसं खणठितिया एव कारणभावेन अनुपालकानि, अथ खो याव भवङ्गुपच्छेदा अनुपबन्धस्स अविच्छेदहेतुभावेनापि, तस्मा आयुहेतुकत्ता कारणूपचारेन आयु, उक्कंसपरिच्छेदवसेन परमायूति च वुच्चति। तं पन देवानं नेरयिकानं उत्तरकुरुकानञ्च नियतपरिच्छेदं, उत्तरकुरुकानं पन एकन्तनियतपरिच्छेदमेव, अवसिट्ठमनुस्सपेततिरच्छानानं पन चिरट्ठितिसंवत्तनिककम्मबहुले काले तंकम्मसहितसन्तानजनितसुक्कसोणितप्पच्चयानं तंमूलकानञ्च चन्दसूरियसमविसमपरिवत्तनादिजनितउतुआहारादिसमविसम पच्चयानं वसेन चिराचिरकालतो अनियतपरिच्छेदं, तस्स च यथा पुरिमसिद्धभवपत्थनावसेन तंतंगतिनिकायादीसु वण्णसण्ठानादिविसेसनियमो सिद्धो दस्सनानुस्सवादीहि, तथा आदितो गहणसिद्धिया। एवं तासु तासु उपपत्तीसु निब्बत्तसत्तानं येभुय्येन समप्पमाणट्ठितिकालं दस्सनानुस्सवेहि लभित्वा तं परमतं अज्झोसाय पवत्तितभवपत्थनावसेन आदितो परिच्छेदनियमो वेदितब्बो। यस्मा पन कम्मं तासु तासु उपपत्तीसु यथा तंतंउपपत्तिनियतवण्णादिनिब्बत्तने समत्थं, एवं नियतायुपरिच्छेदासु उपपत्तीसु परिच्छेदातिक्कमेन विपाकनिब्बत्तने समत्थं न होति, तस्मा वुत्तं **"आयुप्पमाणेनेव चवन्ती"**ति। यस्मा पन उपत्थम्भकसहायेहि अनुपालकप्पच्चयेहि उपादिन्नकक्खन्धानं पवत्तेतब्बाकारो अत्थतो परमायु, तस्स यथावुत्तपरिच्छेदानतिक्कमनतो सतिपि कम्मावसेसे ठानं न सम्भवति, तेन वुत्तं **"अत्तनो पुञ्ञबलेनेव ठातुं न सक्कोती"**ति। **कप्पं वाति** असङ्ख्येय्यकप्पं वा तस्स उपड्ढं वा उपड्ढकप्पतो ऊनमधिकं वाति विकप्पनत्थो **वा**-सद्दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. **अनभिरती**ति एकविहारेन अनभिरति। सा पन यस्मा अञ्ञेहि समागमिच्छा होति, तेन वुत्तं **"अपरस्सापि सत्तस्स आगमनपत्थना"**ति। पियवत्थुविरहेन पियवत्थुअलाभेन वा चित्तविघातो **उक्कण्ठिता,** सा अत्थतो दोमनस्सचित्तुप्पादो येवाति आह **"पटिघसम्पयुत्ता"**ति। दीघरत्तं झानरतिया रममानस्स वुत्तप्पकारं अनभिरतिनिमित्तं उप्पन्ना "मम"न्ति च "अह"न्ति च गहणस्स कारणभूता तण्हादिट्ठियो इध **परितस्सना।** ता पन चित्तस्स पुरिमावत्थाय चलनं कम्पनन्ति आह **"उब्बिज्जना फन्दना"**ति। तेनेवाह **"तण्हातस्सनापि दिट्ठितस्सनापि वट्टती"**ति। यं पन अत्थुद्धारे "अहो वत अञ्ञेपि सत्ता इत्थत्तं आगच्छेय्युन्ति अयं तण्हातस्सना नामा"ति वुत्तं, तं दिट्ठितस्सनाय विसुं उदाहरणं दस्सेन्तेन तण्हातस्सनंयेव ततो निद्धारेत्वा वुत्तं, न पन तत्थ दिट्ठितस्सनाय अभावतोति दट्ठब्बं। **तासतस्सना** चित्तुत्रासो। **भयानक**न्ति भेरवारम्मणनिमित्तं बलवभयं। तेन सरीरस्स थद्धभावो **छम्भितत्तं भयं संवेग**न्ति एत्थ **भय**न्ति भङ्गानुपस्सनाय चिण्णन्ते सब्बसङ्खारतो भायनवसेन उप्पन्नं भयञाणं। **संवेग**न्ति सहोत्तप्पञाणं, ओत्तप्पमेव वा। **सन्तास**न्ति आदीनवनिब्बिदानुपस्सनाहि सङ्खारेहि सन्तस्सनञाणं। सह ब्यायति पवत्तति, दोसं वा छादेतीति सहब्यो, सहायो, तस्स भावं **सहब्यतं।**

४२. **अभिभवित्वा ठितो** इमे सत्तेति अधिप्पायो। यस्मा पन सो पासंसभावेन उत्तमभावेन च "ते सत्ते अभिभवित्वा ठितो"ति अत्तानं मञ्ञति, तस्मा वुत्तं **"जेट्ठकोहमस्मी"**ति। **अञ्ञदत्थु दसो**ति दस्सने अन्तरायाभाववचनेन, ञेय्यविसेसपरिग्गाहिकभावेन च अनावरणदस्सावितं पटिजानातीति आह **"सब्बं पस्सामीति अत्थो"**ति। **भूतभब्यान**न्ति अहेसुन्ति भूता, भवन्ति भविस्सन्तीति भब्या, अट्ठकथायं पन वत्तमानकालवसेनेव भब्य-सद्दस्स अत्थो दस्सितो। **पठमचित्तक्खणे**ति पटिसन्धिचित्तक्खणे। किञ्चापि सो ब्रह्मा अनवट्ठितदस्सनत्ता पुथुज्जनस्स पुरिमतरजातिपरिचितम्पि कम्मस्सकतञ्ञाणं विस्सज्जेत्वा विकुब्बनिद्धिवसेन चित्तुप्पत्तिमत्तपटिबद्धेन सत्तनिम्मानेन विपल्लट्ठो "अहं इस्सरो कत्ता निम्माता"तिआदिना इस्सरकुत्तदस्सनं पक्खन्दमानो अभिनिविसनवसेनेव पतिट्ठितो, न पतिट्ठापनवसेन "तस्स एवं होती"ति वुत्तत्ता, पतिट्ठापनक्कमेनेव पन तस्स सो अभिनिवेसो जातोति दस्सनत्थं **"कारणतो साधेतुकामो"**ति, **"पटिञ्ञं कत्वा"**ति च वुत्तं। तेनाह भगवा "तं किस्स हेतू"तिआदि। तत्थ **मनोपणिधी**ति मनसा एव पत्थना, तथा चित्तप्पवत्तिमत्तमेवाति अत्थो, **इत्थभाव**न्ति इदप्पकारतं। यस्मा पन इत्थन्ति ब्रह्मत्तभावो इधाधिप्पेतो, तस्मा **"ब्रह्मभावन्ति अत्थो"**ति वुत्तं। ननु च देवानं उपपत्तिसमनन्तरं "इमिस्सा नाम गतिया चवित्वा इमिना नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मुना इधूपपन्ना''ति पच्चवेक्खणा होतीति? सच्चं होति, सा पन पुरिमजातीसु कम्मस्सकतञ्ञाणे सम्मदेव निविट्ठज्झासयानं। इमे पन सत्ता पुरिमासुपि जातीसु इस्सरकुत्तदस्सनवसेन विनिबन्धाभिनिवेसा अहेसुन्ति दट्ठब्बं। तेन वुत्तं **''इमिना मय''**न्तिआदि।

४३. ईसतीति ईसो, अभिभूति अत्थो। महा ईसो महेसो, सुप्पतिट्ठमहेसताय पन परेहि ''महेसो''ति अक्खातब्बताय महेसक्खो, अतिसयेन महेसक्खो **महेसक्खतरोति** वचनत्थो दट्ठब्बो। यस्मा पन सो महेसक्खभावो आधिपतेय्यपरिवारसम्पत्तिया विञ्ञायति, तस्मा **''इस्सरियपरिवारवसेन महायसतरो''**ति वुत्तं।

४४. **इधेव आगच्छतीति** इमस्मिं मनुस्सलोके एव पटिसन्धिवसेन आगच्छति। **यं अञ्ञतरो सत्तोति** एत्थ **यन्ति** निपातमत्तं, करणे वा पच्चत्तनिद्देसो, येन ठानेनाति अत्थो, किरियापरामसनं वा। **इत्थत्तं आगच्छतीति** एत्थ यदेतं इत्थत्तस्स आगमनं, एतं ठानं विज्जतीति अत्थो। एस नयो **''पब्बजति, चेतोसमाधिं फुसति, पुब्बेनिवासं अनुस्सरती''**ति एतेसुपि पदेसु। ''ठानं खो पनेतं भिक्खवे विज्जति, यं अञ्ञतरो सत्तो''ति इमञ्हि पदं ''पब्बजती''तिआदीहि पदेहि पच्चेकं योजेतब्बन्ति।

४५. खिड्डाय पदुस्सन्तीति खिड्डापदोसिनो, खिड्डापदोसिनो एव **खिड्डापदोसिका,** खिड्डापदोसो वा एतेसं अत्थीति **खिड्डापदोसिका।** अतिक्कन्तवेलं **अतिवेलं,** आहारूपभोगकालं अतिक्कमित्वाति अत्थो। मेथुनसम्पयोगेन उप्पज्जनकसुखं **केळिहस्ससुखं रतिधम्मो** रतिसभावो। **आहारन्ति** एत्थ को देवानं आहारो, का आहारवेलाति? सब्बेसम्पि कामावचरदेवानं सुधा आहारो, सा हेट्ठिमेहि उपरिमानं पणीततमा होति, तं यथासकं दिवसवसेन दिवसे दिवसे भुञ्जन्ति। केचि पन ''बिळारपदप्पमाणं सुधाहारं भुञ्जन्ति, सो जिव्हाय ठपितमत्तो याव केसग्गनखग्गा कायं फरति, तेसंयेव दिवसवसेन सत्तदिवसे यापनसमत्थो च होती''ति वदन्ति। **''निरन्तरं खादन्ता पिवन्ता''**ति इदं परिकप्पनवसेन वुत्तं। **कम्मजतेजस्स बलवभावो** उळारपुञ्ञनिब्बत्तत्ता, उळारगरुसिनिद्धसुधाहारजीरणतो च। **करजकायस्स मन्दभावो** मुदुसुखुमालभावतो। तेनेव हि भगवा इन्दसालगुहायं पकतिपथवियं सण्ठातुं असक्कोन्तं सक्कं देवराजानं ''ओळारिकं कायं अधिट्ठेही''ति आह। **तेसन्ति** मनुस्सानं। **वत्थुन्ति** करजकायं। **केचीति** अभयगिरिवासिनो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७. **मनेना**ति इस्सापकतत्ता पदुट्ठेन मनसा। उसूयावसेन मनसोव पदोसो मनोपदोसो, सो एतेसं अत्थि विनासहेतुभूतोति **मनोपदोसिका**ति एवं वा एत्थ अत्थो दट्ठब्बो। **अकुद्धो रक्खती**ति कुद्धस्स सो कोधो इतरस्मिं अकुज्झन्ते अनुपादानो एकवारमेव उप्पत्तिया अनासेवनो चावेतुं न सक्कोति उदकन्तं पत्वा अग्गि विय निब्बायति, तस्मा अकुद्धो तं चवनतो रक्खति, उभोसु पन कुद्धेसु भिय्यो भिय्यो अञ्ञमञ्ञम्हि परिवड्ढनवसेन तिखिणसमुदाचारो निस्सयदहनरसो कोधो उप्पज्जमानो हदयवत्थुं निदहन्तो अच्चन्तसुखुमालकरजकायं विनासेति, ततो सकलोपि अत्तभावो अन्तरधायति। तेनाह **"उभोसु पना"**तिआदि। तथा चाह भगवा "अञ्ञमञ्ञं पदुट्ठचित्ता किलन्तकाया...पे०... चवन्ती"ति। **धम्मता**ति धम्मनियामो। सो च तेसं करजकायस्स मन्दताय, तथाउप्पज्जनककोधस्स च बलवताय ठानसो चवनं, तेसं रूपारूपधम्मानं सभावोति अधिप्पायो।

४९. **चक्खादीनं भेदं पस्सती**ति विरोधिपच्चयसन्निपाते विकारापत्तिदस्सनतो, अन्ते च अदस्सनूपगमनतो विनासं पस्सति ओळारिकत्ता रूपधम्मभेदस्स। **पच्चयं दत्वा**ति अनन्तरपच्चयादिवसेन पच्चयो हुत्वा। **"बलवतर"**न्ति चित्तस्स लहुतरं भेदं सन्धाय वुत्तं। तथा हि एकस्मिं रूपे धरन्तेयेव सोळस चित्तानि भिज्जन्ति। **भेदं न पस्सती**ति खणे खणे भिज्जन्तम्पि चित्तं परस्स अनन्तरपच्चयभावेनेव भिज्जतीति पुरिमचित्तस्स अभावं पटिच्छादेत्वा विय पच्छिमचित्तस्स उप्पत्तितो भावपक्खो बलवतरो पाकटो च होति, न अभावपक्खोति चित्तस्स विनासं न पस्सति, अयञ्च अत्थो अलातचक्कदस्सनेन सुपाकटो विञ्ञायति। यस्मा पन तक्कीवादी नानत्तनयस्स दूरतरताय एकत्तनयस्सपि मिच्छागहितत्ता "यदेविदं विञ्ञाणं सब्बदापि एकरूपेन पवत्तति, अयमेव अत्ता निच्चो"तिआदिना अभिनिवेसं जनेति, तस्मा वुत्तं **"सो तं अपस्सन्तो"**तिआदि।

अन्तानन्तवादवण्णना

५३. **अन्तानन्तिका**ति एत्थ अमति गच्छति एत्थ सभावो ओसानन्ति अन्तो, मरियादा। तप्पटिसेधेन अनन्तो, अन्तो च अनन्तो च अन्तानन्तो च नेवन्तानानन्तो च अन्तानन्ता सामञ्ञनिद्देसेन, एकसेसेन वा "नामरूपपच्चया सळायतन"न्तिआदीसु (म० नि० ३.१७६; सं० नि० १.२.१; उदा० १) विय। कस्स पन अन्तानन्तोति? लोकीयति संसारनिस्सरणत्थिकेहि दिट्ठिगतिकेहि, लोकीयन्ति वा एत्थ तेहि पुञ्ञापुञ्ञं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तब्बिपाको चाति लोकोति सङ्ख्यं गतस्स अत्तनो। तेनाह भगवा "अन्तानन्तं लोकस्स पञ्ञपेन्ती"ति। को पन एसो अत्ताति? झानविसयभूतकसिणनिमित्तं। तत्थ हि अयं दिट्ठिगतिको लोकसञ्ञी। तथा च वुत्तं "तं लोकोति गहेत्वा"ति। केचि पन "झानं तंसम्पयुत्तधम्मा च इध 'अत्ता, लोको'ति च गहिता"ति वदन्ति। अन्तानन्तसहचरितवादो अन्तानन्तो, यथा "कुन्ता पचरन्ती"ति अन्तानन्तसन्निस्सयो वा यथा "मञ्चा घोसन्ती"ति। सो एतेसं अत्थीति **अन्तानन्तिका।** ते पन यस्मा यथावुत्तनयेन अन्तानन्तो वादो दिट्ठि एतेसन्ति **"अन्तानन्तवादा"**ति वुच्चन्ति। तस्मा अट्ठकथायं "अन्तानन्तवादा"ति वत्वा "अन्तं वा"तिआदिना अत्थो विभत्तो।

एत्थाह– युत्तं ताव पुरिमानं तिण्णं वादीनं अन्तत्तञ्च अनन्तत्तञ्च अन्तानन्तत्तञ्च आरब्भ पवत्तवादत्ता अन्तानन्तिकत्तं, पच्छिमस्स पन तदुभयपटिसेधनवसेन पवत्तवादत्ता कथ अन्तानन्तिकत्तन्ति? तदुभयपटिसेधनवसेन पवत्तवादत्ता एव। यस्मा अन्तानन्तपटिसेधवादोपि अन्तानन्तविसयो एव तं आरब्भ पवत्तत्ता। एतदत्थंयेव हि सन्धाय अट्ठकथायं "आरब्भ पवत्तवादा"ति वुत्तं। अथ वा यथा ततियवादे देसभेदवसेन एकस्सेव अन्तवन्तता अनन्तता च सम्भवति, एवं तक्कीवादेपि कालभेदवसेन उभयसम्भवतो अञ्ञमञ्ञपटिसेधेन उभयञ्ञेव वुच्चति। कथं? अन्तवन्ततापटिसेधेन हि अनन्तता वुच्चति, अनन्ततापटिसेधेन च अन्तवन्तता, अन्तानन्तानञ्च न ततियवादभावो कालभेदस्स अधिप्पेतत्ता। इदं वुत्तं होति– यस्मा अयं लोकसञ्ञितो अत्ता अधिगतविसेसेहि महेसीहि अनन्तो कदाचि सक्खिदिट्ठोति अनुसुय्यति, तस्मा नेवन्तवा। यस्मा पन तेहियेव कदाचि अन्तवा सक्खिदिट्ठोति अनुसुय्यति, तस्मा न पन अनन्तोति। यथा च अनुस्सुतितक्कीवसेन, एवं जातिस्सरतक्की आदीनञ्च वसेन यथासम्भवं योजेतब्बं। अयञ्हि तक्किको अवट्ठितभावपुब्बकत्ता पटिभागनिमित्तानं वड्ढितभावस्स वड्ढितकालवसेन अप्पच्चक्खकारिताय अनुस्सवादिमत्ते ठत्वा "नेवन्तवा"ति पटिक्खिपति। अवड्ढितकालवसेन पन "न पनानन्तो"ति, न पन अन्ततानन्ततानं अच्चन्तमभावेन यथा तं "नेवसञ्ञिनासञ्ञी"ति। पुरिमवादत्तयपटिक्खेपो च अत्तना यथाधिप्पेतप्पकारविलक्खणताय तेसं, अवस्सञ्चेतं एवं विञ्ञातब्बं, अञ्ञथा विक्खेपपक्खंयेव भजेय्य चतुत्थवादो। न हि अन्तताअनन्ततातदुभयविनिमुत्तो अत्तनो पकारो अत्थि, तक्कीवादी च युत्तिमग्गको, कालभेदवसेन च तदुभयं एकस्मिम्पि न न युज्जतीति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केचि पन यदि पनायं अत्ता अन्तवा सिया, दूरदेसे उपपज्जनानुस्सरणादि किच्चनिप्फत्ति न सिया। अथ अनन्तो, इध ठितस्स देवलोकनिरयादीसु सुखदुक्खानुभवनम्पि सिया। सचे पन अन्तवा च अनन्तो च, तदुभयदोससमायोगो। तस्मा "अन्तवा, अनन्तो"ति च अब्याकरणीयो अत्ताति एवं तक्कनवसेन चतुत्थवादप्पवत्तिं वण्णेन्ति। एवम्पि युत्तं ताव पच्छिमवादीद्वयस्स अन्तानन्तिकत्तं अन्तानन्तानं वसेन उभयविसयत्ता तेसं वादस्स। पुरिमवादीद्वयस्स पन कथं विसुं अन्तानन्तिकत्तन्ति ? उपचारवुत्तिया। समुदितेसु हि अन्तानन्तवादीसु पवत्तमानो अन्तानन्तिक-सद्दो तत्थ निरुळ्हताय पच्चेकम्पि अन्तानन्तिकवादीसु पवत्तति, यथा अरूपज्झानेसु पच्चेकं अट्ठविमोक्खपरियायो, यथा च लोके सत्तासयोति। अथ वा अभिनिवेसतो पुरिमकालप्पवत्तिवसेन अयं तत्थ वोहारो कतो। तेसञ्हि दिट्ठिगतिकानं तथारूपचेतोसमाधिसमधिगमतो पुब्बकालं "अन्तवा नु अयं लोको, अनन्तो नू"ति उभयाकारावलम्बिनो परिवितक्कस्स वसेन निरुळ्हो अन्तानन्तिकभावो विसेसलाभेन तत्थ उप्पन्नेपि एकंसग्गाहे पुरिमसिद्धरुळ्हिया वोहरीयतीति।

५४-६०. **वुत्तनयेना**ति "तक्कयतीति तक्की"तिआदिना (दी० नि० अट्ठ० १.३४) सद्दतो, "चतुब्बिधो तक्की"तिआदिना (दी० नि० अट्ठ० १.३४) अत्थतो च सस्सतवादे वुत्तविधिना। **दिट्ठपुब्बानुसारेना**ति दस्सनभूतेन विञ्ञाणेन उपलद्धपुब्बस्स अन्तवन्तादिनो अनुस्सरणेन। एवञ्च कत्वा अनुस्सुतितक्कीसुद्धतक्कीनम्पि इध सङ्गहो सिद्धो होति। अथ वा दिट्ठग्गहणेनेव "नच्चगीतवादितविसूकदस्सना"तिआदीसु (दी० नि० १०, १९४) विय सुतादीनम्पि गहितता वेदितब्बा। "अन्तवा"तिआदिना इच्छितस्स अत्तनो सब्बदा भावपरामसनवसेनेव इमेसं वादानं पवत्तनतो सस्सतदिट्ठिसङ्गहो दट्ठब्बो। तथा हि वक्खति "सेसा सस्सतदिट्ठियो"ति (दी० नि० अट्ठ० ९७-९८)।

अमराविक्खेपवादवण्णना

६१. **न मरती**ति न उच्छिज्जति। "एवम्पि मे नो"तिआदिना **विविधो** नानप्पकारो **खेपो** परेन परवादीनं खिपनं **विक्खेपो**। अमराय दिट्ठिया वाचाय च विक्खिपन्तीति वा अमराविक्खेपिनो। अमराविक्खेपिनो एव **अमराविक्खेपिका। इतो चितो च सन्धावति** एकस्मिं सभावे अनवट्ठानतो। अमरा विय विक्खिपन्तीति वा पुरिमनयेनेव सद्दत्थो दट्ठब्बो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. विक्खेपवादिनो उत्तरिमनुस्सधम्मे, अकुसलधम्मेपि सभावभेदवसेनेव ञातुं ञाणबलं नत्थीति कुसलाकुसलपदानं कुसलाकुसलकम्मपथवसेनेव अत्थो। पठमनयवसेनेव अपरियन्तविक्खेपताय अमराविक्खेपं विभावेतुं **"एवन्तिपि मे नोति अनियमितविक्खेपो"**ति वुत्तं। तत्थ **अनियमितविक्खेपो**ति सस्सतादीसु एकस्मिम्पि पकारे अट्ठत्वा विक्खेपकरणं, परवादिना यस्मिं किस्मिञ्चि पुच्छिते पकारे तस्स पटिक्खेपोति अत्थो। दुतियनयवसेन अमरासदिसाय अमराय विक्खेपं दस्सेतुं **"इदं कुसलन्ति वा पुट्ठो"**तिआदिमाह। अथ वा "एवन्तिपि मे नो"तिआदिना अनियमतोव सस्सतेकच्चसस्सतुच्छेदतक्कीवादानं पटिसेधनेन तं तं वादं पटिक्खिपतेव अपरियन्तविक्खेपवादत्ता अमराविक्खेपिनो। अत्तना पन अनवट्ठितवादत्ता न किस्मिञ्चि पक्खे अवतिट्ठतीति आह **"सयं पन...पे०... ब्याकरोती"**ति। इदानि कुसलादीनं अब्याकरणेन तमेव अनवट्ठानं विभावेति "इदं कुसलन्ति वा पुट्ठो"तिआदिना। तेनेवाह **"एकस्मिम्पि पक्खे न तिट्ठती"**ति।

६३. कुसलाकुसलं यथाभूतं अप्पजानन्तोपि येसमहं समयेन कुसलमेव "कुसल"न्ति, अकुसलमेव च "अकुसल"न्ति ब्याकरेय्यं, तेसु तथा ब्याकरणहेतु "अहो वत रे पण्डितो"ति सक्कारसम्मानं करोन्तेसु मम छन्दो वा रागो वा अस्साति एवम्पेत्थ अत्थो सम्भवति। **दोसो वा पटिघो वा**ति एत्थ वुत्तविपरियायेन योजेतब्बं। अट्ठकथायं पन अत्तनो पण्डितभावविसयानं रागादीनं वसेन योजना कता। **"छन्दरागद्वयं उपादान"**न्ति अभिधम्मनयेन वुत्तं। अभिधम्मे हि तण्हादिट्ठियोव "उपादान"न्ति आगता, सुत्तन्ते पन दोसोपि "उपादान"न्ति वुत्तो "कोधुपादानविनिबन्धा विघातं आपज्जन्ती"तिआदीसु। तेन वुत्तं **"उभयम्पि वा दळ्हग्गहणवसेन उपादान"**न्ति। **दळ्हग्गहणं** अमुञ्चनं। पटिघोपि हि उपनाहादिवसेन पवत्तो आरम्मणं न मुञ्चति। **विहननं** हिंसनं विबाधनं। रागोपि हि परिळाहवसेन सारद्धवुत्तिताय निस्सयं विबाधतीति। विनासेतुकामताय आरम्मणं गण्हातीति सम्बन्धो।

६४. पण्डिच्चेनाति पञ्ञाय। येन हि धम्मेन युत्तो "पण्डितो"ति वुच्चति, सो धम्मो पण्डिच्चं, तेन सुतचिन्तामयं पञ्ञं दस्सेति, न पाकतिककम्मनिब्बत्तं साभाविकपञ्ञं। कत-सद्दस्स किरियासामञ्ञवाचकत्ता "कतविज्जो"तिआदीसु विय कत-सद्दो ञाणानुयुत्ततं वदतीति आह **"विञ्ञातपरप्पवादा"**ति। सत्तधा भिन्नस्स वालग्गस्स अंसुकोटिवेधको **"वालवेधी"**ति अधिप्पेतो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६५-६. एत्थ च किञ्चापि पुरिमानम्पि तिण्णं कुसलादिधम्मसभावानवबोधतो अत्थेव मन्दभावो, तेसं पन अत्तनो कुसलादिधम्मानवबोधस्स अवबोधविसेसो अत्थि, तदभावा पच्छिमोयेव मन्दमोमूहभावेन वुत्तो। ननु च पच्छिमस्सापि "अत्थि परोलोको'ति इति चे मे अस्स, 'अत्थि परोलोको'ति इति ते नं ब्याकरेय्यं, एवन्तिपि मे नो"तिआदि (दी० नि० १.६५) वचनतो अत्तनो धम्मानवबोधस्स अवबोधो अत्थियेवाति? किञ्चापि अत्थि, न तस्स पुरिमानं विय अपरिञ्ञातधम्मब्याकरणनिबन्धनमुसावादादिभयपरिजिगुच्छनकारो अत्थि, अथ खो महामूळ्होयेव। अथ वा "एवन्तिपि मे नो"तिआदिना पुच्छाय विक्खेपकरणत्थं "अत्थि परोलोको'ति इति चे मं पुच्छसी"ति पुच्छाठपनमेव तेन दस्सीयति, न अत्तनो धम्मानवबोधोति अयमेव विसेसेन "मन्दो चेव मोमूहो चा"ति वुत्तो। तेनेव हि तथावादिनं सञ्जयं बेलट्ठपुत्तं आरब्भ "अयं वा इमेसं समणब्राह्मणानं सब्बमन्दो सब्बमूळ्हो"ति (दी० नि० १.१८१) वुत्तं। तत्थ "अत्थि परोलोको"ति सस्सतदस्सनवसेन सम्मादिट्ठिवसेन वा पुच्छा। "नत्थि परोलोको"ति नत्थिकदस्सनवसेन सम्मादस्सनवसेन वा पुच्छा। "अत्थि च नत्थि च परोलोको"ति उच्छेददस्सनवसेन सम्मादिट्ठिवसेन एव वा पुच्छा। "नेव अत्थि न नत्थि परोलोको"ति वुत्तप्पकारत्तयपटिक्खेपे सति पकारन्तरस्स असम्भवतो अत्थितानत्थिताहि नवत्तब्बाकारो परोलोकोति विक्खेपञ्ञेव पुरेक्खारेन सम्मादिट्ठिवसेन वा पुच्छा। सेसचतुक्कत्तयेपि वुत्तनयानुसारेन अत्थो वेदितब्बो। पुञ्ञसङ्खारत्तिको विय हि कायसङ्खारत्तिकेन पुरिमचतुक्कसङ्गहितो एव अत्थो। सेसचतुक्कत्तयेन अत्तपरामासपुञ्ञादि फलताचोदनानयेन सङ्गहितोति।

अमराविक्खेपिको सस्सतादीनं अत्तनो अरुच्चनताय सब्बत्थ "एवन्तिपि मे नो"तिआदिना विक्खेपञ्ञेव करोति। तत्थ "एवन्तिपि मे नो"तिआदि तत्थ तत्थ पुच्छिताकारपटिसेधनवसेन विक्खिपनाकारदस्सनं। ननु च विक्खेपवादिनो विक्खेपपक्खस्स अनुजाननं विक्खेपपक्खे अवट्ठानं युत्तरूपन्ति? न, तत्थापि तस्स सम्मूळ्हत्ता, पटिक्खेपवसेनेव च विक्खेपवादस्स पवत्तनतो। तथा हि सञ्चयो बेलट्ठपुत्तो रञ्ञा अजातसत्तुना सन्दिट्ठिकं सामञ्ञफलं पुट्ठो परलोकत्तिकादीनं पटिसेधनमुखेन विक्खेपं ब्याकासि।

एत्थाह – ननु चायं सब्बोपि अमराविक्खेपिको कुसलादयो धम्मे, परलोकत्तिकादीनि च यथाभूतं अनवबुज्झमानो तत्थ तत्थ पञ्हं पुट्ठो पुच्छाय विक्खेपनमत्तं आपज्जति, तस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कथं दिट्ठिगतिकभावो। न हि अवत्तुकामस्स विय पुच्छितमत्थमजानन्तस्स विक्खेपकरणमत्तेन दिट्ठिगतिकता युत्ताति? वुच्चते– न हेव खो पुच्छाय विक्खेपकरणमत्तेन तस्स दिट्ठिगतिकता, अथ खो मिच्छाभिनिवेसवसेन। सस्सताभिनिवेसेन मिच्छाभिनिविट्ठोयेव हि पुग्गलो मन्दबुद्धिताय कुसलादिधम्मे परलोकत्तिकादीनि च याथावतो अप्पटिपज्जमानो अत्तना अविञ्ञातस्स अत्थस्स परं विञ्ञापेतुं असक्कुणेय्यताय मुसावादादिभयेन च विक्खेपं आपज्जतीति। तथा हि वक्खति "यासं सत्तेव उच्छेददिट्ठियो, सेसा सस्सतदिट्ठियो"ति (दी० नि० अट्ठ० १.९७-९८) अथ वा पुञ्ञपापानं तब्बिपाकानञ्च अनवबोधेन असद्दहनेन च तब्बिसयाय पुच्छाय विक्खेपकरणंयेव सुन्दरन्ति खन्तिं रुचिं उप्पादेत्वा अभिनिविसन्तस्स उप्पन्ना विसुंयेवेसा एका दिट्ठि सत्तभङ्गदिट्ठि वियाति दट्ठब्बं। तथा च वुत्तं "परियन्तरहिता दिट्ठिगतिकस्स दिट्ठि चेव वाचा चा"ति (दी० नि० अट्ठ० १.६१)। कथं पनस्सा सस्सतदिट्ठिसङ्गहो? उच्छेदवसेन अनभिनिवेसतो। नत्थि कोचि धम्मानं यथाभूतवेदी विवादबहुलत्ता लोकस्स, "एवमेव"न्ति पन सद्दन्तरेन "धम्मनिज्झानना अनादिकालिका लोके"ति गाहवसेन सस्सतलेसोपेत्थ लब्भतियेव।

अधिच्चसमुप्पन्नवादवण्णना

६७. अधिच्च यदिच्छकं यं किञ्चि कारणं, कस्सचि बुद्धिपुब्बं वा विना समुप्पन्नोति अत्तलोकसञ्ञितानं खन्धानं अधिच्चुप्पत्तिआकारारम्मणं दस्सनं तदाकारसन्निस्सयेन पवत्तितो, तदाकारसहचरितताय च "अधिच्चसमुप्पन्न"न्ति वुच्चति यथा "मञ्चा घोसन्ति, कुन्ता पचरन्ती"ति च इममत्थं दस्सेन्तो आह **"अधिच्चसमुप्पन्नो अत्ता च लोको चाति दस्सनं अधिच्चसमुप्पन्न"**न्ति।

६८-७३. देसनासीसन्ति देसनाय जेट्ठकभावेन गहणं, तेन सञ्ञंयेव धुरं कत्वा भगवता अयं देसना कता, न पन तत्थ अञ्ञेसं अरूपधम्मानं अत्थिभावतोति दस्सेति। तेनेवाह **"अचित्तुप्पादा"**तिआदि। भगवा हि यथा लोकुत्तरधम्मं देसेन्तो समाधिं पञ्ञं वा धुरं करोति, एवं लोकियधम्मं देसेन्तो चित्तं सञ्ञं वा धुरं करोति। तत्थ "यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति (ध० स० २७७) पञ्चङ्गिको सम्मासमाधि [दी० नि० ३.३५५ (ख)] पञ्चञाणिको सम्मासमाधि, [दी० नि० ३.३५५ (ज); विभं० २.८०४] पञ्ञाय चस्स दिस्वा आसवा परिक्खीणा होन्ती"ति (म० नि० १.२७१) तथा "यस्मिं समये

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति, (ध० स० १) किंचित्तो त्वं भिक्खु (पारा० १४६, १८०) मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, (ध० प० १, २; नेत्ति० ९०; पेटको० ८३) सन्ति भिक्खवे सत्ता नानत्तकाया नानत्तसञ्ञिनो, (दी० नि० ३.३३२, ३४२, ३५७; अ० नि० ३.९.२४; चूळनि० ८३) न नेवसञ्ञानासञ्ञायतन''न्तिआदीनि सुत्तानि (दी० नि० ३.३५८) एतस्स अत्थस्स साधकानि दट्ठब्बानि। **तित्थायतनेति** अञ्ञतित्थियसमये। तित्थिया हि उपपत्तिविसेसे विमुत्तिसञ्ञिनो, सञ्ञाविरागाविरागेसु आदीनवानिसंसदस्सिनो वा हुत्वा असञ्ञसमापत्तिं निब्बत्तेत्वा अक्खणभूमियं उप्पज्जन्ति, न सासनिका। **वायोकसिणे परिकम्मं कत्वाति** वायोकसिणे पठमादीनि तीणि झानानि निब्बत्तेत्वा ततियज्झाने चिण्णवसी हुत्वा ततो वुट्ठाय चतुत्थज्झानाधिगमाय परिकम्मं कत्वा। तेनेवाह **''चतुत्थज्झानं निब्बत्तेत्वा''**ति।

कस्मा पनेत्थ वायोकसिणेयेव परिकम्मं वुत्तन्ति? वुच्चते– यथेव हि रूपपटिभागभूतेसु कसिणविसेसेसु रूपविभावनेन रूपविरागभावनासङ्खातो अरूपसमापत्तिविसेसो सच्छिकरीयति, एवं अपरिब्यत्तविग्गहताय अरूपपटिभागभूते कसिणविसेसे अरूपविभावनेन अरूपविरागभावनासङ्खातो रूपसमापत्तिविसेसो अधिगमीयतीति एत्थ ''सञ्ञा रोगो सञ्ञा गण्डो''तिआदिना (म० नि० ३.२४) ''धि चित्तं, धिब्बते तं चित्त''न्तिआदिना च नयेन अरूपप्पवत्तिया आदीनवदस्सनेन, तदभावे च सन्तपणीतभावसन्निट्ठानेन रूपसमापत्तिया अभिसङ्खरणं, रूपविरागभावना पन सद्धिं उपचारेन अरूपसमापत्तियो, तत्थापि विसेसेन पठमारुप्पज्झानं। यदि एवं ''परिच्छिन्नाकासकसिणेपी''ति वत्तब्बं। तस्सापि हि अरूपपटिभागता लब्भतीति? इच्छितमेवेतं केसञ्चि अवचनं पनेत्थ पुब्बाचरियेहि अग्गहितभावेन। यथा हि रूपविरागभावना विरज्जनीयधम्मभावमत्तेन परिनिप्फन्ना, विरज्जनीयधम्मपटिभागभूते च विसयविसेसे पातुभवति, एवं अरूपविरागभावनापीति वुच्चमाने न कोचि विरोधो, तित्थियेहेव पन तस्सा समापत्तिया पटिपज्जितब्बताय, तेसञ्च विसयपथेसु'पनिबन्धनस्सेव तस्स झानस्स पटिपत्तितो दिट्ठिवन्तेहि पुब्बाचरियेहि चतुत्थेयेव भूतकसिणे अरूपविरागभावनापरिकम्मं वुत्तन्ति दट्ठब्बं। किञ्च वण्णकसिणेसु विय पुरिमभूतकसिणत्तयेपि वण्णपटिच्छायाव पण्णत्ति आरम्मणं झानस्स लोकवोहारानुरोधेनेव पवत्तितो। एवञ्च कत्वा विसुद्धिमग्गे (विसुद्धि० १.५७) पथवीकसिणस्स आदासचन्दमण्डलूपमावचनञ्च समत्थितं होति, चतुत्थं पन भूतकसिणं भूतप्पटिच्छायमेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झानस्स गोचरभावं गच्छतीति तस्सेव अरूपपटिभागता युत्ताति वायोकसिणेयेव परिकम्मं वुत्तन्ति वेदितब्बं।

इधेवाति पञ्चवोकारभवेयेव। **तत्था**ति असञ्ञभवे। यदि रूपक्खन्धमत्तमेव असञ्ञभवे पातुभवति, कथमरूपसन्निस्सयेन विना तत्थ रूपं पवत्तति, कथं पन रूपसन्निस्सयेन विना अरूपधातुयं अरूपं पवत्तति, इदम्पि तेन समानजातियमेव। कस्मा? इधेव अदस्सनतो। यदि एवं कबळीकाराहारेन विना रूपधातुयं रूपेन न पवत्तितब्बं, किं कारणं? इधेव अदस्सनतो। अपि च यथा यस्स चित्तसन्तानस्स निब्बत्तिकारणं रूपे अविगततण्हं, तस्स सह रूपेन सम्भवतो रूपं निस्साय पवत्ति, यस्स पन निब्बत्तिकारणं रूपे विगततण्हं, तस्स विना रूपेन रूपनिरपेक्खताय कारणस्स, एवं यस्स रूपप्पबन्धस्स निब्बत्तिकारणं विगततण्हं अरूपे, तस्स विना अरूपेन पवत्ति होतीति असञ्ञभवे रूपक्खन्धमत्तमेव निब्बत्तति। कथं पन तत्थ केवलो रूपप्पबन्धो पच्चुप्पन्नपच्चयरहितो चिरकालं पवत्ततीति पच्चेतब्बं, कित्तकं वा कालं पवत्ततीति चोदनं मनसि कत्वा आह **"यथा नाम जियावेगुक्खित्तो सरो"**तिआदि, तेन न केवलमागमोयेव अयमेत्थ युत्तीति दस्सेति। **तत्तकमेव काल**न्ति उक्कंसतो पञ्च महाकप्पसतानिपि तिट्ठन्ति असञ्ञसत्ता। **झानवेगे**ति असञ्ञसमापत्तिपरिक्खते कम्मवेगे। **अन्तरधायती**ति पच्चयनिरोधेन निरुज्झति नप्पवत्तति।

इधाति कामभवे। कथं पन अनेककप्पसतसमतिक्कमेन चिरनिरुद्धतो विञ्ञाणतो इध विञ्ञाणं समुप्पज्जति। न हि निरुद्धे चक्खुम्हि चक्खुविञ्ञाणमुप्पज्जमानं दिट्ठन्ति? नयिदमेकन्ततो दट्ठब्बं। चिरनिरुद्धम्पि हि चित्तं समानजातिकस्स अन्तरानुप्पज्जनतो अनन्तरपच्चयमत्तं होतियेव, न बीजं, बीजं पन कम्मं। तस्मा कम्मतो बीजभूततो आरम्मणादीहि पच्चयेहि असञ्ञभवतो चुतानं कामधातुया उपपत्तिविञ्ञाणं होतियेव। तेनाह **"इध पटिसन्धिसञ्ञा उप्पज्जती"**ति। एत्थ च यथा नाम उतुनियामेन पुप्फग्गहणे नियतकालानं रुक्खानं वेखे दिन्ने वेखबलेन न यथा नियामता होति पुप्फग्गहणस्स, एवमेव पञ्चवोकारभवे अविप्पयोगेन वत्तमानेसु रूपारूपधम्मेसु रूपारूपविरागभावनावेखे दिन्ने तस्स समापत्तिवेखबलस्स अनुरूपतो अरूपभवे असञ्ञभवे च यथाक्कमं रूपरहिता अरूपरहिता च खन्धानं पवत्ति होतीति वेदितब्बं। ननु एत्थ जातिसतसहस्सदससंवट्टादीनं मत्थके, अब्भन्तरतो वा पवत्ताय असञ्ञूपवत्तिया वसेन लाभीअधिच्चसमुप्पन्निकवादो लाभीसस्सतवादो विय अनेकभेदो सम्भवतीति? सच्चं सम्भवति, अनन्तरत्ता पन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आपन्नाय असञ्ञूपपत्तिया वसेन लाभीअधिच्चसमुप्पन्निकवादो नयदस्सनवसेन एकोव दस्सितोति दट्ठब्बं। अथ वा सस्सतदिट्ठिसङ्गहतो अधिच्चसमुप्पन्निकवादस्स सस्सतवादे आगतो सब्बो देसनानयो यथासम्भवं अधिच्चसमुप्पन्निकवादेपि गहेतब्बोति इमस्स विसेसस्स दस्सनत्थं भगवता लाभीअधिच्चसमुप्पन्निकवादो अविभजित्वा देसितो। अवस्सञ्च सस्सतदिट्ठिसङ्गहो अधिच्चसमुप्पन्निकवादस्स इच्छितब्बो संकिलेसपक्खे सत्तानं अज्झासयस्स दुविधत्ता। तथा हि वुत्तं अट्ठकथायं "सस्सतुच्छेददिट्ठि चा"ति। तथा च वक्खति "यासं सत्तेव उच्छेददिट्ठियो, सेसा सस्सतदिट्ठियो"ति (दी० नि० अट्ठ० १.९७-९८)।

ननु च अधिच्चसमुप्पन्निकवादस्स सस्सतदिट्ठिसङ्गहो न युत्तो। "अहञ्हि पुब्बे नाहोसि"न्तिआदिवसेन पवत्तनतो, अपुब्बसत्तपातुभावग्गाहत्ता, अत्तनो लोकस्स च सदाभावगाहिनी च सस्सतदिट्ठि "अत्थित्वेव सस्सतिसम"न्ति पवत्तनतो? नो न युत्तो अनागते कोटिअदस्सनतो। यदिपि हि अयं वादो "सोम्हि एतरहि अहुत्वा सन्तताय परिणतो"ति (दी० नि० १.६८) अत्तनो लोकस्स च अतीतकोटिपरामसनवसेन पवत्तो, तथापि वत्तमानकालतो पट्ठाय न तेसं कत्थचि अनागते परियन्तं पस्सति, विसेसेन च पच्चुप्पन्नानागतकालेसु परियन्तादस्सनपभावितो सस्सतवादो। यथाह "सस्सतिसमं तथेव ठस्सती"ति। यदि एवं इमस्स वादस्स, सस्सतवादादीनञ्च पुब्बन्तकप्पिकेसु सङ्गहो न युत्तो अनागतकालपरामसनवसेन पवत्तत्ताति? न, समुदागमस्स अतीतकोट्ठासिकत्ता। तथा हि नेसं समुप्पत्ति अतीतंसपुब्बेनिवासञाणेहि, तप्पटिरूपकानुस्सवादिप्पभावितत्तक्कनेहि च सङ्गहिताति, तथा चेव संवण्णितं। अथ वा सब्बत्थ अप्पटिहतञाणेन वादिवरेन धम्मस्सामिना निरवसेसतो अगतिञ्च गतिञ्च यथाभूतं सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदिता एता दिट्ठियो, तस्मा यावतिका दिट्ठियो भगवता देसिता, यथा च देसिता, तथा तथाव सन्निट्ठानतो सम्पटिच्छितब्बा, न एत्थ युत्तिविचारणा कातब्बा बुद्धविसयत्ता। अचिन्तेय्यो हि बुद्धविसयोति।

दुतियभाणवारवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपरन्तकप्पिकवादवण्णना

७४. "अपरन्ते ञाणं, अपरन्तानुदिट्ठिनो"तिआदीसु विय **अपर-**सद्दो इध अनागतकालवाचकोति आह **"अनागतकोट्ठाससङ्खात"**न्ति। **अपरन्तं कप्पेत्वा**तिआदीसु "पुब्बन्तं कप्पेत्वा"तिआदीसु वुत्तनयेन अत्थो वेदितब्बो। विसेसमत्तमेव वक्खाम।

सञ्ञीवादवण्णना

७५. उद्धमाघातनाति पवत्तो वादो उद्धमाघातनो, सो एतेसं अत्थीति **उद्धमाघातनिका**। यस्मा पन ते दिट्ठिगतिका "उद्धं मरणा अत्ता निब्बिकारो"ति वदन्ति, तस्मा **"उद्धमाघातना अत्तानं वदन्तीति उद्धमाघातनिका"**ति वुत्तं। सञ्ञीवादो एतेसं अत्थीति **सञ्ञीवादा** "बुद्धं अस्स अत्थीति बुद्धो"ति यथा। अथ वा सञ्ञीति पवत्तो वादो सञ्ञी सहचरणनयेन, सञ्ञी वादो एतेसन्ति **सञ्ञीवादा**।

७६-७७. रूपी अत्ताति एत्थ ननु रूपविनिमुत्तेन अत्तना भवितब्बं सञ्ञाय विय रूपस्सपि अत्तनियत्ता। न हि "सञ्ञी अत्ता"ति एत्थ सञ्ञा अत्ता। तेनेव हि **"तत्थ पवत्तसञ्ञञ्चस्स सञ्ञाति गहेत्वा"**ति वुत्तं। एवं सति कस्मा कसिणरूपं "अत्ता"ति गहेत्वा वुत्तन्ति? न खो पनेतं एवं दट्ठब्बं "रूपं अस्स अत्थीति रूपी"ति, अथ खो "रुप्पनसीलो रूपी"ति। रुप्पनञ्चेत्थ रूपसरिक्खताय कसिणरूपस्स वड्ढितावड्ढितकालवसेन विसेसापत्ति, सा च "नत्थी"ति न सक्का वत्तुं परित्तविपुलतादिविसेससब्भावतो। यदि एवं इमस्स वादस्स सस्सतदिट्ठिसङ्गहो न युज्जतीति? नो न युज्जति कायभेदतो उद्धं अत्तनो निब्बिकारताय तेन अधिप्पेतत्ता। तथा हि वुत्तं **"अरोगो परं मरणा"**ति। अथ वा "रूपं अस्स अत्थीति रूपी"ति वुच्चमानेपि न दोसो। कप्पनासिद्धेनपि हि भेदेन अभेदस्सापि निद्देसदस्सनतो, यथा "सिलापुत्तकस्स सरीर"न्ति। रुप्पनं वा रूपसभावो रूपं, तं एतस्स अत्थीति **रूपी,** अत्ता "रूपिनो धम्मा"तिआदीसु (ध० स० दुकमातिका ११) विय। एवञ्च कत्वा रूपसभावत्ता अत्तनो "रूपी अत्ता"ति वचनं ञायागतमेवाति **"कसिणरूपं 'अत्ता'ति गहेत्वा"**ति वुत्तं। नियतवादिताय कम्मफलपटिक्खेपतो नत्थि आजीवकेसु झानसमापत्तिलाभोति आह **"आजीवकादयो विय तक्कमत्तेनेव वा रूपी अत्ता"**ति। तथा हि कण्हाभिजातिआदीसु छळाभिजातीसु अञ्ञतरं अत्तानं एकच्चे आजीवका पटिजानन्ति। नत्थि एतस्स रोगो भङ्गोति **अरोगो**ति अरोग-सद्दस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निच्चपरियायता वेदितब्बा, रोगरहिततासीसेन वा निब्बिकारताय निच्चतं पटिजानाति दिट्ठिगतिकोति आह **"अरोगोति निच्चो"**ति।

कसिणुग्घाटिमाकासपठमारुप्पविञ्ञाणनत्थिभावआकिञ्चञ्ञायतनानि **अरूपसमापत्तिनिमित्तं** निम्बपण्णे तित्तकरसो विय सरीरपरिमाणो अरूपी अत्ता तत्थ तिट्ठतीति निगण्ठाति आह **"निगण्ठादयो विया"**ति। **मिस्सकगाहवसेना**ति रूपारूपसमापत्तीनं निमित्तानि एकज्झं कत्वा "एको अत्ता"ति, तत्थ पवत्तसञ्ञञ्चस्स "सञ्ञा"ति गहणवसेन। अयञ्हि दिट्ठिगतिको रूपारूपसमापत्तिलाभिताय तन्निमित्तं रूपभावेन अरूपभावेन च अत्ता उपतिट्ठति, तस्मा "रूपी च अरूपी चा"ति अभिनिवेसं जनेसि अज्झत्तवादिनो विय, तक्कमत्तेनेव वा रूपारूपधम्मानं मिस्सकग्गहणवसेन "रूपी अरूपी च अत्ता होती"ति।

तक्कगाहेनेवाति सङ्खारावसेससुखुमभावप्पत्तधम्मा विय अच्चन्तसुखुमभावप्पत्तिया सकिच्चसाधनासमत्थताय थम्भकुट्टहत्थपादादिसङ्खातो विय नेव रूपी, रूपसभावानतिवत्तनतो न अरूपीति एवं पवत्ततक्कगाहेन। अथ वा अन्तानन्तिकचतुक्कवादे विय अञ्ञमञ्ञपटिक्खेपवसेन अत्थो वेदितब्बो। केवलं पन तत्थ देसकालभेदवसेन ततियचतुत्थवादा दस्सिता, इध कालवत्थुभेदवसेनाति अयमेव विसेसोति। कालभेदवसेन चेत्थ ततियवादस्स पवत्ति रूपारूपनिमित्तानं सह अनुपट्ठानतो। चतुत्थवादस्स पन वत्थुभेदवसेन पवत्ति रूपारूपधम्मानं समूहतो "एको अत्ता"ति तक्कनवसेनाति तत्थ वुत्तनयानुसारेन वेदितब्बं।

दुतियचतुक्के यं वत्तब्बं, तं "अमति गच्छति एत्थ भावो ओसान"न्तिआदिना अन्तानन्तिकवादे वुत्तनयेन वेदितब्बं।

यदिपि अट्ठसमापत्तिलाभिनो दिट्ठिगतिकस्स वसेन समापत्तिभेदेन सञ्ञाभेदसम्भवतो "नानत्तसञ्ञी अत्ता"ति अयम्पि वादो समापन्नकवसेन लब्भति। तथापि समापत्तियं एकरूपेनेव सञ्ञाय उपट्ठानतो समापन्नकवसेन **"एकत्तसञ्ञी"**ति आह। तेनेवेत्थ समापन्नकग्गहणं कतं। एकसमापत्तिलाभिनो एव वा वसेन अत्थो वेदितब्बो। समापत्तिभेदेन सञ्ञाभेदसम्भवेपि बहिद्धा पुथुत्तारम्मणे सञ्ञानानत्तेन ओळारिकेन नानत्तसञ्ञितं दस्सेतुं **"असमापन्नकवसेन नानत्तसञ्ञी"**ति वुत्तं। **"परित्तकसिणवसेन परित्तसञ्ञी"**ति इमिना सतिपि सञ्ञाविनिमुत्ते धम्मे "सञ्ञायेव अत्ता"ति वदतीति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस्सितं होति। कसिणग्गहणञ्चेत्थ सञ्ञाय विसयदस्सनं, एवं **विपुलकसिणवसेना**ति एत्थापि अत्थो वेदितब्बो। एवञ्च कत्वा अन्तानन्तिकवादे, इध च अन्तानन्तिकचतुक्के पठमदुतियवादेहि इमेसं द्विन्नं वादानं विसेसो सिद्धो होति, अञ्ञथा वुत्तप्पकारेसु वादेसु पुब्बन्तापरन्तकप्पनभेदेन सतिपि केहिचि विसेसे केहिचि नत्थि येवाति। अथ वा "अङ्गुट्ठप्पमाणो अत्ता, यवप्पमाणो, अणुमत्तो वा अत्ता"ति आदिदस्सनवसेन परित्तो सञ्ञी चाति **परित्तसञ्ञी,** कपिलकणादादयो विय अत्तनो सब्बगतभावपटिजाननवसेन अप्पमाणो सञ्ञी चाति **अप्पमाणसञ्ञी**ति एवम्पेत्थ अत्थो दट्ठब्बो।

दिब्बचक्खुपरिभण्डताय यथाकम्मूपगञाणस्स दिब्बचक्खुपभावजनितेन यथाकम्मूपगञाणेन दिस्समानापि सत्तानं सुखादिसमङ्गिता दिब्बचक्खुनाव दिट्ठा होतीति आह **"दिब्बेन चक्खुना"**तिआदि। ननु च "एकन्तसुखी अत्ता"तिआदिवादानं अपरन्तदिट्ठिभावतो "निब्बत्तमानं दिस्वा"ति वचनं अनुपन्नन्ति? नानुपपन्नं, अनागतस्स एकन्तसुखिभावादिकस्स पकप्पनं पच्चुप्पन्नाय निब्बत्तिया दस्सनेन अधिप्पेतन्ति। तेनेवाह "निब्बत्तमानं दिस्वा 'एकन्तसुखी'ति गण्हाती"ति। एत्थ च तस्सं तस्सं भूमियं बहुलं सुखादिसहितधम्मप्पवत्तिदस्सनेन तेसं "एकन्तसुखी"ति गाहो दट्ठब्बो। अथ वा हत्थिदस्सकअन्धा विय दिट्ठिगतिका यं यदेव पस्सन्ति, तं तदेव अभिनिविस्स वोहरन्तीति न एत्थ युत्ति मग्गितब्बा।

असञ्ञी नेवसञ्ञीनासञ्ञीवादवण्णना

७८-८३. असञ्ञीवादे असञ्ञभवे निब्बत्तसत्तवसेन पठमवादो, "सञ्ञं अत्ततो समनुपस्सती"ति एत्थ वुत्तनयेन सञ्ञंयेव "अत्ता"ति गहेत्वा तस्स किञ्चनभावेन ठिताय अञ्ञाय सञ्ञाय अभावतो "असञ्ञी"ति पवत्तो दुतियवादो, तथा सञ्ञाय सह रूपधम्मे, सब्बे एव वा रूपारूपधम्मे "अत्ता"ति गहेत्वा पवत्तो ततियवादो, तक्कगाहवसेनेव चतुत्थवादो पवत्तो। तस्स पुब्बे वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो। दुतियचतुक्केपि कसिणरूपस्स असञ्जाननसभावताय असञ्ञीति कत्वा अन्तानन्तिकवादे वुत्तनयेनेव चत्तारोपि वेदितब्बा। तथा नेवसञ्ञीनासञ्ञीवादेपि नेवसञ्ञीनासञ्ञीभवे निब्बत्तसत्तस्सेव चुतिपटिसन्धीसु, सब्बत्थ वा पटुसञ्ञाकिच्चं कातुं असमत्थाय सुखुमाय सञ्ञाय अत्थिभावपटिजाननवसेन पठमवादो, असञ्ञीवादे वुत्तनयेन सुखुमाय सञ्ञाय वसेन, सञ्जाननसभावतापटिजानेन च दुतियवादादयो पवत्ताति एवं एकेन पकारेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सतिपि कारणपरियेसनस्स सम्भवे दिट्ठिगतिकवादानं अनादरणीयभावदस्सनत्थं **"तत्थ न एकन्तेन कारणं परियेसितब्ब"**न्ति वुत्तन्ति दट्ठब्बं। एतेसञ्च सञ्ञीअसञ्ञीनेवसञ्ञीनासञ्ञीवादानं "अरोगो परं मरणा"ति वचनतो सस्सतदिट्ठिसङ्गहो पाकटोयेव।

उच्छेदवादवण्णना

८४. असतो विनासासम्भवतो अत्थिभावनिबन्धनो उच्छेदोति वुत्तं **"सतो"**ति। यथा हेतुफलभावेन पवत्तमानानं सभावधम्मानं सतिपि एकसन्तानपरियापन्नानं भिन्नसन्ततिपतितेहि विसेसे हेतुफलानं परमत्थतो भिन्नसभावत्ता भिन्नसन्तानपतितानं विय अच्चन्तभेदसन्निट्ठानेन नानत्तनयस्स मिच्छागहणं उच्छेदाभिनिवेसस्स कारणं, एवं हेतुफलभूतानं धम्मानं विज्जमानेपि सभावभेदे एकसन्ततिपरियापन्नताय एकत्तनयेन अच्चन्तमभेदग्गहणम्पि कारणं एवाति दस्सेतुं "सत्तस्सा"ति वुत्तं पाळियं। सन्तानवसेन हि वत्तमानेसु खन्धेसु घनविनिब्भोगाभावेन सत्तगाहो, सत्तस्स च अत्थिभावगाहनिबन्धनो उच्छेदगाहो यावायं अत्ता न उच्छिज्जति, तावायं विज्जतियेवाति गहणतो, निरुदयविनासो वा इध उच्छेदोति अधिप्पेतोति आह **"उपच्छेद"**न्ति। विसेसेन नासो **विनासो,** अभावो। सो पन मंसचक्खुपञ्ञाचक्खूनं दस्सनपथातिक्कमोयेव होतीति आह **"अदस्सन"**न्ति। अदस्सने हि नास-सद्दो लोके निरुळ्होति। **भावविगम**न्ति सभावापगमं। यो हि निरुदयविनासवसेन उच्छिज्जति, न सो अत्तनो सभावेन तिट्ठतीति। **लाभी**ति दिब्बचक्खुञाणलाभी। **चुतिमत्तमेवा**ति सेक्खपुथुज्जनानम्पि चुतिमत्तमेव। **न उपपात**न्ति पुब्बयोगाभावेन, परिकम्माकरणेन वा उपपातं दट्ठुं न सक्कोति। **"अलाभी च को परलोकं न जानाती"**ति नत्थिकवादवसेन, महामूळ्हभावेनेव वा "इतो अञ्ञो परलोको अत्थी"ति अनवबोधमाह। एत्तकोयेव विसयो, यो यं इन्द्रियगोचरोति। अत्तनो धीतुया हत्थगण्हनकराजादि विय **कामसुखगिद्धताय** वा। **"न पुन विरुहन्ती"**ति पतितपण्णानं वण्टेन अप्पटिसन्धिकभावमाह। **एवमेव सत्ता**ति यथा पण्डुपलासो बन्धना पवुत्तो न पटिसन्धियति, एवं सब्बे सत्ता अप्पटिसन्धिकमरणमेव निगच्छन्तीति। जलपुब्बूळकूपमा हि सत्ताति तस्स लद्धि। **तथा**ति वुत्तप्पकारेन। लाभिनोपि चुतितो उद्धं अदस्सनेनेव इमा दिट्ठियो उप्पज्जन्तीति आह **"विकप्पेत्वा वा"**ति।

एत्थाह– यथा अमराविक्खेपिकवादा एकन्तअलाभीवसेनेव दस्सिता, यथा च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्धमाघातनिकसञ्ञीवादचतुक्को एकन्तलाभीवसेनेव, न एवमयं। अयं पन सस्सतेकच्चसस्सतवादादयो विय लाभीअलाभीवसेन पवत्तो। तथा हि वुत्तं **"तत्थ द्वे जना"**तिआदि। यदि एवं कस्मा सस्सतवादादिदेसनाहि इध अञ्ञथा देसना पवत्ताति? वुच्चते– देसनाविलासप्पत्तितो। देसनाविलासप्पत्ता हि बुद्धा भगवन्तो, ते वेनेय्यज्झासयानुरूपं विविधेनाकारेन धम्मं देसेन्ति, अञ्ञथा इधापि च एवं भगवा देसेय्य "इध भिक्खवे एकच्चो समणो वा ब्राह्मणो वा आतप्पमन्वाय...पे०... यथासमाहिते चित्ते सत्तानं चुतूपपातञाणाय चित्तं अभिनिन्नामेति, सो दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन अरहतो चुतिचित्तं पस्सति, पुथूनं वा परसत्तानं, न हेव खो तदुद्धं उपपत्तिं, सो एवमाह 'यथा खो भो अयं अत्ता' "तिआदिना विसेसलाभिनो, तक्किनो च विसुं कत्वा, तस्मा देसनाविलासेन वेनेय्यज्झासयानुरूपं सस्सतवादादिदेसनाहि अञ्ञथायं देसना पवत्ताति दट्ठब्बं।

अथ वा एकच्चसस्सतवादादीसु विय न इध तक्कीवादितो विसेसलाभीवादो भिन्नाकारो, अथ खो समानभेदताय समानाकारोयेवाति इमस्स विसेसस्स पकासनत्थं भगवता अयमुच्छेदवादो पुरिमवादेहि विसिट्ठाकारो देसितो। सम्भवति हि तक्किनोपि अनुस्सवादिवसेन अधिगमवतो विय इध अभिनिवेसो। अथ वा न इमा दिट्ठियो भगवता अनागते एवं भावीवसेन देसिता, नापि परिकप्पवसेन, अथ खो यथा यथा दिट्ठिगतिकेहि "इदमेव सच्चं, मोघमञ्ञ"न्ति पञ्ञत्ता, तथा तथा यथाभुच्चं सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन परिच्छिन्दित्वा पकासिता। येहि गम्भीरादिप्पकारा अपुथुज्जनगोचरा बुद्धधम्मा पकासन्ति, येसञ्च परिकित्तनेन तथागता सम्मदेव थोमिता होन्ति। उच्छेदवादीहि च दिट्ठिगतिकेहि यथा उत्तरुत्तरभवदस्सीहि अपरभवदस्सीनं तेसं वादपटिसेधवसेन सकसकवादा पतिट्ठापिता, तथायं देसना पवत्ताति पुरिमदेसनाहि इमिस्सा देसनाय पवत्तिभेदो न चोदेतब्बो। एवञ्च कत्वा अरूपभवभेदवसेन विय कामरूपभवभेदवसेनापि उच्छेदवादो विभजित्वा दट्ठब्बो। अथ वा पच्चेकं कामरूपभवभेदवसेन विय अरूपभववसेनापि न विभजित्वा वत्तब्बो, एवञ्च सति भगवता वुत्तसत्तकतो बहुतरभेदो, अप्पतरभेदो वा उच्छेदवादो आपज्जतीति एवं पकारापि चोदना अनवकासावाति।

एत्थाह– युत्तं ताव पुरिमेसु तीसु वादेसु "कायस्स भेदा"ति वुत्तं पञ्चवोकारभवपरियापन्नं अत्तभावं आरब्भ पवत्तत्ता तेसं वादानं, चतुवोकारभवपरियापन्नं पन अत्तभावं निस्साय पवत्तेसु चतुत्थादीसु चतूसु वादेसु कस्मा "कायस्स भेदा"ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुत्तं। न हि अरूपीनं कायो विज्जतीति ? सच्चमेतं, रूपत्तभावे पवत्तवोहारेनेव पन दिट्ठिगतिको अरूपत्तभावेपि कायवोहारं आरोपेत्वा आह "कायस्स भेदा"ति। यथा च दिट्ठिगतिका दिट्ठियो पञ्ञापेन्ति, तथा च भगवा दस्सेतीति, अरूपकायभावतो वा फस्सादिधम्मसमूहभूते अरूपत्तभावे कायनिद्देसो दट्ठब्बो। एत्थ च कामदेवत्तभावादिनिरवसेसविभवपतिट्ठापकानं दुतियवादादीनं युत्तो अपरन्तकप्पिकभावो अनागतद्धविसयत्ता तेसं वादानं, न पन दिट्ठिगतिकपच्चक्खभूतमनुस्सत्तभावसमुच्छेदपतिट्ठापकस्स पठमवादस्स पच्चुप्पन्नविसयत्ता। दुतियवादादीनञ्हि पुरिमपुरिमवादसङ्गहितस्सेव अत्तनो तदुत्तरुत्तरिभवोपपन्नस्स समुच्छेदतो युज्जति अपरन्तकप्पिकता, तथा च "नो च खो भो अयं अत्ता एत्तावता सम्मा समुच्छिन्नो होती"तिआदि वुत्तं, यं पन तत्थ वुत्तं "अत्थि खो भो अञ्ञो अत्ता"ति, तं मनुस्सकायविसेसापेक्खाय वुत्तं, न सब्बथा अञ्ञभावतोति ? नो न युत्तो, इधलोकपरियापन्नत्तेपि च पठमवादविसयस्स अनागतकालस्सेव तस्स अधिप्पेतत्ता पठमवादिनोपि अपरन्तकप्पिकताय न कोचि विरोधोति।

दिट्ठधम्मनिब्बानवादवण्णना

९३. **दिट्ठधम्मो**ति दस्सनभूतेन ञाणेन उपलद्धधम्मो। तत्थ यो अनिन्द्रियविसयो, सोपि सुपाकटभावेन इन्द्रियविसयो विय होतीति आह **"दिट्ठधम्मोति पच्चक्खधम्मो वुच्चती"**ति। तेनेव च **"तत्थ तत्थ पटिलद्धत्तभावस्सेतं अधिवचन"**न्ति वुत्तं।

९५. **अन्तोनिज्झायनलक्खणो**ति ञातिभोगरोगसीलदिट्ठिब्यसनेहि फुट्ठस्स चेतसो अन्तो अब्भन्तरं निज्झायनं सोचनं अन्तोनिज्झायनं, तं लक्खणं एतस्साति अन्तोनिज्झायनलक्खणो। **तन्निस्सितलालप्पनलक्खणो**ति तं सोकं समुट्ठानहेतुं निस्सितं तन्निस्सितं, भुसं विलपनं लालप्पनं, तन्निस्सितञ्च लालप्पनञ्च तन्निस्सितलालप्पनं, तं लक्खणं एतस्साति तन्निस्सितलालप्पनलक्खणो। ञातिब्यसनादिना फुट्ठस्स परिदेवेनापि असक्कुणन्तस्स अन्तोगतसोकसमुट्ठितो भुसो आयासो **उपायासो**। सो पन यस्मा चेतसो अप्पसन्नाकारो होति, तस्मा **"विसादलक्खणो"**ति वुत्तो।

९६. वितक्कनं **वितक्कितं,** तं पन अभिनिरोपनसभावो वितक्कोयेवाति आह **"अभि...पे०... वितक्को"**ति। एस नयो **विचारित**न्ति एत्थापि। खोभकरसभावत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वितक्कविचारानं तंसहितं झानं सउब्बिलनं विय होतीति वुत्तं **"सकण्डकं विय खायती"**ति।

९७. याय उब्बिलापनपीतिया उप्पन्नाय चित्तं "उब्बिलावित"न्ति वुच्चति, सा पीति **उब्बिलावितत्तं** यस्मा पन चित्तस्स उब्बिलभावो तस्सा पीतिया सति होति, नासति, तस्मा सा **"उब्बिलभावकारण"**न्ति वुत्ता।

९८. **आभोगो**ति वा चित्तस्स आभुग्गभावो, आरम्मणे ओणतभावोति अत्थो। सुखेन हि चित्तं आरम्मणे अभिनतं होति, न दुक्खेन विय अपनतं, नापि अदुक्खमसुखेन विय अनभिनतं अनपनतञ्च। तत्थ "खुप्पिपासादिअभिभूतस्स विय मनुञ्ञभोजनादीसु कामेहि विवेचियमानस्सुपादारम्मणपत्थना विसेसतो अभिवड्ढति, उळारस्स पन कामरसस्स यावदत्थं तित्तस्स मनुञ्ञरसभोजनं भुत्ताविनो विय सुहितस्स भोत्तुकामता कामेसु पातब्यता न होति, विसयस्सागिद्धताय विसयेहि दुम्मोचियेहिपि जलूका विय सयमेव मुञ्चती"ति च अयोनिसो उम्मुज्जित्वा कामगुणसन्तप्पितताय संसारदुक्खवूपसमं ब्याकासि पठमवादी। कामादीनं आदीनवदस्सिताय, पठमादिज्झानसुखस्स सन्तभावदस्सिताय च पठमादिज्झानसुखतित्तिया संसारदुक्खुपच्छेदं ब्याकंसु दुतियादिवादिनो, इधापि उच्छेदवादे वुत्तप्पकारो विचारो यथासम्भवं आनेत्वा वत्तब्बो। अयं पनेत्थ विसेसो– एकस्मिञ्हि अत्तभावे पञ्च वादा लब्भन्ति। तेनेव हि पाळियं "अञ्ञो अत्ता"ति अञ्ञग्गहणं न कतं। कथं पनेत्थ अच्चन्तनिब्बानपञ्ञापकस्स अत्तनो दिट्ठधम्मनिब्बानवादस्स सस्सतदिट्ठिया सङ्गहो, न पन उच्छेददिट्ठियाति? तंतंसुखविसेससमङ्गितापटिलद्धेन बन्धविमोक्खेन सुद्धस्स अत्तनो सकरूपे अवट्ठानदीपनतो।

सेसाति सेसा पञ्चपञ्ञास दिट्ठियो। तासु अन्तानन्तिकवादादीनं सस्सतदिट्ठिभावो तत्थ तत्थ पकासितोयेव।

१०१-२-३. किं पन कारणं पुब्बन्तापरन्ता एव दिट्ठाभिनिवेसस्स विसयभावेन दस्सिता, न पन तदुभयमेकज्झन्ति? असम्भवतो। न हि पुब्बन्तापरन्तेसु विय तदुभयविनिमुत्ते मज्झन्ते दिट्ठिकप्पना सम्भवति इत्तरकालत्ता, अथ पन पच्चुप्पन्नभवो तदुभयवेमज्झं, एवं सति दिट्ठिकप्पनक्खमो तस्स उभयसभावो पुब्बन्तापरन्तेसुयेव अन्तोगधोति कथमदस्सितं। अथ वा पुब्बन्तापरन्तवन्तताय "पुब्बन्तापरन्तो"ति मज्झन्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुच्चति, सो च "पुब्बन्तापरन्तकप्पिका वा पुब्बन्तापरन्तानुदिट्ठिनो"ति वदन्तेन पुब्बन्तापरन्तेहि विसुं कत्वा वुत्तोयेवाति दट्ठब्बो। अट्ठकथायम्पि "सब्बेपि ते अपरन्तकप्पिके पुब्बन्तापरन्तकप्पिके"ति एतेन सामञ्ञनिद्देसेन, एकसेसेन वा सङ्गहिताति दट्ठब्बं, अञ्ञथा सङ्कड्ढित्वा वुत्तवचनस्स अनत्थकता आपज्जेय्याति। के पन ते पुब्बन्तापरन्तकप्पिका ? ये अन्तानन्तिका हुत्वा दिट्ठधम्मनिब्बानवादाति एवं पकारा वेदितब्बा।

एत्थ च "सब्बे ते इमेहेव द्वासट्ठिया वत्थूहि, एतेसं वा अञ्ञतरेन, नत्थि इतो बहिद्धा"ति वचनतो, पुब्बन्तकप्पिकादित्तयविनिमुत्तस्स च कस्सचि दिट्ठिगतिकस्स अभावतो यानि तानि सामञ्ञफलादि (दी० नि० १.१६६) सुत्तन्तरेसु वुत्तप्पकारानि अकिरिया-हेतुकनत्थिकवादादीनि, यानि च इस्सरपजापतिपुरिसकालसभावनियतियदिच्छावादादिप्पभेदानि दिट्ठिगतानि (विसुद्धि० टी० २.५६३; विभं० अनुटी० १८९ पस्सितब्बं) बहिद्धापि दिस्समानानि, तेसं एत्थेव सङ्गहो, अन्तोगधता च वेदितब्बा। कथं ? अकिरियवादो ताव "वञ्झो कूटट्ठो"तिआदिना किरियाभावदीपनतो सस्सतवादे अन्तोगधो, तथा "सत्तिमे काया"तिआदि (दी० नि० १.१७४) नयप्पवत्तो पकुधवादो, "नत्थि हेतु नत्थि पच्चयो सत्तानं संकिलेसाया"तिआदि (दी० नि० १.१६८) वचनतो अहेतुकवादो अधिच्चसमुप्पन्निकवादे अन्तोगधो। "नत्थि परो लोको"तिआदि (दी० नि० १.१७१) वचनतो नत्थिकवादो उच्छेदवादे अन्तोगधो। तथा हि तत्थ "कायस्स भेदा उच्छिज्जती"तिआदि (दी० नि० १.८६) वुत्तं। पठमेन **आदि-**सद्देन निगण्ठवादादयो सङ्गहिता।

यदिपि पाळियं नाटपुत्तवाद (दी० नि० १.१७८) भावेन चातुयामसंवरो आगतो, तथापि सत्तवतातिक्कमेन विक्खेपवादिताय नाटपुत्तवादोपि सञ्चयवादो विय अमराविक्खेपवादेसु अन्तोगधो। "तं जीवं तं सरीरं, अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीर"न्ति (दी० नि० १.३७७; म० नि० २.१२२; सं० नि० १.२.३५) एवं पकारा वादा "रूपी अत्ता होति अरोगो परं मरणा"तिआदिवादेसु सङ्गहं गच्छन्ति, "होति तथागतो परं मरणा, "अत्थि सत्ता ओपपातिका"ति एवं पकारा सस्सतवादे। "न होति तथागतो परं मरणा, नत्थि सत्ता ओपपातिका"ति एवं पकारा उच्छेदवादेन सङ्गहिता। "होति च न होति च तथागतो परं मरणा, अत्थि च नत्थि च सत्ता ओपपातिका"ति एवं पकारा एकच्चसस्सतवादे अन्तोगधा। "नेव होति न न होति तथागतो परं मरणा, नेवत्थि न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नत्थि सत्ता ओपपातिका''ति च एवं पकारा अमराविक्खेपवादे अन्तोगधा। इस्सरपजापतिपुरिसकालवादा एकच्चसस्सतवादे अन्तोगधा, तथा कणादवादो। सभावनियतियदिच्छावादा अधिच्चसमुप्पन्निकवादेन सङ्गहिता। इमिना नयेन सुत्तन्तरेसु, बहिद्धा च दिस्समानानं दिट्ठिगतानं इमासु द्वासट्ठिया दिट्ठीसु अन्तोगधता वेदितब्बा।

अज्झासयन्ति दिट्ठिज्झासयं। सस्सतुच्छेददिट्ठिवसेन हि सत्तानं संकिलेसपक्खे दुविधो अज्झासयो, तञ्च भगवा अपरिमाणासु लोकधातूसु अपरिमाणानं सत्तानं अपरिमाणे एव ञेय्यविसेसे उप्पज्जनवसेन अनेकभेदभिन्नानम्पि "चत्तारो जना सस्सतवादा''तिआदिना द्वासट्ठिया पभेदेहि सङ्गण्हनवसेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणेन परिच्छिन्दित्वा दस्सेन्तो पमाणभूताय तुलाय धारयमानो विय होतीति आह **"तुलाय तुलयन्तो विया''**ति। तथा हि वक्खति "अन्तो जालीकता''तिआदि (दी॰ नि॰ १.१४६)। **"सिनेरुपादतो वालुकं उद्धरन्तो विया''**ति एतेन सब्बञ्ञुतञ्ञाणतो अञ्ञस्स इमिस्सा देसनाय असक्कुणेय्यतं दस्सेति।

अनुसन्धानं अनुसन्धि, पुच्छाय कतो अनुसन्धि **पुच्छानुसन्धि।** अथ वा अनुसन्धयतीति अनुसन्धि, पुच्छा अनुसन्धि एतस्साति **पुच्छानुसन्धि।** पुच्छाय अनुसन्धियतीति वा **पुच्छानुसन्धि। अज्झासयानुसन्धि**म्हिपि एसेव नयो। **यथानुसन्धी**ति एत्थ पन अनुसन्धीयतीति अनुसन्धि, या या अनुसन्धि यथानुसन्धि, अनुसन्धिअनुरूपं वा **यथानुसन्धी**ति सद्दत्थो वेदितब्बो, सो "येन पन धम्मेन आदिम्हि देसना उट्ठिता, तस्स धम्मस्स अनुरूपधम्मवसेन वा पटिपक्खवसेन वा येसु सुत्तेसु उपरि देसना आगच्छति, तेसं वसेन यथानुसन्धि वेदितब्बो। सेय्यथिदं ? आकङ्खेय्यसुत्ते (म॰ नि॰ १.६४-६९) हेट्ठा सीलेन देसना उट्ठिता, उपरि छ अभिञ्ञा आगता...पे॰... ककचूपमे (म॰ नि॰ १.२२२) हेट्ठा अक्खन्तिया उट्ठिता, उपरि ककचूपमा आगता''तिआदिना अट्ठकथायं (दी॰ नि॰ अट्ठ॰ १.१००-१०४) वुत्तो।

इति किराति भगवतो यथादेसिताय अत्तसुञ्ञताय अत्तनो अरुच्चनभावदीपनं। **भोति** धम्मालपनं। **अनत्तकतानीति** अत्तना न कतानि, अनत्तकेहि वा खन्धेहि कतानि। **कमत्तानं फुसिस्सन्तीति** असति अत्तनि खन्धानञ्च खणिकत्ता कम्मानि कं अत्तानं अत्तनो फलेन फुसिस्सन्ति, को कम्मफलं पटिसंवेदेतीति अत्थो। **अविद्वाति** सुतादिविरहेन अरियधम्मस्स अकोविदताय न विद्वा। **अविज्जागतोति** अविज्जाय उपगतो, अरियधम्मे अविनीतताय अप्पहीनाविज्जोति अत्थो। **तण्हाधिपतेय्येन चेतसाति** "यदि अहं नाम कोचि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नत्थि, मया कतस्स कम्मस्स को फलं पटिसंवेदेति, सति पन तस्मिं सिया फलूपभोगो''ति तण्हाधिपतितो **आगतो तण्हाधिपतेय्यो,** तेन। अत्तवादुपादानसहगत **चेतसा। अतिधावितब्बन्ति** खणिकत्तेपि सङ्खारानं यस्मिं सन्ताने कम्मं कतं, तत्थेव फलुप्पत्तितो धम्मपुञ्जमत्तस्सेव च सिद्धे कम्मफलसम्बन्धे एकत्तनयं मिच्छा गहेत्वा एकेन कारकवेदकभूतेन भवितब्बं, अञ्ञथा ''कम्मफलानं सम्बन्धो न सिया''ति अत्तत्तनियसुञ्ञतापकासनं सत्थुसासनं अतिक्कमितब्बं मञ्ञेय्याति अत्थो।

''उपरि छ अभिञ्ञा आगता''ति अनुरूपधम्मवसेन यथानुसन्धिं दस्सेति, इतरेहि पटिपक्खवसेन। **किलेसेनाति** ''लोभो चित्तस्स उपक्किलेसो''तिआदिना किलेसवसेन। **इमस्मिम्पीति पि**-सद्देन यथा वुत्तसुत्तादीसु पटिपक्खवसेन यथानुसन्धि, एवं इमस्मिम्पि सुत्तेति दस्सेति। तथा हि निच्चसारादिपञ्ञापकानं दिट्ठिगतानं वसेन उट्ठिता अयं देसना निच्चसारादिसुञ्ञतापकासनेन निट्ठापिताति।

परितस्सितविप्फन्दितवारवण्णना

१०५-११७. **मरियादविभागदस्सनत्थन्ति** सस्सतादिदिट्ठिदस्सनस्स सम्मादस्सनेन सङ्कराभावविभावनत्थं। तदपि वेदयितन्ति सम्बन्धो। **अजानतं अपस्सतन्ति** ''सस्सतो अत्ता च लोको चा''ति ''इदं दिट्ठिट्ठानं एवंगहिकं एवंपरामट्ठं एवंगहितं होति एवंअभिसम्पराय''न्ति यथाभूतं अजानन्तानं अपस्सन्तानं। तथा यस्मिं वेदयिते अवीततण्हताय एवं दिट्ठिगतं उपादियन्ति, तं वेदयितं समुदयादितो यथाभूतं अजानन्तानं अपस्सन्तानं, एतेन अनावरणञाणसमन्तचक्खूहि यथा तथागतानं यथाभूतमेत्थ ञाणदस्सनं, न एवं दिट्ठिगतिकानं, अथ खो तण्हादिट्ठिपरामासोयेवाति दस्सेति। तेनेव चायं देसना मरियादविभागदस्सनत्था जाता। अट्ठकथायं पन ''यथाभूतं धम्मानं सभावं अजानन्तानं अपस्सन्तान''न्ति अविसेसेन वुत्तं। न हि सङ्खतधम्मसभावं अजाननमत्तेन मिच्छा अभिनिविसन्तीति। सामञ्ञजोतना विसेसे अवतिट्ठतीति अयं विसेसयोजना कता। **वेदयितन्ति** ''सस्सतो अत्ता च लोको चा''ति दिट्ठिपञ्ञापनवसेन पवत्तं दिट्ठिया अनुभूतं अनुभवनं। **तण्हागतानन्ति** तण्हाय गतानं उपगतानं, पवत्तानं वा। **तञ्च खो पनेतन्ति** च यथावुत्तं वेदयितं पच्चामसति। तञ्हि वट्टामिसभूतं दिट्ठितण्हासल्लानुविद्धताय सउब्बिलत्ता चञ्चलं, न मग्गफलसुखं विय एकरूपेन अवतिट्ठतीति। तेनेवाह **''परितस्सितेना''**तिआदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ वा एवं विसेसकारणतो द्वासट्ठि दिट्ठिगतानि विभजित्वा इदानि अविसेसकारणतो तानि दस्सेतुं **"तत्र भिक्खवे"**तिआदिका देसना आरद्धा। सब्बेसञ्हि दिट्ठिगतिकानं वेदना अविज्जा तण्हा च अविसिट्ठकारन्ति। तत्थ **तदपी**ति "सस्सतं अत्तानञ्च लोकञ्च पञ्ञपेन्ति"ति एत्थ यदेतं "सस्सतो अत्ता च लोको चा"ति पञ्ञापनं, तदपि। सुखादिभेदं तिविधवेदयितं यथाक्कमं दुक्खसल्लानिच्चतो, अविसेसेन समुदयत्थङ्गमस्सादादीनवनिस्सरणतो वा यथाभूतं अजानन्तानं अपस्सन्तानं, ततो एव च सुखादिपत्थनासम्भवतो तण्हाय उपगतत्ता तण्हागतानं तण्हापरितस्सितेन दिट्ठिविप्फन्दितमेव दिट्ठिचलनमेव, "असति अत्तनि को वेदनं अनुभवती"ति कायवचीद्वारेसु दिट्ठिया चोपनप्पत्तिमत्तमेव वा, न पन दिट्ठिया पञ्ञापेतब्बो सस्सतो कोचि धम्मो अत्थीति अत्थो। एकच्चसस्सतवादादीसुपि एसेव नयो।

फस्सपच्चयवारवण्णना

११८. येन तण्हापरितस्सितेन एतानि दिट्ठिगतानि पवत्तन्ति, तस्स वेदयितं पच्चयो, वेदयितस्सापि फस्सो पच्चयोति देसना दिट्ठिया पच्चयपरम्परनिद्धारणन्ति आह **"परम्परपच्चयदस्सनत्थ"**न्ति, तेन यथा पञ्ञापनधम्मो दिट्ठि, तप्पच्चयधम्मा च यथासकं पच्चयवसेनेव उप्पज्जन्ति, न पच्चयेहि विना, एवं पञ्ञापेतब्बा धम्मापि रूपवेदनादयो, न एत्थ कोचि अत्ता वा लोको वा सस्सतोति अयमत्थो दस्सितोति दट्ठब्बं।

नेतंठानंविज्जतिवारवण्णना

१३१. तस्स पच्चयस्साति फस्सपच्चयस्स **दिट्ठिवेदयिते**ति दिट्ठिया पच्चयभूते वेदयिते, फस्सपधानेहि अत्तनो पच्चयेहि निप्फादेतब्बेति अत्थो। विनापि चक्खादिवत्थूहि, सम्पयुत्तधम्मेहि च केहिचि वेदना उप्पज्जति, न पन कदाचि फस्सेन विनाति फस्सो वेदनाय बलवकारणन्ति आह **"बलवभावदस्सनत्थ"**न्ति। सन्निहितोपि हि विसयो सचे फुसनाकाररहितो होति चित्तुप्पादो, न तस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो होतीति फस्सोव सम्पयुत्तधम्मानं विसेसपच्चयो। तथा हि भगवता चित्तुप्पादं विभजन्तेन फस्सोयेव पठमं उद्धटो, वेदनाय पन अधिट्ठानमेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठिगतिकाधिट्ठानवट्टकथावण्णना

१४४. हेट्ठा तीसुपि वारेसु अधिकतत्ता, उपरि च "पटिसंवेदेन्ती"ति वक्खमानत्ता वेदयितमेत्थ पधानन्ति आह **"सब्बदिट्ठिवेदयितानि सम्पिण्डेती"**ति। **सम्पिण्डेतीति** च "येपि ते"ति तत्थ तत्थ आगतस्स पि-सद्दस्स अत्थं दस्सेति। वेदयितस्स फस्से पक्खिपनं फस्सपच्चयतादस्सनमेव "छहि अज्झत्तिकायतनेहि छळारम्मणपटिसंवेदनं एकन्ततो छफस्सहेतुकमेवा"ति। सञ्जायन्ति एत्थाति अधिकरणत्थो सञ्जाति-सद्दोति आह **"सञ्जातिट्ठाने"**ति। एवं समोसरणसद्दोपि दट्ठब्बो। आयतति एत्थ फलं तदायत्तवुत्तिताय, आयभूतं वा अत्तनो फलं तनोति पवत्तेतीति **आयतनं,** कारणं। रुक्खगच्छसमूहे अरञ्ञवोहारो अरञ्ञमेव अरञ्ञायतनन्ति आह **"पण्णत्तिमत्ते"**ति। **अत्थत्तयेपी**ति **पि**-सद्देन अवुत्तत्थसम्पिण्डनं दट्ठब्बं, तेन आकारनिवासाधिट्ठानत्थे सङ्गण्हाति। हिरञ्ञायतनं सुवण्णायतनं, वासुदेवायतनं कम्मायतनन्ति आदीसु आकरनिवासाधिट्ठानेसु आयतनसद्दो। चक्खादीसु च फस्सादयो आकिण्णा, तानि च नेसं निवासो, अधिट्ठानञ्च निस्सयपच्चयभावतोति। तिण्णम्पि विसयिन्द्रियविञ्ञाणानं सङ्गतिभावेन गहेतब्बो फस्सोति **"सङ्गती"**ति वुत्तो। तथा हि सो "सन्निपातपच्चुपट्ठानो"ति वुच्चति। **इमिना नयेना**ति विज्जमानेसुपि अञ्ञेसु सम्पयुत्तधम्मेसु यथा "चक्खुञ्च...पे०... फस्सो"ति (म० नि० १.२०४; म० नि० ३.४२१, ४२५, ४२६; सं० नि० १.२.४३-४५; सं० नि० २.४.६०; कथाव० ४६५) एतस्मिं सुत्ते वेदनाय पधानकारणभावदस्सनत्थं फस्ससीसेन देसना कता, एवमिधापि ब्रह्मजाले "फस्सपच्चया वेदना"तिआदिना फस्सं आदिं कत्वा अपरन्तपटिच्चसमुप्पाददीपनेन पच्चयपरम्परं दस्सेतुं "फस्सायतनेहि फुस्स फुस्सा"ति फस्समुखेन वुत्तं।

फस्सो अरूपधम्मोपि समानो एकदेसेन आरम्मणे अनल्लीयमानोपि फुसनाकारेन पवत्तति फुसन्तो विय होतीति आह **"फस्सोव तं तं आरम्मणं फुसती"**ति, येन सो "फुसनलक्खणो, सङ्घट्टनरसो"ति च वुच्चति। "फस्सायतनेहि फुस्स फुस्सा"ति अफुसनकिच्चानिपि आयतनानि "मञ्चा घोसन्ती"तिआदीसु विय निस्सितवोहारेन फुसनकिच्चानि कत्वा दस्सितानीति आह **"फस्से उपनिक्खिपित्वा"**ति, फस्सगतिकानि कत्वा फस्सूपचारं आरोपेत्वाति अत्थो। उपचारो हि नाम वोहारमत्तं, न तेन अत्थसिद्धि होतीति आह **"तस्मा"**तिआदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्तनो पच्चयभूतानं छन्नं फस्सानं वसेन चक्खुसम्फस्सजा याव मनोसम्फस्सजाति सङ्खेपतो छब्बिधा वेदना, वित्थारतो पन अट्ठसतपरियायेन अट्ठसतभेदा। **रूपतण्हादिभेदाया**ति रूपतण्हा याव धम्मतण्हाति सङ्खेपतो छप्पभेदाय, वित्थारतो अट्ठसतभेदाय। **उपनिस्सयकोटिया**ति उपनिस्सयसीसेन। कस्मा पनेत्थ उपनिस्सयपच्चयोव उद्धटो, ननु सुखा वेदना, अदुक्खमसुखा वेदना च तण्हाय आरम्मणमत्तआरम्मणाधिपति-आरम्मणूपनिस्सयपकतूपनिस्सयवसेन चतुधा पच्चयो, दुक्खा च आरम्मणमत्तपकतूपनिस्सयवसेन द्विधाति ? सच्चमेतं, उपनिस्सये एव पन तं सब्बं अन्तोगधं। युत्तं ताव आरम्मणूपनिस्सयस्स उपनिस्सयसामञ्ञतो उपनिस्सयेन सङ्गहो, आरम्मणमत्तआरम्मणाधिपतीनं पन कथन्ति ? तेसम्पि आरम्मणसामञ्ञतो आरम्मणूपनिस्सयेन सङ्गहोव कतो, न पकतूपनिस्सयेनाति दट्ठब्बं। एतदत्थमेवेत्थ "**उपनिस्सयकोटिया**"ति वुत्तं, न "उपनिस्सयेना"ति।

चतुब्बिधस्साति कामुपादानं याव अत्तवादुपादानन्ति चतुब्बिधस्स। ननु च तण्हाव कामुपादानन्ति ? सच्चमेतं। तत्थ दुब्बला तण्हा तण्हाव, बलवती तण्हा कामुपादानं। अथ वा अप्पत्तविसयपत्थना तण्हा तमसि चोरानं करपसारणं विय। सम्पत्तविसयग्गहणं उपादानं, चोरानं करप्पत्तधनग्गहणं विय। अप्पिच्छतापटिपक्खा तण्हा, सन्तोसपटिपक्खा उपादानं। परियेसनदुक्खमूलं तण्हा, आरक्खदुक्खमूलं उपादानन्ति अयमेतेसं विसेसो। **उपादानस्सा**ति असहजातस्स उपादानस्स उपनिस्सयकोटिया, इतरस्स सहजातकोटियाति दट्ठब्बं। तत्थ अनन्तरस्स अनन्तरसमनन्तरअनन्तरूपनिस्सयनत्थिविगतासेवनपच्चयेहि, अनानन्तरस्स उपनिस्सयेन, आरम्मणभूता पन आरम्मणाधिपतिआरम्मणूपनिस्सयेहि, आरम्मणमत्तेनेव वाति तं सब्बं उपनिस्सयेनेव गहेत्वा "**उपनिस्सयकोटिया**"ति वुत्तं। यस्मा च तण्हाय रूपादीनि अस्सादेत्वा कामेसु पातब्यतं आपज्जति, तस्मा तण्हा कामुपादानस्स उपनिस्सयो। तथा रूपादिभेदेव सम्मूळ्हो "नत्थि दिन्न"न्तिआदिना (दी० नि० १.१७१; म० नि० १.४४५; म० नि० २.९४, ९५, २२५; म० नि० ३.९१, ११६, १३६; सं० नि० २.३.२१०; ध० स० १२२१; विभं० ९३८) मिच्छादस्सनं, संसारतो मुच्चितुकामो असुद्धिमग्गे सुद्धिमग्गपरामसनं, खन्धेसु अत्तत्तनियगाहभूतं सक्कायदस्सनं गण्हाति, तस्मा इतरेसम्पि तण्हा उपनिस्सयोति दट्ठब्बं। सहजातस्स पन सहजातअञ्ञमञ्ञनिस्सयसम्पयुत्तअत्थिअविगतहेतुवसेन तण्हा पच्चयो होति। तं सब्बं सन्धाय "**सहजातकोटिया**"ति वुत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथाति उपनिस्सयकोटिया चेव सहजातकोटिया चाति अत्थो। **भवस्सा**ति कम्मभवस्स चेव उपपत्तिभवस्स च। तत्थ चेतनादिसङ्खा तं सब्बं भवगामिकम्मं कम्मभवो, कामभवादिको नवविधो उपपत्तिभवो, तेसं उपपत्तिभवस्स चतुब्बिधम्पि उपादानं उपपत्तिभवकारणकम्मभवकारणभावतो, तस्स च सहायभावूपगमनतो पकतूपनिस्सयवसेन पच्चयो होति। कम्मारम्मणकरणकाले पन कम्मसहजातकामुपादानं उपपत्तिभवस्स आरम्मणपच्चयेन पच्चयो होति। कम्मभवस्स पन सहजातस्स सहजातं उपादानं सहजातअञ्ञमञ्ञनिस्सयसम्पयुत्तअत्थिअविगतवसेन चेव हेतुमग्गवसेन च अनेकधा पच्चयो होति, असहजातस्स अनन्तरसमनन्तरअनन्तरूपनिस्सयनत्थिविगतासेवनवसेन, इतरस्स पकतूपनिस्सयवसेन, सम्मसनादिकालेसु आरम्मणवसेन च पच्चयो होति। तत्थ अनन्तरादिके उपनिस्सयपच्चये, सहजातादिके सहजातपच्चये पक्खिपित्वा वुत्तं **"उपनिस्सयकोटिया चेव सहजातकोटिया चा"**ति।

भवो जातियाति एत्थ **भवो**ति कम्मभवो अधिप्पेतो। सो हि जातिया पच्चयो, न उपपत्तिभवो। उपपत्तिभवो हि पठमाभिनिब्बत्ता खन्धा जातियेव। तेन वुत्तं "जातीति पनेत्थ सविकारा पञ्चक्खन्धा दट्ठब्बा"ति। **सविकारा**ति च निब्बत्तिविकारेन सविकारा, ते च अत्थतो उपपत्तिभवोयेव। न हि तदेव तस्स कारणं भवितुं युत्तन्ति। कम्मभवो च उपपत्तिभवस्स कम्मपच्चयेन चेव उपनिस्सयपच्चयेन च पच्चयो होतीति आह "भवो जातिया उपनिस्सयकोटिया पच्चयो"ति।

यस्मा च सति जातिया जरामरणं, जरामरणादिना फुट्ठस्स बालस्स सोकादयो च सम्भवन्ति, नासति, तस्मा **"जाति...पे०... पच्चयो होती"**ति वुत्तं। सहजातूपनिस्सयसीसेन पच्चयविचारणाय दस्सितत्ता, अङ्गविचारणाय च अनामट्ठत्ता आह **"अयमेत्थ सङ्खेपो"**ति। महाविसयत्ता पटिच्चसमुप्पादविचारणाय सा निरवसेसा कुतो लद्धब्बाति आह **"वित्थारतो"**तिआदि। एकदेसेन चेत्थ कथितस्स पटिच्चसमुप्पादस्स तथा कथने सद्धिं उदाहरणेन कारणं दस्सेन्तो **"भगवा ही"**तिआदिमाह। तत्थ **कोटि न पञ्ञायतीति** असुकस्स नाम सम्मासम्बुद्धस्स, चक्कवत्तिनो वा काले अविज्जा उप्पन्ना, न ततो पुब्बेति अविज्जाय आदिमरियादा अप्पटिहतस्स मम सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्सापि न पञ्ञायति अविज्जमानत्तायेवाति अत्थो। अयं पच्चयो इदप्पच्चयो, तस्मा **इदप्पच्चया,** इमस्मा कारणा आसवपच्चयाति अत्थो। **भवतण्हाया**ति भवसंयोजनभूताय तण्हाय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवदिट्ठियाति सस्सतदिट्ठिया। **"इतो एत्थ एत्तो इधा"**ति अपरियन्तं अपरापरुप्पत्तिं दस्सेति।

विवट्टकथादिवण्णना

१४५. "वेदनानं समुदय"न्तिआदिपाळि **वेदनाकम्मट्ठान**न्ति दट्ठब्बा। **त**न्ति "फस्ससमुदया फस्सनिरोधा"ति वुत्तफस्सट्ठानं। **आहारो**ति कबळीकारो आहारो वेदितब्बो। सो हि "कबळीकारो आहारो इमस्स कायस्स आहारपच्चयेन पच्चयो"ति (पट्ठा० १.पच्चयनिद्देस ४२९) वचनतो कम्मसमुट्ठानानम्पि उपत्थम्भकपच्चयो होतियेव। यदिपि सोतापन्नादयो यथाभूतं पजानन्ति, उक्कंसगतिविजाननवसेन पन देसना अरहत्तनिकूटेन निट्ठापिता। एत्थ च "यतो खो भिक्खवे भिक्खु...पे०... यथाभूतं पजानाती"ति एतेन धम्मस्स निय्यानिकभावेन सद्धिं सङ्घस्स सुप्पटिपत्तिं दस्सेति। तेनेव हि अट्ठकथायमेत्थ "को एवं जानातीति? खीणासवो जानाति, याव आरद्धविपस्सको जानाती"ति परिपुण्णं कत्वा भिक्खुसङ्घो दस्सितो, तेन यं वुत्तं "भिक्खुसङ्घवसेनपि दीपेतुं वट्टती"ति, (दी० नि० अट्ठ० १.८) तं यथारुतवसेनेव दीपितं होतीति दट्ठब्बं।

१४६. अन्तो जालस्साति अन्तोजालं, अन्तोजाले कताति **अन्तोजालीकता।** अपायूपपत्तिवसेन अधो ओसीदनं, सम्पत्तिभववसेन उद्धं उग्गमनं। तथा परित्तभूमिमहग्गतभूमिवसेन, ओलीनता'तिधावनवसेन, पुब्बन्तानुदिट्ठिअपरन्तानुदिट्ठिवसेन च यथाक्कमं अधो ओसीदनं उद्धं उग्गमनं योजेतब्बं। **"दससहस्सिलोकधातू"**ति जातिखेत्तं सन्धायाह।

१४७. अपण्णत्तिकभावन्ति धरमानकपण्णत्तिया अपण्णत्तिकभावं। अतीतभावेन पन तथा पण्णत्ति याव सासनन्तरधाना, ततो उद्धम्पि अञ्ञबुद्धुप्पादेसु वत्तति एव। तथा हि वक्खति "वोहारमत्तमेव भविस्सती"ति (दी० नि० अट्ठ० १.१४७)। **कायो**ति अत्तभावो, यो रूपारूपधम्मसमूहो। एवं हिस्स अम्बरुक्खसदिसता, तदवयवानञ्च रूपक्खन्धचक्खादीनं अम्बपक्कसदिसता युज्जतीति। एत्थ च वण्टच्छेदे वण्टूपनिबन्धानं अम्बपक्कानं अम्बरुक्खतो विच्छेदो विय भवनेत्तिछेदे तदुपनिबन्धानं रूपक्खन्धादीनं सन्तानतो विच्छेदोति एत्तावता ओपम्मं दट्ठब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४८. **धम्मपरियायेति** पाळियं। **इधत्थोति** दिट्ठधम्महितं। **परत्थोति** सम्परायहितं। सङ्गामं विजिनाति एतेनाति **सङ्गामविजयो**। अत्थसम्पत्तिया **अत्थजालं**। ब्यञ्जनसम्पत्तिया, सीलादिअनवज्जधम्मनिद्देसतो च **धम्मजालं**। सेट्ठट्ठेन ब्रह्मभूतानं मग्गफलनिब्बानानं विभत्तत्ता **ब्रह्मजालं**। दिट्ठिविवेचनमुखेन सुञ्ञतापकासनेन सम्मादिट्ठिया विभावितत्ता **दिट्ठिजालं**। तित्थियवादनिम्मद्दनूपायत्ता **अनुत्तरो सङ्गामविजयोति** एवम्पेत्थ योजना वेदितब्बा।

१४९. **अत्तमनाति** पीतिया गहितचित्ता। तेनेवाह **"बुद्धगताया"**तिआदि। यथा पन अनत्तमना अत्तनो अनत्थचरताय परमना वेरिमना नाम होन्ति। यथाह "दिसो दिस"न्ति (ध० प० ४२; उदा० ३३) गाथा, न एवं अत्तमना। इमे पन अत्तनो अत्थचरताय सकमना होन्तीति आह **"अत्तमनाति सकमना"**ति। अथ वा **अत्तमनाति** समत्तमना, इमाय देसनाय परिपुण्णमनसङ्कप्पाति अत्थो। **अभिनन्दतीति** तण्हायतीति अत्थोति आह **"तण्हायम्पि आगतो"**ति। अनेकत्थत्ता धातूनं **अभिनन्दन्तीति** उपगच्छन्ति सेवन्तीति अत्थोति आह **"उपगमनेपि आगतो"**ति। तथा **अभिनन्दन्तीति** सम्पटिच्छन्तीति अत्थोति आह **"सम्पटिच्छनेपि आगतो"**ति। **"अभिनन्दित्वा"**ति इमिना पदेन वुत्तोयेव अत्थो **"अनुमोदित्वा"**ति इमिना पकासीयतीति अभिनन्दनसद्दो इध अनुमोदनसद्दत्थोति आह **"अनुमोदनेपि आगतो"**ति। "कतमञ्च तं भिक्खवे"तिआदिना (दी० नि० १.७) तत्थ तत्थ पवत्ताय कथेतुकम्यतापुच्छाय विस्सज्जनवसेन पवत्तत्ता इदं सुत्तं **वेय्याकरणं** होति। यस्मा पन पुच्छाविस्सज्जनवसेन पवत्तम्पि सगाथकं सुत्तं गेय्यं नाम होति, निग्गाथकत्तमेव पन अङ्गन्ति गाथारहितं वेय्याकरणं, तस्मा वुत्तं **"निग्गाथकत्ता हि इदं वेय्याकरणन्ति वुत्त"**न्ति।

अपरेसुपीति एत्थ **पिसद्देन** पारमिपरिचयम्पि सङ्गण्हाति। वुत्तञ्हि बुद्धवंसे –

"इमे धम्मे सम्मसतो, सभावसरसलक्खणे।
धम्मतेजेन वसुधा, दससहस्सी पकम्पथा"ति।। (बु० वं० २.१६६)

वीरियबलेनाति **महाभिनिक्खमने** चक्कवत्तिसिरिपरिच्चागहेतुभूतवीरियप्पभावेन, **बोधिमण्डूपसङ्कमने** "कामं तचो च न्हारु च, अट्ठि च अवसिस्सतू"तिआदिना (म० नि० २.१८४; सं० नि० १.२.२२; महानि० १९६) वुत्तचतुरङ्गसमन्नागतवीरियानुभावेन। **अच्छरियवेगाभिहताति** विम्हयावहकिरियानुभावघट्टिता। **पंसुकूलधोवने** केचि "पुञ्ञतेजेना"ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वदन्ति, अच्छरियवेगाभिहताति युत्तं विय दिस्सति, **वेस्सन्तरजातके** पारमिपरिपूरणपुञ्ञतेजेन अनेकक्खत्तुं कम्पितत्ता **"अकालकम्पनेना"**ति वुत्तं। **साधुकारदानवसेन अकम्पित्थ** यथा तं धम्मचक्कप्पवत्तने (सं० नि० ३.५.१०८१; महाव० १३; पटि० म० २.३०)। सङ्गीतिकालादीसुपि साधुकारदानवसेन अकम्पित्थाति वेदितब्बं। अयं तावेत्थ अट्ठकथाय लीनत्थवण्णना।

पकरणनयवण्णना

अयं पन पकरणनयेन पाळिया अत्थवण्णना– सा पनायं अत्थवण्णना यस्मा देसनाय समुट्ठानप्पयोजनभाजनेसु पिण्डत्थेसु च निद्धारितेसु सुकरा होति सुविञ्ञेय्या च, तस्मा सुत्तदेसनाय समुट्ठानादीनि पठमं निद्धारयिस्साम। तत्थ **समुट्ठानं** ताव वुत्तं "वण्णावण्णभणन"न्ति। अपिच निन्दापसंसासु विनेय्याघातानन्दादिभावानापत्ति, तत्थ च आदीनवदस्सनं **समुट्ठानं।** तथा निन्दापसंसासु पटिपज्जनक्कमस्स, पसंसाविसयस्स खुद्दकादिवसेन अनेकविधस्स सीलस्स, सब्बञ्ञुतञ्ञाणस्स सस्सतादिदिट्ठिट्ठानेसु ततुत्तरि च अप्पटिहतचारताय, तथागतस्स च कत्थचि अपरियापन्नताय अनवबोधो **समुट्ठानं।**

वुत्तविपरियायेन **पयोजनं** वेदितब्बं। विनेय्याघातानन्दादिभावापत्ति आदिकञ्हि इमं देसनं पयोजेतीति। तथा कुहनलपनादिनानाविधमिच्छाजीवविद्धंसनं, द्वासट्ठिदिट्ठिजालविनिवेठनं, दिट्ठिसीसेन पच्चयाकारविभावनं, छफस्सायतनवसेन चतुसच्चकम्मट्ठाननिद्देसो, सब्बदिट्ठिगतानं अनवसेसपरियादानं, अत्तनो अनुपादापरिनिब्बानदीपनञ्च **पयोजनानि।**

वण्णावण्णनिमित्तं अनुरोधविरोधवन्तचित्ता कुहनादिविविधमिच्छाजीवनिरता सस्सतादिदिट्ठिपङ्कं निमुग्गा, सीलक्खन्धादीसु अपरिपूरकारिताय अनवबुद्धगुणविसेसञाणा विनेय्या इमिस्सा धम्मदेसनाय **भाजनं।**

पिण्डत्था पन आघातादीनं अकरणीयतावचनेन पटिञ्ञानुरूपं समणसञ्ञाय नियोजनं, खन्तिसोरच्चानुट्ठानं, ब्रह्मविहारभावनानुयोगो, सद्धापञ्ञासमायोगो, सतिसम्पजञ्ञाधिट्ठानं, पटिसङ्खानभावनाबलसिद्धि, परियुट्ठानानुसयप्पहानं, उभयहितपटिपत्ति, लोकधम्मेहि अनुपलेपो च दस्सिता होन्ति। तथा पाणातिपातादीहि पटिविरतिवचनेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीलविसुद्धि दस्सिता, ताय च हिरोत्तप्पसम्पत्ति, मेत्ताकरुणासमङ्गिता, वीतिक्कमप्पहानं, तदङ्गपहानं, दुच्चरितसंकिलेसप्पहानं, विरतित्तयसिद्धि, पियमनापगरुभावनीयतानिप्फत्ति, लाभसक्कारसिलोकसमुदागमो, समथविपस्सनानं अधिट्ठानभावो, अकुसलमूलतनुकरणं, कुसलमूलरोपनं, उभयानत्थदूरीकरणं, परिसासु विसारदता, अप्पमादविहारो,परेहि दुप्पधंसियता, अविप्पटिसारादिसमङ्गिता च दस्सिता होन्ति।

"गम्भीरा"तिआदिवचनेहि गम्भीरधम्मविभावनं, अलब्भनेय्यपतिट्ठता, कप्पानं असङ्ख्येय्येनापि दुल्लभपातुभावता, सुखुमेनपि ञाणेन पच्चक्खतो पटिविज्झितुं असक्कुणेय्यता, धम्मन्वयसङ्खातेन अनुमानञाणेनापि दुरधिगमनीयता, पस्सद्धसब्बदरथता, सन्तधम्मविभावनं, सोभनपरियोसानता, अतित्तिकरभावो, पधानभावप्पत्ति, यथाभूतञाणगोचरता, सुखुमसभावता, महापञ्ञाविभावना च दस्सिता होन्ति। दिट्ठिदीपकपदेहि समासतो सस्सतुच्छेददिट्ठियो पकासिताति ओलीनतातिधावनविभावनं, उपायविनिबद्धनिद्देसो, मिच्छाभिनिवेसकित्तनं, कुम्मग्गपटिपत्तिया पकासना, विपरियेसग्गाहपञ्ञापनं, परामासपरिग्गहो, पुब्बन्तापरन्तानुदिट्ठिपतिट्ठापनं, भवविभव-दिट्ठिविभागो, तण्हाविज्जापवत्ति, अन्तवानन्तवादिदिट्ठिनिद्देसो, अन्तद्वयावतारणं, आसवोघ-योगकिलेसगन्थसंयोजनूपादानविसेसविभज्जनञ्च दस्सितानि होन्ति। तथा **"वेदनानं समुदय"**न्तिआदिवचनेहि चतुन्नं अरियसच्चानं अनुबोधपटिवेधसिद्धि, विक्खम्भन-समुच्छेदप्पहानं, तण्हाविज्जाविगमो, सद्धम्मट्ठितिनिमित्तपरिग्गहो, आगमाधिगमसम्पत्ति, उभयहितपटिपत्ति, तिविधपञ्ञापरिग्गहो, सतिसम्पजञ्ञानुट्ठानं, सद्धापञ्ञासमायोगो, सम्मावीरियसमथानुयोजनं, समथविपस्सनानिप्फत्ति च दस्सिता होन्ति।

"अजानतं अपस्सत"न्ति अविज्जासिद्धि, **"तण्हागतानं परितस्सितविप्फन्दित"**न्ति तण्हासिद्धि, तदुभयेन च नीवरणसंयोजनद्वयसिद्धि, अनमतग्गसंसारवट्टानुच्छेदो, पुब्बन्ताहरणअपरन्तपटिसन्धानानि, अतीतपच्चुप्पन्नकालवसेन हेतुविभागो, अविज्जातण्हानं अञ्ञमञ्ञानतिवत्तनट्ठेन अञ्ञमञ्ञूपकारिता, पञ्ञाविमुत्तिचेतोविमुत्तीनं पटिपक्खनिद्देसो च दस्सिता होन्ति। **"तदपि फस्सपच्चया"**ति सस्सतादिपञ्ञापनस्स पच्चयाधीनवुत्तिताकथनेन धम्मानं निच्चतापटिसेधो, अनिच्चतापतिट्ठापनं, परमत्थतो कारकादिपटिक्खेपो, एवंधम्मतादिनिद्देसो, सुञ्ञतापकासनं, समत्तनियामपच्चयलक्खणविभावनञ्च दस्सितानि होन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"उच्छिन्नभवनेत्तिको"तिआदिना भगवतो पहानसम्पत्ति, विज्जाधिमुत्ति, वसीभावो, सिक्खत्तयनिप्फत्ति, निब्बानधातुद्वयविभागो, चतुरधिट्ठानपरिपूरणं, भवयोनिआदीसु अपरियापन्नता च दस्सिता होन्ति। सकलेन पन सुत्तपदेन इट्ठानिट्ठेसु भगवतो तादिभावो, तत्थ च परेसं पतिट्ठापनं, कुसलधम्मानं आदिभूतधम्मद्वयस्स निद्देसो, सिक्खत्तयूपदेसो, अत्तन्तपादिपुग्गलचतुक्कसिद्धि, कण्हाकण्हविपाकादिकम्मचतुक्कविभागो, चतुरप्पमञ्ञाविसयनिद्देसो, समुदयादिपञ्चकस्स यथाभूतावबोधो, छसारणीयधम्मविभावना, दसनाथकरधम्मपतिट्ठापन्ति एवमादयो निद्धारेतब्बा।

सोळसहारवण्णना

देसनाहारवण्णना

तत्थ "अत्ता, लोको"ति च दिट्ठिया अधिट्ठानभावेन, वेदनाफस्सायतनादिमुखेन च गहितेसु पञ्चसु उपादानक्खन्धेसु तण्हावज्जा पञ्चुपादानक्खन्धा **दुक्खसच्चं**। तण्हा **समुदयसच्चं**। सा पन परितस्सनाग्गहणेन "तण्हागतान"न्ति, "वेदनापच्चया तण्हा"ति च सरूपेनेव समुदयग्गहणेन, भवनेत्तिग्गहणेन च पाळियं गहिताव। अयं ताव सुत्तन्तनयो। अभिधम्मनयेन पन आघातानन्दादिवचनेहि, आतप्पादिपदेहि, चित्तप्पदोसवचनेन, सब्बदिट्ठिदीपकपदेहि, कुसलाकुसलग्गहणेन, भवग्गहणेन, सोकादिग्गहणेन, तत्थ तत्थ समुदयग्गहणेन चाति सङ्खेपतो सब्बलोकियकुसलाकुसलधम्मविभावनपदेहि गहिता कम्मकिलेसा **समुदयसच्चं**। उभिन्नं अप्पवत्ति **निरोधसच्चं**। तस्स तत्थ तत्थ वेदनानं अत्थङ्गमनिस्सरणपरियायेहि, पच्चत्तं निब्बुतिवचनेन, अनुपादाविमुत्तिवचनेन च पाळियं गहणं वेदितब्बं। निरोधपजानना पटिपदा **मग्गसच्चं**। तस्सापि तत्थ तत्थ वेदनानं समुदयादियथाभूतवेदनापदेसेन, छन्नं फस्सायतनानं समुदयादियथाभूतपजाननपरियायेन, भवनेत्तिया उच्छेदपरियायेन च गहणं वेदितब्बं। तत्थ समुदयेन **अस्सादो,** दुक्खेन **आदीनवो,** मग्गनिरोधेहि **निस्सरणन्ति** एवं चतुसच्चवसेन, यानि **पाळियं** (नेत्ति० ९) सरूपेनेव आगतानि अस्सादादीनवनिस्सरणानि, तेसञ्च वसेन इध अस्सादादयो वेदितब्बा। विनेय्यानन्तादिभावापत्तिआदिकं यथावुत्तविभागं पयोजनमेव **फलं**। आघातादीनं अकरणीयता, आघातादिफलस्स च अनञ्ञसन्तानभाविता, निन्दापसंसासु यथासभावपटिजाननिब्बेठनाति एवं तंतंपयोजनाधिगमहेतु **उपायो**। आघातादीनं करणपटिसेधनादिअपदेसेन धम्मराजस्स **आणत्ति** वेदितब्बाति अयं **देसनाहारो**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विचयहारवण्णना

कप्पनाभावेपि वोहारवसेन, अनुवादवसेन च "मम"न्ति वुत्तं, नियमाभावतो विकप्पनत्थं वाग्गहणं कतं, गुणसमङ्गिताय, अभिमुखीकरणाय च **"भिक्खवे"**ति आमन्तनं। अञ्ञभावतो, पटिविरुद्धभावतो च **"परे"**ति वुत्तं, वण्णपटिपक्खतो, अवण्णनीयतो च "अवण्ण"न्ति वुत्तं। ब्यत्तिवसेन, वित्थारवसेन च "भासेय्यु"न्ति वुत्तं, धारणभावतो, अधम्मपटिपक्खतो च "धम्मस्सा"ति वुत्तं, दिट्ठिसीलेहि संहतभावतो, किलेसानं सङ्घातकरणतो च "सङ्घस्सा"ति वुत्तं। वुत्तपटिनिद्देसतो, वचनुपन्यासनतो च "तत्रा"ति वुत्तं, सम्मुखभावतो, पुथुभावतो च "तुम्हेही"ति वुत्तं। चित्तस्स हननतो, आरम्मणाभिघाततो च "आघातो"ति वुत्तं, आरम्मणे सङ्कोचवुत्तिया, अतुट्ठाकारताय च "अप्पच्चयो"ति वुत्तं, आरम्मणचिन्तनतो, निस्सयतो च "चेतसो"ति वुत्तं, अत्थासाधनतो, अनु अनु "अनत्थसाधनतो" च "अनभिरद्धी"ति वुत्तं, कारणानरहत्ता, सत्थुसासने ठितेहि कातुं असक्कुणेय्यत्ता च "न करणीया"ति वुत्तन्ति। इमिना नयेन सब्बपदेसु विनिच्छयो कातब्बो। इति अनुपदविचयतो **विचयो हारो** अतिवित्थारभयेन, सक्का च अट्ठकथं तस्सा लीनत्थवण्णनञ्च अनुगन्त्वा अयमत्थो विञ्ञुना विभावेतुन्ति न वित्थारयिम्ह।

युत्तिहारवण्णना

सब्बेन सब्बं आघातादीनं अकरणं तादिभावाय संवत्ततीति युज्जति इट्ठानिट्ठेसु समप्पवत्तिसब्भावतो। यस्मिं सन्ताने आघातादयो उप्पन्ना, तन्निमित्तको अन्तरायो तस्सेव सम्पत्तिविबन्धाय संवत्ततीति युज्जति। कस्मा? सन्तानन्तरेसु असङ्कमनतो। चित्तं अभिभवित्वा उप्पन्ना आघातादयो सुभासितादिसल्लक्खणेपि असमत्थताय संवत्तन्तीति युज्जति सकोधलोभानं अन्धतमसब्भावतो। पाणातिपातादिदुस्सील्यतो वेरमणि सब्बसत्तानं पामोज्जपासंसभावाय संवत्ततीति युज्जति। सीलसम्पत्तिया हि महतो कित्तिसद्दस्स अब्भुग्गमो होतीति। गम्भीरतादिविसेसयुत्तेन गुणेन तथागतस्स वण्णना एकदेसभूतापि सकलसब्बञ्ञुगुणग्गहणाय संवत्ततीति युज्जति अनञ्ञसाधारणत्ता। तज्जाअयोनिसो-मनसिकारपरिक्खतानि अधिगमतक्कनानि सस्सतवादादिअभिनिवेसाय संवत्तन्तीति युज्जति कप्पनाजालस्स असमुग्घाटितत्ता। वेदनादीनवानवबोधेन वेदनाय तण्हा पवड्ढतीति युज्जति अस्सादानुपस्सनासब्भावतो। सति च वेदयितरागे तत्थ अत्तत्तनियगाहो, सस्सतादिगाहो च विपरिफन्दतीति युज्जति कारणस्स सन्निहितत्ता। तण्हापच्चया हि उपादानं सस्सतादिवादे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्ञपेन्तानं, तदनुच्छविकं वा वेदनं वेदयन्तानं फस्सो हेतूति युज्जति विसयिन्द्रियविञ्ञाणसङ्गतिया विना तदभावतो। छफस्सायतननिमित्तवट्टस्स अनुपच्छेदोति युज्जति तत्थ अविज्जातण्हानं अप्पहीनत्ता। छन्नं फस्सायतनानं समुदयादिपजानना सब्बदिट्ठिगतिकसञ्ञं अतिच्च तिट्ठतीति युज्जति चतुसच्चपटिवेधभावतो। इमाहेव द्वासट्ठिया दिट्ठीहि सब्बदिट्ठिगतानं अन्तोजालीकतभावोति युज्जति अकिरियवादादीनं इस्सरवादादीनञ्च तदन्तोगधत्ता। तथा चेव संवण्णितं। उच्छिन्नभवनेत्तिको तथागतस्स कायोति युज्जति, यस्मा भगवा अभिनीहारसम्पत्तिया चतूसु सतिपट्ठानेसु पतिट्ठितचित्तो सत्तबोज्झङ्गेयेव यथाभूतं भावेसि। कायस्स भेदा परिनिब्बुतं न दक्खन्तीति युज्जति अनुपादिसेसनिब्बानप्पत्तियं रूपादीसु कस्सचिपि अनवसेसतोति अयं **युत्तिहारो**।

पदट्ठानहारवण्णना

अवण्णारहअवण्णानुरूपसम्पत्तानादेय्यवचनतादिविपत्तीनं पदट्ठानं। वण्णारहवण्णानुरूपसम्पत्तसद्धेय्यवचनतादिसम्पत्तीनं पदट्ठानं। तथा आघातादयो निरयादिदुक्खस्स पदट्ठानं। आघातादीनं अकरणं सग्गसम्पत्तिआदिसब्बसम्पत्तीनं पदट्ठानं। पाणातिपातादीहि पटिविरति अरियस्स सीलक्खन्धस्स पदट्ठानं। अरियो सीलक्खन्धो अरियस्स समाधिक्खन्धस्स पदट्ठानं। अरियो समाधिक्खन्धो अरियस्स पञ्ञाक्खन्धस्स पदट्ठानं। गम्भीरतादिविसेसयुत्तं भगवतो पटिवेधप्पकारञाणं देसनाञाणस्स पदट्ठानं। देसनाञाणं विनेय्यानं सकलवट्टदुक्खनिस्सरणस्स पदट्ठानं। सब्बापि दिट्ठि दिट्ठुपादान्ति सा यथारहं नवविधस्सापि भवस्स पदट्ठानं। भवो जातिया, जाति जरामरणस्स, सोकादीनञ्च पदट्ठानं। वेदनानं समुदयादियथाभूतवेदनं चतुन्नं अरियसच्चानं अनुबोधपटिवेधो। तत्थ अनुबोधो पटिवेधस्स पदट्ठानं, पटिवेधो चतुब्बिधस्स सामञ्ञफलस्स पदट्ठानं। "अजानतं अपस्सत"न्ति अविज्जागहणं, तत्थ अविज्जा सङ्खारानं पदट्ठान्ति याव वेदना तण्हाय पदट्ठान्ति नेतब्बं। "तण्हागतानं परितस्सितविप्फन्दित"न्ति एत्थ तण्हा उपादानस्स पदट्ठानं। "तदपि फस्सपच्चया"ति एत्थ सस्सतादिपञ्ञापनं परेसं मिच्छाभिनिवेसस्स पदट्ठानं, मिच्छाभिनिवेसो सद्धम्मस्सवनसप्पुरिसूपस्सययोनिसोमनसिकारधम्मानुधम्मपटिपत्तीहि विमुखताय, असद्धम्मस्सवनादीनञ्च पदट्ठानं, "अञ्ञत्र फस्सा"तिआदीसु फस्सो वेदनाय पदट्ठानं, छ फस्सायतनानि फस्सस्स, सकलवट्टदुक्खस्स च पदट्ठानं, छन्नं फस्सायतनानं समुदयादियथाभूतप्पजाननं निब्बिदाय पदट्ठानं, निब्बिदा विरागस्साति याव अनुपादापरिनिब्बानं नेतब्बं। भगवतो भवनेत्तिसमुच्छेदो सब्बञ्ञुताय पदट्ठानं। तथा अनुपादापरिनिब्बानस्साति अयं **पदट्ठानहारो**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्खणहारवण्णना

आघातादिग्गहणेन कोधुपनाहमक्खपलासइस्सामच्छरियसारम्भपरवम्भनादीनं सङ्गहो पटिघचित्तुप्पादपरियापन्नताय एकलक्खणत्ता। आनन्दादिग्गहणेन अभिज्झाविसमलोभ-मानातिमानमदप्पमादादीनं सङ्गहो लोभचित्तुप्पादपरियापन्नताय समानलक्खणत्ता। तथा आघातग्गहणेन अवसिट्ठगन्थनीवरणानं सङ्गहो कायगन्थनीवरणलक्खणेन एकलक्खणत्ता। आनन्दग्गहणेन फस्सादीनं सङ्गहो सङ्खारक्खन्धलक्खणेन एकलक्खणत्ता। सीलग्गहणेन अधिचित्तअधिपञ्ञासिक्खानम्पि सङ्गहो सिक्खालक्खणेन एकलक्खणत्ता। इध पन सीलस्सेव इन्द्रियसंवरादिकस्स दट्ठब्बं। दिट्ठिग्गहणेन अवसिट्ठउपादानानम्पि सङ्गहो उपादानलक्खणेन एकलक्खणत्ता। "वेदनान"न्ति एत्थ वेदनाग्गहणेन अवसिट्ठउपादानक्खन्धानम्पि सङ्गहो खन्धलक्खणेन एकलक्खणत्ता। तथा वेदनाय धम्मायतनधम्मधातुपरियापन्नत्ता सम्मसनूपगानं सब्बेसं आयतनानं धातूनञ्च सङ्गहो आयतनलक्खणेन, धातुलक्खणेन च एकलक्खणत्ता। "अजानतं अपस्सत"न्ति एत्थ अविज्जाग्गहणेन हेतुआसवोघयोगनीवरणादिसङ्गहो हेतादिलक्खणेन एकलक्खणत्ता अविज्जाय, तथा "तण्हागतानं परितस्सितविप्फन्दित"न्ति एत्थ तण्हाग्गहणेनापि। "तदपि फस्सपच्चया"ति एत्थ फस्सग्गहणेन सञ्ञासङ्खारविञ्ञाणानं सङ्गहो विपल्लासहेतुभावेन, खन्धलक्खणेन च एकलक्खणत्ता। छफस्सायतनग्गहणेन खन्धिन्द्रियधातादीनं सङ्गहो फस्सुप्पत्तिनिमित्तताय, सम्मसनसभावेन च एकलक्खणत्ता। भवनेत्तिग्गहणेन अविज्जादीनम्पि संकिलेसधम्मानं सङ्गहो वट्टहेतुभावेन एकलक्खणत्ताति अयं **लक्खणहारो**।

चतुब्यूहहारवण्णना

निन्दापसंसाहि सम्माकम्पितचेतसा मिच्छाजीवतो अनोरता सस्सतादिमिच्छा-भिनिवेसिनो सीलादिधम्मक्खन्धेसु अप्पतिट्ठितताय सम्मासम्बुद्धगुणरसस्सादविमुखा वेनेय्या इमिस्सा देसनाय **निदानं**। ते यथावुत्तदोसविनिमुत्ता कथं नु खो सम्मापटिपत्तिया उभयहितपरा भवेय्युन्ति अयमेत्थ भगवतो **अधिप्पायो**। पदनिब्बचनं **निरुत्ति**। तं "एव"न्तिआदिनिदानपदानं, "मम"न्तिआदिपाळिपदानञ्च अट्ठकथावसेन सुविञ्ञेय्यत्ता अतिवित्थारभयेन न वित्थारयिम्ह। पदपदत्थनिद्देसनिक्खेपसुत्तदेसनासन्धिवसेन छब्बिधा **सन्धि**। तत्थ पदस्स पदन्तरेन सम्बन्धो **पदसन्धि**। तथा पदत्थस्स पदत्थन्तरेन सम्बन्धो **पदत्थसन्धि**। नानानुसन्धिकस्स सुत्तस्स तंतंअनुसन्धीहि सम्बन्धो, एकानुसन्धिकस्स च पुब्बापरसम्बन्धो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निद्देससन्धि, या अट्ठकथायं पुच्छानुसन्धिअज्झासयानुसन्धियथानुसन्धिवसेन तिविधा विभत्ता, ता पनेता तिस्सोपि सन्धियो अट्ठकथायं विचारिता एव। **सुत्तसन्धि** च पठमं निक्खेपवसेन अम्हेहि पुब्बे दस्सितायेव। एकिस्सा देसनाय देसनान्तरेन सद्धिं संसन्दनं **देसनासन्धि,** सा एवं वेदितब्बा– "ममं वा भिक्खवे...पे०... न चेतसो अनभिरद्धि करणीया"ति अयं देसना "उभतोदण्डकेन चेपि भिक्खवे ककचेन चोरा ओचरका अङ्गमङ्गानि ओक्कन्तेय्युं, तत्रपि यो मनो पदूसेय्य, न मे सो तेन सासनकरो"ति (म० नि० १.२३२) इमाय देसनाय सद्धिं संसन्दति। "तुम्हं येवस्स तेन अन्तरायो"ति "कम्मस्सका माणव सत्ता...पे०... दायादा भविस्सन्ती"ति (अ० नि० ३.१०.२१६) इमाय देसनाय संसन्दति। "अपि तुम्हे...पे०... आजानेय्याथा"ति "कुद्धो अत्थं...पे०... सहते नर"न्ति (अ० नि० २.७.६४; महानि० ५, १५६, १९५) इमाय देसनाय संसन्दति।

"ममं वा भिक्खवे परे वण्णं...पे०... न चेतसो उब्बिल्लावितत्तं करणीय"न्ति "धम्मापि वो भिक्खवे पहातब्बा, पगेव अधम्मा (म० नि० १.२४०)। कुल्लूपमं वो भिक्खवे धम्मं देसेस्सामि, नित्थरणत्थाय, नो गहणत्थाया"ति (म० नि० १.२४०) इमाय देसनाय संसन्दति। "तत्र चे तुम्हेहि...पे०... उब्बिलाविता, तुम्हं येवस्स तेन अन्तरायो"ति "लुद्धोअत्थं...पे०... सहते नर"न्ति (इतिवु० ८८; महानि० ५.१५६, १९५; चूळनि० १२८) "कामन्धा जालसञ्छन्ना, तण्हाछदनछादिता"ति (उदा० ६४; नेत्ति० २७, ९०; पेटको० १४) इमाहि देसनाहि संसन्दति।

"अप्पमत्तकं...पे०... सीलमत्तक"न्ति "पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति। अयं खो ब्राह्मण यञ्ञो पुरिमेहि यञ्ञेहि अप्पट्ठतरो च अप्पसमारम्भतरो च महप्फलतरो च महानिसंसतरो चा"तिआदिकाय (दी० नि० १.३५३) देसनाय संसन्दति, पठमज्झानस्स सीलतो महप्फलमहानिसंसतरभाववचनेन झानतो सीलस्स अप्पभावदीपनतो।

"पाणातिपातं पहाया"तिआदि "समणो खलु भो गोतमो सीलवा...पे०... कुसलसीलेन समन्नागतो"तिआदिकाहि (दी० नि० १.३०४) देसनाहि संसन्दति।

"अञ्ञेव धम्मा गम्भीरा"तिआदि "अधिगतो खो म्यायं धम्मो गम्भीरो"तिआदि (दी० नि० २.६७; म० नि० १.२८१; २.३३७; सं० नि० १.१.१७२; महाव० ७,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८) पाळिया संसन्दति। गम्भीरतादिविसेसयुत्तधम्मपटिवेधेन हि ञाणस्स गम्भीरादिभावो विञ्ञायतीति।

"सन्ति भिक्खवे एके समणब्राह्मणा"तिआदि "सन्ति भिक्खवे एके समणब्राह्मणा पुब्बन्तकप्पिका...पे०... अभिवदन्ति, सस्सतो अत्ता च लोको च, इदमेव सच्चं, मोघमञ्ञन्ति इत्थेके अभिवदन्ति, असस्सतो, सस्सतो च असस्सतो च, नेव सस्सतो च नासस्सतो च, अन्तवा, अनन्तवा, अन्तवा च अनन्तवा च, नेवन्तवा नानन्तवा च अत्ता च लोको च इदमेव सच्चं, मोघमञ्ञन्ति इत्थेके अभिवदन्ती"तिआदिकाहि (म० नि० ३.२७) देसनाहि संसन्दति।

"सन्ति भिक्खवे एके समणब्राह्मणा अपरन्तकप्पिका"तिआदि "सन्ति भिक्खवे एके समणब्राह्मणा अपरन्तकप्पिका...पे०... अभिवदन्ति, सञ्ञी अत्ता होति अरोगो परं मरणा। इत्थेके अभिवदन्ति असञ्ञी, नेवसञ्ञीनासञ्ञी च अत्ता होति अरोगो परं मरणा। इत्थेके अभिवदन्ति सतो वा पन सत्तस्स उच्छेदं विनासं विभवं पञ्ञपेन्ति, दिट्ठधम्मनिब्बानं वा पनेके अभिवदन्ती"तिआदिकाहि (म० नि० ३.२१) देसनाहि संसन्दति। "वेदनानं...पे०... तथागतो"ति "तयिदं सङ्खतं ओळारिकं, अत्थि खो पन सङ्खारानं निरोधो, अत्थेतन्ति इति विदित्वा तस्स निस्सरणदस्सावी तथागतो तदुपातिवत्तो"तिआदिकाहि (म० नि० ३.२८) देसनाहि संसन्दति।

"तदपि तेसं...पे०... विप्फन्दितमेवा"ति इदं "तेसं भवतं अञ्ञत्रेव छन्दाय अञ्ञत्र रुचिया अञ्ञत्र अनुस्सवा अञ्ञत्र आकारपरिवितक्का अञ्ञत्र दिट्ठिनिज्झानक्खन्तिया पच्चत्तंयेव ञाणं भविस्सति परिसुद्धं परियोदातन्ति नेतं ठानं विज्जति। पच्चत्तं खो पन भिक्खवे ञाणे असति परिसुद्धे परियोदाते यदपि ते भोन्तो समणब्राह्मणा तत्थ ञाणभागमत्तमेव परियोदापेन्ति, तदपि तेसं भवतं समणब्राह्मणानं उपादानमक्खायती"तिआदिकाहि (म० नि० ३.२९) देसनाहि संसन्दति।

"तदपि फस्सपच्चया"ति इदञ्च "चक्खुञ्च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति चक्खुविञ्ञाणं, तिण्णं सङ्गति फस्सो, फस्सपच्चया वेदना, वेदनापच्चया तण्हा, तण्हापच्चया उपादान"न्ति, (सं० नि० १.२.४४) "छन्दमूलका इमे आवुसो धम्मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मनसिकारसमुट्ठाना फस्ससमोधाना वेदनासमोसरणा''ति (अ० नि० ३.८.८३) च आदिकाहि देसनाहि संसन्दति।

''यतो खो भिक्खवे भिक्खु छन्नं फस्सायतनान''न्तिआदि ''यतो खो आनन्द भिक्खु नेव वेदनं अत्तानं समनुपस्सति, न सञ्ञं, न सङ्खारे, न विञ्ञाणं अत्तानं समनुपस्सति, सो एवं असमनुपस्सन्तो न किञ्चि लोके उपादियति, अनुपादियं न परितस्सति, अपरितस्सं पच्चत्तंयेव परिनिब्बायती''तिआदिकाहि देसनाहि संसन्दति।

''सब्बे ते इमेहेव द्वासट्ठिया वत्थूहि अन्तोजालीकता''तिआदि ''ये हि केचि भिक्खवे...पे०... अभिवदन्ति, सब्बे ते इमानेव पञ्च कायानि अभिवदन्ति एतेसं वा अञ्ञतर''न्तिआदिकाहि (म० नि० ३.२६) देसनाहि संसन्दति। **''कायस्स भेदा...पे०... देवमनुस्सा''ति –**

''अच्ची यथा वातवेगेन खित्ता, (उपसिवाति भगवा)
अत्थं पलेति न उपेति सङ्खं।
एवं मुनी नामकाया विमुत्तो,
अत्थं पलेति न उपेति सङ्ख''न्ति।। (सु० नि० १०८०; चूळनि० ४३)

आदिकाहि देसनाहि संसन्दतीति अयं **चातुब्यूहो हारो।**

आवत्तहारवण्णना

आघातादीनं अकरणीयतावचनेन खन्तिसोरच्चानुट्ठानं। तत्थ खन्तिया सद्धापञ्ञापरापकारदुक्खसहगतानं सङ्गहो, सोरच्चेन सीलस्स। सद्धादिग्गहणेन च सद्धिन्द्रियादिसकलबोधिपक्खियधम्मा आवत्तन्ति। सीलग्गहणेन अविप्पटिसारादयो सब्बेपि सीलानिसंसधम्मा आवत्तन्ति। पाणातिपातादीहि पटिविरतिवचनेन अप्पमादविहारो, तेन सकलं सासनब्रह्मचरियं आवत्तति। गम्भीरतादिविसेसयुत्तधम्मग्गहणेन महाबोधिपकित्तनं। अनावरणञाणपदट्ठानञ्हि आसवक्खयञाणं, आसवक्खयञाणपदट्ठानञ्च अनावरणञाणं महाबोधि, तेन दसबलादयो सब्बे बुद्धगुणा आवत्तन्ति। सस्सतादिदिट्ठिग्गहणेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तण्हाविज्जाय सङ्गहो, ताहि अनमतग्गसंसारवट्टं आवत्तति। वेदनानं समुदयादियथाभूतवेदनेन भगवतो परिञ्ञात्तयविसुद्धि, ताय पञ्ञापारमिमुखेन सब्बपारमियो आवत्तन्ति। "अजानतं अपस्सत"न्ति अविज्जाग्गहणेन अयोनिसोमनसिकारपरिग्गहो, तेन च अयोनिसोमनसिकारमूलका धम्मा आवत्तन्ति। "तण्हागतानं परितस्सितविप्फन्दित"न्ति तण्हाग्गहणेन नव तण्हामूलका धम्मा आवत्तन्ति, "तदपि फस्सपच्चया"तिआदि सस्सतादिपञ्ञापनस्स पच्चयाधीनवुत्तिदस्सनं, तेन अनिच्चतादिलक्खणत्तयं आवत्तति। छन्नं फस्सायतनानं यथाभूतं पजाननेन विमुत्तिसम्पदानिद्देसो, तेन सत्तपि विसुद्धियो आवत्तन्ति। "उच्छिन्नभवनेत्तिको तथागतस्स कायो"ति तण्हापहानं, तेन भगवतो सकलसंकिलेसप्पहानं आवत्ततीति अयं **आवत्तो हारो।**

विभत्तिहारवण्णना

आघातानन्दादयो अकुसला धम्मा, तेसं अयोनिसोमनसिकारादि पदट्ठानं। येहि पन धम्मेहि आघातानन्दादीनं अकरणं अप्पवत्ति, ते अब्यापादादयो कुसला धम्मा, तेसं योनिसोमनसिकारादि पदट्ठानं। तेसु आघातादयो कामावचराव, अब्यापादादयो चतुभूमका। तथा पाणातिपातादीहि पटिविरति कुसला वा अब्याकता वा, तस्सा हिरोत्तप्पादयो धम्मा पदट्ठानं। तत्थ कुसला सिया कामावचरा, सिया लोकुत्तरा, अब्याकता लोकुत्तराव। "अत्थि भिक्खवे अञ्ञेव धम्मा गम्भीरा"ति वुत्तधम्मा सिया कुसला, सिया अब्याकता, तत्थ कुसलानं वुट्ठानगामिनिविपस्सना पदट्ठानं। अब्याकतानं मग्गधम्मा, विपस्सना, आवज्जना वा पदट्ठानं। तेसु कुसला लोकुत्तरा, अब्याकता सिया कामावचरा, सिया लोकुत्तरा, सब्बापि दिट्ठियो अकुसलाव कामावचराव, तासं अविसेसेन मिच्छाभिनिवेसे अयोनिसोमनसिकारो पदट्ठानं। विसेसतो पन सन्ततिघनविनिब्भोगाभावतो एकत्तनयस्स मिच्छागाहो अतीतजातिअनुस्सरणतक्कसहितो सस्सतदिट्ठिया पदट्ठानं। हेतुफलभावेन सम्बन्धभावस्स अग्गहणतो नानत्तनयस्स मिच्छागाहो तज्जासमन्नाहारसहितो उच्छेददिट्ठिया पदट्ठानं। एवं सेसदिट्ठीनम्पि यथासम्भवं वत्तब्बं। "वेदनान"न्ति एत्थ वेदना सिया कुसला, सिया अब्याकता, सिया कामावचरा, सिया रूपावचरा, सिया अरूपावचरा, फस्सो तासं पदट्ठानं। वेदनानं समुदयादियथाभूतवेदनं मग्गञाणं, अनुपादाविमुत्ति फलं, तेसं "अञ्ञेव धम्मा गम्भीरा"ति एत्थ वुत्तनयेन धम्मादिविभागो नेतब्बो। "अजानतं अपस्सत"न्तिआदीसु अविज्जा तण्हा अकुसला कामावचरा, तासु अविज्जाय आसवा, अयोनिसोमनसिकारो एव वा पदट्ठानं। तण्हाय संयोजनियेसु धम्मेसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अस्साददस्सनं पदट्ठानं। ''तदपि फस्सपच्चया''ति एत्थ फस्सस्स वेदनाय विय धम्मादिविभागो वेदितब्बो। इमिना नयेन फस्सायतनादीनम्पि यथारहं धम्मादिविभागो नेतब्बोति अयं **विभत्तिहारो**।

परिवत्तहारवण्णना

आघातादीनं अकरणं खन्तिसोरच्चानि अनुब्रूहेत्वा पटिसङ्खानभावनाबलसिद्धिया उभयहितपटिपत्तिं आवहति। आघातादयो पन पवत्तियमाना दुब्बण्णतं दुक्खसेय्यं भोगहानिं अकित्तिं परेहि दुरुपसङ्कमनतञ्च निप्फादेन्ता निरयादीसु महादुक्खं आवहन्ति। पाणातिपातादीहि पटिविरति अविप्पटिसारादिकल्याणं परम्परं आवहति। पाणातिपातादि पन विप्पटिसारादिअकल्याणं परम्परं, गम्भीरतादिविसेसयुत्तं ञाणं विनेय्यानं यथारहं विज्जाभिञ्ञादिगुणविसेसं आवहति सब्बञेय्यं यथासभावावबोधतो। तथा गम्भीरतादिविसेसरहितं पन ञाणं ञेय्येसु सावरणतो यथावुत्तगुणविसेसं नावहति। सब्बापि चेता दिट्ठियो यथारहं सस्सतुच्छेदभावतो अन्तद्वयभूता सक्कायतीरं नातिवत्तन्ति अनिय्यानिकसभावत्ता। निय्यानिकसभावत्ता पन सम्मादिट्ठि सपरिक्खारा मज्झिमपटिपदाभूता अतिक्कम्म सक्कायतीरं पारं आगच्छति। वेदनानं समुदयादियथाभूतवेदनं अनुपादाविमुत्तिं आवहति मग्गभावतो। वेदनानं समुदयादिअसम्पटिवेधो संसारचारकावरोधं आवहति सङ्खारानं पच्चयभावतो। वेदयितसभावपटिच्छादको सम्मोहो तदभिनन्दनं आवहति। यथाभूतावबोधो पन तत्थ निब्बेदं विरागञ्च आवहति। मिच्छाभिनिवेसे अयोनिसोमनसिकारसहिता तण्हा अनेकविहितं दिट्ठिजालं पसारेति। यथावुत्ततण्हासमुच्छेदो पठममग्गो तं दिट्ठिजालं सङ्कोचेति। सस्सतवादादिपञ्ञापनस्स फस्सो पच्चयो होति असति फस्से तदभावतो। दिट्ठिबन्धनबन्धानं फस्सायतनादीनं अनिरोधेन फस्सादिअनिरोधो संसारदुक्खस्स अनिवत्तियेव, याथावतो फस्सायतनादिपरिञ्ञा सब्बदिट्ठिदस्सनानि अतिवत्तति, फस्सायतनादिअपरिञ्ञा तंदिट्ठिगहनं नातिवत्तति, भवनेत्तिसमुच्छेदो आयतिं अत्तभावस्स अनिब्बत्तिया संवत्तति, असमुच्छिन्नाय भवनेत्तिया अनागते भवप्पबन्धो परिवत्ततियेवाति अयं **परिवत्तो हारो**।

वेवचनहारवण्णना

''मम मय्हं मे''ति परियायवचनं। ''भिक्खवे समणा तपस्सिनो''ति परियायवचनं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"परे अञ्ञे पटिविरुद्धा"ति परियायवचनं। "अवण्णं अकित्तिं निन्द"न्ति परियायवचनं। "भासेय्युं भणेय्युं करेय्यु"न्ति परियायवचनं। "धम्मस्स विनयस्स सत्थुसासनस्सा"ति परियायवचनं। "सङ्घस्स समूहस्स गणस्सा"ति परियायवचनं। "तत्र तत्थ तेसू"ति परियायवचनं। "तुम्हेहि वो भवन्तेही"ति परियायवचनं। "आघातो दोसो ब्यापादो"ति परियायवचनं। "अप्पच्चयो दोमनस्सं चेतसिकदुक्ख"न्ति परियायवचनं। "चेतसो अनभिरद्धि चित्तस्स ब्यापत्ति मनोपदोसो"ति परियायवचनं। "न करणीया न उप्पादेतब्बा न पवत्तेतब्बा"ति परियायवचनं। इति इमिना नयेन सब्बपदेसु वेवचनं वत्तब्बन्ति अयं **वेवचनो हारो**।

पञ्ञत्तिहारवण्णना

आघातो वत्थुवसेन दसविधेन एकूनवीसतिविधेन वा पञ्ञत्तो। अप्पच्चयो उपविचारवसेन छधा पञ्ञत्तो। आनन्दोपीतिआदिवसेन नवधा पञ्ञत्तो। पीति सामञ्ञतो खुद्दिकादिवसेन पञ्चधा पञ्ञत्ता। सोमनस्सं उपविचारवसेन छधा पञ्ञत्तं। सीलं वारित्तचारित्तादिवसेन अनेकधा पञ्ञत्तं। गम्भीरतादिविसेसयुत्तं ञाणं चित्तुप्पादवसेन चतुधा, द्वादसविधेन वा, विसयभेदतो अनेकधा च पञ्ञत्तं। दिट्ठिसस्सतादिवसेन द्वासट्ठिया भेदेहि, तदन्तोगधविभागेन अनेकधा च पञ्ञत्ता। वेदना छधा अट्ठसतधा अनेकधा च पञ्ञत्ता। तस्सा समुदयो पञ्चधा पञ्ञत्तो, तथा अत्थङ्गमो। अस्सादो दुविधेन पञ्ञत्तो। आदीनवो तिविधेन पञ्ञत्तो। निस्सरणं एकधा चतुधा च पञ्ञत्तं ...पे०... अनुपादाविमुत्ति दुविधेन पञ्ञत्ता।

"अजानतं अपस्सत"न्ति वुत्ता अविज्जा विसयभेदेन चतुधा अट्ठधा च पञ्ञत्ता। "तण्हागतान"न्तिआदिना वुत्ता तण्हा छधा अट्ठसतधा अनेकधा च पञ्ञत्ता। फस्सो निस्सयवसेन छधा पञ्ञत्तो। उपादानं चतुधा पञ्ञत्तं। भवो द्विधा अनेकधा च पञ्ञत्तो। जाति वेवचनवसेन छधा पञ्ञत्ता। तथा जरा सत्तधा पञ्ञत्ता। मरणं अट्ठधा नवधा च पञ्ञत्तं। सोको पञ्चधा पञ्ञत्तो। परिदेवो छधा पञ्ञत्तो। दुक्खं चतुधा पञ्ञत्तं, तथा दोमनस्सं। उपायासो चतुधा पञ्ञत्तो। "समुदयो होती"ति पभवपञ्ञत्ति, "यथाभूतं पजानाती"ति दुक्खस्स परिञ्ञापञ्ञत्ति, समुदयस्स पहानपञ्ञत्ति, निरोधस्स सच्छिकिरियापञ्ञत्ति, मग्गस्स भावनापञ्ञत्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अन्तोजालीकता"तिआदि सब्बदिट्ठीनं सङ्गहपञ्ञत्ति। "उच्छिन्नभवनेत्तिको"तिआदि दुविधेन परिनिब्बानपञ्ञत्ति। एवं आघातादीनं अकुसलकुसलादिधम्मानं यथापभवपञ्ञत्तिआदिवसेन, तथा "आघातो"ति ब्यापादस्स वेवचनपञ्ञत्ति, "अप्पच्चयो"ति दोमनस्सस्स वेवचनपञ्ञत्तीतिआदिना नयेन पञ्ञत्तिभेदो विभजितब्बोति अयं **पञ्ञत्तिहारो**।

ओतरणहारवण्णना

आघातग्गहणेन सङ्खारक्खन्धसङ्गहो, तथा अनभिरद्धिगहणेन। अप्पच्चयग्गहणेन वेदनाक्खन्धसङ्गहोति इदं **खन्धमुखेन ओतरणं**। तथा आघातादिग्गहणेन धम्मायतनं धम्मधातु दुक्खसच्चं समुदयसच्चं वा गहितन्ति इदं **आयतनमुखेन धातुमुखेन सच्चमुखेन** च **ओतरणं**। तथा आघातादीनं सहजाता अविज्जा हेतुसहजातअञ्ञमञ्ञनिस्सयसम्पयुत्तअत्थि-अविगतपच्चयेहि पच्चयो होति, असहजाता पन अनन्तरसमनन्तरअनन्तरूपनिस्सयनत्थि-विगतासेवनपच्चयेहि पच्चयो होति, अनन्तरा उपनिस्सयवसेनेव पच्चयो होति। तण्हाउपादानादीनं, फस्सादीनम्पि तेसं सहजातानं असहजातानञ्च यथारहं पच्चयभावो वत्तब्बो। कोचि पनेत्थ अधिपतिवसेन, कोचि कम्मवसेन, कोचि आहारवसेन, कोचि इन्द्रियवसेन, कोचि झानवसेन, कोचि मग्गवसेनपि पच्चयो होतीति। अयम्पि विसेसो वेदितब्बोति इदं **पटिच्चसमुप्पादमुखेन ओतरणं**। आनन्दादीनम्पि इमिनाव नयेन खन्धादिमुखेन ओतरणं विभावेतब्बं।

तथा सीलं पाणातिपातादीहि विरतिचेतना, अब्यापादादिचेतसिकधम्मा च, पाणातिपातादयो चेतनाव, तेसं तदुपकारकधम्मानञ्च लज्जादयादीनं सङ्खारक्खन्धधम्मायतनादिसङ्गहो, पुरिमनयेनेव खन्धादिमुखेन च ओतरणं विभावेतब्बं। एस नयो ञाणदिट्ठिवेदनाअविज्जातण्हादिग्गहणेसु। निस्सरणअनुपादाविमुत्तिगहणेसु असङ्खतधातुवसेनपि **धातुमुखेन ओतरणं** विभावेतब्बं। तथा "वेदनानं...पे०... अनुपादाविमुत्तो"ति एतेन भगवतो सीलादयो पञ्च धम्मक्खन्धा, सतिपट्ठानादयो च बोधिपक्खियधम्मा पकासिता होन्तीति तं मुखेनपि ओतरणं वेदितब्बं। "तदपि फस्सपच्चया"ति दिट्ठिपञ्ञापनस्स पच्चयाधीनवुत्तितादीपनेन **अनिच्चतामुखेन ओतरणं,** तथा एवंधम्मताय **पटिच्चसमुप्पादमुखेन ओतरणं,** अनिच्चस्स दुक्खानत्तभावतो **अप्पणिहितमुखेन सुञ्ञतामुखेन** च **ओतरणं**। सेसपदेसुपि एसेव नयोति अयं **ओतरणो हारो**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोधनहारवण्णना

"ममं वा...पे०... भासेय्यु"न्ति **आरम्भो**। "धम्मस्स...पे०... सङ्घस्स...पे०... भासेय्यु"न्ति **पदसुद्धि, नो आरम्भसुद्धि**। "तत्र तुम्हेहि...पे०... करणीया"ति **पदसुद्धि चेव आरम्भसुद्धि च**। दुतियनयादीसुपि एसेव नयो। तथा "अप्पमत्तकं खो पनेत"न्तिआदि **आरम्भो**। "कतम"न्तिआदि **पुच्छा**। "पाणातिपातं पहाया"तिआदि **पदसुद्धि, नो आरम्भसुद्धि, नो च पुच्छासुद्धि**। "इदं खो"तिआदि **पुच्छासुद्धि चेव पदसुद्धि च आरम्भसुद्धि च**।

तथा "अत्थि भिक्खवे"तिआदि **आरम्भो**। "कतमे च ते"तिआदि **पुच्छा**। "सन्ति भिक्खवे"तिआदि **आरम्भो**। **"किं"**न्तिआदि **आरम्भ पुच्छा**। "यथासमाहिते"तिआदि **पदसुद्धि, नो आरम्भसुद्धि नो च पुच्छासुद्धि**। "इमे खो ते"तिआदि **पदसुद्धि चेव पुच्छासुद्धि च आरम्भसुद्धि च**। इमिना नयेन सब्बत्थ आरम्भादयो वेदितब्बाति। अयं **सोधनो हारो**।

अधिट्ठानहारवण्णना

"अवण्ण"न्ति **सामञ्ञतो अधिट्ठानं तं,** अविकप्पेत्वा **विसेसवचनं** "ममं वा धम्मस्स वा सङ्घस्स वा"ति। सुक्कपक्खेपि एसेव नयो।

तथा "सील"न्ति **सामञ्ञतो अधिट्ठानं,** तं अविकप्पेत्वा **विसेसवचनं** "पाणातिपाता पटिविरतो"तिआदि।

"अञ्ञेव धम्मा"तिआदि **सामञ्ञतो अधिट्ठानं,** तं अविकप्पेत्वा **विसेसवचनं** "तयिदं भिक्खवे तथागतो पजानाती"तिआदि।

तथा "पुब्बन्तकप्पिका"तिआदि **सामञ्ञतो अधिट्ठानं,** तं अविकप्पेत्वा **विसेसवचनं** "सस्सतवादा"तिआदि। इमिना नयेन सब्बत्थ सामञ्ञविसेसो निद्धारेतब्बोति अयं **अधिट्ठानो हारो**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिक्खारहारवण्णना

आघातादीनं "अनत्थं मे अचरी"तिआदीनि (ध० स० १२३७; विभं० ९०९) च एकूनवीसति आघातवत्थूनि **हेतु**। आनन्दादीनं आरम्मणे अभिसिनेहो **हेतु**। सीलस्स हिरिओत्तप्पं अप्पिच्छतादयो च **हेतु**। "गम्भीरा"तिआदिना वुत्तधम्मस्स सब्बापि पारमियो **हेतु**, विसेसेन पञ्ञापारमी। दिट्ठीनं असप्पुरिसूपस्सयो, असद्धम्मस्सवनं, मिच्छाभिनिवेसेन अयोनिसोमनसिकारो च अविसेसेन **हेतु**, विसेसेन पन सस्सतवादादीनं अतीतजातिअनुस्सरणादि **हेतु**। वेदनानं अविज्जातण्हाकम्मानि फस्सो च **हेतु**। अनुपादाविमुत्तिया अरियमग्गो **हेतु**। पञ्ञापनस्स अयोनिसोमनसिकारो **हेतु**। तण्हाय संयोजनियेसु अस्सादानुपस्सना **हेतु**। फस्सस्स छळायतनानि, छळायतनस्स नामरूपं **हेतु**। भवनेत्तिसमुच्छेदस्स विसुद्धिभावना **हेतूति** अयं **परिक्खारो हारो**।

समारोपनहारवण्णना

आघातादीनं अकरणीयतावचनेन खन्तिसम्पदा दस्सिता होति। "अप्पमत्तकं खो पनेत"न्तिआदिना सोरच्चसम्पदा, "अत्थि भिक्खवे"तिआदिना ञाणसम्पदा, "अपरामसतो चस्स पच्चत्तञ्ञेव निब्बुति विदिता"ति, "वेदनानं...पे०... यथाभूतं विदित्वा अनुपादाविमुत्तो"ति एतेहि समाधिसम्पदाय सद्धिं विज्जाविमुत्तिवसीभावसम्पदा दस्सिता होति। तत्थ खन्तिसम्पदा पटिसङ्खानबलसिद्धितो सोरच्चसम्पदाय **पदट्ठानं**। सोरच्चसम्पदा पन अत्थतो सीलमेव, तथा पाणातिपातादीहि पटिविरतिवचनं सीलस्स परियायविभागदस्सनत्थं। तत्थ सीलं समाधिस्स **पदट्ठानं**, समाधि पञ्ञाय **पदट्ठानं**। तेसु सीलेन **वीतिक्कमप्पहानं दुच्चरितसंकिलेसप्पहानञ्च** सिज्झति, समाधिना **परियुट्ठानप्पहानं, विक्खम्भनप्पहानं, तण्हासंकिलेसप्पहानञ्च** सिज्झति। पञ्ञाय **दिट्ठिसंकिलेसप्पहानं, समुच्छेदप्पहानं, अनुसयप्पहानञ्च** सिज्झतीति सीलादीहि तीहि धम्मक्खन्धेहि समथविपस्सनाभावनापारिपूरी, पहानत्तयसिद्धि चाति अयं **समारोपनो हारो**।

सोळसहारवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चविधनयवण्णना

नन्दियावट्टनयवण्णना

आघातादीनं अकरणवचनेन तण्हाविज्जासङ्कोचो दस्सितो होति। सति हि अत्तत्तनियवत्थूसु सिनेहे सम्मोसे च "अनत्थं मे अचरी"तिआदिना (ध० स० १२३७, विभं० ९०९) आघातो जायतीति, तथा "पाणातिपाता पटिविरतो"तिआदिवचनेहि, "पच्चत्तञ्ञेव निब्बुति विदिता, अनुपादाविमुत्तो, छन्नं फस्सायतनानं...पे०... यथाभूतं पजानाती"तिआदीहि वचनेहि च तण्हाविज्जानं अच्चन्तप्पहानं दस्सितं होति। तासं पन पुब्बन्तकप्पिकादिपदेहि "अजानतं अपस्सत"न्तिआदिपदेहि च सरूपतो दस्सितानं तण्हाविज्जानं रूपधम्मा अरूपधम्मा च **अधिट्ठानं।** यथाक्कमं समथो च विपस्सना च **पटिपक्खो**। तेसं चेतोविमुत्ति पञ्ञाविमुत्ति च **फलं।** तत्थ तण्हा, तण्हाविज्जा वा समुदयसच्चं, तदधिट्ठानभूता रूपारूपधम्मा दुक्खसच्चं, तेसं अप्पवत्ति निरोधसच्चं, निरोधपजानना समथविपस्सना मग्गसच्चन्ति एवं चतुसच्चयोजना वेदितब्बा। तण्हाग्गहणेन चेत्थ मायासाठेय्यमानातिमानमदप्पमादपापिच्छतापापमित्तताअहिरिकानोत्तप्पादिवसेन सब्बो अकुसलपक्खो नेतब्बो। तथा अविज्जाग्गहणेन विपरीतमनसिकारकोधुपनाहमक्खपलासइस्सामच्छरियसारम्भदोवचस्सताभवदिट्ठिविभवदिट्ठादिवसेन अकुसलपक्खो नेतब्बो। वुत्तविपरियायेन अमायाअसाठेय्यादिअविपरीतमनसिकारादिवसेन, तथा समथपक्खियानं सद्धिन्द्रियादीनं, विपस्सनापक्खियानञ्च अनिच्चसञ्ञादीनं वसेन कुसलपक्खो नेतब्बोति। अयं **नन्दियावट्टस्स नयस्स भूमि।**

तिपुक्खलनयवण्णना

आघातादीनं अकरणवचनेन अदोससिद्धि, तथा पाणातिपातफरुसवाचाहि पटिविरतिवचनेन। आनन्दादीनं अकरणवचनेन अलोभसिद्धि, तथा अब्रह्मचरियतो पटिविरतिवचनेन। अदिन्नादानादीहि पन पटिविरतिवचनेन उभयसिद्धि। "तयिदं भिक्खवे तथागतो पजानाती"तिआदिना अमोहसिद्धि। इति तीहि अकुसलमूलेहि गहितेहि तप्पटिपक्खतो, आघातादिअकरणवचनेन च तीणि कुसलमूलानि सिद्धानियेव होन्ति। तत्थ तीहि अकुसलमूलेहि तिविधदुच्चरितसंकिलेसमलविसमाकुसलसञ्ञावितक्कासद्धम्मादिवसेन सब्बो अकुसलपक्खो वित्थारेतब्बो। तथा तीहि कुसलमूलेहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिविधसुचरितवोदानसमकुसलसञ्ञावितक्कपञ्ञासद्धम्मसमाधिविमोक्खमुखविमोक्खादिवसेन सब्बो कुसलपक्खो विभावेतब्बो। एत्थापि च सच्चयोजना वेदितब्बा। कथं? लोभो सब्बानि वा कुसलाकुसलमूलानि समुदयसच्चं, तेहि पन निब्बत्ता तेसं अधिट्ठानगोचरभूता उपादानक्खन्धा दुक्खसच्चन्तिआदिना नयेन सच्चयोजना वेदितब्बाति अयं **तिपुक्खलस्स नयस्स भूमि।**

सीहविक्कीळितनयवण्णना

आघातानन्दनादीनं अकरणवचनेन सतिसिद्धि। सतिया हि सावज्जानवज्जे, तत्थ च आदीनवानिसंसे सल्लक्खेत्वा सावज्जं पहाय अनवज्जं समादाय वत्ततीति। तथा मिच्छाजीवा पटिविरतिवचनेन वीरियसिद्धि। वीरियेन हि कामब्यापादविहिंसावितक्के विनोदेति, वीरियसाधनञ्च आजीवपारिसुद्धिसीलन्ति। पाणातिपातादीहि पटिविरतिवचनेन सतिसिद्धि। सतिया हि सावज्जानवज्जे, तत्थ च आदीनवानिसंसे सल्लक्खेत्वा सावज्जं पहाय अनवज्जं समादाय वत्तति। तथा हि सा "विसयाभिमुखभावपच्चुपट्ठाना"ति च वुच्चति। "तयिदं भिक्खवे तथागतो पजानाती"तिआदिना समाधिपञ्ञासिद्धि। पञ्ञाय हि यथाभूतावबोधो, समाहितो च यथाभूतं पजानातीति। तथा "निच्चो धुवो"तिआदिना अनिच्चे "निच्च"न्ति विपल्लासो, "अरोगो परं मरणा, एकन्तसुखी अत्ता दिट्ठधम्मनिब्बानप्पत्तो"ति च एवमादीहि असुखे "सुख"न्ति विपल्लासो, "पञ्चहि कामगुणेहि समप्पितो"तिआदिना असुभे "सुभ"न्ति विपल्लासो, सब्बेहेव च दिट्ठिदीपकपदेहि अनत्तनि "अत्ता"ति विपल्लासोति एवमेत्थ चत्तारो विपल्लासा सिद्धा होन्ति, तेसं पटिपक्खतो चत्तारि सतिपट्ठानानि सिद्धानेव होन्ति। तत्थ चतूहि इन्द्रियेहि चत्तारो पुग्गला निद्दिसितब्बा।

कथं? दुविधो हि तण्हाचरितो मुदिन्द्रियो च तिक्खिन्द्रियो चाति, तथा दिट्ठिचरितो। तेसु पठमो असुभे "सुभ"न्ति विपल्लत्तदिट्ठि सतिबलेन यथाभूतं कायसभावं सल्लक्खेत्वा सम्मत्तनियामं ओक्कमति। दुतियो असुखे "सुख"न्ति विपल्लत्तदिट्ठि "उप्पन्नं कामवितक्कं नाधिवासेती"तिआदिना (म० नि० १.२६; अ० नि० १.४.१४; २.६.५८) वुत्तेन वीरियसंवरसङ्खातेन वीरियबलेन तं विपल्लासं विधमति। ततियो अनिच्चे "निच्च"न्ति अयाथावगाही समथबलेन समाहितभावतो सङ्खारानं खणिकभावं यथाभूतं पटिविज्झति। चतुत्थो सन्ततिसमूहकिच्चारम्मणघनविचित्तत्ता फस्सादिधम्मपुञ्जमत्ते अनत्तनि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अत्ता"ति मिच्छाभिनिवेसी चतुकोटिकसुञ्ञतामनसिकारेन तं मिच्छाभिनिवेसं विद्धंसेति। चतूहि चेत्थ विपल्लासेहि चतुरासवोघयोगकायगन्थअगतितण्हुप्पादुपादानसत्तविञ्ञाणट्ठिति-अपरिञ्ञादिवसेन सब्बो अकुसलपक्खो नेतब्बो। तथा चतूहि सतिपट्ठानेहि चतुब्बिध-झानविहाराधिट्ठानसुखभागियधम्मअप्पमञ्ञासम्मप्पधानइद्धिपादादिवसेन सब्बो वोदानपक्खो नेतब्बोति अयं **सीहविक्कीळितस्स नयस्स भूमि।** इधापि सुभसञ्ञासुखसञ्ञाहि, चतूहिपि वा विपल्लासेहि समुदयसच्चं, तेसं अधिट्ठानारम्मणभूता पञ्चुपादानक्खन्धा दुक्खसच्चन्तिआदिना सच्चयोजना वेदितब्बा।

दिसालोचनअङ्कुसनयद्वयवण्णना

इति तिण्णं अत्थनयानं सिद्धिया वोहारनयद्वयम्पि सिद्धमेव होति। तथा हि अत्थनयदिसाभूतधम्मानं समालोचनं **दिसालोचनं,** तेसं समानयनं **अङ्कुसो**ति नियुत्ता पञ्च नया।

पञ्चविधनयवण्णना निट्ठिता।

सासनपट्ठानवण्णना

इदं सुत्तं सोळसविधे सुत्तन्तपट्ठाने संकिलेसवासनासेक्खभागियं, संकिलेसनिब्बेधासेक्खभागियमेव वा। अट्ठवीसतिविधे पन सुत्तन्तपट्ठाने लोकियलोकुत्तरं सत्तधम्माधिट्ठानं ञाणञेय्यदस्सनभावनं सकवचनपरवचनं विस्सज्जनीयाविस्सज्जनीयं कुसलाकुसलं अनुञ्ञातपटिक्खित्तञ्चाति वेदितब्बं।

पकरणनयवण्णना निट्ठिता।

ब्रह्मजालसुत्तवण्णना निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. सामञ्ञफलसुत्तवण्णना

राजामच्चकथावण्णना

१५०. **राजगहे**ति एत्थ दुग्गजनपदट्ठानविसेससम्पदादियोगतो पधानभावेन राजूहि गहितन्ति **राजगह**न्ति आह **"मन्धातु...पे०...** वुच्चती"ति। तत्थ महागोविन्देन महासत्तेन परिग्गहितं रेणुआदीहि राजूहि परिग्गहितमेव होतीति महागोविन्दग्गहणं। **महागोविन्दो**ति महानुभावो एको पुरातनो राजाति केचि। **परिग्गहितत्ता**ति राजधानीभावेन परिग्गहितत्ता। **पकारे**ति नगरमापनेन रञ्ञा कारितसब्बगेहत्ता **राजगहं,** गिज्झकूटादीहि परिक्खित्तत्ता पब्बतराजेहि परिक्खित्तगेहसदिसन्तिपि **राजगहं,** सम्पन्नभवनताय राजमानं गेहन्ति पि **राजगहं,** संविहितारक्खताय अनत्थावहभावेन उपगतानं पटिराजूनं गहं गेहभूतन्तिपि **राजगहं,** राजूहि दिस्वा सम्मा पतिट्ठापितत्ता तेसं गहं गेहभूतन्तिपि **राजगहं,** आरामरामणेय्यकादीहि राजते, निवाससुखतादिना सत्तेहि ममत्तवसेन गय्हति, परिग्गय्हतीति वा **राजगह**न्ति एदिसे पकारे सो पदेसो ठानविसेसभावेन उळारसत्तपरिभोगोति आह **"तं पनेत"**न्तिआदि। **तेस**न्ति यक्खानं। **वसनवन**न्ति आपानभूमिभूतं उपवनं।

अविसेसेनाति "पातिमोक्खसंवरसंवुतो विहरति", (म० नि० १.६९; ३.७५; विभं० ५०८) "पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, (दी० नि० १.२२६; सं० नि० १.२.१५२; अ० नि० १.४.१२३; पारा० ११) "मेत्तासहगतेन चेतसा एकं दिसं फरित्वा विहरति", (दी० नि० १.५५६; ३.३०८; म० नि० १.७७, ४५९, ५०९; २.३०९, ३१५, ४५१, ४७१; ३.२३०; विभं० ६४२) "सब्बनिमित्तानं अमनसिकारा अनिमित्तं चेतोसमाधिं समापज्जित्वा विहरती"तिआदीसु (म० नि० १.४५९) विय सद्दन्तरसन्निधानसिद्धेन विसेसपरामसनेन विना। इरियाय कायिककिरियाय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवत्तनूपायभावतो पथोति **इरियापथो**। ठानादीनञ्हि गतिनिवत्ति आदिअवत्थाहि विना न कञ्चि कायिककिरियं पवत्तेतुं सक्का। विहरति पवत्तति एतेन, विहरणञ्चाति विहारो, दिब्बभावावहो विहारो **दिब्बविहारो,** महग्गतज्झानानि। **नेत्तियं** पन "चतस्सो आरुप्पसमापत्तियो आनेञ्जा विहारा"ति वुत्तं। तं तासं मेत्ताझानादीनं ब्रह्मविहारता विय भावनाविसेसभावं सन्धाय वुत्तं। **अट्ठकथासु** पन दिब्बभावावहसामञ्ञतो तापि "दिब्बविहारा" त्वेव वुत्ता। हितूपसंहारादिवसेन पवत्तिया ब्रह्मभूता सेट्ठभूता विहाराति **ब्रह्मविहारा,** मेत्ताझानादिका। अनञ्ञसाधारणत्ता अरियानं विहाराति **अरियविहारा,** चतस्सोपि फलसमापत्तियो। **समङ्गीपरिदीपन**न्ति समङ्गिभावपरिदीपनं। **इरियापथसमायोगपरिदीपनं** इतरविहारसमायोगपरिदीपनस्स विसेसवचनस्स अभावतो, इरियापथसमायोगपरिदीपनस्स च अत्थसिद्धत्ता। **विहरती**ति एत्थ **वि**-सद्दो विच्छेदत्थजोतनो, **हरती**ति नेति, पवत्तेतीति अत्थो। तत्थ कस्स केन विच्छिन्दनं, कथं कस्स पवत्तनन्ति अन्तोलीनं चोदनं सन्धायाह **"सो ही"**तिआदि।

गोचरगामदस्सनत्थं "राजगहे"ति वत्वा बुद्धानं अनुरूपनिवासनट्ठानदस्सनत्थं "अम्बवने"ति वुत्तन्ति आह **"इदमस्सा"**तिआदि। **एत**न्ति एतं "राजगहे"ति **भुम्मवचनं समीपत्थे** "गङ्गाय गावो चरन्ति, कूपे गग्गकुल"न्ति च यथा। कुमारेन भतोति कुमारभतो, सो एव **कोमारभच्चो** यथा भिसग्गमेव भेसज्जं। **दोसाभिसन्न**न्ति वातपित्तादिवसेन उस्सन्नदोसं। **विरेचेत्वा**ति दोसपकोपतो विवेचेत्वा।

अड्ढतेळसहीति अड्ढेन तेरसहि अड्ढतेरसहि भिक्खुसतेहि। तानि पन पञ्ञासाय ऊनानि तेरसभिक्खुसतानि होन्तीति आह **"अड्ढसतेना"**तिआदि।

राजतीति दिब्बति, सोभतीति अत्थो। **रञ्जेती**ति रमेति। **रञ्ञो**ति पितु बिम्बिसाररञ्ञो। सासनट्ठेन हिंसनट्ठेन **सत्तु।**

भारियेति गरुके अञ्ञेसं असक्कुणेय्ये वा। **सुवण्णसत्थकेना**ति सुवण्णमयेन सत्थकेन। अयोमयञ्हि रञ्ञो सरीरं उपनेतुं अयुत्तन्ति वदति। **सुवण्णसत्थकेना**ति वा सुवण्णपरिक्खतेन सत्थकेन **बाहुं फालापेत्वा**ति सिरावेधवसेन बाहुं फलापेत्वा **उदकेन सम्भिन्दित्वा पायेसि** केवलस्स लोहितस्स गब्भिनित्थिया दुज्जीरभावतो। **धुरा**ति धुरभूता,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणस्स, धोरय्हाति अत्थो। **धुरं नीहरामी**ति गणधुरं गणबन्धियं निब्बत्तेमि। "**पुब्बे खो**"तिआदि खन्धकपाळि एव।

पोत्थनियन्ति छुरिकं, यं "नखर"न्तिपि [पोथनिकन्ति छुरिकं, यं खरन्तिपि (सारत्थ० टी० ३.३३९) पोथनिकन्ति छुरिकं, खरन्तिपि (विमति० टी० २.चूळवग्गवण्णना ३३९)] वुच्चति। **दिवा दिवस्सा**ति दिवस्सपि दिवा, मज्झन्हिकवेलायन्ति अत्थो।

तस्सा सरीरं लेहित्वा यापेति अत्तूपक्कमेन मरणं न युत्तन्ति। न हि अरियसावका अत्तानं विनिपातेन्तीति। **मग्गफलसुखेना**ति मग्गफलसुखावहेन सोतापत्तिमग्गफलसुखूपसञ्हितेन **चङ्कमेन यापेति**। **चेतियङ्गणे**ति गन्धपुप्फादीहि पूजनट्ठानभूते चेतियङ्गणे। **निसज्जनत्थाया**ति भिक्खुसङ्घनिसीदनत्थाय। **चातुमहाराजिकदेवलोके...पे०... यक्खो हुत्वा निब्बत्ति** तत्थ बहुलं निब्बत्तपुब्बताय चिरपरिचितनिकन्तिवसेन।

खोभेत्वाति पुत्तसिनेहस्स बलवभावतो, सहजातपीतिवेगस्स च सविप्फारताय तंसमुट्ठानरूपधम्मेहि फरणवसेन सकलसरीरं आलोळेत्वा। तेनाह "**अट्ठिमिञ्जं आहच्च अट्ठासी**"ति। **पितुगुण**न्ति पितु अत्तनि सिनेहगुणं। **मुञ्चापेत्वा**ति एत्थ **इति**-सद्दो पकारत्थो, तेन "अभिमारकपुरिसपेसनादिप्पकारेना"ति वुत्ते एव पकारे पच्चामसति। **वित्थारकथानयो**ति अजातसत्तुपसादनादिवसेन वित्थारतो वत्तब्बाय कथाय नयमत्तं। कस्मा पनेत्थ वित्थारनया कथा न वुत्ताति आह "**आगतत्ता पन सब्बं न वुत्त**"न्ति।

कोसलरञ्ञोति महाकोसलरञ्ञो। **पण्डिताधिवचन**न्ति पण्डितवेवचनं। **विदन्ती**ति जानन्ति। **वेदेन** ञाणेन करणभूतेन **ईहति** पवत्ततीति **वेदेहि**।

एत्थाति एतस्मिं दिवसे। **अनसनेन वा**ति **वा**-सद्दो अनियमत्थो, तेन एकच्चमनोदुच्चरितदुस्सील्यादीनि सङ्गण्हाति। तथा हि गोपालकूपोसथो अभिज्झासहगतचित्तस्स वसेन वुत्तो, निगण्ठुपोसथो मोसवज्जादिवसेन। यथाह "सो तेन अभिज्झासहगतेन चेतसा दिवसं अतिनामेती"ति, (अ० नि० १.७१) "इति यस्मिं समये सच्चे समादपेतब्बा, मुसावादे तस्मिं समये समादपेन्ती"ति (अ० नि० १.७१) च आदि। **एत्था**ति उपोसथसद्दे। **अत्थुद्धारो**ति वत्तब्बअत्थानं उद्धारणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ननु च अत्थमत्तं पति सद्दा अभिनिविसन्तीति न एकेन सद्देन अनेके अत्था अभिधीयन्तीति ? सच्चमेतं सद्दविसेसे अपेक्खिते, तेसं पन अत्थानं उपोसथसद्दवचनीयता सामञ्ञं उपादाय वुच्चमानो अयं विचारो उपोसथसद्दस्स अत्थुद्धारोति वुत्तो। हेट्ठा "एवं मे सुत"न्तिआदीसु आगते अत्थुद्धारेपि एसेव नयो। कामञ्च पातिमोक्खुद्देसादिविसयोपि उपोसथसद्दो सामञ्ञरूपो एव विसेससद्दस्स अवाचकभावतो, तादिसं पन सामञ्ञं अनादियित्वा अयमत्थो वुत्तोति वेदितब्बं। सीलसुद्धिवसेन उपेतेहि समग्गेहि वसीयति अनुट्ठीयतीति **उपोसथो,** पातिमोक्खुद्देसो। समादानवसेन अधिट्ठानवसेन वा उपेच्च अरियवासादिअत्थं वसितब्बतो **उपोसथो,** सीलं। अनसनादिवसेन उपेच्च वसितब्बतो अनुवसितब्बतो **उपोसथो। उपवासोति** समादानं। उपोसथकुलभूतताय नवमहत्थिनिकायपरियापन्ने हत्थिनागे किञ्चि किरियं अनपेक्खित्वा रूळ्हिवसेन समञ्ञामत्तं उपोसथोति आह **"उपोसथो नागराजातिआदीसु पञ्ञत्ती"**ति। दिवसे पन उपोसथसद्दप्पवत्ति अट्ठकथायं वुत्ता एव। **सुद्धस्स वे सदा फग्गूति** एत्थ पन **सुद्धस्सा**ति सब्बसो किलेसमलाभावेन सुद्धस्स। **वे**ति निपातमत्तं। **वे**ति वा ब्यत्तन्ति अत्थो। **सदा फग्गूति** निच्चकालम्पि फग्गुणनक्खत्तमेव। यस्स हि फग्गुणमासे उत्तरफग्गुणदिवसे तित्थन्हानं करोन्तस्स संवच्छरिकपापपवाहनं होतीति लद्धि, तं ततो विवेचेतुं इदं भगवता वुत्तं। **सुद्धस्सुपोसथो सदा**ति यथावुत्तसुद्धिया सुद्धस्स उपोसथङ्गानि वतसमादानानि च असमादियतोपि निच्चं उपोसथो, उपोसथवासो एवाति अत्थो। पञ्चदसन्नं तिथीनं पूरणवसेन **पन्नरसो।**

बहुसो, अतिसयतो वा कुमुदानि एत्थ सन्तीति कुमुदवती, तिस्सं **कुमुदवतिया।** चतुन्नं मासानं पारिपूरिभूताति **चातुमासी।** सा एव पाळियं चातुमासिनीति वुत्ताति आह **"इध पन चातुमासिनीति वुच्चती"**ति। तदा कत्तिकमासस्स पुण्णताय **मासपुण्णता।** वस्सानस्स उतुनो पुण्णताय **उतुपुण्णता।** कत्तिकमासलक्खितस्स संवच्छरस्स पुण्णताय **संवच्छरपुण्णता। "मा" इति चन्दो वुच्चति** तस्स गतिया दिवसस्स मिनितब्बतो। **एत्थ पुण्णो**ति एतिस्सा रत्तिया सब्बकलापारिपूरिया पुण्णो। तदा हि चन्दो सब्बसो परिपुण्णो हुत्वा दिस्सति। एत्थ च "तदहुपोसथे पन्नरसे"ति पदानि दिवसवसेन वुत्तानि, "कोमुदिया"तिआदीनि रत्तिवसेन।

राजामच्चपरिवुतोति राजकुलसमुदागतेहि अमच्चेहि परिवुतो। अथ वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुयुत्तकराजूहि चेव अमच्चेहि च परिवुतो। **चतुरुपक्किलेसा**ति अब्भा महिका धूमरजो राहूति इमेहि चतूहि उपक्किलेसेहि। **सन्निट्ठानं कतं** अट्ठकथायं।

पीतिवचनन्ति पीतिसमुट्ठानं वचनं। यञ्हि वचनं पटिग्गाहकनिरपेक्खं केवलं उळाराय पीतिया वसेन सरसतो सहसाव मुखतो निच्छरति, तं इध "उदान"न्ति अधिप्पेतं। तेनाह **"यं पीतिवचनं हदयं गहेतुं न सक्कोती"**तिआदि।

दोसेहि इता गता अपगताति **दोसिना** त-कारस्स न-कारं कत्वा यथा "किलेसे जितो विजितावीति जिनो"ति। **अनीय**-सद्दो कत्तुअत्थे वेदितब्बोति आह **"मनं रमयती"ति "रमणीया"**ति यथा "निय्यानिका धम्मा"ति। जुण्हवसेन रत्तिया सुरूपताति आह **"वुत्तदोसविमुत्ताया"**तिआदि। तत्थ अब्भादयो वुत्तदोसा, तब्बिगमेनेव चस्सा **दस्सनीयता,** तेन, उतुसम्पत्तिया च **पासादिकता** वेदितब्बा। **लक्खणं भवितुं युत्ता**ति एतिस्सा रत्तिया युत्तो दिवसो मासो उतु संवच्छरोति एवं दिवसमासउतुसंवच्छरानं सल्लक्खणं भवितुं युत्ता **लक्खञ्ञा,** लक्खणीयाति अत्थो।

"यं नो पयिरुपासतो चित्तं पसीदेय्या"ति वुत्तत्ता "समणं वा ब्राह्मणं वा"ति एत्थ परमत्थसमणो च परमत्थब्राह्मणो च अधिप्पेतो, न पब्बज्जामत्तसमणो, न जातिमत्तब्राह्मणो चाति आह **"समितपापताय समणं। बाहितपापताय ब्राह्मण"**न्ति। बहुवचने वत्तब्बे एकवचनं, एकवचने वा वत्तब्बे बहुवचनं **वचनब्यतयो।** अट्ठकथायं पन एकवचनवसेनेव ब्यतयो दस्सितो। अत्तनि, गरुट्ठानिये च एकस्मिम्पि बहुवचनप्पयोगो निरूळ्होति। **सब्बेनपी**ति "रमणीया वता"तिआदिना सब्बेन वचनेन। **ओभासनिमित्तकम्म**न्ति ओभासभूतनिमित्तकम्मं परिब्यत्तं निमित्तकरणन्ति अत्थो। **देवदत्तो चा**ति। **च**-सद्दो अत्तूपनयने, तेन यथा राजा अजातसत्तु अत्तनो पितु अरियसावकस्स सत्थुउपट्ठाकस्स घातनेन महापराधो, एवं भगवतो महाअनत्थकरस्स देवदत्तस्स अवस्सयभावेन पीति इममत्थं उपनेति। **तस्स पिट्ठिछायाया**ति तस्स जीवकस्स पिट्ठिअपस्सयेन, तं पमुखं कत्वा तं अपस्सायाति अत्थो। **विक्खेपपच्छेदनत्थ**न्ति भाविनिया अत्तनो कथाय उप्पज्जनकविक्खेपनस्स पच्छिन्दनत्थं, अनुप्पत्तिअत्थन्ति अधिप्पायो। तेनाह **"तस्सं ही"**तिआदि।

१५१. "सो किरा"तिआदि पोराणट्ठकथाय आगतनयो। एसेव नयो परतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मक्खलिपदनिब्बचनेपि। **उपसङ्कमन्ती**ति उपगता। **तदेव पब्बज्जं अग्गहेसी**ति तदेव नग्गरूपं पब्बज्जं कत्वा गण्हि।

पब्बजितसमूहसङ्घातो सङ्घोति पब्बजितसमूहतामत्तेन सङ्घो, न निय्यानिकदिट्ठिसुविसुद्धसीलसामञ्ञवसेन संहतत्ताति अधिप्पायो। **अस्स अत्थी**ति अस्स सत्थुपटिञ्ञस्स परिवारभूतो अत्थि। **स्वेवा**ति पब्बजितसमूहसङ्घातोव। केचि पन "पब्बजितसमूहवसेन **सङ्घी,** गहट्ठसमूहवसेन **गणी**"ति वदन्ति, तं तेसं मतिमत्तं गणे एव लोके सङ्घ-सद्दस्स निरूळ्हत्ता। **आचारसिक्खापनवसेना**ति अचेलक वतचरियादिआचारसिक्खापनवसेन। **पाकटो**ति सङ्घीआदिभावेन पकासितो। "अप्पिच्छो"ति वत्वा तत्थ लब्भमानं अप्पिच्छत्तं दस्सेतुं **"अप्पिच्छताय वत्थम्पि न निवासेती"**ति वुत्तं। न हि तस्मिं सासनिके विय सन्तगुणनिगूहणलक्खणा अप्पिच्छता लब्भतीति। **यसो**ति कित्तिसद्दो। "तरन्ति एतेन संसारोघ"न्ति एवं सम्मतत्ता **तित्थं** वुच्चति लद्धीति आह **"तित्थकरोति लद्धिकरो"**ति। **साधुसम्मतो**ति "साधू"ति सम्मतो, न साधूहि सम्मतोति आह **"अयं साधू"**तिआदि। "इमानि मे वतसमादानानि एत्तकं कालं सुचिण्णानी"ति **पब्बजिततो पट्ठाय अतिक्कन्ता बहू रत्तियो जानाती**ति **रत्तञ्ञू**। ता पनस्स रत्तियो चिरकालभूताति कत्वा **चिरं पब्बजितस्स अस्साति चिरपब्बजितो।** तत्थ चिरपब्बजिततागहणेन बुद्धिसीलतं दस्सेति, रत्तञ्ञुतागहणेन तत्थ सम्पजानतं। **अद्धान**न्ति दीघकालं। कित्तको पन सोति आह **"द्वे तयो राजपरिवट्टे"**ति, द्विन्नं तिण्णं राजूनं रज्जं अनुसासनपटिपाटियोति अत्थो। **"अद्धगतो"**ति वत्वा कतं वयोगहणं ओसानवयापेक्खन्ति आह **"पच्छिमवयं अनुप्पत्तो"**ति। **उभय**न्ति "अद्धगतो, वयोअनुप्पत्तो"ति पदद्वयं।

पुब्बे पितरा सद्धिं सत्थु सन्तिकं गन्त्वा देसनाय सुतपुब्बतं सन्धायाह **"झानाभिञ्ञादि...पे०... सोतुकामो"**ति। **दस्सनेना**ति न दस्सनमत्तं, दिस्वा पन तेन सद्धिं आलापसल्लापं कत्वा ततो अकिरियवादं सुत्वा तेसं अनत्तमनो अहोसि। **गुणकथाया**ति अभूतगुणकथाय। तेनाह **"सुट्ठुतरं अनत्तमनो हुत्वा"**ति। यदि अनत्तमनो, कस्मा तुण्ही अहोसीति आह **"अनत्तमनो समानोपी"**तिआदि।

१५२. **गोसालाया**ति एवं नामके गामे। वस्सानकाले गुन्नं तिट्ठनसालाति एके।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५३. पटिकिट्ठतरन्ति निहीनतरं। **तन्तावुतानीति** तन्ते पसारेत्वा वीतानि। **"सीते सीतो"**तिआदिना छहाकारेहि तस्स निहीनस्स निहीनतरतं दस्सेति।

१५४. वच्चं कत्वापीति पि-सद्देन भोजनं भुञ्जित्वापि केनचि असुचिना मक्खितो पीति इममत्थं सम्पिण्डेति। **वालिकथूपं कत्वाति** वत्तवसेन वालिकाय थूपं कत्वा।

१५६. पलिबुद्धनकिलेसोति संसारे पलिबुद्धनकिच्चो रागादिकिलेसो खेत्तवत्थुपुत्तदारादिविसयो।

कोमारभच्चजीवककथावण्णना

१५७. न यथाधिप्पायं वत्ततीति कत्वा वुत्तं **"अनत्थो वत मे"**ति। जीवकस्स तुण्हीभावो मम अधिप्पायस्स मद्दनसदिसो, तस्मा तं पुच्छित्वा कथापनेन मम अधिप्पायो पूरेतब्बोति अयमेत्थ रञ्ञो अज्झासयोति दस्सेन्तो **"हत्थिम्हि नु खो पना"**तिआदिमाह। **किं तुण्हीति** किं कारणा तुण्ही, किं तं कारणं, येन तुवं तुण्हीति वुत्तं होति। तेनाह **"केन कारणेन तुण्ही"**ति।

कामं सब्बापि तथागतस्स पटिपत्ति अनञ्ञसाधारणा अच्छरियअब्भुतरूपा च, तथापि गब्भोक्कन्तिअभिजातिअभिनिक्खमनअभिसम्बोधिधम्मचक्कप्पवत्तनयमकपाटिहारियदेवोरोहणानि सदेवके लोके अतिविय सुपाकटानि, न सक्का केनचि पटिबाहितुन्ति तानियेवेत्थ उद्धटानि। **इत्थम्भूताख्यानत्थेति** इत्थं एवं पकारो भूतो जातोति एवं कथनत्थे। **उपयोगवचनन्ति**। "अब्भुग्गतो"ति एत्थ अभीति उपसग्गो इत्थम्भूताख्यानत्थजोतको, तेन योगतो "तं खो पन भगवन्त"न्ति इदं सामिअत्थे उपयोगवचनं, तेनाह **"तस्स खो पन भगवतोति अत्थो"**ति। **कल्याणगुणसमन्नागतोति** कल्याणेहि गुणेहि युत्तो, तं निस्सितो तब्बिसयतायाति अधिप्पायो। **सेट्ठोति** एत्थापि एसेव नयो। कित्तेतब्बतो कित्ति, सा एव सद्दनीयतो **सद्दोति** आह **"कित्तिसद्दोति कित्तियेवा"**ति। अभित्थवनवसेन पवत्तो सद्दो **थुतिघोसो।** अनञ्ञसाधारणगुणे आरब्भ पवत्तत्ता सदेवकं लोकं **अज्झोत्थरित्वा** अभिभवित्वा **उग्गतो।**

सो भगवाति यो सो समतिं सपारमियो पूरेत्वा सब्बकिलेसे भञ्जित्वा अनुत्तरं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो देवानं अतिदेवो सक्कानं अतिसक्को ब्रह्मानं अतिब्रह्मा लोकनाथो भाग्यवन्ततादीहि कारणेहि सदेवके लोके "भगवा"ति सब्बत्थ पत्थटकित्तिसद्दो, सो भगवा। **"भगवा"**ति च इदं सत्थु नामकित्तनं। तेनाह आयस्मा धम्मसेनापति "भगवाति नेतं नामं मातरा कत"न्तिआदि। (महानि० ८४) परतो पन **भगवाति** गुणकित्तनं।

यथा कम्मट्ठानिकेन "अरह"न्तिआदीसु नवट्ठानेसु पच्चेकं इति-सद्दं योजेत्वा बुद्धगुणा अनुस्सरीयन्ति, एवं बुद्धगुणसङ्कित्तकेनापीति दस्सेन्तो **"इतिपि अरहं, इतिपि सम्मासम्बुद्धो...पे०... इतिपि भगवा"**ति आह। "इतिपेतं अभूतं, इतिपेतं अतच्छ"न्तिआदीसु (दी० नि० १.५) विय इध **इति-**सद्दो आसन्नपच्चक्खकरणत्थो, **पि-**सद्दो सम्पिण्डनत्थो, तेन च तेसं गुणानं बहुभावो दीपितो। तानि च सङ्कित्तेन्तेन विञ्ञुना चित्तस्स सम्मुखीभूतानेव कत्वा सङ्कित्तेतब्बानीति दस्सेन्तो **"इमिना च इमिना च कारणेनाति वुत्तं होती"**ति आह। एवञ्हि निरूपेत्वा कित्तेन्ते यस्स सङ्कित्तेति, तस्स भगवति अतिविय अभिप्पसादो होति। **आरकत्ताति** सुविदूरत्ता। **अरीनन्ति** किलेसारीनं। **अरानन्ति** संसारचक्कस्स अरानं। **हतत्ताति** विहतत्ता। **पच्चयादीनन्ति** चीवरादिपच्चयानञ्चेव पूजाविसेसानञ्च। **ततोति** विसुद्धिमग्गतो। यथा च विसुद्धिमग्गतो, एवं तंसंवण्णनतोपि नेसं वित्थारो गहेतब्बो।

यस्मा जीवको बहुसो सत्थुसन्तिके बुद्धगुणे सुत्वा ठितो, दिट्ठसच्चताय च सत्थुसासने विगतकथंकथो वेसारज्जप्पत्तो, तस्मा आह **"जीवको पना"**तिआदि। **पञ्चवण्णायाति** खुद्दिकादिवसेन पञ्चप्पकाराय। **निरन्तरं फुटं अहोसि** कताधिकारभावतो। कम्मन्तरायवसेन हिस्स रञ्ञो गुणसरीरं खतुपहतं अहोसि।

१५८. "उत्तम"न्ति वत्वा न केवलं सेट्ठभावो एवेत्थ कारणं, अथ खो अप्पसद्दतापि कारणन्ति दस्सेतुं **"अस्सयानरथयानानी"**तिआदि वुत्तं। हत्थियानेसु निब्बिसेवनमेव गण्हन्तो हत्थिनियोव कप्पापेसि। रञ्ञो आसङ्कानिवत्तनत्थं आसन्नचारीभावेन तत्थ इत्थियोव निसज्जापिता। रञ्ञो परेसं दुरुपसङ्कमनभावदस्सनत्थं ता **पुरिसवेसं गाहापेत्वा** आवुधहत्था कारिता। **पटिवेदेसीति** ञापेसि। **तदेवाति** गमनं, अगमनमेव वा।

१५९. महञ्चाति करणत्थे पच्चत्तवचनन्ति आह **"महता चा"**ति। **महच्चाति**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महतिया, लिङ्गविपल्लासवसेन वुत्तं, महन्तेनाति वुत्तं होति। तेनाह **"राजानुभावेना"**ति **"दिन्नं महारट्ठानं इस्सरियसिरी"**ति अङ्गमगधरट्ठानं आधिपच्चमाह। **आसत्तखग्गानी**ति अंसे ओलम्बनवसेन सन्नद्धअसीनि। कुलभोगइस्सरियादिवसेन महती मत्ता एतेसन्ति **महामत्ता,** महानुभावा राजपुरिसा। **विज्जाधरतरुणा वियाति** विज्जाधरकुमारा विय। **रट्ठियपुत्ता**ति भोजपुत्ता। **हत्थिघटा**ति हत्थिसमूहा। **अञ्ञमञ्ञसङ्घट्टना**ति अविच्छेदवसेन गमनेन अञ्ञमञ्ञसम्बन्धा।

चित्तुत्रासो सयं भायनट्ठेन **भयं** यथा तथा भायतीति कत्वा। **ञाणं** भायितब्बे एव वत्थुस्मिं भयतो उपट्ठिते "भायितब्बमिद"न्ति भयतो तीरणतो **भयं।** तेनेवाह "भयतुपट्ठानञाणं पन भायति नभायतीति? न भायति। तञ्हि अतीता सङ्खारा निरुद्धा, पच्चुप्पन्ना निरुज्झन्ति, अनागता निरुज्झिस्सन्तीति तीरणमत्तमेव होती"ति (विसुद्धि० २.७५१)। **आरम्मणं** भायति एतस्माति **भयं। ओतप्पं** पापतो भायति एतेनाति **भयं। भयानक**न्ति भायनाकारो। **भय**न्ति ञाणभयं। **संवेग**न्ति सहोत्तप्पञाणं **सन्तास**न्ति सब्बसो उब्बिज्जनं। भायितब्बट्ठेन भयं भीमभावेन भेरवन्ति **भयभेरवं,** भीतब्बवत्थु। तेनाह **"आगच्छती"**ति।

भीरुं पसंसन्तीति पापतो भायनतो उत्तसनतो भीरुं पसंसन्ति पण्डिता। **न हि तत्थ सूर**न्ति तस्मिं पापकरणे सूरं पगब्भधंसिनं न हि पसंसन्ति। तेनाह **"भया हि सन्तो न करोन्ति पाप"**न्ति। तत्थ **भया**ति पापुत्रासतो, ओत्तप्पहेतूति अत्थो। **सरीरचलन**न्ति भयवसेनसरीरसंकम्पो। **एके**ति उत्तरविहारवासिनो। **"राजगहे"**तिआदि तेसं अधिप्पायविवरणं। कामं वयतुल्यो "वयस्सो"ति वुच्चति, रूळ्हिरेसो, यो कोचि पन सहायो वयस्सो, तस्मा **वयस्साभिलापो**ति सहायाभिलापो। **न विप्पलम्भेसी**ति न विसंवादेसि। **विनस्सेय्या**ति चित्तविघातेन विहञ्ञेय्य।

सामञ्ञफलपुच्छावण्णना

१६०. भगवतो तेजोति बुद्धानुभावो। **रञ्ञो सरीरं फरि** यथा तं सोणदण्डस्स ब्राह्मणस्स भगवतो सन्तिकं गच्छन्तस्स अन्तोवनसण्डगतस्स। **एके**ति उत्तरविहारवासिनो।

१६१. येन, तेनाति च भुम्मत्थे करणवचनन्ति आह **"यत्थ भगवा, तत्थ गतो"**ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदा तस्मिं भिक्खुसङ्घे तुण्हीभावस्स अनवसेसतो ब्यापिभावं दस्सेतुं "तुण्हीभूतं तुण्हीभूत"न्ति वुत्तन्ति आह **"यतो यतो...पे०... मेवाति अत्थो"**ति। हत्थस्स कुकतत्ता असंयमो असम्पजञ्ञकिरिया **हत्थकुक्कुच्च**न्ति वेदितब्बो। **वा-**सद्दो अवुत्तविकप्पत्थो, तेन तदञ्ञो असंयमभावो विभावितोति दट्ठब्बं। तत्थ पन चक्खुअसंयमो सब्बपठमो, दुन्निवारो चाति तदभावं दस्सेतुं **"सब्बालङ्कारपटिमण्डित"**न्तिआदि वुत्तं। कायिकवाचसिकेन उपसमेन लद्धेन इतरोपि अनुमानतो लद्धो एव होतीति आह **"मानसिकेन चा"**ति। **उपसम**न्ति संयमं, आचारसम्पत्तिन्ति अत्थो। **पञ्चपरिवट्टे**ति पञ्चपुरिसपरिवट्टे। **पञ्चहाकारेही**ति "इट्ठानिट्ठे तादी"ति (महानि० ३८, १९२) एवं आदिना आगतेहि, पञ्चविधअरियिद्धिसिद्धेहि च पञ्चहि पकारेहि। **तादिलक्खणे**ति तादिभावे।

१६२. न मे पञ्हविस्सज्जने भारो अत्थीति सत्थु सब्बत्थ अप्पटिहतञाणचारतादस्सनं। **यदाकङ्खसीति न वदन्ति,** कथं पन वदन्तीति आह **"सुत्वा वेदिस्सामा"**ति पदेसञाणे ठितत्ता। बुद्धा पन सब्बञ्ञुपवारणं पवारेन्तीति सम्बन्धो। **"यक्खनरिन्ददेवसमणब्राह्मणपरिब्बाजकान"**न्ति इदं "पुच्छावुसो यदाकङ्खसी"तिआदीनि (सं० नि० १.१.२३७, २४६; सु० नि० आळवकसुत्ते) सुत्तपदानि पुच्छन्तानं येसं पुग्गलानं वसेन आगतानि, तं दस्सनत्थं। **"पुच्छावुसो यदाकङ्खसी"**ति इदं आळवकस्स यक्खस्स ओकासकरणं, सेसानि नरिन्दादीनं। **मनसिच्छसी**ति मनसा इच्छसि। **पुच्छव्हो, यं किञ्चि मनसिच्छथा**ति बावरिस्स संसयं मनसा पुच्छव्हो। तुम्हाकं पन सब्बेसं यं किञ्चि सब्बसंसयं मनसा, अञ्ञथा च, यथा इच्छथ, तथा पुच्छव्होति अधिप्पायो।

साधुरूपाति साधुसभावा। **धम्मो**ति पवेणीधम्मो। **वुद्ध**न्ति सीलादीहि बुद्धिप्पत्तं, गरुन्ति अत्थो। **एस भारो**ति एस संसयूपच्छेदनसङ्खातो भारो, आगतो भारो अवस्सं आवहितब्बोति अधिप्पायो। **ञत्वा सय**न्ति परूपदेसेन विना सयमेव ञत्वा।

सुचिरतेनाति एवं नामकेन ब्राह्मणेन। **तग्घा**ति एकंसेन। **यथापि कुसलो तथा**ति यथा सब्बधम्मकुसलो सब्बविदू जानाति कथेति, तथा अहमक्खिस्सं। **राजा च खो तं यदि काहति वा न वा**ति यो तं इध पुच्छितुं पेसेसि, सो राजानं तया पुच्छितं करोतु वा मा वा, अहं पन ते अक्खिस्सं अक्खिस्सामि, आचिक्खिस्सामीति अत्थो।

१६३. सिप्पनट्ठेन सिक्खितब्बताय च सिप्पमेव **सिप्पायतनं** जीविकाय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारणभावतो। **सेय्यथिद**न्ति निपातो, तस्स ते कतमेति अत्थो। पुथु सिप्पायतनानीति हि साधारणतो सिप्पानि उद्दिसित्वा उपरि तंतंसिप्पूपजीविनो निद्दिट्ठा पुग्गलाधिट्ठानकथाय पपञ्चं परिहरितुं। अञ्ञथा यथाधिप्पेतानि ताव सिप्पायतनानि दस्सेत्वा पुन तंतंसिप्पूपजीवीसु दस्सियमानेसु पपञ्चो सियाति। तेनाह **"हत्थारोहा"**तिआदि।

हत्थिं आरोहन्ति, आरोहापयन्ति चाति **हत्थारोहा।** येहि पयोगेहि पुरिसो हत्थिनो आरोहनयोग्गो होति, हत्थिस्स तं पयोगं विधायतं सब्बेसं पेतेसं गहणं। तेनाह **"सब्बेपी"**तिआदि। तत्थ **हत्थाचरिया** नाम ये हत्थिनो हत्थारोहकानञ्च सिक्खपका। **हत्थिवेज्जा** नाम हत्थिभिसक्का। **हत्थिमेण्डा** नाम हत्थीनं पादरक्खका। **आदि-**सद्देन हत्थीनं यवसदायकादिके सङ्गण्हाति। **अस्सारोहा रथिका**ति एत्थापि एसेव नयो। रथे नियुत्ता **रथिका। रथरक्खा** नाम रथस्स आणिरक्खका। धनुं गण्हन्ति, गण्हापेन्ति चाति **धनुग्गहा,** इस्सासा धनुसिप्पस्स सिक्खापका च। तेनाह **"धनुआचरिया इस्सासा"**ति। चेलेन चेलपटाकाय युद्धे अकन्ति गच्छन्तीति **चेलका**ति आह **"ये युद्धे जयधजं गहेत्वा पुरतो गच्छन्ती"**ति। यथा तथा ठिते सेनिके ब्यूहकरणवसेन ततो चलयन्ति उच्चालेन्तीति **चलका।** सकुणग्घिआदयो विय मंसपिण्डं परसेनासमूहं साहसिकमहायोधताय छेत्वा छेत्वा दयन्ति उप्पतित्वा उप्पतित्वा गच्छन्तीति **पिण्डदायका।** दुतियविकप्पे पिण्डे दयन्ति जनसम्मद्दे उप्पतन्ता विय गच्छन्तीति पिण्डदायकाति अत्थो वेदितब्बो। **उग्गतुग्गता**ति थामजवपरक्कमादिवसेन अतिविय उग्गता उग्गाति अत्थो। **पक्खन्दन्तीति** अत्तनो वीरसूरभावेन असज्जमाना परसेनं अनुपविसन्तीति अत्थो। थामजवबलपरक्कमादिसम्पत्तिया **महानागा विय महानागा। एकन्तसूरा**ति एकाकिसूरा अत्तनो सूरभावेनेव एकाकिनो हुत्वा युज्झनका। **सजालिका**ति सवम्मिका। **सरपरित्ताणचम्म**न्ति चम्मपरिसिब्बितं खेटकं, चम्ममयं वा फलकं। **घरदासयोधा**ति अन्तोजातयोधा।

आळारं वुच्चति महानसं, तत्थ नियुत्ताति **आळारिका,** भत्तकारा। **पूविका**ति पूवसम्पादका, ये पूवमेव नानप्पकारतो सम्पादेत्वा विक्किणन्ता जीवन्ति। केसनखलिखनादिवसेन मनुस्सानं अलङ्कारविधिं कप्पेन्ति संविदहन्तीति **कप्पका। न्हापका**ति चुण्णविलेपनादीहि मलहरणवण्णसम्पादनविधिना न्हापेन्तीति न्हापका। नवन्तादिविधिना पवत्तो गणनगन्थो अन्तरा छिद्दाभावेन अच्छिद्दकोति वुच्चति, तं गणनं उपनिस्साय जीवन्ता **अच्छिद्दकपाठका।** हत्थेन अधिप्पायविञ्ञापनं हत्थमुद्दा **हत्थ-**सद्दो चेत्थ तदेकदेसेसु अङ्गुलीसु दट्ठब्बो। "न भुञ्जमानो सब्बं हत्थं मुखे पक्खिपिस्सामी"तिआदीसु विय, तस्मा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गुलिसङ्कोचनादिना गणना **हत्थमुद्दाय गणना**। **चित्तकारादीनी**ति। **आदि**-सद्देन भमकारकोट्टकलेखक विलीवकारादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। **दिट्ठेव धम्मे**ति इमस्मिंयेव अत्तभावे। **सन्दिट्ठिकमेवा**ति असम्परायिकताय सामं दट्ठब्बं, सयं अनुभवितब्बं अत्तपच्चक्खं दिट्ठधम्मिकन्ति अत्थो। **सुखितन्**ति सुखप्पत्तं। **उपरी**ति देवलोके। सो हि मनुस्सलोकतो उपरिमो। कम्मस्स कतत्ता निब्बत्तनतो तस्स फलं तस्स अग्गिसिखा विय होति, तञ्च उद्धं देवलोकेति आह **"उद्धं अग्गं अस्सा अत्थीति उद्धग्गिका"**ति। **सग्गं अरहती**ति अत्तनो फलभूतं सग्गं अरहति, तत्थ सा निब्बत्तनारहोति अत्थो। **सुखविपाका**ति इट्ठविपाकविपच्चनीका। **सुट्ठु अग्गे**ति अतिविय उत्तमे उळारे। दक्खन्ति वड्ढन्ति एतायाति **दक्खिणा,** परिच्चागमयं पुञ्ञन्ति आह **"दक्खिणं दान"**न्ति।

मग्गो सामञ्ञं समितपापसमणभावोति कत्वा। यस्मा अयं राजा पब्बजितानं दासकस्सकादीनं लोकतो अभिवादनादिलाभो सन्दिट्ठिकं सामञ्ञफलन्ति चिन्तेत्वा "अत्थि नु खो कोचि समणो वा ब्राह्मणो वा ईदिसमत्थं जानन्तो"ति वीमंसन्तो पूरणादिके पुच्छित्वा तेसं कथाय अनाराधितचित्तो भगवन्तम्पि तमत्थं पुच्छि, तस्मा वुत्तं **"उपरि आगतं पन दासकस्सकोपमं सन्धाय पुच्छती"**ति।

कण्हपक्खन्ति यथापुच्छिते अत्थे लब्भमानं दिट्ठिगतूपसञ्हितं संकिलेसपक्खं। **सुक्कपक्खन्**ति तब्बिधुरं उपरिसुत्तागतं वोदानपक्खं। **समणकोलाहलन्**ति समणकोतूहलं तंतंसमणवादानं अञ्ञमञ्ञविरोधं। **समणभण्डनन्**ति तेनेव विरोधेन "एवंवादीनं तेसं समणब्राह्मणानं अयं दोसो, एवंवादीनं अयं दोसो"ति एवं तंतंवादस्स परिभासनं। **रञ्ञो भारं करोन्तो** अत्तनो देसनाकोसल्लेनाति अधिप्पायो।

१६४. पण्डितपतिरूपकानन्ति आमं विय पक्कानं पण्डिताभासानं।

पूरणकस्सपवादवण्णना

१६५. एकं इदाहन्ति एकाहं। **इध**-सद्दो चेत्थ निपातमत्तं, एकाहं समयं तिच्चेव अत्थो। **सरितब्बयुत्तन्**ति अनुस्सरणानुच्छविकं।

१६६. सहत्था करोन्तस्साति सहत्थेनेव करोन्तस्स। निस्सग्गियथावरादयोपि इध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहत्थकरणेनेव सङ्गहिता। **हत्थादीनी**ति हत्थपादकण्णनासादीनि। **पचनं** दहनं विबाधनन्ति आह **"दण्डेन उप्पीळेन्तस्सा"**ति। **पपञ्चसूदनियं** "तज्जेन्तस्स वा"ति अत्थो वुत्तो, इध पन तज्जनं परिभासनं दण्डेनेव सङ्गहेत्वा "दण्डेन उप्पीळेन्तस्स" इच्चेव वुत्तं। **सोकं सयं करोन्तस्सा**ति परस्स सोककारणं सयं करोन्तस्स, सोकं वा उप्पादेन्तस्स। **परेही**ति अत्तनो वचनकरेहि। **सयम्पि फन्दतो**ति परस्स विबाधनपयोगेन सयम्पि फन्दतो। **"अतिपातापयतो"**ति पदं सुद्धकत्तुअत्थे हेतुकत्तुअत्थे च वत्ततीति आह **"हनन्तस्सापि हनापेन्तस्सापी"**ति। **कारणवसेना**ति कारापनवसेन।

घरस्स भित्ति अन्तो बहि च सन्धिता हुत्वा ठिता **घरसन्धि।** किञ्चिपि असेसेत्वा निरवसेसो लोपो **निल्लोपो।** एकागारे नियुत्तो विलोपो **एकागारिको।** परितो सब्बसो पन्थे हननं **परिपन्थो। पापं न करीयति** पुब्बे असञ्ञतो उप्पादेतुं असक्कुणेय्यत्ता, तस्मा **नत्थि पापं।** यदि एवं कथं सत्ता पापे पटिपज्जन्तीति आह **"सत्ता पन पापं करोमाति एवं सञ्जिनो होन्ती"**ति। एवं किरस्स होति– इमेसञ्हि सत्तानं हिंसादिकिरिया न अत्तानं फुसति तस्स निच्चताय निब्बिकारत्ता सरीरं पन अचेतनं कट्ठकलिङ्गरूपमं, तस्मिं विकोपितेपि न किञ्चि पापन्ति। **खुरनेमिना**ति निसितखुरमयनेमिना।

गङ्गाय दक्खिणा दिसा अप्पतिरूपदेसो, उत्तरा दिसा पतिरूपदेसोति अधिप्पायेन"दक्खिणञ्च"तिआदि वुत्तन्ति आह **"दक्खिणतीरे मनुस्सा कक्खळा"**तिआदि। **महायागन्ति** महाविजितयञ्ञसदिसं महायागं। **उपोसथकम्मेन वा**ति उपोसथकम्मेन च। **दम**-सद्दो हि इन्द्रियसंवरस्स उपोसथसीलस्स च वाचको इधाधिप्पेतो। केचि पन **"उपोसथकम्मेना**ति इदं इन्द्रियदमनस्स विसेसनं, तस्मा 'उपोसथकम्मभूतेन इन्द्रियदमनेना"ति अत्थं वदन्ति। **सीलसंयमेना**ति कायिकवाचसिकसंवरेन। **सच्चवज्जेना**ति सच्चवाचाय, तस्सा विसुं वचनं लोके गरुतरपुञ्ञसम्मतभावतो। यथा हि पापधम्मेसु मुसावादो गरु, एवं पुञ्ञधम्मेसु सच्चवाचा। तेनाह भगवा "एकं धम्मं अतीतस्सा"तिआदि। **पवत्ती**ति यो "करोती"ति वुच्चति, तस्स सन्ताने फलुप्पत्तिपच्चयभावेन उप्पत्ति। **सब्बथा**ति "करोतो"तिआदिना वुत्तेन सब्बप्पकारेन। **किरियमेव पटिक्खिपति,** न रञ्ञा पुट्ठं सन्दिट्ठिकं सामञ्ञफलं ब्याकरोतीति अधिप्पायो। इदं अवधारणं विपाकपटिक्खेपनिवत्तनत्थं। यो हि कम्मं पटिक्खिपति, तेन अत्थतो विपाकोपि पटिक्खित्तो एव नाम होति। तथा हि वक्खति "कम्मं पटिबाहन्तेनापी"तिआदि (दी० नि० अट्ठ० १.१७०-१७२)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटिराजूहि अनभिभवनीयभावेन विसेसतो जितन्ति **विजितं,** आणापवत्तिदेसो। "मा मय्हं विजिते वसथा"ति अपसादना पब्बजितस्स विहेठना पब्बाजनाति कत्वा वुत्तं **"अपसादेतब्बन्ति विहेठेतब्ब"**न्ति। उग्गण्हनं तेन वुत्तस्स अत्थस्स "एवमेत"न्ति उपधारणं सल्लक्खणं, निकुज्जनं तस्स अद्धनियभावापादनवसेन चित्तेन सन्धारणं। तदुभयं पटिक्खिपन्तो आह **"अनुग्गण्हन्तो अनिकुज्जन्तो"**ति। तेनाह **"सारवसेन अग्गण्हन्तो"**तिआदि।

मक्खलिगोसालवादवण्णना

१६८. उभयेनाति हेतुपच्चयपटिसेधनवचनेन। **संकिलेसपच्चय**न्ति संकिलिस्सनस्स मलीनभावस्स कारणं। **विसुद्धिपच्चय**न्ति सङ्किलेसतो विसुद्धिया वोदानस्स कारणं। **अत्तकारो**ति तेन तेन सत्तेन अत्तना कातब्बकम्मं अत्तना निप्फादेतब्बपयोगो। **परकार**न्ति परस्स वाहसा इज्झनकपयोजनं। तेनाह **"येना"**तिआदि। **महासत्त**न्ति अन्तिमभविकं महाबोधिसत्तं, पच्चेकबोधिसत्तस्सपि एत्थेव सङ्गहो वेदितब्बो। **मनुस्ससोभग्गत**न्ति मनुस्सेसु सुभगभावं। **एव**न्ति वुत्तप्पकारेन। कम्मवादस्स किरियवादस्स पटिक्खिपनेन "अत्थि भिक्खवे कम्मं कण्हं कण्हविपाक"न्तिआदि (अ० नि० १.४.२३२) नयप्पवत्ते **जिनचक्के पहारं देति नाम। नत्थि पुरिसकारो**ति यथावुत्तअत्तकारपरकाराभावतो एव सत्तानं पच्चत्तपुरिसकारो नाम कोचि नत्थीति अत्थो। तेनाह **"येना"**तिआदि। **नत्थि बल**न्ति सत्तानं दिट्ठधम्मिकसम्परायिकनिब्बानसम्पत्तिआवहं बलं नाम किञ्चि नत्थि। तेनाह **"यम्ही"**तिआदि। निदस्सनमत्तञ्चेतं, संकिलेसिकम्पि चायं बलं पटिक्खिपतेव। यदि वीरियादीनि पुरिसकारवेवचनानि, कस्मा विसुं गहणन्ति आह **"इदं नो वीरियेना"**तिआदि। सद्दत्थतो पन तस्सा तस्सा किरियाय उस्सन्नट्ठेन **बलं।** सूरवीरभावावहट्ठेन **वीरियं।** तदेव दळ्हभावतो, पोरिसधुरं वहन्तेन पवत्तेतब्बतो च **पुरिसथामो।** परं परं ठानं अक्कमनप्पवत्तिया **पुरिसपरक्कमो**ति वुत्तोति वेदितब्बं।

सत्तयोगतो रूपादीसु सत्तविसत्तताय **सत्ता।** पाणनतो अस्ससनपस्ससनवसेन पवत्तिया **पाणा।** ते पन सो एकिन्द्रियादिवसेन विभजित्वा वदतीति आह **"एकिन्द्रियो"**तिआदि। अण्डकोसादीसु भवनतो **"भूता"**ति वुच्चन्तीति आह **"अण्डकोस...पे०... वदती"**ति। जीवनतो पाणं धारेन्ता विय वड्ढनतो **जीवा।** तेनाह **"सालियवा"**तिआदि। नत्थि एतेसं संकिलेसविसुद्धीसु वसोति **अवसा।** नत्थि नेसं बलं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरियं चाति **अबला अवीरिया**। **नियता**ति अच्छेज्जसुत्तावुताभेज्जमणिनो विय नियतप्पवत्तिताय गतिजातिबन्धापवग्गवसेन नियामो। **तत्थ तत्थ गमनन्ति** छन्नं अभिजातीनं तासु तासु गतीसु उपगमनं समवायेन समागमो। **सभावोयेवा**ति यथा कण्टकस्स तिखिणता, कपित्थफलानं परिमण्डलता, मिगपक्खीनं विचित्ताकारता, एवं सब्बस्सापि लोकस्स हेतुपच्चयेन विना तथा तथा परिणामो अयं सभावो एव अकित्तिमोयेव। तेनाह **"येन ही"**तिआदि। छळाभिजातियो परतो वित्थारीयन्ति। **"सुखञ्च दुक्खञ्च पटिसंवेदेन्ती"**ति वदन्तो अदुक्खमसुखभूमिं सब्बेन सब्बं न जानातीति उल्लिङ्गन्तो **"अञ्ञा अदुक्खमसुखभूमि नत्थीति दस्सेती"**ति आह।

पमुखयोनीनन्ति मनुस्सतिरच्छानादीसु खत्तियब्राह्मणादिसीहब्यग्घादिवसेन पधानयोनीनं। **सट्ठिसतानी**ति छसहस्सानि। "पञ्च च कम्मुनो सतानी"ति पदस्स अत्थदस्सनं **"पञ्चकम्मसतानि चा"**ति। **"एसेव नयो"**ति इमिना "केवलं तक्कमत्तकेन निरत्थकं दिट्ठिं दीपेती"ति इममेवत्थं अतिदिसति। एत्थ च **"तक्कमत्तकेना"**ति इमिना यस्मा तक्किका निरङ्कुसताय परिकप्पनस्स यं किञ्चि अत्तनो परिकप्पितं सारतो मञ्ञमाना तथेव अभिनिविस्स तक्कदिट्ठिगाहं गण्हन्ति, तस्मा न तेसं दिट्ठिवत्थुस्मिं विञ्ञूहि विचारणा कातब्बाति दस्सेति। **केची**ति उत्तरविहारवासिनो। ते हि "पञ्च कम्मानीति चक्खुसोतघानजिव्हाकाया इमानि पञ्चिन्द्रियानि 'पञ्च कम्मानी'ति पञ्ञापेन्ती"ति वदन्ति। **कम्मन्ति लद्धी**ति ओळारिकभावतो परिपुण्णकम्मन्ति लद्धि। **मनोकम्मं** अनोळारिकत्ता **उपड्ढकम्म**न्ति लद्धीति योजना। **द्वट्ठिपटिपदा**ति "द्वासट्ठि पटिपदा"ति वत्तब्बे सभावनिरुत्तिं अजानन्तो "द्वट्ठिपटिपदा"ति वदति। **एकस्मिं कप्पे**ति एकस्मिं महाकप्पे, तत्थापि च विवट्टट्ठायीसञ्ञिते एकस्मिं असङ्ख्येय्येकप्पे।

उरब्भे हनन्तीति **ओरब्भिका**। एवं **सूकरिका**दयो वेदितब्बा। **लुद्दा**ति अञ्ञेपि ये केचि मागविकनेसादा। ते पापकम्मपसुतताय **"कण्हाभिजातीति वदति। भिक्खू"**ति बुद्धसासने भिक्खू। **ते किर** "सछन्दरागा परिभुञ्जन्ती"ति अधिप्पायेन **"चतूसु पच्चयेसु कण्टके पक्खिपित्वा खादन्ती"**ति वदति। कस्माति चे? यस्मा "ते पणीतपणीते पच्चये पटिसेवन्ती"ति तस्स मिच्छागाहो, तस्मा ञायलद्धेपि पच्चये भुञ्जमाना आजीवकसमयस्स विलोमगाहिताय पच्चयेसु कण्टके पक्खिपित्वा खादन्ति नामाति वदतीति अपरे। **एके पब्बजिता,** ये सविसेसं अत्तकिलमथानुयोगं अनुयुत्ता। तथा हि ते कण्टके वत्तन्ता विय होन्तीति **"कण्टकवुत्तिका"**ति वुत्ता। ठत्वा भुञ्जननहानपटिक्खेपादिवतसमायोगेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्डरतरा। **"अचेलकसावका"**ति आजीवकसावके वदति। **ते किर** आजीवकलद्धिया विसुद्धचित्तताय निगण्ठेहिपि **पण्डरतरा**। नन्दादयो हि तथारूपं आजीवकपटिपत्तिं उक्कंसं पापेत्वा ठिता। तस्मा निगण्ठेहि आजीवकसावकेहि च पण्डरतरा परमसुक्काभिजातीतिं अयं तस्स लद्धि।

पुरिसभूमियोति पधानपुग्गलेन निद्देसो। इत्थीनम्पि ता भूमियो इच्छन्तेव। **"भिक्खु च पन्नको"**तिआदि तेसं पाळियेव। तत्थ **पन्नको**ति भिक्खाय विचरणको, तेसं वा पटिपत्तिया पटिपन्नको। **जिनो**ति जिण्णो जरावसेन हीनधातुको, अत्तनो वा पटिपत्तिया पटिपक्खं जिनित्वा ठितो। सो किर तथाभूतो धम्मम्पि कस्सचि न कथेसि। तेनाह **"न किञ्चि आहा"**ति। ओट्ठवदनादिविप्पकारे कतेपि खमनवसेन न किञ्चि वदतीतिपि वदन्ति। **अलाभिन्ति** "सो न कुम्भिमुखा पटिग्गण्हाती"तिआदिना (दी० नि० १.३९४) नयेन वुत्तअलाभहेतुसमायोगेन अलाभिं, ततोयेव जिघच्छादुब्बलपरेतताय सयनपरायनं **"समणं पन्नभूमी"**ति वदति।

आजीववुत्तिसतानीति सत्तानं आजीवभूतानि जीविकावुत्तिसतानि। **पसुग्गहणेन** एळकजाति गहिता, मिगग्गहणेन रुरुगवयादिसब्बमिगजाति। **बहू देवा**ति चातुमहाराजिकादिब्रह्मकायिकादिवसेन, तेसं अन्तरभेदवसेन बहू देवा। तत्थ चातुमहाराजिकानं एकच्चभेदो महासमयसुत्तवसेन (दी० नि० २.३३१) दीपेतब्बो। **मनुस्सापि अनन्ता**ति दीपदेसकुलवंसाजीवादिविभागवसेन मनुस्सापि अनन्तभेदा। पिसाचा एव **पेसाचा**। ते अपरपेतादयो **महन्तमहन्ता**। छद्दन्तदहमन्दाकिनियो कुवाळियमुचलिन्दनामेन वदति।

पवुटाति पब्बगण्ठिका। **पण्डितोपि...पे०... उद्धं न गच्छति,** कस्मा? सत्तानं संसरणकालस्स नियतभावतो। **अपरिपक्कं** संसरणनिमित्तं सीलादिना **परिपाचेति नाम** सीघंयेव विसुद्धिप्पत्तिया। **परिपक्कं** कम्मं **फुस्स फुस्स** पत्वा पत्वा कालेन परिपक्कभावानापादनेन **ब्यन्तिं करोति नाम।**

सुत्तगुळेति सुत्तवट्टियं। **"निब्बेठियमानमेव पलेती"**ति उपमाय सत्तानं संसारो अनुक्कमेन खीयतेव, न तस्स वड्ढतीति दस्सेति परिच्छिन्नरूपत्ता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अजितकेसकम्बलवादवण्णना

१७१. **दिन्नन्ति** देय्यधम्मसीसेन दानं वुत्तन्ति आह **"दिन्नस्स फलाभावं वदती"**ति, दिन्नं पन अन्नादिवत्थुं कथं पटिक्खिपति। एसेव नयो **यिट्ठं हुतन्ति** एत्थापि। **महायागोति** सब्बसाधारणं महादानं। **पाहुनकसक्कारोति** पाहुनभावेन कातब्बसक्कारो। **फलन्ति** आनिसंसफलं, निस्सन्दफलञ्च। **विपाकोति** सदिसफलं। **परलोके ठितस्स अयं लोको नत्थीति** परलोके ठितस्स कम्मुना लद्धब्बो अयं लोको न होति। **इधलोके ठितस्सापि परलोको नत्थीति** इधलोके ठितस्स कम्मुना लद्धब्बो परलोको न होति। तत्थ कारणमाह **"सब्बे तत्थ तत्थेव उच्छिज्जन्ती"**ति। इमे सत्ता यत्थ यत्थ भवे, योनिआदीसु च ठिता तत्थ तत्थेव उच्छिज्जन्ति निरुदयविनासवसेन विनस्सन्ति। **फलाभाववसेनाति** मातापितूसु सम्मापटिपत्तिमिच्छापटिपत्तीनं फलस्स अभाववसेन "नत्थि माता, नत्थि पिता"ति वदति, न मातापितूनं, नापि तेसु इदानि कयिरमानसक्कारासक्कारानं अभाववसेन तेसं लोकपच्चक्खत्ता। पुब्बुळकस्स विय इमेसं सत्तानं उप्पादो नाम केवलो, न चवित्वा आगमनपुब्बकोति दस्सनत्थं "नत्थि सत्ता ओपपातिका"ति वुत्तन्ति आह **"चवित्वा उपपज्जनकसत्ता नाम नत्थीति वदती"**ति। समणेन नाम याथावतो जानन्तेन कस्सचि किञ्चि अकथेत्वा सञ्ञतेन भवितब्बं, अञ्ञथा आहोपुरिसिका नाम सिया। किञ्हि परो परस्स करिस्सति? तथा च अत्तनो सम्पादनस्स कस्सचि अवस्सयो एव न सिया तत्थ तत्थेव उच्छिज्जनतोति आह **"ये इमञ्च...पे०... पवेदेन्ती"**ति।

चतूसु महाभूतेसु नियुत्तोति **चातुमहाभूतिको**। यथा पन मत्तिकाय निब्बत्तं भाजनं मत्तिकामयं, एवं अयं चतूहि महाभूतेहि निब्बत्तोति आह **"चतुमहाभूतमयो"**ति। **अज्झत्तिकपथवीधातूति** सत्तसन्तानगता पथवीधातु। **बाहिरपथवीधातुन्ति** बहिद्धा महापथविं। **उपगच्छतीति** बाहिरपथविकायतो तदेकदेसभूता पथवी आगन्त्वा अज्झत्तिकभावप्पत्तिया सत्तभावेन सण्ठिता इदानि घटादिगतपथवी विय तमेव बाहिरपथविकायं उपेति उपगच्छति सब्बसो तेन निब्बिसेसतं एकीभावमेव गच्छति। **आपादीसुपि एसेव नयोति** एत्थ पज्जुन्नेन महासमुद्दतो गहितआपो विय वस्सोदकभावेन पुनपि महासमुद्दमेव, सूरियरस्मितो गहितं इन्दग्गिसङ्खाततेजो विय पुन सूरियरस्मिं, महावायुखन्धतो निग्गतमहावातो विय तमेव वायुखन्धं उपेति उपगच्छतीति दिट्ठिगतिकस्स अधिप्पायो। **मनच्छट्ठानि इन्द्रियानि आकासं पक्खन्दन्ति** तेसं विसयाभावाति वदन्ति। विसयिगहणेन हि विसयापि गहिता एव होन्तीति। **गुणागुणपदानीति** गुणदोसकोट्ठासा। **सरीरमेव पदानीति अधिप्पेतं** सरीरेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंतंकिरियाय पज्जितब्बतो। दब्बन्ति मुय्हन्तीति दत्तू, मूळ्हपुग्गला। तेहि **दत्तूहि** बालमनुस्सेहि। "परलोको अत्थी"ति मति येसं, ते अत्थिका, तेसं वादोति अत्थिकवादो, तं **अत्थिकवादं**।

कम्मं पटिबाहति अकिरियवादिभावतो। **विपाकं पटिबाहति** सब्बेन सब्बं आयतिं उपपत्तिया पटिक्खिपनतो। **उभयं पटिबाहति** सब्बसो हेतुपटिबाहनेनेव फलस्सपि पटिक्खित्तत्ता। उभयन्ति हि कम्मं विपाकञ्चाति उभयं। सो हि "अहेतू अप्पच्चया सत्ता संकिलिस्सन्ति, विसुज्झन्ति चा"ति (दी० नि० १.१६८; म० नि० २.१००, २२७; सं० नि० २.३.२१२) वदन्तो कम्मस्स विय विपाकस्सापि संकिलेसविसुद्धीनं पच्चयत्ताभाववचनतो तदुभयं पटिबाहति नाम। **विपाको पटिबाहितो होति** असति कम्मे विपाकाभावतो। **कम्मं पटिबाहितं होति** असति विपाके कम्मस्स निरत्थकभावापत्तितो। **अत्थतो**ति सरूपेन। **उभयप्पटिबाहका**ति विसुं विसुं तंतंदिट्ठिदीपकभावेन पाळियं आगतापि पच्चेकं तिविधदिट्ठिका एव उभयपटिबाहकत्ता। उभयप्पटिबाहकाति हि हेतुवचनं। "**अहेतुकवादा चेवा**"तिआदि पटिञ्ञावचनं। यो हि विपाकपटिबाहनेन नत्थिकदिट्ठिको उच्छेदवादी, सो अत्थतो कम्मपटिबाहनेन अकिरियदिट्ठिको, उभयपटिबाहनेन अहेतुकदिट्ठिको च होति। सेसद्वयेपि एसेव नयो।

सज्झायन्तीति तं दिट्ठिदीपकं गन्थं उग्गहेत्वा पठन्ति। **वीमंसन्ती**ति तस्स अत्थं विचारेन्ति। "**तेस**"न्तिआदि वीमंसनाकारदस्सनं। **तस्मिं आरम्मणे**ति यथापरिकप्पितकम्मफलाभावादिके "करोतो न करीयति पाप"न्ति आदिनयप्पवत्ताय लद्धिया आरम्मणे। **मिच्छासति सन्तिट्ठती**ति "करोतो न करीयति पाप"न्तिआदिवसेन अनुस्सवूपलद्धे अत्थे तदाकारपरिवितक्कनेहि सविग्गहे विय सरूपतो चित्तस्स पच्चुपट्ठिते चिरकालपरिचयेन एवमेतन्ति निज्झानक्खमभावूपगमनेन निज्झानक्खन्तिया तथागहिते पुनप्पुनं तथेव आसेवन्तस्स बहुलीकरोन्तस्स मिच्छावितक्केन समादियमाना मिच्छावायामूपत्थम्भिता अतंसभावं "तंसभाव"न्ति गण्हन्ती मिच्छासतीति लद्धनामा तंलद्धिसहगता तण्हा सन्तिट्ठति। **चित्तं एकग्गं होती**ति यथासकं वितक्कादिपच्चयलाभेन तस्मिं आरम्मणे अवट्ठितताय अनेकग्गतं पहाय एकग्गं अप्पितं विय होति। चित्तसीसेन मिच्छासमाधि एव वुत्तो। सोपि हि पच्चयविसेसेहि लद्धभावनाबलो ईदिसे ठाने समाधानपतिरूपकिच्चकरोयेव, वाळविज्झनादीसु वियाति दट्ठब्बं। **जवनानि जवन्ती**ति अनेकक्खत्तुं तेनाकारेन पुब्बभागियेसु जवनवारेसु पवत्तेसु सब्बपच्छिमे जवनवारे सत्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जवनानि जवन्ति। **पठमे जवने सतेकिच्छा होन्ति। तथा दुतियादीसू**ति धम्मसभावदस्सनमत्तमेतं, न पन तस्मिं खणे तेसं तिकिच्छा केनचि सक्का कातुं।

तत्थाति तेसु तीसु मिच्छादस्सनेसु। **कोचि एकं दस्सनं ओक्कमती**ति यस्स एकस्मिंयेव अभिनिवेसो आसेवना च पवत्ता, सो एकमेव दस्सनं ओक्कमति। यस्स पन द्वीसु तीसुपि वा अभिनिवेसो आसेवना च पवत्ता, सो द्वे तीणिपि ओक्कमति, एतेन या पुब्बे उभयपटिबाहकतामुखेन दीपिता अत्थसिद्धा सब्बदिट्ठिकता, सा पुब्बभागिया। या पन मिच्छत्तनियामोक्कन्तिभूता, सा यथासकं पच्चयसमुदागमसिद्धितो भिन्नारम्मणानं विय विसेसाधिगमानं एकज्झं अनुप्पत्तिया असङ्किण्णा एवाति दस्सेति। **"एकस्मिं ओक्कन्तेपी"**तिआदिना तिस्सन्नम्पि दिट्ठीनं समानबलतं समानफलतञ्च दस्सेति। तस्मा तिस्सोपि चेता एकस्स उप्पन्ना अब्बोकिण्णा एव, एकाय विपाके दिन्ने इतरा अनुबलप्पदायिकायो होन्ति। **"वट्टखाणु नामेसा"**ति इदं वचनं नेय्यत्थं, न नीतत्थं। तथा हि **पपञ्चसूदनियं** "किं पनेस एकस्मिंयेव अत्तभावे नियतो होति, उदाहु अञ्ञस्मिं पीति ? एकस्मिंयेव नियतो, आसेवनवसेन पन भवन्तरेपि तं तं दिट्ठिं रोचेति येवा"ति (म० नि० अट्ठ० ३.१२९) वुत्तं। अकुसलञ्हि नामेतं अबलं दुब्बलं, न कुसलं विय सबलं महाबलं। तस्मा "एकस्मिंयेव अत्तभावे नियतो"ति वुत्तं। अञ्ञथा सम्मत्तनियामो विय मिच्छत्तनियामोपि अच्चन्तिको सिया, न च अच्चन्तिको। यदि एवं वट्टखाणुजोतना कथन्ति आह "आसेवनवसेन पना"तिआदि। तस्मा यथा "सकिं निमुग्गोपि निमुग्गो एव बालो"ति वुत्तं, एवं वट्टखाणुजोतना। यादिसे हि पच्चये पटिच्च अयं तं तं दस्सनं ओक्कन्तो पुन कदाचि तप्पटिपक्खे पच्चये पटिच्च ततो सीसुक्खिपनमस्स न होतीति न वत्तब्बं, तस्मा **"येभुय्येन हि एवरूपस्स भवतो वुट्ठानं नाम नत्थी"**ति वुत्तं।

तस्माति यस्मा एवं संसारखाणुभावस्सपि पच्चयो अपण्णकजातो, तस्मा। **भूतिकामो**ति दिट्ठधम्मिकसम्परायिकपरमत्थानं वसेन अत्तनो गुणेहि वड्ढिकामो।

पकुधकच्चायनवादवण्णना

१७४. अकताति समेन विसमेन वा केनचि हेतुना न कता न विहिता। कतविधो करणविधि नत्थि एतेसन्ति **अकतविधाना।** पदद्वयेनापि लोके केनचि हेतुपच्चयेन नेसं अनिब्बत्तनभावं दस्सेति। **इद्धियापि न निम्मिता**ति कस्सचि इद्धिमतो चेतोवसिप्पत्तस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवस्स, इस्सरादिनो वा इद्धियापि न निम्मिता। **अनिम्मापिता** कस्सचि अनिम्मापिता। **वुत्तत्थमेवा**ति ब्रह्मजालवण्णनायं (दी० नि० अट्ठ० १.३०) वुत्तत्थमेव। **वञ्झा**ति वञ्झपसुवञ्झतालादयो विय अफला, कस्सचि अजनकाति अत्थो, एतेन पथविकायादीनं रूपादिजनकभावं पटिक्खिपति। रूपसद्दादयो हि पथविकायादीहि अप्पटिबद्धवुत्तिकाति तस्स लद्धि। पब्बतकूटं विय ठिताति **कूटट्ठा,** यथा पब्बतकूटं केनचि अनिब्बत्तितं, कस्सचि च अनिब्बत्तकं, एवमेते पीति अधिप्पायो। यमिदं "बीजतो अङ्कुरादि जायती"ति वुच्चति, तं विज्जमानमेव ततो निक्खमति, न अविज्जमानं, अञ्ञथा अञ्ञतोपि अञ्ञस्स उपलद्धि सियाति अधिप्पायो। **ठितत्ता**ति निब्बिकाराभावेन ठितत्ता। **न चलन्ती**ति विकारं नापज्जन्ति। विकाराभावतो हि तेसं सत्तन्नं कायानं एसिकट्ठायिट्ठितता। अनिञ्जनञ्च अत्तनो पकतिया अवट्ठानमेव। तेनाह "**न विपरिणमन्ती**"ति। अविपरिणामधम्मत्ता एव हि ते अञ्ञमञ्ञं न ब्याबाधेन्ति। सति हि विकारं आपादेतब्बताय ब्याबाधकतापि सिया, तथा अनुग्गहेतब्बताय अनुग्गाहकताति तदभावं दस्सेतुं पाळियं **नाल**न्तिआदि वुत्तं। **पथवी एव** कायेकदेसत्ता **पथविकायो**। जीवसत्तमानं कायानं निच्चताय निब्बिकारभावतो न हन्तब्बता, न घातेतब्बता चाति नेव कोचि हन्ता वा घातेता वा, तेनेवाह "**सत्तन्नं त्वेव कायान**"न्तिआदि। यदि कोचि हन्ता नत्थि, कथं सत्थप्पहारोति आह "**यथा मुग्गरासि आदीसू**"तिआदि। **केवलं सञ्ञामत्तमेव होति।** हननघातनादि पन परमत्थतो नत्थेव कायानं अविकोपनीयभावतोति अधिप्पायो।

निगण्ठनाटपुत्तवादवण्णना

१७७. चत्तारो यामा भागा चतुयामा, चतुयामा एव चातुयामा, भागत्थो हि इध याम-सद्दो यथा "रत्तिया पठमो यामो"ति। सो पनेत्थ भागो संवरलक्खणोति आह "**चातुयामसंवुतोति चतुकोट्ठासेन संवरेन संवुतो**"ति। **पटिक्खित्तसब्बसीतोदको**ति पटिक्खित्तसब्बसीतोदकपरिभोगो। **सब्बेन पापवारणेन युत्तो**ति सब्बप्पकारेन संवरलक्खणेन समन्नागतो। **धुतपापो**ति सब्बेन निज्जरलक्खणेन पापवारणेन विधुतपापो। **फुट्ठो**ति अट्ठन्नम्पि कम्मानं खेपनेन मोक्खप्पत्तिया कम्मक्खयलक्खणेन सब्बेन पापवारणेन फुट्ठो तं पत्वा ठितो। **कोटिप्पत्तचित्तो**ति मोक्खाधिगमेनेव उत्तममरियादप्पत्तचित्तो। **यतत्तो**ति कायादीसु इन्द्रियेसु संयमेतब्बस्स अभावतो **संयतचित्तो। सुप्पतिट्ठितचित्तो**ति निस्सेसतो सुट्ठु पतिट्ठितचित्तो। **सासनानुलोमं** नाम पापवारणेन युत्तता। तेनाह "धुतपापो"तिआदि। **असुद्धलद्धिताया**ति "अत्थि जीवो, सो च सिया निच्चो, सिया अनिच्चो"ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवमादिअसुद्धलद्धिताय। **सब्बा**ति कम्मपकतिविभागादिविसया सब्बा निज्झानक्खन्तियो। **दिट्ठिये वा**ति मिच्छादिट्ठियो एव जाता।

सञ्चयबेलट्ठपुत्तवादवण्णना

१७९-१८१. अमराविक्खेपे वुत्तनयो एवाति ब्रह्मजाले अमराविक्खेपवादसंवण्णनायं (दी० नि० अट्ठ० १.६१-६३) वुत्तनयो एव विक्खेपब्याकरणभावतो, तथेव चेत्थ विक्खेपवादस्स आगतत्ता।

पठमसन्दिट्ठिकसामञ्ञफलवण्णना

१८३. यथा ते रुच्चेय्याति इदानि मया पुच्छियमानो अत्थो यथा तव चित्ते रोचेय्य। घरदासिया कुच्छिस्मिं जातो **अन्तोजातो**। धनेन कीतो **धनक्कीतो**। बन्धग्गाहगहितो **करमरानीतो**। **साम**न्ति सयमेव। **दासब्य**न्ति दासभावं। कोचि दासोपि समानो अलसो कम्मं अकरोन्तो "कम्मकारो"ति न वुच्चतीति आह **"अनलसो कम्मकरणसीलोयेवा"**ति। **पठममेवा**ति आसन्नतरट्ठानूपसङ्कमनतो पगेव पुरेतरमेव। **पच्छा**ति सामिकस्स निपज्जाय पच्छा। **सयनतो अवुट्ठिते**ति रत्तिया विभायनवेलाय सेय्यतो अवुट्ठिते। **पच्चूसकालतो पट्ठाया**ति अतीताय रत्तिया पच्चूसकालतो पट्ठाय। **याव सामिनो रत्तिं निद्दोक्कमन**न्ति अपराय पदोसवेलायं याव निद्दोक्कमनं। **किं कार**न्ति किं करणीयं, किंकारभावतो पुच्छित्वा कातब्बवेय्यावच्चन्ति अत्थो।

देवो वियाति आधिपच्चपरिवारादिसम्पत्तिसमन्नागतो पधानदेवो विय। **सो वतस्साह**न्ति सो वत अस्सं अहं। सो राजा विय अहम्पि भवेय्यं, कथं पुञ्ञानि करेय्यं, यदि पुञ्ञानि उळारानि करेय्यन्ति योजना। **"सो वतस्स'स्स"**न्ति पाठे सो राजा अस्स अहं अस्सं वत, यदि पुञ्ञानि करेय्यन्ति योजना। तेनाह **"अयमेवत्थो"**ति। **अस्स**न्ति उत्तमपुरिसप्पयोगे **अहं**-सद्दो अप्पयुत्तोपि पयुत्तो एव होति। **यावजीवं न सक्खिस्सामि दातु**न्ति यावजीवं दानत्थाय उस्साहं करोन्तोपि यं राजा एकं दिवसं देति, ततो सतभागम्पि दातुं न सक्खिस्सामि। तस्मा पब्बजिस्सामीति पब्बज्जायं उस्साहं कत्वाति योजना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कायेन संवुतोति कायेन संवरितब्बं कायद्वारेन पवत्तनकं पापधम्मं संवरित्वा विहरेय्याति अयमेत्थ अत्थोति आह **"कायेन पिहितो हुत्वा"**तिआदि। **घासच्छादनेन परमतायाति** घासच्छादनपरियेसने सल्लेखवसेन परमताय, उक्कट्ठभावे सण्ठितो घासच्छादनमेव वा परमं परा कोटि एतस्स, न ततो परं किञ्चि आमिसजातं परियेसति पच्चासिसति चाति घासच्छादनपरमो, तब्भावो घासच्छादनपरमता, तस्सा **घासच्छादनपरमताय**। **विवेकट्ठकायानन्ति** गणसङ्गणिकतो पविवित्ते ठितकायानं। **नेक्खम्माभिरतानन्ति** झानाभिरतानं। ताय एव झानाभिरतिया परमं उत्तमं वोदानं विसुद्धिं पत्तताय **परमवोदानप्पत्तानं**। किलेसूपधिअभिसङ्खारूपधीनं अच्चन्तविगमेन **निरुपधीनं। विसङ्खारगतानन्ति** अधिगतनिब्बानानं। एत्थ च पठमो विवेको इतरेहि द्वीहि विवेकेहि सहापि पत्तब्बो विनापि, तथा दुतियो। ततियो पन इतरेहि द्वीहि सहेव पत्तब्बो, न विनाति दट्ठब्बं। गणे जनसमागमे सन्निपतनं **गणसङ्गणिका,** तं **पहाय एको विहरति** चरति पुग्गलवसेन असहायत्ता। चित्ते किलेसानं सन्निपतनं **चित्तकिलेससङ्गणिका,** तं **पहाय एको विहरति** किलेसवसेन असहायत्ता। मग्गस्स एकचित्तक्खणिकत्ता, गोत्रभुआदीनञ्च आरम्मणमत्तत्ता न तेसं वसेन सातिसया निब्बुतिसुखसम्फुसना, फलसमापत्तिनिरोधसमापत्तिवसेन सातिसयाति आह **"फलसमापत्तिं वा निरोधसमापत्तिं वा पविसित्वा"**ति। फलपरियोसानो हि निरोधोति।

१८४. अभिहरित्वाति अभिमुखीभावेन नेत्वा। "अहं चीवरादीहि पयोजनं साधेस्सामी"ति वचनसेसो। **सप्पायन्ति** सब्बगेलञ्ञपहरणवसेन उपकारावहं। भाविना अनत्थतो परिपालनवसेन गोपना **रक्खागुत्ति**। पच्चुप्पन्नस्स निसेधवसेन **आवरणगुत्ति।**

दुतियसन्दिट्ठिकसामञ्ञफलवण्णना

१८६. कसतीति कसिं करोति। **गहपतिकोति** एत्थ क-सद्दो अप्पत्थोति आह **"एकगेहमत्ते जेट्ठको"**ति, तेन अनेककुलजेट्ठकभावं पटिक्खिपति। **करं करोतीति** करं सम्पादेति। **वड्ढेतीति** उपरूपरि सम्पादनेन वड्ढेति। एवं अप्पम्पि पहाय पब्बजितुं दुक्करन्ति अयमत्थो लटुकिकोपमसुत्तेन (म० नि० २.१५१, १५२) दीपेतब्बो। तेनाह "सेय्यथापि, उदायि, पुरिसो दलिद्दो अस्सको अनाळ्हियो, तस्सस्स एकं अगारकं ओलुग्गविलुग्गं काकातिदायिं नपरमरूप"न्ति वित्थारो। यदि अप्पम्पि भोगं पहाय पब्बजितुं दुक्करं, कस्मा दासवारे भोगग्गहणं न कतन्ति आह **"दासवारे पना"**तिआदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यथा च दासस्स भोगापि अभोगा परायत्तभावतो, एवं ञातयो पीति दासवारे ञातिपरिवट्टग्गहणम्पि न कतन्ति दट्ठब्बं।

पणीततरसामञ्ञफलवण्णना

१८९. **एवरूपाही**ति यथावुत्तदासकस्सकूपमासदिसाहि उपमाहि सामञ्ञफलं दीपेतुं पहोति भगवा सकलम्पि रत्तिन्दिवं ततो भिय्योपि अनन्तपटिभानताय विचित्तनयदेसनभावतो। **तथापी**ति सतिपि देसनाय उत्तरुत्तराधिकनानानयविचित्तभावे।

एकत्थमेतं पदं साधुसद्दस्सेव क-कारेन वड्ढित्वा वुत्तत्ता, तेनेव **साधुक-**सद्दस्स अत्थं वदन्तेन अत्थुद्धारवसेन **साधु-**सद्दो उदाहटो। **आयाचने**ति अभिमुखयाचने, अभिपत्थनायन्ति अत्थो। **सम्पटिच्छने**ति पटिग्गण्हने। **सम्पहंसने**ति संविज्जमानगुणवसेन हंसने तोसने, उदग्गताकरणेति अत्थो। **धम्मरुची**ति पुञ्ञकामो। **पञ्ञाणवा**ति पञ्ञवा। **अदुब्भो**ति अदूसको, अनुपघातकोति अत्थो। **इधापी**ति इमस्मिं सामञ्ञफलेपि। **अयं** साधु-सद्दो। **दळ्हीकम्मे**ति सक्कच्च किरियायं। **आणत्तियन्ति** आणापने। "सुणोहि साधुकं मनसि करोही"ति हि वुत्ते साधुक-सद्देन सवनमनसिकारानं सक्कच्चकिरिया विय तदाणापनम्पि जोतितं होति, आयाचनत्थता विय चस्स आणापनत्थता वेदितब्बा। **सुन्दरेपी**ति सुन्दरत्थेपि। इदानि यथावुत्तेन साधुक-सद्दस्स अत्थत्तयेन पकासितं विसेसं दस्सेतुं "**दळ्हीकम्मत्थेन ही**"तिआदि वुत्तं।

मनसि करोहीति एत्थ मनसिकारो न आरम्मणपटिपादनलक्खणो, अथ खो वीथिपटिपादनजवनपटिपादनमनसिकारपुब्बकं चित्ते ठपनलक्खणोति दस्सेन्तो "**आवज्जा**"तिआदिमाह। **सोतिन्द्रियविक्खेपवारणं** सवने नियोजनवसेन किरियन्तरपटिसेधनभावतो, सोतं ओदहाति अत्थो। **मनिन्द्रियविक्खेपवारणं** अञ्ञचिन्तापटिसेधनतो। **ब्यञ्जनविपल्लासग्गाहवारणं** "साधुक"न्ति विसेसेत्वा वुत्तत्ता। पच्छिमस्स अत्थविपल्लासग्गाहवारणेपि एसेव नयो। **धारणूपपरिक्खादीसू**ति **आदि-**सद्देन तुलनतीरणादिके, दिट्ठिया सुप्पटिविधे च सङ्गण्हाति। **सब्यञ्जनो**ति एत्थ यथाधिप्पेतमत्थं ब्यञ्जयतीति ब्यञ्जनं, सभावनिरुत्ति। सह ब्यञ्जनेनाति सब्यञ्जनो, ब्यञ्जनसम्पन्नोति अत्थो। **सात्थो**ति अरणीयतो उपगन्तब्बतो अनुधातब्बतो अत्थो, चतुपारिसुद्धिसीलादिको। तेन सह अत्थेनाति सात्थो, अत्थसम्पन्नोति अत्थो। **धम्मगम्भीरो**तिआदीसु **धम्मो** नाम तन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसना नाम तस्सा मनसा ववत्थापिताय तन्तिया देसना। **अत्थो** नाम तन्तिया अत्थो। **पटिवेधो** नाम तन्तिया, तन्तिअत्थस्स च यथाभूतावबोधो। यस्मा चेते धम्मदेसना अत्थप्पटिवेधा ससादीहि विय महासमुद्दो मन्दबुद्धीहि दुक्खोगाहा, अलब्भनेय्यपतिट्ठा च, तस्मा गम्भीरा। तेन वुत्तं **"यस्मा अयं धम्मो...पे०... साधुकं मनसि करोही"**ति। एत्थ च पटिवेधस्स दुक्करभावतो धम्मत्थानं, देसनाञाणस्स दुक्करभावतो देसनाय दुक्खोगाहता, पटिवेधस्स पन उप्पादेतुं असक्कुणेय्यताय, ञाणुप्पत्तिया च दुक्करभावतो दुक्खोगाहता वेदितब्बा। **देसनं** नाम उद्दिसनं, तस्स निद्दिसनं **भासन**न्ति इधाधिप्पेतन्ति आह **"वित्थारतो भासिस्सामी"**ति। परिब्यत्तं कथनञ्हि भासनं, तेनाह **"देसेस्सामीति...पे०... वित्थारदीपन"**न्ति।

यथावुत्तमत्थं सुत्तपदेन समत्थेतुं **"तेनाहा"**तिआदि वुत्तं। **साळिकायिव निग्घोसो**ति साळिकाय आलापो विय मधुरो कण्णसुखो पेमनीयो। **पटिभान**न्ति सद्दो। **उदीरयी**ति उच्चारीयति, वुच्चति वा।

एवं वुत्ते उस्साहजातोति एवं "सुणोहि साधुकं मनसि करोहि भासिस्सामी"ति वुत्ते "न किर भगवा सङ्खेपेनेव देसेस्सति, वित्थारेनपि भासिस्सती"ति सञ्जातुस्साहो हट्ठतुट्ठो हुत्वा।

१९०. "इधा"ति इमिना वुच्चमानं अधिकरणं तथागतस्स उप्पत्तिट्ठानभूतं अधिप्पेतन्ति आह **"देसापदेसे निपातो"**ति। **"स्वाय"**न्ति सामञ्ञतो इधसद्दमत्तं गण्हाति, न यथाविसेसितब्बं इध-सद्दं। तथा हि वक्खति "कत्थचि पदपूरणमत्तमेवा"ति (दी० नि० अट्ठ० १.१९०)। **लोकं उपादाय वुच्चति** लोक-सद्देन समानाधिकरणभावेन वुत्तत्ता। सेसपदद्वये पन पदन्तरसन्निधानमत्तेन तं तं उपादाय वुत्तता दट्ठब्बा। **इध तथागतो लोके**ति हि जातिखेत्तं, तत्थापि अयं चक्कवाळो "लोको"ति अधिप्पेतो। **समणो**ति सोतापन्नो। **दुतियो समणो**ति सकदागामी। वुत्तञ्हेतं "कतमो च भिक्खवे समणो? इध भिक्खवे भिक्खु तिण्णं संयोजनानं परिक्खया सोतापन्नो होती"तिआदि (अ० नि० १.४.२४१)। "कतमो च भिक्खवे दुतियो समणो? इध भिक्खवे भिक्खु तिण्णं संयोजनानं परिक्खया रागदोसमोहानं तनुत्ता"तिआदि (अ० नि० १.४.२४१)। **ओकास**न्ति कञ्चि पदेसं। **इधेव तिट्ठमानस्सा**ति इमिस्सा एव इन्दसालगुहायं तिट्ठमानस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पदपूरणमत्तमेव ओकासापदिसनस्सापि असम्भवतो अत्थन्तरस्स अबोधनतो। अरहन्ति आदयो सद्दा वित्थारिताति योजना। अत्थतो वित्थारणं सद्दमुखेनेव होतीति सद्दग्गहणं। यस्मा। "अपरेहिपि अट्ठहि कारणेहि भगवा तथागतो"तिआदिना उदानट्ठकथादीसु, (उदा० अट्ठ० १८; इतिवु० अट्ठ० ३८) अरहन्ति आदयो विसुद्धिमग्गटीकायं (विसुद्धि० टी० १.१२९, १३०) अत्थो वेदितब्बो। तथागतस्स सत्तनिकायन्तोगधताय "इध पन सत्तलोको अधिप्पेतो"ति वत्वा तत्थायं यस्मिं सत्तनिकाये यस्मिञ्च ओकासे उप्पज्जति, तं दस्सेतुं **"सत्तलोके उप्पज्जमानोपि चा"**तिआदि वुत्तं। **"तथागतो न देवलोके उप्पज्जती"**तिआदीसु यं वत्तब्बं, तं परतो आगमिस्सति। **सारप्पत्ता**ति कुलभोगिस्सरियादिवसेन सारभूता। **ब्राह्मणगहपतिका**ति ब्रह्मायुपोक्खरसातिआदिब्राह्मणा चेव अनाथपिण्डिकादिगहपतिका च।

"सुजाताया"तिआदिना वुत्तेसु चतूसु विकप्पेसु पठमो विकप्पो बुद्धभावाय आसन्नतरपटिपत्तिदस्सनवसेन वुत्तो। आसन्नतराय हि पटिपत्तिया ठितो "उप्पज्जतीति" वुच्चति उप्पादस्स एकन्तिकत्ता, पगेव पटिपत्तिया मत्थके ठितो। दुतियो बुद्धभावावहपब्बज्जतो पट्ठाय आसन्नपटिपत्तिदस्सनवसेन, ततियो बुद्धकरधम्म पारिपूरितो पट्ठाय बुद्धभावाय पटिपत्तिदस्सनवसेन। न हि महासत्तानं उप्पतिभवूपपत्तितो पट्ठाय बोधिसम्भारसम्भरणं नाम अत्थि। चतुत्थो बुद्धकरधम्मसमारम्भतो पट्ठाय। बोधिया नियतभावप्पत्तितो पभुति हि विञ्ञूहि "बुद्धो उप्पज्जती"ति वत्तुं सक्का उप्पादस्स एकन्तिकत्ता। यथा पन सन्दन्ति नदियोति सन्दनकिरियाय अविच्छेदमुपादाय वत्तमानप्पयोगो, एवं उप्पादत्थाय पटिपज्जनकिरियाय अविच्छेदमुपादाय चतूसु विकप्पेसु "उप्पज्जति नामा"ति वुत्तं। **सब्बपठमं उप्पन्नभावन्ति** चतूसु विकप्पेसु सब्बपठमं वुत्तं तथागतस्स उप्पन्नतासङ्खातं अत्थिभावं। तेनाह **"उप्पन्नो होतीति अयञ्हेत्थ अत्थो"**ति।

सो भगवाति यो "तथागतो अरह"न्तिआदिना कित्तितगुणो, सो भगवा। "इमं लोक"न्ति नयिदं महाजनस्स सम्मुखमत्तं सन्धाय वुत्तं, अथ खो अनवसेसं परियादायाति दस्सेतुं "सदेवक"न्तिआदि वुत्तं, तेनाह **"इदानि वत्तब्बं निदस्सेती"**ति। **पजातत्ता**ति यथासकं कम्मकिलेसेहि निब्बत्तत्ता। **पञ्चकामावचरदेवग्गहणं** पारिसेसञायेन इतरेसं पदन्तरेहि सङ्गहितत्ता। सदेवकन्ति च अवयवेन विग्गहो समुदायो समासत्थो। **छट्ठकामावचरदेवग्गहणं** पच्चासत्तिञायेन। तत्थ हि सो जातो, तंनिवासी च। **ब्रह्मकायिकादिब्रह्मग्गहण**न्ति एत्थापि एसेव नयो। **पच्चत्थिक...पे०... समणब्राह्मणग्गहण**न्ति निदस्सनमत्तमेतं अपच्चत्थिकानं, असमिताबाहितपापानञ्च समणब्राह्मणानं सस्समणब्राह्मणीवचनेन गहितत्ता। कामं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"सदेवक"न्तिआदि विसेसनानं वसेन सत्तविसयो लोकसद्दोति विञ्ञायति तुल्ययोगविसयत्ता तेसं, "सलोमको सपक्खको"तिआदीसु पन अतुल्ययोगेपि अयं समासो लब्भतीति ब्यभिचारदस्सनतो पजागहणन्ति आह **"पजावचनेन सत्तलोकग्गहण"**न्ति।

अरूपिनो सत्ता अत्तनो आनेञ्जविहारेन विहरन्ता दिब्बन्तीति देवाति इमं निब्बचनं लभन्तीति आह **"सदेवकग्गहणेन अरूपावचरलोको गहितो"**ति। तेनाह "आकासानञ्चायतनूपगानं देवानं सहब्यत"न्ति। (अ० नि० १.३.११७) **समारकग्गहणेन छकामावचरदेवलोको गहितो** तस्स सविसेसं मारस्स वसे वत्तनतो। **रूपी ब्रह्मलोको गहितो** अरूपीब्रह्मलोकस्स विसुं गहितत्ता। **चतुपरिसवसेना**ति खत्तियादिचतुपरिसवसेन, इतरा पन चतस्सो परिसा समारकादिग्गहणेन गहिता एवाति। **अवसेससब्बसत्तलोको** नागगरुळादिभेदो।

एत्तावता च भागसो लोकं गहेत्वा योजनं दस्सेत्वा इदानि तेन तेन विसेसेन अभागसो लोकं गहेत्वा योजनं दस्सेतुं **"अपि चेत्था"**तिआदि वुत्तं। तत्थ **उक्कट्ठपरिच्छेदतो**ति उक्कंसगतिविजाननेन। पञ्चसु हि गतीसु देवगतिपरियापन्नाव सेट्ठा, तत्थापि अरूपिनो दूरसमुस्सारितकिलेसदुक्खताय, सन्तपणीतआनेञ्जविहारसमङ्गिताय, अतिदीघायुकतायाति एवमादीहि विसेसेहि अतिविय उक्कट्ठा। **"ब्रह्मा महानुभावो"**तिआदि दससहस्सियं महाब्रह्मुनो वसेन वदति। "उक्कट्ठपरिच्छेदतो"ति हि वुत्तं। **अनुत्तर**न्ति सेट्ठं नव लोकुत्तरं। **भावानुक्कमो**ति भाववसेन परेसं अज्झासयवसेन "सदेवक"न्तिआदीनं पदानं अनुक्कमो।

तीहाकारेहीति देवमारब्रह्मसहिततासङ्खातेहि तीहि पकारेहि। **तीसु पदेसू**ति "सदेवक"न्तिआदीसु तीसु पदेसु। **तेन तेनाकारेना**ति सदेवकत्तादिना तेन तेन पकारेन। तेधातुकमेव परियादिन्नन्ति पोराणा पनाहूति योजना।

अभिञ्ञाति य-कारलोपेनायं निद्देसो, अभिजानित्वाति अयमेत्थ अत्थोति आह **"अभिञ्ञाय अधिकेन ञाणेन ञत्वा"**ति। **अनुमानादिपटिक्खेपो**ति अनुमानउपमानअत्थापत्तिआदिपटिक्खेपो एकप्पमाणत्ता। सब्बत्थ अप्पटिहतञाणचारताय हि सब्बपच्चक्खा बुद्धा भगवन्तो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुत्तरं विवेकसुखन्ति फलसमापत्तिसुखं, तेन ठितिमिस्सापि [वीथिमिस्सापि (सारत्थ० टी० १.वेरञ्जकण्डवण्णनायं) थितिमिस्सापि (क)] कदाचि भगवतो धम्मदेसना होतीति **हित्वापीति पि-**सद्दग्गहणं। भगवा हि धम्मं देसेन्तो यस्मिं खणे परिसा साधुकारं वा देति, यथासुतं वा धम्मं पच्चवेक्खति, तं खणं पुब्बभागेन परिच्छिन्दित्वा फलसमापत्तिं समापज्जति, यथापरिच्छेदञ्च समापत्तितो वुट्ठाय ठितट्ठानतो पट्ठाय धम्मं देसेति। उग्घटितञ्ञुस्स वसेन **अप्पं वा** विपञ्चितञ्ञुस्स, नेय्यस्स वा वसेन **बहुं वा देसेन्तो।** धम्मस्स कल्याणता निय्यानिकताय, निय्यानिकता च सब्बसो अनवज्जभावेनेवाति आह **"अनवज्जमेव कत्वा"**ति। देसकायत्तेन आणादिविधिना अभिसज्जनं पबोधनं देसनाति सा परियत्तिधम्मवसेन वेदितब्बाति आह **"देसनाय ताव चतुप्पदिकायपि गाथाया"**तिआदि। निदाननिगमनानिपि सत्थुनो देसनाय अनुविधानतो तदन्तोगधानि एवाति आह **"निदानमादि, इदं एवोचाति परियोसान"**न्ति।

सासितब्बपुग्गलगतेन यथापराधादिसासितब्बभावेन अनुसासनं तदङ्गविनयादिवसेन विनयनं सासनन्ति तं पटिपत्तिधम्मवसेन वेदितब्बन्ति आह **"सीलसमाधिविपस्सना"**तिआदि। **कुसलानं धम्मानन्ति** अनवज्जधम्मानं सीलस्स, समथविपस्सनानञ्च सीलदिट्ठीनं आदिभावो तं मूलकत्ता उत्तरिमनुस्सधम्मानं। अरियमग्गस्स अन्तद्वयविगमेन मज्झिमपटिपदाभावो विय, सम्मापटिपत्तिया आरब्भनिप्फत्तीनं वेमज्झत्तापि मज्झभावोति वुत्तं। **"अत्थि भिक्खवे...पे०... मज्झं नामा"**ति। **फलं परियोसानं नाम** सउपादिसेसतावसेन, **निब्बानं परियोसानं नाम** अनुपादिसेसतावसेन। इदानि तेसं द्विन्नम्पि सासनस्स परियोसानतं आगमेन दस्सेतुं **"एतदत्थमिद"**न्तिआदि आह। **इध देसनाय आदिमज्झपरियोसानं अधिप्पेतं** "सब्यञ्जन"न्तिआदि वचनतो। तस्मिं तस्मिं अत्थे कतावधिसद्दप्पबन्धो गाथावसेन, सुत्तवसेन च ववत्थितो परियत्तिधम्मो, यो इध "देसना"ति वुत्तो, तस्स पन अत्थो विसेसतो सीलादि एवाति आह **"भगवा हि धम्मं देसेन्तो...पे०... दस्सेती"**ति। तत्थ **सीलं दस्सेत्वाति सील**ग्गहणेन ससम्भारं सीलं गहितं, तथा **मग्ग**ग्गहणेन ससम्भारो मग्गोति तदुभयवसेन अनवसेसतो परियत्ति अत्थं परियादियति। **तेनाति** सीलादिदस्सनेन। अत्थवसेन हि इध देसनाय आदिकल्याणादिभावो अधिप्पेतो। **कथिकसण्ठितीति** कथिकस्स सण्ठानं कथनवसेन समवट्ठानं।

न सो सात्थं देसेति निय्यानत्थविरहतो तस्सा देसनाय। **एकब्यञ्जनादियुत्ता वाति** सिथिलादिभेदेसु ब्यञ्जनेसु एकप्पकारेमेव, द्विपकारेमेव वा ब्यञ्जनेन युत्ता वा दमिळभासा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विय। विवटकरणताय ओट्ठे अफुसापेत्वा उच्चारेतब्बतो **सब्बनिरोट्ठब्यञ्जना वा** किरातभासा विय। सब्बस्सेव [सब्बत्थेव (सारत्थ० टी० १.वेरञ्जकण्डवण्णनायं १)] विस्सज्जनीययुत्तताय **सब्बविस्सट्ठब्यञ्जना वा** सवरभासा [यवनभासा (सारत्थ० टी० १.वेरञ्जकण्डवण्णनायं)] विय। सब्बस्सेव [सब्बत्थेव (सारत्थ० टी० १.वेरञ्जकण्डवण्णनायं)] सानुसारताय **सब्बनिग्गहितब्यञ्जना वा** पारसिकादिमिलक्खुभासा विय। सब्बापेसा ब्यञ्जनेकदेसवसेन पवत्तिया अपरिपुण्णब्यञ्जनाति कत्वा "**अब्यञ्जना**"ति वुत्ता।

ठानकरणानि सिथिलानि कत्वा उच्चारेतब्बं अक्खरं पञ्चसु वग्गेसु पठमततियन्ति एवमादि **सिथिलं**। तानि असिथिलानि कत्वा उच्चारेतब्बं अक्खरं वग्गेसु दुतियचतुत्थन्ति एवमादि **धनितं**। द्विमत्तकालं **दीघं**। एकमत्तकालं **रस्सं** तदेव **लहुकं**। लहुकमेव संयोगपरं, दीघञ्च **गरुकं**। ठानकरणानि निग्गहेत्वा उच्चारेतब्बं **निग्गहितं**। परेन सम्बन्धं कत्वा उच्चारेतब्बं **सम्बन्धं**। तथा नसम्बन्धं **ववत्थितं**। ठानकरणानि निस्सट्ठानि कत्वा उच्चारेतब्बं **विमुत्तं**। **दसधाति** एवं सिथिलादिवसेन ब्यञ्जनबुद्धिया अक्खरुप्पादकचित्तस्स सब्बाकारेन **पभेदो**। सब्बानि हि अक्खरानि चित्तसमुट्ठानानि यथाधिप्पेतत्थं ब्यञ्जनतो ब्यञ्जनानि चाति।

अमक्खेत्वाति अमिलेच्छेत्वा, अविनासेत्वा, अहापेत्वाति वा अत्थो। भगवा यमत्थं ञापेतुं एकं गाथं, एकं वाक्यं वा देसेति, तमत्थं ताय देसनाय परिमण्डलपदब्यञ्जनाय एव देसेतीति आह "**परिपुण्णब्यञ्जनमेव कत्वा धम्मं देसेती**"ति। इध **केवलसद्दो** अनवसेसवाचको, न अवोमिस्सकादिवाचकोति आह "**सकलाधिवचन**"न्ति। **परिपुण्णन्ति** सब्बसो पुण्णं, तं पन केनचि ऊनं, अधिकं वा न होतीति "**अनूनाधिकवचन**"न्ति वुत्तं। तत्थ यदत्थं देसितो, तस्स साधकत्ता अनूनता वेदितब्बा, तब्बिधुरस्स पन असाधकत्ता अनधिकता। सकलन्ति सब्बभागवन्तं। परिपुण्णन्ति सब्बसो परिपुण्णमेव, तेनाह "**एकदेसनापि अपरिपुण्णा नत्थी**"ति। **अपरिसुद्धा देसना होति** तण्हाय संकिलिट्ठत्ता। लोकामिसं चीवरादयो पच्चया तत्थ अगधितचित्तताय **लोकामिसनिरपेक्खो। हितफरणेना**ति हितूपसंहारेन। **मेत्ताभावनाय** करणभूताय **मुदुहदयो। उल्लुम्पनसभावसण्ठितेना**ति सकलसंकिलेसतो, वट्टदुक्खतो च उद्धरणाकारावट्ठितेन चित्तेन, कारुणाधिप्पायेनाति अत्थो।

"इतो पट्ठाय दस्सामेव, एवञ्च दस्सामी"ति समादातब्बट्ठेन **वतं**।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्डितपञ्ञत्तताय सेट्ठट्ठेन ब्रह्मं ब्रह्मानं वा चरियन्ति **ब्रह्मचरियं** दानं। मच्छरियलोभादिनिग्गण्हनेन **सुचिण्णस्स। इद्धीति** देविद्धि। **जुतीति** पभा, आनुभावो वा। **बलवीरियूपपत्तीति** एवं महता बलेन च वीरियेन च समन्नागमो। **पुञ्ञन्ति** पुञ्ञफलं। **वेय्यावच्चं ब्रह्मचरियं** सेट्ठा चरियाति कत्वा। एस नयो सेसेपि।

तस्माति यस्मा सिक्खत्तयसङ्गहं सकलं सासनं इध "ब्रह्मचरिय"न्ति अधिप्पेतं तस्मा। "ब्रह्मचरिय"न्ति इमिना समानाधिकरणानि सब्बपदानि योजेत्वा अत्थं दस्सेन्तो **"सो धम्मं देसेति...पे०... पकासेतीति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो"**ति आह।

१९१. वुत्तप्पकारसम्पदन्ति यथावुत्तं आदिकल्याणतादिगुणसम्पदं, दूरसमुस्सारितमानस्सेव सासने सम्मापटिपत्ति सम्भवति, न मानजातिकस्साति आह **"निहतमानत्ता"**ति। **उस्सन्नत्ताति** बहुलभावतो। भोगारोग्यादिवत्थुका मदा सुप्पहेय्या होन्ति निमित्तस्स अनवत्थानतो, न तथा कुलविज्जामदा, तस्मा खत्तियब्राह्मणकुलानं पब्बजितानम्पि जातिविज्जा निस्साय मानजप्पनं दुप्पजहन्ति आह **"येभुय्येन हि...पे०... मानं करोन्ती"**ति। **विजातितायाति** निहीनजातिताय। **पतिट्ठातुं न सक्कोन्तीति** सुविसुद्धं कत्वा सीलं रक्खितुं न सक्कोन्ति। सीलवसेन हि सासने पतिट्ठा, **पतिट्ठातुन्ति** वा सच्चपटिवेधेन लोकुत्तराय पतिट्ठाय पतिट्ठातुं। सा हि निप्परियायतो सासने पतिट्ठा नाम, येभुय्येन च उपनिस्सयसम्पन्ना सुजाता एव होन्ति, न दुज्जाता।

परिसुद्धन्ति रागादीनं अच्चन्तमेव पहानदीपनतो निरुपक्किलेसताय सब्बसो परिसुद्धं। **सद्धं पटिलभतीति** पोथुज्जनिकसद्धावसेन सद्दहति। विञ्ञूजातिकानञ्हि धम्मसम्पत्तिग्गहणपुब्बिका सद्धा सिद्धि धम्मप्पमाणधम्मप्पसन्नभावतो। "सम्मासम्बुद्धो वत सो भगवा, यो एवं स्वाक्खातधम्मो"ति सद्धं पटिलभति। **जायम्पतिकाति** घरणीपतिका। कामं "जायम्पतिका"ति वुत्ते घरसामिकघरसामिनीवसेन द्विन्नंयेव गहणं विञ्ञायति। यस्स पन पुरिसस्स अनेका पजापतियो, तत्थ किं वत्तब्बं, एकायापि संवासो सम्बाधोति दस्सनत्थं **"द्वे"**ति वुत्तं। रागादिना सकिञ्चनट्ठेन, खेत्तवत्थु आदिना सपलिबोधट्ठेन रागरजादीनं आगमनपथतापि उट्ठानट्ठानता एवाति द्वेपि वण्णना एकत्था, ब्यञ्जनमेव नानं। **अलग्गनट्ठेनाति** अस्सज्जनट्ठेन अप्पटिबद्धभावेन। एवं अकुसलकुसलप्पवत्तीनं ठानभावेन घरावासपब्बज्जानं सम्बाधब्भोकासतं दस्सेत्वा इदानि कुसलप्पवत्तिया एव अट्ठानट्ठानभावेन तेसं तं दस्सेतुं **"अपिचा"**तिआदि वुत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सङ्खेपकथाति विसुं विसुं पदुद्धारं अकत्वा समासतो अत्थवण्णना। **एकम्पि दिवस**न्ति एकदिवसमत्तम्पि। **अखण्डं कत्वा**ति दुक्कटमत्तस्सपि अनापज्जनेन अखण्डितं कत्वा। **किलेसमलेन अमलीन**न्ति तण्हासंकिलेसादिना असंकिलिट्ठं कत्वा। परियोदातट्ठेन निम्मलभावेन सङ्खं विय लिखितं धोतन्ति **सङ्खलिखित**न्ति आह "**धोतसङ्खसप्पटिभाग**"न्ति। "अज्झावसता"ति पदप्पयोगेन "अगार"न्ति भुम्मत्थे उपयोगवचनन्ति आह "**अगारमज्झे**"ति। कसायेन रत्तानि वत्थानि **कासायानी**ति आह "**कसायरसपीतताया**"ति। **परिदहित्वा**ति निवासेत्वा चेव पारुपित्वा च। अगारवासो अगारं उत्तरपदलोपेन, तस्स वड्ढिआवहं **अगारस्स हितं**।

१९२. **भोगक्खन्धो**ति भोगसमुदायो। **आबन्धनट्ठेना**ति "पुत्तो नत्ता"तिआदिना पेमवसेन सपरिच्छेदं बन्धनट्ठेन। "अम्हाकमेते"ति ञायन्तीति **ञाती**। पितामहपितुपुत्तादिवसेन परिवत्तनट्ठेन **परिवट्टो**।

१९३. **पातिमोक्खसंवरसंवुतो**ति पातिमोक्खसंवरेन पिहितकायवचीद्वारो, तथाभूतो च यस्मा तेन संवरेन उपेतो नाम होति, तस्मा वुत्तं "**पातिमोक्खसंवरेन समन्नागतो**"ति। "**आचारगोचरसम्पन्नो**"तिआदि तस्सेव पातिमोक्खसंवरसमन्नागमस्स पच्चयदस्सनं। **अप्पमत्तकेसू**ति असञ्चिच्च आपन्नअनुखुद्दकेसु चेव सहसा उप्पन्नअकुसलचित्तुप्पादेसु च। **भयदस्सावी**ति भयदस्सनसीलो। **सम्मा आदियित्वा**ति सक्कच्चं यावजीवं अवीतिक्कमवसेन आदियित्वा। **तं तं सिक्खापद**न्ति तं तं सिक्खाकोट्ठासं। **एत्था**ति एतस्मिं "पातिमोक्खसंवरसंवुतो"ति पाठे। **सङ्खेपो**ति सङ्खेपवण्णना। **वित्थारो विसुद्धिमग्गे** (विसुद्धि० १.१४) **वुत्तो,** तस्मा सो तत्थ, तंसंवण्णनाय (विसुद्धि० टी० १.१४) च वुत्तनयेन वेदितब्बो।

आचारगोचरग्गहणेनेवाति "आचारगोचरसम्पन्नो"ति वचनेनेव। तेनाह "**कुसले कायकम्मवचीकम्मे गहितेपी**"ति। अधिकवचनं अञ्ञमत्थं बोधेतीति कत्वा **तस्स** आजीवपारिसुद्धिसीलस्स **उप्पत्तिद्वारदस्सनत्थं...पे०... कुसलेनाति वुत्तं,** सब्बसो अनेसनप्पहानेन अनवज्जेनाति अत्थो। यस्मा "कतमे च थपति कुसला सीला कुसलं कायकम्मं कुसलं वचीकम्म"न्ति (म० नि० २.२६५) सीलस्स कुसलकायवचीभावं दस्सेत्वा "आजीवपरिसुद्धम्पि खो अहं थपति सीलस्मिं वदामी"ति (म० नि० २.२६५) एवं पवत्ताय मुण्डिकसुत्तदेसनाय "कायकम्मवचीकम्मेन समन्नागतो कुसलेन,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसुद्धाजीवो''ति अयं देसना एकसङ्गहा अञ्ञदत्थु संसन्दति समेतीति दस्सेन्तो आह **''मुण्डिकसुत्तवसेन वा एवं वुत्त''**न्ति। **सीलस्मिं वदामीति** ''सील''न्ति वदामि, ''सीलस्मिं अन्तोगधं परियापन्न''न्ति वदामीति वा अत्थो। **परियादानत्थ**न्ति परिग्गहत्थं।

तिविधेन सीलेनाति चूळसीलं मज्झिमसीलं महासीलन्ति एवं तिविधेन सीलेन। **मनच्छट्ठेसु इन्द्रियेसु,** न कायपञ्चमेसु। यथालाभयथाबलयथासारुप्पप्पकारवसेन **तिविधेन सन्तोसेन।**

चूळमज्झिममहासीलवण्णना

१९४-२११. ''सीलस्मि''न्ति इदं निद्धारणे भुम्मन्ति आह **''एकं सीलं होतीति अत्थो''**ति। **अयमेव अत्थो**ति पच्चत्तवचनत्थो एव। **ब्रह्मजाले**ति ब्रह्मजालवण्णनायं (दी० नि० अट्ठ० १.७)।

२१२. अत्तानुवादपरानुवाददण्डभयादीनि **असंवरमूलकानि। सीलस्सासंवरतो**ति सीलस्स असंवरणतो, सीलसंवराभावतोति अत्थो। **भवेय्या**ति उप्पज्जेय्य। **यथाविधानविहितेना**ति यथाविधानसम्पादितेन। अविप्पटिसारादिनिमित्तं उप्पन्नचेतसिकसुखसमुट्ठानेहि पणीतरूपेहि फुट्ठसरीरस्स उळारं कायिकं सुखं भवतीति आह **''अविप्पटिसार...पे०... पटिसंवेदेती''**ति।

इन्द्रियसंवरकथावण्णना

२१३. विसेसो कम्मत्थापेक्खताय सामञ्ञस्स न तेहि परिचत्तोति आह **''चक्खु-सद्दो कत्थचि बुद्धचक्खुम्हि वत्तती''**ति। विज्जमानमेव हि अभिधेय्ये विसेसत्थं विसेसन्तरनिवत्तनवसेन विसेससद्दो विभावेति, न अविज्जमानं। सेसपदेसुपि एसेव नयो। अञ्ञेहि असाधारणं बुद्धानंयेव चक्खुदस्सनन्ति **बुद्धचक्खु,** आसयानुसयञाणं, इन्द्रियपरोपरियत्तञाणञ्च। समन्ततो सब्बसो दस्सनट्ठेन **समन्तचक्खु,** सब्बञ्ञुतञ्ञाणं। **अरियमग्गत्तयपञ्ञा**ति हेट्ठिमे अरियमग्गत्तये पञ्ञा। **इधा**ति ''चक्खुना रूप''न्ति इमस्मिं पाठे। **अयं** चक्खु-सद्दो **पसाद...पे०... वत्तति** निस्सयवोहारे निस्सितस्स वत्तब्बतो यथा। ''मञ्चा उक्कुट्ठिं करोन्ती''ति। **असम्मिस्स**न्ति किलेसदुक्खेन अवोमिस्सं। तेनाह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"**परिसुद्ध**"न्ति। सति हि सुविसुद्धे इन्द्रियसंवरे, पधानभूतपापधम्मविगमेन अधिचित्तानुयोगो हत्थगतो एवं होतीति आह "**अधिचित्तसुखं पटिसंवेदेती**"ति।

सतिसम्पजञ्ञकथावण्णना

२१४. समन्ततो, पकट्ठं वा सविसेसं जानातीति सम्पजानो, सम्पजानस्स भावो सम्पजञ्ञं, तथापवत्तञाणं। तस्स विभजनं सम्पजञ्ञभाजनीयं, तस्मिं **सम्पजञ्ञभाजनीयम्हि।** अभिक्कमनं **अभिक्कन्त**न्ति आह "**अभिक्कन्तं वुच्चति गमन**"न्ति। तथा पटिक्कमनं **पटिक्कन्त**न्ति आह "**पटिक्कन्तं निवत्तन**"न्ति। **निवत्तन**न्ति च निवत्तिमत्तं। निवत्तित्वा पन गमनं गमनमेव। **अभिहरन्तो**ति गमनवसेन कायं उपनेन्तो। ठाननिसज्जासयनेसु यो गमनविधुरो कायस्स पुरतो अभिहारो, सो **अभिक्कमो,** पच्छतो अपहरणं **पटिक्कमो**ति दस्सेन्तो "**ठानेपी**"तिआदिमाह। **आसनस्सा**ति पीठकादिआसनस्स। **पुरिमअङ्गाभिमुखो**ति अटनिकादिपुरिमावयवाभिमुखो। **संसरन्तो**ति संसप्पन्तो। **पच्चासंसरन्तो**ति पटिआसप्पन्तो। "**एसेव नयो**"ति इमिना निपन्नस्सेव अभिमुखसंसप्पनपटिआसप्पनानि निदस्सेति।

सम्मा पजाननं सम्पजानं, तेन अत्तना कातब्बकिच्चस्स करणसीलो **सम्पजानकारी**ति आह "**सम्पजञ्ञेन सब्बकिच्चकारी**"ति। सम्पजानसद्दस्स सम्पजञ्ञपरियायता पुब्बे वुत्ता एव। **सम्पजञ्ञं करोतेवा**ति अभिक्कन्तादीसु असम्मोहं उप्पादेति एव। सम्पजञ्ञस्स वा कारो एतस्स अत्थीति **सम्पजानकारी।** धम्मतो वड्ढिसङ्खातेन सह अत्थेन वत्ततीति सात्थकं, अभिक्कन्तादि। सात्थकस्स सम्पजाननं **सात्थकसम्पजञ्ञं।** सप्पायस्स अत्तनो हितस्स सम्पजाननं **सप्पायसम्पजञ्ञं**। अभिक्कमादीसु भिक्खाचारगोचरे, अञ्ञत्थापि च पवत्तेसु अविजहिते कम्मट्ठानसङ्खाते गोचरे सम्पजञ्ञं **गोचरसम्पजञ्ञं।** अभिक्कमादीसु असम्मुय्हनमेव सम्पजञ्ञं **असम्मोहसम्पजञ्ञं।** **परिग्गहेत्वा**ति तूलेत्वा तीरेत्वा पटिसङ्खायाति, अत्थो। सङ्घदस्सनेनेव उपोसथपवारणादिअत्थं गमनं सङ्गहितं। **असुभदस्सनादी**ति **आदि**-सद्देन कसिणपरिकम्मादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। सङ्खेपतो वुत्तमत्थं विवरितुं "**चेतियं वा बोधिं वा दिस्वापि ही**"तिआदि वुत्तं। **अरहत्तं पापुणाती**ति उक्कट्ठनिद्देसो एसो। समथविपस्सनुप्पादनम्पि हि भिक्खुनो वड्ढियेव। **केची**ति अभयगिरिवासिनो।

तस्मिं पनाति सात्थकसम्पजञ्ञवसेन परिग्गहितअत्थे। "अत्थोति धम्मतो वड्ढी"ति यं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सात्थकन्ति अधिप्पेतं, तं सप्पायं एवाति सिया कस्सचि आसङ्काति तन्निवत्तनत्थं **"चेतियदस्सनं तावा"**तिआदि आरद्धं। **चित्तकम्मरूपकानि विया**ति चित्तकम्मकता पटिमायो विय, यन्तपयोगेन वा विचित्तकम्मा पटिमायो विय। **असमपेक्खनं** गेहस्सित अञ्ञाणुपेक्खावसेन आरम्मणस्स अयोनिसो गहणं। यं सन्धाय वुत्तं। "चक्खुना रूपं दिस्वा उप्पज्जति उपेक्खा बालस्स मूळ्हस्स पुथुज्जनस्सा"तिआदि। (म० नि० ३.३०८) हत्थिआदिसम्मद्देन **जीवितन्तरायो।** विसभागरूपदस्सनादिना **ब्रह्मचरियन्तरायो।**

पब्बजितदिवसतो पट्ठाय भिक्खूनं अनुवत्तनकथा आचिण्णा, अननुवत्तनकथा पन तस्सा दुतिया नाम होतीति आह **"द्वे कथा नाम न कथितपुब्बा"**ति। **एवन्ति** "सचे पना"तिआदिकं सब्बम्पि वुत्ताकारं पच्चामसति, न "पुरिसस्स मातुगामासुभ"न्तिआदिकं वुच्चमानं।

योगकम्मस्स पवत्तिट्ठानताय भावनाय आरम्मणं "कम्मट्ठान"न्ति वुच्चतीति आह **"कम्मट्ठानसङ्खातं गोचर"**न्ति। **उग्गहेत्वा**ति यथा उग्गहनिमित्तं उप्पज्जति, एवं उग्गहकोसल्लस्स सम्पादनवसेन उग्गहेत्वा।

हरतीति कम्मट्ठानं पवत्तेति, याव पिण्डपातपटिक्कमा अनुयुञ्जतीति अत्थो। **न पच्चाहरती**ति आहारूपयोगतो याव दिवाठानुपसङ्कमना कम्मट्ठानं न पटिनेति। **सरीरपरिकम्म**न्ति मुखधोवनादिसरीरपटिजग्गनं। **द्वे तयो पल्लङ्के**ति द्वे तयो निसज्जावारे द्वे तीणि उण्हासनानि। तेनाह **"उसुमं गाहापेन्तो"**ति। **कम्मट्ठानसीसेनेवा**ति कम्मट्ठानमुखेनेव कम्मट्ठानं अविजहन्तो एव, तेन "पत्तोपि अचेतनो"तिआदिना (दी० नि० अट्ठ० १.२१४) वक्खमानं कम्मट्ठानं, यथापरिहरियमानं वा अविजहित्वाति दस्सेति। **तथेवा**ति तिक्खत्तुमेव। परिभोगचेतियतो सारीरिकचेतियं गरुतरन्ति कत्वा **"चेतियं वन्दित्वा"**ति पुब्बकालकिरियाय वसेन वुत्तं। तथा हि अट्ठकथायं "चेतियं बाधयमाना बोधिसाखा हरितब्बा"ति वुत्ता। बुद्धगुणानुस्सरणवसेनेव बोधियं पणिपातकरणन्ति आह **"बुद्धस्स भगवतो सम्मुखा विय निपच्चकारं दस्सेत्वा"**ति। **गामसमीपे**ति गामस्स उपचारट्ठाने। **जनसङ्गहत्थ**न्ति "मयि अकथेन्ते एतेसं को कथेस्सती"ति धम्मानुग्गहेन जनसङ्गहत्थं। **तस्मा**ति यस्मा "धम्मकथा नाम कथेतब्बा एवा"ति अट्ठकथाचरिया वदन्ति, यस्मा च धम्मकथा कम्मट्ठानविनिमुत्ता नाम नत्थि, तस्मा। **कम्मट्ठानसीसेनेवा**ति अत्तना परिहरियमानं कम्मट्ठानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अविजहन्तो तदनुगुणंयेव धम्मकथं कथेत्वा। **अनुमोदनं वत्वा**ति एत्थापि "कम्मट्ठानसीसेनेवा"ति आनेत्वा सम्बन्धितब्बं।

सम्पत्तपरिच्छेदेनेवाति "परिचितो अपरिचितो"तिआदि विभागं अकत्वा सम्पत्तकोटिया एव, समागममत्तेनेवाति अत्थो। **भये**ति परचक्कादिभये।

"कम्मजतेजो"ति गहणिं सन्धायाह। **कम्मट्ठानं वीथिं नारोहति** खुदापरिस्समेन किलन्तकायत्ता समाधानाभावतो। **अवसेसट्ठाने**ति यागुया अग्गहितट्ठाने। **पोङ्खानुपोङ्ख**न्ति कम्मट्ठानुपट्ठानस्स अविच्छेददस्सनमेतं, यथा पोङ्खानुपोङ्खं पवत्ताय सरपटिपातिया अनविच्छेदो, एवमेतस्सपीति।

निक्खित्तधुरो भावनानुयोगे। वत्तपटिपत्तिया अपूरणेन **सब्बवत्तानि भिन्दित्वा।** "कामेसु अवीतरागो होति, काये अवीतरागो, रूपे अवीतरागो, यावदत्थं उदरावदेहकं भुञ्जित्वा सेय्यसुखं पस्ससुखं मिद्धसुखं अनुयुत्तो विहरति, अञ्ञतरं देवनिकायं पणिधाय ब्रह्मचरियं चरती"ति (दी० नि० ३.३२०; म० नि० १.१८६) एवं वुत्त**पञ्चविधचेतोखिलविनिबन्धचित्तो। चरित्वा**ति पवत्तित्वा।

गतपच्चागतिकवत्तवसेनाति भावनासहितंयेव भिक्खाय गतपच्चागतं गमनपच्चागमनं एतस्स अत्थीति गतपच्चागतिकं, तदेव वत्तं, तस्स वसेन। **अत्तकामा**ति अत्तनो हितसुखं इच्छन्ता, धम्मच्छन्दवन्तोति अत्थो। धम्मो हि हितं तन्निमित्तकञ्च सुखन्ति। अथ वा विञ्ञूनं निब्बिसेसत्ता, अत्तभावपरियापन्नत्ता च अत्ता नाम धम्मो, तं कामेन्ति इच्छन्तीति **अत्तकामा।**

उसभं नाम वीसति यट्ठियो। **ताय सञ्ञाया**ति ताय पासाणसञ्ञाय, एत्तकं ठानं आगताति जानन्ताति अधिप्पायो। **सोयेव नयो**ति "अयं भिक्खू"तिआदिको यो ठाने वुत्तो, सो एव निसज्जायपि नयो। पच्छतो आगच्छन्तानं छिन्नभत्तभावभयेनपि योनिसोमनसिकारं परिब्रूहेति। **मद्दन्ता**ति धञ्ञकरणट्ठाने सालिसीसानि मद्दन्ता।

महापधानं पूजेस्सामीति अम्हाकं अत्थाय लोकनाथेन छब्बस्सानि कतं दुक्करचरियमेवाहं यथासत्ति पूजेस्सामीति। पटिपत्तिपूजा हि सत्थुपूजा, न आमिसपूजाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"ठानचङ्कममेवा"ति अधिट्ठातब्बइरियापथवसेन वुत्तं, न भोजनादिकालेसु अवस्सं कत्तब्बनिसज्जाय पटिक्खेपवसेन।

वीथिं ओतरित्वा इतो चितो च अनोलोकेत्वा पठममेव वीथियो सल्लक्खेतब्बाति आह **"वीथियो सल्लक्खेत्वा"**ति। यं सन्धाय वुच्चति "पासादिकेन अभिक्कन्तेना"ति, तं दस्सेतुं "तत्थ चा"तिआदि वुत्तं। **"आहारे पटिक्कूलसञ्ञं उपट्ठपेत्वा"**तिआदीसु यं वत्तब्बं, तं परतो आगमिस्सति। **अट्ठङ्गसमन्नागत**न्ति "यावदेव इमस्स कायस्स ठितिया"तिआदिना (म० नि० १.२३; अ० नि० २.६.५८; महानि० २०६) वुत्तेहि अट्ठहि अङ्गेहि समन्नागतं कत्वा। **"नेव दवाया"**तिआदि पटिक्खेपदस्सनं।

पच्चेकबोधिं सच्छिकरोति, यदि उपनिस्सयसम्पन्नो होतीति सम्बन्धो। एवं सब्बत्थ इतो परेसुपि। तत्थ पच्चेकबोधिया उपनिस्सयसम्पदा कप्पानं द्वे असङ्ख्येय्यानि, सतसहस्सञ्च तज्जापुञ्ञञाणसम्भरणं। सावकबोधिया अग्गसावकानं असङ्ख्येय्यं, कप्पसतसहस्सञ्च, महासावकानं (थेरगा० अट्ठ० २.१२८८) सतसहस्समेव तज्जापुञ्ञञाणसम्भरणं। इतरेसं अतीतासु जातीसु विवट्टसन्निस्सयवसेन निब्बत्तितं निब्बेधभागियं कुसलं। **बाहियो दारुचीरियो**ति बाहियविसये सञ्जातसंवड्ढताय बाहियो, दारुचीरपरिहरणेन दारुचीरियोति च समञ्ञातो। सो हि आयस्मा "तस्मातिह ते, बाहिय, एवं सिक्खितब्बं 'दिट्ठे दिट्ठमत्तं भविस्सति, सुते, मुते, विञ्ञाते विञ्ञातमत्तं भविस्सती'ति, एवञ्हि ते बाहिय सिक्खितब्बं। यतो खो ते बाहिय दिट्ठे दिट्ठमत्तं भविस्सति, सुते, मुते, विञ्ञाते विञ्ञातमत्तं भविस्सति, ततो त्वं, बाहिय, न तेन। यतो त्वं, बाहिय, न तेन, ततो त्वं, बाहिय, न तत्थ। यतो त्वं, बाहिय, न तत्थ, ततो त्वं, बाहिय, नेविध न हुरं न उभयमन्तरेन। एसेवन्तो दुक्खस्सा"ति (उदा० १०) एत्तकाय देसनाय अरहत्तं सच्छाकासि। एवं सारिपुत्तत्थेरादीनं महापञ्ञतादिदीपनानि सुत्तपदानि वित्थारतो वेदितब्बानि।

तन्ति असम्मुय्हनं **एव**न्ति इदानि वुच्चमानमाकारेनेव वेदितब्बं। **"अत्ता अभिक्कमती"**ति इमिना अन्धपुथुज्जनस्स दिट्ठिगाहवसेन अभिक्कमे सम्मुय्हनं दस्सेति, **"अहं अभिक्कमामी"**ति पन इमिना मानगाहवसेन। तदुभयं पन तण्हाय विना न होतीति तण्हगाहवसेनपि सम्मुय्हनं दस्सितमेव होति। "तथा असम्मुय्हन्तो"ति वत्वा तं असम्मुय्हनं येन घनविनिब्भोगेन होति, तं दस्सेन्तो **"अभिक्कमामी"**तिआदिमाह। तत्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यस्मा वायोधातुया अनुगता तेजोधातु उद्धरणस्स पच्चयो। उद्धरणगतिका हि तेजोधातूति। उद्धरणे वायोधातुया तस्सा अनुगतभावो, तस्मा इमासं द्विन्नमेत्थ सामत्थियतो अधिमत्तता, इतरासञ्च ओमत्तताति दस्सेन्तो **"एकेकपादुद्धरणे...पे०... बलवतियो**ति आह। यस्मा पन तेजोधातुया अनुगता वायोधातु अतिहरणवीतिहरणानं पच्चयो। तिरियगतिकाय हि वायोधातुया अतिहरणवीतिहरणेसु सातिसयो ब्यापारोति। तेजोधातुया तस्सा अनुगतभावो, तस्मा इमासं द्विन्नमेत्थ सामत्थियतो अधिमत्तता, इतरासञ्च ओमत्तताति दस्सेन्तो **"तथा अतिहरणवीतिहरणेसू"**ति आह। सतिपि अनुगमकअनुगन्तब्बताविसेसे तेजोधातुवायोधातुभावमत्तं सन्धाय **तथा**-सद्दग्गहणं,। तत्थ अक्कन्तट्ठानतो पादस्स उक्खिपनं **उद्धरणं**। ठितट्ठानं अतिक्कमित्वा पुरतो हरणं **अतिहरणं,** खाणुआदिपरिहरणत्थं, पतिट्ठितपादघट्टनपरिहरणत्थं वा पस्सेन हरणं **वीतिहरणं।** याव पतिट्ठितपादो, ताव आहरणं **अतिहरणं,** ततो परं हरणं **वीतिहरण**न्ति अयं वा एतेसं विसेसो।

यस्मा पथवीधातुया अनुगता आपोधातु वोस्सज्जनस्स पच्चयो। गरुतरसभावा हि आपोधातूति। वोस्सज्जने पथवीधातुया तस्सा अनुगतभावो, तस्मा तासं द्विन्नमेत्थ सामत्थियतो अधिमत्तता, इतरासञ्च ओमत्तताति दस्सेन्तो आह **"वोस्सज्जने...पे०... बलवतियो"**ति। यस्मा पन आपोधातुया अनुगता पथवीधातु सन्निक्खेपनस्स पच्चयो, पतिट्ठाभावे विय पतिट्ठापनेपि तस्सा सातिसयकिच्चत्ता आपोधातुया तस्सा अनुगतभावो, तथा घट्टनकिरियाय पथवीधातुया वसेन सन्निरुज्झनस्स सिज्झनतो तत्थापि पथवीधातुया आपोधातुअनुगतभावो, तस्मा वुत्तं **"तथा सन्निक्खेपनसन्निरुज्झनेसू"**ति।

तत्थाति तस्मिं अभिक्कमने, तेसु वा वुत्तेसु उद्धरणादीसु कोट्ठासेसु। **उद्धरणे**ति उद्धरणक्खणे। **रूपारूपधम्मा**ति उद्धरणाकारेन पवत्ता रूपधम्मा, तंसमुट्ठापका अरूपधम्मा च। **अतिहरणं न पापुणन्ति** खणमत्तावट्ठानतो। **तत्थ तत्थेवा**ति यत्थ यत्थ उप्पन्ना, तत्थ तत्थेव। न हि धम्मानं देसन्तरसङ्कमनं अत्थि। **"पब्बं पब्ब"**तिआदि उद्धरणादिकोट्ठासे सन्धाय सभागसन्ततिवसेन वुत्तन्ति वेदितब्बं। अतिइत्तरो हि रूपधम्मानम्पि पवत्तिक्खणो, गमनस्सादीनं, देवपुत्तानं हेट्ठुपरियेन पटिमुखं धावन्तानं सिरसि पादे च बन्धखुरधारा समागमतोपि सीघतरो। यथा तिलानं भज्जियमानानं पटपटायनेन भेदो लक्खीयति, एवं सङ्खतधम्मानं उप्पादेनाति दस्सनत्थं **"पटपटायन्ता"**ति वुत्तं। उप्पन्ना हि एकन्ततो भिज्जन्तीति। **"सद्धिं रूपेना"**ति इदं तस्स तस्स चित्तस्स निरोधेन सद्धिं निरुज्झनकरूपधम्मानं वसेन वुत्तं, यं ततो सत्तरसमचित्तस्स उप्पादक्खणे उप्पन्नं। अञ्ञथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यदि रूपारूपधम्मा समानक्खणा सियुं, "रूपं गरुपरिणामं दन्धनिरोध"न्तिआदिवचनेहि विरोधो सिया, तथा "नाहं भिक्खवे अञ्ञं एकधम्मम्पि समनुपस्सामि, यं एवं लहुपरिवत्तं, यथयिदं चित्त"न्ति (अ० नि० १.१.४८) एवं आदिपाळिया। चित्तचेतसिका हि सारम्मणसभावा यथाबलं अत्तनो आरम्मणपच्चयभूतमत्थं विभावेन्तो एव उप्पज्जन्तीति तेसं तंसभावनिप्फत्तिअनन्तरं निरोधो। रूपधम्मा पन अनारम्मणा पकासेतब्बा, एवं तेसं पकासेतब्बभावनिप्फत्ति सोळसहि चित्तेहि होतीति तङ्खणायुकता तेसं इच्छिता, लहुविञ्ञाणविसयसङ्गतिमत्तप्पच्चयताय तिण्णं खन्धानं, विसयसङ्गतिमत्तताय च विञ्ञाणस्स लहुपरिवत्तिता, दन्धमहाभूतप्पच्चयताय रूपधम्मानं दन्धपरिवत्तिता। नानाधातुया यथाभूतञाणं खो पन तथागतस्सेव, तेन च पुरेजातपच्चयो रूपधम्मोव वुत्तो, पच्छाजातपच्चयो च तथेवाति रूपारूपधम्मानं समानक्खणता न युज्जतेव। तस्मा वुत्तनयेनेवेत्थ अत्थो वेदितब्बो।

अञ्ञं उप्पज्जते चित्तं, अञ्ञं चित्तं निरुज्झतीति यं पुरिमुप्पन्नं चित्तं, तं अञ्ञं, तं पन निरुज्झन्तं अपरस्स अनन्तरादिपच्चयभावेनेव निरुज्झतीति तथालद्धपच्चयं अञ्ञं उप्पज्जते चित्तं। यदि एवं तेसं अन्तरो लब्भेय्याति? नोति आह **"अवीचि मनुप्पबन्धो"**ति, यथा वीचि अन्तरो न लब्भति, "तदेवेत"न्ति अविसेसविदू मञ्ञन्ति, एवं अनु अनु पबन्धो चित्तसन्तानो रूपसन्तानो च **नदीसोतोव** नदियं उदकप्पवाहो विय **वत्तति**।

अभिमुखं लोकितं आलोकितन्ति आह **"पुरतो पेक्खन"**न्ति। यस्मा यंदिसाभिमुखो गच्छति, तिट्ठति, निसीदति वा तदभिमुखं पेक्खनं आलोकितं, तस्मा तदनुगतविदिसालोकनं विलोकितन्ति आह **"विलोकितं नाम अनुदिसापेक्खन"**न्ति। सम्मज्जनपरिभण्डादिकरणे ओलोकितस्स, उल्लोकहरणादीसु उल्लोकितस्स, पच्छतो आगच्छन्तपरिस्सयस्स परिवज्जनादीसु अपलोकितस्स सिया सम्भवोति आह **"इमिना वा मुखेन सब्बानिपि तानि गहितानेवा"**ति।

कायसक्खिन्ति कायेन सच्छिकतवन्तं, पच्चक्खकारिनन्ति अत्थो। सो हि आयस्मा विपस्सनाकाले "यमेवाहं इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारतं निस्साय सासने अनभिरतिआदिविप्पकारं पत्तो, तमेव सुट्ठु निग्गहेस्सामी"ति उस्साहजातो बलवहिरोत्तप्पो, तत्थ च कताधिकारत्ता इन्द्रियसंवरे उक्कंसपारमिप्पत्तो, तेनेव नं सत्था "एतदग्गं भिक्खवे मम सावकानं भिक्खूनं इन्द्रियेसु गुत्तद्वारानं, यदिदं नन्दो"ति (अ० नि० १.१.२३५) एतदग्गे ठपेसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सात्थकता च सप्पायता च वेदितब्बा आलोकितविलोकितस्साति आनेत्वा सम्बन्धो। **तस्मा**ति कम्मट्ठानाविजहनस्सेव गोचरसम्पजञ्ञभावतोति वुत्तमेवत्थं हेतुभावेन पच्चामसति। **अत्तनो कम्मट्ठानवसेनेव आलोकनविलोकनं कातब्बं,** खन्धादिकम्मट्ठाना अञ्ञो उपायो न गवेसितब्बोति अधिप्पायो। आलोकितादिसमञ्ञापि यस्मा धम्ममत्तस्सेव पवत्तिविसेसो, तस्मा तस्स याथावतो पजाननं असम्मोहसम्पजञ्ञन्ति दस्सेतुं **"अब्भन्तरे"**तिआदि वुत्तं। **चित्तकिरियवायोधातुविप्फारवसेना**ति किरियमयचित्तसमुट्ठानाय वायोधातुया चलनाकारप्पवत्तिवसेन। **अधो सीदती**ति अधो गच्छति। **उद्धं लङ्घेती**ति लङ्घं विय उपरि गच्छति।

अङ्गकिच्चं साधयमानन्ति पधानभूतअङ्गकिच्चं निप्फादेन्तं हुत्वाति अत्थो। **"पठमजवनेपि...पे०... न होती"**ति इदं पञ्चद्वारवीथियं "इत्थी पुरिसो"ति रज्जनादीनं अभावं सन्धाय वुत्तं। तत्थ हि आवज्जन वोट्ठब्बपनानं अयोनिसो आवज्जनवोट्ठब्बनवसेन इट्ठे इत्थिरूपादिम्हि लोभमत्तं, अनिट्ठे च पटिघमत्तं उप्पज्जति, मनोद्वारे पन "इत्थी पुरिसो"ति रज्जनादि होति। तस्स पञ्चद्वारजवनं मूलं, यथावुत्तं वा सब्बं भवङ्गादि। एवं मनोद्वारजवनस्स मूलवसेन मूलपरिञ्ञा वुत्ता। आगन्तुकतावकालिकता पन पञ्चद्वारजवनस्सेव अपुब्बभाववसेन, इत्तरभाववसेन च वुत्ता। **"हेट्ठुपरियवसेन भिज्जित्वा पतितेसू"**ति हेट्ठिमस्स उपरिमस्स च अपरापरं भङ्गप्पत्तिमाह।

तन्ति जवनं, तस्स अयुत्तन्ति सम्बन्धो। **आगन्तुको** अब्भागतो।

उदयब्बयपरिच्छिन्नो तावतको कालो एतेसन्ति **तावकालिकानि।**

एतं असम्मोहसम्पजञ्ञं। **समवाये**ति सामग्गियं। **तत्था**ति पञ्चक्खन्धवसेन आलोकनविलोकने पञ्ञायमाने तब्बिनिमुत्तो **को एको आलोकेति, को विलोकेति।**

"उपनिस्सयपच्चयो"ति इदं सुत्तन्तनयेन परियायतो वुत्तं। **सहजातपच्चयो**ति निदस्सनमत्तमेतं अञ्ञमञ्ञसम्पयुत्तअत्थिअविगतादिपच्चयानम्पि लब्भनतो।

काले समञ्छितुं युत्तकाले **समञ्छन्तस्स**। तथा **पसारेन्तस्सा**ति एत्थापि। **मणिसप्पो** नाम एका सप्पजातीति वदन्ति। **ळळन**न्ति कम्पनं, लीळाकरणं वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उण्हपकतिको परिळाहबहुलकायो। सीलविदूसनेन अहितावहत्ता **मिच्छाजीववसेन उप्पन्नं असप्पायं। "चीवरम्पि अचेतन"**न्तिआदिना चीवरस्स विय कायोपि अचेतनोति कायस्स अत्तसुञ्ञताविभावनेन "अब्भन्तरे"तिआदिना वुत्तमेवत्थं परिदीपेन्तो इतरीतरसन्तोसस्स कारणं दस्सेति, तेनाह **"तस्मा"**तिआदि।

चतुपञ्चगण्ठिकाहतोति आहतचतुपञ्चगण्ठिको, चतुपञ्चगण्ठिकाहि वा आहतो तथा।

अट्ठविधोपि अत्थोति अट्ठविधोपि पयोजनविसेसो महासिवत्थेरवादवसेन "इमस्स कायस्स ठितिया"तिआदिना (म० नि० १.२३, ४२२; म० नि० २.३८७; अ० नि० २.३४१; ३.८.९; ध० स० १३५५; विभं० ५१८; महानि० २०६) नयेन वुत्तो दट्ठब्बो। इमस्मिं पक्खे **"नेव दवायातिआदिना** (म० नि० १.२३, ४२२; म० नि० २.३८७; अ० नि० ३.८.९; ध० स० १३५५; विभं० ५१८; महानि० २०६) **नयेना"**ति पन पटिक्खेपङ्गदस्सनमुखेन देसनाय आगतत्ता वुत्तन्ति दट्ठब्बं।

पथविसन्धारकजलस्स तंसन्धारकवायुना विय परिभुत्तस्स आहारस्स वायोधातुयाव आसये अवट्ठानन्ति आह **"वायोधातुवसेनेव तिट्ठती"**ति। **अतिहरती**ति याव मुखा अभिहरति। **वीतिहरती**ति ततो कुच्छियं वीमिस्सं करोन्तो हरति। **अतिहरती**ति वा मुखद्वारं अतिक्कामेन्तो हरति। **वीतिहरती**ति कुच्छिगतं पस्सतो हरति, **परिवत्तेती**ति अपरापरं चारेति। एत्थ च आहारस्स धारणपरिवत्तनसञ्चुण्णनविसोसनानि पथवीधातुसहिता एव वायोधातु करोति, न केवलाति तानि पथवीधातुयापि किच्चभावेन वुत्तानि। **अल्लत्तञ्च अनुपालेती**ति यथा वायोधातु आदीहि अञ्ञेहि विसोसनं न होति, तथा अल्लत्तञ्च अनुपालेति। **तेजोधातू**ति गहणीसङ्खाता तेजोधातु। सा हि अन्तोपविट्ठं आहारं परिपाचेति। **अञ्जसो होती**ति आहारस्स पवेसनादीनं मग्गो होति। **आभुजती**ति परियेसनवसेन, अज्झोहरणजिण्णाजिण्णतादिपटिसंवेदनवसेन च आवज्जेति, विजानातीति अत्थो। तंतंविजाननस्स पच्चयभूतोयेव हि पयोगो "सम्मापयोगो"ति वुत्तो। येन हि पयोगेन परियेसनादि निप्फज्जति, सो तब्बिसयविजाननम्पि निप्फादेति नाम तदविनाभावतो। अथ वा **सम्मापयोगं** सम्मापटिपत्ति **मन्वाय** आगम्म **आभुजति** समन्नाहरति। आभोगपुब्बको हि सब्बोपि विञ्ञाणब्यापारोति तथा वुत्तं।

गमनतोति भिक्खाचारवसेन गोचरगामं उद्दिस्स गमनतो। **परियेसनतो**ति गोचरगामे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्खत्थं आहिण्डनतो। **परिभोगतो**ति आहारस्स परिभुञ्जनतो। **आसयतो**ति पित्तादिआसयतो। आसयति एत्थ एकज्झं पवत्तमानोपि कम्मफलववत्थितो हुत्वा मरियादवसेन अञ्ञमञ्ञं असङ्करतो सयति तिट्ठति पवत्ततीति **आसयो,** आमासयस्स उपरि तिट्ठनको पित्तादिको। मरियादत्थो हि अयमाकारो। **निधानन्ति** यथाभुत्तो आहारो निचितो हुत्वा तिट्ठति एत्थाति निधानं, आमासयो। ततो **निधानतो। अपरिपक्कतो**ति गहणीसङ्खातेन कम्मजतेजेन अविपक्कतो। **परिपक्कतो**ति यथाभुत्तस्स आहारस विपक्कभावतो। **फलतो**ति निप्फत्तितो। **निस्सन्दतो**ति इतो चितो च निस्सन्दनतो। **सम्मक्खनतो**ति सब्बसो मक्खनतो। अयमेत्थ सङ्खेपो, वित्थारो पन विसुद्धिमग्गसंवण्णनाय (विसुद्धि० टी० १.२९४) गहेतब्बो।

सरीरतो सेदा मुच्चन्तीति वेगसंधारणेन उप्पन्नपरिळाहतो सरीरतो सेदा मुच्चन्ति। **अञ्ञे च रोगा** कण्णसूलभगन्दरादयो। **अट्ठाने**ति मनुस्सामनुस्सपरिग्गहिते अयुत्तट्ठाने खेत्तदेवायतनादिके। कुद्धा हि अमनुस्सा, मनुस्सापि वा जीवितक्खयं पापेन्ति। निस्सट्ठत्ता **नेव अत्तनो,** कस्सचि अनिस्सज्जितत्ता, जिगुच्छनीयत्ता च **न परस्स। उदकतुम्बतो**ति वेळुनाळिआदिउदकभाजनतो। **तन्ति** छड्डितउदकं।

अद्धानइरियापथा चिरतरप्पवत्तिका दीघकालिका इरियापथा। **मज्झिमा** भिक्खाचरणादिवसेन पवत्ता। **चुण्णियइरियापथा** विहारे, अञ्ञत्थापि इतो चितो च परिवत्तनादिवसेन पवत्ताति वदन्ति। "गतेति गमने"ति पुब्बे अभिक्कमपटिक्कमग्गहणेन गमनेनपि पुरतो पच्छतो च कायस्स अभिहरणं वुत्तन्ति इध गमनमेव गहितन्ति केचि।

यस्मा महासिवत्थेरवादे अनन्तरे अनन्तरे इरियापथे पवत्तरूपारूपधम्मानं तत्थ तत्थेव निरोधदस्सनवसेन सम्पजानकारिता गहिताति तं सम्पजञ्ञविपस्सनाचारवसेन वेदितब्बं। तेन वुत्तं "**तयिदं महासिवत्थेरेन वुत्तं असम्मोहधुरं महासतिपट्ठानसुत्ते अधिप्पेत**"न्ति। **इमस्मिं पन सामञ्ञफले सब्बम्पि चतुब्बिधं सम्पजञ्ञं लब्भति** यावदेव सामञ्ञफलविसेसदस्सनपरत्ता इमिस्सा देसनाय। "**सतिसम्पयुत्तस्सेवा**"ति इदं यथा सम्पजञ्ञस्स किच्चतो पधानता गहिता, एवं सतिया पीति दस्सनत्थं वुत्तं, न सतिया सब्भावमत्तदस्सनत्थं। न हि कदाचि सतिरहिता ञाणप्पवत्ति अत्थि। "**एतस्स हि पदस्स अयं वित्थारो**"ति इमिना सतिया ञाणेन समधुरतंयेव विभावेति। **एतानि पदानी**ति "अभिक्कन्ते पटिक्कन्ते सम्पजानकारी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होती''तिआदीनि पदानि। **विभत्तानेवा**ति विसुं कत्वा विभत्तानियेव, इमिनापि सम्पजञ्ञस्स विय सतियापेत्थ पधानतमेव विभावेति।

मज्झिमभाणका पन भणन्ति– एको भिक्खु गच्छन्तो अञ्ञं चिन्तेन्तो अञ्ञं वितक्केन्तो गच्छति, एको कम्मट्ठानं अविस्सज्जेत्वाव गच्छति। तथा एको तिट्ठन्तो...पे०... निसीदन्तो...पे०... सयन्तो अञ्ञं चिन्तेन्तो अञ्ञं वितक्केन्तो सयति, एको कम्मट्ठानं अविस्सज्जेत्वाव सयति, एत्तकेन पन न पाकटं होतीति चङ्कमनेन दीपेन्ति। यो हि भिक्खु चङ्कमं ओतरित्वा च चङ्कमनकोटियं ठितो परिग्गण्हाति ''पाचीनचङ्कमनकोटियं पवत्ता रूपारूपधम्मा पच्छिमचङ्कमनकोटिं अप्पत्वा एत्थेव निरुद्धा, पच्छिमचङ्कमनकोटियं पवत्तापि पाचीनचङ्कमनकोटिं अप्पत्वा एत्थेव निरुद्धा, चङ्कमनमज्झे पवत्ता उभो कोटियो अप्पत्वा एत्थेव निरुद्धा, चङ्कमने पवत्ता रूपारूपधम्मा ठानं अप्पत्वा एत्थेव निरुद्धा, ठाने पवत्ता निसज्जं अप्पत्वा एत्थेव निरुद्धा, निसज्जाय पवत्ता सयनं अप्पत्वा एत्थेव निरुद्धा''ति एवं परिग्गण्हन्तो परिग्गण्हन्तोयेव भवङ्गं ओतरति। उट्ठहन्तो कम्मट्ठानं गहेत्वाव उट्ठहति, अयं भिक्खु गतादीसु सम्पजानकारी नाम होतीति। एवम्पि न सोत्ते कम्मट्ठानं अविभूतं होति, तस्मा भिक्खु याव सक्कोति, ताव चङ्कमित्वा ठत्वा निसीदित्वा सयमानो एवं परिग्गहेत्वा सयति ''कायो अचेतनो, मञ्चो अचेतनो, कायो न जानाति 'अहं मञ्चे सयितो'ति, मञ्चो न जानाति 'मयि कायो सयितो'ति, अचेतनो कायो अचेतने मञ्चे सयितो''ति एवं परिग्गण्हन्तो एव चित्तं भवङ्गे ओतारेति। पबुज्झन्तो कम्मट्ठानं गहेत्वाव पबुज्झति, अयं सोत्ते सम्पजानकारी नाम होति। कायादीकिरियानिब्बत्तनेन तम्मयत्ता, आवज्जनकिरिया समुट्ठितत्ता च जवनं सब्बम्पि वा छद्वारप्पवत्तं किरियमयपवत्तं नाम। तस्मिं सति जागरितं नाम होतीति परिग्गण्हन्तो जागरिते सम्पजानकारी नाम। अपि च रत्तिन्दिवं छ कोट्ठासे कत्वा पञ्च कोट्ठासे जग्गन्तोपि जागरिते सम्पजानकारी नाम होति। विमुत्तायतनसीसेन धम्मं देसेन्तोपि बत्तिंसतिरच्छानकथं पहाय दसकथावत्थुनिस्सितसप्पायकथं कथेन्तोपि भासिते सम्पजानकारी नाम। अट्ठतिंसाय आरम्मणेसु चित्तरुचियं मनसिकारं पवत्तेन्तोपि दुतियं झानं समापन्नोपि तुण्हीभावे सम्पजानकारी नाम। दुतियञ्हि झानं वचीसङ्खारविरहतो विसेसतो तुण्हीभावो नामाति। **एव**न्ति वुत्तप्पकारेन, सत्तसुपि ठानेसु चतुधाति अत्थो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्तोसकथावण्णना

२१५. यस्स सन्तोसस्स अत्तनि अत्थिताय भिक्खु "सन्तुट्ठो"ति वुच्चति, तं दस्सेन्तो **"इतरीतरपच्चयसन्तोसेन समन्नागतो"**ति आह। चीवरादि यत्थ कत्थचि पच्चये सन्तुस्सनेन समङ्गीभूतोति अत्थो। अथ वा **इतरं** वुच्चति हीनं पणीततो अञ्ञत्ता, तथा पणीतं **इतरं** हीनतो अञ्ञत्ता। अपेक्खासिद्धा हि इतरताति। इति येन धम्मेन हीनेन वा पणीतेन वा चीवरादिपच्चयेन सन्तुस्सति, सो तथा पवत्तो अलोभो **इतरीतरपच्चयसन्तोसो,** तेन **समन्नागतो।** यथालाभं अत्तनो लाभानुरूपं सन्तोसो **यथालाभसन्तोसो।** सेसद्वयेपि एसेव नयो। लब्भतीति वा लाभो, यो यो लाभो यथालाभं, तेन सन्तोसो **यथालाभसन्तोसो।** **बलन्ति** कायबलं। **सारुप्पन्ति** पकतिदुब्बलादीनं अनुच्छविकता।

यथालद्धतो अञ्ञस्स अपत्थना नाम सिया अप्पिच्छतायपि पवत्तिआकारोति ततो विनिवत्तितमेव सन्तोसस्स सरूपं दस्सेन्तो **"लभन्तोपि न गण्हाती"**ति आह। **तं परिवत्तेत्वाति** पकतिदुब्बलादीनं गरुचीवरं न फासुभावावहं, सरीरखेदावहञ्च होतीति पयोजनवसेन, न अत्रिच्छतादिवसेन तं परिवत्तेत्वा। लहुकचीवरपरिभोगो न सन्तोसविरोधीति आह **"लहुकेन यापेन्तोपि सन्तुट्ठोव होती"**ति। महग्घं चीवरं बहूनि वा चीवरानि लभित्वापि तानि विस्सज्जेत्वा तदञ्ञस्स गहणं यथासारुप्पनये ठितत्ता न सन्तोसविरोधीति आह **"तेसं...पे०... धारेन्तोपि सन्तुट्ठोव होती"**ति। एवं सेसपच्चयेपि यथाबलयथासारुप्पनिद्देसेसु अपि-सद्दग्गहणे अधिप्पायो वेदितब्बो।

मुत्तहरीतकन्ति गोमुत्तपरिभावितं, पूतिभावेन वा छड्डितं हरीतकं। **बुद्धादीहि वण्णितन्ति** "पूतिमुत्तभेसज्जं निस्साय पब्बज्जा"तिआदिना (महाव० ७३, १२८) सम्मासम्बुद्धादीहि पसत्थं। अप्पिच्छतासन्तुट्ठीसु भिक्खू नियोजेन्तो **परमसन्तुट्ठोव होति** परमेन उक्कंसगतेन सन्तोसेन समन्नागतत्ता।

कायं परिहरन्ति पोसेन्तीति **कायपरिहारिका।** तथा **कुच्छिपरिहारिका** वेदितब्बा। कुच्छिपरिहारिकता च अज्झोहरणेन सरीरस्स ठितिया उपकारकतावसेन इच्छिताति बहिद्धाव कायस्स उपकारकतावसेन कायपरिहारिकता दट्ठब्बा।

परिक्खारमत्ताति परिक्खारग्गहणं। **तत्रट्ठकपच्चत्थरणन्ति** अत्तना अनधिट्ठहित्वा तत्थेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिट्ठनकपच्चत्थरणं। पच्चत्थरणादीनञ्चेत्थ नवमादिभावो यथावुत्तपटिपाटिया दट्ठब्बो, न तेसं तथा पतिनियतभावतो। कस्मा? तथा नधारणतो। दुप्पोसभावेन महागजा वियाति **महागजा।** यदि इतरेपि अप्पिच्छतादिसभावा, किं तेसम्पि वसेन अयं देसना इच्छिताति? नोति आह **"भगवा पना"**तिआदि। कायपरिहारो पयोजनं एतेनाति कायपरिहारिकं। तेनाह **"कायं परिहरणमत्तकेना"**ति।

चतूसु दिसासु सुखविहारताय सुखविहारट्ठानभूता चतस्सो दिसा एतस्साति चतुद्दिसो चतुद्दिसो एव **चातुद्दिसो।** तासु एव कत्थचि सत्ते वा सङ्खारे वा भयेन न पटिहनति, सयं वा तेन न पटिहञ्ञतीति **अप्पटिघो। सन्तुस्समानो इतरीतरेना**ति उच्चावचेन पच्चयेन सकेन, सन्तेन, सममेव च तुस्सनको। परिच्च सयन्ति, कायचित्तानि परिसयन्ति अभिभवन्तीति **परिस्सया,** सीहब्यग्घादयो, कामच्छन्दादयो च, ते परिस्सये अधिवासनखन्तिया विनयादीहि च **सहिता** खन्ता, अभिभविता च। थद्धभावकरभयाभावेन **अछम्भी। एको चरे**ति एकाकी हुत्वा चरितुं सक्कुणेय्य। **खग्गविसाणकप्पो**ति ताय एव एकविहारिताय खग्गमिगसिङ्गसमो।

असञ्जातवाताभिघातेहि सिया सकुणो अपक्खकोति **"पक्खी सकुणो"**ति विसेसेत्वा वुत्तो।

नीवरणप्पहानकथावण्णना

२१६. वत्तब्बतं आपज्जतीति "असुकस्स भिक्खुनो अरञ्ञे तिरच्छानगतानं विय, वनचरकानं विय च निवासमत्तमेव, न पन अरञ्ञवासानुच्छविका काचि सम्मापटिपत्ती"ति अपवादवसेन वत्तब्बतं, आरञ्ञकेहि वा तिरच्छानगतेहि, वनचरविसभागजनेहि वा सद्धिं विप्पटिपत्तिवसेन वत्तब्बतं आपज्जति। काळकसदिसत्ता **काळकं,** थुल्लवज्जं। तिलकसदिसत्ता **तिलकं,** अणुमत्तवज्जं।

विवित्तन्ति जनविवित्तं। तेनाह **"सुञ्ञ"**न्ति। तं पन जनसद्दघोसाभावेनेव वेदितब्बं सद्दकण्टकत्ता झानस्साति आह **"अप्पसद्दं अप्पनिग्घोसन्ति अत्थो"**ति। **एतदेवा**ति निस्सद्दतंयेव। **विहारो** पाकारपरिच्छिन्नो सकलो आवासो। **अड्ढयोगो**ति दीघपासादो, "गरुळसण्ठानपासादो"तिपि वदन्ति। **पासादो**ति चतुरस्सपासादो। **हम्मियं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुण्डच्छदनपासादो। **अट्टो** पटिराजूनं पटिबाहनयोग्गो चतुपञ्चभूमको पतिस्सयविसेसो। **माळो** एककूटसङ्गहितो अनेककोणवन्तो पतिस्सयविसेसो। अपरो नयो **विहारो** नाम दीघमुखपासादो। **अड्ढयोगो** एकपस्सच्छदनकसेनासनं। तस्स किर एकपस्से भित्ति उच्चतरा होति, इतरपस्से नीचा, तेन तं एकपस्सछदनकं होति। **पासादो** नाम आयतचतुरस्सपासादो। **हम्मियं** मुण्डच्छदनकं चन्दिकङ्गणयुत्तं। **गुहा** नाम केवला पब्बतगुहा। **लेणं** द्वारबद्धं पब्भारं। सेसं वुत्तनयमेव। **मण्डपो**ति साखामण्डपो।

विहारसेनासनन्ति पतिस्सयभूतं सेनासनं। **मञ्चपीठसेनासनन्**ति मञ्चपीठञ्चेव मञ्चपीठसम्बन्धसेनासनञ्च। चिमिलिकादि सन्थरितब्बतो **सन्थतसेनासनं।** अभिसङ्खरणाभावतो सयनस्स निसज्जाय च केवलं ओकासभूतं सेनासनं। "विवित्तं सेनासन"न्ति इमिना **सेनासनग्गहणेन सङ्गहितमेव** सामञ्ञजोतनाभावतो।

यदि एवं कस्मा "अरञ्ञ"न्तिआदि वुत्तन्ति आह **"इम पना"**तिआदि। **"भिक्खुनीनं वसेन आगत"**न्ति इदं विनये तथा आगततं सन्धाय वुत्तं, अभिधम्मेपि पन "अरञ्ञन्ति निक्खमित्वा बहि इन्दखीला, सब्बमेतं अरञ्ञ"न्ति (विभं० ५२९) आगतमेव। तत्थ हि यं न गामपदेसन्तोगधं, तं "अरञ्ञ"न्ति निप्परियायवसेन तथा वुत्तं। धुतङ्गनिद्देसे (विसुद्धि० १.३१) यं वुत्तं, तं युत्तं ,तस्मा तत्थ वुत्तनयेन गहेतब्बन्ति अधिप्पायो। **रुक्खमूलन्**ति रुक्खसमीपं। वुत्तञ्हेतं "यावता मज्झन्हिके काले समन्ता छाया फरति, निवाते पण्णानि निपतन्ति, एत्तावता रुक्खमूल"न्ति। **सेल**-सद्दो अविसेसतो पब्बतपरियायोति कत्वा वुत्तं **"पब्बतन्ति सेल"**न्ति, न सिलामयमेव, पंसुमयादिको तिविधोपि पब्बतो एवाति। **विवरन्**ति द्विन्नं पब्बतानं मिथो आसन्नतरे ठितानं ओवरकादिसदिसं विवरं, एकस्मिंयेव वा पब्बते। **उमङ्गसदिसन्**ति सुदुङ्गासदिसं। **मनुस्सानं अनुपचारट्ठानन्**ति पकतिसञ्चारवसेन मनुस्सेहि न सञ्चरितब्बट्ठानं। **आदि**-सद्देन "वनपत्थन्ति वनसण्ठानमेतं सेनासनानं अधिवचनं, वनपत्थन्ति भीसनकानमेतं, वनपत्थन्ति सलोमहंसानमेतं, वनपत्थन्ति परियन्तानमेतं, वनपत्थन्ति न मनुस्सूपचारानमेतं, वनपत्थन्ति दुरभिसम्भवानमेतं सेनासनानं अधिवचन"न्ति (विभं० ५३१) इमं पाळिसेसं सङ्गण्हाति। **अच्छन्नन्**ति केनचि छदनेन अन्तमसो रुक्खसाखायपि न छादितं। **निक्कड्ढित्वा**ति नीहरित्वा। **पब्भारलेणसदिसे**ति पब्भारसदिसे लेणसदिसे च।

पिण्डपातपरियेसनं पिण्डपातो उत्तरपदलोपेनाति आह **"पिण्डपातपरियेसनतो**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटिक्कन्तो''ति। **पल्लङ्कन्ति** एत्थ **परि**सद्दो ''समन्ततो''ति एतस्स अत्थे, तस्मा वामोरुञ्च दक्खिणोरुञ्च समं ठपेत्वा उभो पादे अञ्ञमञ्ञं सम्बन्धित्वा निसज्जा पल्लङ्कन्ति आह **''समन्ततो ऊरुबद्धासन''**न्ति। ऊरूनं बन्धनवसेन निसज्जा **पल्लङ्कं। आभुजित्वा**ति च यथा पल्लङ्कवसेन निसज्जा होति, एवं उभो पादे आभुग्गे भञ्जिते कत्वा, तं पन उभिन्नं पादानं तथा सम्बन्धताकरणन्ति आह **''बन्धित्वा''**ति।

हेट्ठिमकायस्स च अनुजुकं ठपनं निसज्जावचनेनेव बोधितन्ति ''उजुं काय''न्ति एत्थ काय-सद्दो उपरिमकायविसयोति आह **''उपरिमं सरीरं उजुं ठपेत्वा''**ति। तं पन उजुकठपनं सरूपतो, पयोजनतो च दस्सेतुं **''अट्ठारसा''**तिआदि वुत्तं। **न पणमन्ती**ति न ओनमन्ति। **न परिपतती**ति न विगच्छति वीथिं न लङ्घेति। ततो एव पुब्बेनापरं विसेसप्पत्तिया कम्मट्ठानं **वुड्ढिं फातिं वेपुल्लं उपगच्छति**। **परिमुखन्ति** एत्थ **परि**सद्दो अभि-सद्देन समानत्थोति आह **''कम्मट्ठानाभिमुख''**न्ति, बहिद्धा पुथुत्तारम्मणतो निवारेत्वा कम्मट्ठानंयेव पुरक्खत्वाति अत्थो। समीपत्थो वा **परि**सद्दोति दस्सेन्तो **''मुखसमीपे वा कत्वा''**ति आह। एत्थ च यथा ''विवित्तं सेनासनं भजती''तिआदिना भावनानुरूपं सेनासनं दस्सितं, एवं ''निसीदती''ति इमिना अलीनानुद्धच्चपक्खियो सन्तो इरियापथो दस्सितो। ''पल्लङ्कं आभुजित्वा''ति इमिना निसज्जाय दळ्हभावो, ''परिमुखं सतिं उपट्ठपेत्वा''ति इमिना आरम्मणपरिग्गहूपायो। **परीति परिग्गहट्ठो** ''परिणायिका''तिआदीसु विय। **मुखन्ति निय्यानट्ठो** ''सुञ्ञतविमोक्खमुख''न्तिआदीसु विय। पटिपक्खतो निग्गमनट्ठो हि निय्यानट्ठो, तस्मा परिग्गहितनिय्यानन्ति सब्बथा गहितासम्मोसं परिचत्तसम्मोसं **सतिं कत्वा,** परमं सतिनेपक्कं उपट्ठपेत्वाति अत्थो।

२१७. अभिज्झायति गिज्झति अभिकङ्खति एतायाति **अभिज्झा,** लोभो। **लुज्जनट्ठेना**ति भिज्जनट्ठेन, खणे खणे भिज्जनट्ठेनाति अत्थो। **विक्खम्भनवसेना**ति एत्थ **विक्खम्भनं** अनुप्पादनं अप्पवत्तनं, न पटिपक्खानं सुप्पहीनता। **''पहीनत्ता''**ति च पहीनसदिसतं सन्धाय वुत्तं झानस्स अनधिगतत्ता। तथापि नयिदं चक्खुविञ्ञाणं विय सभावतो विगताभिज्झं, अथ खो भावनावसेन, तेनाह **''न चक्खुविञ्ञाणसदिसेना''**ति। **एसेव नयो**ति यथा इमस्स चित्तस्स भावनाय परिभावितत्ता विगताभिज्झता, एवं अब्यापन्नं विगतथिनमिद्धं अनुद्धतं निब्बिचिकिच्छञ्चाति अत्थो। **पुरिमपकतिन्ति** परिसुद्धपण्डरसभावं। ''या चित्तस्स अकल्यताति''आदिना (ध० स० ११६२; विभं० ५४६) थिनस्स, ''या कायस्स अकल्यता''तिआदिना (ध० स० ११६३; विभं० ५४६) च मिद्धस्स अभिधम्मे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निद्दिट्ठत्ता वुत्तं **"थिनं चित्तगेलञ्ञं, मिद्धं चेतसिकगेलञ्ञ"**न्ति। सतिपि अञ्ञमञ्ञं अविप्पयोगे चित्तकायलहुतादीनं विय चित्तचेतसिकानं यथाकम्मं तं तं विसेसस्स या तेसं अकल्यतादीनं विसेसप्पच्चयता, अयमेतेसं सभावोति दट्ठब्बं। **आलोकसञ्ञी**ति एत्थ अतिसयत्थविसिट्ठअत्थि अत्थावबोधको अयमीकारोति दस्सेन्तो आह **"रत्तिम्पि...पे०... समन्नागतो"**ति। **इदं उभयन्ति** सतिसम्पजञ्ञमाह। **अतिक्कमित्वा** विक्खम्भनवसेन पजहित्वा। "कथमिद"न्ति पवत्तिया कथङ्कथा, विचिकिच्छा। सा एतस्स अत्थीति कथङ्कथी, न कथङ्कथीति **अकथंकथी,** निब्बिचिकिच्छो। **लक्खणादिभेदतो**ति एत्थ **आदि**-सद्देन पच्चयपहानपहायकादीनम्पि सङ्गहो दट्ठब्बो। तेपि हि भेदतो वत्तब्बाति।

२१८. **तेस**न्ति इणवसेन गहितधनानं। **परियन्तो**ति दातब्बसेसो। **सो बलवपामोज्जं लभति** "इणपलिबोधतो मुत्तोम्ही"ति। **सोमनस्सं अधिगच्छति** "जीविकानिमित्तं अत्थी"ति।

२१९. **विसभागवेदनुप्पत्तिया**ति दुक्खवेदनुप्पत्तिया। दुक्खवेदना हि सुखवेदनाय कुसलविपाकसन्तानस्स विरोधिताय विसभागा। **चतुइरियापथं छिन्दन्तो**ति चतुब्बिधम्पि इरियापथप्पवत्तिं पच्छिन्दन्तो। ब्याधिको हि यथा ठानगमनेसु असमत्थो, एवं निसज्जादीसुपि असमत्थो होति। **आबाधेती**ति पीळेति। वातादीनं विकारो विसमावत्था ब्याधीति आह **"तंसमुट्ठानेन दुक्खेन दुक्खितो"**ति। दुक्खवेदनाय पन ब्याधिभावे मूलब्याधिना **आबाधिको** आदितो बाधतीति कत्वा। अनुबन्धब्याधिना **दुक्खितो** अपरापरं सञ्जातदुक्खोति कत्वा। **गिलानो**ति धातुसङ्खयेन परिक्खीणसरीरो। अप्पमत्तकं वा बलं **बलमत्ता। तदुभयन्ति** पामोज्जं, सोमनस्सञ्च। तत्थ **लभेथ पामोज्जं** "रोगतो मुत्तोम्ही"ति। **अधिगच्छेय्य सोमनस्सं** "अत्थि मे काये बल"न्ति।

२२०. **सेसन्ति** "तस्स हि 'बन्धना मुत्तोम्ही'ति आवज्जयतो तदुभयं होति। तेन वुत्त"न्ति एवमादि। **वुत्तनयेनेवा**ति पठमदुतियपदेसु वुत्तनयेनेव। **सब्बपदेसू**ति अवसिट्ठपदेसु ततियादीसु कोट्ठासेसु।

२२१-२२२. **न अत्तनि अधीनो**ति न अत्तायत्तो। **पराधीनो**ति परायत्तो। अपराधीनताय भुजो विय अत्तनो किच्चे एसितब्बोति **भुजिस्सो**। सवसोति आह **"अत्तनो सन्तको"**ति। अनुदकताय कं पानीयं तारेन्ति एत्थाति **कन्तारो**ति आह **"निरुदकं दीघमग्ग"**न्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२३. **तत्रा**ति तस्मिं दस्सने। **अयन्ति** इदानि वुच्चमाना **सदिसता**। येन इणादीनं उपमाभावो, कामच्छन्दादीनञ्च उपमेय्यभावो होति, सो नेसं उपमोपमेय्यसम्बन्धो सदिसताति दट्ठब्बं। **यो यम्हि कामच्छन्देन रज्जती**ति यो पुग्गलो यम्हि कामरागस्स वत्थुभूते पुग्गले कामच्छन्दवसेन रत्तो होति। **तं वत्थुं गण्हाती**ति तं तण्हावत्थुं ''ममेत''न्ति गण्हाति।

उपद्दवेथाति उपद्दवं करोथ।

नक्खत्तस्साति महस्स। **मुत्तो**ति बन्धनतो मुत्तो।

विनये अपकतञ्ञुनाति विनयक्कमे अकुसलेन। सो हि कप्पियाकप्पियं याथावतो न जानाति। तेनाह **''किस्मिञ्चिदेवा''**तिआदि।

गच्छतिपीति थोकं थोकं गच्छतिपि। गच्छन्तो पन ताय एव उस्सङ्कितपरिसङ्कितताय तत्थ तत्थ **तिट्ठतिपि**। ईदिसे कन्तारे गतो ''को जानाति किं भविस्सती''ति **निवत्ततिपि,** तस्मा **गतट्ठानतो अगतट्ठानमेव बहुतरं होति। सद्धाय गण्हितुं** सद्धेय्यं वत्थुं ''इदमेव''न्ति सद्दहितुं **न सक्कोति। अत्थि नत्थी**ति ''अत्थि नु खो, नत्थि नु खो''ति। अरञ्ञं पविट्ठस्स आदिम्हि एव सप्पनं **आसप्पनं**। परि परितो, उपरूपरि वा सप्पनं **परिसप्पनं**। उभयेनपि तत्थेव परिब्भमनं वदति। तेनाह **''अपरियोगाहन''**न्ति। **छम्भितत्त**न्ति अरञ्ञसञ्ञाय उप्पन्नं छम्भितभावं, उत्रासन्ति अत्थो।

२२४. **तत्रायं सदिसता**ति एत्थापि वुत्तनयानुसारेन सदिसता वेदितब्बा। यदग्गेन हि कामच्छन्दादयो इणादिसदिसा, तदग्गेन तेसं पहानं आणण्यादिसदिसं अभावोति कत्वा। **छ धम्मे**ति असुभनिमित्तस्स उग्गहो, असुभभावनानुयोगो, इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता, भोजने मत्तञ्ञुता, कल्याणमित्तता, सप्पायकथाति इमे छ धम्मे। **भावेत्वा**ति ब्रूहेत्वा। **महासतिपट्ठाने** (दी० नि० २.३७२-३७४) **वण्णयिस्साम** तत्थस्स अनुप्पन्नानुप्पादनउप्पन्न-पहानादिविभावनवसेन सविसेसं पाळिया आगतत्ता। एस नयो ब्यापादादिप्पहानकभावेपि। **परवत्थुम्ही**ति आरम्मणभूते परस्मिं वत्थुस्मिं।

अनत्थकरोति अत्तनो परस्स च अनत्थावहो। **छ धम्मे**ति मेत्तानिमित्तस्स उग्गहो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेत्ताभावनानुयोगो, कम्मस्सकता, पटिसङ्खानबहुलता, कल्याणमित्तता, सप्पायकथाति इमे छ धम्मे। **तत्थेवा**ति महासतिपट्ठानेयेव। (दी० नि० २.३७२-३७४) चारित्तसीलं उद्दिस्स पञ्ञत्तसिक्खापदं **आचारपण्णत्ति**।

बन्धनागारं पवेसितत्ता अलद्धनक्खत्तानुभवो पुरिसो **"नक्खत्तदिवसे बन्धनागारं पवेसितो पुरिसो"**ति वुत्तो, नक्खत्तदिवसे एव वा तदननुभवनत्थं तथा कतो। **महाअनत्थकर**न्ति दिट्ठधम्मिकादिअत्थहापनमुखेन महतो अनत्थस्स कारकं। **छ धम्मे**ति अतिभोजने ननिमित्तग्गाहो, इरियापथसम्परिवत्तनता, आलोकसञ्ञामनसिकारो, अब्भोकासवासो, कल्याणमित्तता, सप्पायकथाति इमे छ धम्मे।

उद्धच्चकुक्कुच्चे **महाअनत्थकर**न्ति परायत्ततापादनतो वुत्तनयेन महतो अनत्थस्स कारकन्ति। अत्थो **छ धम्मे**ति बहुस्सुतता, परिपुच्छकता, विनये पकतञ्ञुता, वुड्ढसेविता, कल्याणमित्तता, सप्पायकथाति इमे छ धम्मे।

बलवाति पच्चत्थिकविधमनसमत्थेन बलेन बलवा। **सज्जावुधो**ति सन्नद्धधनुआदिआवुधो। सूरवीरसेवकजनवसेन **सपरिवारो**। **त**न्ति यथावुत्तं पुरिसं। बलवन्तताय, सज्जावुधताय, सपरिवारताय च **चोरा दूरतोव दिस्वा पलायेय्युं**। **अनत्थकारिका**ति सम्मापटिपत्तिया विबन्धकरणतो वुत्तनयेन अनत्थकारिका। **छ धम्मे**ति बहुस्सुतता, परिपुच्छकता, विनये पकतञ्ञुता, अधिमोक्खबहुलता, कल्याणमित्तता, सप्पायकथाति इमे छ धम्मे। यथा बाहुसच्चादीनि उद्धच्चकुक्कुच्चस्स पहानाय संवत्तन्ति, एवं विचिकिच्छाय पीति इधापि बहुस्सुततादयो गहिता। कल्याणमित्तता सप्पायकथा विय पच्चन्नं, तस्मा तस्स तस्स अनुच्छविकसेवनता वेदितब्बा। सम्मापटिपत्तिया अप्पटिपत्तिनिमित्ततामुखेन विचिकिच्छा मिच्छापटिपत्तिमेव परिब्रूहेतीति तस्सा पहानं दुच्चरितविधूननूपायोति आह **"दुच्चरितकन्तारं नित्थरित्वा"**तिआदि।

२२५. **पामोज्जं** नाम तरुणपीति, सा कथञ्चिपि तुट्ठावत्थाति आह **"पामोज्जं जायतीति तुट्ठाकारो जायती"**ति। **तुट्ठस्सा**ति ओक्कन्तिकभावप्पत्ताय पीतिया वसेन तुट्ठस्स। अत्तनो सविप्फारिकताय, अत्तसमुट्ठानपणीतरूपुप्पत्तिया च **सकलसरीरं खोभयमाना** फरणलक्खणा **पीति जायति**। पीतिसहितं पीति उत्तरपदलोपेन, किं पन तं? मनो। पीति मनो एतस्साति पीतिमनो, तस्स **पीतिमनस्स**। तयिदं अत्थमत्तमेव दस्सेन्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"पीतिसम्पयुत्तचित्तस्सा"ति आह। **कायो**ति इध अरूपकलापो अधिप्पेतो, न वेदनादिक्खन्धत्तयमेवाति आह **"नामकायो पस्सम्भती"**ति, पस्सद्धिद्वयस्स पीतिबसेनेत्थ पस्सम्भनं अधिप्पेतं। **विगतदरथो**ति पहीनउद्धच्चादिकिलेसदरथो। वुत्तप्पकाराय पुब्बभागभावनाय वसेन चेतसिकसुखं पटिसंवेदेन्तोयेव तंसमुट्ठानपणीतरूपफुट्ठसरीरताय कायिकम्पि सुखं वेदेतीति आह **"कायिकम्पि चेतसिकम्पि सुखं वेदयती"**ति। **इमिना**ति "सुखं पटिसंवेदेती"ति एवं वुत्तेन। संकिलेसपक्खतो निक्खन्तत्ता, पठमज्झानपक्खिकत्ता च **नेक्खम्मसुखेन। सुखितस्सा**ति सुखिनो।

पठमज्झानकथावण्णना

२२६. "चित्तं समाधियती"ति एतेन उपचारवसेनपि अप्पनावसेनपि चित्तस्स समाधानं कथितं। एवं सन्ते "सो विविच्चेव कामेही"तिआदिका देसना किमत्थियाति आह **"सो विविच्चेव कामेहि...पे०... वुत्त"**न्ति। तत्थ **उपरिविसेसदस्सनत्थ**न्ति पठमज्झानादिउपरिवत्तब्बविसेसदस्सनत्थं। न हि उपचारसमाधिसमधिगमेन विना पठमज्झानादिविसेसो समधिगन्तुं सक्का। पामोज्जुप्पादादीहि कारणपरम्परा दुतियज्झानादिसमधिगमेपि इच्छितब्बाव पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धि विय दुतियमग्गादिसमधिगमेति दट्ठब्बं। **तस्स समाधिनो**ति "सुखिनो चित्तं समाधियती"ति एवं साधारणवसेन वुत्तो यो अप्पनालक्खणो, तस्स समाधिनो। **पभेददस्सनत्थ**न्ति दुतियज्झानादिविभागस्स चेव अभिञ्ञादिविभागस्स च पभेददस्सनत्थं। करो वुच्चति पुप्फसम्भवं गब्भासये करीयतीति कत्वा, करतो जातो कायो करजकायो, तदुपसनिस्सयो चतुसन्ततिरूपसमुदायो। कामं नामकायोपि विवेकजेन पीतिसुखेन तथालद्धुपकारो, "अभिसन्देती"तिआदिवचनतो पन रूपकायो इधाधिप्पेतोति आह **"इमं करजकाय"**न्ति। **अभिसन्देती**ति अभिसन्दनं करोति। तं पन झानमयेन पीतिसुखेन करजकायस्स तिन्तभावापादनं, सब्बत्थकमेव लूखभावापनयनन्ति आह **"तेमेती"**तिआदि, तयिदं अभिसन्दनं अत्थतो यथावुत्तपीतिसुखसमुट्ठानेहि पणीतरूपेहि कायस्स परिप्फरणं दट्ठब्बं। **"परिसन्देती"**तिआदीसुपि एसेव नयो। सब्बं एतस्स अत्थीति सब्बवा, तस्स **सब्बावतो**। अवयवावयविसम्बन्धे अवयविनि सामिवचनन्ति अवयवीविसयो **सब्ब-**सद्दो, तस्मा वुत्तं **"सब्बकोट्ठासवतो"**ति। **अफुटं नाम न होति** यत्थ यत्थ कम्मजरूपं, तत्थ तत्थ चित्तजरूपस्स अभिब्यापनतो। तेनाह **"उपादिन्नकसन्तती"**तिआदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२७. **छेको**ति कुसलो। तं पनस्स कोसल्लं न्हानियचुण्णानं सन्नने पिण्डीकरणे च समत्थतावसेन वेदितब्बन्ति आह **"पटिबलो"**तिआदि। **कंस**-सद्दो "महतिया कंसपातिया"तिआदीसु सुवण्णे आगतो।

"कंसो उपहतो यथा"तिआदीसु (ध० प० १३४) कित्तिमलोहे, कत्थचि पण्णत्तिमत्ते "उपकंसो नाम राजापि महाकंसस्स अत्रजो"तिआदि, [जा० अट्ठ० ४.१० घटपण्डितजातकवण्णनायं (अत्थतो समानं)] इध पन यत्थ कत्थचि लोहेति आह **"येन केनचि लोहेन कतभाजने"**ति। **स्नेहानुगता**ति **उदकसिनेहेन** अनुपविसनवसेन गता उपगता। **स्नेहपरेता**ति उदकसिनेहेन परितो गता समन्ततो फुट्ठा, ततो एव **सन्तरबाहिरा** फुट्ठा सिनेहेन, एतेन सब्बसो उदकेन तेमितभावमाह। **"न च पग्घरणी"**ति एतेन तिन्तस्सपि तस्स घनथद्धभावं वदति। तेनाह **"न च बिन्दुं बिन्दु"**न्तिआदि।

दुतियज्झानकथावण्णना

२२९. ताहि ताहि उदकसिराहि उब्भिज्जतीति उब्भिदं, उब्भिदं उदकं एतस्साति **उब्भिदोदको**। **उब्भिन्नउदको**ति नदीतीरे खतकूपको विय उब्भिज्जनकउदको। **उग्गच्छनकउदको**ति धारावसेन उट्ठहनउदको। कस्मा पनेत्थ उब्भिदोदकोव रहदो गहितो, न इतरोति आह **"हेट्ठा उग्गच्छनउदकञ्ही"**तिआदि। **धारानिपातपुब्बुळकेही**ति धारानिपातेहि उदकपुब्बुळकेहि च, "फेणपटलेहि चा"ति वत्तब्बं। **सन्निसिन्नमेवा**ति अपरिक्खोभताय निच्चलमेव, सुप्पसन्नमेवाति अधिप्पायो। **सेसन्ति** "अभिसन्देती"तिआदिकं।

ततियज्झानकथावण्णना

२३१. **उप्पलानी**ति उप्पलगच्छानि। **सेतरत्तनीलेसू**ति उप्पलेसु, सेतुप्पलरत्तुप्पलनीलुप्पलेसूति अत्थो। **यं किञ्चि उप्पलं उप्पलमेव** सामञ्ञगहणतो। **सतपत्त**न्ति एत्थ **सत**-सद्दो बहुपरियायो "सतग्घी"तिआदीसु विय, तेन अनेकसतपत्तस्सपि सङ्गहो सिद्धो होति। लोके पन "रत्तं पदुमं, सेतं पुण्डरीक"न्तिपि वुच्चति। याव अग्गा, याव च मूला उदकेन अभिसन्दनादिसम्भवदस्सनत्थं **उदकानुग्गतग्गहणं**। इध उप्पलादीनि विय करजकायो, उदकं विय ततियज्झानसुखं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुत्थज्झानकथावण्णना

२३३. यस्मा "परिसुद्धेन चेतसा"ति चतुत्थज्झानचित्तमाह, तञ्च रागादिउपक्किलेसापगमनतो निरुपक्किलेसं निम्मलं, तस्मा आह **"निरुपक्किलेसट्ठेन परिसुद्ध"**न्ति। यस्मा पन पारिसुद्धिया एव पच्चयविसेसेन पवत्तिविसेसो परियोदातता सुवण्णस्स निघंसनेन पभस्सरता विय, तस्मा आह **"पभस्सरट्ठेन परियोदातन्ति वेदितब्ब"**न्ति। **इदन्ति** ओदातवचनं। **उतुफरणत्थ**न्ति उण्हउतुनो फरणदस्सनत्थं। **उतुफरणं न होति** सविसेसन्ति अधिप्पायो, तेनाह **"तङ्खण...पे०... बलवं होती"**ति। **वत्थं विय करजकायो**ति योगिनो करजकायो वत्थं विय दट्ठब्बो उतुफरणसदिसेन चतुत्थज्झानसुखेन फरितब्बत्ता। पुरिसस्स सरीरं विय चतुत्थज्झानं दट्ठब्बं उतुफरणट्ठानियस्स सुखस्स निस्सयभावतो, तेनाह **"तस्मा"**तिआदि। एत्थ च "परिसुद्धेन चेतसा"ति चेतो गहणेन झानसुखं वुत्तन्ति दट्ठब्बं, तेनाह **"उतुफरणं विय चतुत्थज्झानसुख"**न्ति। ननु च चतुत्थज्झाने सुखमेव नत्थीति? सच्चं नत्थि सातलक्खणसन्तसभावत्ता पनेत्थ उपेक्खा "सुख"न्ति अधिप्पेता। तेन वुत्तं **सम्मोहविनोदनियं** "उपेक्खा पन सन्तत्ता, सुखमिच्चेव भासिता"ति। (विभं० अट्ठ० २३२; विसुद्धि० २.६४४; पटि० म० १०५, महानि० अट्ठ० २७)

न अरूपज्झानलाभीति न वेदितब्बो अविनाभावतो, तेनाह **"न ही"**तिआदि। तत्थ **चुद्दसहाकारेही**ति कसिणानुलोमतो, कसिणपटिलोमतो, कसिणानुलोमपटिलोमतो, झानानुलोमतो, झानपटिलोमतो, झानानुलोमपटिलोमतो, झानुक्कन्तिकतो, कसिणुक्कन्तिकतो, झानकसिणुक्कन्तिकतो, अङ्गसङ्कन्तितो, आरम्मणसङ्कन्तितो, अङ्गारम्मणसङ्कन्तितो, अङ्गववत्थानतो, आरम्मणववत्थानतोति इमेहि चुद्दसहाकारेहि। सतिपि झानेसु आवज्जनादिवसीभावे अयं वसीभावो अभिञ्ञानिब्बत्तने एकन्तेन इच्छितब्बोति दस्सेन्तो आह **"न हि...पे०... होती"**ति। स्वायं नयो अरूपसमापत्तीहि विना न इज्झतीति तायपेत्थ अविनाभावो वेदितब्बो। यदि एवं कस्मा पाळियं न आरुप्पज्झानानि आगतानीति? विसेसतो च रूपावचरचतुत्थज्झानपादकत्ता सब्बाभिञ्ञानं तदन्तोगधा कत्वा ताय देसिता, न अरूपावचरज्झानानं इध अनुपयोगतो, तेनाह **"अरूपज्झानानि आहरित्वा कथेतब्बानी"**ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विपस्सनाञाणकथावण्णना

२३४. सेसन्ति "एवं समाहिते चित्ते"तिआदीसु वत्तब्बं। ञेय्यं जानातीति ञाणं, तं पन ञेय्यं पच्चक्खं कत्वा पस्सतीति दस्सनं, ञाणमेव दस्सनन्ति ञाणदस्सनं। तयिदं ञाणदस्सनपदं सासने अञ्ञत्थ ञाणविसेसे निरूळ्हं, तं सब्बं अत्थुद्धारवसेन दस्सेन्तो **"ञाणदस्सनन्ति मग्गञाणम्पि वुच्चती"**तिआदिमाह। यस्मा विपस्सनाञाणं तेभूमकसङ्खारे अनिच्चादितो जानाति, भङ्गानुपस्सनतो पट्ठाय पच्चक्खतो च ते पस्सति तस्मा आह **"इध पन...पे०... ञाणदस्सनन्ति वुत्त"**न्ति।

अभिनीहरतीति वुत्तनयेन अट्ठङ्गसमन्नागते तस्मिं चित्ते विपस्सनाक्कमेन जाते विपस्सनाभिमुखं पेसेति, तेनाह **"विपस्सना...पे०... करोती"**ति। तदभिमुखभावो एव हिस्स तन्निन्नतादिकरता। **वुत्तोयेव** ब्रह्मजाले। ओदनकुम्मासेहि उपचीयतीति **ओदनकुम्मासूपचयो। अनिच्चधम्मो**ति पभङ्गुताय अद्धुवसभावो। **दुग्गन्धविघातत्थाया**ति सरीरे दुग्गन्धस्स विगमाय। **उच्छादनधम्मो**ति उच्छादेतब्बतासभावो। उच्छादनेन हि सरीरे सेदगूथपित्तसेम्हादिधातुक्खोभगरुभावदुग्गन्धानं अपगमो होति। महासम्बाहनं मल्लादीनं बाहुवड्ढनादिअत्थं होतीति **"खुद्दकसम्बाहनेना"**ति वुत्तं। **परिमद्दनधम्मो**ति परिमद्दितब्बतासभावो। **भिज्जति चेव विकिरति चा**ति अनिच्चतावसेन भिज्जति च भिन्नञ्च किञ्चि पयोजनं असाधेन्तं विप्पकिण्णञ्च होति। **रूपी**ति अत्तनो पच्चयभूतेन उतुआहारलक्खणेन रूपवाति अयमेत्थ अत्थो इच्छितोति आह **"छहि पदेहि समुदयो कथितो"**ति। संसग्गे हि अयमीकारो। **सण्ठानसम्पादनम्पि** तथारूपरूपुप्पादनेनेव होतीति उच्छादनपरिमद्दनपदेहिपि समुदयो कथितोति वुत्तं। एवं नवहि यथारहं काये समुदयवयधम्मानुपस्सिता दस्सिता। **निस्सितञ्च** छट्ठवत्थुनिस्सितत्ता विपस्सनाञाणस्स। **पटिबद्धञ्च** तेन विना अप्पवत्तनतो, कायसञ्ञितानं रूपधम्मानं आरम्मणकरणतो च।

२३५. सुट्ठु भाति ओभासतीति **सुभो,** पभासम्पत्तियापि मणिनो भद्दताति आह **"सुभोति सुन्दरो"**ति। कुरुविन्दजाति आदिजातिविसेसोपि मणिनो आकरपरिसुद्धिमूलको एवाति आह **"परिसुद्धाकरसमुट्ठितो"**ति दोसनीहरणवसेन परिकम्मनिप्फत्तीति आह **"सुट्ठु कतपरिकम्मो अपनीतपासाणसक्खरो"**ति। छविया सण्हभावेनस्स अच्छता, न सङ्घातस्साति आह **"अच्छोति तनुच्छवी"**ति, तेनाह **"विप्पसन्नो"**ति। **धोवनवेधनादीही**ति चतूसु पासाणेसु धोवनेन चेव काळकादिअपहरणत्थाय सुत्तेन आवुननत्थाय च विज्झनेन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तापसण्हकरणादीनं सङ्गहो **आदि**-सद्देन। **वण्णसम्पत्तिन्ति** सुत्तस्स वण्णसम्पत्तिं। **मणि विय करजकायो** पच्चवेक्खितब्बतो। **आवुतसुत्तं विय विपस्सनाञाणं** अनुपविसित्वा ठितत्ता। **चक्खुमा पुरिसो विय विपस्सनालाभी भिक्खु** सम्मदेव दस्सनतो। **तदारम्मणानन्ति** रूपधम्मारम्मणानं। फस्सपञ्चमकचित्तचेतसिकग्गहणेन गहितधम्मापि विपस्सनाचित्तुप्पाद-परियापन्ना एवाति वेदितब्बं। एवञ्हि तेसं विपस्सनाञाणगतिकत्ता "आवुतसुत्तं विय विपस्सनाञाण"न्ति वचनं अविरोधितं होति। किं पनेते ञाणस्स आवि भवन्ति, उदाहु पुग्गलस्साति? ञाणस्स। तस्स पन आविभावत्ता पुग्गलस्स आविभूता नाम होन्ति। **ञाणस्साति** च पच्चवेक्खणाञाणस्स।

मग्गञाणस्स अनन्तरं, तस्मा लोकियाभिञ्ञानं परतो छट्ठाभिञ्ञाय पुरतो वत्तब्बं विपस्सनाञाणं। **एवं सन्तेपीति** यदिपायं ञाणानुपुब्बी, एवं सन्तेपि। **एतस्स अन्तरावारो नत्थीति** पञ्चसु लोकियाभिञ्ञासु कथितासु आकङ्खेय्यसुत्तादीसु (म० नि० १.६५) विय छट्ठाभिञ्ञा कथेतब्बाति एतस्स अनभिञ्ञालक्खणस्स विपस्सनाञाणस्स तासं अन्तरावारो न होति। **तस्मा** तत्थ अवसराभावतो **इधेव** रूपावचरचतुत्थज्झानानन्तरमेव **दस्सितं** विपस्सनाञाणं। **यस्मा चाति च**-सद्दो समुच्चयत्थो, तेन न केवलं तदेव, अथ खो इदम्पि कारणं विपस्सनाञाणस्स इधेव दस्सनेति इममत्थं दीपेति। **दिब्बेन चक्खुना भेरवम्पि रूपं पस्सतोति** एत्थ "इद्धिविधञाणेन भेरवं रूपं निम्मिनित्वा चक्खुना पस्सतो"तिपि वत्तब्बं, एवम्पि अभिञ्ञालाभिनो अपरिञ्ञातवत्थुकस्स भयं सन्तासो उप्पज्जति। उच्चावालिकवासि महानागत्थेरस्स विय। **पाटियेक्कं सन्दिट्ठिकं सामञ्ञफलं।** तेनाह भगवा –

"यतो यतो सम्मसति, खन्धानं उदयब्बयं।
लभती पीतिपामोज्जं, अमतं तं विजानत"न्तिआदि।। (ध० प० ३७४)

मनोमयिद्धिञाणकथावण्णना

२३६-७. मनेन निब्बत्तितन्ति अभिञ्ञामनेन निब्बत्तितं। हत्थपादादि **अङ्गेहि च** कप्परजण्णुआदि **पच्चङ्गेहि च। सण्ठानवसेनाति** कमलदलादिसदिससण्ठानमत्तवसेन, न रूपाभिघातारहभूतप्पसादिइन्द्रियवसेन। **सब्बाकारेहीति** वण्णसण्ठानअवयवविसेसादि-सब्बाकारेहि। **तेन** इद्धिमता। **सदिसभावदस्सनत्थमेवाति** सण्ठानतोपि वण्णतोपि अवयवविसेसतोपि सदिसभावदस्सनत्थमेव। **सजातियं ठितो,** न नागिद्धिया अञ्ञजातिरूपो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इद्धिविधञाणादिककथावण्णना

२३९. **सुपरिकम्मकतमत्तिकादयो विय इद्धिविधञाणं** विकुब्बनकिरियाय निस्सयभावतो।

२४१. **सुखन्ति** अकिच्छेन, अकसिरेनाति अत्थो।

२४३. मन्दो उत्तानसेय्यकदारकोपि "दहरो"ति वुच्चतीति ततो विसेसनत्थं "**युवा**"ति वुत्तं। युवापि कोचि अनिच्छनको अमण्डनजातिको होतीति ततो विसेसनत्थं "**मण्डनकजातिको**"तिआदि वुत्तं, तेनाह "**युवापीति**"आदि। काळतिलप्पमाणा बिन्दवो **काळतिलकानि काळा** वा कम्मासा, तिलप्पमाणा बिन्दवो **तिलकानि। वङ्गं** नाम वियङ्गं। योब्बनपीळकादयो **मुखदूसिपीळका**। मुखगतो दोसो **मुखदोसो,** लक्खणवचनञ्चेतं मुखे अदोसस्सापि पाकटभावस्स अधिप्पेतत्ता। यथा वा मुखे दोसो, एवं मुखे अदोसोपि मुखदोसो सरलोपेन। मुखदोसो च मुखदोसो च **मुखदोसो**ति एकसेसनयेनपेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। एवञ्हि "परेसं सोळसविधं चित्तं पाकटं होती"ति वचनं समत्थितं होति।

२४५. **पुब्बेनिवासञाणूपमायन्ति** पुब्बेनिवासञाणस्स दस्सितउपमायं। तं दिवसं कतकिरिया नाम पाकतिकसत्तस्सपि येभुय्येन पाकटा होतीति दस्सनत्थं **तंदिवस**-ग्गहणं कतं। **तंदिवसगतगामत्तय**-ग्गहणेनेव महाभिनीहारेहि अञ्ञेसम्पि पुब्बेनिवासञाणलाभीनं तीसु भवेसु कतकिरिया येभुय्येन पाकटा होतीति दीपितन्ति दट्ठब्बं।

२४७. **अपरापरं सञ्चरन्तेति** तंतंकिच्चवसेन इतो चितो च सञ्चरन्ते। यथावुत्त**पासादोविय भिक्खुनो करजकायो दट्ठब्बो** तत्थ पतिट्ठितस्स दट्ठब्बदस्सनसिद्धितो। चक्खुमतो हि दिब्बचक्खुसमधिगमो। यथाह "मंसचक्खुस्स उप्पादो, मग्गो दिब्बस्स चक्खुनो"ति (इतिवु० ६१)। **चक्खुमा पुरिसो विय अयमेव दिब्बचक्खुं पत्वा ठितो भिक्खु** दट्ठब्बस्स दस्सनतो। **गेहं पविसन्ता विय** एतं अत्तभावगेहं ओक्कमन्ता, उपपज्जन्ताति अत्थो। **गेहा निक्खमन्ता विय** एतस्मा अत्तभावगेहतो पक्कन्ता, चवन्ताति अत्थो। एवं वा एत्थ अत्थो दट्ठब्बो। **अपरापरं सञ्चरणकसत्ता**ति पन पुनप्पुनं संसारे परिब्भमन्ता सत्ता। "**तत्थ तत्थ निब्बत्तसत्ता**"ति पन इमिना तस्मिं भवे जातसंवद्धे सत्ते वदति। ननु चायं दिब्बचक्खुञाणकथा, एत्थ कस्मा "तीसु भवेसू"ति चतुवोकारभवस्सापि सङ्गहो कतोति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आह **"इदञ्चा"**तिआदि। तत्थ **इद**न्ति "तीसु भवेसु निब्बत्तसत्तान"न्ति इदं वचनं। **देसनासुखत्थमेवा**ति केवलं देसनासुखत्थं, न चतुवोकारभवे निब्बत्तसत्तानं दिब्बचक्खुनो आविभावसब्भावतो। न हि "ठपेत्वा अरूपभव"न्ति वा "द्वीसु भवेसू"ति वा वुच्चमाने देसना सुखावबोधा च होतीति।

आसवक्खयञाणकथावण्णना

२४८. **विपस्सनापादक**न्ति विपस्सनाय पदट्ठानभूतं। विपस्सना च तिविधा विपस्सकपुग्गलभेदेन। महाबोधिसत्तानञ्हि पच्चेकबोधिसत्तानञ्च विपस्सना चिन्तामयञाणसंवद्धिता सयम्भुञाणभूता, इतरेसं सुतमयञाणसंवद्धिता परोपदेससम्भूता नाम। सा "ठपेत्वा नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं अवसेसरूपारूपज्झानानं अञ्ञतरतो वुट्ठाया"तिआदिना अनेकधा, अरूपमुखवसेन चतुधातुववत्थाने वुत्तानं तेसं तेसं धातुपरिग्गहमुखानञ्च अञ्ञतरमुखवसेन अनेकधा च विसुद्धिमग्गे नानानयतो विभाविता। महाबोधिसत्तानं पन चतुवीसतिकोटिसतसहस्समुखेन पभेदगमनतो नानानयं सब्बञ्ञुतञाणसन्निस्सयस्स अरियमग्गञाणस्स अधिट्ठानभूतं पुब्बभागञाणगब्भं गण्हापेन्तं परिणतं गच्छन्तं परमगम्भीरं सण्हसुखुमतरं अनञ्ञसाधारणं विपस्सनाञाणं होति, यं अट्ठकथासु "महावजिरञाण"न्ति वुच्चति। यस्स च पवत्तिविभागेन चतुवीसतिकोटिसतसहस्सप्पभेदस्स पादकभावेन समापज्जियमाना चतुवीसतिकोटिसतसहस्ससङ्ख्या देवसिकं सत्थु वळञ्जनकसमापत्तियो वुच्चन्ति, स्वायं बुद्धानं विपस्सनाचारो **परमत्थमञ्जुसायं** विसुद्धिमग्गसंवण्णनायं (विसुद्धि० टी० १.२१६) उद्देसतो दस्सितो। अत्थिकेहि ततो गहेतब्बो, इध पन सावकानं विपस्सना अधिप्पेता।

आसवानं खयञाणायाति आसवानं खेपनतो समुच्छिन्दनतो आसवक्खयो, अरियमग्गो, तत्थ ञाणं आसवानं खयञाणं, तदत्थं तेनाह **"आसवानं खयञाणनिब्बत्तनत्थाया"**ति। आसवा एत्थ खीयन्तीति **आसवानं खयो** निब्बानं। खेपेति पापधम्मेति **खयो,** मग्गो। सो पन पापक्खयो आसवक्खयेन विना नत्थीति "खये ञाण"न्ति एत्थ खयग्गहणेन आसवक्खयो वुत्तोति आह **"खये ञाण"**न्तिआदि। समितपापो समणोति कत्वा आसवानं खीणत्ता समणो नाम होतीति आह **"आसवानं खया समणो होतीति एत्थ फल"**न्ति। आसववड्ढिया सङ्गारे वट्टेन्तो विसङ्गारतो सुविदूरविदूरोति "आरा सो आसवक्खया"ति एत्थ आसवक्खयपदं विसङ्खाराधिवचनन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आह **"आसवक्खयाति एत्थ निब्बानं वुत्त"**न्ति। **भङ्गो**ति आसवानं खणनिरोधो "आसवानं खयो"ति वुत्तोति योजना।

"इदं दुक्ख"न्ति दुक्खस्स अरियसच्चस्स तदा भिक्खुनो पच्चक्खतो गहितभावदस्सनं। **"एत्तकं दुक्ख"**न्ति तस्स परिच्छिज्जगहितभावदस्सनं। **"न इतो भिय्यो"**ति तस्स अनवसेसेत्वा गहितभावदस्सनं। तेनाह **"सब्बम्पि दुक्खसच्च"**न्तिआदि। **सरसलक्खणपटिवेधेना**ति सभावसङ्खातस्स लक्खणस्स असम्मोहतो पटिविज्झनेन, असम्मोहपटिवेधोति च। यथा तस्मिं ञाणे पवत्ते पच्छा दुक्खसच्चस्स सरूपादिपरिच्छेदे सम्मोहो न होति, तथा पवत्ति, तेनाह **"यथाभूतं पजानाती"**ति। दुक्खं समुदेति एतस्माति दुक्खसमुदयो, तण्हाति आह **"तस्स चा"**तिआदि। **यं ठानं पत्वा**ति यं निब्बानं मग्गस्स आरम्मणपच्चयट्ठेन कारणभूतं आगम्म, "पत्वा"ति च तदुभयवतो पुग्गलस्स पत्ति तदुभयस्स पत्ति वियाति कत्वा वुत्तं। **पत्वा**ति वा पापुणनहेतु। **अप्पवत्ती**ति अप्पवत्तिनिमित्तं, ते वा नप्पवत्तन्ति एत्थाति **अप्पवत्ति,** निब्बानं। **तस्सा**ति दुक्खनिरोधस्स। **सम्पापक**न्ति सच्छिकरणवसेन सम्मदेव पापकं।

किलेसवसेनाति आसवसङ्खातकिलेसवसेन। यस्मा आसवानं दुक्खसच्चपरियायो तप्परियापन्नत्ता, सेससच्चानञ्च तंसमुदयादिपरियायो अत्थि, तस्मा वुत्तं **"परियायतो"**ति। दस्सेन्तो सच्चानीति योजना। आसवानंयेव चेत्थ गहणं "आसवानं खयञाणाया"ति आरद्धत्ता। तथा हि "कामासवापि चित्तं विमुच्चती"तिआदिना (दी० नि० १.२४८; म० नि० १.४३३; म० नि० ३.१९) आसवविमुत्तिसीसेनेव सब्बकिलेसविमुत्ति वुत्ता। "इदं दुक्खन्ति यथाभूतं पजनाती"तिआदिना मिस्सकमग्गो इध कथितोति **"सह विपस्सनाय कोटिप्पत्तं मग्गं कथेसी"**ति वुत्तं। **"जानतो पस्सतो"**ति इमिना परिञ्ञासच्छिकिरियाभावनाभिसमया वुत्ता। "विमुच्चती"ति इमिना पहानाभिसमयो वुत्तोति आह **"इमिना मग्गक्खणं दस्सेती"**ति। **"जानतो पस्सतो"**ति वा हेतुनिद्देसोयं। जाननहेतु दस्सनहेतु कामासवापि चित्तं विमुच्चतीति योजना। धम्मानञ्हि समानकालिकानम्पि पच्चयप्पच्चयुप्पन्नता सहजातकोटिया लब्भतीति। भवासवग्गहणेन चेत्थ भवरागस्स विय भवदिट्ठियापि समवरोधोति दिट्ठासवस्सापि सङ्गहो दट्ठब्बो। **खीणा जातीतिआदीहि** पदेहि। **तस्सा**ति पच्चवेक्खणाञाणस्स। **भूमि**न्ति पवत्तिट्ठानं।

येनाधिप्पायेन "कतमा पनस्सा"तिआदिना चोदना कता, तं विवरन्तो **"न**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तावस्सा''तिआदिमाह। तत्थ **न तावस्स अतीता जाति खीणा** मग्गभावनायाति अधिप्पायो। तत्थ कारणमाह **''पुब्बेव खीणत्ता''**ति। न अनागता अस्स जाति खीणाति योजना। **न अनागता**ति च अनागतभावसामञ्ञं गहेत्वा लेसेन चोदेति, तेनाह **''अनागते वायामाभावतो''**ति। अनागतविसेसो पनेत्थ अधिप्पेतो, तस्स च खेपने वायामोपि लब्भतेव, तेनाह **''या पन मग्गस्सा''**तिआदि। **एकचतुपञ्चवोकारभवेसू**ति भवत्तयग्गहणं वुत्तनयेन अनवसेसतो जातिया खीणभावदस्सनत्थं। **त**न्ति यथावुत्तं जातिं। **सो**ति खीणासवो भिक्खु।

ब्रह्मचरियवासो नाम उक्कट्ठनिद्देसेन मग्गब्रह्मचरियस्स निब्बत्तनं एवाति आह **''परिवुत्थ''**न्ति। सम्मादिट्ठिया चतूसु सच्चेसु परिञ्ञादिकिच्चसाधनवसेन पवत्तमानाय सम्मासङ्कप्पादीनम्पि दुक्खसच्चे परिञ्ञाभिसमयानुगुणा पवत्ति, इतरसच्चेसु च नेसं पहानाभिसमयादिपवत्ति पाकटा एव, तेन वुत्तं **''चतूसु सच्चेसु चतूहि मग्गेहि परिञ्ञापहानसच्छिकिरियाभावनावसेना''**ति। दुक्खनिरोधमग्गेसु परिञ्ञासच्छिकिरियाभावना यावदेव समुदयप्पहानत्थायाति आह **''तेन तेन मग्गेन पहातब्बकिलेसा पहीना''**ति। **इत्थत्तायाति** इमे पकारा इत्थं, तब्भावो इत्थत्तं, तदत्थन्ति वुत्तं होति। ते पन पकारा अरियमग्गब्यापारभूता परिञ्ञादयो इधाधिप्पेताति आह **''एवं सोळसकिच्चभावाया''**ति। ते हि मग्गं पच्चवेक्खतो मग्गानुभावेन पाकटा हुत्वा उपट्ठहन्ति, परिञ्ञादीसु च पहानमेव पधानं तदत्थत्ता इतरेसन्ति आह **''किलेसक्खयभावाय वा''**ति। पहीनकिलेसपच्चवेक्खणवसेन वा एवं वुत्तं। दुतियविकप्पे **इत्थत्तायाति** निस्सक्के सम्पदानवचनन्ति आह **''इत्थभावतो''**ति। **अपर**न्ति अनागतं। **इमे पन** चरिमकत्तभावसङ्खाता **पञ्चक्खन्धा परिञ्ञाता तिट्ठन्ति,** एतेन तेसं अप्पतिट्ठतं दस्सेति। अपरिञ्ञामूलिका हि पतिट्ठा। यथाह ''कबळीकारे चे भिक्खवे आहारे अत्थि रागो अत्थि नन्दी अत्थि तण्हा, पतिट्ठितं तत्थ विञ्ञाणं विरूळ्ह''न्तिआदि। (सं० नि० १.२.६४; कथाव० २९६; महानि० ७) तेनेवाह **''छिन्नमूलका रुक्खा विया''**तिआदि।

२४९. पब्बतमत्थकेति पब्बतसिखरे। तञ्हि येभुय्येन सङ्खित्तं सङ्कुचितं होतीति पाळियं ''पब्बतसङ्खेपे''ति वुत्तं। पब्बतपरियापन्नो वा पदेसो **पब्बतसङ्खेपो**। **अनाविलो**ति अकालुसियो, सा चस्स अनाविलता कद्दमाभावेन होतीति आह **''निक्कद्दमो''**ति। **सिप्पियो**ति सुत्तियो। **सम्बुका**ति सङ्खलिका। **ठितासुपि निसिन्नासुपि** गावीसु। **विज्जमानासू**ति लब्भमानासु, इतरा ठितापि निसिन्नापि ''चरन्ती''ति वुच्चन्ति सहचरणनयेन। **तिट्ठन्तमेव,** न पन कदाचिपि चरन्तं। **द्वयन्ति** सिप्पिसम्बुकं, मच्छगुम्बन्ति इदं उभयं। **तिट्ठन्तन्ति वुत्तं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरन्तं पीति अधिप्पायो। **"इतरञ्च द्वय"**न्ति च यथावुत्तमेव सिप्पिसम्बुकादिद्वयं वदति। तञ्हि चरतीति। किं वा इमाय सहचरियाय, यथालाभग्गहणं पनेत्थ दट्ठब्बं। सक्खरकथलस्स हि वसेन तिट्ठन्तन्ति। सिप्पिसम्बुकस्स मच्छगुम्बस्स च वसेन तिट्ठन्तम्पि चरन्तं पीति योजना कातब्बा।

तेसं दसन्नं ञाणानं। **तत्था**ति तस्मिं आरम्मणविभागे, तेसु वा ञाणेसु। भूमिभेदतो, कालभेदतो, सन्तानभेदतो चाति **सत्तविधारम्मणं विपस्सनाञाणं। "रूपायतनमत्तमेवा"**ति इदं तस्स ञाणस्स अभिनिम्मियमाने मनोमये काये रूपायतनमेवारब्भ पवत्तनतो वुत्तं, न तत्थ गन्धायतं आदीनं अभावतो। न हि रूपकलापो गन्धायतं आदिरहितो अत्थि। परिनिप्फन्नमेव निम्मितरूपं, तेनाह **"परित्तपच्चुप्पन्नबहिद्धारम्मण"**न्ति। आसवक्खयञाणं निब्बानारम्मणमेव समानं परित्तत्तिकवसेन अप्पमाणारम्मणं, अज्झत्तत्तिकवसेन बहिद्धारम्मणं, अतीतत्तिकवसेन नवत्तब्बारम्मणञ्च होतीति आह **"अप्पमाणबहिद्धानवत्तब्बारम्मण"**न्ति। कूटो विय कूटागारस्स भगवतो देसनाय अरहत्तं उत्तमङ्गभूतन्ति आह **"अरहत्तनिकूटेना"**ति। **देसनं निट्ठापेसी**ति तित्थकरमतहरविभाविनिं नानाविधकुहनलपनादिमिच्छाजीवविद्धंसिनिं तिविधसीलालङ्कतं परमसल्लेखपटिपत्तिदीपनिं झानाभिञ्ञादिउत्तरिमनुस्सधम्मविभूसितं चुद्दसविधमहासामञ्ञफलपटिमण्डितं अनञ्ञसाधारणं देसनं निट्ठापेसि।

अजातसत्तुउपासकत्तपटिवेदनाकथावण्णना

२५०. **आदिमज्झपरियोसान**न्ति आदिञ्च मज्झञ्च परियोसानञ्च। **सक्कच्चं** सगारवं। **आरद्धं** धम्मसङ्गाहकेहि।

अभिक्कन्ता विगताति अत्थोति आह **"खये दिस्सती"**ति। तथा हि "निक्खन्तो पठमो यामो"ति उपरि वुत्तं। **अभिक्कन्ततरो**ति अतिविय कन्ततरो मनोरमो, तादिसो च सुन्दरो भद्दको नाम होतीति आह **"सुन्दरे दिस्सती"**ति। **को**ति देवनागयक्खगन्धब्बादीसु को कतमो। **मे**ति मम। **पादानी**ति पादे। **इद्धिया**ति इमाय एवरूपाय देविद्धिया। **यससा**ति इमिना एदिसेन परिवारेन, परिजनेन च। **जलन्ति** विज्जोतमानो। **अभिक्कन्तेना**ति अतिविय कन्तेन कमनीयेन अभिरूपेन। **वण्णेना**ति छविवण्णेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरीरवण्णनिभाय। **सब्बा ओभासयं दिसा**ति दसपि दिसा पभासेन्तो चन्दो विय, सूरियो विय च एकोभासं एकालोकं करोन्तोति गाथाय अत्थो। **अभिरूपे**ति उळाररूपे सम्पन्नरूपे।

"चोरो चोरो, सप्पो सप्पो"तिआदीसु **भये आमेडितं,** "विज्झ विज्झ, पहर पहरा"तिआदीसु **कोधे,** "साधु साधूतिआदीसु (म० नि० १.३२७; सं० नि० १.२.१२७; २.३.३५; ३.५.१००५) **पसंसायं,** "गच्छ गच्छ, लुनाहि लुनाही"तिआदीसु **तुरिते,** "आगच्छ आगच्छा"तिआदीसु **कोतूहले,** "बुद्धो बुद्धोति चिन्तेन्तो"तिआदीसु (बु० वं० ४४) **अच्छरे,** "अभिक्कमथायस्मन्तो अभिक्कमथायस्मन्तो"तिआदीसु (दी० नि० ३.२०; अ० नि० ३.९.११) **हासे,** "कहं एकपुत्तक कहं एकपुत्तका"तिआदीसु (सं० नि० १.२.६३) **सोके,** "अहो सुखं अहो सुख"न्तिआदीसु (उदा० २०; दी० नि० ३.३०५; चूळव० ३३२) **पसादे। च-**सद्दो अवुत्तसमुच्चयत्थो, तेन गरहाअसम्मानादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। तत्थ "पापो पापो"तिआदीसु **गरहायं,** "अभिरूपक अभिरूपका"तिआदीसु **असम्माने** दट्ठब्बं।

नयिदं आमेडितवसेन द्विक्खत्तुं वुत्तं, अथ खो अत्थद्वयवसेनाति दस्सेन्तो **"अथ वा"**तिआदिमाह "अभिक्कन्त"न्ति वचनं अपेक्खित्वा नपुंसकलिङ्गवसेन वुत्तं। तं पन भगवतो वचनं धम्मस्स देसनाति कत्वा तथा वुत्तं। अत्थमत्तदस्सनं वा एतं, तस्मा अत्थवसेनेत्थ लिङ्गविभत्तिपरिणामो वेदितब्बो। दुतियपदेपि एसेव नयो। **दोसनासनतो**ति रागादिकिलेसविधमनतो। **गुणाधिगमनतो**ति सीलादिगुणानं सम्पादनतो। ये गुणे देसना अधिगमेति, तेसु पधानभूता दस्सेतब्बाति ते पधानभूते ताव दस्सेतुं **"सद्धाजननतो पञ्ञाजननतो"**ति वुत्तं। सद्धापमुखा हि लोकिया गुणा पञ्ञापमुखा लोकुत्तरा। सीलादिअत्थसम्पत्तिया **सात्थतो।** सभावनिरुत्तिसम्पत्तिया **सब्यञ्जनतो।** सुविञ्ञेय्यसद्दपयोगताय **उत्तानपदतो।** सण्हसुखुमभावेन दुब्बिञ्ञेय्यत्थताय **गम्भीरत्थतो।** सिनिद्धमुदुमधुरसद्दपयोगताय **कण्णसुखतो।** विपुलविसुद्धपेमनीयत्थताय **हदयङ्गमतो।** मानातिमानविधमनेन **अनत्तुक्कंसनतो।** थम्भसारम्भनिम्मद्दनेन **अपरवम्भनतो।** हिताधिप्पायप्पवत्तिया, परेसं रागपरिळाहादिवूपगमनेन च **करुणासीतलतो।** किलेसन्धकारविधमनेन **पञ्ञावदाततो।** करवीकरुतमञ्जुताय **आपाथरमणीयतो।** पुब्बापराविरुद्धसुविसुद्धताय **विमद्दक्खमतो।** आपाथरमणीयताय एव **सुय्यमानसुखतो।** विमद्दक्खमताय, हितज्झासयप्पवत्तिताय च **वीमंसियमानहिततो। एवमादीही**ति **आदि-**सद्देन संसारचक्कनिवत्तनतो सद्धम्मचक्कप्पवत्तनतो, मिच्छावादविद्धंसनतो सम्मावादपतिट्ठापनतो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकुसलमूलसमुद्धरणतो कुसलमूलसंरोपनतो, अपायद्वारपिधानतो सग्गमग्गद्वारविवरणतो, परियुट्ठानवूपसमनतो अनुसयसमुग्घाटनतोति एवमादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो।

अधोमुखट्ठपितन्ति केनचि अधोमुखं ठपितं। **हेट्ठामुखजात**न्ति सभावेनेव हेट्ठामुखं जातं। **उग्घाटेय्याति** विवटं करेय्य। **हत्थे गहेत्वा** "पुरत्थाभिमुखो, उत्तराभिमुखो वा गच्छा"तिआदीनि अवत्वा हत्थे गहेत्वा निस्सन्देहं कत्वा। "एस मग्गो, एवं गच्छा"ति दस्सेय्य। **काळपक्खचातुद्दसी**ति काळपक्खे चातुद्दसी। **निक्कुज्जितं** आधेय्यस्स अनाधारभूतं भाजनं आधारभावापादनवसेन **उक्कुज्जेय्य।** अञ्ञाणस्स अभिमुखत्ता हेट्ठामुखजातताय **सद्धम्मविमुखं** अधोमुखट्ठपितताय **असद्धम्मे पतित**न्ति एवं पदद्वयं यथारहं योजेतब्बं, न यथासङ्ख्यं। कामं कामच्छन्दादयो पटिच्छादका नीवरणभावतो, मिच्छादिट्ठि पन सविसेसं पटिच्छादिका सत्ते मिच्छाभिनिवेसनवसेनाति आह **"मिच्छादिट्ठिगहनपटिच्छन्न"**न्ति। तेनाह भगवा "मिच्छादिट्ठिपरमाहं भिक्खवे वज्जं वदामी"ति। सब्बो अपायगामिमग्गो **कुम्मग्गो** कुच्छितो मग्गोति कत्वा। सम्मादिट्ठिआदीनं उजुपटिपक्खताय मिच्छादिट्ठिआदयो अट्ठ मिच्छत्तधम्मा मिच्छामग्गा। तेनेव हि तदुभयपटिपक्खतं सन्धाय **"सग्गमोक्खमग्गं आविकरोन्तेना"**ति वुत्तं। सप्पिआदिसन्निस्सयो पदीपो न तथा उज्जलो, यथा तेलसन्निस्सयोति **तेलपज्जोत**-ग्गहणं। **एतेहि परियायेही**ति एतेहि निक्कुज्जितुक्कुज्जनपटिच्छन्नविवरणादिउपमोपमितब्बप्पकारेहि, एतेहि वा यथावुत्तेहि नानाविधकुहनलपनादिमिच्छाजीवविविधमनादिविभावनपरियायेहि। तेनाह **"अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो"**ति।

पसन्नकारन्ति पसन्नेहि कातब्बं सक्कारं। **सरण**न्ति पटिसरणं, तेनाह **"परायण"**न्ति। परायणभावो च अनत्थनिसेधनेन, अत्थसम्पटिपादनेन च होतीति आह **"अघस्स ताता, हितस्स च विधाता"**ति। **अघस्सा**ति दुक्खतोति वदन्ति, पापतोति पन अत्थो युत्तो, निस्सक्के चेतं सामिवचनं। एत्थ च नायं **गमु-**सद्दो नी-सद्दादयो विय द्विकम्मको, तस्मा यथा "अजं गामं नेती"ति वुच्चति, एवं "भगवन्तं सरणं गच्छामी"ति वत्तुं न सक्का, "सरणन्ति गच्छामी"ति पन वत्तब्बं। इति-सद्दो चेत्थ लुत्तनिद्दिट्ठो। तस्स चायमत्थो। गमनञ्च तदधिप्पायेन भजनं जाननं वाति दस्सेन्तो **"इमिना अधिप्पायेना"**तिआदिमाह। तत्थ **"भजामी"**तिआदीसु पुरिमस्स पुरिमस्स पच्छिमं पच्छिमं अत्थवचनं, **भजनं** वा सरणाधिप्पायेन उपसङ्कमनं, **सेवनं** सन्तिकावचरता, **पयिरुपासनं** वत्तपटिवत्तकरणेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपट्ठानन्ति एवं सब्बथापि अनञ्ञसरणतंयेव दीपेति। **"गच्छामी"**ति पदस्स बुज्झामीति अयमत्थो कथं लब्भतीति आह **"येसञ्ही"**तिआदि।

"अधिगतमग्गे सच्छिकतनिरोधे"ति पदद्वयेनापि फलट्ठा एव दस्सिता, न मग्गट्ठाति ते दस्सेन्तो **"यथानुसिट्ठं पटिपज्जमाने चा"**तिआदिमाह। ननु च कल्याणपुथुज्जनोपि "यथानुसिट्ठं पटिपज्जती"ति वुच्चतीति ? किञ्चापि वुच्चति, निप्परियायेन पन मग्गट्ठा एव तथा वत्तब्बा, न इतरो नियामोक्कमनाभावतो। तथा हि ते एव वुत्ता **"अपायेसु अपतमाने धारेती"**ति। सम्मत्तनियामोक्कमनेन हि अपायविनिमुत्तसम्भवो। **अक्खायतीति** एत्थ **इति-**सद्दो आदिअत्थो, पकारत्थो वा, तेन "यावता भिक्खवे धम्मा सङ्खता वा असङ्खता वा, विरागो तेसं अग्गं अक्खायती"ति (इतिवु० ९०; अ० नि० ४.३४) सुत्तपदं सङ्गण्हाति, **"वित्थारो"**ति वा इमिना। एत्थ च **अरियमग्गो** निय्यानिकताय, **निब्बानं** तस्स तदत्थसिद्धिहेतुतायाति उभयमेव निप्परियायेन "धम्मो"ति वुत्तो। निब्बानञ्हि आरम्मणपच्चयभूतं लभित्वा अरियमग्गस्स तदत्थसिद्धि। तथापि यस्मा अरियफलानं "ताय सद्धाय अवूपसन्ताया"तिआदि वचनतो मग्गेन समुच्छिन्नानं किलेसानं पटिपस्सद्धिप्पहानकिच्चताय, निय्यानानुगुणताय, निय्यानपरियोसानताय च, परियत्तिधम्मस्स पन "निय्यानधम्मस्स समधिगमनहेतुताया"ति इमिना परियायेन वुत्तनयेन धम्मभावो लब्भति एव। स्वायमत्थो पाठारूळ्हो एवाति दस्सेन्तो **"न केवल"**न्तिआदिमाह।

"कामरागो भवरागो"ति एवमादि भेदो सब्बोपि रागो विरज्जति एतेनाति **रागविरागोति मग्गो कथितो।** एजासङ्खाताय तण्हाय, अन्तोनिज्झानलक्खणस्स सोकस्स च तदुप्पत्तियं सब्बसो परिक्खीणत्ता **अनेजं असोकन्ति फलं कथितं। अप्पटिकूलन्ति** अविरोधदीपनतो केनचि अविरुद्धं, इट्ठं पणीतन्ति वा अत्थो। पगुणरूपेन पवत्तितत्ता, पकट्ठगुणविभावनतो वा **पगुणं।** यथाह "विहिंससञ्ञी पगुणं न भासिं, धम्मं पणीतं मनुजेसु ब्रह्मे"ति। (म० नि० १.२८३; म० नि० २.३३९; महाव० ९) सब्बधम्मक्खन्धा कथिताति योजना।

दिट्ठिसीलसङ्घातेनाति "यायं दिट्ठि अरिया निय्यानिका निय्याति तक्करस्स सम्मा दुक्खक्खयाय, तथारूपाय दिट्ठिया दिट्ठिसामञ्ञगतो विहरती"ति (दी० नि० ३.३२४; म० नि० १.४.९२; ३.५४) एवं वुत्ताय दिट्ठिया, "यानि तानि सीलानि अखण्डानि अच्छिद्दानि असबलानि अकम्मासानि भुजिस्सानि विञ्ञुप्पसत्थानि अपरामट्ठानि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाधिसंवत्तनिकानि, तथारूपेहि सीलेहि सीलसामञ्ञगतो विहरती''ति (दी० नि० ३.३२३; म० नि० १.४९२; ३.५४; अ० नि० २.६.११; परि० २७४) एवं वुत्तानं सीलानञ्च संहतभावेन, दिट्ठिसीलसामञ्ञेनाति अत्थो। **संहतो**ति घटितो, समेतोति अत्थो। अरियपुग्गला हि यत्थ कत्थचि दूरे ठितापि अत्तनो गुणसामग्गिया संहता एव। **अट्ठ च पुग्गलधम्मदसा ते**ति ते पुरिसयुगवसेन चत्तारोपि पुग्गलवसेन अट्ठेव अरियधम्मस्स पच्चक्खदस्साविताय धम्मदसा। तीणि वत्थूनि ''सरण''न्ति गमनेन, तिक्खत्तुं गमनेन च **तीणि सरणगमनानि**। **पटिवेदेसी**ति अत्तनो हदयगतं वाचाय पवेदेसि।

सरणगमनकथावण्णना

सरणगमनस्स विसयप्पभेदफलसंकिलेसभेदानं विय कत्तु च विभावना तत्थ कोसल्लाय होतीति **''सरणगमनेसु कोसल्लत्थं सरणं...पे०... वेदितब्बो''**ति वुत्तं तेन विना सरणगमनस्सेव असम्भवतो। कस्मा पनेत्थ वोदानं न गहितं, ननु वोदानविभावनापि तत्थ कोसल्लावहाति? सच्चमेतं, तं पन संकिलेसग्गहणेनेव अत्थतो दीपितं होतीति न गहितं। यानि हि नेसं संकिलेसकारणानि अञ्ञाणादीनि, तेसं सब्बेन सब्बं अनुप्पन्नानं अनुप्पादनेन, उप्पन्नानञ्च पहानेन वोदानं होतीति। हिंसत्थस्स सर-सद्दस्स वसेनेतं पदं दट्ठब्बन्ति ''हिंसतीति सरण''न्ति वत्वा तं पन हिंसनं केसं कथं कस्स वाति चोदनं सोधेन्तो **''सरणगतान''**न्तिआदिमाह। तत्थ **भय**न्ति वट्टभयं। **सन्तास**न्ति चित्तुत्रासं तेनेव चेतसिकदुक्खस्स गहितत्ता। **दुक्ख**न्ति कायिकदुक्खं। **दुग्गतिपरिकिलेस**न्ति दुग्गतिपरियापन्नं सब्बम्पि दुक्खं, तयिदं सब्बं परतो फलकथायं आविभविस्सति। **एत**न्ति ''सरण''न्ति पदं।

एवं अविसेसतो सरण-सद्दस्स अत्थं दस्सेत्वा इदानि विसेसतो दस्सेतुं **''अथ वा''**तिआदि वुत्तं। **हिते पवत्तनेना**ति ''सम्पन्नसीला भिक्खवे विहरथा''तिआदिना (म० नि० १.६४, ६९) अत्थे नियोजनेन। **अहिता च निवत्तनेना**ति। ''पाणातिपातस्स खो पापको विपाको, पापकं अभिसम्पराय''न्तिआदिना आदीनवदस्सनादिमुखेन अनत्थतो निवत्तनेन। **भयं हिंसती**ति हिताहितेसु अप्पवत्तिपवत्तिहेतुकं ब्यसनं अप्पवत्तिकरणेन विनासेति। भवकन्तारा उत्तारणेन मग्गसङ्खातो धम्मो, इतरो अस्सासदानेन सत्तानं भयं हिंसतीति योजना। **कारान**न्ति दानवसेन पूजावसेन च उपनीतानं सक्कारानं। विपुलफलपटिलाभकरणेन सत्तानं भयं हिंसतीति योजना, अनुत्तरदक्खिणेय्यभावतोति अधिप्पायो। **इमिनापि परियायेना**ति इमिनापि विभजित्वा वुत्तेन कारणेन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"सम्मासम्बुद्धो भगवा, स्वाक्खातो धम्मो, सुप्पटिपन्नो सङ्घो"ति एवं पवत्तो तत्थ रतनत्तये पसादो तप्पसादो, तदेव रतनत्तयं गरु एतस्साति तग्गरु तब्भावो तग्गरुता, तप्पसादो च तग्गरुता च तप्पसादतग्गरुता, ताहि **तप्पसादतग्गरुताहि।** विधूतदिट्ठिविचिकिच्छासम्मोहअस्सद्धियादिताय **विहतकिलेसो।** तदेव रतनत्तयं परायणं परागति ताणं लेणन्ति एवं पवत्तिया **तप्परायणताकारप्पवत्तो चित्तुप्पादो सरणगमनं** सरणं गच्छति एतेनाति। **तंसमङ्गी**ति तेन यथावुत्तचित्तुप्पादेन समन्नागतो। **एवं उपेती**ति भजति सेवति पयिरुपासति, एवं वा जानाति बुज्झतीति एवमत्थो वेदितब्बो। एत्थ च **पसाद-**ग्गहणेन लोकियसरणगमनमाह। तञ्हि पसादप्पधानं। **गरुता**गहणेन लोकुत्तरं। अरिया हि रतनत्तयं गुणाभिञ्ञताय पासाणच्छत्तं विय गरुं कत्वा पस्सन्ति। तस्मा तप्पसादेन विक्खम्भनवसेन विगतकिलेसो, तग्गरुताय समुच्छेदवसेनाति योजेतब्बं अगारवकरणहेतूनं समुच्छिन्दनतो। तप्परायणता पनेत्थ तग्गतिकताति ताय चतुब्बिधम्पि वक्खमानं सरणगमनं गहितन्ति दट्ठब्बं। अविसेसेन वा पसादगरुता जोतितताति **पसाद**ग्गहणेन अवेच्चप्पसादस्स इतरस्स च गहणं, तथा **गरुता**गहणेनाति उभयेनापि उभयं सरणगमनं योजेतब्बं।

मग्गक्खणे इज्झतीति योजना। **"निब्बानारम्मणं हुत्वा"**ति एतेन अत्थतो चतुसच्चाधिगमो एव लोकुत्तरसरणगमनन्ति दस्सेति। तत्थ हि निब्बानधम्मं सच्छिकिरियाभिसमयवसेन, मग्गधम्मो भावनाभिसमयवसेन पटिविज्झियमानोयेव सरणगमनत्थं साधेति। बुद्धगुणा पन सावकगोचरभूता परिञ्ञाभिसमयवसेन, तथा अरियसङ्घगुणा, तेनाह **"किच्चतो सकलेपि रतनत्तये इज्झती"**ति। इज्झन्तञ्च सहेव इज्झति, न लोकियं विय पतिपाटिया असम्मोहपटिवेधेन पटिविद्धत्ताति अधिप्पायो। ये पन वदन्ति "न सरणगमनं निब्बानारम्मणं हुत्वा पवत्तति। मग्गस्स अधिगतत्ता पन अधिगतमेव होति एकच्चानं तेविज्जादीनं लोकियविज्जादयो विया"ति, तेसं लोकियमेव सरणगमनं सिया, न लोकुत्तरं, तञ्च अयुत्तं दुविधस्सापि इच्छितब्बत्ता।

तन्ति लोकियं सरणगमनं। **सद्धापटिलाभो** "सम्मासम्बुद्धो भगवा"तिआदिना। **सद्धामूलिका**ति यथावुत्तसद्धापुब्बङ्गमा सम्मादिट्ठिति बुद्धसुबुद्धतं, धम्मसुधम्मतं, सङ्घसुप्पटिपत्तिञ्च लोकियावबोधवसेनेव सम्मा ञायेन दस्सनतो। **"सद्धामूलिका सम्मादिट्ठी"**ति एतेन सद्धूपनिस्सया यथावुत्तलक्खणा पञ्ञा लोकियसरणगमनन्ति दस्सेति, तेनाह **"दिट्ठिजुकम्मन्ति वुच्चती"**ति। दिट्ठि एव अत्तनो पच्चयेहि उजु करीयतीति कत्वा दिट्ठि वा उजु करीयति एतेनाति **दिट्ठिजुकम्मं,** तथा पवत्तो चित्तुप्पादो। एवञ्च कत्वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"तप्परायणताकारप्पवत्तो चित्तुप्पादो"ति इदं वचनं समत्थितं होति। सद्धापुब्बङ्गमसम्मादिट्ठिग्गहणं पन चित्तुप्पादस्स तप्पधानतायाति दट्ठब्बं। **"सद्धापटिलाभो"**ति इमिना मातादीहि उस्साहितदारकादीनं विय ञाणविप्पयुत्तं सरणगमनं दस्सेति, **"सम्मादिट्ठी"**ति इमिना ञाणसम्पयुत्तं सरणगमनं। **तयिदं** लोकियं सरणगमनं। अत्ता सन्निय्यातीयति अप्पीयति परिच्चजीयति एतेनाति **अत्तसन्निय्यातनं,** यथावुत्तं दिट्ठिजुकम्मं। तं रतनत्तयं परायणं पटिसरणं एतस्साति तप्परायणो, पुग्गलो, चित्तुप्पादो वा। तस्स भावो **तप्परायणता,** यथावुत्तं दिट्ठिजुकम्ममेव। "सरण"न्ति अधिप्पायेन सिस्सभावं अन्तेवासिकभावं उपगच्छति एतेनाति **सिस्सभावूपगमनं**। सरणगमनाधिप्पायेनेव पणिपतति एतेनाति **पणिपातो**। सब्बत्थ यथावुत्तदिट्ठिजुकम्मवसेनेव अत्थो वेदितब्बो।

अत्तपरिच्चजनन्ति संसारदुक्खनित्थरणत्थं अत्तनो अत्तभावस्स परिच्चजनं। एसेव नयो सेसेसुपि। **बुद्धादीनं येवा**ति अवधारणं अत्तसन्निय्यातनादीसुपि तत्थ तत्थ वत्तब्बं। एवञ्हि तदञ्ञनिवत्तनं कतं होति।

एवं अत्तसन्निय्यातनादीनि एकेन पकारेन दस्सेत्वा इदानि अपरेहिपि पकारेहि दस्सेतुं **"अपिचा"**तिआदि आरद्धं, तेन परियायन्तरेहिपि अत्तसन्निय्यातनादि कतमेव होति अत्थस्स अभिन्नत्ताति दस्सेति। **आळवकादीन**न्ति **आदि-**सद्देन सातागिरहेमवतादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। ननु चेते आळवकादयो मग्गेनेव आगतसरणगमना, कथं तेसं तप्परायणतासरणगमनं वुत्तन्ति ? मग्गेनागतसरणगमनेहिपि। "सो अहं विचरिस्सामि...पे०... सुधम्मतं" (सं० नि० १.१.२४६; सु० नि० १९४) "ते मयं विचरिस्साम, गामा गामं नगा नगं...पे०... सुधम्मत"न्ति, (सु० नि० १८२) तेहि तप्परायणताकारस्स पवेदितत्ता तथा वुत्तं।

सो पनेस ञाति...पे०... वसेनाति एत्थ ञातिवसेन, भयवसेन, आचरियवसेन, दक्खिणेय्यवसेनाति पच्चेकं योजेतब्बं। तत्थ **ञातिवसेना**ति ञातिभाववसेन। एवं सेसेसुपि। **दक्खिणेय्यपणिपातेना**ति दक्खिणेय्यताहेतुकेन पणिपातेन। **इतरेही**ति ञातिभावादिवसप्पवत्तेहि तीहि पणिपातेहि। "इतरेही"तिआदिना सङ्खेपतो वुत्तमत्थं वित्थारतो दस्सेतुं **"तस्मा"**तिआदि वुत्तं। **वन्दती**ति पणिपातस्स लक्खणवचनं। **एवरूप**न्ति दिट्ठधम्मिकं सन्धाय वदति। सम्परायिकञ्हि निय्यानिकं वा अनुसासनिं पच्चासिसन्तो दक्खिणेय्यपणिपातमेव करोतीति अधिप्पायो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरणगमनप्पभेदोति सरणगमनविभागो।

अरियमग्गो एव लोकुत्तरं सरणगमनन्ति **"चत्तारि सामञ्ञफलानि विपाकफल"**न्ति वुत्तं। **सब्बदुक्खक्खयो**ति सकलस्स वट्टदुक्खस्स अनुप्पादनिरोधो। **एतन्ति** "चत्तारि अरियसच्चानि, सम्मप्पञ्ञाय पस्सती"ति एवं वुत्तं अरियसच्चस्स दस्सनं।

निच्चादितो अनुपगमनादिवसेनाति "निच्च"न्ति अग्गहणादिवसेन। **अट्ठानन्ति** हेतुपटिक्खेपो। **अनवकासो**ति पच्चयपटिक्खेपो। उभयेनापि कारणमेव पटिक्खिपति। **यन्ति** येन कारणेन। **दिट्ठिसम्पन्नो**ति मग्गदिट्ठिया समन्नागतो सोतापन्नो। **कञ्चि सङ्खारन्ति** चतुभूमकेसु सङ्खतसङ्खारेसु एकसङ्खारम्पि। **निच्चतो उपगच्छेय्या**ति "निच्चो"ति गण्हेय्य। **"सुखतो उपगच्छेय्या"**ति। "एकन्तसुखी अत्ता होति अरोगो परं मरणा"ति (दी० नि० १.७६) एवं अत्तदिट्ठिवसेन सुखतो गाहं सन्धायेतं वुत्तं। दिट्ठिविप्पयुत्तचित्तेन पन अरियसावको परिळाहवूपसमनत्थं मत्तहत्थिपरित्तासितो विय चोक्खब्राह्मणो उक्कारभूमिं **कञ्चि सङ्खारं सुखतो उपगच्छति**। अत्तवारे कसिणादिपञ्ञत्तिसङ्गहत्थं "सङ्खार"न्ति अवत्वा **"कञ्चि धम्म"**न्ति वुत्तं। इमेसुपि वारेसु चतुभूमकवसेनेव परिच्छेदो वेदितब्बो, तेभूमकवसेनेव वा। यं यञ्हि पुथुज्जनो गाहवसेन गण्हाति, ततो ततो अरियसावको गाहं विनिवेठेति।

"मातर"न्तिआदीसु जनिका **माता,** जनको **पिता,** मनुस्सभूतो खीणासवो **अरहा**ति अधिप्पेतो। किं पन अरियसावको अञ्ञं जीविता वोरोपेय्याति? एतम्पि अट्ठानं, पुथुज्जनभावस्स पन महासावज्जभावदस्सनत्थं, अरियसावकस्स च फलदस्सनत्थं एवं वुत्तं। **दुट्ठचित्तो**ति वधकचित्तेन पदुट्ठचित्तो। **लोहितं उप्पादेय्या**ति जीवमानकसरीरे खुद्दकमक्खिकाय पिवनमत्तम्पि लोहितं उप्पादेय्य। **सङ्घं भिन्देय्या**ति समानसंवासकं समानसीमायं ठितं सङ्घं। "कम्मेन, उद्देसेन, वोहरन्तो, अनुस्सावनेन, सलाकग्गाहेना"ति (परि० ४५८) एवं वुत्तेहि पञ्चहि कारणेहि भिन्देय्य। **अञ्ञं सत्थार**न्ति अञ्ञं तित्थकरं "अयं मे सत्था"ति एवं गण्हेय्य, नेतं ठानं विज्जतीति अत्थो। **न ते गमिस्सन्ति अपायभूमि**न्ति ते बुद्धं सरणं गता तंनिमित्तं अपायं न गमिस्सन्ति, देवकायं पन परिपूरेस्सन्तीति अत्थो।

दसहि ठानेहीति दसहि कारणेहि। **अधिगण्हन्ती**ति अभिभवन्ति। **वेलामसुत्तादिवसेनापी**ति एत्थ करीसस्स चतुत्थभागप्पमाणानं चतुरासीतिसहस्ससङ्ख्यानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवण्णपातिरूपियपातिकंसपातीनं यथाक्कमं रूपियसुवण्णहिरञ्ञपूरानं, सब्बालङ्कारपटिमण्डितानं चतुरासीतिया हत्थिसहस्सानं, चतुरासीतिया अस्ससहस्सानं, चतुरासीतिया रथसहस्सानं, चतुरासीतिया धेनुसहस्सानं, चतुरासीतिया कञ्ञासहस्सानं, चतुरासीतिया पल्लङ्कसहस्सानं, चतुरासीतिया वत्थकोटिसहस्सानं, अपरिमाणस्स च खज्जभोज्जादिभेदस्स आहारस्स परिच्चजनवसेन सत्तमासाधिकानि सत्तसंवच्छरानि निरन्तरं पवत्तवेलाममहादानतो एकस्स सोतापन्नस्स दिन्नदानं महप्फलतरं, ततो सतं सोतापन्नानं दिन्नदानतो एकस्स सकदागामिनो, ततो एकस्स अनागामिनो, ततो एकस्स अरहतो, ततो एकस्स पच्चेकबुद्धस्स, ततो सम्मासम्बुद्धस्स, ततो बुद्धप्पमुखस्स सङ्घस्स दिन्नदानं महप्फलतरं, ततो चातुद्दिससङ्घं उद्दिस्स विहारकरणं, ततो सरणगमनं महप्फलतरन्ति इममत्थं पकासेन्तस्स वेलामसुत्तस्स (अ० नि० ३.९.२०) वसेन। वुत्तञ्हेतं "यं गहपति वेलामो ब्राह्मणो दानं अदासि महादानं, यो चेकं दिट्ठिसम्पन्नं भोजेय्य, इदं ततो महप्फलतर"न्तिआदि। (अ० नि० ३.९.२०) **वेलामसुत्तादीति** **आदिसद्देन** अग्गप्पसादसुत्तादीनं (अ० नि० १.४.३४; इतिवु० ९०) सङ्गहो दट्ठब्बो।

अञ्ञाणं वत्थुत्तयस्स गुणानं अजाननं, तत्थ सम्मोहो। "बुद्धो नु खो, न नु खो"तिआदिना विचिकिच्छा **संसयो। मिच्छाञाणं** तस्स गुणानं अगुणभावपरिकप्पनेन विपरीतग्गाहो। **आदि**-सद्देन अनादरागारवादीनं सङ्गहो। **न महाजुतिक**न्ति न उज्जलं, अपरिसुद्धं अपरियोदातन्ति अत्थो। **न महाविप्फार**न्ति अनुळारं। **सावज्जो**ति तण्हादिट्ठादिवसेन सदोसो, लोकियसरणगमनं सिक्खासमादानं विय अग्गहितकालपरिच्छेदं जीवितपरियन्तमेव होति, तस्मा तस्स खन्धभेदेन भेदोति आह **"अनवज्जो कालकिरियाया"**ति। सोति अनवज्जो सरणगमनभेदो। सतिपि अनवज्जत्ते इट्ठफलोपि न होतीति आह **"अफलो"**ति। कस्मा ? **अविपाकत्ता।** न हि तं अकुसलन्ति।

को उपासकोति सरूपपुच्छा, किंलक्खणो उपासकोति वुत्तं होति। **कस्मा**ति हेतुपुच्छा, तेन केन पवत्तिनिमित्तेन उपासक-सद्दो तस्मिं पुग्गले निरूळ्होति दस्सेति, तेनाह **"कस्मा उपासकोति वुच्चती"**ति। सद्दस्स अभिधेय्ये पवत्तिनिमित्तं तदत्थस्स तब्भावकारणं। **किमस्स सील**न्ति कीदिसं अस्स उपासकस्स सीलं, कित्तकेन सीलेनायं सीलसम्पन्नो नाम होतीति अत्थो। **को आजीवो**ति को अस्स सम्माआजीवो, सो पन मिच्छाजीवस्स परिवज्जनेन होतीति सोपि विभजीयति। **का विपत्ती**ति का अस्स सीलस्स,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आजीवस्स वा विपत्ति। अनन्तरस्स हि विधि वा पटिसेधो वा। **सम्पत्ती**ति एत्थापि एसेव नयो।

यो कोचीति खत्तियादीसु यो कोचि, तेन सरणगमनं एवं कारणं, न जाति आदिविसेसोति दस्सेति।

उपासनतोति तेनेव सरणगमनेन, तत्थ च सक्कच्चकिरियाय आदर गारवबहुमानादियोगेन पयिरुपासनतो।

वेरमणियोति वेरं वुच्चति पाणातिपातादिदुस्सील्यं, तस्स मणनतो हननतो विनासनतो वेरमणियो, पञ्च विरतियो विरतिपधानत्ता तस्स सीलस्स, तेनेवाह **"पटिविरतो होती"**ति।

मिच्छावणिज्जाति न सम्मावणिज्जा अयुत्तवणिज्जा असारुप्पवणिज्जा। **पहाया**ति अकरणेनेव पजहित्वा। **धम्मेना**ति धम्मतो अनपेतेन, तेन अञ्ञम्पि अधम्मिकं जीविकं पटिक्खिपति। **समेना**ति अविसमेन, तेन कायविसं आदिदुच्चरितं वज्जेत्वा कायसमादिना सुचरितेन जीविकं दस्सेति। **सत्थवणिज्जा**ति आवुधभण्डं कत्वा वा कारेत्वा वा यथाकतं वा पटिलभित्वा तस्स विक्कयो। **सत्तवणिज्जा**ति मनुस्सविक्कयो। **मंसवणिज्जा**ति सूनकारादयो विय मिगसूकरादिके पोसेत्वा मंसं सम्पादेत्वा विक्कयो। **मज्जवणिज्जा**ति यं किञ्चि मज्जं योजेत्वा तस्स विक्कयो। **विसवणिज्जा**ति विसं योजेत्वा वा विसं गहेत्वा वा तस्स विक्कयो। तत्थ सत्थवणिज्जा परोपरोधनिमित्तताय अकरणीया वुत्ता सत्तवणिज्जा अभुजिस्सभावकरणतो, मंसवणिज्जा वधहेतुतो, मज्जवणिज्जा पमादट्ठानतो।

तस्सेवाति पञ्चवेरमणिलक्खणस्स **सीलस्स चेव** पञ्चमिच्छावणिज्जालक्खणस्स **आजीवस्स च। विपत्ती**ति भेदो, पकोपो च। **याया**ति याय पटिपत्तिया। **चण्डालो**ति उपासकचण्डालो। **मलन्ति** उपासकमलं। **पटिकिट्ठो**ति उपासकनिहीनो। बुद्धादीसु कम्मकम्मफलेसु च सद्धाविपरियायो अस्सद्धियं मिच्छाधिमोक्खो, यथावुत्तेन अस्सद्धियेन समन्नागतो **अस्सद्धो**। यथावुत्तसीलविपत्तिआजीवविपत्तिवसेन **दुस्सीलो**। "इमिना दिट्ठादिना इदं नाम मङ्गलं होती"ति एवं बालजनपरिकप्पितकोतूहलसङ्खातेन दिट्ठसुतमुतमङ्गलेन समन्नागतो **कोतूहलमङ्गलिको। मङ्गलं पच्चेती**ति दिट्ठमङ्गलादिभेदं मङ्गलमेव पत्तियायति। **नो**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्मन्ति कम्मस्सकतं नो पत्तियायति। **इतो च बहिद्धाति** इतो सब्बञ्ञुबुद्धसासनतो बहिद्धा बाहिरकसमये। **दक्खिणेय्यं परियेसतीति** दुप्पटिपन्नं दक्खिणारहसञ्ञी गवेसति। **पुब्बकारं करोतीति** दानमानं आदिकं कुसलकिरियं पठमतरं करोति। एत्थ च दक्खिणेय्यपरियेसनपुब्बकारे एकं कत्वा पञ्च धम्मा वेदितब्बा।

विपत्तियं वुत्तविपरियायेन **सम्पत्ति** वेदितब्बा। अयं पन विसेसो– चतुन्नम्पि परिसानं रतिजननट्ठेन उपासकोव रतनं **उपासकरतनं।** गुणसोभाकित्तिसद्दसुगन्धताय उपासकोव पदुमं **उपासकपदुमं।** तथा **उपासकपुण्डरीकं।**

आदिम्हीतिआदिअत्थे। **कोटियन्ति** परियन्तकोटियं। **विहारग्गेनाति** ओवरककोट्ठासेन, "इमस्मिं गब्भे वसन्तानमिदं नाम पनसफलं पापुणाती"तिआदिना तं तंवसनट्ठानकोट्ठासेनाति अत्थो। अज्जतग्गन्ति वा अज्जदग्गन्ति वा अज्ज इच्चेव अत्थो।

"पाणेहि उपेत"न्ति इमिना तस्स सरणगमनस्स आपाणकोटिकतं दस्सेन्तो "याव मे जीवितं पवत्तती"तिआदीनि वत्वा पुन जीवितेनापि तं वत्थुत्तयं पटिपूजेन्तो "सरणगमनं रक्खामी"ति उप्पन्नं तस्स रञ्ञो अधिप्पायं विभावेन्तो **"अहञ्ही"**तिआदिमाह। **पाणेहि उपेतन्ति** हि याव मे पाणा धरन्ति, ताव सरणं उपेतं, उपेन्तो च न वाचामत्तेन, न एकवारं चित्तुप्पादमत्तेन, अथ खो पाणानं परिच्चजनवसेन यावजीवं उपेतन्ति एवमेत्थ अत्थो वेदितब्बो।

अच्चयनं साधुमरियादं मद्दित्वा वीतिक्कमनं **अच्चयोति** आह **"अपराधो"**ति। अच्चेति अतिक्कमति एतेनाति वा **अच्चयो,** वीतिक्कमस्स पवत्तनको अकुसलधम्मो। सो एव अपरज्झति एतेनाति **अपराधो।** सो हि अपरज्झन्तं पुरिसं अभिभवित्वा पवत्तति, तेनाह **"अतिक्कम्म अभिभवित्वा पवत्तो"**ति। **चरतीति** आचरति करोति। **धम्मेनेवाति** धम्मतो अनपेतेन पयोगेन। **पटिग्गण्हातूति** अधिवासनवसेन सम्पटिच्छतूति अत्थोति आह **"खमतू"**ति।

२५१. सदेवकेन लोकेन "सरण"न्ति अरणीयतो **अरियो,** तथागतोति आह **"अरियस्स विनये बुद्धस्स भगवतो सासने"**ति। **पुग्गलाधिट्ठानं करोन्तोति** कामं "वुद्धि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेसा''ति धम्माधिट्ठानवसेन वाक्यं आरद्धं, तथापि देसनं पन पुग्गलाधिट्ठानं करोन्तो संवरं आपज्जतीति आहाति योजना।

२५३. इमस्मिंयेव अत्तभावे निप्फज्जनकानं अत्तनो कुसलमूलानं खणनेन **खतो,** तेसंयेव उपहननेन **उपहतो।** उभयेनापि तस्स कम्मापराधमेव वदति। पतिट्ठाति सम्मत्तनियामोक्कमनं एतायाति पतिट्ठा, तस्स उपनिस्सयसम्पदा। सा किरियापराधेन भिन्ना विनासिता एतेनाति **भिन्नपतिट्ठो,** तेनाह **''तथा''**तिआदि। **धम्मेसु चक्खुन्ति** चतुसच्चधम्मेसु तेसं दस्सनट्ठेन चक्खु। **अञ्ञेसु ठानेसू**ति अञ्ञेसु सुत्तपदेसु। **मुच्चिस्सती**ति सट्ठि वस्ससहस्सानि पच्चित्वा लोहकुम्भी नरकतो मुच्चिस्सति।

यदि अनन्तरे अत्तभावे नरके पच्चति, इमं पन सुत्तं सुत्वा रञ्ञो को आनिसंसो लद्धोति आह **''महानिसंसो''**तिआदि। सो पन आनिसंसो निद्दालाभसीसेन वुत्तो तदा कायिकचेतसिकदुक्खापगमो, तिण्णं रतनानं महासक्कारकिरिया, सातिसयो पोथुज्जनिकसद्धापटिलाभोति एवंपकारो दिट्ठधम्मिको, सम्परायिको पन अपरापरेसुपि भवेसु अपरिमाणो येवाति वेदितब्बो।

एत्थाह – यदि रञ्ञो कम्मन्तरायाभावे तस्मिंयेव आसने धम्मचक्खु उप्पज्जिस्सति, कथं अनागते पच्चेकबुद्धो हुत्वा परिनिब्बायिस्सति। अथ पच्चेकबुद्धो हुत्वा परिनिब्बायिस्सति, कथं तदा धम्मचक्खुं उप्पज्जिस्सति, ननु इमे सावकबोधिपच्चेकबोधिउपनिस्सया भिन्ननिस्सयाति ? नायं विरोधो इतो परतो एवस्स पच्चेकबोधिसम्भारानं सम्भरणीयतो। सावकबोधिया बुज्झनकसत्तापि हि असति तस्सा समवाये कालन्तरे पच्चेकबोधिया बुज्झिस्सन्ति कताभिनीहारसम्भवतो। अपरे पन भणन्ति ''पच्चेकबोधिया येवायं कताभिनीहारो। कताभिनीहारापि हि तत्थ नियतिं अप्पत्ता तस्स ञाणस्स परिपाकं अनुपगतत्ता सत्थु सम्मुखीभावे सावकबोधिं पापुणिस्सन्तीति भगवा 'सचायं भिक्खवे राजा'तिआदिमाह। महाबोधिसत्तानमेव च आनन्तरियपरिमुत्ति, न इतरबोधिसत्तानं। तथा हि पच्चेकबोधियं नियतो समानो देवदत्तो चिरकालसम्भूतेन लोकनाथे आघातेन गरुतरानि आनन्तरियानि पसवि, तस्मा कम्मन्तरायेनायं इदानि असमवेतदस्सनाभिसमयो राजा पच्चेकबोधिनियामेन अनागते पच्चेकबुद्धो हुत्वा परिनिब्बायिस्सती''ति दट्ठब्बं।

सामञ्ञफलसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. अम्बट्ठसुत्तवण्णना

अद्धानगमनवण्णना

२५४. **अपुब्बपदवण्णना**ति अत्थसंवण्णनावसेन हेट्ठा अग्गहितताय अपुब्बस्स पदस्स वण्णना अत्थविभजना। ''हित्वा पुनप्पुनागतमत्थ''न्ति (दी० नि० अट्ठ० १.गन्थारम्भकथा) हि वुत्तं। **जनपदिनो**ति जनपदवन्तो, जनपदस्स वा इस्सरा **राजकुमारा गोत्तवसेन कोसला नाम।** यदि एको जनपदो, कथं बहुवचनन्ति आह **''रूळ्हिसद्देना''**ति। अक्खरचिन्तका हि ईदिसेसु ठानेसु युत्ते विय ईदिसलिङ्गवचनानि इच्छन्ति, अयमेत्थ रूळ्हि यथा अञ्ञत्थपि ''कुरूसु विहरति, अङ्गेसु विहरती''ति च। तब्बिसेसनेपि **जनपद**-सद्दे जाति-सद्दे एकवचनमेव। **पोराणा पना**ति **पन**-सद्दो विसेसत्थजोतनो, तेन पुथुअत्थविसयताय एवञ्चेतं पुथुवचनन्ति वक्खमानविसेसं जोतेति। बहुप्पभेदो हि सो पदेसो तियोजनसतपरिमाणताय। **नङ्गलानिपि छड्डेत्वा**ति कम्मप्पहानवसेन नङ्गलानिपि पहाय, निदस्सनमत्तञ्चेतं। न केवलं कस्सका एव, अथ खो अञ्ञेपि मनुस्सा अत्तनो अत्तनो किच्चं पहाय तत्थ सन्निपतिंसु। **''सो पदेसो''**ति पदेससामञ्ञतो वुत्तं, वचनविपल्लासेन वा, ते पदेसाति अत्थो। **कोसलाति वुच्चति** कुसला एव कोसलाति कत्वा।

चारिकन्ति चरणं, चरणं वा चारो, सो एव चारिका। तयिदं मग्गगमनं इधाधिप्पेतं, न चुण्णिकगमनमत्तन्ति आह **''अद्धानगमनं गच्छन्तो''**ति। तं विभागेन दस्सेतुं **''चारिका च नामेसा''**तिआदि वुत्तं। तत्थ **दूरेपी**ति नातिदूरेपि। **सहसा गमन**न्ति सीघगमनं। महाकस्सपपच्चुग्गमनादिं एकदेसेन वत्वा वनवासीतिस्ससामणेरस्स वत्थुं वित्थारेत्वा जनपदचारिकं कथेतुं **''भगवा ही''**तिआदि आरद्धं। आकासगामीहि एव सद्धिं गन्तुकामो **''छळभिञ्ञानं आरोचेही''**ति आह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सङ्कम्मवसेन सिज्झमानापि उपसम्पदा सत्थु आणावसेनेव सिज्झनतो **"बुद्धदायज्जं ते दस्सामी"**ति वुत्तन्ति वदन्ति। अपरे पन अपरिपुण्णवीसतिवस्सस्सेव तस्स उपसम्पदं अनुजानन्तो **"दस्सामी"**ति अवोचाति वदन्ति। **उपसम्पादेत्वा** ति धम्मसेनापतिना उपज्झायेन उपसम्पादेत्वा।

नवयोजनसतिकम्पि ठानं मज्झिमदेसपरियापन्नमेव, ततो परं नाधिप्पेतं तुरितचारिकावसेन अगमनतो। **समन्ता**ति गतगतट्ठानस्स चतूसु पस्सेसु समन्ततो। **अञ्ञेनपि कारणेना**ति भिक्खूनं समथविपस्सनातरुणभावतो अञ्ञेनपि **मज्झिममण्डले** वेनेय्यानं ञाणपरिपाकादिकारणेन मज्झिममण्डलं **ओसरति**। **"सत्तहि वा"**तिआदि "एकमासं वा"तिआदिना वुत्तानुक्कमेन योजेतब्बं।

सरीरफासुकत्थायाति एकस्मिंयेव ठाने निबद्धवासवसेन उस्सन्नधातुकस्स सरीरस्स विचरणेन फासुकत्थाय। **अट्ठुप्पत्तिकालाभिकङ्खनत्थाया**ति **अग्गिक्खन्धोपमसुत्त** (अ० नि० २.७.७२) **मघदेवजातकादि** (जा० १.१.९) देसनानं विय धम्मदेसनाय अट्ठुप्पत्तिकालं आकङ्खमानेन। सुरापानसिक्खापदपञ्ञापने (पाचि० ३२८) विय **सिक्खापदपञ्ञापनत्थाय**। **बोधनेय्यसत्ते** अङ्गुलिमालादिके (म० नि० २.३४७) **बोधनत्थाय**। कञ्चि, कतिपये वा पुग्गले उद्दिस्स चारिका **निबद्धचारिका**। तदञ्ञा **अनिबद्धचारिका**।

दससहस्सि लोकधातुयाति जातिखेत्तभूते दससहस्सचक्कवाळे। तत्थ हि सत्ते परिपक्किन्द्रिये पस्सितुं बुद्धञाणं अभिनीहरित्वा ठितो भगवा ञाणजालं पत्थरतीति वुच्चति। **सब्बञ्ञुतञ्ञाणजालस्स अन्तो पविट्ठो**ति तस्स ञाणस्स गोचरभावं उपगतो। भगवा किर महाकरुणासमापत्तिं समापज्जित्वा ततो वुट्ठाय "ये सत्ता भब्बा परिपाकञाणा अज्ज मया विनेतब्बा, ते मय्हं ञाणस्स उपट्ठहन्तू"ति चित्तं अधिट्ठाय समन्नाहरति। तस्स सह समन्नाहारा एको वा द्वे वा बहू वा तदा विनयूपगा वेनेय्या ञाणस्स आपाथमागच्छन्ति अयमेत्थ बुद्धानुभावो। एवम्पि आपाथमागतानं पन नेसं उपनिस्सयं पुब्बचरियं पुब्बहेतुं सम्पति वत्तमानञ्च पटिपत्तिं ओलोकेति, तेनाह **"अथ भगवा"**तिआदि। **वादपटिवादं कत्वा**ति "एवं नु ते अम्बट्ठा"तिआदिना मया वुत्तवचनस्स "ये च खो ते भो गोतम मुण्डका समणका"तिआदिना पटिवचनं कत्वा तिक्खत्तुं इब्भवादनिपातनवसेन **नानप्पकारं असब्भिवाक्यं** साधुसभावाय वाचाय वत्तुं अयुत्तवचनं **वक्खति**। **निब्बिसेवन**न्ति विगततुदनं, मानदब्बवसेन अपगतपरिप्फन्दनन्ति अत्थो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवसरितब्बन्ति उपगन्तब्बं। **इच्छानङ्गले**ति इदं तदा भगवतो गोचरगामनिदस्सनं समीपत्थे भुम्मन्ति कत्वा। **"इच्छानङ्गलवनसण्डे"**ति निवासनट्ठानदस्सनं अधिकरणे भुम्मन्ति। तदुभयं विवरन्तो **"इच्छानङ्गलं उपनिस्साया"**तिआदिमाह। धम्मराजस्स भगवतो सब्बसो अधम्मनिग्गण्हनपरा पटिपत्ति, सा च सीलसमाधिपञ्ञावसेनाति तं दस्सेतुं **"सीलखन्धावार"**न्तिआदि वुत्तं। **यथाभिरुचितेना**ति दिब्बविहारादीसु येन येन अत्तनो अभिरुचितेन विहारेन।

पोक्खरसातिवत्थुवण्णना

२५५. **मन्ते** ति इरुब्बेदादिमन्तसत्थे। पोक्खरे कमले सयमानो निसीदीति **पोक्खरसाती।** साति वुच्चति समसण्ठानं, पोक्खरे सण्ठानावयवे जातोति **"पोक्खरसाती"**तिपि वुच्चति। **सेतपोक्खरसदिसो**ति सेतपदुमवण्णो। **सुवट्टिता**ति वट्टभावस्स युत्तट्ठाने सुट्ठु वट्टुला। काळवङ्गतिलकादीनं अभावेन **सुपरिसुद्धा।**

इमस्स ब्राह्मणस्स कीदिसो पुब्बयोगो, येन नं भगवा अनुग्गण्हितुं तं ठानं उपगतोति आह **"अयं पना"**तिआदि। **पदुमगब्भे निब्बत्ति** तेनायं संसेदजो जातो। **न पुप्फती**ति न विकसति। **रजतबिम्बक**न्ति रूपियमयं रूपकं।

अज्झावसतीति एत्थ **अधि**-सद्दो इस्सरियत्थदीपनो, **आ**सद्दो मरियादत्थोति दस्सेन्तो **"अभिभवित्वा"**तिआदिमाह। तेहि युत्तत्ता हि **उक्कट्ठ**न्ति उपयोगवचनं, तेनाह **"उपसग्गवसेना"**तिआदि। **याय मरियादाया**ति **याय अवत्थाय। नगरस्स वत्थु**न्ति "अयं खणो, सुमुहुत्तं मा अतिक्कमी"ति रत्तिविभायनं अनुरक्खन्ता रत्तियं उक्का ठपेत्वा उक्कासु जलमानासु नगरस्स वत्थुं अग्गहेसुं, तस्मा उक्कासु ठिताति **उक्कट्ठा,** उक्कासु विज्जोतयन्तीसु ठिता पतिट्ठिताति मूलविभुजादिपक्खेपेन सद्दसिद्धि वेदितब्बा, निरुत्तिनयेन वा उक्कासु ठितासु ठिता आसीति **उक्कट्ठा।** अपरे पन भणन्ति "भूमिभागसम्पत्तिया, उपकरणसम्पत्तिया, मनुस्ससम्पत्तिया च तं नगरं उक्कट्ठगुणयोगतो **उक्कट्ठा**ति नामं लभी"ति। **तस्सा**ति "उक्कट्ठ"न्ति उपयोगवसेन वुत्तपदस्स। **अनुपयोगत्ता**ति विसेसनभावेन अनुपयुत्तत्ता। **सेसपदेसू**ति "सत्तुस्सद"न्तिआदिपदेसु। यथाविधि हि अनुपयोगो पुरिमस्मिं। **तत्था**ति "उपसग्गवसेना"तिआदिना वुत्तविधाने। **"सद्दसत्थतो परियेसितब्ब"**न्ति एतेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दलक्खणानुगतो वायं सद्दप्पयोगोति दस्सेति। उपअनुअधिआइतिएवंपुब्बके वसनकिरियाठाने उपयोगवचनमेव पापुणातीति सद्दविदू इच्छन्ति।

उस्सदता नामेत्थ बहुलताति, तं बहुलतं दस्सेतुं "**बहुजन**"न्तिआदि वुत्तं। गहेत्वा पोसेतब्बं **पोसावनियं। आविज्झित्वा**ति परिक्खिपित्वा।

रञ्ञा विय भुञ्जितब्बन्ति वा **राजभोग्गं। रञ्ञो दायभूत**न्ति कुलपरम्पराय योग्यभावेन राजतो लद्धदायभूतं। तेनाह "**दायज्जन्ति अत्थो**"ति। राजनीहारेन परिभुञ्जितब्बतो उद्धं परिभोगलाभस्स सेट्ठदेय्यता नाम नत्थीति आह "**छत्तं उस्सापेत्वा राजसङ्खेपेन भुञ्जितब्ब**"न्ति। "**सब्बं छेज्जभेज्ज**"न्ति सरीरदण्डधनदण्डादि भेदं सब्बं दण्डमाह। **नदीतित्थपब्बतादीसू**ति नदीतित्थपब्बतपादगामद्वारअटविमुखादीसु। "राजदाय"न्ति इमिनाव रञ्ञो दिन्नभावे सिद्धे "रञ्ञा पसेनदिना कोसलेन दिन्न"/न्ति वचनं किमत्थियन्ति आह "**दायकराजदीपनत्थ**"न्तिआदि। **निस्सट्ठपरिच्चत्त**न्ति मुत्तचागवसेन परिच्चत्तं कत्वा। एवञ्हि तं सेट्ठदेय्यं उत्तमदेय्यं जातं।

उपलभीति सवनवसेन उपलभीति इममत्थं दस्सेन्तो "**सोतद्वार...पे०... अञ्ञासी**"ति आह। अवधारणफलत्ता सब्बम्पि वाक्यं अन्तोगधावधारणन्ति आह "**पदपूरणमत्ते निपातो**"ति। "**अवधारणत्थे**"ति पन इमिना इट्ठतोवधारणत्थं **खो**-सद्दग्गहणन्ति दस्सेति। "**अस्सोसी**"ति पदं खो-सद्दे गहिते तेन फुल्लितमण्डितं विय होन्तं पूरितं नाम होति, तेन च पुरिमपच्छिमपदानि सिलिट्ठानि होन्ति, न तस्मिं अग्गहितेति आह "**पदपूरणेन ब्यञ्जनसिलिट्ठतामत्तमेवा**"ति। **मत्त**-सद्दो विसेसनिवत्तिअत्थो, तेनस्स अनत्थन्तरदीपनता दस्सिता होति, **एव**-सद्देन पन ब्यञ्जनसिलिट्ठताय एकन्तिकता।

समितपापत्ताति अच्चन्तं अनवसेसतो सवासनं समितपापत्ता। एवञ्हि बाहिरकविरागसेक्खासेक्खपापसमनतो भगवतो पापसमनं विसेसितं होति, तेनाह **वुत्तञ्हेत**न्तिआदि। अनेकत्थत्ता निपातानं इध अनुस्सवत्थो अधिप्पेतोति आह "**खलूति अनुस्सवत्थे निपातो**"ति। **आलपनमत्त**न्ति पियालापवचनमत्तं। पियसमुदाहारो हेते "भो"ति वा "आवुसो"ति वा "देवानं पिया"ति वा। **गोत्तवसेना**ति एत्थ गं तायतीति गोत्तं। गोतमोति हि पवत्तमानं वचनं, बुद्धिञ्च तायति एकंसिकविसयताय रक्खतीति गोत्तं। यथा हि बुद्धि आरम्मणभूतेन अत्थेन विना न वत्तति, एवं अभिधानं अभिधेय्यभूतेन,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्मा सो गोत्तसङ्खातो अत्थो तानि तायति रक्खतीति वुच्चति। को पन सोति? अञ्ञकुलपरम्परासाधारणं तस्स कुलस्स आदिपुरिससमुदागतं तंकुलपरियापन्नसाधारणं सामञ्ञरूपन्ति दट्ठब्बं। एत्थ च **"समणो"**ति इमिना सरिक्खकजनेहि भगवतो बहुमतभावो दस्सितो समितपापताकित्तनतो। **"गोतमो"**ति इमिना लोकियजनेहि उळारकुलसम्भूततादीपनतो।

उच्चाकुलपरिदीपनं उदितोदितविपुलखत्तियकुलविभावनतो। सब्बखत्तियानञ्हि आदिभूतमहासम्मतमहाराजतो पट्ठाय असम्भिन्नं उळारतमं सक्यराजकुलं। **केनचि पारिजुञ्ञेनाति** ञातिपारिजुञ्ञभोगपारिजुञ्ञादिना केनचि पारिजुञ्ञेन पारिहानिया। **अनभिभूतो** अनज्झोत्थतो। तथा हि तस्स कुलस्स न किञ्चि पारिजुञ्ञं लोकनाथस्स अभिजातियं, अथ खो वड्ढियेव। अभिनिक्खमने च ततोपि समिद्धतमभावो लोके पाकटो पञ्ञातो। इति **"सक्यकुला पब्बजितो"**ति इदं वचनं भगवतो सद्धापब्बजितभावदीपनं वुत्तं महन्तं ञातिपरिवट्टं, महन्तञ्च भोगक्खन्धं पहाय पब्बजितभावसिद्धितो। **सुन्दरन्ति** भद्दकं। भद्दकता च पस्सन्तस्स हितसुखावहभावेन वेदितब्बाति आह **अत्थावहं सुखावहन्ति**। तत्थ **अत्थावहन्ति** दिट्ठधम्मिकसम्परायिकपरमत्थसंहितहितावहं। **सुखावहन्ति** यथावुत्ततिविधसुखावहं।**तथारूपानन्ति** तादिसानं। यादिसेहि पन गुणेहि भगवा समन्नागतो, तेहि चतुप्पमाणिकस्स लोकस्स सब्बथापि अच्चन्ताय सद्धाय पसादनीयो तेसं यथाभूतसभावत्ताति दस्सेन्तो **यथारूपोति**आदिमाह। तत्थ **यथाभूतं...पे०... अरहतन्ति** इमिना धम्मप्पमाणानं, लूखप्पमाणानञ्च सत्तानं भगवतो पसादावहतं दस्सेति। तं दस्सनेनेव च इतरेसम्पि अत्थतो पसादावहता दस्सिता होतीति दट्ठब्बं तदविनाभावतो। **दस्सनमत्तम्पि साधु होतीति** एत्थ कोसियसकुणवत्थुं (म० नि० अट्ठ० १.१४४; खु० पा० अट्ठ० १०) कथेतब्बं।

अम्बट्ठमाणवकथावण्णना

२५६. **मन्ते परिवत्तेतीति** वेदे सज्झायति, परियापुणातीति अत्थो। **मन्ते धारेतीति** यथाअधीते मन्ते असम्मुट्ठे कत्वा हदये ठपेति ओट्ठपहतकरणवसेन, न अत्थविभावनवसेन।

सनिघण्डुकेटुभानन्ति एत्थ वचनीयवाचकभावेन अत्थं सद्दञ्च निखडति भिन्दति विभज्ज दस्सेतीति निखण्डु, सा एव इध ख-कारस्स घ-कारं कत्वा "निघण्डू"ति वुत्तो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किटयति गमेति ञापेति किरियादिविभागं, तं वा अनवसेसपरियादानतो गमेन्तो पूरेतीति केटुभं। **वेवचनप्पकासक**न्ति परियायसद्ददीपकं, एकेकस्स अत्थस्स अनेकपरियायवचनविभावकन्ति अत्थो। निदस्सनमत्तञ्चेतं अनेकेसम्पि अत्थानं एकसद्दवचनीयताविभावनवसेनपि तस्स गन्थस्स पवत्तत्ता। वचीभेदादिलक्खणा किरिया कप्पीयति एतेनाति **किरियाकप्पो,** सो पन वण्णपदसम्बन्धपदत्थादिविभागतो बहुविकप्पोति आह **"किरियाकप्पविकप्पो"**ति। इदञ्च मूलकिरियाकप्पगन्थं सन्धाय वुत्तं। सो हि सतसहस्सपरिमाणो नयचरियादिपकरणं। ठानकरणादिविभागतो, निब्बचनविभागतो च अक्खरा पभेदीयन्ति एतेहीति **अक्खरप्पभेदा,** सिक्खानिरुत्तियो। **एतेस**न्ति वेदानं।

ते एव वेदे पदसो कायतीति **पदको**। तं तं सद्दं तदत्थञ्च ब्याकरोति ब्याचिक्खति एतेनाति **ब्याकरणं,** सद्दसत्थं। आयतिं हितं तेन लोको न यतति न ईहतीति **लोकायतं**। तञ्हि गन्थं निस्साय सत्ता पुञ्ञकिरियाय चित्तम्पि न उप्पादेन्ति।

वयतीति **वयो,** आदिमज्झपरियोसानेसु कत्थचि अपरिकिलमन्तो अवित्थायन्तो ते गन्थे सन्धारेति पूरेतीति अत्थो। द्वे पटिसेधा पकतिं गमेन्तीति दस्सेन्तो "अवयो न होती"ति वत्वा तत्थ अवयं दस्सेतुं **"अवयो नाम...पे०... न सक्कोती"**ति वुत्तं। **"अनुञ्ञातो"**ति पदस्स कम्मसाधनवसेन, "पटिञ्ञातो"ति पन पदस्स कत्तुसाधनवसेन अत्थो वेदितब्बोति दस्सेन्तो **"आचरियेना"**तिआदिमाह। आचरियपरम्पराभतं **आचरियकं**। **गरू**ति भारियं अत्तानं ततो मोचेत्वा गमनं दुक्करं होति। **अनत्थोपि उप्पज्जति** निन्दाब्यारोसउपारम्भादि।

२५७. "अब्भुग्गतो"ति एत्थ अभिसद्दयोगेन **इत्थम्भूताख्यानत्थवसेनेव उपयोगवचनं**।

२५८. **लक्खणानी**ति लक्खणदीपनानि मन्तपदानि। **अन्तरधायन्ती**ति न केवलं लक्खणमन्तानियेव, अथ खो अञ्ञानिपि ब्राह्मणानं ञाणबलाभावेन अनुक्कमेन अन्तरधायन्ति। तथा हि वदन्ति "एकसतं अद्धरियं साखा सहस्सवत्तको सामा"तिआदि। **पणिधि...पे०... महतो**ति एत्थ पणिधिमहतो समादानमहतोति आदिना पच्चेकं महन्त-सद्दो योजेतब्बो। पणिधिमहन्ततादि चस्स बुद्धवंसचरियापिटकवण्णनादिवसेन वेदितब्बो। **निट्ठा**ति निप्फत्तियो। **भवभेदे**ति भवविसेसे। इतो च एत्तो च ब्यापेत्वा ठितता **वित्थटभावो**।

जातिसामञ्ञतोति लक्खणजातिया लक्खणभावमत्तेन समानभावतो। यथा हि बुद्धानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्खणानि सुविसदानि, सुपरिब्यत्तानि, परिपुण्णानि च होन्ति, न एवं चक्कवत्तीनं, तेनाह **"न तेहेव बुद्धो होती"**ति। अभिरूपता, दीघायुकता, अप्पातङ्कता, ब्राह्मणादीनं पियमनापताति इमेहि **चतूहि** अच्छरियसभावेहि। दानं, पियवचनं, अत्थचरिया, समानत्तताति इमेहि **चतूहि सङ्गहवत्थूहि। रञ्जनतो**ति पीतिजननतो। चक्कं चक्करतनं वत्तेति पवत्तेतीति **चक्कवत्ती**। सम्पत्तिचक्केहि सयं वत्तति, तेहि च परं सत्तनिकायं वत्तेति पवत्तेतीति **चक्कवत्ती**। परहितावहो इरियापथचक्कानं वत्तो वत्तनं एतस्स, एत्थाति वा **चक्कवत्ती**। अप्पटिहतं वा आणासङ्खातं चक्कं वत्तेतीति **चक्कवत्ती**। खत्तियमण्डलादिसञ्ञितं चक्कं समूहं अत्तनो वसे वत्तेतीति **चक्कवत्ती** चक्कवत्तिवत्तसङ्खातं धम्मं चरति, चक्कवत्तिवत्तसङ्खातो धम्मो एतस्मिं अत्थीति वा **धम्मिको**। धम्मतो अनपेतत्ता धम्मो रञ्जनट्ठेन राजाति **धम्मराजा**। "राजा होति चक्कवत्ती"ति वुत्तत्ता **"चातुरन्तो"**ति पदं चतुदीपिस्सरतं विभावेतीति आह **"चतुसमुद्दअन्ताया"**तिआदि। तत्थ "चतुद्दीपविभूसिताया"ति अवत्वा "चतुब्बिधा"ति **विध**ग्गहणं तंतंपरित्तदीपानम्पि सङ्गहत्थन्ति दट्ठब्बं। **कोपादीति आदि-**सद्देन काममोहमानमदादिके सङ्गण्हाति। **विजितावी**ति विजितवा। केनचि अकम्पियट्ठेन जनपदे थावरियप्पत्तो, दळ्हभत्तिभावतो वा, जनपदो थावरियं पत्तो एत्थाति **जनपदत्थावरियप्पत्तो**।

चित्तीकतभावादिनापि (खु० पा० अट्ठ० ३; दी० नि० अट्ठ० २.३३; सु० नि० अट्ठ० १.२२६; महानि० अट्ठ० ५०) चक्कस्स रतनट्ठो वेदितब्बो। एस नयो सेसेसुपि। रतिनिमित्तताय वा चित्तीकतादिभावस्स रतिजननट्ठेन एकसङ्गहताय विसुं अग्गहणं। इमेहि पन रतनेहि राजा चक्कवत्ती यं यमत्थं पच्चनुभोति, तं तं दस्सेतुं **"इमेसु पना"**तिआदि वुत्तं। **अजितं जिनाति** महेसक्खतासंवत्तनियकम्मनिस्सन्दभावतो। **विजिते यथासुखं अनुविचरति** हत्थिरतनं अस्सरतनञ्च अभिरुहित्वा तेसं आनुभावेन अन्तोपातरासेयेव समुद्दपरियन्तं पथविं अनुसंयायित्वा राजधानिमेव पच्चागमनतो। **परिणायकरतनेन विजितमनुरक्खति** तेन तत्थ तत्थ कातब्बकिच्चस्स संविधानतो। **अवसेसेही**ति मणिरतनइत्थिरतनगहपतिरतनेहि। तत्थ मणिरतनेन योजनप्पमाणे पदेसे अन्धकारं विधमित्वा आलोकदस्सनादिना सुखमनुभवति, इत्थिरतनेन अतिक्कन्तमानुसकरूपसम्पत्तिदस्सनादिवसेन, गहपतिरतनेन इच्छितिच्छितमणिकनकरजतादिधनपटिलाभवसेन।

उस्साहसत्तियोगो तेन केनचि अप्पटिहताणाचक्कभावसिद्धितो **पच्छिमेना**ति परिणायकरतनेन। तञ्हि सब्बराजकिच्चेसु कुसलं अविरज्झनयोगं, तेनाह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"**मन्तसत्तियोगो**"ति। हत्थिअस्सरतनानं महानुभावताय कोससम्पत्तियापि पभावसम्पत्तिसिद्धितो "**हत्थि...पे०... योगो**"ति वुत्तं। (कोसो हि नाम सति उस्साहसम्पत्तियं दुग्गं तेजं कुसुमोरं परक्कमं पब्बतोमुखं अमोसपहरणं) तिविधसत्तियोगफलं परिपुण्णं होतीति सम्बन्धो। **सेसेहीति** सेसेहि पञ्चहि रतनेहि।

अदोसकुसलमूलजनितकम्मानुभावेनाति अदोससङ्खातेन कुसलमूलेन सहजातादिपच्चयवसेन उप्पादितकम्मस्स आनुभावेन **सम्पज्जन्ति** सोम्मतररतनजातिकत्ता। **मज्झिमानि** मणिइत्थिगहपतिरतनानि। **अलोभ...पे०... कम्मानुभावेन** सम्पज्जन्ति **उळारस्स धनस्स,** उळारधनपटिलाभकारणस्स च परिच्चागसम्पदाहेतुकत्ता। **पच्छिम**न्ति परिणायकरतनं। तञ्हि **अमोह...पे०... कम्मानुभावेन सम्पज्जति** महापञ्ञेनेव चक्कवत्तिराजकिच्चस्स परिणेतब्बत्ता। **उपदेसो** नाम सविसेसं सत्तन्नं रतनानं विचारणवसेन पवत्तो कथाबन्धो।

सरणतो पटिपक्खविधमनतो **सूरा,** तेनाह "**अभीरुकजातिका**"ति। असुरे विजिनित्वा ठितत्ता वीरो, सक्को देवानं इन्दो। तस्स अङ्गं देवपुत्तो सेनङ्गभावतोति वुत्तं "**वीरङ्गरूपाति देवपुत्तसदिसकाया**"ति। "**एके**"ति सारसमासाचरियमाह। **सभावो**ति सभावभूतो अत्थो। **वीरकारण**न्ति वीरभावकारणं। **वीरियमयसरीरा विया**ति सविग्गहवीरियसदिसा, सविग्गहं चे वीरियं सिया तंसदिसाति अत्थो। ननु रञ्ञो चक्कवत्तिस्स पटिसेना नाम नत्थि, य'मस्स पुत्ता पमद्देय्युं, अथ कस्मा परसेनप्पमद्दनाति वुत्तन्ति चोदनं सन्धायाह **सचे**तिआदि, तेन परसेना होतु वा मा वा ते पन एवं महानुभावाति दस्सेति। **धम्मेना**ति कतुपचितेन अत्तनो पुञ्ञधम्मेन। तेन हि सञ्चोदिता पथवियं सब्बराजानो पच्चुग्गन्त्वा "स्वागतं ते महाराजा"ति आदिं वत्वा अत्तनो रज्जं रञ्ञो चक्कवत्तिस्स निय्यातेन्ति, तेन वुत्तं "सो इमं...पे०... अज्झावसती"ति। अट्ठकथायं पन तस्स यथावुत्तस्स धम्मस्स चिरतरं विपच्चितुं पच्चयभूतं चक्कवत्तिवत्तसमुदागतं पयोगसम्पत्तिसङ्खातं धम्मं दस्सेतुं "**पाणो न हन्तब्बोतिआदिना पञ्चसीलधम्मेना**"ति वुत्तं। एवञ्हि "अदण्डेन असत्थेना"ति इदं वचनं सुट्ठुतरं समत्थितं होतीति। यस्मा रागादयो पापधम्मा उप्पज्जमाना सत्तसन्तानं छादेत्वा परियोनन्धित्वा तिट्ठन्ति कुसलप्पवत्तिं निवारेन्ति, तस्मा ते "छदना, छदा"ति च वुत्ता। **विवटेत्वा**ति विगमेत्वा। **पूजारहता वुत्ता** "अरहतीति अरह"न्ति। **तस्सा** पूजारहताय। **यस्मा सम्मासम्बुद्धो,** तस्मा अरहन्ति। **बुद्धत्तहेतुभूता विवट्टच्छदता वुत्ता** सवासनसब्बकिलेसप्पहानपुब्बकत्ता बुद्धभावस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरहं वट्टाभावेनाति फलेन हेतुअनुमानदस्सनं। **सम्मासम्बुद्धो छदनाभावेना**ति हेतुना फलानुमानदस्सनं। **हेतुद्वयं वुत्तं** "विवट्टो विच्छदो चा"ति। **दुतियेन वेसारज्जेना**ति "खीणासवस्स ते पटिजानतो"तिआदिना वुत्तेन वेसारज्जेन। **पुरिमसिद्धी**ति पुरिमस्स पदस्स अत्थसिद्धीति अत्थो। **पठमेना**ति "सम्मासम्बुद्धस्स ते पटिजानतो"तिआदिना (म० नि० १.१५०; अ० नि० १.४.८) वुत्तेन वेसारज्जेन। **दुतियसिद्धी**ति दुतियस्स पदस्स अत्थसिद्धि, बुद्धत्थसिद्धीति अत्थो। **ततियचतुत्थेही**ति "ये खो पन ते अन्तरायिका धम्मा"तिआदिना, (म० नि० १.१५०; अ० नि० १.४.८) "यस्स खो पन ते अत्थाया"तिआदिना (म० नि० १.१५०; अ० नि० १.४.८) च वुत्तेहि ततियचतुत्थेहि वेसारज्जेहि। **ततियसिद्धी**ति विवट्टच्छदनतासिद्धि याथावतो अन्तरायिकनिय्यानिकधम्मापदेसेन हि सत्थु विवट्टच्छदनभावो लोके पाकटो अहोसि। **पुरिमं धम्मचक्खुन्ति** पुरिमपदं भगवतो धम्मचक्खुं **साधेति** किलेसारीनं, संसारचक्कस्स च अरानं हतभावदीपनतो। **दुतियं पदं बुद्धचक्खुं साधेति** सम्मासम्बुद्धस्सेव तंसब्भावतो। **ततियं पदं समन्तचक्खुं साधेति** सवासनसब्बकिलेसप्पहानदीपनतो। "सम्मासम्बुद्धो"ति हि वत्वा "विवट्टच्छदो"ति वचनं बुद्धभावावहमेव सब्बकिलेसप्पहानं विभावेति। **"सूरभाव"**न्ति लक्खणविभावने विसदञाणतं।

२५९. एवं भोति एत्थ **एव**न्ति वचनसम्पटिच्छने निपातो। वचनसम्पटिच्छनञ्चेत्थ "तथा मयं तं भवन्तं गोतमं वेदिस्साम, त्वं मन्तानं पटिग्गहेता"ति च एवं पवत्तस्स पोक्खरसातिनो वचनस्स सम्पटिग्गहोति आह। **"सोपि ताया"**तिआदि। तत्थ **ताया**ति ताय यथावुत्ताय समुत्तेजनाय। **अयानभूमिन्ति** यानस्स अभूमिं। **दिवापधानिका**ति दिवापधानानुयुञ्जनका।

२६०. यदिपि पुब्बे अम्बट्ठकुलं अप्पञ्ञातं, तदा पन पञ्ञायतीति आह **"तदा किरा"**तिआदि। **अतुरितो**ति अवेगायन्तो।

२६१. यथा खमनीयादीनि पुच्छन्तोति यथा भगवा "कच्चि वो माणवा खमनीयं, कच्चि यापनीय"न्तिआदिना खमनीयादीनि पुच्छन्तो तेहि माणवेहि सद्धिं पठमं पवत्तमोदो अहोसि पुब्बभासिताय तदनुकरणेन एवं तेपि माणवा भगवता सद्धिं समप्पवत्तमोदा अहेसुन्ति योजना। तं पन समप्पवत्तमोदतं उपमाय दस्सेतुं **"सीतोदकं विया"**तिआदि वुत्तं। तत्थ **सम्मोदित**न्ति संसन्दितं। **एकीभाव**न्ति सम्मोदनकिरियाय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समानतं। **खमनीय**न्ति "इदं चतुचक्कं नवद्वारं सरीरयन्तं दुक्खबहुलताय सभावतो दुस्सहं कच्चि खमितुं सक्कुणेय्य"न्ति पुच्छन्ति, **यापनीय**न्ति आहारादिपच्चयपटिबद्धवुत्तिकं चिरप्पबन्धसङ्खाताय यापनाय कच्चि यापेतुं सक्कुणेय्यं। सीसरोगादिआबाधाभावेन **कच्चि अप्पाबाधं,** दुक्खजीविकाभावेन **कच्चि अप्पातङ्कं,** तंतंकिच्चकरणे उट्ठानसुखताय **कच्चि लहुट्ठानं,** तदनुरूपबलयोगतो **कच्चि बलं,** सुखविहारसब्भावेन **कच्चि फासुविहारो** अत्थीति सब्बत्थ कच्चि-सद्दं योजेत्वा अत्थो वेदितब्बो। बलप्पत्ता पीति **पीति**येव। तरुणपीति **पामोज्जं।** सम्मोदनं जनेति करोतीति सम्मोदनिकं तदेव **सम्मोदनीयं।** सम्मोदितब्बतो **सम्मोदनीय**न्ति इदं पन अत्थं दस्सेतुं वुत्तं **"सम्मोदितुं युत्तभावतो"**ति। सरितब्बभावतो अनुस्सरितब्बभावतो "सरणीय"न्ति वत्तब्बे **"सारणीय"**न्ति दीघं कत्वा वुत्तं। **"सुय्यमानसुखतो"**ति आपाथमधुरतमाह, **"अनुस्सरियमानसुखतो"**ति विमद्दरमणीयतं। **"ब्यञ्जनपरिसुद्धताया"**ति सभावनिरुत्तिभावेन तस्सा कथाय वचनचातुरियमाह, **"अत्थपरिसुद्धताया"**ति अत्थस्स निरुपक्किलेसतं। **अनेकेहि परियायेही**ति अनेकेहि कारणेहि।

अपसादेस्सामीति मङ्कुं करिस्सामि। **कण्ठे ओलम्बेत्वा**ति उभोसु खन्धेसु साटकं आसज्जेत्वा कण्ठे ओलम्बित्वा। **दुस्सकण्णं गहेत्वा**ति निवत्थसाटकस्स दसाकोटिं एकेन हत्थेन गहेत्वा। **चङ्कमं अभिरुहित्वा**ति चङ्कमितुं आरभित्वा। **धातुसमता**ति रसादिधातूनं समावत्थता, अरोगताति अत्थो। **अनाचारभावसारणीय**न्ति अनाचारभावेन सरणीयं। "अनाचारो वताय"न्ति सरितब्बकं।

२६२. **"भवग्गं गहेतुकामो विया"**तिआदि असक्कुणेय्यत्ता दुक्करं किच्चं आरभतीति दस्सेतुं वुत्तं। असक्कुणेय्यञ्हेतं सदेवकेनापि लोकेन, यदिदं भगवतो अपसादनं, तेनाह **"अट्ठाने वायमती"**ति। अयं बालो "मयि किञ्चि अकथेन्ते मया सद्धिं कथेतुम्पि न विसहती"ति मानमेव पग्गण्हिस्सति, कथेन्ते पन कथापसङ्गेनस्स जातिगोत्ते विभाविते माननिग्गहो भविस्सतीति भगवा "एवं नु ते"तिआदिमाह। तेन वुत्तं "अथ खो भगवा"तिआदि। आचारसमाचारसिक्खापनेन आचरिया, तेसं पन आचरियानं पकट्ठा आचरियाति पाचरिया यथा पपितामहोति, तेनाह **"आचरियेहि च तेसं पाचरियेहि चा"**ति।

पठमइब्भवादवण्णना

२६३. **तीसु इरियापथेसू**ति ठानगमननिसज्जासु। **कथापळास**न्ति कथावसेन युगग्गाहं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयानेन आचरियेन सद्धिं सयानस्स कथा नाम आचारो न होति, तं इतरेहि सदिसं कत्वा कथनं इध कथापळासो।

तस्स पन यं अनाचारभावविभावनं सत्थारा अम्बट्ठेन सद्धिं कथेन्तेन कतं, तं सङ्गीतिअनारुळ्हं परम्पराभतन्ति उपरि पाळिया सम्बन्धभावेन दस्सेन्तो **"ततो किरा"**तिआदिमाह। **मुण्डका समणका**ति च गरहायं **क**-सद्दो, तेनाह **"हीळेन्तो"**ति। इभस्स पयोगो इभो उत्तरपदलोपेन, तं इभं अरहन्तीति **इब्भा**। किं वुत्तं होति? यथा इभो हत्थिवाहनभूतो परस्स वसेन वत्तति, न अत्तनो, एवं एतेपि ब्राह्मणानं सुस्सुसका सुद्दा परस्स वसेन वत्तन्ति, न अत्तनो, तस्मा इभसदिसपयोगताय इब्भाति। ते पन कुटुम्बिकताय घरवासिनो घरस्सामिका होन्तीति आह **"गहपतिका"**ति। **कण्हा**ति कण्हजातिका। दिजा एव हि सुद्धजातिका, न इतरेति तस्स अधिप्पायो, तेनाह **"काळका"**ति। **मुखतो निक्खन्ता**ति ब्राह्मणानं पुब्बपुरिसा ब्रह्मुनो मुखतो निक्खन्ता, अयं तेसं पठमुप्पत्तीति अधिप्पायो। सेसपदेसुपि एसेव नयो। **"समणा पिट्ठिपादतो"**ति इदं पनस्स "मुखतो निक्खन्ता"तिआदिवचनतोपि अतिविय असमवेक्खितवचनं चतुवण्णपरियापन्नस्सेव समणभावसम्भवतो। **अनियमेत्वा**ति अविसेसेत्वा, अनुद्देसिकभावेनाति अत्थो।

मानुस्सयवसेन कथेतीति मानुस्सयं अवस्साय अत्तानं उक्कंसेन्तो, परे च वम्भेन्तो "मुण्डका"ति आदिं कथेति। **जानापेमी**ति जातिगोत्तस्स पमाणं याथावतो विभावनेन पमाणं जानापेमीति। **अत्थो एतस्स अत्थीति अत्थिकं** दण्डिकञायेन।

"यायेव खो पनत्थाया"ति इत्थिलिङ्गवसेन वुत्तन्ति वदन्ति, तं परतो "पुरिसलिङ्गवसेनेवा"ति वक्खमानत्ता युत्तं। **याय अत्थाया**ति वा पुल्लिङ्गवसेनेव तदत्थे सम्पदानवचनं, यस्स अत्थस्स अत्थायाति अत्थो। **अस्सा**ति अम्बट्ठस्स दस्सेत्वाति सम्बन्धो। **अञ्ञेस**न्ति अञ्ञेसं साधुरूपानं। **सन्तिकं आगतान**न्ति गुरुट्ठानियानं सन्तिकं उपगतानं। **वत्त**न्ति तेहि चरितब्बआचारं। **असिक्खितो**ति आचारं असिक्खितो। ततो एव **अप्पस्सुतो**। बाहुसच्चञ्हि नाम यावदेव उपसमत्थं इच्छितब्बं, तदभावतो अम्बट्ठो अप्पस्सुतो असिक्खितो "अवुसितो"ति विञ्ञायति, तेनाह **"एतस्स ही"**तिआदि।

२६४. कोधवसचित्तताय **असकमनो**। **माननिम्मदनत्थ**न्ति मानस्स निम्मदनत्थं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उग्गिलेत्वाति सिनेहपानेन किलिन्नं उब्बमनं कत्वा। **गोत्तेन गोत्तन्ति** तेन वुत्तेन पुरातनगोत्तेन इदानि तं तं अनवज्जसञ्ञितं गोत्तं सावज्जतो उट्ठापेत्वा उद्धरित्वा। सेसपदेसुपि एसेव नयो। तत्थ **गोत्तं** आदिपुरिसवसेन, **कुलापदेसो,** तदन्वये उप्पन्नअभिञ्ञातपुरिसवसेन वेदितब्बो यथा ''आदिच्चो, मघदेवो''ति। गोत्तमूलस्स गारय्हताय अमानवत्थुभावपवेदनतो **''मानद्धजं मूले छेत्वा''**ति वुत्तं। **घट्टेन्तोति** ओमसन्तो।

यस्मिं मानुस्सयकोधुस्सया अञ्ञमञ्ञूपत्थद्धा, सो ''चण्डो''ति वुच्चतीति आह **''चण्डाति माननिस्सितकोधयुत्ता''**ति। **खराति** चित्तेन, वाचाय च कक्खळा। **लहुकाति** तरुणा। **भस्साति** ''साहसिका''ति केचि वदन्ति, ''सारम्भका''ति अपरे। **समानाति** होन्ता, भवमानाति अत्थोति आह **''सन्ताति पुरिमपदस्सेव वेवचन''**न्ति। **न सक्करोन्तीति** सक्कारं न करोन्ति। **अपचितिकम्मन्ति** पणिपातकम्म **नानुलोमन्ति** अत्तनो जातिया न अनुच्छविकन्ति अत्थो।

दुतियइब्भवादवण्णना

२६५. कामं सक्यराजकुले यो सब्बेसं बुद्धतरो समत्थो च, सो एव अभिसेकं लभति, एकच्चो पन अभिसित्तो समानो ''इदं रज्जं नाम बहुकिच्चं बहुब्यापार''न्ति ततो निब्बिज्ज रज्जं वयसा अनन्तरस्स निय्यातेति, कदाचि सोपि अञ्ञस्साति तादिसे सन्धायाह **''सक्याति अभिसित्तराजानो''**ति। **कुलवंसं जानन्तीति** कण्हायनतो पट्ठाय परम्परागतं अनुस्सववसेन जानन्ति। कुलाभिमानिनो हि येभुय्येन परेसं उच्चावचं कुलं तथा तथा उदाहरन्ति, अत्तनो च कुलवंसं जानन्ति, एवं अम्बट्ठोपि। तथा हि सो परतो भगवता पुच्छितो वजिरपाणिभयेन याथावतो कथेसि।

ततियइब्भवादवण्णना

२६६. खेत्तलेड्डूनन्ति खेत्ते कसनवसेन नङ्गलेन उट्ठापितलेड्डूनं। ''लटुकिका'' इच्चेव पञ्ञाता **खुद्दकसकुणिका लटुकिकोपमवण्णनायं** ''चातकसकुणिका''ति (म० नि० अट्ठ० ३.१५०) वुत्ता। **कोधवसेन लग्गितुन्ति** उपनय्हितुं, आघातं बन्धितुन्ति अत्थो। **''अम्हे हंसकोञ्चमोरसमे करोती''**ति इमिना ''न तं कोचि हंसो वा''तिआदिवचनं सङ्गीतिं अनारुळ्हं तदा भगवता वुत्तमेवाति दस्सेति। ''एवं नु ते''तिआदिवचनं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अवुसितवायेवा"तिआदिवचनञ्च मानवसेन समणेन गोतमेन वुत्तन्ति मञ्ञतीति अधिप्पायेनाह **"निम्मानो दानि जातोति मञ्ञमानो"**ति।

दासिपुत्तवादवण्णना

२६७. निम्मादेतीति अ-कारस्स आ-कारं कत्वा निद्देसोति आह **"निम्मदेती"**ति। कामं गोत्तं नामेतं पितितो लद्धब्बं, न मातितो न हि ब्राह्मणानं सगोत्ताय आवाहविवाहो इच्छितो, गोत्तनामं पन यस्मा जातिसिद्धं, न कित्तिमं, जाति च उभयसम्बन्धिनी, तस्मा **"मातापेत्तिकन्ति मातापितूनं सन्तक"**न्ति वुत्तं। **नामगोत्त**न्ति गोत्तनामं, न कित्तिमनामं, न गुणनामं वा। तत्थ "कण्हायनो"ति निरुळ्हा या नामपण्णत्ति, तं सन्धायाह **"पण्णत्तिवसेन नाम**न्ति। तं पन कण्हइसितो पट्ठाय तस्मिं कुलपरम्परावसेन आगतं, न एतस्मिंयेव निरुळ्हं, तेन वुत्तं **"पवेणीवसेन गोत्त"**न्ति। **गोत्त**-पदस्स पन अत्थो हेट्ठा वुत्तोयेव। **अनुस्सरतो**ति एत्थ न केवलं अनुस्सरणं अधिप्पेतं, अथ खो कुलसुद्धिवीमंसनवसेनाति आह **"कुलकोटिं सोधेन्तस्सा"**ति। **अय्यपुत्ता**ति अय्यिकपुत्ताति आह **"सामिनो पुत्ता"**ति। दिसा ओक्काकरञ्ञो अन्तोजाता दासीति आह **"घरदासिया पुत्तो"**ति। एत्थ च यस्मा अम्बट्ठो जातिं निस्साय मानत्थद्धो, न चस्स याथावतो जातिया अविभाविताय माननिग्गहो होति, माननिग्गहे च कते अपरभागे रतनत्तये पसीदिस्सति, न "दासी"ति वाचा फरुसवाचा नाम होति चित्तस्स सण्हभावतो। **अभयसुत्त**ञ्चेत्थ (म० नि० २.८३; अ० नि० १.४.१८४) निदस्सनं। केचि च सत्ता अग्गिना विय लोहादयो कक्खळाय वाचाय मुदुभावं गच्छन्ति, तस्मा भगवा अम्बट्ठं निब्बिसेवनं कातुकामो "अय्यपुत्ता सक्या भवन्ति, दासिपुत्तो त्वमसि सक्यान"न्ति अवोच।

ठपेन्तीति पञ्ञपेन्ति, तेनाह **"ओक्काको"**तिआदि। **पभा निच्छरति** दन्तानं अतिविय पभस्सरभावतो।

पठमकप्पिकानन्ति पठमकप्पस्स आदिकाले निब्बत्तानं। **किर**-सद्दो अनुस्सवत्थे, तेन यो वुच्चमानाय राजपरम्पराय केसञ्चि मतिभेदो, तं उल्लिङ्गेति। **महासम्मतस्सा**ति "अयं नो राजा"ति महाजनेन सम्मन्नित्वा ठपितत्ता "महासम्मतो"ति एवं सम्मतस्स। यं सन्धाय वदन्ति –

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

“आदिच्चकुलसम्भूतो, सुविसुद्धगुणाकरो।
महानुभावो राजासि, महासम्मतनामको।।

यो चक्खुभूतो लोकस्स, गुणरंसिसमुज्जलो।
तमोनुदो विरोचित्थ, दुतियो विय भाणुमा।।

ठपिता येन मरियादा, लोके लोकहितेसिना।
ववत्थिता सक्कुणन्ति, न विलङ्घयितुं जना।।

यसस्सिनं तेजस्सिनं, लोकसीमानुरक्खकं।
आदिभूतं महावीरं, कथयन्ति ‘मनू’ति य”न्ति।।

तस्स च पुत्तपपुत्तपरम्परं सन्धाय –

“तस्स पुत्तो महातेजो, रोजो नाम महीपति।
तस्स पुत्तो वररोजो, पवरो राजमण्डले।।

तस्सासि कल्याणगुणो, कल्याणो नाम अत्रजो।
राजा तस्सासि तनयो, वरकल्याणनामको।।

तस्स पुत्तो महावीरो, मन्धाता कामभोगिनं।
अग्गभूतो महिन्देन, अड्ढरज्जेन पूजितो।।

तस्स सूनु महातेजो, वरमन्धातुनामको।
‘उपोसथो’ति नामेन, तस्स पुत्तो महायसो।।

वरो नाम महातेजो, तस्स पुत्तो महावरो।
तस्सासि उपवरोति, पुत्तो राजा महाबलो।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स पुत्तो मघदेवो, देवतुल्यो महीपति।
चतुरासीतिसहस्सानि, तस्स पुत्तपरम्परा।।

तेसं पच्छिमको राजा, 'ओक्काको' इति विस्सुतो।
महायसो महातेजो, अखुद्दो राजमण्डले''ति।।

आदि **तेसं पच्छतो**ति तेसं मघदेव परम्परभूतानं कळारजनकपरियोसानानं अनेकसतसहस्सानं राजूनं अपरभागे ओक्काको नाम राजा अहोसि, तस्स परम्पराभूतानं अनेकसतसहस्सानं राजूनं अपरभागे अपरो ओक्काको नाम राजा अहोसि, तस्स परम्परभूतानं अनेकसतसहस्सानं राजूनं अपरभागे पुनापरो ओक्काको नाम राजा अहोसि, तं सन्धायाह **''तयो ओक्काकवंसा अहेसुं। तेसु ततियओक्काकस्सा''**तिआदि।

सहसा वरं अदासिन्ति पुत्तदस्सनेन सोमनस्सप्पत्तो सहसा अवीमंसित्वा तुट्ठिया वसेन वरं अदासिं, ''यं इच्छसि, तं गण्हा''ति। **रज्जं परिणामेतुं इच्छती**ति सा जन्तुकुमारस्स माता मम तं वरदानं अन्तरं कत्वा इमं रज्जं परिणामेतुं इच्छतीति।

नप्पसहेय्याति न परियत्तो भवेय्य।

निक्खम्माति घरावासतो, कामेहि च निक्खमित्वा। **हेट्ठा चा**ति **च**-सद्देन ''असीतिहत्थे''ति इदं अनुकड्ढति। **तेही**ति मिगसूकरेहि, मण्डूकमूसिकेहि च। **ते**ति सीहब्यग्घादयो, सप्पबिळारा च।

अवसेसाहि अत्तनो अत्तनो कनिट्ठाहि।

वड्ढमानानन्ति अनादरे सामिवचनं। **कुट्ठरोगो** नाम सासमसूरीरोगा विय येभुय्येन सङ्कमनसभावोति वुत्तं **''अयं रोगो सङ्कमतीति चिन्तेत्वा''**ति।

मिगसूकरादीनन्ति **आदि**-सद्देन वनचरसोणादिके सङ्गण्हाति।

तस्मिं निसिन्नेति सम्बन्धो। खत्तियमायारोचनेन **अत्तनो खत्तियभावं जानापेत्वा।**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नगरं मापेहीति साहारं नगरं मापेहीति अधिप्पायो।

केसग्गहणन्ति केसवेणिबन्धनं। **दुस्सग्गहण**न्ति वत्थस्स निवासनाकारो।

२६८. **अत्तनो उपारम्भमोचनत्थाया**ति आचरियेन अम्बट्ठेन च अत्तनो अत्तनो उपरि पापेतब्बउपवादस्स अपनयनत्थं। **अस्मिं वचने**ति "चत्तारोमे भो गोतम वण्णा"तिआदिना अत्तना वुत्ते, भोता च गोतमेन वुत्ते "जातिवादे"ति इमस्मिं यथाधिकते वचने। तत्थ पन यस्मा वेदे वुत्तविधिनाव तेन पटिमन्तेतब्बं होति, तस्मा वुत्तं **"वेदत्तयवचने"**ति, **"एतस्मिं वा दासिपुत्तवचने"**ति च।

२७०. **धम्मो** नाम कारणं "धम्मपटिसम्भिदा"तिआदीसु (विभं० ७१८) विय, सह धम्मेनाति सहधम्मो, सहधम्मो एव **सहधम्मिको**ति आह **"सहेतुको"**ति।

२७१. **तस्मा** तदा पटिञ्ञातत्ता। **तासेत्वा पञ्हं विस्सज्जापेस्सामीति आगतो** यथा तं सच्चकसमागमे। "भगवा चेव पस्सति अम्बट्ठो चा"ति एत्थ इतरेसं अदस्सने कारणं दस्सेतुं **"यदि ही"**तिआदि वुत्तं। **आवाहेत्वा**ति मन्तबलेन आनेत्वा। **तस्सा**ति अम्बट्ठस्स। **वादसङ्घट्टे**ति वाचासङ्घट्टे।

२७२. **ताणन्ति गवेसमानो**ति, "अयमेव समणो गोतमो इतो भयतो मम तायको"ति भगवन्तंयेव "ताण"न्ति परियेसन्तो उपगच्छन्तो। सेसपदद्वयेपि एसेव नयो। **तायती**ति यथाउपट्ठितभयतो पालेति, तेनाह **"रक्खती"**ति, एतेन ताण-सद्दस्स कत्तुसाधनतमाह। यथुपट्ठितेन भयेन उपद्दुतो निलीयति एत्थाति **लेणं,** उपलयनं, एतेन लेण-सद्दस्स अधिकरणसाधनतमाह। **"सरती"**ति एतेन सरण-सद्दस्स कत्तुसाधनतमाह।

अम्बट्ठवंसकथावण्णना

२७४. **गङ्गाय दक्खिणतो**ति गङ्गाय नदिया दक्खिणदिसाय। **आवुधं न परिवत्तती**ति सरं वासत्तिआदिं वा परस्स उपरि खिपितुकामस्स हत्थं न परिवत्तति, हत्थे पन अपरिवत्तेन्ते कुतो आवुधपरिवत्तनन्ति आह **"आवुधं न परिवत्तती"**ति। सो किर "कथं नामाहं दिसाय दासिया कुच्छिम्हि निब्बत्तो"ति तं हीनं जातिं जिगुच्छन्तो "हन्दाहं यथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा इमं जातिं सोधेस्सामी''ति निग्गतो, तेनाह **''इदानि मे मनोरथं पूरेस्सामी''**तिआदि। विज्जाबलेन राजानं तासेत्वा तस्स धीतुया लद्धकालतो पट्ठाय म्यायं जातिसोधिता भविस्सतीति तस्स अधिप्पायो। **अम्बट्ठं नाम विज्ज**न्ति सत्तानं सरीरे अब्भङ्गं ठपेतीति अम्बट्ठाति एवं लद्धनामं विज्जं, मन्तन्ति अत्थो। यतो अम्बट्ठा एतस्मिं अत्थीति अम्बट्ठोति कण्हो इसि पञ्ञायित्थ, तंबंसजातताय अयं माणवो ''अम्बट्ठो''ति वोहरीयति।

सेट्ठमन्ते वेदमन्तेति अधिप्पायो। मन्तानुभावेन रञ्ञो बाहुक्खम्भमत्तं जातं तेन पनस्स बाहुक्खम्भेन राजा, ''को जानाति, किं भविस्सती''ति भीतो उस्सङ्की उत्रासो अहोसि, तेनाह **''भयेन वेधमानो अट्ठासी''**ति। **सोत्थि भद्दन्तेति आदिवचनं अवोचुं।** ''अयं महानुभावो इसी''ति मञ्ञमाना।

उन्द्रियिस्सतीति विप्पकिरियिस्सति, तेनाह **''भिज्जिस्सती''**ति। मन्ते परिवत्तितेति बाहुक्खम्भकमन्तस्स पटिप्पस्सम्भकविज्जासङ्खाते मन्ते **''सरो ओतरतू''**ति परिवत्तिते। एवरूपानञ्हि मन्तानं एकंसेनेव पटिप्पस्सम्भकविज्जा होन्तियेव यथा तं कुसुमारकविज्जानं। अत्तनो धीतु अपवादमोचनत्थं तस्स भुजिस्सकरणं। तस्सानुरूपे इस्सरिये ठपनत्थं **उळारे च नं ठाने ठपेसि।**

खत्तियसेट्ठभाववण्णना

२७५. समस्सासनत्थमाह करुणायन्तो, न कुलीनभावदस्सनत्थं, तेनाह **''अथ खो भगवा''**तिआदि। **ब्राह्मणेसू**ति ब्राह्मणानं समीपे, ततो ब्राह्मणेहि लद्धब्बं आसनादिं सन्धाय **''ब्राह्मणानं अन्तरे''**ति वुत्तं। केवलं सद्धाय कातब्बं **सद्धं,** परलोकगते सन्धाय न ततो किञ्चि अपत्थेन्तेन कातब्बन्ति अत्थो, तेनाह **''मतके उद्दिस्स कतभत्ते''**ति। **मङ्गलादिभत्ते**ति **आदि**-सद्देन उस्सवदेवताराधनादिं सङ्गण्हाति। **यञ्ञभत्ते**ति पापसञ्ञमादिवसेन कतभत्ते। **पाहुनका**नन्ति अतिथीनं। **खत्तियभावं अप्पत्तो** उभतो सुजातताभावतो, तेनाह **''अपरिसुद्धोति अत्थो''**ति।

२७६. इत्थिं करित्वाति एत्थ करणं किरियासामञ्ञविसयन्ति आह **''इत्थिं परियेसित्वा''**ति। ब्राह्मणकञ्ञं इत्थिं खत्तियकुमारस्स भरियाभूतं गहेत्वापि खत्तियाव सेट्ठा, हीना ब्राह्मणाति योजना। **पुरिसेन वा पुरिसं करित्वा**ति एत्थापि एसेव नयो। **पकरणे**ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रागादिवसेन पदुट्ठे पक्खलिते कारणे, तेनाह **"दोसे"**ति। भस्सति निरत्थकभावेन खिपीयतीति **भस्सं,** छारिका।

२७७. जनितस्मिन्ति कम्मकिलेसेहि निब्बत्ते। जने एतस्मिन्ति वा **जनेतस्मिं,** मनुस्सेसूति अत्थो, तेनाह **"गोत्तपटिसारिनो"**ति। **संसन्दित्वा**ति घटेत्वा, अविरुद्धं कत्वाति अत्थो।

पठमभाणवारवण्णना निट्ठिता।

विज्जाचरणकथावण्णना

२७८. इदं वट्टतीति इदं अज्झेनादि कत्तुं लब्भति। **जातिवादविनिबद्धा**ति जातिसन्निस्सितवादे विनिबद्धा। ब्राह्मणस्सेव अज्झेनज्झापनयजनयाजनादयोति एवं ये अत्तुक्कंसनपरवम्भनवसेन पवत्ता, ततो एव ते **मानवादपटिबद्धा** च होन्ति। ये पन **आवाहविवाहविनिबद्धा,** ते एव सम्बन्धत्तयवसेन "अरहसि वा मं त्वं, न वा मं त्वं अरहसी"ति एवं पवत्तनका।

यत्थाति यस्सं विज्जाचरणसम्पत्तियं। **लग्गिस्सामा**ति ओलग्गा अन्तोगधा भविस्सामाति **चिन्तयिम्ह।** परमत्थतो अविज्जाचरणानियेव "विज्जाचरणानी"ति गहेत्वा ठितो परमत्थतो विज्जाचरणेसु विभजियमानेसु सो ततो दूरतो अपनीतो नाम होतीति आह **"दूरमेव अवक्खिपी"**ति। **समुदागमतो पभुती**तिआदिसमुट्ठानतो पट्ठाय।

२७९. तिविधं सीलन्ति खुद्दकादिभेदं तिविधं सीलं। **सीलवसेनेवा**ति सीलपरियायेनेव। **किञ्चि किञ्चीति** अहिंसनादियमनियमलक्खणं किञ्चि किञ्चि **सीलं अत्थि। तत्थ तत्थेव लग्गेय्या**ति तस्मिं तस्मिंयेव ब्राह्मणसमयसिद्धे सीलमत्ते "चरण"न्ति लग्गेय्य। **अट्ठपि समापत्तियो चरणन्ति निय्यातिता होन्ति** रूपावचरचतुत्थज्झाननिद्देसेनेव अरूपज्झानानम्पि निद्दिट्ठभावापत्तितो निय्यातिता निदस्सिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुअपायमुखकथावण्णना

२८०. **असम्पापुणन्तो**ति आरभित्वा सम्पत्तुं असक्कोन्तो। **अविसहमानो**ति आरभितुमेव असक्कोन्तो। **खारि**न्ति परिक्खारं। तं पन विभजित्वा दस्सेतुं "**अरणी**"तिआदि वुत्तं। तत्थ **अरणी**ति अग्गिधमनकं अरणीद्वयं। **सुजा**ति दब्बि। **आदि**-सद्देन तिदण्डतिघटिकादिं सङ्गण्हाति **खारिभरित**न्ति खारीहि पुण्णं। ननु उपसम्पन्नस्स भिक्खुनो सासनिकोपि यो कोचि अनुपसम्पन्नो अत्थतो परिचारकोव, किं अङ्ग पन बाहिरकपब्बजितेति तत्थ विसेसं दस्सेतुं "**कामञ्चा**"तिआदि वुत्तं। **वुत्तनयेना**ति "कप्पियकरण...पे०... वत्तकरणवसेना"ति एवं वुत्तेन नयेन। **परिचारको होति** उपसम्पन्नभावस्स विसिट्ठभावतो। "नवकोटिसहस्सानी"तिआदिना (विसुद्धि० १.२०; पटि० म० अट्ठ० ३७) वुत्तप्पभेदानं अनेकसहस्सानं संवरविनयानं समादियित्वा वत्तनेन उपरिभूता अग्गभूता सम्पदाति हि "उपसम्पदा"ति वुच्चतीति। **गुणाधिकोपी**ति गुणेहि उक्कट्ठोपि। **अयं पना**ति वुत्तलक्खणो तापसो।

तापसा नाम कम्मवादिकिरियावादिनो, न सासनस्स पटाणीभूता, यतो नेसं पब्बजितुं आगतानं तित्थियपरिवासेन विनाव पब्बज्जा अनुञ्ञाताति कत्वा "**कस्मा पना**"ति चोदनं समुट्ठपेति चोदको। आचरियो "**यस्मा**"तिआदिना चोदनं परिहरति। "ओसक्किस्सती"ति सङ्खेपतो वुत्तमत्थं विवरितुं "**इमस्मिञ्ही**"तिआदि वुत्तं। **खुरधारूपम**न्ति खुरधारानं मत्थकेनेव अक्कमित्वा गमनूपमं। **अञ्ञे**ति अञ्ञे भिक्खू। **अग्गिसाल**न्ति अग्गिहुत्तसालं। **नानादारूही**ति पलासदण्डादिनानाविधसमिधादारूहि।

इदन्ति "चतुद्वारं आगारं कत्वा"तिआदिना वुत्तं। **अस्सा**ति अस्स चतुत्थस्स पुग्गलस्स। **पटिपत्तिमुख**न्ति कोहञ्ञपटिपत्तिया मुखमत्तं। सो हि नानाविधेन कोहञ्ञेन लोकं विम्हापेन्तो तत्थ अच्छति, तेनाह "**इमिना हि मुखेन सो एवं पटिपज्जती**"ति।

खलादीसु मनुस्सानं सन्तिके उपतिट्ठित्वा वीहिमुग्गतिलमासादीनि भिक्खाचरियानियामेन सङ्कड्ढित्वा उञ्छनं उञ्छा, सा एव चरिया वुत्ति एतेसन्ति **उञ्छाचरिया**। अग्गिपक्केन जीवन्तीति अग्गिपक्किका, न अग्गिपक्किका **अनग्गिपक्किका**। उञ्छाचरिया हि खलेसु गन्त्वा खलग्गं नाम मनुस्सेहि दिय्यमानं धञ्ञं गण्हन्ति, तं इमे न गण्हन्तीति अनग्गिपक्किका नाम जाता। **असामपाका**ति असयंपाचका। अस्ममुट्ठिना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुट्ठिपासाणेन वत्तन्तीति **अस्ममुट्ठिका**। दन्तेन उप्पाटितं वक्कलं रुक्खत्तचो दन्तवक्कलं, तेन वत्तन्तीति **दन्तवक्कलिका**। पवत्तं रुक्खादितो पातितं फलं भुञ्जन्तीति **पवत्तफलभोजिनो**। जिण्णपक्कताय पण्डुभूतं पलासं, तंसदिसञ्च पण्डुपलासं, तेन वत्तन्तीति **पण्डुपलासिका,** सयंपतितपुप्फफलपत्तभोजिनो।

इदानि ते अट्ठविधेपि सरूपतो दस्सेतुं "**तत्था**"तिआदि वुत्तं। **सङ्कड्ढित्वा**ति भिक्खाचरियावसेन लद्धधञ्ञं एकज्झं कत्वा।

परियेट्ठि नाम दुक्खाति परेसं गेहतो गेहं गन्त्वा परियेट्ठि नाम दीनवुत्तिभावेन दुक्खा। पासाणस्स परिग्गहो दुक्खो पब्बजितस्साति वा दन्तेहेव उप्पाटेत्वा खादन्ति।

इमाहि चतूहियेवाति "खारिविधं आदाया"तिआदिना वुत्ताहि चतूहि एव तापसपब्बज्जाहीति।

२८२. अपाये विनासे नियुत्तो **आपायिको**। तब्भावं परिपूरेतुं असक्कोन्तो तेन अपरिपुण्णो **अपरिपूरमानो,** करणे चेतं पच्चत्तवचनं, तेनाह "**आपायिकेनापि अपरिपूरमानेना**"ति।

पुब्बकइसिभावानुयोगवण्णना

२८३. दीयतीति दत्ति, दत्तियेव **दत्तिक**न्ति आह "**दिन्नक**"न्ति। यदि ब्राह्मणस्स सम्मुखीभावो रञ्ञो न दातब्बो, कस्मास्स उपसङ्कमनं न पटिक्खित्तन्ति आह "**यस्मा पना**"तिआदि। **खेत्तविज्जाया**ति नीतिसत्थे। **पयात**न्ति सद्धं, सस्सतिकं वा, तेनाह "**अभिहरित्वा दिन्न**"न्ति। कस्मा भगवा "रञ्ञो पसेनदिस्स कोसलस्स दत्तिकं भुञ्जती"तिआदिना ब्राह्मणस्स मम्मवचनं अवोचाति तत्थ कारणं दस्सेतुं "**इदं पन कारण**"न्तिआदि वुत्तं।

२८४. **रथूपत्थरे**ति रथस्स उपरि अत्थरितपदेसे। **पाकटमन्तन**न्ति पकासभूतं मन्तनं। तञ्हि सुद्दादीहि ञायतीति न रहस्समन्तनं। **भणतीति** अपि नु भणति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८५. **पवत्तारोति** पावचनभावेन वत्तारो, यस्मा ते तेसं मन्तानं पवत्तका, तस्मा आह **"पवत्तयितारो"**ति। सुद्दे बहि कत्वा रहो भासितब्बट्ठेन मन्ता एव, तंतंअत्थपटिपत्तिहेतुताय पदन्ति **मन्तपदं,** अनुपनीतासाधारणताय वा रहस्सभावेन वत्तब्बं हितकिरियाय अधिगमुपायं। **सज्झायितन्ति** गायनवसेन सज्झायितं, तं पन उदत्तानुदत्तादीनं सरानं सम्पादनवसेनेव इच्छितन्ति आह **"सरसम्पत्तिवसेना"**ति। **अञ्ञेसं वुत्तन्ति** पावचनभावेन अञ्ञेसं वुत्तं। **समुपब्यूळ्हन्ति** सङ्गहेत्वा उपरूपरि सञ्ञूळ्हं। **रासिकतन्ति** इरुवेदयजुवेदसामवेदादिवसेन, तत्थापि पच्चेकं मन्तब्रह्मादिवसेन, अज्झायानुवाकादिवसेन च रासिकतं।

तेसन्ति मन्तानं कत्तूनं। **दिब्बेन चक्खुना ओलोकेत्वाति** दिब्बचक्खुपरिभण्डेन यथाकम्मूपगञाणेन सत्तानं कम्मस्सकतादिं पच्चक्खतो दस्सनट्ठेन दिब्बचक्खुसदिसेन पुब्बेनिवासञाणेन अतीतकप्पे ब्राह्मणानं मन्तज्झेनविधिञ्च ओलोकेत्वा। **पावचनेन सह संसन्दित्वाति** कस्सपसम्मासम्बुद्धस्स यं वचनं वट्टसन्निस्सितं, तेन सह अविरुद्धं कत्वा। न हि तेसं विवट्टसन्निस्सितो अत्थो पच्चक्खो होति। **अपरापरे पनाति** अट्ठकादीहि अपरा परे पच्छिमा ओक्काकराजकालादीसु उप्पन्ना। **पक्खिपित्वाति** अट्ठकादीहि गन्थितमन्तपदेसु किलेससन्निस्सितपदानं तत्थ तत्थ पदे पक्खिपनं कत्वा। **विरुद्धे अकंसूति** ब्राह्मणधम्मिकसुत्तादीसु आगतनयेन संकिलेसिकत्थदीपनतो पच्चनीकभूते अकंसु। **इधाति** "त्याहं मन्ते अधीयामी"ति एतस्मिं ठाने। **पटिञ्ञं अग्गहेत्वाति** "तं किं मञ्ञसी"ति एवं पटिञ्ञं अग्गहेत्वाव।

२८६. **निरामगन्धाति** किलेसासुचिवसेन विस्सगन्धरहिता। **अनित्थिगन्धाति** इत्थीनं गन्धमत्तस्सपि अविसहनेन इत्थिगन्धरहिता। एत्थ च **"निरामगन्धा"**ति एतेन तेसं पोराणानं ब्राह्मणानं विक्खम्भितकिलेसतं दस्सेति, **"अनित्थिगन्धा ब्रह्मचारिनो"**ति एतेन एकविहारितं, **"रजोजल्लधरा"**ति एतेन मण्डनविभूसनानुयोगाभावं, **"अरञ्ञायतने पब्बतपादेसु वसिंसू"**ति एतेन मनुस्सूपचारं पहाय विवित्तवासं, **"वनमूलफलाहारा वसिंसू"**ति एतेन सालिमंसोदनादिपणीताहारपटिक्खेपं, **"यदा"**तिआदिना यानवाहनपटिक्खेपं, **"सब्बदिसासू"**तिआदिना रक्खावरणपटिक्खेपं, एवञ्च वदन्तो मिच्छापटिपदापक्खिकं साचरियस्स अम्बट्ठस्स वुत्तिं उपादाय सम्मापटिपदापक्खिकापि तेसं ब्राह्मणानं वुत्ति अरियविनये सम्मापटिपत्तिं उपादाय मिच्छापटिपदायेव। कुतस्स सल्लेखपटिपत्तियुत्तताति। "एवं सुते"तिआदिना भगवा अम्बट्ठं सन्तज्जेन्तो निग्गण्हातीति दस्सेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेठकेहीति वेठकपट्टकाहि। **समन्तानगर**न्ति नगरस्स समन्ततो। **कतसुधाकम्मं** पाकारस्स अधोभागे ठानं वुच्चतीति अधिप्पायो।

द्वेलक्खणदस्सनवण्णना

२८७. **न सक्कोति** सङ्कुचिते इरियापथे अनवसेसतो तेसं दुब्बिभावनतो। **गवेसी**ति ञाणेन परियेसनमकासि। **समानयी**ति ञाणेन सङ्कलेन्तो सम्मा आनयि समाहरि। "**कङ्खती**"ति पदस्स आकङ्खतीति अयमत्थोति आह "**अहो वत पस्सेय्यन्ति पत्थनं उप्पादेती**"ति। **किच्छती**ति किलमति। "**कङ्खती**"ति पदस्स पुब्बे आसिसनत्थतं वत्वा इदानिस्स संसयत्थतमेव विकप्पन्तरवसेन दस्सेन्तो "**कङ्खाय वा दुब्बला विमति वुत्ता**"ति आह। **तीहि धम्मेही**ति तिप्पकारेहि संसयधम्मेहि। **कालुसियभावो**ति अप्पसन्नताय हेतुभूतो आविलभावो।

यस्मा भगवतो कोसोहितं सब्बबुद्धानं आवेणिकं अञ्ञेहि असाधारणं वत्थगुय्हं सुविसुद्धकञ्चनमण्डलसन्निकासं, अत्तनो सण्ठानसन्निवेससुन्दरताय आजानेय्यगन्धहत्थिनो वरङ्गपरमचारुभावं, विकसमानतपनियारविन्दसमुज्जलकेसरावत्तविलासं, सञ्झापभानुरञ्जित-जलवनन्तराभिलक्खितसम्पुण्णचन्दमण्डलसोभञ्च अत्तनो सिरिया अभिभुय्य विराजति, यं बाहिरब्भन्तरमलेहि अनुपक्किलिट्ठताय, चिरकालं सुपरिचितब्रह्मचरियाधिकारताय, सुसण्ठितसण्ठानसम्पत्तिया च, कोपीनम्पि सन्तं अकोपीनमेव, तस्मा वुत्तं "**भगवतो ही**"तिआदि। **पहूतभाव**न्ति पुथुलभावं। एत्थेव हि तस्स संसयो, तनुमुदुसुकुमारतादीसु पनस्स गुणेसु विचारणा एव नाहोसि।

२८८. **हिरिकरणोकास**न्ति हिरियितब्बट्ठानं। **छाय**न्ति पटिबिम्बं। कथं कीदिसन्ति आह "**इद्धिया**"तिआदि। **छायारूपकमत्त**न्ति भगवतो पटिबिम्बरूपं। तञ्च खो बुद्धसन्तानतो विनिमुत्तत्ता रूपकमत्तं भगवतो सरीरवण्णसण्ठानावयवं इद्धिमयं बिम्बकमत्तं। तं पन रूपकमत्तं दस्सेन्तो भगवा यथा अत्तनो बुद्धरूपं न दिस्सति, तथा कत्वा दस्सेति। **निन्नेत्वा**ति नीहरित्वा। **कल्लोसी**ति पुच्छाविस्सज्जने कुसलो छेको असि। **तथाकरणेना**ति कथिनसूचिं विय करणेन। **एत्था**ति पहूतजिव्हाय। **मुदुभावो पकासितो** अमुदुनो घनसुखुमभावापादनत्थं असक्कुणेय्यत्ता **दीघभावो, तनुभावो** चाति दट्ठब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९१. "**अत्थचरकेना**"ति इमिना ब्यतिरेकमुखेन अनत्थचरकतंयेव विभावेति। **न अञ्ञत्रा**ति न अञ्ञस्मिं सुगतियन्ति अत्थो। **उपनेत्वा उपनेत्वा** ति तं तं दोसं उपनेत्वा उपनेत्वा, तेनाह "**सुद्दुदासादिभावं आरोपेत्वा**"ति। **पातेसी**ति पवट्टनवसेन पातेसि।

पोक्खरसातिबुद्धूपसङ्कमनवण्णना

२९३-६. **आगमा नू**ति आगतो नु। **खो**ति निपातमत्तं। **इधा**ति एत्थ, तुम्हाकं सन्तिकन्ति अत्थो। **अधिवासेतू**ति सादियतु, तं पन सादियनं मनसा सम्पटिग्गहो होतीति आह "**सम्पटिच्छतू**"ति।

२९७. **यावदत्थ**न्ति याव अत्थो, ताव भोजनेन तदा कतन्ति अत्थो। **ओणित्त**न्ति आमिसापनयनेन सुचिकतं, तेनाह "**हत्थे च पत्तञ्च धोवित्वा**"ति।

२९८. **अनुपुब्बिं कथ**न्ति अनुपुब्बं कथेतब्बकथं, तेनाह "**अनुपटिपाटिकथ**"न्ति। का पन सा? दानादिकथाति आह "**दानानन्तरं सील**"न्तिआदि। तेन दानकथा ताव पचुरजनेसुपि पवत्तिया सब्बसाधारणत्ता, सुकरत्ता, सीले पतिट्ठानस्स उपायभावतो च आदितो कथेतब्बा। परिच्चागसीलो हि पुग्गलो परिग्गहितवत्थूसु निस्सङ्गभावतो सुखेनेव सीलानि समादियति, तत्थ च सुप्पतिट्ठितो होति। सीलेन दायकपटिग्गाहकसुद्धितो परानुग्गहं वत्वा परपीळानिवत्तिवचनतो, किरियधम्मं वत्वा अकिरियधम्मवचनतो, भोगसम्पत्तिहेतुं वत्वा भवसम्पत्तिहेतुवचनतो च **दानकथानन्तरं सीलकथा** कथेतब्बा, तञ्चे दानसीलं वट्टनिस्सितं, अयं भवसम्पत्ति तस्स फलन्ति दस्सनत्थं इमेहि च दानसीलमयेहि पणीतपणीततरादिभेदभिन्नेहि पुञ्ञकिरियवत्थूहि एता चातुमहाराजिकादीसु पणीतपणीततरादिभेदभिन्ना अपरिमेय्या दिब्बभोगसम्पत्तियो लद्धब्बाति दस्सनत्थं तदनन्तरं सग्गकथा। स्वायं सग्गो रागादीहि उपक्किलिट्ठो, सब्बथानुपक्किलिट्ठो अरियमग्गोति दस्सनत्थं **सग्गानन्तरं मग्गो** कथेतब्बो। मग्गञ्च कथेन्तेन तदधिगमुपायसन्दस्सनत्थं सग्गपरियापन्नापि, पगेव इतरे सब्बेपि कामा नाम बह्वादीनवा अनिच्चा अद्धुवा विपरिणामधम्माति **कामानं आदीनवो,** हीना गम्मा पोथुज्जनिका अनरिया अनत्थसञ्हिताति तेसं **ओकारो** लामकभावो, सब्बेपि भवा किलेसानं वत्थुभूताति **तत्थ संकिलेसो,** सब्बसंकिलेसविप्पमुत्तं निब्बानन्ति **नेक्खम्मे आनिसंसो** च कथेतब्बोति अयमत्थो बोधितोति वेदितब्बो। **मग्गो**ति चेत्थ **इति-**सद्देन आदिअत्थदीपनतो "कामानं आदीनवो"ति एवमादीनं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सङ्गहोति एवमयं अत्थवण्णना कताति वेदितब्बा। "तस्स उप्पत्तिआकारदस्सनत्थ"न्ति कस्मा वुत्तं, ननु मग्गञाणं असङ्खतधम्मारम्मणं, न सङ्खतधम्मारम्मणन्ति चोदनं सन्धायाह **"तञ्ही"**तिआदि। तत्थ **पटिविज्झन्त**न्ति असम्मोहपटिवेधवसेन पटिविज्झन्तं, तेनाह **"किच्चवसेना"**ति।

पोक्खरसातिउपासकत्तपटिवेदनाकथावण्णना

२९९. एत्थ च **"दिट्ठधम्मो"**तिआदि पाळियं दस्सनं नाम ञाणदस्सनतो अञ्ञम्पि अत्थि, तन्निवत्तनत्थं "पत्तधम्मो"ति वुत्तं। पत्ति च ञाणसम्पत्तितो अञ्ञम्पि विज्जतीति ततो विसेसदस्सनत्थं "विदितधम्मो"ति वुत्तं। सा पनेसा विदितधम्मता एकदेसतोपि होतीति निप्पदेसतो विदितभावं दस्सेतुं "परियोगाळ्हधम्मो"ति वुत्तं। तेनस्स सच्चाभिसम्बोधंयेव दीपेति। मग्गञाणञ्हि एकाभिसमयवसेन परिञ्ञादिकिच्चं साधेन्तं निप्पदेसेन चतुसच्चधम्मं समन्ततो ओगाळ्हं नाम होति, तेनाह **"दिट्ठो अरियसच्चधम्मो एतेनाति दिट्ठधम्मो"**ति। **तिण्णा विचिकिच्छा**ति सप्पटिभयकन्तारसदिसा सोळसवत्थुका, अट्ठवत्थुका च तिण्णा वितिण्णा विचिकिच्छा। **विगता कथङ्कथा**ति पवत्तिआदीसु। "एवं नु खो, न नु खो"ति एवं पवत्तिका विगता समुच्छिन्ना कथङ्कथा। **वेसारज्जप्पत्तो**ति सारज्जकरानं पापधम्मानं पहीनत्ता, तप्पटिपक्खेसु च सीलादिगुणेसु सुप्पतिट्ठितत्ता वेसारज्जं विसारदभावं वेय्यत्तियं पत्तो अधिगतो। सायं वेसारज्जप्पत्ति सुप्पतिट्ठितभावोति कत्वा आह **"सत्थुसासने"**ति। अत्तना पच्चक्खतो दिट्ठत्ता अधिगतत्ता न परं पच्चेति, न तस्स परो पच्चेतब्बो अत्थीति **अपरप्पच्चयो**। यं पनेत्थ वत्तब्बं अवुत्तं, तं परतो आगमिस्सति। सेसं सुविञ्ञेय्यमेव।

अम्बट्ठसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. सोणदण्डसुत्तवण्णना

३००. सुन्दरभावेन सातिसयानि अङ्गानि एतेसं अत्थीति अङ्गा, राजकुमाराति आह **"अङ्गा नाम अङ्गपासादिकताया"**तिआदि। **इधापि अधिप्पेता,** न अम्बट्ठसुत्ते एव। **आगन्तुं न दस्सन्ती**ति आगमने आदीनवं दस्सेत्वा पटिक्खिपनवसेन आगन्तुं न दस्सन्ति, नानुजानिस्सन्तीति अधिप्पायो। नीलासोककणिकारकोविळारकुन्दराजरुक्खेहि सम्मिस्सताय तं चम्पकवनं **"नीलादिपञ्चवण्णकुसुमपटिमण्डित"**न्ति दट्ठब्बं। न चम्पकरुक्खानंयेव नीलादिपञ्चकुसुमतायाति वदन्ति। **"भगवा कुसुमगन्धसुगन्धे चम्पकवने विहरती"**ति इमिना न मापनकाले एव तस्मिं नगरे चम्पकरुक्खा उस्सन्ना, अथ खो अपरभागे पीति दस्सेति। मापनकाले हि चम्पकानं उस्सन्नताय सा नगरी "चम्पा"ति नामं लभि। **इस्सरत्ता**ति अधिपतिभावतो। सेना एतस्स अत्थीति सेनिको, सेनिको एव **सेनियो,** अत्थिता चेत्थ बहुभावविसिट्ठाति वुत्तं **"महतिया सेनाय समन्नागतत्ता"**ति।

३०१-२. **संहता**ति सन्निपतिता, "सङ्घिनो"ति वत्तब्बे **"सङ्घी"**ति पुथुत्थे एकवचनं ब्राह्मणगहपतिकानं अधिप्पेतत्ता, तेनाह **"एतेस"**न्ति। राजराजञ्ञादीनं भण्डधरा पुरिसा खता, नेसं तायनतो **खत्ता।** सो हि येहि यत्थ पेसितो, तत्थ तेसं दोसं परिहरन्तो युत्तपत्तवसेन पुच्छितमत्थं कथेति, तेनाह **"पुच्छितपञ्हे ब्याकरणसमत्थो"**ति। कुलापदेसादिना महती मत्ता एतस्साति **महामत्तो।**

सोणदण्डगुणकथावण्णना

३०३. विसिट्ठं रज्जं विरज्जं, विरज्जमेव वेरज्जं यथा "वेकतं वेसय"न्ति, नानाविधं वेरज्जं **नानावेरज्जं,** तत्थ जातातिआदिना सब्बं वुत्तनयेनेव वेदितब्बं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तमब्राह्मणोति अभिजनसम्पत्तिया वित्तसम्पत्तिया विज्जासम्पत्तिया उग्गततरो, उळारो वा ब्राह्मणो। **असन्निपातो**ति लाभमच्छरेन निप्पीळितताय असन्निपातो विय भविस्सति।

"अङ्गेति गमेति ञापेतीति **अङ्गं,** हेतूति आह **"इमिनापि कारणेना"**ति। "उभतो सुजातो"ति एत्तके वुत्ते येहि केहिचि द्वीहि भागेहि सुजातता विञ्ञायेय्य। सुजात-सद्दो च "सुजातो चारुदस्सनो"तिआदीसु (थेरगा० ८१८) आरोहसम्पत्तिपरियायोति जातिवसेनेव सुजाततं विभावेतुं **"मातितो च पितितो चा"**ति वुत्तं। अनोरसपुत्तवसेनापि लोके मातुपितुसमञ्ञा दिस्सति, इध पनस्स ओरसपुत्तवसेनेव इच्छिताति दस्सेतुं **"संसुद्धगहणिको"**ति वुत्तं। गब्भं गण्हाति धारेतीति **गहणी,** गब्भासयसञ्ञितो मातुकुच्छिप्पदेसो। यथाभुत्तस्स आहारस्स विपाचनवसेन गण्हनतो अछड्डनतो **गहणी,** कम्मजतेजोधातु।

पिता च माता च पितरो, पितूनं पितरो पितामहा, तेसं युगो द्वन्दो **पितामहयुगो,** तस्मा, याव सत्तमा पितामहयुगा पितामहद्वन्दाति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। एवञ्हि पितामहग्गहणेनेव मातामहोपि गहितोति। सो अट्ठकथायं विसुं न उद्धटो। युग-सद्दो चेत्थ एकसेसनयेन दट्ठब्बो "युगो च युगो च युगा"ति। एवञ्हि तत्थ तत्थ द्वन्दं गहितमेव होति, तेनाह **"ततो उद्धं सब्बेपि पुब्बपुरिसा पितामहग्गहणेनेव गहिता"**ति। पुरिसग्गहणञ्चेत्थ उक्कट्ठनिद्देसवसेन कतन्ति दट्ठब्बं। एवञ्हि "मातितो"ति पाळिवचनं समत्थितं होति। **अक्खित्तो**ति अप्पत्तखेपो। **अनवक्खित्तो**ति सद्धथालिपाकादीसु न अवक्खित्तो न छड्डितो। **जातिवादेना**ति हेतुम्हि करणवचनन्ति दस्सेतुं **"केन कारणेना"**तिआदि वुत्तं। एत्थ च **"उभतो...पे०... पितामहयुगा"**ति एतेन ब्राह्मणस्स योनिदोसाभावो दस्सितो संसुद्धगहणिकभावकित्तनतो, **"अक्खित्तो"**ति इमिना किरियापराधाभावो। किरियापराधेन हि सत्ता खेपं पापुणन्ति। **"अनुपक्कुट्ठो"**ति इमिना अयुत्तसंसग्गाभावो। अयुत्तसंसग्गम्पि हि पटिच्च सत्ता अक्कोसं लभन्ति।

इस्सरोति आधिपतेय्यसंवत्तनियकम्मबलेन ईसनसीलो, सा पनस्स इस्सरता विभवसम्पत्तिपच्चया पाकटा जाताति अड्ढतापरियायभावेनेव वदन्तो **"अड्ढोति इस्सरो"**ति आह। महन्तं धनं अस्स भूमिगतञ्चेव वेहासट्ठञ्चाति **महद्धनो। तस्सा**ति तस्स तस्स। **वदन्ति** "अन्वयतो, ब्यतिरेकतो च अनुपसङ्कमनकारणं कित्तेमा"ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिकरूपोति विसिट्ठरूपो उत्तमसरीरो। दस्सनं अरहतीति **दस्सनीयो,** तेनाह "**दस्सनयोग्गो**"ति। पसादं आवहतीति **पासादिको,** तेनाह "**चित्तप्पसादजननतो**"ति। **वण्णस्सा**ति वण्णधातुया। **सरीर**न्ति सन्निवेसविसिट्ठं करचरणगीवासीसादिअवयवसमुदायं, सो च सण्ठानमुखेन गय्हतीति "**परमाय वण्णपोक्खरतायाति...पे०... सम्पत्तिया चा**"ति वुत्तं। सब्बवण्णेसु सुवण्णवण्णोव उत्तमोति वुत्तं "**सेट्ठेन सुवण्णवण्णेन समन्नागतो**"ति। तथा हि बुद्धा, चक्कवत्तिनो च सुवण्णवण्णाव होन्ति। **ब्रह्मवच्छसी**ति उत्तमसरीराभो, सुवण्णाभो इच्चेव अत्थो। इममेव हि अत्थं सन्धाय "**महाब्रह्मुनो सरीरसदिसेनेव सरीरेन समन्नागतो**"ति वुत्तं, न ब्रह्मुजुगत्ततं। **अखुद्दावकासो दस्सनाया**ति आरोहपरिणाहसम्पत्तिया, अवयवपारिपूरिया च दस्सनाय ओकासो न खुद्दको, तेनाह "**सब्बानेवा**"तिआदि।

यमनियमलक्खणं **सीलमस्स अत्थीति सीलवा।** तं पनस्स रत्तञ्ञुताय **वुद्धं वड्ढितं अत्थीति वुद्धसीली।** तेन च सब्बदा सम्मायोगतो **वुद्धसीलेन समन्नागतो। सब्बमेतं पञ्चसीलमत्तमेव सन्धाय वदन्ति** ततो परं सीलस्स तत्थ अभावतो, तेसञ्च अजाननतो।

ठानकरणसम्पत्तिया, सिक्खासम्पत्तिया च कत्थचिपि अनूनताय परिमण्डलपदानि ब्यञ्जनानि अक्खरानि एतिस्साति **परिमण्डलपदब्यञ्जना।** अथ वा पज्जति अत्थो एतेनाति पदं, नामादि। यथाधिप्पेतमत्थं ब्यञ्जेतीति ब्यञ्जनं, वाक्यं। तेसं परिपुण्णताय **परिमण्डलपदब्यञ्जना।** अत्थञापने साधनताय वाचाव करणन्ति **वाक्करणं,** उदाहारघोसो। **गुणपरिपुण्णभावेन** तस्स ब्राह्मणस्स, तेन वा भासितब्बअत्थस्स। **पूरे** पुण्णभावे। **पूरे**ति च पुरिमस्मिं अत्थे आधारे भुम्मं, दुतियस्मिं विसये। "**सुखुमालत्तनेना**"ति इमिना तस्सा वाचाय मुदुसण्हभावमाह। **अपलिबुद्धाय** पित्तसेम्हादीहि। **सन्दिट्ठं** सब्बं दस्सेत्वा विय एकदेसं कथनं। **विलम्बितं** सणिकं चिरायित्वा कथनं। "सन्दिद्धविलम्बितादी"ति वा पाठो। तत्थ **सन्दिद्धं** सन्देहजनकं। **आदि-**सद्देन दुक्खलितानुकड्ढितादिं सङ्गण्हाति। "**आदिमज्झपरियोसानं पाकटं कत्वा**"ति इमिना तस्सा वाचाय अत्थपारिपूरिं वदन्ति।

"**जिण्णो**"तिआदीनि पदानि सुविञ्ञेय्यानि, हेट्ठा वुत्तत्थानि च। दुतियनये पन **जिण्णो**ति नायं जिण्णता वयोमत्तेन, अथ खो कुलपरिवट्टेन पुराणताति आह "**जिण्णोति पोराणो**"तिआदि, तेन तस्स ब्राह्मणस्स कुलवसेन उदितोदितभावमाह। जातिवुद्धिया "वयोअनुप्पत्तो"ति वक्खमानत्ता, गुणवुद्धिया ततो सातिसयत्ता च "**वुद्धोति सीलाचारादिगुणवुद्धिया युत्तो**"ति आह। तथा जातिमहल्लकताय वक्खमानत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"महल्लको"ति पदेन विभवमहत्तता योजिता। **मग्गपटिपन्नो**ति ब्राह्मणानं पटिपत्तिवीथिं उपगतो तं अवोक्कम्म चरणतो। **अन्तिमवयन्ति** पच्छिमवयं।

बुद्धगुणकथावण्णना

३०४. तादिसेहि महानुभावेहि सद्धिं युगग्गाहवसेनपि दहनं न मादिसानं अनुच्छविकं, कुतो पन उक्कंसनन्ति इदं ब्राह्मणस्स न युत्तरूपन्ति दस्सेन्तो आह **"न खो पन मेतं युत्त"**न्तिआदि। **सदिसा**ति एकदेसेन सदिसा। न हि बुद्धानं गुणेहि सब्बथा सदिसा केचिपि गुणा अञ्ञेसु लब्भन्ति। **इतरे**ति अत्तनो गुणेहि असदिसगुणे। **इदन्ति** इदं अत्थजातं। **गोपदक**न्ति गाविया पदे ठितउदकं।

सद्विकुलसतसहस्सन्ति सद्विसहस्साधिकं कुलसतसहस्सं **कुलपरियायेना**ति सुद्धोदनमहाराजस्स कुलानुक्कमेन **आगतं। तेसुपी**ति तेसुपि चतूसु निधीसु। **गहितगहित**न्ति गहितं गहितं ठानं पूरतियेव धनेन पटिपाकतिकमेव होति। **अपरिमाणोयेवा**ति "एत्तको एसो"ति केनचि परिच्छिन्दितुं असक्कुणेय्यताय अपरिच्छिन्नो एव।

तत्थाति मञ्चके। **सीहसेय्यं कप्पेसी**ति यथा राहु असुरिन्दो आयामतो, वित्थारतो उब्बेधतो च भगवतो रूपकायस्स परिच्छेदं गहेतुं न सक्कोति, तथा रूपं इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खरोन्तो सीहसेय्यं कप्पेसि।

किलेसेहि आरकत्ता परिसुद्धट्ठेन **अरिय**न्ति आह **"अरियं उत्तमं परिसुद्ध"**न्ति। **अनवज्जट्ठेन कुसलं,** न सुखविपाकट्ठेन। कत्थचि **चतुरासीतिपाणसहस्सानि,** कत्थचि **अपरिमाणापि देवमनुस्सा** यस्मा चतुवीसतिया ठानेसु असङ्खेय्या अपरिमेय्या देवमनुस्सा **मग्गफलामतं** पिविंसु, कोटिसतसहस्सादिपरिमाणेनपि बहू एव, **तस्मा** अनुत्तराचारसिक्खापनवसेन भगवा **बहूनं आचरियो। ते**ति कामरागतो अञ्ञे भगवतो पहीनकिलेसे। **केळना**ति केळायना धनायना।

अपापपुरेक्खारोति अपापे पुरे करोति, न वा पापं पुरतो करोतीतिपि अपापपुरेक्खारोति इममत्थं दस्सेतुं **"अपापे नवलोकुत्तरधम्मे"**तिआदि वुत्तं। तत्थ **अपापे**ति पापपटिपक्खे, पापरहिते च। ब्रह्मनि सेट्ठे बुद्धे भगवति भवा तस्स धम्मदेसनावसेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरियाय जातिया जातत्ता, ब्रह्मुनो वा भगवतो हिता गरुकरणादिना, यथानुसिट्ठपटिपत्तिया च, ब्रह्मं वा सेट्ठं अरियमग्गं जानातीति **ब्रह्मञ्ञा,** अरियसावकसङ्खाता पजा, तेनाह **"सारिपुत्ता"**तिआदि। पकतिब्राह्मणजातिवसेनापि "ब्रह्मञ्ञाय पजाया"ति पदस्स अत्थो वेदितब्बोति दस्सेतुं **"अपिचा"**तिआदि वुत्तं।

तिरोरट्ठा तिरोजनपदाति एत्थ रज्जं **रट्ठं,** राजन्ति राजानो एतेनाति, तदेकदेसभूता पदेसा पन **जनपदो,** जना पज्जन्ति एत्थ सुखजीविकं पापुणन्तीति। पुच्छाय वा दोसं सल्लक्खेत्वाति सम्बन्धो। **असमत्थतन्ति** अत्तनो असमत्थतं। **भगवा विस्सज्जेति** तेसं उपनिस्सयसम्पत्तिं, ञाणपरिपाकं, चित्ताचारञ्च ञत्वाति अधिप्पायो।

"एहि स्वागतवादी"ति इमिना सुखसम्भासपुब्बकं पियवादितं दस्सेति, **"सखिलो"**ति इमिना सण्हवाचतं, **"सम्मोदको"**ति इमिना पटिसन्धारकुसलतं, **"अभाकुटिको"**ति इमिना सब्बत्थेव विप्पसन्नमुखतं, **"उत्तानमुखो"**ति इमिना सुखालापतं, **"पुब्बभासी"**ति इमिना धम्मानुग्गहस्स ओकासकरणतो हितज्झासयतं भगवतो विभावेति।

यत्थ किराति किर-सद्दो अरुचिसूचनत्थो, तेन भगवता अधिवुत्थपदेसे न देवतानुभावेन मनुस्सानं अनुपद्दवता, अथ खो बुद्धानुभावेनाति दस्सेति। तेनाह "अपिचा"तिआदि।

अनुसासितब्बोति विनेय्यजनसमूहो गय्हतीति निब्बत्तितं अरियसङ्घमेव दस्सेतुं **"सयं वा"**तिआदि वुत्तं, अनन्तरस्स विधि पटिसेधो वाति कत्वा। **"तादिसोवा"**ति इमिना "सयं वा"तिआदिना वुत्तविकप्पो एव पच्चामट्ठोति। "पुरिमपदस्सेव वा"ति विकप्पन्तरग्गहणं। **बहूनं तित्थकरानन्ति** पूरणादीनं अनेकेसं तित्थकरानं, निद्धारणे चेतं सामिवचनं। **कारणेना**ति अप्पिच्छसन्तुट्ठतादिसमारोपनलक्खणेन कारणेन। **आगन्तुका नवका**ति अभिनवा आगन्तुका अब्भागता। **परियापुणामी**ति परिच्छिन्दितुं जानामि सक्कोमि, तेनाह **"जानामी"**ति। **"कप्पम्पि चे अञ्ञमभासमानो"**ति अभूतपरिकप्पनवचनमेतं तथा भासमानस्स अभावतो।

३०५. अलं-सद्दो अरहत्तोपि होति "अलमेव निब्बिन्दितु"न्तिआदीसु (सं० नि०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१.१२४) वियाति आह "**अलमेवाति युत्तमेवा**"ति। पुटेन नेत्वा असितब्बतो परिभुञ्जितब्बतो **पुटोसं वुच्चति पाथेय्यं। पुटंसेन** पुरिसेन।

सोणदण्डपरिवितक्कवण्णना

३०७. उभतोपक्खिकाति मिच्छादिट्ठिसम्मादिट्ठीनं वसेन उभयपक्खिका। **केराटिकाति** सठा।

ब्राह्मणपञ्ञत्तिवण्णना

३०९. विघातन्ति चित्तदुक्खं।

३११-३. सुजन्ति होमदब्बिं **पग्गण्हन्तेसूति** जुहनत्थं गण्हनकेसु, इरुब्बिज्जेसूति अत्थो। **पठमो वाति** तत्थ सन्निपतितेसु यजनकिरियायं सब्बपधानो वा। **दुतियो वाति** तदनन्तरो वा। "**सुज**"न्ति करणे एतं उपयोगवचनन्ति आह "**सुजाया**"ति। अग्गिहुत्तपमुखताय यञ्ञस्स यञ्ञे दिय्यमानं सुजामुखेन दीयतीति आह "**सुजाय दिय्यमान**"न्ति। **पोराणाति** अट्ठकथाचरिया। **विसेसतोति** विज्जाचरणविसेसतो, न ब्राह्मणेहि इच्छितविज्जाचरणमत्ततो। **उत्तमब्राह्मणस्साति** अनुत्तरदक्खिणेय्यताय उक्कट्ठब्राह्मणस्स। **ब्राह्मणसमयन्ति** ब्राह्मणसिद्धन्तं। **मा भिन्दि** मा विनासेसि।

३१६. समसमोति समोयेव हुत्वा समो। हीनोपमवसेनपि समता वुच्चतीति तं निवत्तेन्तो "**ठपेत्वा एकदेससमत्त**"न्तिआदिमाह। **कुलकोटिपरिदीपनन्ति** कुलआदिपरिदीपनं **अथापि सियाति** अथापि तुम्हाकं एवं परिवितक्को सिया। **ब्राह्मणभावं साधेति** वण्णो। **मन्तजातीसुपि** एसेव नयो। **सीलमेव साधेस्सति** ब्राह्मणभावं। कस्माति चे? आह "**तस्मिञ्हिस्सा**"तिआदि। **सम्मोहमत्तं वण्णादयोति** वण्णमन्तजातियो हि ब्राह्मणभावस्स अङ्गन्ति सम्मोहमत्तमेतं असमवेक्खिताभिमानभावतो।

सीलपञ्ञाकथावण्णना

३१७. कथितो ब्राह्मणेन पञ्होति "सीलवा च होती"तिआदिना द्विन्नमेव अङ्गानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसेन यथापुच्छितो पञ्हो याथावतो विस्सज्जितो **एत्था**ति एतस्मिं यथाविस्सज्जिते अत्थे। **तस्सा**ति सोणदण्डस्स। **सीलपरिसुद्धा**ति सीलसम्पत्तिया सब्बसो सुद्धा अनुपक्किलिट्ठा। **कुतो दुस्सीले पञ्ञा** असमाहितत्ता तस्स। **जळे एळमूगे कुतो सील**न्ति जळे एळमूगे दुप्पञ्ञे कुतो सीलं सीलविभागस्स, सीलपरिसोधनूपायस्स च अजाननतो। पकट्ठं उक्कट्ठं ञाणं पञ्ञाणन्ति, पाकतिकं ञाणं निवत्तेतुं "पञ्ञाण"न्ति वुत्तन्ति तयिदं पकारेहि जाननतो **पञ्ञा'वा**ति आह **"पञ्ञाणन्ति पञ्ञा येवा"**ति।

सीलेनधोताति समाधिपदट्ठानेन सीलेन सकलसंकिलेसमलविसुद्धिया धोता विसुद्धा, तेनाह **"कथं पना"**तिआदि। तत्थ **धोवती**ति सुज्झति। **महासट्ठिवस्सत्थेरो विया**ति सट्ठिवस्समहाथेरो विय। **वेदनापरिग्गहमत्तम्पी**ति एत्थ **वेदनापरिग्गहो** नाम यथाउप्पन्नं वेदनं सभावरसतो उपधारेत्वा "अयं वेदना फस्सं पटिच्च, सो फस्सो अनिच्चो दुक्खो विपरिणामधम्मो"ति लक्खणत्तयं आरोपेत्वा पवत्तितविपस्सना। एवं विपस्सन्तेन "सुखेन सक्का सा वेदना अधिवासेतुं "वेदना एव वेदियती"ति। **वेदनं विक्खम्भेत्वा**ति यथाउप्पन्नं दुक्खं वेदनं अननुवत्तित्वा विपस्सनं आरभित्वा वीथिं पटिपन्नाय विपस्सनाय तं विनोदेत्वा। **संसुमारपतितेना**ति कुम्भीलेन विय भूमियं उरेन निपज्जनेन। **पञ्ञाय सीलं धोवित्वा**ति अखण्डादिभावापादनेन सीलं आदिमज्झपरियोसानेसु पञ्ञाय सुविसोधितं कत्वा।

३१८. **"कस्मा आहा"**ति उपरिदेसनाय कारणं पुच्छति। **लज्जा** नाम "सीलस्स जातिया च गुणदोसपकासनेन समणेन गोतमेन पुच्छितपञ्हं विस्सज्जेसी"ति परिसाय पञ्ञातता। **एत्तकपरमा**ति एत्तकउक्कंसकोटिका पञ्च सीलानि, वेदत्तयविभावनं पञ्ञञ्च लक्खणादितो निद्धारेत्वा जाननं नत्थि, केवलं तत्थ वचीपरमा मयन्ति दस्सेतीति आह **"सीलपञ्ञाणन्ति वचनमेव परमं अम्हाक"**न्ति। **"अयं पन विसेसो"**ति इदं निय्यातनापेक्खं सीलनिद्देसे, तेनाह **"सीलमिच्चेव निय्यातित"**न्ति। सामञ्ञफले पन "सामञ्ञफल" मिच्चेव निय्यातितं, पञ्ञानिद्देसे पन झानपञ्ञं अधिट्ठानं कत्वा विपस्सनापञ्ञावसेनेव पञ्ञानिय्यातनं कतं, तेनाह **"पठमज्झानादीनी"**ति।

सोणदण्डउपासकत्तपटिवेदनाकथावण्णना

३२१-२. **नत्ता**ति पुत्तपुत्तो। अगारवं नाम नत्थि, न चायं भगवति अगारवेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"अहञ्चेव खो पना"तिआदिमाह, अथ खो अत्तलाभपरिहानिभयेन। अयञ्हि यथा तथा अत्तनो महाजनस्स सम्भावनं उप्पादेत्वा कोहञ्ञेन परे विम्हापेत्वा लाभुप्पादं निजिगिसन्तो विचरति, तस्मा तथा अवोच, तेनाह **"इमिना किरा"**तिआदि।

तक्खणानुरूपायाति यादिसी तदा तस्स अज्झासयप्पवत्ति, तदनुरूपायाति अत्थो। तस्स तदा तादिसस्स विवट्टसन्निस्सितस्स ञाणस्स परिपाकस्स अभावतो केवलं अब्भुदयनिस्सितो एव अत्थो दस्सितोति आह **"दिट्ठधम्मिकसम्परायिकमत्थं सन्दस्सेत्वा"**ति, पच्चक्खतो विभावेत्वाति अत्थो। **कुसले धम्मे**ति तेभूमके कुसले धम्मे, "चतुभूमके"तिपि वत्तुं वट्टतियेव, तेनेवाह "आयतिं निब्बानत्थाय वासनाभागिया वा"ति। **तत्था**ति कुसलधम्मे यथा समादपिते। **नन्ति** ब्राह्मणं **समुत्तेजेत्वा**ति सम्मदेव उपरूपरि निसानेत्वा पुञ्ञकिरियाय तिक्खविसदभावं आपादेत्वा। तं पन अत्थतो तत्थ उस्साहजननं होतीति आह **"सउस्साहं कत्वा"**ति। एवं पुञ्ञकिरियाय सउस्साहता, एवरूपं गुणसमङ्गिता च नियमतो दिट्ठधम्मिका अत्थसम्पादनीति एवं **सउस्साहताय, अञ्ञेहि च** तस्मिं **विज्जमानगुणेहि सम्पहंसेत्वा** सम्मदेव हट्ठतुट्ठभावं आपादेत्वा।

यदि भगवा धम्मरतनवस्सं वस्सि, अथ कस्मा सो विसेसं नाधिगच्छतीति आह **"ब्राह्मणो पना"**तिआदि। यदि एवं कस्मा भगवा तस्स तथा धम्मरतनवस्सं वस्सीति आह **"केवलमस्सा"**तिआदि। न हि भगवतो निरत्थका देसना होतीति।

सोणदण्डसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. कूटदन्तसुत्तवण्णना

३२३. **पुरिमसुत्तद्वये**ति अम्बट्ठसोणदण्डसुत्तद्वये। **वुत्तनयमेवा**ति यं तत्थ आगतसदिसं इधागतं तं अत्थवण्णनतो वुत्तनयमेव, तत्थ वुत्तनयेनेव वेदितब्बन्ति अत्थो। "तरुणो अम्बरुक्खो अम्बलट्ठिका"ति (दी० नि० अट्ठ० १.२) ब्रह्मजालसुत्तवण्णनायं वुत्तन्ति आह **"अम्बलट्ठिका ब्रह्मजाले वुत्तसदिसावा"**ति।

यञ्ञावाटं सम्पादेत्वा महायञ्ञं उद्दिस्स सविञ्ञाणकानि, अविञ्ञाणकानि च यञ्ञूपकरणानि उपट्ठपितानीति वुत्तं पाळियं "महायञ्ञो उपक्खटो"ति, तं उपक्खरणं तेसं तथासज्जनन्ति आह **"उपक्खटोति सज्जितो"**ति। **वच्छतरसतानी**ति युवभावप्पत्तानि बलववच्छसतानि, ते पन वच्छा एव होन्ति, न दम्मा बलिबद्दा चाति आह **"वच्छसतानी"**ति। **एते**ति उसभादयो उरब्भपरियोसाना। **अनेके**सन्ति अनेकजातिकानं। सङ्ख्यावसेन अनेकता सत्तसतग्गहणेनेव परिच्छिन्ना। **मिगपक्खीन**न्ति महिंसरुरुपसदकुरुङ्ग-गोकण्ण-मिगानञ्चेव मोरकपिञ्जरतित्तिरकपोतादिपक्खीनञ्च।

३२८. यञ्ञसङ्खातस्स पुञ्ञस्स यो संकिलेसो, तस्स निवारणतो निसेधनतो **विधा** वुच्चन्ति विप्पटिसारविनोदना। ततो एव ता तं पुञ्ञाभिसन्दं अविच्छिन्दित्वा ठपेन्तीति **"ठपना"**ति वुत्ता। तासं पन यञ्ञस्स आदिमज्झपरियोसानवसेन तीसु कालेसु पवत्तिया यञ्ञो तिट्ठपनोति आह **"तिट्ठपनन्ति अत्थो"**ति। परिक्खरोन्ति अभिसङ्खरोन्तीति **परिक्खारा,** परिवाराति वुत्तं। **"सोळसपरिक्खारन्ति सोळसपरिवार"**न्ति।

महाविजितराजयञ्ञकथावण्णना

३३६. **पुब्बचरित**न्ति अत्तनो पुरिमजातिसम्भूतं बोधिसम्भारभूतं पुञ्ञचरियं। तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिस्स अनुगामिनोव निधिस्स थावरो निधि निदस्सितो। अड्ढता नाम विभवसम्पन्नता, सा तं तं उपादायुपादाय वुच्चतीति आह **"यो कोचि अत्तनो सन्तकेन विभवेन अड्ढो होती"**ति। तथा महद्धनतापीति तं उक्कंसगतं दस्सेतुं **"महता अपरिमाणसङ्ख्येन धनेन समन्नागतो"**ति वुत्तं। भुञ्जितब्बतो परिभुञ्जितब्बतो विसेसतो कामा **भोगो** नामाति आह **"पञ्चकामगुणवसेना"**ति। **पिण्डपिण्डवसेना**ति भाजनालङ्कारादिविभागं अहुत्वा केवलं खण्डखण्डवसेन।

मासकादीति **आदि**-सद्देन थालकादिं सङ्गण्हाति। **भाजनादीति** **आदि**-सद्देन वत्थसेय्यावसथादिं सङ्गण्हाति। सुवण्णरजतमणिमुत्तावेळुरियवजिरपवाळानि **"सत्तरतनानी"**ति वदन्ति। सालिवीहिआदि **पुब्बण्णं** पुरक्खतंसस्सफलन्ति कत्वा। तब्बिपरियायतो मुग्गमासादि **अपरण्णं**। **देवसिकं...पे०... वसेना**ति दिवसे दिवसे परिभुञ्जितब्बदातब्बवड्ढेतब्बादिविधिना परिवत्तनकधनधञ्ञवसेन।

कोट्ठं वुच्चति धञ्ञस्स आठपनट्ठानं, कोट्ठभूतं अगारं **कोट्ठागारं** तेनाह **"धञ्ञेन...पे०... गारो चा"**ति। एवं सारगब्भं "कोसो"ति, धञ्ञस्स आठपनट्ठानञ्च "कोट्ठागार"न्ति दस्सेत्वा इदानि ततो अञ्ञथा तं दस्सेतुं **"अथ वा"**तिआदि वुत्तं। तत्थ यथा असिनो तिक्खभावपरिहारतो परिच्छदो "कोसो"ति वुच्चति, एवं रञ्ञो तिक्खभावपरिहरणत्ता चतुरङ्गिनी सेना "कोसो"ति आह **"चतुब्बिधो कोसो हत्थी अस्सा रथा पत्ती"**ति। **"वत्थकोट्ठागारग्गहणेनेव** सब्बस्सापि भण्डट्ठपनट्ठानस्स गहितत्ता तिविधं कोट्ठागारन्ति वुत्तं। **"इदं एवं बहु"**न्तिआदि राजा तमत्थं जानन्तोव भण्डागारिकेन कथापेत्वा परिसाय निस्सद्दभावापादनत्थञ्च आह एवं मे पकतिक्खोभो न भविस्सतीति।

३३७-८. **ब्राह्मणो चिन्तेसि** जनपदस्स अनुपद्दवत्थञ्चेव यञ्ञस्स च चिरानुपवत्तनत्थञ्च, तेनाह **"अयं राजा"**तिआदि।

सत्तानं हितस्स सुखस्स च विदूसनतो अहितस्स दुक्खस्स च आवहनतो चोरा एव कण्टका, तेहि **चोरकण्टकेहि**। यथा गामवासीनं घाता गामघाता, एवं पन्थिकानं दुहना विबाधना **पन्थदुहना**। **अधम्मकारी**ति धम्मतो अपेतस्स अयुत्तस्स करणसीलो, अत्तनो विजिते जनपदादीनं ततो अनत्थतो तायनेन खत्तियो यो खत्तधम्मो, तस्स वा अकरणसीलोति अत्थो। दस्सवो एव खीलसदिसत्ता **दस्सुखीलं**। यथा हि खेत्ते खीलं कसनादीनं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुखप्पवत्तिं, मूलसन्तानेन सस्सस्स बुद्धिञ्च विबन्धति, एवं दस्सवो रज्जे राजाणाय सुखप्पवत्तिं, मूलविरुळ्हिया जनपदानं परिबुद्धिञ्च विबन्धन्ति। तेन वुत्तं "दस्सवो एव खीलसदिसत्ता दस्सुखील"न्ति। **वध**-सद्दो हिंसनत्थोपि होतीति वुत्तं **"मारणेन वा कोट्टनेन वा"**ति। **अट्टुबन्धनादिना**ति **आदि**-सद्देन रज्जुबन्धनसङ्खलिकबन्धनादिं सङ्गण्हाति। **जानिया**ति धनजानिया, तेनाह **"सतं गण्हथा"**तिआदि। **पञ्चसिखमुण्डकरण**न्ति काकपक्खकरणं। **गोमयसिञ्चन**न्ति सीसे छकणोदकावसेचनं। **कुदण्डकबन्धन**न्ति गद्दुलबन्धनं। **एवमादीनी**ति **आदि**-सद्देन खुरमुण्डं करित्वा भस्मपुटपोथनादिं सङ्गण्हाति। **ऊहनिस्सामी**ति उद्धरिस्सामि, अपनेस्सामीति अत्थो। **उस्सहन्ती**ति पुब्बे तत्थ कतपरिचयताय उस्साहं कातुं सक्कोन्ति। **अनुप्पदेतू**ति अनु अनु पदेतु, तेनाह **"दिन्ने अप्पहोन्ते"**तिआदि। सक्खिकरणपण्णारोपनानि वड्ढिया सह वा विना वा पुन गहेतुकामस्स, इध पन तं नत्थीति आह **"सक्खिं अकत्वा"**तिआदि, तेनाह **"मूलच्छेज्जवसेना"**ति। पकारतो भण्डानि आभरति सम्भरति परिचयति एतेनाति **पाभतं,** भण्डमूलं।

दिवसे दिवसे दातब्बभत्तं **देवसिकभत्तं।** "अनुमासं, अनुपोसथ"न्तिआदिना दातब्बं वेतनं **मासिकादिपरिब्बयं।** तस्स तस्स कुलानुरूपेन कम्मानुरूपेन सूरभावानुरूपेनाति पच्चेकं अनुरूप-सद्दो योजेतब्बो। सेनापच्चादि **ठानन्तरं।** सककम्मपसुतत्ता, अनुपद्दवत्ता च **धनधञ्ञानं रासिको** रासिकारभूतो। **खेमेन ठिता**ति अनुपद्दवेन पवत्ता, तेनाह **"अभया"**ति, कुतोचिपि भयरहिताति अत्थो।

चतुपरिक्खारवण्णना

३३९. तस्मिं तस्मिं किच्चे अनुयन्ति अनुवत्तन्तीति अनुयन्ता, अनुयन्ता एव **आनुयन्ता** यथा "अनुभावो एव आनुभावो"ति। **अस्सा**ति रञ्ञो। **ते**ति आनुयन्तखत्तियादयो। **अत्तमना न भविस्सन्ति** "अम्हे एत्थ बहि करोती"ति। निबन्धविपुलागमो गामो **निगमो,** विवड्ढितमहाआयो महागामोति अत्थो। **जनपद**-सद्दो हेट्ठा वुत्तत्थो एव। छन्नं पकतीनं वसेन रञ्ञो हितसुखाभिबुद्धि, तदेकदेसा च आनुयन्तादयोति वुत्तं **"यं तुम्हाकं अनुजाननं मम भवेय्य दीघरत्तं हिताय सुखाया"**ति।

अमा सह भवन्ति किच्चेसूति **अमच्चा,** रज्जकिच्चवोसासनका। ते पन रञ्ञो पिया, सहपवत्तनका च होन्तीति आह **"पियसहायका"**ति। रञ्ञो परिसति भवाति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारिसज्जा, ते पन केति आह **"सेसा आणत्तिकरा"**ति, यथावुत्तआनुयन्तखत्तियादी हि अवसेसा रञ्ञो आणाकराति अत्थो। सतिपि देय्यधम्मे आनुभावसम्पत्तिया, परिवारसम्पत्तिया च अभावे तादिसं दातुं न सक्का, वुड्ढकाले च तादिसानम्पि राजूनं तदुभयं हायतेवाति आह **"महल्लककाले...पे०... न सक्का"**ति। **अनुमतियाति** अनुजाननेन, **पक्खाति** सपक्खा यञ्ञस्स अङ्गभूता। परिक्खरोन्तीति **परिक्खारा,** सम्भारा। इमे तस्स यञ्ञस्स अङ्गभूता परिवारा विय होन्तीति आह **"परिवारा भवन्ती"**ति।

अट्ठपरिक्खारवण्णना

३४०. यससाति आनुभावेन, तेनाह **"आणाठपनसमत्थताया"**ति। **सद्दहतीति** "दाता दानस्स फलं पच्चनुभोती"ति पत्तियायति। दाने सूरोति **दानसूरो** देय्यधम्मे ईसकम्पि सङ्गं अकत्वा मुत्तचागो। स्वायमत्थो कम्मस्सकतञ्ञाणस्स तिक्खविसदभावेन वेदितब्बो, तेनाह **"न सद्धामत्तकेनेवा"**तिआदि। यस्स हि कम्मस्सकता पच्चक्खतो विय उपट्ठाति, सो एवं वुत्तो। **यं दानं देतीति** यं देय्यधम्मं परस्स देति। **तस्स पति हुत्वाति** तब्बिसयं लोभं सुट्ठु अभिभवन्तो तस्स अधिपति हुत्वा देति अनधिभवनीयत्ता। "न दासो, न सहायो"ति वत्वा तदुभयं अन्वयतो, ब्यतिरेकतो च दस्सेतुं **"यो ही"**तिआदि वुत्तं। **दासो हुत्वा देति** तण्हाय दानस्स दासब्यतं उपगतत्ता। **सहायो हुत्वा देति** तस्स पियभावानिस्सज्जनतो। **सामी हुत्वा देति** तत्थ तण्हादासब्यतो अत्तानं मोचेत्वा अभिभुय्य पवत्तनतो। सामिपरिभोगसदिसा हेतस्सायं पवत्ततीति।

समितपापा समणा, बाहितपापा ब्राह्मणा उक्कट्ठनिद्देसेन, पब्बज्जामत्तसमणा जातिमत्तब्राह्मणा पन **कपणादिग्गहणेनेवेत्थ गहिताति** अधिप्पायो। **दुग्गताति** दुक्करजीविकं उपगता कसिरवुत्तिका, तेनाह **"दलिद्दमनुस्सा"**ति। **अद्धिकाति** अद्धानमग्गगामिनो। **वणिब्बकाति** दायकानं गुणकित्तनवसेन, कम्मफलकित्तनमुखेन च याचनका सेय्यथापि नग्गचरियादयो, तेनाह **"इट्ठं दिन्न"**न्तिआदि। **"पसतमत्त"**न्ति वीहितण्डुलादिवसेन वुत्तं, **"सरावमत्त"**न्ति यागुभत्तादिवसेन। ओपानं वुच्चति ओगाहेत्वा पातब्बतो नदितळाकादीनं सब्बसाधारणतित्थं ओपानं विय भूतोति **ओपानभूतो,** तेनाह **"उदपानभूतो"**तिआदि। **सुतमेव सुतजातन्ति जात-**सद्दस्स अनत्थन्तरवाचकतमाह यथा "कोसजात"न्ति।

अतीतादिअत्थचिन्तनसमत्थता नामस्स रञ्ञो अनुमानवसेन, इतिकत्तब्बतावसेन च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेदितब्बा, न बुद्धानं विय तत्थ पच्चक्खदस्सितायाति दस्सेतुं **"अतीते"**तिआदि वुत्तं। अट्ठतादयो ताव यञ्ञस्स परिक्खारा होन्तु तेहि विना तस्स असिज्झनतो, सुजातता सुरूपता पन कथन्ति आह **"एतेहि किरा"**तिआदि। एत्थ च केचि "यथा अट्ठतादयो यञ्ञस्स एकंसतो अङ्गानि, न एवमभिजातता, अभिरूपता चाति दस्सेतुं **किर**सद्दग्गहण"न्ति वदन्ति "अयं दुज्जातो"तिआदि वचनस्स अनेकन्तिकतं मञ्ञमाना, तयिदं असारं, सब्बसाधारणवसेन हेस यञ्ञारम्भो तत्थ सिया केसञ्चि तथापरिवितक्कोति तस्सापि अवकासाभावादस्सनत्थं तथा वुत्तत्ता। **किर**-सद्दो पन तदा ब्राह्मणेन चिन्तिताकारसूचनत्थो दट्ठब्बो। **एवमादीनी**ति **आदि**-सद्देन "अयं विरूपो दलिद्दो अप्पेसक्खो अस्सद्धो अप्पस्सुतो अनत्थञ्ञू न मेधावी"ति एतेसं सङ्गहो दट्ठब्बो।

चतुपरिक्खारादिवण्णना

३४१. "सुजं पग्गण्हन्तान"न्ति पुरोहितस्स सयमेव कटच्छुग्गहणजोतनेन एवं सहत्था, सक्कच्चवञ्च दाने युत्तता इच्छितब्बाति दस्सेति। **एवं दुज्जातस्सा**ति एत्थापि हेट्ठा वुत्तनयेनेव अत्थो वेदितब्बो।

३४२. तिण्णं ठानानन्ति दानस्स आदिमज्झपरियोसानभूतासु तीसु भूमीसु, अवत्थासूति अत्थो। **चलन्ती**ति कम्पन्ति पुरिमाकारेन न तिट्ठन्ति। **करणत्थे**ति ततियाविभत्तिअत्थे। कत्तरि हेतं सामिवचनं करणीयसद्दापेक्खाय। "पच्चानुतापो न कत्तब्बो"ति वत्वा तस्स अकरणूपायं दस्सेतुं **"पुब्बचेतना पन अचला पतिट्ठपेतब्बा"**ति वुत्तं। तत्थ **अचला**ति दळ्हा केनचि असंहीरा। **पतिट्ठपेतब्बा**ति सुपतिट्ठिता कातब्बा। एवं करणेन हि यथा तं दानं सम्पति यथाधिप्पायं निप्पज्जति, एवं आयतिम्पि विपुलफलतायाति आह **"एवञ्हि दानं महप्फलं होतीति दस्सेती"**ति, विप्पटिसारेन अनुपक्किलिट्ठभावतो। **मुञ्चचेतना**ति परिच्चागचेतना। तस्सा निच्चलभावो नाम मुत्तचागता पुब्बाभिसङ्खारवसेन उळारभावो, समनुस्सरणचेतनाय पन निच्चलभावो "अहो मया दानं दिन्नं साधु सुट्ठू"ति तस्स सक्कच्चं पच्चवेक्खणावसेन वेदितब्बो। **तथा अकरोन्तस्सा**ति मुञ्चचेतनं, तत्थ पच्चासमनुस्सरणचेतनञ्च वुत्तनयेन निच्चलं अकरोन्तस्स विप्पटिसारं उप्पादेन्तस्स। खेत्तविसेसे परिच्चागस्स कतत्ता लद्धेसुपि **उळारेसु भोगेसु चित्तं नापि नमति।** यथा कथन्ति आह **"महारोरुवं उपपन्नस्स सेट्ठिगहपतिनो विया"**ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो किर तगरसिखिं पच्चेकबुद्धं अत्तनो गेहद्वारे पिण्डाय ठितं दिस्वा "इमस्स समणस्स पिण्डपातं देही"ति भरियं आणापेत्वा राजुपट्ठानत्थं पक्कामि। सेट्ठिभरिया सप्पञ्ञजातिका, सा चिन्तेसि "मया एत्तकेन कालेन 'इमस्स देथा'ति वचनमत्तं पिस्स न सुतपुब्बं, अयञ्च मञ्ञे अहोसि पच्चेकसम्बुद्धो, यथा तथा अदत्वा पणीतं पिण्डपातं दस्सामी"ति उपगन्त्वा पच्चेकसम्बुद्धं पञ्चपतिट्ठितेन वन्दित्वा पत्तं आदाय अन्तोनिवेसने पञ्ञत्तासने निसीदापेत्वा परिसुद्धेहि सालितण्डुलेहि भत्तं सम्पादेत्वा तदनुरूपं खादनीयं, ब्यञ्जनं, सूपेय्यञ्च अभिसङ्खरित्वा बहि गन्धेहि अलङ्करित्वा पच्चेकसम्बुद्धस्स हत्थेसु पतिट्ठपेत्वा वन्दि। पच्चेकबुद्धो "अञ्ञेसम्पि पच्चेकबुद्धानं सङ्गहं करिस्सामी"ति अपरिभुञ्जित्वाव अनुमोदनं कत्वा पक्कामि। सोपि खो सेट्ठि राजुपट्ठानं कत्वा आगच्छन्तो पच्चेकबुद्धं दिस्वा अहं "तुम्हाकं पिण्डपातं देथा"ति वत्वा पक्कन्तो, अपि वो लद्धो पिण्डपातोति। आम सेट्ठि लद्धोति। "पस्सामा"ति गीवं उक्खिपित्वा ओलोकेसि। अथस्स पिण्डपातगन्धो उट्ठहित्वा नासपुटं पूरेसि। सो "महा वत मे धनब्ययो जातो"ति चित्तं सन्धारेतुं असक्कोन्तो पच्छा विप्पटिसारी अहोसि। विप्पटिसारस्स पन उप्पन्नाकारो "वरमेत"न्तिआदिना (सं० नि० १.१.१३१) पाळियं आगतोयेव। भातु पनायं एकं पुत्तकं सापतेय्यकारणा जीविता वोरोपेसि, तेन महारोरुवं उपपन्नो। पिण्डपातदानेन पनेस सत्तक्खत्तुं सुग्गतिं सग्गं लोकं उपपन्नो, सत्तक्खत्तुमेव च सेट्ठिकुले निब्बत्तो, न चास्स उळारेसु भोगेसु चित्तं नमि, तेन वुत्तं "नापि उळारेसु भोगेसु चित्तं नमती"ति।

३४३. आकरोति अत्तनो अनुरूपताय समरियादं सपरिच्छेदं फलं निब्बत्तेतीति **आकारो,** कारणन्ति आह **"दसहि आकारेहीति दसहि कारणेही"**ति। **पटिग्गाहकतो वाति** बलवतरो हुत्वा उप्पज्जमानो पटिग्गाहकतोव उप्पज्जति, इतरो पन देय्यधम्मतो, परिवारजनतोपि उप्पज्जेय्येव। **उप्पज्जितुं युत्त**न्ति उप्पज्जनारहं। **तेसंयेव** पाणातिपातीनं। यजनं नामेत्थ दानं अधिप्पेतं, न अग्गिजुहनन्ति आह **"यजतं भवन्ति देतु भव"**न्ति। **विस्सज्जतू**ति मुत्तचागवसेन विस्सज्जतु। **अब्भन्तर**न्ति अज्झत्तं, सकसन्तानेति अत्थो।

३४४. हेट्ठा सोळस परिक्खारा वुत्ता यञ्ञस्स ते वत्थुं कत्वा, इध पन सन्दस्सनादिवसेन अनुमोदनाय आरद्धत्ता वुत्तं **"सोळसहि आकारेही"**ति। **दस्सेत्वा** अत्तनो देसनानुभावेन पच्चक्खतो विय फलं दस्सेत्वा, अनेकवारं पन कथनतो च आमेडितवचनं। **तमत्थ**न्ति यथावुत्तं दानफलवसेन कम्मफलसम्बन्धं। **समादपेत्वा**ति सुतमत्तमेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकत्वा यथा राजा तमत्थं सम्मदेव आदियति चित्ते करोन्तो सुग्गहितं कत्वा गण्हाति, तथा सक्कच्चं आदापेत्वा। आमेडितकारणं हेट्ठा वुत्तमेव।

"**विप्पटिसारविनोदनेना**"ति इदं निदस्सनमत्तं लोभदोसमोहइस्सामच्छरियमानादयोपि हि दानचित्तस्स उपक्किलेसा, तेसं विनोदनेनपि तं समुत्तेजितं नाम होति तिक्खविसदभावप्पत्तितो। आसन्नतरभावतो वा विप्पटिसारस्स तब्बिनोदनमेव गहितं, पवत्तितेपि हि दाने तस्स सम्भवतो। याथावतो विज्जमानेहि गुणेहि तुट्ठपहट्ठभावापादनं सम्पहंसनन्ति आह "**सुन्दरं ते...पे०... थुतिं कत्वा कथेसी**"ति। **धम्मतो**ति सच्चतो। सच्चञ्हि धम्मतो अनपेतत्ता धम्मं, उपसमचरियाभावतो समं, युत्तभावेन कारणन्ति च वुच्चतीति।

३४५. तस्मिं यञ्ञे रुक्खतिणच्छेदोपि नाम नाहोसि, कुतो पाणवधोति पाणवधाभावस्सेव दळ्हीकरणत्थं सब्बसो विपरीतगाहाविदूसितञ्चस्स दस्सेतुं पाळियं "नेव गावो हञ्ञिंसू"ति आदिं वत्वापि "न रुक्खा छिज्जिंसू"तिआदि वुत्तं, तेनाह "**किं पन गावो**"तिआदि। **बरिहिसत्थाया**ति परिच्छेदनत्थाय। **वनमालासङ्खेपेना**ति वनपुप्फेहि गन्थितमालानियामेन। **भूमियं वा पत्थरन्ती**ति वेदिभूमिं परिक्खिपन्ता तत्थ पन्थरन्ति। **अन्तोगेहदासादयो**ति अन्तोजातधनक्कीतकरमरानीतसयंदासा। **पुब्बमेवा**ति भतिकरणतो पगेव। **गहेत्वा करोन्ती**ति दिवसे दिवसे गहेत्वा करोन्ति। **तज्जिता**ति गज्जिता। **पियसमुदाचारेनेवा**ति इट्ठवचनेनेव। **फाणितेन चेवा**ति एत्थ **च**-सद्दो अवुत्तसमुच्चयत्थो, तेन पणीतपणीतानं नानप्पकारानं खादनीयभोजनीयादीनञ्चेव वत्थमालागन्धविलेपन-यानसेय्यादीनञ्च सङ्गहो दट्ठब्बो, तेनाह "**पणीतेहि सप्पितेलादिसम्मिस्सेहेवा**"तिआदि।

३४६. सं नाम धनं, तस्स पतीति सपति, धनवा। दिट्ठधम्मिकसम्परायिकहितावहत्ता तस्स हितन्ति **सापतेय्यं,** तदेव धनं। तेनाह "**पहूतं सापतेय्यं आदायाति बहुं धनं गहेत्वा**"ति। **गामभागेना**ति सङ्कित्तनवसेन गामे वा गहेतब्बभागेन।

३४७. "**यागुं पिवित्वा**"ति यागुसीसेन पातरासभोजनमाह। **पुरत्थिमेन यञ्ञवाटस्सा**ति रञ्ञो दानसालाय नातिदूरे पुरत्थिमदिसाभागेति अत्थो, यतो तत्थ पातरासं भुञ्जित्वा अकिलन्तरूपायेव सायन्हे सालं पापुणन्ति "**दक्खिणेन यञ्ञवाटस्सा**"ति आदीसुपि एसेव नयो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४८. **परिहारेना**ति भगवन्तं गरुं कत्वा अगारवपरिहारेन।

निच्चदानअनुकुलयञ्ञवण्णना

३४९. **उट्ठाय समुट्ठाया**ति दाने उट्ठानवीरियं सक्कच्चं कत्वा। **अप्पसम्भारतरो**ति अतिविय परित्तसम्भारो। समारभीयति यञ्ञो एतेहीति समारम्भा, सम्भारसम्भरणवसेन पवत्तसत्तपीळा। **अप्पट्ठतरो**ति पन अतिविय अप्पकिच्चोति अत्थो। विपाकसञ्ञितं अतिसयेन महन्तं सदिसफलं एतस्साति **महप्फलतरो।** उदयसञ्ञितं अतिसयेन महन्तं निस्सन्दादिफलं एतस्साति **महानिसंसतरो। धुवदानानी**ति धुवानि थिरानि अच्छिन्नानि कत्वा दातब्बदानानि। **अनुकुलयञ्ञानी**ति अनुकुलं कुलानुक्कमं उपादाय दातब्बदानानि, तेनाह "**अम्हाक**"न्तिआदि। **निबद्धदानानी**ति निबन्धेत्वा नियमेत्वा पवेणीवसेन पवत्तितदानानि।

हत्थिदन्तेन पवत्तिता **दन्तमयसलाका,** यत्थ दायकानं नामं अङ्कन्ति। **रञ्ञो**ति सेतवाहनरञ्ञो।

आदीनीति **आदि**-सद्देन "सेनो विय मंसपेसिं कस्मा ओक्खन्दित्वा गण्हासी"ति एवमादीनं सङ्गहो। पुब्बचेतनामुञ्चचेतनाअपरचेतनासम्पत्तिया दायकस्स वसेन तीणि अङ्गानि, वीतरागतावीतदोसतावीतमोहतापटिपत्तिया दक्खिणेय्यस्स वसेन तीणीति एवं **छळङ्गसमन्नागताय दक्खिणाय।** अपरापरं उप्पज्जनकचेतनावसेन महानदी विय, महोघो विय च इतो चितो च अभिसन्दित्वा ओक्खन्दित्वा पवत्तिया पुञ्ञमेव **पुञ्ञाभिसन्दो।**

३५०. **किच्चपरियोसानं नत्थि** दिवसे दिवसे दायकस्स ब्यापारापज्जनतो, तेनाह "**एकेना**"तिआदि। **किच्चपरियोसानं अत्थि** यथारद्धस्स आवासस्स कतिपयेनापि कालेन परिसमापेतब्बतो, तेनाह "**पण्णसाल**"न्तिआदि। **सुत्तन्तपरियायेना**ति सुत्तन्तपाळिनयेन। (म० नि० १.१२, १३; अ० नि० २.५८) **नव आनिसंसा**ति सीतपटिघातादयो पटिसल्लानारामपरियोसाना नव उदया। अप्पमत्तताय चेते वुत्ता।

यस्मा आवासं देन्तेन नाम सब्बम्पि पच्चयजातं दिन्नमेव होति। द्वे तयो गामे पिण्डाय चरित्वा किञ्चि अलद्धा आगतस्सपि छायूदकसम्पन्नं आरामं पविसित्वा न्हायित्वा पतिस्सये मुहुत्तं निपज्जित्वा वुट्ठाय निसिन्नस्स काये बलं आहरित्वा पक्खित्तं विय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होति। बहि विचरन्तस्स च काये वण्णधातु वातातपेहि किलमति, पतिस्सयं पविसित्वा द्वारं पिधाय मुहुत्तं निपन्नस्स विसभागसन्तति वूपसम्मति, सभागसन्तति पतिट्ठाति, वण्णधातु आहरित्वा पक्खित्ता विय होति। बहि विचरन्तस्स च पादे कण्टको विज्झति, खाणु पहरति, सरीसपादिपरिस्सया चेव चोरभयञ्च उप्पज्जति, पतिस्सयं पविसित्वा द्वारं पिधाय निपन्नस्स सब्बे ते परिस्सया न होन्ति, सज्झायन्तस्स धम्मपीतिसुखं, कम्मट्ठानं मनसि करोन्तस्स उपसमसुखञ्च उप्पज्जति बहिद्धा विक्खेपाभावतो। बहि विचरन्तस्स च काये सेदा मुच्चन्ति, अक्खीनि फन्दन्ति, सेनासनं पविसनक्खणे मञ्चपीठादीनि न पञ्ञायन्ति, मुहुत्तं निसिन्नस्स पन अक्खीनं पसादो आहरित्वा पक्खित्तो विय होति, द्वारवातपानमञ्चपीठादीनि पञ्ञायन्ति। एतस्मिञ्च आवासे वसन्तं दिस्वा मनुस्सा चतूहि पच्चयेहि सक्कच्चं उपट्ठहन्ति। तेन वुत्तं "आवासं देन्तेन नाम सब्बम्पि पच्चयजातं दिन्नमेव होती"ति, तस्मा एते यथावुत्ता सब्बेपि आनिसंसा वेदितब्बा। तेन वुत्तं "अप्पमत्तताय चेते वुत्ता"ति।

सीतन्ति अज्झत्तं धातुक्खोभवसेन वा बहिद्धा उतुविपरिणामवसेन वा उप्पज्जनकसीतं। **उण्ह**न्ति अग्गिसन्तापं, तस्स वनडाहादीसु (वनदाहादीसु वा सारत्थ० टी० ३.चूळव० २९५) सम्भवो वेदितब्बो। **पटिहन्ती**ति पटिबाहति, यथा तदुभयवसेन कायचित्तानं बाधनं न होति, एवं करोति। सीतुण्हब्भाहते हि सरीरे विक्खित्तचित्तो भिक्खु योनिसो पदहितुं न सक्कोति। **वाळमिगानी**ति सीहब्यग्घादिचण्डमिगे। गुत्तसेनासनञ्हि आरञ्ञकम्पि पविसित्वा द्वारं पिधाय निसिन्नस्स ते परिस्सया न होन्तीति। **सरीसपे**ति ये केचि सरन्ते गच्छन्ते दीघजातिके सप्पादिके। **मकसे**ति निदस्सनमत्तमेतं, डंसादीनम्पि एतेस्वेव (एतनेव सारत्थ० टी० ३.चूळव० २९५) सङ्गहो दट्ठब्बो। **सिसिरे**ति सिसिरकालवसेन, सत्ताहवद्दलिकादिवसेन च उप्पन्ने सिसिरसम्फस्से। **वुट्ठियो**ति यदा तदा उप्पन्ना वस्सवुट्ठियो पटिहनतीति योजना।

वातातपो घोरोति रुक्खगच्छादीनं उम्मूलभञ्जनादिवसेन पवत्तिया घोरो सरजअरजादिभेदो वातो चेव गिम्हपरिळाहसमयेसु उप्पत्तिया घोरो सूरियातपो च। **पटिहञ्ञती**ति पटिबाहीयति। **लेणत्थ**न्ति नानारम्मणतो चित्तं निवत्तेत्वा पटिसल्लानारामत्थं। **सुखत्थ**न्ति वुत्तपरिस्सयाभावेन फासुविहारत्थं। **झायितु**न्ति अट्ठतिंसाय आरम्मणेसु यत्थ कत्थचि चित्तं उपनिबन्धित्वा उपनिज्झायितुं। **विपस्सितु**न्ति अनिच्चादितो सङ्खारे सम्मसितुं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहारेति पतिस्सये। **कारयेति** कारापेय्य। **रम्मेति** मनोरमे निवाससुखे। **वासयेत्थ बहुस्सुतेति** कारेत्वा पन एत्थ विहारेसु बहुस्सुते सीलवन्ते कल्याणधम्मे निवासेय्य, ते निवासेन्तो पन तेसं बहुस्सुतानं यथा पच्चयेहि किलमथो न होति, एवं **अन्नञ्च पानञ्च वत्थसेनासनानि च ददेय्य उजुभूतेसु** अज्झासयसम्पन्नेसु कम्मकम्मफलानं, रतनत्तयगुणानञ्च सद्दहनेन **विप्पसन्नेन चेतसा।**

इदानि गहट्ठपब्बजितानं अञ्ञमञ्ञूपकारितं दस्सेतुं **"ते तस्सा"**ति गाथमाह। तत्थ **तेति** बहुस्सुता। **तस्साति** उपासकस्स। **धम्मं देसेन्तीति** सकलवट्टदुक्खपनूदनं सद्धम्मं देसेन्ति। **यं सो धम्मं इधञ्ञायाति** सो उपासको यं सद्धम्मं इमस्मिं सासने सम्मापटिपज्जनेन जानित्वा अग्गमग्गाधिगमेन **अनासवो** हुत्वा **परिनिब्बाति** एकादसग्गिवूपसमेन सीति भवति।

सीतपटिघातादयो विपस्सनावसाना तेरस, अन्नादिलाभो, धम्मस्सवनं,धम्मावबोधो, परिनिब्बानन्ति एवं **सत्तरस।**

३५१. अत्तनो सन्तकाति अत्तनिया। **दुप्परिच्चजनं** लोभं निग्गण्हितुं असक्कोन्तस्स। सङ्घस्स वा गणस्स वा सन्तिकेति योजना। **तत्थाति** यथागहिते सरणे। **नत्थि पुनप्पुनं कत्तब्बता** विञ्ञूजातिकस्साति अधिप्पायो। **"जीवितपरिच्चागमयं पुञ्ञ"**न्ति "सचे त्वं न यथागहितं सरणं भिन्दिस्सति, एवाहं तं मारेमी"ति यदिपि कोचि तिण्हेन सत्थेन जीविता वोरोपेय्य, तथापि "नेवाहं बुद्धं न बुद्धोति, धम्मं न धम्मोति, सङ्घं न सङ्घोति वदामी"ति दळ्हतरं कत्वा गहितसरणस्स वसेन वुत्तं।

३५२. सरणं उपगतेन कायवाचाचित्तेहि सक्कच्चं वत्थुत्तयपूजा कातब्बा, तत्थ च संकिलेसो परिहनितब्बो, सिक्खापदानि पन समादानमत्तं, सम्पत्तवत्थुतो विरमणमत्तञ्चाति सरणगमनतो सीलस्स अप्पट्ठतरता, अप्पसमारम्भतरता च वेदितब्बा। सब्बेसं सत्तानं जीवितदानादिना दण्डनिधानतो, सकललोकियलोकुत्तरगुणाधिट्ठानतो चस्स महप्फलमहानिसंसतरता दट्ठब्बा।

वक्खमाननयेन च वेरहेतुताय वेरं वुच्चति पाणातिपातादिपापधम्मो, तं मणति "मयि इध ठिताय कथं आगच्छसी"ति तज्जेन्ती विय नीहरतीति **वेरमणी,** ततो वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पापधम्मतो विरमति एतायाति "विरमणी"ति वत्तब्बे निरुत्तिनयेन इकारस्स एकारं कत्वा **"वेरमणी"**ति वुत्ता। असमादिन्नसीलस्स सम्पत्ततो यथाउपट्ठितवीतिक्कमितब्बवत्थुतो विरति **सम्पत्तविरति**। समादानवसेन उप्पन्ना विरति **समादानविरति**। सेतु वुच्चति अरियमग्गो, तप्परियापन्ना हुत्वा पापधम्मानं समुच्छेदवसेन घातनविरति **सेतुघातविरति**। इदानि तिस्सो विरतियो सरूपतो दस्सेतुं **"तत्था"**तिआदि वुत्तं। **परिहरती**ति अवीतिक्कमवसेन परिवज्जेति। **न हनामी**ति एत्थ **इति**-सद्दो आदिअत्थो, तेन "अदिन्नं नादियामी"ति एवं आदीनं सङ्गहो, **वा**-सद्देन वा, तेनाह **"सिक्खापदानि गण्हन्तस्सा"**ति।

मग्गसम्पयुत्ताति सम्मादिट्ठियादिमग्गसम्पयुत्ता। इदानि तासं विरतीनं आरम्मणतो विभागं दस्सेतुं **"तत्था"**तिआदि वुत्तं। **पुरिमा द्वे**ति सम्पत्तसमादानविरतियो। **पच्छिमा**ति सेतुघातविरति। **सब्बानिपि भिन्नानि होन्ति** एकज्झं समादिन्नत्ता। **तदेव भिज्जति** विसुं विसुं समादिन्नत्ता। गहट्ठवसेन चेतं वुत्तं। **भेदो नाम नत्थि** पटिपक्खसमुच्छिन्दनेन अकुप्पसभावत्ता, तेनाह **"भवन्तरेपी"**ति। **योनिसिद्ध**न्ति मनुस्सतिरच्छानानं उद्धं तिरियमेव दीघता विय जातिसिद्धन्ति अत्थो। बोधिसत्ते कुच्छिगते बोधिसत्तमातुसीलं विय धम्मताय सभावेनेव सिद्धं **धम्मतासिद्धं,** मग्गधम्मताय वा अरियमग्गानुभावेन सिद्धं **धम्मतासिद्धं। दिट्ठिउजुकरणं नाम भारियं** दुक्खं, तस्मा सरणगमनं सिक्खापदसमादानतो महट्ठतरमेव, न अप्पट्ठतरन्ति अधिप्पायो। **यथा तथा वा गण्हन्तस्सापी**ति आदरगारवं अकत्वा समादियन्तस्सापि। **साधुकं गण्हन्तस्सापी**ति सक्कच्चं सीलानि समादियन्तस्सापि, न दिगुणं, तिगुणं वा उस्साहो करणीयो।

अभयदानताय सीलस्स दानभावो, अनवसेसं वा सत्तनिकायं दयति तेन रक्खतीति **दानं,** सीलं। "अग्गानी"ति ञातत्ता **अग्गञ्ञानि**। चिररत्तताय ञातत्ता **रत्तञ्ञानि।** "अरियानं साधूनं वंसानी"ति ञातत्ता **वंसञ्ञानि। "पोराणानी"**तिआदीसु पुरिमानं एतानि **पोराणानि।** सब्बसो केनचिपि पकारेन साधूहि न किण्णानि न खित्तानि न छड्डितानीति **असङ्किण्णानि**। अयञ्च नयो नेसं यथा अतीते, एवं एतरहि, अनागते चाति आह **"असङ्किण्णपुब्बानि न सङ्कियन्ति न सङ्कियिस्सन्ती"**ति। ततो एव **अप्पटिकुट्ठानि** न पटिक्खित्तानि। न हि कदाचिपि विञ्ञू समणब्राह्मणा हिंसादिपापधम्मं अनुजानन्ति। **अपरिमाणानं सत्तानं अभयं देती**ति सब्बेसु भूतेसु निहितदण्डत्ता सकलस्सपि सत्तनिकायस्स भयाभावं देति। न हि अरियसावकतो कस्सचि भयं होति। **अवेर**न्ति वेराभावं। **अब्यापज्झ**न्ति निद्दुक्खतं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ननु च पञ्चसीलं सब्बकालिकं, न च एकन्ततो विमुत्तायतनं, सरणगमनं पन बुद्धुप्पादहेतुकं, एकन्तविमुत्तायतनञ्च, तत्थ कथं सरणागमनतो पञ्चसीलस्स महप्फलताति आह **"किञ्चापी"**तिआदि। **जेट्ठकन्ति** उत्तमं। **"सरणगमनेयेव पतिट्ठाया"**ति इमिना तस्स सीलस्स सरणगमनेन अभिसङ्खततमाह।

३५३. ईदिसमेवाति एवं संकिलेसं पटिपक्खमेव हुत्वा। **हेट्ठा वुत्तेहि गुणेहीति** एत्थ हेट्ठा वुत्तगुणा नाम सरणगमनं, सीलसम्पदा, इन्द्रियेसु गुत्तद्वारताति एवं आदयो। पठमज्झानं निब्बत्तेन्तो न किलमतीति योजना। **तानीति** पठमज्झानादीनि। **"पठमज्झान"**न्ति उक्कट्ठनिद्देसो अयन्ति आह **"एकं कप्प"**न्ति, एकं महाकप्पन्ति अत्थो। हीनं पन पठमज्झानं, मज्झिमञ्च असङ्ख्येय्यकप्पस्स ततियं भागं, उपड्ढकप्पञ्च **आयुं देति। "दुतियं अट्ठकप्पे"**ति आदीसुपि इमिना नयेन अत्थो वेदितब्बो, महाकप्पवसेनेव च गहेतब्बं। यस्मा वा पणीतानियेवेत्थ झानानि अधिप्पेतानि महप्फलतरभावदस्सनपरत्ता देसनाय, तस्मा **"पठमज्झानं एकं कप्प"**न्तिआदि वुत्तं। **तदेवाति** चतुत्थज्झानमेव। यदि एवं कथं आरुप्पताति आह **"आकासानञ्चायतनादी"**तिआदि।

सम्मदेव निच्चसञ्ञादिपटिपक्खविधमनवसेन पवत्तमाना पुब्बभागिये एव बोधिपक्खियधम्मे सम्मानेन्ती विपस्सना विपस्सकस्स अनप्पकं पीतिसोमनस्सं समावहतीति आह **"विपस्सना...पे०... अभावा"**ति। तेनाह भगवा –

"यतो यतो सम्मसति, खन्धानं उदयब्बयं।
लभती पीतिपामोज्जं, अमतं तं विजानत"न्ति।। (ध० प० ३७४)

यस्मा अयं देसना इमिना अनुक्कमेन इमानि ञाणानि निब्बत्तेन्तस्स वसेन पवत्तिता, तस्मा **"विपस्सनाञाणे पतिट्ठाय निब्बत्तेन्तो"**ति हेट्ठिमं हेट्ठिमं उपरिमस्स उपरिमस्स पतिट्ठाभूतं कत्वा वुत्तं। समानरूपनिम्मानं नाम मनोमयिद्धिया अञ्ञेहि असाधारणकिच्चन्ति आह **"अत्तनो...पे०... महप्फला"**ति। **विकुब्बनदस्सनसमत्थतायाति** हत्थिअस्सादिविविधरूपकरणं विकुब्बनं, तस्स दस्सनसमत्थभावेन। **इच्छितिच्छितट्ठानं** नाम पुरिमजातीसु इच्छितिच्छितो खन्धप्पदेसो। **समापेन्तोति** परियोसापेन्तो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कूटदन्तउपासकत्तपटिवेदनाकथावण्णना

३५४-८. **सब्बे ते पाणयो**ति "सत्त च उसभसतानी"तिआदिना वुत्ते सब्बे पाणिनो। **आकुलभावो**ति भगवतो सन्तिके धम्मस्स सुतत्ता पाणीसु अनुद्दयं उपट्ठपेत्वा ठितस्स "कथञ्हि नाम मया ताव बहू पाणिनो मारणत्थाय बन्धापिता"ति चित्ते परिब्याकुलभावो **उदपादि। सुत्वा**ति "बन्धनतो मोचिता"ति सुत्वा। कामच्छन्दविगमेन कल्लचित्तता अरोगचित्तता, ब्यापादविगमेन मेत्तावसेन मुदुचित्तता अकथिनचित्तता, उद्धच्चकुक्कुच्चप्पहानेन विक्खेपविगमनतो विनीवरणचित्तता तेहि न पिहितचित्तता, थिनमिद्धविगमेन उदग्गचित्तता संपग्गण्हनवसेन अलीनचित्तता, विचिकिच्छाविगमेन सम्मापटिपत्तिया अधिमुत्तताय पसन्नचित्तता च होतीति आह **"कल्लचित्तन्तिआदि अनुपुब्बिकथानुभावेन विक्खम्भितनीवरणतं सन्धाय वुत्त"**न्ति। यं पनेत्थ अत्थतो अविभत्तं, तं सुविञ्ञेय्यमेव।

कूटदन्तसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. महालिसुत्तवण्णना

ब्राह्मणदूतवत्थुवण्णना

३५९. **पुनप्पुनं विसालीभावूपगमनतो**ति पुब्बे किर पुत्तधीतुवसेन द्वे द्वे हुत्वा सोळसक्खत्तुं जातानं लिच्छवीराजकुमारानं सपरिवारानं अनुक्कमेनेव वड्ढन्तानं निवासनट्ठानारामुय्यानपोक्खरणीआदीनं पतिट्ठानस्स अप्पहोनकताय नगरं तिक्खत्तुं गावुतन्तरेन गावुतन्तरेन परिक्खिपिंसु, तेनस्स पुनप्पुनं विसालीभावं गतत्ता ''वेसाली'' त्वेव नामं जातं, तेन वुत्तं **''पुनप्पुनं विसालीभावूपगमनतो वेसालीति लद्धनामके नगरे''**ति। **सयंजातन्**ति सयमेव जातं अरोपिमं। **महन्तभावेनेवा**ति रुक्खगच्छानं, ठितोकासस्स च महन्तभावेन, तेनाह **''हिमवन्तेन सद्धिं एकाबद्धं हुत्वा''**ति। **कूटागारसालासङ्खेपेना**ति हंसवट्टकच्छन्नेन कूटागारसालानियामेन। कोसलेसु जाता, भवा वा, तं वा रट्ठं निवासो एतेसन्ति **कोसलका**। एवं **मागधका** वेदितब्बा। यस्स अकरणे पुग्गलो महाजानियो होति, तं करणं अरहतीति करणीयं तेन **करणीयेन,** तेनाह **''अवस्सं कत्तब्बकम्मेना''**ति। **तं किच्चन्ति वुच्चति** सति समवाये कातब्बतो।

३६०. या बुद्धानं उप्पज्जनारहा नानत्तसञ्ञा, तासं वसेन **नानारम्मणाचारतो।** सम्भवन्तस्सेव पटिसेधो। **पटिक्कम्मा**ति निवत्तित्वा तथा चित्तं अनुप्पादेत्वा। **सल्लीनो**ति झानसमापत्तिया एकत्तारम्मणं अल्लीनो।

ओट्ठद्धलिच्छवीवत्थुवण्णना

३६१. **अद्धोट्ठताया**ति तस्स किर उत्तरोट्ठं अप्पकताय तिरियं फालेत्वा अपनीतद्धं विय खायति चत्तारो दन्ते, द्वे च दाठा न छादेति, तेन नं **''ओट्ठद्धो''**ति वोहरन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अयं किर उपासको सद्धो पसन्नो दायको दानपति बुद्धमामको धम्ममामको सङ्घमामको, तेनाह **पुरेभत्त**न्तिआदि ।

३६२. सासने युत्तपयुत्तोति भावनं अनुयुत्तो । सब्बत्थ सीहसमानवुत्तिनोपि भगवतो परिसाय महन्ते सति तदज्झासयानुरूपं पवत्तियमानाय धम्मदेसनाय विसेसो होतीति आह **"महन्तेन उस्साहेन धम्मं देसेस्सती"**ति ।

"विस्सासिको"ति वत्वा तमस्स विस्सासिकभावं विभावेतुं **"अयञ्ही"**तिआदि वुत्तं । थेरस्स खीणा सवस्ससतो आलसियभावो "अप्पहीनो"ति न वत्तब्बो, वासनालेसं पन उपादायाह **"ईसकं अप्पहीनो विय होती"**ति । न हि सावकानं सवासना किलेसा पहीयन्ति ।

३६३. विनेय्यजनानुरोधेन बुद्धानं पाटिहारियविजम्भनं होतीति वुत्तं **"अथ खो भगवा"**तिआदि, तेनेवाह **"संसूचितनिक्खमनो"**ति । गन्धकुटितो निक्खमनवेलायञ्हि छब्बण्णा बुद्धरस्मियो आवेळावेळायमलायमला हुत्वा सविसेसा पभस्सरा विनिच्छरिंसु ।

३६४. ततो परन्ति "हिय्यो"ति वुत्तदिवसतो अनन्तरं परं **पुरिमतरं** अतिसयेन पुरिमत्ता । इति इमेसु द्वीसु ववत्थितो यथाक्कमं पुरिमपुरिमतरभावो । एवं सन्तेपि यदेत्थ "पुरिमतर"न्ति वुत्तं, ततो पभुति यं यं ओरं, तं तं पुरिमं, यं यं परं, तं तं पुरिमतरं, ओरपारभावस्स विय पुरिमपुरिमतरभावस्स च अपेक्खासिद्धितो, तेनाह **"ततो पट्ठाया"**तिआदि । **मूलदिवसतो पट्ठाया**तिआदिदिवसतो पट्ठाय । **अग्ग**न्ति पठमं । तं पनेत्थ परा अतीता कोटि होतीति आह **"परकोटिं कत्वा"**ति । **यं**-सद्दयोगेन चायं "विहरामी"ति वत्तमानप्पयोगो, अत्थो पन अतीतकालवसेनेव वेदितब्बो, तेनाह **"विहासिन्ति वुत्तं होती"**ति । पठमविकप्पे "विहरामी"ति पदस्स "यदग्गे"ति इमिना उजुकं सम्बन्धो दस्सितो, दुतियविकप्पे पन "तीणि वस्सानी"ति इमिनापि ।

पियजातिकानीति इट्ठसभावानि । **सातजातिकानी**ति मधुरसभावानि । मधुरं वियाति हि "मधुर"न्ति वुच्चति मनोरमं यं किञ्चि । **कामूपसञ्हितानी**ति आरम्मणं करोन्तेन कामेन उपसंहितानि, कामनीयानीति अत्थो, तेनाह **"कामस्सादयुत्तानी"**ति, कामस्सादस्स युत्तानि योग्यानीति अत्थो । **सरीरसण्ठाने**ति सरीरबिम्बे, आधारे चेतं भुम्मं । तस्मा **सद्देना**ति तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निस्साय ततो उप्पन्नेन सद्देनाति अत्थो। **मधुरेना**ति इट्ठेन। **एत्तावता**ति दिब्बसोतञाणस्स परिकम्माकथनमत्तेन। "अत्तना ञातम्पि न कथेति, किमस्स सासने अधिट्ठानेना"ति कुज्झन्तो **आघातं बन्धित्वा** सह कुज्झनेनेव झानाभिञ्ञाहि परिहायि। **चिन्तेसी**ति "कस्मा नु खो मय्हं तं परिकम्मं न कथेसी"ति परिवितक्केन्तो अयोनिसो उम्मुज्जनवसेन चिन्तेसि। **अनुक्कमेना**ति पाथिकसुत्ते आगतनयेन तं तं अयुत्तमेव चिन्तेन्तो, भासन्तो, करोन्तो च अनुक्कमेन। भगवति बद्धाघातताय सासने पतिट्ठं अलभन्तो **गिहिभावं पत्वा**।

एकंसभावितसमाधिवण्णना

३६६-३७१. एकंसायाति तदत्थेयेव चतुत्थी, तस्मा एकंसत्थन्ति अत्थो। **अंस**-सद्दो चेत्थ कोट्ठासपरियायो, सो च अधिकारतो दिब्बरूपदस्सनदिब्बसद्दस्सवनवसेन वेदितब्बोति आह **"एककोट्ठासाया"**तिआदि। **अनुदिसाया**ति पुरत्थिमदक्खिणादिभेदाय चतुब्बिधाय अनुदिसाय। **उभयकोट्ठासाया**ति दिब्बरूपदस्सनत्थाय, दिब्बसद्दस्सवनत्थाय च। **भावितो**ति यथा दिब्बचक्खुञाणं, दिब्बसोतञाणञ्च समधिगतं होति, एवं भावितो। तयिदं विसुं विसुं परिकम्मकरणेन इज्झन्तीसु वत्तब्बं नत्थि, एकज्झं इज्झन्तीसुपि कमेनेव किच्चसिद्धि एकज्झं किच्चसिद्धिया असम्भवतो। पाळियम्पि एकस्स उभयसमत्थतासन्दस्सनत्थमेव "दिब्बानञ्च रूपानं दस्सनाय, दिब्बानञ्च सद्दानं सवनाया"ति वुत्तं, न एकज्झं किच्चसिद्धिसम्भवतो। **"एकंसभावितो समाधिहेतू"**ति इमिना सुनक्खत्तो दिब्बचक्खुञाणाय एव परिकम्मस्स कतत्ता विज्जमानम्पि दिब्बसद्दं नास्सोस्सीति दस्सेति। **अपण्णक**न्ति अविरज्झनकं, अनवज्जन्ति वा अत्थो।

३७२. "समाधि एव" भावेतब्बट्ठेन **समाधिभावना**। "दिब्बसोतञाणं सेट्ठ"न्ति मञ्ञमानेनापि महालिना दिब्बचक्खुञाणम्पि तेन सह गहेत्वा "एतासं नून भन्ते"तिआदिना पुच्छितन्ति **"उभयंसभावितानं समाधीनन्ति अत्थो"**ति वुत्तं। **बाहिरा एता समाधिभावना** अनिय्यानिकत्ता। ता हि इतो बाहिरकानम्पि इज्झन्ति। **न अज्झत्तिका** भगवतो सामुक्कंसिकभावेन अप्पवेदितत्ता। **यदत्थ**न्ति येसं अत्थाय। **ते**ति ते अरियफलधम्मे। ते हि सच्छिकातब्बाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुअरियफलवण्णना

३७३. तस्माति वट्टदुक्खे संयोजनतो। "**मग्गसोतं आपन्नो**"ति फलट्ठस्स वसेन वुत्तं। मग्गट्ठो हि मग्गसोतं आपज्जति। तेनेवाह "सोतापन्ने"ति, "सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय पटिपन्ने"ति (म० नि० ३.३७९) च। **अपतनधम्मो**ति अनुप्पज्जन- (म० नि० ३.३७९) सभावो। **धम्मनियामेना**ति मग्गधम्मनियामेन। हेट्ठिमन्ततो सत्तमभवतो उपरि अनुप्पज्जनधम्मताय वा नियतो। **परं अयनं** परागति।

तनुत्तं नाम पवत्तिया मन्दता, विरळता चाति आह "**तनुत्ता**"तिआदि। **हेट्ठाभागियान**न्ति हेट्ठाभागस्स कामभवस्सपच्चयभावेन हितानं। **ओपपातिको**ति उपपातिको उपपतने साधुकारीति कत्वा। विमुच्चतीति विमुत्ति, चित्तमेव विमुत्ति **चेतोविमुत्ती**ति आह "**सब्बकिलेस...पे०... अधि**"**वचन**न्ति। चित्तसीसेन चेत्थ समाधि गहितो "चित्तं पञ्ञञ्च भावय"न्ति। आदीसु (सं० नि० १.१.२३; पेटको० २२; मि० प० २.९) विय। **पञ्ञाविमुत्ती**ति एत्थापि एसेव नयो, तेनाह "**पञ्ञाव पञ्ञाविमुत्ती**"ति। **साम**न्ति अत्तनाव, अपरप्पच्चयेनाति अत्थो। **अभिञ्ञा**ति य-कारलोपेन निद्देसोति आह "**अभिजानित्वा**"ति।

अरियअट्ठङ्गिकमग्गवण्णना

३७४-५. अरियसावको निब्बानं, अरियफलञ्च पटिपज्जति एतायाति पटिपदा, सा च तस्स पुब्बभागो एवाति इध "**पुब्बभागपटिपदाया**"ति अरियमग्गमाह। "अट्ठ अङ्गानि अस्सा"ति अञ्ञपदत्थसमास अकत्वा अट्ठङ्गानि अस्स सन्तीति **अट्ठङ्गिको**ति पदसिद्धि दट्ठब्बा।

सम्मा अविपरीतं याथावतो चतुन्नं अरियसच्चानं पच्चक्खतो दस्सनसभावा **सम्मा दस्सनलक्खणा**। सम्मदेव निब्बानारम्मणे चित्तस्स अभिनिरोपनसभावो **सम्मा अभिनिरोपनलक्खणो**। चतुरङ्गसमन्नागता वाचा जनं सङ्गण्हातीति तब्बिपक्खविरतिसभावा सम्मावाचा भेदकरमिच्छावाचापहानेन जने सम्पयुत्ते च परिग्गण्हनकिच्चवती होतीति **सम्मा परिग्गहणलक्खणा**। यथा चीवरकम्मादिको कम्मन्तो एकं कातब्बं समुट्ठापेति, तं तं किरियानिप्फादको वा चेतनासङ्खातो कम्मन्तो हत्थपादचलनादिकं किरियं समुट्ठापेति, एवं सावज्जकत्तब्बकिरियासमुट्ठापकमिच्छाकम्मन्तप्पहानेन सम्माकम्मन्तो निरवज्जसमुट्ठापन-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किच्चवा होति, सम्पयुत्ते च समुट्ठापेन्तो एव पवत्ततीति **सम्मा समुट्ठापनलक्खणो सम्माकम्मन्तो**। कायवाचानं, खन्धसन्तानस्स च संकिलेसभूतमिच्छाजीवप्पहानेन **सम्मा वोदापनलक्खणो सम्माआजीवो**। कोसज्जपक्खतो पतितुं अदत्वा सम्पयुत्तधम्मानं पग्गण्हनसभावोति **सम्मा पग्गाहलक्खणो सम्मावायामो**। सम्मदेव उपट्ठानसभावाति **सम्मा उपट्ठानलक्खणा सम्मासति**। विक्खेपविद्धंसनेन सम्मदेव चित्तस्स समादहनसभावोति **सम्मा समाधानलक्खणो सम्मासमाधि**।

अत्तनो पच्चनीककिलेसा दिट्ठेकट्ठा अविज्जादयो। **पस्सती**ति पकासेति किच्चपटिवेधेन पटिविज्झति, तेनाह "**तप्पटिच्छादक...पे०... असम्मोहतो**"ति। तेनेव हि सम्मादिट्ठिसङ्खातेन अङ्गेन तत्थ पच्चवेक्खणा पवत्ततीति **तथेवा**ति अत्तनो पच्चनीककिलेसेहि सद्धिन्ति अत्थो।

किच्चतोति पुब्बभागेहि दुक्खादिञाणेहि कातब्बस्स किच्चस्स इध सातिसयं निप्फत्तितो इमस्सेव वा ञाणस्स दुक्खादिप्पकासनकिच्चतो। **चत्तारि नामानि लभति** चतूसु सच्चेसु कातब्बकिच्चनिप्फत्तितो। **तीणि नामानि लभति** कामसङ्कप्पादिप्पहानकिच्चनिप्फत्तितो। **सिक्खापदविभङ्गे** (विभं० ७०३) "विरतिचेतना, सब्बे सम्पयुत्तधम्मा च सिक्खापदानी"ति वुच्चन्तीति तत्थ पधानानं विरतिचेतनानं वसेन "**विरतियोपि होन्ति चेतनायोपी**"ति आह। मुसावादादीहि विरमणकाले वा विरतियो, सुभासितादिवाचाभासनादिकाले च चेतनायो योजेतब्बा। **मग्गक्खणे विरतियोव** चेतनानं अमग्गङ्गत्ता एकस्स ञाणस्स दुक्खादिञाणता विय, एकाय विरतिया मुसावादादिविरतिभावो विय च एकाय चेतनाय सम्मावाचादिकिच्चत्तयसाधनसभावाभावा सम्मावाचादिभावासिद्धितो, तंसिद्धियञ्च अङ्गत्तयत्तासिद्धितो च। **सम्मप्पधान-सतिपट्ठानवसेना**ति चतुसम्मप्पधानचतुसतिपट्ठानभाववसेन।

पुब्बभागेपि मग्गक्खणेपि सम्मासमाधियेवाति। यदिपि समाधिउपकारकानं अभिनिरोपनानुमज्जनसम्पियायनब्रूहनसन्तसुखानं वितक्कादीनं वसेन चतूहि झानेहि सम्मासमाधि विभत्तो, तथापि वायामो विय अनुप्पन्नाकुसलानुप्पादनादिचतुवायामकिच्चं, सति विय च असुभासुखानिच्चानत्तेसु कायादीसु सुभादिसञ्ञापहानचतुसतिकिच्चं एको समाधि चतुक्कज्झानसमाधिकिच्चं न साधेतीति पुब्बभागेपि पठमज्झानसमाधि पठमज्झानसमाधि एव मग्गक्खणेपि, तथा पुब्बभागेपि चतुत्थज्झानसमाधि चतुत्थज्झानसमाधि एव मग्गक्खणेपीति अत्थो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्माति पञ्ञापज्जोतत्ता **अविज्जन्धकारं विधमित्वा** पञ्ञासत्थत्ता **किलेसचोरे घातेन्तो। बहुकारत्ता**ति य्वायं अनादिमति संसारे इमिना कदाचिपि असमुग्घाटितपुब्बो किलेसगणो तस्स समुग्घाटको अरियमग्गो। तत्थ चायं सम्मादिट्ठि परिञ्ञाभिसमयादिवसेन पवत्तिया पुब्बङ्गमा होतीति बहुकारा, तस्मा बहुकारत्ता।

तस्साति सम्मादिट्ठिया। "बहुकारो"ति वत्वा तं बहुकारतं उपमाय विभावेतुं "यथा ही"तिआदि वुत्तं। "अयं" तम्बकंसादिमयत्ता **कूटो।** अयं समसारताय महासारताय **छेको। एवन्ति** यथा हेरञ्ञिकस्स चक्खुना दिस्वा कहापणविभागजानने करणन्तरं बहुकारं यदिदं हत्थो, एवं योगावचरस्स पञ्ञाय ओलोकेत्वा धम्मविभागजानने धम्मन्तरं बहुकारं यदिदं वितक्को वितक्केत्वा तदवबोधतो, तस्मा सम्मासङ्कप्पो सम्मादिट्ठिया बहुकारोति अधिप्पायो। दुतियउपमायं **एवन्ति** यथा तच्छको परेन परिवत्तेत्वा परिवत्तेत्वा दिन्नं दब्बसम्भारं वासिया तच्छेत्वा गेहकरणकम्मे उपनेति, एवं योगावचरो वितक्केन लक्खणादितो वितक्केत्वा दिन्नधम्मे याथावतो परिच्छिन्दित्वा परिञ्ञाभिसमयादिकम्मे उपनेतीति योजना। वचीभेदस्स उपकारको वितक्को सावज्जानवज्जवचीभेद-निवत्तनपवत्तनकराय सम्मावाचायपि उपकारको एवाति **"स्वाय"**न्तिआदि वुत्तं।

वचीभेदस्स नियामिका **वाचा** कायिककिरियानियामकस्स **कम्मन्तस्स उपकारिका। तदुभयानन्तरन्ति** दुच्चरितद्वयपहायकस्स सुचरितद्वयपारिपूरिहेतुभूतस्स सम्मावाचासम्माकम्मन्त-द्वयस्स अनन्तरं। **इदं वीरियन्ति** चतुब्बिधं सम्मप्पधानवीरियं। इन्द्रियसमतादयो समाधिस्स उपकारधम्मा। तब्बिपरियायतो अपकारधम्मा वेदितब्बा। **गतियो**ति निप्फत्तियो, किच्चादिसभावे वा। **समन्नेसित्वा**ति उपधारेत्वा।

द्वेपब्बजितवत्थुवण्णना

३७६-७. "कस्मा आरद्ध"न्ति अनुसन्धिकारणं पुच्छित्वा तं विभावेतुं **"अयं किरा"**तिआदि वुत्तं, तेन अज्झासयानुसन्धिवसेन उपरि देसना पवत्ताति दस्सेति। **तेना**ति तथालद्धिकत्ता। **अस्सा**ति लिच्छवीरञ्ञो। **देसनाया**ति सण्हसुखुमायं सुञ्ञतपटिसंयुत्तायं यथादेसितदेसनायं। **नाधिमुच्चती**ति न सद्दहति न पसीदति। **तन्तिधम्मं नाम कथेन्तो**ति येसं अत्थाय धम्मो कथीयति, तस्मिं तेसं असतिपि मग्गपटिवेधे केवलं सासने तन्तिधम्मं कत्वा कथेन्तो। **एवरूपस्सा**ति सम्मासम्बुद्धत्ता अविपरीतधम्मदेसनताय एवंपाकटधम्मकायस्स **सत्थु।**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युत्तं नु खो एतं अस्साति अस्स पठमज्झानादिसमधिगमेन समाहितचित्तस्स कुलपुत्तस्स एतं ''तं जीव''न्तिआदिना उच्छेदादिगाहगहणं अपि नु युत्तन्ति पुच्छति। लद्धिया पन झानाधिगममत्तेन न ताव विवेचितत्ता **''तेहि युत्त''**न्ति वुत्तं **तं वादं पटिक्खिपित्वा**ति झानलाभिनोपि तं गहणं ''अयुत्तमेवा''ति तं उच्छेदवादं सस्सतवादं वा पटिक्खिपित्वा। **अत्तमना अहेसु**न्ति यस्मा खीणासवो विगतसम्मोहो तिण्णविचिकिच्छो, ''तस्मा तस्स तथा वत्तुं न युत्त''न्ति उप्पन्ननिच्छयताय तं **मम वचनं सुत्वा** अत्तमना अहेसुन्ति अत्थो। **सोपि** लिच्छवी राजा ते विय सञ्जातनिच्छयत्ता **अत्तमनो अहोसि**। यं पनेत्थ अत्थतो अविभत्तं, तं सुविञ्ञेय्यमेव।

महालिसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. जालियसुत्तवण्णना

द्वेपब्बजितवत्थुवण्णना

३७८. "घोसितेन सेट्ठिना कते आरामे"ति वत्वा तत्थ कोयं घोसितसेट्ठि नाम, कथञ्चानेन आरामो कारितो, कथं वा तत्थ भगवा विहासीति तं सब्बं समुदागमतो पट्ठाय सङ्खेपतोव दस्सेतुं **"पुब्बे किरा"**तिआदि वुत्तं। **ततो**ति अल्लकप्परट्ठतो। **तदा**ति तेसं तं गामं पविट्ठदिवसे। **बलवपायास**न्ति गरुतरं बहुपायासं। **असन्निहिते**ति गेहतो बहि गते। **भुस्सती**ति रवति। **घोसकदेवपुत्तोत्वेव नामं अहोसि** सरघोससम्पत्तिया। **वेय्यत्तियेना**ति पञ्ञावेय्यत्तियेन। **घोसितसेट्ठि नाम जातो** ताय एव चस्स सरसम्पत्तिया घोसितनामता।

सरीरसन्तप्पनत्थन्ति हिमवन्ते फलमूलाहारताय किलन्तसरीरा लोणम्बिलसेवनेन तस्स सन्तप्पनत्थं पीननत्थं। **तसिता**ति पिपासिता। **किलन्ता**ति परिस्सन्तकाया। ते किर तं वटरुक्खं पत्वा तस्स सोभासम्पत्तिं दिस्वा महानुभावा मञ्ञे एत्थ अधिवत्था देवता, "साधु वतायं देवता अम्हाकं अद्धानपरिस्समं विनोदेय्या"ति चिन्तेसुं, तेन वुत्तं **"तत्थ अधिवत्था...पे०... निसीदिंसू"**ति। **सो**ति अनाथपिण्डिको गहपति। **भतकान**न्ति भतिया वेय्यावच्चं करोन्तानं दासपेसकम्मकरानं। **पकतिभत्तवेतन**न्ति पकतिया दातब्बभत्तवेतनं, तदा उपोसथिकत्ता कम्मं अकरोन्तानम्पि कम्मकरणदिवसेन दातब्बभत्तवेतनमेवाति अत्थो। **कञ्ची**ति कञ्चिपि भतकं।

उपेच्च परस्स वाचाय आरम्भनं बाधनं **उपारम्भो,** दोसदस्सनवसेन घट्टनन्ति अत्थो, तेनाह **"उपारम्भाधिप्पायेन वादं आरोपेतुकामा हुत्वा"**ति। वदन्ति निन्दनवसेन कथेन्ति एतेनाति हि वादो, दोसो। तं आरोपेतुकामा, पतिट्ठापेतुकामा हुत्वाति अत्थो। **"तं जीवं तं सरीर"**न्ति, इध यं वत्थुं जीवसञ्ञितं, तदेव सरीरसञ्ञितन्ति "रूपं अत्ततो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समनुपस्सती''ति वादं गहेत्वा वदन्ति। रूपञ्च अत्तानञ्च अद्वयं कत्वा समनुपस्सनवसेन ''सत्तो''ति वा बाहिरकपरिकप्पितं अत्तानं सन्धाय वदन्ति। **भिज्जतीति** निरुदयविनासवसेन विनस्सति। **तेन** जीवसरीरानं अनञ्ञत्तानुजाननतो, सरीरस्स च भेददस्सनतो। न हेत्थ यथा भेदवता सरीरतो अनञ्ञत्ता अदिट्ठोपि जीवस्स भेदो वुत्तो, एवं अदिट्ठभेदतो अनञ्ञत्ता सरीरस्सापि अभेदोति सक्का विञ्ञातुं तस्स भेदस्स पच्चक्खसिद्धत्ता, भूतुपादायरूपविनिमुत्तस्स च सरीरस्स अभावतोति आह **''उच्छेदवादो होती''**ति।

''अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीर''न्ति अञ्ञदेव वत्थुं जीवसञ्ञितं, अञ्ञं वत्थुं सरीरसञ्ञितन्ति ''रूपवन्तं अत्तानं समनुपस्सती''तिआदिनयप्पवत्तं वादं गहेत्वा वदन्ति। रूपे भेदस्स दिट्ठत्ता, अत्तनि च तदभावतो अत्ता निच्चोति आपन्नमेवाति आह **''तुम्हाकं...पे०... आपज्जती''**ति।

३७९-३८०. तयिदं नेसं वञ्झासुतस्स दीघरस्सतापरिकप्पनसदिसन्ति कत्वा ठपनीयोयं पञ्होति तत्थ राजनिमीलनं कत्वा सत्था उपरि नेसं ''तेन हावुसो सुणाथा''तिआदिना धम्मदेसनं आरभीति आह **''अथ भगवा''**तिआदि। **तस्सा येवा**ति मज्झिमाय पटिपदाय।

सद्धापब्बजितस्साति सद्धाय पब्बजितस्स ''एवमहं इतो वट्टदुक्खतो निस्सरिस्सामी''ति एवं पब्बज्जं उपगतस्स तदनुरूपञ्च सीलं पूरेत्वा पठमज्झानेन समाहितचित्तस्स। **एतं वत्तुन्ति** एतं किलेसवट्टपरिबुद्धिदीपनं ''तं जीवं तं सरीर''न्तिआदिकं दिट्ठिसंकिलेसनिस्सितं वचनं वत्तुन्ति अत्थो। **निब्बिचिकिच्छो न होतीति** धम्मेसु तिण्णविचिकिच्छो न होति, तत्थ तत्थ आसप्पनपरिसप्पनवसेन पवत्ततीति अत्थो।

एतमेवं जानामीति येन सो भिक्खु पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, एतं ससम्पयुत्तधम्मं चित्तन्ति एवं जानामि। **नो च एवं वदामी**ति यथा दिट्ठिगतिका तं धम्मजातं सनिस्सयं अभेदतो गण्हन्ता ''तं जीवं तं सरीर''न्ति वा तदुभयं भेदतो गण्हन्ता ''अञ्ञं जीवं अञ्ञं सरीर''न्ति वा अत्तनो मिच्छागाहं पवेदेन्ति, अहं पन न एवं वदामि तस्स धम्मस्स सुपरिञ्ञातत्ता, तेनाह **''अथ खो''**तिआदि। बाहिरका येभुय्येन कसिणज्झानानि एव निब्बत्तेन्तीति आह **''कसिणपरिकम्मं भावन्तेस्सा''**ति। यस्मा भावनानुभावेन झानाधिगमो, भावना च पथवीकसिणादिसञ्जाननमुखेन होतीति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सञ्ञासीसेन निद्दिसीयति, तस्मा आह **"सञ्ञाबलेन उप्पन्न"**न्ति। तेनाह– "पथवीकसिणमेको सञ्जानाती"तिआदि। **"न कल्लं तस्सेत"**न्ति इदं यस्मा भगवता तत्थ तत्थ "अथ च पनाहं न वदामी"ति वुत्तं, तस्मा न वत्तब्बं किरेतं केवलिना उत्तमपुरिसेनाति अधिप्पायेनाह, तेन वुत्तं **"मञ्ञमाना वदन्ती"**ति। सेसं सब्बत्थ सुविञ्ञेय्यमेव।

जालियसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. महासीहनादसुत्तवण्णना

अचेलकस्सपवत्थुवण्णना

३८१. यस्मिं रट्ठे तं नगरं, तस्स रट्ठस्सपि यस्मिं नगरे तदा भगवा विहासि, तस्स नगरस्सपि एतदेव नामं, तस्मा **उरुञ्ञायन्ति** उरुञ्ञाजनपदे उरुञ्ञासङ्खाते नगरेति अत्थो। **रमणीयो**ति मनोहरभूमिभागताय छायूदकसम्पत्तिया, जनविवित्तताय च मनोरमो। **नाम**न्ति गोत्तनामं। तपनं सन्तपनं कायस्स खेदनं तपो, सो एतस्स अत्थीति तपस्सी, तं **तपस्सिं।** यस्मा तथाभूतो तपं निस्सितो, तपो वा तं निस्सितो, तस्मा आह **"तपनिस्सितक"**न्ति। लूखं वा फरुसं साधुसम्मताचारविरहतो नपसादनीयं आजीवति वत्ततीति लूखाजीवी, तं **लूखाजीविं। मुत्ताचारादीति आदि-**सद्देन परतो पाळियं (दी० नि० १.३९७) आगता हत्थापलेखनादयो सङ्गहिता। **उप्पण्डेती**ति उहसनवसेन परिभासति। **उपवदती**ति अवञ्ञापुब्बकं अपवदति, तेनाह **"हीळेति वम्भेती"**ति। **धम्मस्स च अनुधम्मं** ति एत्थ **धम्मो** नाम हेतु "हेतुम्हि ञाणं धम्मपटिसम्भिदा"तिआदीसु (विभं० ७२०) वियाति आह **"कारणस्स अनुकारण"**न्ति। **कारण**न्ति चेत्थ तथापवत्तस्स सद्दस्स अत्थो अधिप्पेतो तस्स पवत्तिहेतुभावतो। अत्थप्पयुत्तो हि सद्दप्पयोगो। अनुकारणन्ति च सो एव परेहि तथा वुच्चमानो। **परेही**ति "ये ते"ति वुत्तसत्तेहि परेहि। **वुत्तकारणेना**ति यथा तेहि वुत्तं, तथा चे तुम्हेहि न वुत्तं, एवं सति तेहि वुत्तकारणेन सकारणो हुत्वा तुम्हाकं वादो वा ततो परं तस्स अनुवादो कोचि अप्पमत्तकोपि विञ्ञूहि गरहितब्बं ठानं कारणं नागच्छेय्य, किमेवं नागच्छतीति योजना। **"इदं वुत्तं होती"**तिआदिना तमेवत्थं सङ्खेपतो दस्सेति।

३८२. इदानि यं विभज्जवादं सन्धाय भगवता "न मे ते वुत्तवादिनो"ति सङ्खेपतो वत्वा तं विभजित्वा दस्सेतुं "इधाहं कस्सपा"तिआदि वुत्तं, तं विभागेन दस्सेन्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"इधेकच्चो"तिआदिमाह। भगवा हि निरत्थकं अनुपसमसंवत्तनिकं कायकिलमथं "अत्तकिलमथानुयोगो दुक्खो अनरियो अनत्थसंहितो"तिआदिना (सं० नि० ३.१०८१; महाव० १३; पटि० म० २.३०) गरहति। सात्थकं पन उपसमसंवत्तनिकं "आरञ्ञिको होति, पंसुकूलिको होती"तिआदिना वण्णेति। **अप्पपुञ्ञतायाति** अपुञ्ञताय। **तीणि दुच्चरितानि पूरेत्वाति** मिच्छादिट्ठिभावतो कम्मफलं पटिक्खिपन्तो "नत्थि दिन्न"न्तिआदिना (दी० नि० १.१७१; म० नि० १.४४५; २.९४, ९५, २२५; ३.९१, ११५; सं० नि० २.३.२१०; ध० स० १२२१; विभङ्ग० ९३८) मिच्छादिट्ठिं पुरक्खत्वा तथा तथा तीणि दुच्चरितानि पूरेत्वा। **अनेसनवसेनाति** कोहञ्ञे ठत्वा असन्तगुणसम्भावनिच्छाय मिच्छाजीववसेन। **इमे द्वेति** "अप्पपुञ्ञो पुञ्ञवा"ति च वुत्ते दुच्चरितकारिनो द्वे पुग्गले सन्धाय।

"इमे द्वे सन्धाया"ति एत्थ पन दुतियनये "अप्पपुञ्ञो, पुञ्ञवा"ति च वुत्ते सुचरितकारिनोति आदिना योजेतब्बं। कम्मकिरियवादिनो हि इमे द्वे पुग्गला। इति पठमदुतियनयेसु वुत्तनयेनेव ततियचतुत्थनयेसु योजना वेदितब्बा।

बाहिरकाचारयुत्तो तित्थियाचारयुत्तो, न विमुत्ताचारो। **अत्तानं सुखेत्वाति** अधम्मिकेन सुखेन अत्तानं सुखेत्वा, तेनाह **"दुच्चरितानि पूरेत्वा"**ति। **"न दानि मया सदिसो अत्थी"**तिआदिना तिस्सन्नं मञ्ञनानं वसेन दुच्चरितपूरणमाह। **मिच्छादिट्ठिवसेनाति** "नत्थि कामेसु दोसो"ति एवं पवत्तमिच्छादिट्ठिवसेन। **परिब्बाजिकायाति** पब्बज्जं उपगताय तापसदारिकाय। **दहरायाति** तरुणाय। **मुदुकायाति** सुखुमालाय। **लोमसायाति** तनुतम्बलोमताय अप्पलोमाय। **कामेसूति** वत्थुकामेसु। **पातब्यतन्ति** परिभुञ्जितब्बं, **पातब्यतन्ति** वा परिभुञ्जनकतं। **आपज्जन्तोति** उपगच्छन्तो। परिभोगत्थो हि अयं **पा**-सद्दो, कत्तुसाधनो च **तब्ब**-सद्दो, यथारुचि परिभुञ्जन्तोति अत्थो। किलेसकामोपि हि अस्सादियमानो वत्थुकामन्तोगधोयेव।

इदन्ति यथावुत्तं अत्थप्पभेदं विभज्जनं। **तित्थियवसेन आगतं** अट्ठकथायं तथा विभत्तत्ता। **सासनेपीति** इमस्मिं सासनेपि।

अरहत्तं वा अत्तनि असन्तं "अत्थी"ति विप्पटिजानित्वा। सामन्तजप्पनं, पच्चयपटिसेवनं, इरियापथनिस्सितन्ति इमानि **तीणि वा कुहनवत्थूनि**। **तादिसो वाति** धुतङ्ग-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(मि० प० ४.२; विसुद्धि० १.२२) -समादानवसेन लूखाजीवी एव। **दुल्लभसुखो भविस्सामि** दुग्गतीसु उपपत्तियाति अधिप्पायो।

३८३. असुकट्ठानतोति असुकभवतो। **आगता**ति निब्बत्तनवसेन इधागता। **इदानि गन्तब्बट्ठानन्ति** आयतिं निब्बत्तनट्ठानं। **पुन उपपत्तिन्ति** आयतिं अनन्तरभवतो ततियं उपपत्तिं, **पुन उपपत्ती**ति पुनप्पुनं निब्बत्ति। **केन कारणेना**ति यथाभूतं अजानन्तो हि इच्छादोसवसेन यं किञ्चि गरहेय्य, अहं पन यथाभूतं जानन्तो सब्बं तं केन कारणेन गरहिस्सामि, तं कारणं नत्थीति अधिप्पायो, तेनाह **"गरहितब्बमेवा"**तिआदि। **तमत्थन्ति** गरहितब्बस्सेव गरहणं, पसंसितब्बस्स च पसंसनं।

न कोचि "न साधू"ति वदति दिट्ठधम्मिकस्स, सम्परायिकस्स च अत्थस्स साधनवसेनेव पवत्तिया भद्दकत्ता। **पञ्चविधं वेर**न्ति पाणातिपातादिपञ्चविधं वेरं। तञ्हि पञ्चविधस्स सीलस्स पटिसत्तुभावतो, सत्तानं वेरहेतुताय च "वेर"न्ति वुच्चति। ततो एव **तं न कोचि "साधू"ति वदति,** तथा दिट्ठधम्मिकादिअत्थानं असाधनतो, सत्तानं साधुभावस्स च दूसनतो। **न निरुन्धितब्ब**न्ति रूपग्गहणे न निवारेतब्बं। दस्सनीयदस्सनत्थो हि चक्खुपटिलाभोति तेसं अधिप्पायो। यदग्गेन तेसं पञ्चद्वारे असंवरो साधु, तदग्गेन तत्थ संवरो न साधूति आह **"पुन यं ते एकच्चन्ति पञ्चद्वारे संवर"**न्ति।

अथ वा **यं ते एकच्चं वदन्ति "साधू"ति** ते "एके समणब्राह्मणा"ति वुत्ता तित्थिया यं अत्तकिलमथानुयोगादिं "साधू"ति वदन्ति, मयं तं न "साधू"ति वदाम। **यं ते एकच्चं वदन्ति "न साधू"ति** यं पन ते अनवज्जपच्चयपरिभोगं, सुनिवत्थसुपारुपनादिसम्मापटिपत्तिञ्च "न साधू"ति वदन्ति, तं मयं "साधू"ति वदामाति एवं पेत्थ अत्थो वेदितब्बो।

एवं यं परवादमूलकं चतुक्कं दस्सितं, तदेव पुन सकवादमूलकं कत्वा दस्सितन्ति पकासेन्तो **"एव"**न्तिआदिमाह। यञ्हि किञ्चि केनचि समानं, तेनपि तं समानमेव, तथा असमानं पीति। **समानासमानत**न्ति समानासमानतामत्तं। अनवसेसतो हि पहातब्बानं धम्मानं पहानं सकवादे दिस्सति, न परवादे। तथा परिपुण्णमेव च उपसम्पादेतब्बधम्मानं उपसम्पादनं सकवादे, न परवादे। तेन वुत्तं "त्याह"न्तिआदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समनुयुञ्जापनकथावण्णना

३८५. **लद्धिं पुच्छन्तो**ति "किं समणो गोतमो संकिलेसधम्मे अनवसेसं पहाय वत्तति, उदाहु परे गणाचरिया। एत्थ ताव अत्तनो लद्धिं वदा"ति लद्धिं पुच्छन्तो। **कारणं पुच्छन्तो**ति "समणो गोतमो संकिलेसधम्मे अनवसेसं पहाय वत्तती"ति वुत्ते "केन कारणेन एवमत्थं गाहया"ति कारणं पुच्छन्तो। **उभयं पुच्छन्तो**ति "इदं नामेत्थ कारण"न्ति कारणं वत्वा पटिञ्ञाते अत्थे साधियमाने अन्वयतो, ब्यतिरेकतो च कारणं समत्थेतुं सदिसासदिसभेदं उपमोदाहरणद्वयं पुच्छन्तो, **उभयं पुच्छन्तो** कारणस्स च तिलक्खणसम्पत्तिया यथापटिञ्ञाते अत्थे साधिते सम्मदेव अनुपच्छा भासन्तो निगमेन्तो **समनुभासति नाम**। **उपसंहरित्वा**ति उपनेत्वा। **"किं ते"**तिआदि उपसंहरणाकारदस्सनं। **दुतियपदे**ति "सङ्घेन वा सङ्घ"न्ति इमस्मिं पदे।

तमत्थन्ति तं पहातब्बधम्मानं अनवसेसं पहाय वत्तनसङ्खातञ्च समादातब्बधम्मानं अनवसेसं समादाय वत्तनसङ्खातञ्च अत्थं। **योजेत्वा**ति अकुसलादिपदेहि योजेत्वा। अकोसल्लसम्भूतट्ठेन **अकुसला चेव** ततोयेव **अकुसलाति च** सङ्खं गताति **सङ्खाता** तत्थ पुरिमपदेन एकन्ताकुसले वदति, दुतियपदेन तंसहगते, तंपक्खिये च, तेनाह **"कोट्ठासं वा कत्वा ठपिता"**ति, अकुसलपक्खियभावेन ववत्थापिताति अत्थो। अवज्जट्ठो दोसट्ठो गारय्हपरियायत्ताति आह **"सावज्जाति सदोसा"**ति। **अरिया** नाम निद्दोसा, इमे पन कत्थचिपि निद्दोसा न होन्तीति **निद्दोसट्ठेन अरिया भवितुं नालं असमत्था**।

३८६-३९२. **यन्ति** कारणे एतं पच्चत्तवचनन्ति आह **"येन विञ्ञू"**ति। **यं वा पना**ति "यं पन किञ्ची"ति असम्भावनवचनमेतन्ति आह **"यं वा तं वा अप्पमत्तक"**न्ति। **गणाचरिया** पूरणादयो। सत्थुप्पभवत्ता सङ्घस्स सङ्घसम्पत्तियापि सत्थुसम्पत्ति विभावीयतीति आह **"सङ्घपसंसायपि सत्थुयेव पसंसासिद्धितो"**ति। सा पन पसंसा पसादहेतुकाति पसादमुखेन तं दस्सेतुं **"पसीदमानापि ही"**तिआदि वुत्तं। तत्थ **पि-सद्देन** यथा अन्वयतो पसंसा समुच्चीयति, एवं सत्थुविप्पटिपत्तिया सावकेसु, सावकविप्पटिपत्तिया च सत्थरि अप्पसादो समुच्चीयतीति दट्ठब्बं। **सरीरसम्पत्ति**न्ति रूपसम्पत्तिं, रूपकायपारिपूरिन्ति अत्थो। **भवन्ति वत्तारो** रूपप्पमाणा, घोसधम्मप्पमाणा च। पुन **भवन्ति वत्तारो**ति धम्मप्पमाणवसेनेव योजेतब्बं। या सङ्घस्स पसंसाति आनेत्वा सम्बन्धो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ या बुद्धानं, बुद्धसावकानंयेव च पासंसता, अञ्ञेसञ्च तदभावो जोतितो, तं विरतिप्पहानसंवरुद्देसवसेन नीहरित्वा दस्सेतुं **"अयमधिप्पायो"**तिआदि वुत्तं। तत्थ **सेतुघातविरति** नाम अरियमग्गविरति। **विपस्सनामत्तवसेना**ति "अनिच्च"न्ति वा "दुक्ख"न्ति वा विविधं दस्सनमत्तवसेन, न पन नामरूपववत्थानपच्चयपरिग्गण्हनपुब्बकं लक्खणत्तयं आरोपेत्वा सङ्खारानं सम्मसनवसेन। **इतरानीति** समुच्छेदपटिप्पस्सद्धिनिस्सरणप्पहानानि। **"सेस"**न्ति पञ्चसीलतो अञ्ञो सब्बो सीलसंवरो, "खमो होती"तिआदिना (म० नि० १.२४; ३.१५९; अ० नि० १.४.११४) वुत्तो सुपरिसुद्धो खन्तिसंवरो, "पञ्ञायेते पिधिय्यरे"ति (सु० नि० १०४१; चूळनि० ६०) एवं वुत्तो किलेसानं समुच्छेदको मग्गञाणसङ्खातो ञाणसंवरो, मनच्छट्ठानं इन्द्रियानं पिदहनवसेन पवत्तो परिसुद्धो इन्द्रियसंवरो, "अनुप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाया"तिआदिना (दी० नि० २.४०२; म० नि० १.१३५; सं० नि० ३.५.८; विभङ्ग० २०५) वुत्तो सम्मप्पधानसङ्खातो वीरियसंवरोति इमं संवरपञ्चकं सन्धायाह। **पञ्च खो पनिमे पातिमोक्खुद्देसा**तिआदि सासने सीलस्स बहुभावं दस्सेत्वा तदेकदेसे एव परेसं अवट्ठानदस्सनत्थं यथावुत्तसीलसंवरस्सेव पुन गहणं।

अरियअट्ठङ्गिकमग्गवण्णना

३९३. सीहनादन्ति सेट्ठनादं, अभीतनादं केनचि अप्पटिवत्तियनादन्ति अत्थो। "अयं यथावुत्तो मम वादो अविपरीतो, तस्स अविपरीतभावो इमं मग्गं पटिपज्जित्वा अपरप्पच्चयतो जानितब्बो"ति एवं **अविपरीतभावावबोधनत्थं। "अत्थि कस्सपा"**तिआदीसु यं मग्गं पटिपन्नो समणो गोतमो वदन्तो युत्तपत्तकाले, तथभावतो भूतं, एकंसतो हिताविहभावेन अत्थं, धम्मतो अनपेतत्ता धम्मं, विनययोगतो परेसं विनयनतो च विनयं वदतीति सामंयेव अत्तपच्चक्खतोव जानिस्सति, सो मया सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदितो सकलवट्टदुक्खनिस्सरणभूतो अत्थि कस्सप मग्गो, तस्स च अधिगमूपायभूता पुब्बभागपटिपदाति अयमेत्थ योजना। तेन "समणो गोतमो इमे धम्मे"तिआदिनयप्पवत्तो वादो केनचि असंकम्पियो यथाभूतसीहनादोति दस्सेति।

"एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय पस्सती"तिआदीसु (अ० नि० १.३.१३४) विय **मग्गञ्च पटिपदञ्च एकतो कत्वा दस्सेन्तो। "अयमेवा"**ति वचनं मग्गस्स पुथुभावपटिक्खेपनत्थं, सब्बअरियसाधारणभावदस्सनत्थं, सासने पाकटभावदस्सनत्थञ्च। तेनाह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"एकायनो अयं भिक्खवे मग्गो"ति, (दी० नि० २.३७३; म० नि० १.१०६; सं० नि० ३.५.३६७, ३८४, ४०९)"एसेव मग्गो नत्थञ्ञो दस्सनस्स विसुद्धिया"ति (ध० प० २७४),

"एकायनं जातिखयन्तदस्सी,
मग्गं पजानाति हितानुकम्पी।
एतेन मग्गेन तरिंसु पुब्बे,
तरिस्सन्ति ये च तरन्ति ओघ"न्ति।। (सं० नि० ३.५.३८४, ४०९; महानि० १९१; चूळनि० १०७, १२१; नेत्ति० १७०)

सब्बेसु सुत्तपदेसेसु अभिधम्मपदेसेसु च एकोवायं मग्गो पाकटो पञ्ञातो आगतो चाति।

तपोपक्कमकथावण्णना

३९४. तपोयेव उपक्कमितब्बतो आरभितब्बतो तपोपक्कमोति आह **"तपारम्भा"**ति। आरम्भनञ्चेत्थ करणमेवाति आह **"तपोकम्मानीति अत्थो"**ति। **समणकम्मसङ्खाता**ति समणेहि कत्तब्बकम्मसञ्ञिता। **निच्चोलो**ति निस्सट्ठचेलो सब्बेन सब्बं पटिक्खित्तचेलो। नग्गियवतसमादानेन **नग्गो। "ठितकोव उच्चारं करोती"**तिआदि निदस्सनमत्तं, वमित्वा मुखविक्खालनादिआचारस्सपि तेन विस्सट्ठत्ता। **जिव्हाय हत्थं अपलिखति** अपलिहति उदकेन अधोवनतो। दुतियविकप्पेपि एसेव नयो। "एहि भद्दन्ते"ति वुत्ते उपगमनसङ्खातो विधि एहिभद्दन्तो, तं चरतीति एहिभद्दन्तिको, तप्पटिक्खेपेन **न एहिभद्दन्तिको। न करोति** समणेन नाम परस्स वचनकरेन न भवितब्बन्ति अधिप्पायेन। **पुरेतरन्ति** तं ठानं अत्तनो उपगमनतो पुरेतरं। तं किर सो "भिक्खुना नाम यादिच्छकी एव भिक्खा गहेतब्बा"ति अधिप्पायेन न गण्हाति। **उद्दिस्सकतं** "मम निमित्तभावेन बहू खुद्दका पाणा सङ्घातं आपादिता"ति न गण्हाति। **निमन्तनं न सादियति** "एवं तेसं वचनं कतं भविस्सती"ति। कुम्भीआदीसुपि सो सत्तसञ्ञीति आह **"कुम्भीकळोपियो"**तिआदि।

कबळन्तरायोति कबळस्स अन्तरायो **होतीति।** गामसभागादिवसेन सङ्गम्म कित्तेन्ति एतिस्साति **सङ्कित्ति,** तथा संहटतण्डुलादिसञ्चयो। **मनुस्सा**ति वेय्यावच्चकरमनुस्सा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरापानमेवाति मज्जलक्खणप्पत्ताय सुराय पानमेव सुराग्गहणेन चेत्थ मेरयम्पि सङ्गहितं। एकागारमेव उञ्छतीति **एकागारिको।** एकालोपेनेव वत्ततीति **एकालोपिको।** दीयति एतायाति **दत्ति,** द्वत्तिआलोपमत्तगाहि खुद्दकं भिक्खादानभाजनं, तेनाह "**खुद्दकपाती**"ति। अभुञ्जनवसेन एको अहो एतस्स अत्थीति एकाहिको, आहारो। तं **एकाहिकं,** सो पन अत्थतो एकदिवसलङ्घकोति आह "**एकदिवसन्तरिक**"न्ति। "**द्वीहिक**"न्तिआदीसुपि एसेव नयो। एकाहं अभुञ्जित्वा एकाहं भुञ्जनं **एकाहवारो,** तं एकाहिकमेव अत्थतो। द्वीहं अभुञ्जित्वा द्वीहं भुञ्जनं **द्वीहवारो।** सेसद्वयेपि एसेव नयो। उक्कट्ठो पन परियायभत्तभोजनिको द्वीहं अभुञ्जित्वा एकाहमेव भुञ्जति। सेसद्वयेपि एसेव नयो।

३९५. कुण्डकन्ति तनुतरं तण्डुलसकलं।

३९६. सणेहि सणवाकेहि निब्बत्तवत्थानि **साणानि।** मिस्ससाणानि **मसाणानि,** न भङ्गानि। **एरकतिणादीनी**ति **आदि-**सद्देन अक्कमकचिकदलीवाकादीनं सङ्गहो। एरकादीहि कतानि हि छवानि लामकानि दुस्सानीति वत्तब्बतं लभन्ति।

मिच्छावायामवसेनेव उक्कुटिकवतानुयोगोति आह "**उक्कुटिकवीरियं अनुयुत्तो**"ति। थण्डिलन्ति वा समा पकतिभूमि वुच्चति "पत्थण्डिले पातुरहोसी"तिआदीसु (म० नि० २.४.१०) विय, तस्मा **थण्डिलसेय्य**न्ति अनन्तरहिताय पकतिभूमियं सेय्यन्ति वुत्तं होति। **लद्धं आसन**न्ति निसीदितुं यथालद्धं आसनं। **अकोपेत्वा**ति अञ्ञत्थ अनुपगन्त्वा, तेनाह "**तत्थेव निसीदनसीलो**"ति। सो हि तं अछड्डेन्तो अपरिच्चजन्तो अकोपेन्तो नाम होति। **विकटन्ति गूथं वुच्चति** आसयवसेन विरूपं जातन्ति कत्वा।

एत्थ च "अचेलको होती"तिआदीनि वतपदानि याव "न थुसोदकं पिवती"ति एतानि एकवारानि। "एकागारिको वा"तिआदीनि नानावारानि, नानाकालिकानि वा। तथा "साकभक्खो वा"तिआदीनि, "साणानिपि धारेती"तिआदीनि च। तथा हेत्थ वा-सद्दग्गहणं, पि-सद्दग्गहणञ्च कतं। पि-सद्दोपि विकप्पत्थो एव दट्ठब्बो। पुरिमेसु पन न कतं। एवञ्च कत्वा "अचेलको होती"ति वत्वा "साणानिपि धारेती"तिआदि वचनस्स, "रजोजल्लधरो होती"ति वत्वा "उदकोरोहनानुयोगं अनुयुत्तो"ति वचनस्स च अविरोधो सिद्धो होति। अथ वा किमेत्थ अविरोधचिन्ताय। उम्मत्तकपच्छिसदिसो हि तित्थियवादो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ वा "अचेलको होती"ति आरभित्वा तप्पसङ्गेन सब्बम्पि अत्तकिलमथानुयोगं दस्सेन्तेन "साणानिपि धारेती"तिआदि वुत्तन्ति दट्ठब्बं।

तपोपक्कमनिरत्थकथावण्णना

३९७. सीलसम्पदादीहि विनाति सीलसम्पदा, समाधिसम्पदा, पञ्ञासम्पदाति इमाहि लोकुत्तराहि सम्पदाहि विना न कदाचि सामञ्ञं वा ब्रह्मञ्ञं वा सम्भवति, यस्मा च तदेवं, तस्मा तेसं तपोपक्कमानं निरत्थकतं दस्सेन्तोति योजना। **"दोसवेरविरहित"**न्ति इदं दोसस्स मेत्ताय उजुपटिपक्खताय वुत्तं। **दोस**-ग्गहणेन वा सब्बेपि झानपटिपक्खा संकिलेसधम्मा गहिता, **वेर**-ग्गहणेन पच्चत्थिकभूता सत्ता। यदग्गेन हि दोसरहितं, तदग्गेन वेररहितन्ति।

३९८. पाकटभावेन कायति गमेतीति **पकति,** लोकसिद्धवादो, तेनाह **"पकति खो एसाति पकतिकथा एसा"**ति। **मत्ताया**ति **मत्ता**-सद्दो "मत्ता सुखपरिच्चागा"तिआदीसु (ध० प० २९०) विय अप्पत्थं अन्तोनीतं कत्वा पमाणवाचकोति आह **"इमिना पमाणेन एवं परित्तकेना"**ति। तेन पन पमाणेन पहातब्बो पकरणप्पत्तो पटिपत्तिक्कमोति आह **"पटिपत्तिक्कमेना"**ति। **सब्बत्था**ति सब्बवारेसु।

३९९. अञ्ञथा वदथाति यदि अचेलकभावादिना सामञ्ञं वा ब्रह्मञ्ञं वा अभविस्स, सुविजानोव समणो सुविजानो ब्राह्मणो। यस्मा पन तुम्हे इतो अञ्ञथाव सामञ्ञं ब्रह्मञ्ञञ्च वदथ, तस्मा दुज्जानोव समणो दुज्जानो ब्राह्मणो, तेनाह **"इदं सन्धायाहा"**ति। **तं पकतिवादं पटिक्खिपित्वा**ति पुब्बे यं पाकतिकं सामञ्ञं ब्रह्मञ्ञञ्च हदये ठपेत्वा तेन "दुक्कर"न्तिआदि वुत्तं, तमेव सन्धाय भगवतापि "पकति खो एसा"तिआदि वुत्तं। इध पन **तं पकतिवादं** पाकतिकसमणब्राह्मणविसयं कथं पटिक्खिपित्वा पटिसंहरित्वा **सभावतोव** परमत्थतोव समणस्स ब्राह्मणस्स च **दुज्जानभावं आविकरोन्तो** पकासेन्तो। **तत्रापी**ति समणब्राह्मणवादेपि **वुत्तनयेनेव**।

सीलसमाधिपञ्ञासम्पदावण्णना

४००-१. पण्डितोति हेतुसम्पत्तिसिद्धेन पण्डिच्चेन समन्नागतो, **कथं उग्गहेसि**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिपक्कञाणत्ता घटे पदीपेन विय अब्भन्तरे समुज्जलन्तेन पञ्ञावेय्यत्तियेन तत्थ तत्थ भगवता देसितमत्थं परिग्गण्हन्तो तम्पि देसनं उपधारेसि। **तस्स चा**ति यो अचेलको होति याव उदकोरोहनानुयोगं अनुयुत्तो विहरति, तस्स च। **ता सम्पत्तियो पुच्छामि,** याहि समणो च होतीति अधिप्पायो। **सीलसम्पदाया**ति **इति-**सद्दो आदिअत्थो, तेन "चित्तसम्पदाय पञ्ञासम्पदाया"ति पदद्वयं सङ्गण्हाति असेक्खसीलादिखन्धत्तयसङ्गहितञ्हि अरहत्तं, तेनाह **"अरहत्तफलमेव सन्धाय वुत्त"**न्तिआदि। तत्थ **इदन्ति** इदं वचनं।

सीहनादकथावण्णना

४०२. अनञ्ञसाधारणताय, अनञ्ञसाधारणत्थविसयताय च **अनुत्तरं बुद्धसीहनादं नदन्तो**। अतिविय अच्चन्तविसुद्धताय **परमविसुद्धं। परम**न्ति उक्कट्ठं, तेनाह **"उत्तम"**न्ति। **सीलमेव** लोकियसीलत्ता। यथा अनञ्ञसाधारणं भगवतो लोकुत्तरसीलं सवासनं पटिपक्खविद्धंसनतो, एवं लोकियसीलम्पि तस्स अनुच्छविकभावेन सम्भूतत्ता, समेन समन्ति **समसम**न्ति अयमेत्थ अत्थोति आह **"मम सीलसमेन सीलेन मया सम"**न्ति। **"यदिदं अधिसील"**न्ति लोकियं, लोकुत्तरञ्चाति दुविधम्पि बुद्धसीलं एकज्झं कत्वा वुत्तं। तेनाह "सीलेपी"ति। **इति इम**न्ति एवं इमं सीलविसयं। पठमं पवत्तत्ता **पठमं।**

तपतीति सन्तप्पति, विधमतीति अत्थो। **जिगुच्छती**ति हीळेति लामकतो ठपेति। **निद्दोसत्ता अरिया** आरका किलेसेहीति। मग्गफलसम्पयुत्ता वीरियसङ्खाता तपोजिगुच्छाति आनेत्वा सम्बन्धो। **परमा नाम** सब्बुक्कट्ठभावतो। यथा युविनो भावो योब्बनं, एवं जिगुच्छिनो भावो **जेगुच्छं।** किलेसानं समुच्छिन्दनपटिप्पस्सम्भनानि **समुच्छेदपटिपस्सद्धिविमुत्तियो। निस्सरणविमुत्ति** निब्बानं। अथ वा सम्मावाचादीनं अधिसीलग्गहणेन, सम्मावायामस्स अधिजेगुच्छग्गहणेन, सम्मादिट्ठिया अधिपञ्ञाग्गहणेन गहितत्ता अग्गहितग्गहणेन सम्मासङ्कप्पसतिसमाधयो मग्गफलपरियापन्ना **समुच्छेदपटिपस्सद्धिविमुत्तियो** दट्ठब्बा। **निस्सरणविमुत्ति** पन निब्बानमेव।

४०३. यं किञ्चि जनविवित्तं ठानं इध **"सुञ्ञागार"**न्ति अधिप्पेतं। तत्थ नदन्तेन विना नादो नत्थीति आह **"एकतोव निसीदित्वा"**ति। **अट्ठसु परिसासू**ति खत्तियपरिसा, ब्राह्मणपरिसा, गहपतिपरिसा, समणपरिसा, चातुमहाराजिकपरिसा, तावतिंसपरिसा, मारपरिसा, ब्रह्मपरिसाति इमासु अट्ठसु परिसासु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेसारज्जानीति विसारदभावा ञाणप्पहानसम्पदानिमित्तं कुतोचि असन्तस्सनभावा निब्भयभावाति अत्थो। **आसभं ठान**न्ति सेट्ठं ठानं, उत्तमं ठानन्ति अत्थो। **आसभा** वा पुब्बबुद्धा, तेसं ठानन्ति अत्थो।

अपिच उसभस्स इदन्ति आसभं, आसभं वियाति आसभं। यथा हि निसभसङ्खातो उसभो अत्तनो उसभबलेन चतूहि पादेहि पथविं उप्पीळेत्वा अचलट्ठानेन तिट्ठति, एवं तथागतोपि दसहि तथागतबलेहि समन्नागतो चतूहि वेसारज्जपादेहि अट्ठपरिसापथविं उप्पीळेत्वा सदेवके लोके केनचि पच्चत्थिकेन अकम्पियो अचलेन ठानेन तिट्ठति। एवं तिट्ठमानोव तं आसभं ठानं पटिजानाति उपगच्छति न पच्चक्खाति अत्तनि आरोपेति। तेन वुत्तं "आसभं ठानं पटिजानाती"ति।

सीहनादं नदतीति यथा मिगराजा परिस्सयानं सहनतो, वनमहिंसमत्तवारणादीनं हननतो च "सीहो"ति वुच्चति, एवं तथागतो लोकधम्मानं सहनतो, परप्पवादानं हननतो च "सीहो"ति वुच्चति। एवं वुत्तस्स सीहस्स नादं सीहनादं। तत्थ यथा सीहो सीहबलेन समन्नागतो सब्बत्थ विसारदो विगतलोमहंसो सीहनादं नदति, एवं तथागतसीहोपि दसहि तथागतबलेहि समन्नागतो अट्ठसु परिसासु विसारदो विगतलोमहंसो "इति रूप"न्तिआदिना (सं० नि० २.३.७८; अ० नि० ३.८.२) नयेन नानाविलाससम्पन्नं सीहनादं नदति।

पञ्हं अभिसङ्खरित्वाति ञातुं इच्छितमत्थं अत्तनो ञाणबलानुरूपं अभिरचित्वा **तङ्खणंयेवा**ति पुच्छितक्खणेयेव ठानुप्पत्तिकपटिभानेन **विस्सज्जेति। चित्तं परितोसेतियेव** अज्झासयानुरूपं विस्सज्जनतो। **सोतब्बञ्चस्स मञ्ञन्ति** अट्ठक्खणवज्जितेन नवमेन खणेन लब्भमानत्ता। "यं नो सत्था भासति, तं नो सोस्सामा"ति आदरगारवजाता **महन्तेन उस्साहेन सोतब्बं** सम्पटिच्छितब्बं **मञ्ञन्ति। सुप्पसन्ना** पसादाभिबुद्धिया विगतुपक्किलेसताय **कल्लचित्ता मुदुचित्ता होन्ति। पसन्नकार**न्ति पसन्नेहि कातब्बसक्कारं, धम्मामिसपूजन्ति अत्थो। तत्थ आमिसपूजं दस्सेन्तो **"पणीतानी"**तिआदिमाह। धम्मपूजा पन **"तथत्ताया"**ति इमिना दस्सिता। **तथाभावाया**ति यथत्ताय यस्स वट्टदुक्खनिस्सरणत्थाय धम्मो देसितो, तथाभावाय, तेनाह **"धम्मानुधम्मपटिपत्तिपूरणत्थाया"**ति। सा च धम्मानुधम्मपटिपत्ति याय अनुपुब्बिया पटिपज्जितब्बा, पटिपज्जन्तानञ्च सति अज्झत्तिकङ्गसमवाये एकंसिका तस्सा पारिपूरीति तं अनुपुब्बिं दस्सेतुं **"केचि सरणेसू"**तिआदि वुत्तं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमस्मिं पनोकासे ठत्वाति "पटिपन्ना च आराधेन्ती"ति एतस्मिं सीहनादकिच्चपारिपूरिदीपने पाळिपदेसे ठत्वा। **समोधानेतब्बाति** सङ्कलितब्बा। **एको सीहनादो** असाधारणो अञ्ञेहि अप्पटिवत्तियो सेट्ठनादो अभीतनादोति कत्वा। एस नयो सेसेसुपि। **पुरिमानं दसन्नन्ति**आदितो पट्ठाय याव "विमुत्तिया मय्हं सदिसो नत्थी"ति एतेसं पुरिमानं दसन्नं सीहनादानं, निद्धारणे चेत्थ सामिवचनं, तेनाह **"एकेकस्सा"**ति। **"परिसासु च नदती"**ति **आदयो परिवारा** "एकच्चं तपस्सिं निरये निब्बत्तं पस्सामी"ति सीहनादं नदन्तो भगवा परिसायं नदति विसारदो नदति याव "पटिपन्ना आराधेन्ती"ति अत्थयोजनाय सम्भवतो। तथा सेसेसुपि नवसु।

"एव"न्तिआदि यथावुत्तानं तेसं सङ्कलेत्वा दस्सनं। **ते दसाति** ते "परिसासु च नदती"ति आदयो सीहनादा। **पुरिमानं दसन्नन्ति** यथावुत्तानं पुरिमानं दसन्नं। **परिवारवसेनाति** पच्चेकं परिवारवसेन योजियमाना **सतं** सीहनादा। **पुरिमा च दसाति** तथा अयोजियमाना पुरिमा च दसाति एवं **दसाधिकं सीहनादसतं होति। एवं वादीनं वादन्ति** एवं पवत्तवादानं तित्थियानं वादं। **पटिसेधेत्वाति** तथाभावाभावदस्सनेन पटिक्खिपित्वा। यं भगवा **उदुम्बरिकसुत्ते** "इध निग्रोध तपस्सी"तिआदिना (दी० नि० ३.३३) उपक्किलेसविभागं, पारिसुद्धिविभागञ्च दस्सेन्तो सपरिसस्स निग्रोधस्स परिब्बाजकस्स पुरतो सीहनादं नदि, तं दस्सेतुं **"इदानि परिसति नदितपुब्बं सीहनादं दस्सेन्तो"**तिआदि वुत्तं।

तित्थियपरिवासकथावण्णना

४०४. **इदन्ति** "राजगहे गिज्झकूटे पब्बते विहरन्तं मं...पे०... पञ्हं पुच्छी"ति इदं वचनं। कामं यदा निग्रोधो पञ्हं पुच्छि, भगवा चस्स विस्सज्जेसि, न तदा गिज्झकूटे पब्बते विहरति, राजगहसमीपे पन विहरतीति कत्वा **"राजगहे गिज्झकूटे पब्बते विहरन्तं म"**न्ति वुत्तं, गिज्झकूटे विहरणञ्चस्स तदा अविच्छिन्नन्ति, तेनाह **"यं तं भगवा"**तिआदि। **योगेति** नये, दुक्खनिस्सरणूपायेति अत्थो।

४०५. यं परिवासं सामणेरभूमियं ठितो परिवसतीति योजना। यस्मा सामणेरभूमियं ठितेन परिवसितब्बं, न गिहिभूतेन, तस्मा **अपरिवसित्वायेव पब्बज्जं लभति। आकङ्खति पब्बज्जं, आकङ्खति उपसम्पदन्ति** एत्थ पन **पब्बज्जा**-ग्गहणं वचनसिलिट्ठतावसेनेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

''दिरत्तितिरत्तं सहसेय्य''न्ति (पाचि० ५०) एत्थ दिरत्तग्गहणं विय। **गामप्पवेसनादीनी**ति **आदि**-सद्देन वेसियाविधवाथुल्लकुमारिपण्डकभिक्खुनिगोचरता, सब्रह्मचारीनं उच्चावचेसु किंकरणीयेसु दक्खानलसादिता, उद्देसपरिपुच्छादीसु तिब्बछन्दता, यस्स तित्थायतनतो इधागतो, तस्स अवण्णे, रतनत्तयस्स च वण्णे अनत्तमनता, तदुभयं यथाक्कमं वण्णे च अवण्णे च अत्तमनताति इमेसं सङ्गहो वेदितब्बो, तेनाह **''अट्ठ वत्तानि पूरेन्तेना''**ति। **घंसित्वा कोट्टेत्वा**ति अज्झासयस्स वीमंसनवसेन सुवण्णं विय घंसित्वा कोट्टेत्वा।

गणमज्झे निसीदित्वाति उपसम्पदाकम्मस्स गणप्पहोनकानं भिक्खूनं मज्झे सङ्घत्थेरो विय तस्स अनुग्गहत्थं निसीदित्वा। **वूपकट्ठो**ति विवित्तो। तादिसस्स सीलविसोधने अप्पमादो अवुत्तसिद्धोति आह **''कम्मट्ठाने सतिं अविजहन्तो''**ति। **पेसितचित्तो**ति निब्बानं पति पेसितचित्तो तंनिन्नो तप्पोणो तप्पब्भारो। जातिकुलपुत्तापि आचारसम्पन्ना एव अरहत्ताधिगमाय पब्बज्जापेक्खा होन्तीति तेपि तेहि एकसङ्गहे करोन्तो आह **''कुलपुत्ताति आचारकुलपुत्ता''**ति, तेनाह **''सम्मदेवाति हेतुनाव कारणेनेवा''**ति। ''ओतिण्णोम्हि जातिया''तिआदिना नयेन हि संवेगपुब्बिकं यथानुसिट्ठं पब्बज्जं सन्धाय इध ''सम्मदेवा''ति वुत्तं। **हेतुना**ति ञायेन। **पापुणित्वा**ति पत्वा अधिगन्त्वा। **सम्पादेत्वा**ति असेक्खा सीलसमाधिपञ्ञा निप्फादेत्वा, परिपूरेत्वा वाति अत्थो।

निट्ठापेतुन्ति निगमनवसेन परियोसापेतुं। ''ब्रह्मचरियपरियोसानं...पे०... विहासी''ति इमिना एव हि अरहत्तनिकूटेन देसना परियोसापिता। तं पन निगमेन्तो **''अञ्ञतरो खो पना...पे०... अहोसी''**ति वुत्तं धम्मसङ्गाहकेहि। यं पनेत्थ अत्थतो न विभत्तं, तं सुविञ्ञेय्यमेव।

महासीहनादसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. पोट्ठपादसुत्तवण्णना

पोट्ठपादपरिब्बाजकवत्थुवण्णना

४०६. **सावत्थियन्ति** समीपत्थे भुम्मन्ति आह **"सावत्थिं उपनिस्साया"**ति। **जेतस्स कुमारस्स वने**ति जेतेन नाम राजकुमारेन रोपिते उपवने। निवासफासुतादिना पब्बजिता आरमन्ति एत्थाति **आरामो,** विहारो। फोटो पादेसु जातोति **पोट्ठपादो।** वत्थच्छायाछादनपब्बजूपगतत्ता **छन्नपरिब्बाजको। ब्राह्मणमहासालो**ति महाविभवताय महासारतापत्तो ब्राह्मणो। **समय**न्ति सामञ्ञनिद्देसो, तं तं समयन्ति अत्थो। **पवदन्ती**ति पकारतो वदन्ति, अत्तना अत्तना उग्गहितनियामेन यथा तथा समयं वदन्तीति अत्थो। **"पभुतयो"**ति इमिना तोदेय्यजाणुसोणीसोणदण्डादिके सङ्गण्हाति, **परिब्बाजकादयो**ति **आदि-**सद्देन छन्नपरिब्बाजकादिके। तिन्दुकाचीरमेत्थ अत्थीति तिन्दुकाचीरो, आरामो। तथा एका साला एत्थाति एकसालको, तस्मिं **तिन्दुकाचीरे एकसालके।**

अनेकाकारानवसेसञेय्यत्थविभावनतो, अपरापरुप्पत्तितो च भगवतो ञाणं तत्थ पत्थटं विय होतीति वुत्तं **"सब्बञ्ञुतञ्ञाणं पत्थरित्वा"**ति, यतो तस्स ञाणजालता वुच्चति, वेनेय्यानं तदन्तोगधता हेट्ठा वुत्तायेव। वेनेय्यसत्तपरिग्गण्हनत्थं समन्नाहारे कते पठमं नेसं वेनेय्यभावेनेव उपट्ठानं होति, अथ सरणगमनादिवसेन किच्चनिप्फत्ति वीमंसीयतीति आह **"किं नु खो भविस्सतीति उपपरिक्खन्तो"**ति। **निरोधन्ति** सञ्ञानिरोधं। **निरोधा वुट्ठानन्ति** ततो निरोधतो वुट्ठानं सञ्ञुप्पत्तिं। **सब्बबुद्धानं ञाणेन संसन्दित्वा**ति यथा ते निरोधं, निरोधतो वुट्ठानञ्च ब्याकरिंसु, ब्याकरिस्सन्ति च, तथा ब्याकरणवसेन संसन्दित्वा। **हत्थिसारिपुत्तो**ति हत्थिसारिनो पुत्तो। **"युगन्धरपब्बतं परिक्खिपित्वा"**ति इदं परिकप्पवचनं "तादिसं अत्थि चे, तं विया"ति। **मेघवण्णन्ति** रत्तमेघवण्णं, सञ्झाप्पभानुरञ्जितमेघसङ्कासन्ति अत्थो। **पच्चग्घन्ति** अभिनवं आदितो तथालद्धवोहारेन,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनञ्ञपरिभोगताय, तथा वा सत्थु अधिट्ठानेन सो पत्तो सब्बकालं **"पच्चग्घं"** त्वेव वुच्चति, सिलादिवुत्तरतनलक्खणूपपत्तिया वा सो पत्तो **"पच्चग्घ"**न्ति वुच्चति।

४०७. **अत्तनो रुचिवसेन** सद्धम्मट्ठितिज्झासयवसेन, न परेन उस्साहितोति अधिप्पायो। **"अतिप्पगभावमेव दिस्वा"**ति इदं भूतकथनं न ताव भिक्खाचारवेला सम्पत्ताति दस्सनत्थं। भगवा हि तदा कालस्सेव विहारतो निक्खन्तो "वासनाभागियाय धम्मदेसनाय पोट्ठपादं अनुग्गण्हिस्सामी"ति। **यन्नूनाह**न्ति अञ्ञत्थ संसयपरिदीपनो, इध पन संसयपरिदीपनो विय। कस्माति आह **"बुद्धान"**न्तिआदि। **संसयो नाम नत्थि** बोधिमूले एव समुग्घाटितत्ता। **परिवितक्कपुब्बभागो**ति अधिप्पेतकिच्चस्स पुब्बभागपरिवितक्को एव। **बुद्धानं लब्भती**ति "करिस्साम, न करिस्सामा"तिआदिको एस चित्तचारो बुद्धानं लब्भति सम्भवति विचारणवसेन पवत्तनतो, न पन संसयवसेन। **तेनाहा**ति येन बुद्धानम्पि लब्भति, तेनेवाह भगवा **"यन्नूनाह"**न्ति। परिकप्पने वायं निपातो। "उपसङ्कमेय्य"न्ति किरियापदेन वुच्चमानो एव हि अत्थो "यन्नूना"ति निपातपदेन जोतीयति। अहं यन्नून उपसङ्कमेय्यन्ति योजना। **यदि पना**ति इदम्पि तेन समानत्थन्ति आह **"यदि पनाहन्ति अत्थो"**ति।

४०८. यथा उन्नतप्पायो सद्दो उन्नादो, एवं विपुलभावेन उपरूपरि पवत्तोपि उन्नादोति तदुभयं एकज्झं कत्वा **पाळियं** "उन्नादिनिया"ति वत्वा पुन विभागेन दस्सेतुं "उच्चासद्दमहासद्दाया"ति वुत्तन्ति तमत्थं विवरन्तो **"उच्चं नदमानाया"**तिआदिमाह। **अस्सा**ति परिसाय। **उद्धंगमनवसेना**ति उन्नतबहुलताय उग्गन्त्वा उग्गन्त्वा पवत्तनवसेन। **दिसासु पत्थटवसेना**ति विपुलभावेन भूतपरम्पराय सब्बदिसासु पत्थरणवसेन। इदानि परिब्बाजकपरिसाय उच्चासद्दमहासद्दताय कारणं, तस्स च पवत्तिआकारं दस्सेन्तो **"तेसञ्ही"**तिआदिमाह। **कामस्सादो** नाम कामगुणस्सादो। कामभवादिगतो अस्सादो **भवस्सादो**।

४०९. **सण्ठपेसी**ति संयमनवसेन सम्मदेव ठपेसि, सण्ठपनञ्चेत्थ तिरच्छानकथाय अञ्ञमञ्ञस्मिं अगारवस्स जहापनवसेन आचारस्स सिक्खापनं, यथावुत्तदोसस्स निगूहनञ्च होतीति आह **"सिक्खापेसी"**तिआदि। **अप्पसद्द**न्ति निस्सद्दं, उच्चासद्दमहासद्दाभावन्ति अधिप्पायो। **नप्पमज्जन्ती**ति न अगारवं करोन्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१०. **नो आगते आनन्दोति** भगवति आगते नो अम्हाकं आनन्दो पीति **होति। पियसमुदाचाराति** पियालापा। "पच्चुग्गमनं अकासी"ति वत्वा न केवलमयमेव, अथ खो अञ्ञेपि पब्बजिता येभुय्येन भगवतो अपचितिं करोन्तेवाति दस्सेतुं "भगवन्तञ्ही"तिआदिं वत्वा, तत्थ कारणमाह **"उच्चाकुलीनताया"**ति, तेन सासने अप्पसन्नापि कुलगारवेन भगवति अपचितिं करोन्ते वाति दस्सेति। **एतस्मिं अन्तरे का नाम कथाति** एतस्मिं यथावुत्तपरिच्छेदब्भन्तरे कथा का नाम। **विप्पकता** आरद्धा हुत्वा अपरियोसिता। "का कथा विप्पकता"ति वदन्तो अत्थतो तस्सा परियोसापनं पटिजानाति नाम। "का कथा"ति च अविसेसचोदनाति यस्सा तस्सा सब्बस्सापि कथाय परियोसापनं पटिञ्ञातञ्च होति, तञ्च परेसं असब्बञ्ञूनं अविसयन्ति आह **"परियन्तं नेत्वा देमीति सब्बञ्ञुपवारणं पवारेसी"**ति।

अभिसञ्ञानिरोधकथावण्णना

४११. **सुकारणन्ति** सुन्दरं अत्थावहं हितावहं कारणं। नानातित्थेसु नानालद्धीसु नियुत्ताति नानातित्थिका, ते एव **नानातित्थिया** क-कारस्स य-कारं कत्वा। कुतूहलमेत्थ अत्थीति कोतूहला, सा एव सालाति **कोतूहलसाला,** तेनाह **"कोतूहलुप्पत्तिट्ठानतो"**ति। **सञ्ञानिरोधेति** सञ्ञासीसेनायं देसना, तस्मा सञ्ञासहगता सब्बेपि धम्मा सङ्गय्हन्ति, तत्थ पन चित्तं पधानन्ति आह **"चित्तनिरोधे"**ति। अच्चन्तनिरोधस्स पन तेहि अनधिप्पेतत्ता, अविसयत्ता च **"खणिकनिरोधे"**ति आह। कामं सोपि तेसं अविसयोव, अत्थतो पन निरोधकथा वुच्चमाना तत्थेव तिट्ठतीति तथा वुत्तं। **कित्तिघोसोति** "अहो बुद्धानुभावो भवन्तरपटिच्छन्नं कारणं एवं हत्थामलकं विय पच्चक्खतो दस्सेति, सावके च एदिसे संवरसमादाने पतिट्ठापेती"ति थुतिघोसो याव भवग्गा पत्थरति। **पटिभागकिरियन्ति** पळासवसेन पटिभागभूतं पयोगं करोन्तो। **भवन्तरसमयन्ति** तत्र तत्र वुट्ठनसमयं अभूतपरिकप्पितं किञ्चि उप्पादियं वत्थुं अत्तनो समयं कत्वा। **किञ्चिदेव सिक्खापदन्ति** "एलमूगेन भवितब्बं, एत्तकं, वेलं एकस्मिंयेव ठाने निसीदितब्ब"न्ति एवमादिकं किञ्चिदेव कारणं सिक्खाकोट्ठासं कत्वा **पञ्ञपेन्ति। निरोधकथन्ति** निरोधसमापत्तिकथं।

तेसूति कोतूहलसालायं सन्निपतितेसु तित्थियसमणब्राह्मणेसु। **एकच्चेति** एके। **पुरिमोति** "अहेतू अप्पच्चया"ति एवंवादी। य्वायं इध उप्पज्जतीति योजना। **समापत्तिन्ति** असञ्ञभावावहं समापत्तिं। **निरोधेति** सञ्ञानिरोधे। **हेतुं अपस्सन्तोति** येन हेतुना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असञ्ञभवे सञ्ञाय निरोधो सब्बसो अनुप्पादो, येन च ततो चुतस्स इध पञ्चवोकारभवे तस्सा उप्पादो, तं अविसयताय अपस्सन्तो।

नन्ति पठमवादिं। **निसेधेत्वा**ति "न खो नामेतं भो एवं भविस्सती"ति एवं पटिक्खिपित्वा। **असञ्ञिकभाव**न्ति मुच्छापत्तिया किरियमयसञ्ञावसेन विगतसञ्ञिभावं। वक्खति हि "विसञ्ञी हुत्वा"ति। विक्खम्भनवसेन किलेसानं सन्तापनेन **अत्तन्तपो। घोरतपो**ति दुक्करताय भीमतपो। **परिमारितिन्द्रियो**ति निब्बिसेवनभावापादनेन सब्बसो मिलापितचक्खादिन्द्रियो। **भग्गो**ति भञ्जितकुसलज्झासयो। **एवमाहा**ति "एवं सञ्ञा हि भो पुरिसस्स अत्ता"तिआदिआकारेन सञ्ञानिरोधमाह। इमिना नयेन इतो परेसु द्वीसु ठानेसु यथारहं योजना वेदितब्बा।

आथब्बणपयोगन्ति आथब्बणवेदविहितं आथब्बणिकानं विसञ्ञिभावापादनपयोगं। **आथब्बणं पयोजेत्वा**ति आथब्बणवेदे आगतअग्गिजुहनपुब्बकं मन्तजप्पनं पयोजेत्वा सीसच्छिन्नतादिदस्सनेन सञ्ञानिरोधमाह। **तस्सा**ति यस्स सीसच्छिन्नतादि दस्सितं, तस्स।

यक्खदासीनन्ति देवदासीनं, या "देवताभतियोतिपि" वुच्चन्ति। **मदनिद्द**न्ति सुरामदनिमित्तकं सुपनं **देवतूपहार**न्ति नच्चनगायनादिना देवतानं पूजं। **सुरापाति**न्ति पातिपुण्णं सुरं। **दिवा**ति अतिदिवा उस्सूरे।

एलमूगकथा वियाति इमेसं पण्डितमानीनं कथा अन्धबालकथासदिसी। **चत्तारो निरोधे**ति अञ्ञमञ्ञविधुरे चत्तारो निरोधे **एते पञ्ञपेन्ति**। न च अञ्ञमञ्ञविरुद्धनानासभावेन तेन भवितब्बं, अथ खो एकसभावेन, तेनाह **"इमिना चा"**तिआदि। **अञ्ञेनेवा**ति इमेहि वुत्ताकारतो अञ्ञाकारेनेव **भवितब्बं। "अयं निरोधो, अयं निरोधो"**ति आमेडितवचनं सत्था अत्तनो देसनाविलासेन अनेकाकारवोकारं निरोधं विभावेस्सतीति दस्सनत्थं कतं **अहो नूना**ति एत्थ **अहो**ति अच्छरिये, **नूना**ति अनुस्सरणे निपातो। तस्मा अहो नून भगवा अनञ्ञसाधारणदेसनत्ता निरोधम्पि अहो अच्छरियं कत्वा कथेय्य मञ्ञेति अधिप्पायो। **"अहो नून सुगतो"**ति एत्थापि एसेव नयो। अच्छरियविभावनतो एव चेत्थ द्विक्खत्तुं वचनं, अच्छरियत्थोपि चेत्थ **अहो**-सद्दो। सो यस्मा अनुस्सरणमुखेनेव तेन गहितो, तस्मा वुत्तं **"अहो नूनाति अनुस्सरणत्थे"**ति। कालपुग्गलादिविभागेन बहुभेदत्ता **इमेसं निरोधधम्मान**न्ति बहुवचनं, कुसल-सद्दयोगेन सामिवचनं भुम्मत्थे दट्ठब्बं। **चिण्णवसिताया**ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरोधसमापत्तियं वसीभावस्स चिण्णत्ता। **सभावं जानातीति** निरोधस्स सभावं याथावतो जानाति।

अहेतुकसञ्ञुप्पादनिरोधकथावण्णना

४१२. **घरमज्झेयेव पक्खलिताति** घरतो बहि गन्तुकामा पुरिसा मग्गं अनोतरित्वा घराजिरेन समतले विवटङ्गणे एव पक्खलनं पत्ता, एवं सम्पदमिदन्ति अत्थो। असाधारणो **हेतु,** साधारणो **पच्चयोति** एवमादि विभागेन इध पयोजनं नत्थि सञ्ञाय अकारणभावपटिक्खेपत्ता चोदनायाति वुत्तं **"कारणस्सेव नाम"**न्ति।

पाळियं "उप्पज्जन्तिपि निरुज्झन्तिपी"ति वुत्तं, तत्थ "सहेतू सप्पच्चया सञ्ञा उप्पज्जन्ति, उप्पन्ना पन निरुज्झन्तियेव, न तिट्ठन्ती"ति दस्सनत्थं "निरुज्झन्ती"ति वचनं, न निरोधस्स सहेतुसप्पच्चयभावदस्सनत्थं। उप्पादो हि सहेतुको, न निरोधो। यदि हि निरोधोपि सहेतुको सिया, तस्स निरोधेनापि भवितब्बं अङ्कुरादीनं विय, न च तस्स निरोधो अत्थि। तस्मा वुत्तनयेनेव पाळिया अत्थो वेदितब्बो। अयञ्च नयो खणनिरोधवसेन वुत्तो। यो पन यथापरिच्छिन्नकालवसेन सब्बसोव अनुप्पादनिरोधो, सो "सहेतुको"ति वेदितब्बो तथारूपाय पटिपत्तिया विना अभावतो। तेनाह भगवा "सिक्खा एका सञ्ञा निरुज्झती"ति। (दी० नि० १.४१२) ततो एव च इधापि वुत्तं "सञ्ञाय सहेतुकं उप्पादनिरोधं दीपेतु"न्ति।

सिक्खा एकाति एत्थ **सिक्खाति** करणे पच्चत्तवचनं, एक-सद्दो अञ्ञपरियायो "इत्थेके अभिवदन्ति सतो वा पन सत्तस्सा"तिआदीसु (दी० नि० १.८५ आदयो; म० नि० ३.२१) विय, न सङ्ख्यावाचीति आह **"सिक्खा एका सञ्ञा उप्पज्जन्तीति सिक्खाय एकच्चा सञ्ञा जायन्ती"**ति। सेसपदेसुपि एसेव नयो।

४१३. **तत्थाति** तस्सं उपरिदेसनायं। **सम्मादिट्ठिसम्मासङ्कप्पवसेन परियापन्नत्ता आगताति** सभावतो उपकारतो च पञ्ञाक्खन्धे परियापन्नत्ता सङ्गहितत्ता **ततिया** अधिपञ्ञासिक्खा सम्मादिट्ठिसम्मासङ्कप्पवसेन आगता। तथा हि वुत्तं "या चावुसो विसाख सम्मादिट्ठि, यो च सम्मासङ्कप्पो, इमे धम्मा पञ्ञाक्खन्धे सङ्गहिता"ति (म० नि० १.४६२) कामञ्चेत्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुत्तनयेन तिस्सोपि सिक्खा आगता एव, तथापि अधिचित्तसिक्खाय एव अभिसञ्ञानिरोधो दस्सितो, इतरा तस्स सम्भारभावेन आनीता।

पञ्चकामगुणिकरागोति पञ्चकामकोट्ठासे आरब्भ उप्पज्जनकरागो। **असमुप्पन्नकामचारो**ति वत्तमानुप्पन्नतावसेन असमुप्पन्नो यो कोचि कामचारो या काचि लोभुप्पत्ति। पुरिमो विसयवसेन नियमितत्ता कामगुणारम्मणोव लोभो दट्ठब्बो, इतरो पन झाननिकन्तिभवरागादिप्पभेदो सब्बोपि लोभचारो कामनट्ठेन कामेसु पवत्तनतो। सब्बेपि हि तेभूमका धम्मा कामनीयट्ठेन कामाति। उभयेसम्पि कामसञ्ञातिनामता सहचरणञायेनाति "कामसञ्ञा"ति पदुद्धारं कत्वा तदुभयं निद्दिट्ठं।

"**तत्था**"तिआदि असमुप्पन्नकामचारतो पञ्चकामगुणिकरागस्स विसेसदस्सनं। कामं पञ्चकामगुणिकरागोपि असमुप्पन्नो एव मग्गेन समुग्घाटीयति, तस्मिं पन समुग्घाटितेपि न सब्बो रागो समुग्घाटं गच्छति, तस्मा पञ्चकामगुणिकरागग्गहणेन न इतरस्स सब्बस्स रागस्स गहणं होतीति उभयसाधारणेन परियायेन उभयं सङ्गहेत्वा दस्सेतुं पाळियं कामसञ्ञाग्गहणं कतन्ति तदुभयं सरूपतो विसेसतो च दस्सेत्वा सब्बसङ्गाहिकभावतो "**असमुप्पन्नकामचारो पन इमस्मिं ठाने वट्टती**"ति वुत्तं।

सदिसत्ताति कामसञ्ञादिभावेन समानत्ता, एतेन पाळियं "पुरिमा"ति सदिसकप्पनावसेन वुत्तन्ति दस्सेति। अनागता हि इध "निरुज्झती"ति वुत्ता अनुप्पादस्स अधिप्पेतत्ता, तेनाह "**अनुप्पन्नाव नुप्पज्जती**"ति।

नीवरणविवेकतो जातत्ता विवेकजेहि पठमज्झानपीतिसुखेहि सह अक्खातब्बा, तंकोट्ठासिका वाति **विवेकजं पीतिसुखसङ्खाता**। नानत्तसञ्ञापटिघसञ्ञाहि निपुणताय सुखुमभूतताय **सुखुमसञ्ञा भूता** सुखुमभावेन, परमत्थभावेन अविपरीतसभावा। झानं तंसम्पयुत्तधम्मानं भावनासिद्धा सण्हसुखुमता नीवरणविक्खम्भनवसेन विञ्ञायतीति आह "**कामच्छन्दादिओळारिकङ्गप्पहानवसेन सुखुमा**"ति। **भूतताया**ति विज्जमानताय। **सब्बत्था**ति सब्बवारेसु।

समापज्जनाधिट्ठानानि विय वुट्ठानं झाने परियापन्नम्पि होति यथा तं धम्मानं भङ्गक्खणो धम्मेसु, न आवज्जनपच्चवेक्खणानीति "**पठमज्झानं समापज्जन्तो अधिट्ठहन्तो**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुट्ठहन्तो च सिक्खती''ति वुत्तं, न ''आवज्जन्तो पच्चवेक्खन्तो''ति। **तन्ति** पठमज्झानं। **तेना**ति हेतुम्हि करणवचनं, तस्मा पठमज्झानेन हेतुभूतेनाति अत्थो। हेतुभावो चेत्थ झानस्स यथावुत्तसञ्ञाय उप्पत्तिया सहजातादिपच्चयभावो कामसञ्ञाय निरोधस्स उपनिस्सयताव, तञ्च खो सुत्तन्तपरियायेन। तथा चेव संवण्णितं ''तथारूपाय पटिपत्तिया विना अभावतो''ति। **एतेनुपायेना**ति य्वायं पठमज्झानतप्पटिपक्खसञ्ञावसेन ''सिक्खा एका सञ्ञा उप्पज्जति, सिक्खा एका सञ्ञा निरुज्झती''ति एत्थ अत्थो वुत्तो, एतेन नयेन। **सब्बत्था**ति सब्बवारेसु।

४१४. यस्मा पनेत्थ समापत्तिवसेन तंतंसञ्ञानं उप्पादनिरोधे वुच्चमाने अङ्गवसेन सो वुत्तोति आह **''यस्मा पना''**तिआदि। **''अङ्गतो सम्मसन''**न्ति अनुपदधम्मविपस्सनाय लक्खणवचनं। अनुपदधम्मविपस्सनञ्हि करोन्तो समापत्तिं पत्वा अङ्गतो सम्मसनं करोति, न च सञ्ञा समापत्तिया किञ्चि अङ्गं होति। वुत्तञ्च **''इदञ्च सञ्ञा सञ्ञाति एवं अङ्गतो सम्मसनं उद्धट''**न्ति। **अङ्गतो**ति वा अवयवतोति अत्थो, अनुपदधम्मतोति वुत्तं होति। **तदेवा**ति आकिञ्चञ्ञायतनमेव।

यतो खोति पच्चत्ते निस्सक्कवचनन्ति आह **''यो नामा''**ति यथा ''आदिम्ही''ति एतस्मिं अत्थे ''आदितो''ति वुच्चति इतरविभत्तितोपि तो-सद्दस्स लब्भनतो। सकस्मिं अत्तना अधिगते सञ्ञा सकसञ्ञा, सा एतस्स अत्थीति **सकसञ्ञी,** तेनाह **''अत्तनो पठमज्झानसञ्ञाय सञ्ञवा''**ति। **सकसञ्ञी**ति चेत्थ उपरि वुच्चमाननिरोधपादकताय सातिसयाय झानसञ्ञाय अत्थिभावजोतको **ई-**कारो दट्ठब्बो, तेनेवाह **''अनुपुब्बेन सञ्ञग्गं फुसती''**तिआदि। तस्मा तत्थ तत्थ सकसञ्ञिताग्गहणेन तस्मिं तस्मिं झाने सब्बसो सुचिण्णवसीभावो दीपितोति वेदितब्बं।

लोकियानन्ति निद्धारणे सामिवचनं, सामिअत्थे एव वा। यदग्गेन हि तं तेसु सेट्ठं, तदग्गेन तेसम्पि सेट्ठन्ति। ''लोकियान''न्ति विसेसनं लोकुत्तरसमापत्तीहि तस्स असेट्ठभावतो। **''किच्चकारकसमापत्तीन''**न्ति विसेसनं अकिच्चकारकसमापत्तितो तस्स असेट्ठभावतो। अकिच्चकारकता चस्सा पटुसञ्ञाकिच्चाभाववचनतो विञ्ञायति। यथेव हि तत्थ सञ्ञा, एवं फस्सादयो पीति। यदग्गेन हि तत्थ सङ्खारावसेससुखुमभावप्पत्तिया पकतिविपस्सकानं सम्मसितुं असक्कुणेय्यरूपेन ठिता, तदग्गेन हेट्ठिमसमापत्तिधम्मा विय पटुकिच्चकरणसमत्थापि न होन्तीति। स्वायमत्थो परमत्थमञ्जुसायं **विसुद्धिमग्गसंवण्णनायं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरुप्पकथायं (विसुद्धि० टी० १.२८६) सविसेसं वुत्तो, तस्मा तत्थ वुत्तनयेन वेदितब्बो। केचि पन "यथा हेट्ठिमा हेट्ठिमा समापत्तियो उपरिमानं उपरिमानं अधिट्ठानकिच्चं साधेन्ति, न एवं नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति कस्सचिपि अधिट्ठानकिच्चं साधेति, तस्मा सा अकिच्चकारिका, इतरा किच्चकारिका वुत्ता"ति वदन्ति, तदयुत्तं तस्सापि विपस्सनाचित्तपरिदमनादीनं अधिट्ठानकिच्चसाधनतो। तस्मा पुरिमोयेव अत्थो युत्तो।

पकप्पेतीति संविदहति। झानं समापज्जन्तो हि झानसुखं अत्तनि संविदहति नाम। **अभिसङ्खरोतीति** आयूहति, सम्पिण्डेतीति अत्थो। सम्पिण्डनत्थो हि समुदयट्ठो। यस्मा निकन्तिवसेन चेतनाकिच्चस्स मत्थकप्पत्ति, तस्मा फलूपचारेन कारणं दस्सेन्तो **"निकन्तिं कुरुमानो अभिसङ्खरोति नामा"**ति वुत्तं। **इमा** इदानि मे लब्भमाना **आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञा निरुज्झेय्युं** तंसमतिक्कमेनेव उपरिझानत्थाय चेतनाभिसङ्खरणसम्भवतो। **अञ्ञाति** आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञाहि अञ्ञा। ततो थूलतरभावतो **ओळारिका**। का पन ताति आह **"भवङ्गसञ्ञा"**ति। आकिञ्चञ्ञायतनतो वुट्ठाय एव हि उपरिझानत्थाय चेतनाभिसङ्खरणानि भवेय्युं, वुट्ठानञ्च भवङ्गवसेन होति। याव च उपरि झानसमापज्जनं, ताव अन्तरन्तरा भवङ्गप्पवत्तीति आह **"भवङ्गसञ्ञा उप्पज्जेय्यु"**न्ति।

चेतेन्तोवाति नेवसञ्ञानासञ्ञायतनज्झानं एकं द्वे चित्तवारे समापज्जन्तो एव। **न चेतेति** तथा हेट्ठिमज्झानेसु विय वा पुब्बाभोगाभावतो पुब्बाभोगवसेन हि झानं पकप्पेन्तो इध "चेतेती"ति वुत्तो। यस्मा "अहमेतं झानं निब्बत्तेमि उपसम्पादेमि समापज्जामी"ति एवं अभिसङ्खरणं तत्थ सालयस्सेव होति, न अनालयस्स, तस्मा एकं चित्तक्खणिकम्पि झानं पवत्तेन्तो तत्थ अप्पहीननिकन्तिकताय **अभिसङ्खरोन्तो एवाति** अत्थो। यस्मा पनस्स तथा हेट्ठिमज्झानेसु विय वा तत्थ पुब्बाभोगो नत्थि, तस्मा **"न अभिसङ्खरोती"**ति वुत्तं। **"इमस्स भिक्खुनो"**तिआदि वुत्तस्सेवत्थस्स विवरणं। **"स्वायमत्थो"**तिआदिना तमेवत्थं उपमाय पटिपादेति।

पच्छाभागेति पितुघरस्स पच्छाभागे। **ततो** पुत्तघरतो। **लद्धघरमेवाति** यतो अनेन भिक्खा लद्धा, तमेव घरं पुत्तगेहमेव। **आसनसाला विय आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति** ततो पितुघरपुत्तघरट्ठानियानं नेवसञ्ञानासञ्ञायतननिरोधसमापत्तीनं उपगन्तब्बतो। **पितुघरं अमनसिकरित्वाति** पविसित्वा समतिक्कन्तम्पि पितुघरं न मनसि कत्वा। पुत्तघरस्सेव आचिक्खनं विय एकं द्वे चित्तवारे समापज्जितब्बम्पि नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं न मनसि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्वा परतो निरोधसमापत्तिअत्थाय एव मनसिकारो। एवं अमनसिकारसामञ्ञेन, मनसिकारसामञ्ञेन च उपमुपमेय्यता वेदितब्बा आचिक्खनेनपि मनसिकारस्सेव जोतितत्ता। न हि मनसिकारेन विना आचिक्खनं सम्भवति।

ता झानसञ्ञाति ता एकं द्वे चित्तवारे पवत्ता नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञा। **निरुज्झन्ती**ति पदेसेनेव निरुज्झन्ति, पुब्बाभिसङ्खारवसेन पन उपरि अनुप्पादो। यथा च झानसञ्ञानं, एवं इतरसञ्ञानं पीति आह **"अञ्ञा च ओळारिका भवङ्गसञ्ञा नुप्पज्जन्ती"**ति, यथापरिच्छिन्नकालन्ति अधिप्पायो। **सो एवं पटिपन्नो भिक्खू**ति सो एवं यथावुत्ते सञ्ञग्गे ठितो अरहत्ते, अनागामिफले वा पतिट्ठितो भिक्खु द्वीहि फलेहि समन्नागमो, तिण्णं सङ्खारानं पटिप्पस्सद्धि, सोळसविधा ञाणचरिया, नवविधा समाधिचरियाति इमेसं वसेन निरोधपटिपादनपटिपत्तिं पटिपन्नो। **फुसती**ति एत्थ **फुसनं** नाम विन्दनं पटिलद्धीति आह **"विन्दति पटिलभती"**ति। अत्थतो पन यथापरिच्छिन्नकालं चित्तचेतसिकानं सब्बसो अप्पवत्ति एव।

अभीति उपसग्गमत्तं निरत्थकं, तस्मा "सञ्ञा" इच्चेव अत्थो। निरोधपदेन अनन्तरिकं कत्वा समापत्तिपदे वत्तब्बे तेसं द्विन्नं अन्तरे सम्पजानपदं ठपितन्ति आह **"निरोधपदेन अनन्तरिकं कत्वा वुत्त"**न्ति, तेनाह **"अनुपटि...पे०... अत्थो"**ति। **तत्रापी**ति तस्मिम्पि तथा पदानुपुब्बिठपनेपि अयं विसेसत्थोति योजना। **सम्पजानन्तस्सा**ति तं तं समापत्तिं समापज्जित्वा वुट्ठाय तत्थ तत्थ सङ्खारानं सम्मसनवसेन पजानन्तस्स। **अन्ते**ति यथावुत्ताय निरोधपटिपत्तिया परियोसाने। दुतियविकप्पे **सम्पजानन्तस्सा**ति सम्पजानकारिनोति अत्थो, तेन निरोधसमापज्जनकस्स भिक्खुनो आदितो पट्ठाय सब्बपाटिहारिकपञ्ञाय सद्धिं अत्थसाधिका पञ्ञा किच्चतो दस्सिता होति, तेनाह **"पण्डितस्स भिक्खुनो"**ति।

सब्बाकारेनाति "समापत्तिया सरूपविसेसो, समापज्जनको, समापज्जनस्स ठानं, कारणं, समापज्जनाकारो"ति एवमादि सब्बप्पकारेन। **तत्था**ति विसुद्धिमग्गे। (विसुद्धी० २.८६७) **कथिततोवा**ति कथितट्ठानतो एव **गहेतब्बा,** न इध तं वदाम पुनरुत्तिभावतोति अधिप्पायो।

एवं खो अहन्ति एत्थ आकारत्थो **एवं-**सद्दो उग्गहिताकारदस्सनन्ति कत्वा। **एवं पोट्ठपादा**ति एत्थ पन सम्पटिच्छनत्थो, तेनाह **"सुउग्गहितं तयाति अनुजानन्तो"**ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१५. सञ्ञा अग्गा एत्थाति **सञ्ञग्गं,** आकिञ्चञ्ञायतनं। **अट्ठसु** समापत्तीसुपि **सञ्ञग्गं अत्थि उपलब्भतीति चिन्तेत्वा**। "पुथू"ति पाळियं लिङ्गविपल्लासं दस्सेन्तो आह "बहूनिपी"ति। **"यथा"**ति इमिना पकारविसेसो करणप्पकारो गहितो, न पकारसामञ्ञन्ति आह **"येन येन कसिणेना"**ति, **पथवीकसिणेन करणभूतेना**"ति च। झानं ताव युत्तो करणभावो सञ्ञानिरोधफुसनस्स साधकतमभावतो, कथं कसिणानन्ति ? तेसम्पि सो युत्तो एव। यदग्गेन हि झानानं निरोधफुसनस्स साधकतं अभावो, तदग्गेन कसिणानम्पि तदविनाभावतो। अनेककरणापि किरिया होतियेव यथा "अस्सेन यानेन दीपिकाय गच्छती"ति।

एकवारन्ति सकिं। **पुरिमसञ्ञानिरोधन्ति** कामसञ्ञादिपुरिमसञ्ञाय निरोधं, न निरोधसमापत्तिसञ्ञितं सञ्ञानिरोधं। **एकं सञ्ञग्गन्ति** एकं सञ्ञाभूतं अग्गं सेट्ठन्ति अत्थो हेट्ठिमसञ्ञाय उक्कट्ठभावतो। सञ्ञा च सा अग्गञ्चाति सञ्ञग्गं, न सञ्ञासु अग्गन्ति। **द्वे वारेति** द्विक्खत्तुं। **सेसकसिणेसूति** कसिणानंयेव गहणं निरोधकथाय अधिकतत्ता। ततो एव चेत्थ झानग्गहणेन कसिणज्झानानि एव गहितानीति वेदितब्बं। **"पठमज्झानेन करणभूतेना"**ति आरम्मणं अनामसित्वा वदति यथा "येन येन कसिणेना"ति एत्थ झानं अनामसित्वा वुत्तं। **"इती"**तिआदिना वुत्तमेवत्थं सङ्गहेत्वा निगमनवसेन वदति। **सब्बम्पीति** सब्बं एकवारं समापन्नझानं। **सङ्गहेत्वाति** सञ्जाननलक्खणेन तंसभावाविसेसतो एकज्झं सङ्गहेत्वा। **अपरापरन्ति** पुनप्पुनं।

४१६. झानपदट्ठानं विपस्सनं वड्ढेन्तस्स पुग्गलस्स वसेन सञ्ञाञाणानि दस्सितानि पठमनये। दुतियनये पन यस्मा विपस्सनं उस्सुक्कापेत्वा मग्गेन घटेन्तस्स मग्गञाणं उप्पज्जति, तस्मा विपस्सनामग्गवसेन सञ्ञाञाणानि दस्सितानि। यस्मा पन पठमनयो लोकियत्ता ओळारिको, दुतियनयो मिस्सको तस्मा तदुभयं असम्भावेत्वा अच्चन्तसुखुमं सुभं थिरं निब्बत्तितलोकुत्तरमेव दस्सेतुं मग्गफलवसेन सञ्ञाञाणानि दस्सितानि ततियनये। तयोपेते नया मग्गसोधनवसेन दस्सिता।

"अयं पनेत्थ सारो"ति विभावेतुं तिपिटकमहासिवत्थेरवादो आभतो। निरोधं पुच्छित्वा तस्मिं कथिते तदनन्तरं सञ्ञाञाणुप्पत्तिं पुच्छन्तो अत्थतो निरोधतो वुट्ठानं पुच्छति नाम, निरोधतो च वुट्ठानं अरहत्तफलुप्पत्तिया वा सिया अनागामिफलुप्पत्तिया वा, तत्थ सञ्ञा पधाना, तदनन्तरञ्च पच्चवेक्खणञाणन्ति तदुभयं निद्धारेन्तो थेरो **"किं इमे भिक्खू**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणन्ती''तिआदिमाह। तत्थ **''किं इमे भिक्खू भणन्ती''**ति तदा दीघनिकायतन्तिं परिवत्तन्ते इमं ठानं पत्वा यथावुत्तेन पटिपाटिया तयो नये कथेन्ते भिक्खू सन्धाय वदति।

यस्स यथा मग्गवीथियं मग्गफलञाणेसु उप्पन्नेसु नियमतो मग्गफलपच्चवेक्खणञाणानि होन्ति, एवं फलसमापत्तियं फलपच्चवेक्खणञाणन्ति आह **''पच्छा पच्चवेक्खणञाण''**न्ति। **''इदं अरहत्तफल''**न्ति इदं पच्चवेक्खणञाणस्स पवत्तिआकारदस्सनं। **फलसमाधिसञ्ञापच्चया**ति फलसमाधिसहगतसञ्ञापच्चया। **किर**-सद्दो अनुस्सरणत्थो। यथाधिगतधम्मानुस्सरणपक्खिया हि पच्चवेक्खणा। समाधिसीसेन चेत्थ सब्बं अरहत्तफलं गहितं सहचरणञायेन, तस्मिं असति पच्चवेक्खणाय असम्भवो एवाति आह **''इदप्पच्चया''**ति।

सञ्ञाअत्तकथावण्णना

४१७. देसनाय सण्हभावेन सारम्भमक्खिस्सादिमलविसोधनतो सुतमयञाणं न्हापितं विय, सुखुमभावेन तनुलेपनविलित्तं विय, तिलक्खणब्भाहतताय कुण्डलादिअलङ्कारविभूसितं विय च होति, तदनुपसेवतो ञाणस्स च तथाभावो तंसमङ्गिनो पुग्गलस्स तथाभावापत्ति, निरोधकथाय निवेसनञ्चस्स सिरिसयनप्पवेसनसदिसन्ति आह **''सण्हसुखुम...पे०... आरोपितोपी''**ति। **तत्था**ति तस्सं निरोधकथायं। **सुखं अविन्दन्तो** मन्दबुद्धिताय अलभन्तो। मलविदूसितताय **गूथट्ठानसदिसं। अत्तनो लद्धिं** अत्तदिट्ठिं। **अनुमतिं गहेत्वा**ति अनुञ्ञं गहेत्वा ''एदिसो मे अत्ता''ति अनुजानापेत्वा, अत्तनो लद्धियं पतिट्ठपेत्वाति अत्थो। **कं पना**ति ओळारिको, मनोमयो, अरूपीति तिण्णं अत्तवादानं वसेन तिविधेसु कतमन्ति अत्थो। **परिहरन्तो**ति विद्धंसनतो परिहरन्तो, निगूहन्तोति अधिप्पायो। यस्मा चतुसन्ततिरूपप्पबन्धं एकत्तवसेन गहेत्वा रूपीभावतो ''ओळारिको अत्ता''ति पच्चेति अत्तवादी, अन्नपानोपधानतञ्चस्स परिकप्पेत्वा ''सस्सतो''ति मञ्ञति, रूपीभावतो एव च सञ्ञाय अञ्ञत्तं आयागतमेव, यं वेदवादिनो ''अन्नमयो, पानमयो''ति च द्विधा वोहरन्ति, तस्मा परिब्बाजको तं सन्धाया **''ओळारिकं खो''**ति आह।

तत्थ यदि अत्ता रूपी, न सञ्ञी, सञ्ञाय अरूपभावत्ता, रूपधम्मानञ्च असञ्जाननसभावत्ता, रूपी च समानो यदि तव मतेन निच्चो, सञ्ञा अपरापरं पवत्तनतो तत्थ तत्थ भिज्जतीति भेदसब्भावतो अनिच्चा, एवम्पि ''अञ्ञा सञ्ञा, अञ्ञो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्ता''ति सञ्ञाय अभावतो अचेतनोति न कम्मस्स कारको, फलस्स च न उपभुञ्जकोति आपन्नमेव, तेनाह **''ओळारिको च हि ते''**तिआदि। **पच्चागच्छतो**ति पच्चागच्छन्तस्स, जानतोति अत्थो। ''अञ्ञा च सञ्ञा उप्पज्जन्ति, अञ्ञा च सञ्ञा निरुज्झन्ती''ति कस्मा वुत्तं, ननु उप्पादपुब्बको निरोधो, न च उप्पन्नं अनिरुज्झकं नाम अत्थीति चोदनं सन्धायाह **''चतुन्नञ्च खन्धान''**न्तिआदि।

४१८-४२०. मनोमयन्ति झानमनसो वसेन मनोमयं। यो हि बाहिरपच्चयनिरपेक्खो, सो मनसाव निब्बत्तोति मनोमयो। रूपलोके निब्बत्तसरीरं सन्धाय वदति, यं वेदवादिनो आनन्दमयो, विञ्ञाणमयोति च द्विधा वोहरन्ति। **तत्रापी**ति ''मनोमयो अत्ता''ति इमस्मिम्पि पक्खे। **दोसे दिन्ने**ति ''अञ्ञाव सञ्ञा भविस्सती''तिआदिना दोसे दिन्ने। इधापि पुरिमवादे वुत्तनयेनेव दोसदस्सनं वेदितब्बं। अयं पन विसेसो– यदि अत्ता मनोमयो, सब्बङ्गपच्चङ्गी, अहीनिन्द्रियो च भवेय्य, एवं सति ''रूपं अत्ता सिया, न च सञ्ञी''ति पुब्बे विय वत्तब्बं। तेनाह– ''मनोमयो च हि ते''तिआदि। कस्मा पनायं परिब्बाजको पठमं ओळारिकं अत्तानं पटिजानित्वा तं लद्धिं विस्सज्जेत्वा पुन मनोमयं अत्तानं पटिजानाति, तञ्च विस्सज्जेत्वा अरूपिं अत्तानं पटिजानातीति? कामञ्चेत्थ कारणं हेट्ठा वुत्तमेव, तथापि इमे तित्थिया नाम अनवट्ठितचित्ता थुसरासिम्हि निखातखाणुको विय चञ्चलाति दस्सेतुं **''यथा नाम उम्मत्तको''**तिआदि वुत्तं। तत्थ **सञ्ञाया**ति पकतिसञ्ञाय। **उप्पादनिरोधं इच्छति** अपरापरं पवत्ताय सञ्ञाय उदयवयदस्सनतो। तथापि ''सञ्ञा सञ्ञा''ति पवत्तसमञ्ञं ''अत्ता''ति गहेत्वा तस्स च अविच्छेदं परिकप्पेन्तो सस्सतं मञ्ञति, तेनाह **''अत्तानं पन सस्सतं मञ्ञती''**ति।

तथेवाति यथा ''रूपी अत्ता''ति, ''मनोमयो अत्ता''ति च वादद्वये सञ्ञाय अत्ततो अञ्ञता, तथा चस्स अचेतनतादिदोसप्पसङ्गो दुन्निवारो, तथेव इमस्मिं वादे दोसो। तेनाह **''तथेवस्स दोसं दस्सेन्तो''**ति। **मिच्छादस्सनेना**ति अत्तदिट्ठिसङ्खातेन मिच्छाभिनिवेसेन। **अभिभूतत्ता**ति अनादिकालभावितभावेन अज्झोत्थटत्ता निवारितञाणचारत्ता। **तं नानत्तं अजानन्तो**ति येन सन्ततिघनेन, समूहघनेन च वञ्चितो बालो पबन्धवसेन पवत्तमानं धम्मसमूहं मिच्छागाहवसेन ''अत्ता''ति, ''निच्चो''ति च अभिनिविस्स वोहरति, तं एकत्तसञ्ञितं घनग्गहणं विनिभुज्ज याथावतो जाननं घनविनिब्भोगो, सब्बेन सब्बं तित्थियानं सो नत्थीति अयम्पि परिब्बाजको तादिसस्स ञाणस्स परिपाकस्स अभावतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुच्चमानम्पि नाञ्ञासि। तेन वुत्तं **"भगवता वुच्चमानम्पि तं नानत्तं अजानन्तो"**ति। सञ्ञा नामायं नानारम्मणा नानाक्खणे उप्पज्जति, वेति चाति **सञ्ञाय उप्पादनिरोधं पस्सन्तोपि सञ्ञामयं** सञ्ञाभूतं **अत्तानं** परिकप्पेत्वा यथावुत्तघनविनिब्भोगाभावतो **निच्चमेव** कत्वा **मञ्ञति** दिट्ठिमञ्ञनाय। तथाभूतस्स च तस्स सण्हसुखुमपरमगम्भीरधम्मता न ञायतेवाति वुत्तं **"दुज्जानं खो"**तिआदि।

दिट्ठिआदीसु "एवमेत"न्ति दस्सनं अभिनिविसनं **दिट्ठि**। तस्सा एव पुब्बभागभूतं "एवमेत"न्ति निज्झानवसेन खमनं **खन्ति**। तथा रोचनं **रुचि**। **"अञ्ञथा"**तिआदि तेसं दिट्ठिआदीनं विभजित्वा दस्सनं। तत्थ **अञ्ञथा**ति यथा अरियविनये अन्तद्वयं अनुपगम्म मज्झिमा पटिपदावसेन दस्सनं होति, ततो अञ्ञथायेव। **अञ्ञदेवा**ति यं परमत्थतो विज्जति खन्धायतनादि, तस्स च अनिच्चतादि, ततो अञ्ञदेव परमत्थतो अविज्जमानं अत्तानं सस्सतादि **ते खमति चेव रुच्चति च**। आयुञ्जनं अनुयुञ्जनं **आयोगो,** तेनाह **"युत्तपयुत्तता"**ति। **पटिपत्तिया**ति परमत्तचिन्तनादिपरिब्बाजकपटिपत्तिया। **दुज्जानमेतं** धम्मतं त्वं "अयं परमत्थो, अयं सम्मुती"ति इमस्स विभागस्स दुब्बिभागत्ता। "यदि एतं दुज्जानं, तं ताव तिट्ठतु, इमं पनत्थं भगवन्तं पुच्छिस्सामी"ति चिन्तेत्वा यथा पटिपज्जि, तं दस्सेतुं **"अथ परिब्बाजको"**तिआदि वुत्तं। **अञ्ञो वा सञ्ञतो**ति सञ्ञासभावतो अञ्ञो सभावो वा अत्ता होतूति अत्थो। **अस्सा**ति अत्तनो।

लोकीयति दिस्सति एत्थ पुञ्ञपापं, तब्बिपाको चाति **लोको,** अत्ता। सो हिस्स कारको, वेदको चाति इच्छितो। **दिट्ठिगत**न्ति "सस्सतो अत्ता च लोको चा"तिआदि (दी० नि० १.३१; उदा० ५५) नयप्पवत्तं दिट्ठिगतं। न हेस दिट्ठाभिनिवेसो दिट्ठधम्मिकादिअत्थनिस्सितो तदसंवत्तनतो। यो हि तदावहो, सो तंनिस्सितोति वत्तब्बतं लभेय्य यथा तं पुञ्ञञाणसम्भारो। एतेनेव तस्स न धम्मनिस्सिततापि संवण्णिता दट्ठब्बा। आदिब्रह्मचरियस्साति आदिब्रह्मचरियं, तदेव **आदिब्रह्मचरियकं** यथा "विनयो एव वेनयिको"ति, (पारा० अट्ठ० २१) तेनाह **"सिक्खत्तयसङ्खातस्सा"**तिआदि। दिट्ठाभिनिवेसस्स संसारवट्टे निब्बिदाविरागनिरोधुपसमासंवत्तनं वट्टन्तोगधत्ता, तस्स वट्टसम्बन्धनतो च। तथा अभिञ्ञासम्बोधनिब्बानासंवत्तनञ्च दट्ठब्बं। **अभिजाननाया**ति ञातपरिञ्ञावसेन अभिजाननत्थाय। **सम्बुज्झनत्थाया**ति तीरणपहानपरिञ्ञावसेन सम्बोधनत्थायाति वदन्ति। **अभिजाननाया**ति अभिञ्ञापञ्ञावसेन जाननाय, तं पन वट्टस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चक्खकरणमेव होतीति आह **"पच्चक्खकिरियाया"**ति। **सम्बुज्झनत्थाया**ति परिञ्ञाभिसमयवसेन पटिवेधाय।

कामं तण्हापि दुक्खसभावा, तस्सा पन समुदयभावेन विसुं गहितत्ता **"तण्हं ठपेत्वा"**ति वुत्तं। **पभावनतो** उप्पादनतो। दुक्खं पभावेन्तीपि तण्हा अविज्जादिपच्चयन्तरसहिता एव पभावेति, न केवलाति आह **"सप्पच्चया"**ति। **उभिन्नं अप्पवत्ती**ति उभिन्नं अप्पवत्तिनिमित्तं, नप्पवत्तन्ति एत्थ दुक्खसमुदया एतस्मिं वा अधिगतेति अप्पवत्ति। दुक्खनिरोधं निब्बानं गच्छति अधिगच्छति, तदत्थं पटिपदा चाति **दुक्खनिरोधगामिनीपटिपदा। मग्गपातुभावो**ति अग्गमग्गसमुप्पादो। **फलसच्छिकिरिया**ति असेक्खफलाधिगमो। **आकार**न्ति तं गमनलिङ्गं।

४२१. समन्ततो निग्गण्हनवसेन तोदनं विज्झनं **सन्नितोदकं, वाचाया**ति च पच्चत्ते करणवचनन्ति आह **"वचनपतोदेना"**ति। **सज्झब्भरित**न्ति समन्ततो भुसं अरितं **अकंसू**ति सतमत्तेहि तुत्तकेहि विय तिंससतमत्ता परिब्बाजका वाचापतोदनेहि तुदिंसु **सभावतो विज्जमान**न्ति परमत्थसभावतो उपलब्भमानं, नपकतिआदि विय अनुपलब्भमानं। **तच्छ**न्ति सच्चं। **तथ**न्ति अविपरीतं **लोकुत्तरधम्मेसू**ति विसये भुम्मं ते धम्मे विसयं कत्वा। **ठितसभाव**न्ति अवट्ठितसभावं, तदुप्पादकन्ति अत्थो। **लोकुत्तरधम्मनियामत**न्ति लोकुत्तरधम्मसम्पापननियामेन नियतं, तेनाह **"बुद्धानञ्ही"**तिआदि। **एदिसा**ति "धम्मट्ठितत"न्तिआदिना वुत्तप्पकारा।

चित्तहत्थिसारिपुत्तपोट्ठपादवत्थुवण्णना

४२२. सुखुमेसु अत्थन्तरेसूति खन्धायतनादीसु सुखुमञाणगोचरेसु धम्मेसु। **कुसलो**ति पुब्बे बुद्धसासने कतपरिचयताय छेको **अहोसि। गिहिभावे आनिसंसकथाय कथितत्ता** सीलवन्तस्स भिक्खुनो तथा कथनेन विब्भमने नियोजितत्ता इदानि सयम्पि सीलवा एव हुत्वा छ वारे (ध० प० अट्ठ० ३७; जा० अट्ठ० १.१.६९) विब्भमि। कम्मसरिक्खकेन हि फलेन भवितब्बं। **महासावकस्स कथिते**ति महासावकस्स महाकोट्ठिकत्थेरस्स अपसादनकथितनिमित्तं। **पतिट्ठातुं असक्कोन्तो**ति सासने पतिट्ठं लद्धुं असक्कोन्तो।

४२३. पञ्ञाचक्खुनो नत्थितायाति सुवुत्तदुरुत्तसमविसमदस्सनसमत्थपञ्ञाचक्खुनो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभावेन। **चक्खुमा**ति एत्थ यादिसेन चक्खुना पुरिसो "चक्खुमा"ति वुत्तो, तं दस्सेतुं **"सुभासिता"**तिआदि वुत्तं। **एककोट्ठासा**ति एकन्तिका, निब्बानावहभावेन निच्छिताति अधिप्पायो। **ठपिता**ति ववत्थापिता। **न एककोट्ठासा** न एकन्तिका, न निब्बानावहभावेन निच्छिता वट्टन्तोगधभावतोति अधिप्पायो।

एकंसिकधम्मवण्णना

४२५. "कस्मा आरभी"ति कारणं पुच्छित्वा **"अनिय्यानिकभावदस्सनत्थ"**न्ति पयोजनं विस्सज्जितं। सति हि फलसिद्धियं हेतुसिद्धोयेव होतीति। **पञ्ञापितनिट्ठाया**ति पवेदितविमुत्तिमग्गस्स, वट्टदुक्खपरियोसानं गच्छति एतायाति "निट्ठा"ति विमुत्ति वुत्ता। निट्ठामग्गो हि इध उत्तरपदलोपेन "निट्ठा"ति वुत्तो। तस्स हि अनिय्यानिकता, निय्यानिकता च वुच्चति, न निट्ठाय। निय्यानं वा निग्गमनं निस्सरणं, वट्टदुक्खस्स वुपसमोति अत्थो। निय्यानमेव निय्यानिकं, न निय्यानिकं अनिय्यानिकं, सो एव भावो अनिय्यानिकभावो, तस्स दस्सनत्थन्ति योजेतब्बं। **"एव"**न्ति "निब्बानं निब्बान"न्ति वचनमत्तसामञ्ञं गहेत्वा वदति, न पन परमत्थतो तेसं समये निब्बानपञ्ञापनस्स लब्भनतो, तेन वुत्तं **"सा च न निय्यानिका"**तिआदि। **लोकथूपिकादिवसेना**ति एत्थ **आदि**-सद्देन "अञ्ञो पुरिसो, अञ्ञा पकती"ति पकतिपुरिसन्तरावबोधो मोक्खो, बुद्धिआदिगुणविनिमुत्तस्स अत्तनो सकत्तनि अवट्ठानं मोक्खो, कायपवत्तिगतिजातिबन्धानं अप्पमज्जनवसेन अप्पवत्तो मोक्खो, यञ्ञेहि जुतेन परेन पुरिसेन सलोकता मोक्खो, समीपता मोक्खो, सहयोगो मोक्खोति एवमादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। **यथापञ्ञत्ता**ति पञ्ञत्तप्पकारा **हुत्वा न निय्याति,** येनाकारेन "निट्ठा पापुणीयती"ति तेहि पवेदिता, तेनाकारेन तस्सा अप्पत्तब्बतो न निय्याति। **पण्डितेहि पटिक्खित्ता**ति "नायं निट्ठा पटिपदा वट्टस्स अनतिक्कमनतो"ति बुद्धादीहि पण्डितेहि पटिक्खित्ता। **निवत्तती**ति पटिक्खेपस्स कारणवचनं, तस्मा तेहि पञ्ञत्ता निट्ठा पटिपदा न निय्याति, अञ्ञदत्थु तंसमङ्गिनं पुग्गलं संसारे एव परिब्भमापेन्ती निवत्तति।

पधानं जाननं नाम पच्चक्खतो जाननं तस्स पमाणजेट्ठभावतो, इतरस्स संसयानुबद्धत्ताति वुत्तं **"जानं पस्स"**न्ति। तेनेत्थ दस्सनेन जाननं विसेसेति। इदं वुत्तं होति– तुम्हाकं एकन्तसुखे लोके पच्चक्खतो ञाणदस्सनं अत्थीति। **जान**न्ति वा तस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोकस्स अनुमानविसयतं पुच्छति, **पस्सन्ति** पच्चक्खतो गोचरतं। अयञ्हेत्थ अत्थो – अपि तुम्हाकं लोको पच्चक्खतो ञातो, उदाहु अनुमानतोति।

यस्मा लोके पच्चक्खभूतो अत्थो इन्द्रियगोचरभावेन पाकटो, तस्मा वुत्तं "**दिट्ठपुब्बानी**"तिआदि। **दिट्ठपुब्बानीति** दिट्ठवा, दस्सनभूतेन, तदनुगतेन च ञाणेन गहितपुब्बानीति अत्थो। एवञ्च कत्वा "**सरीरसण्ठानादीनी**"ति वचनं समत्थितं होति। "**अप्पाटिहीरक त**"न्ति अनुनासिकलोपं कत्वा निद्देसोति आह "**अप्पाटिहीरकं त**"न्ति "अप्पाटिहीरं कत"न्ति एवमेत्थ वण्णेन्ति। पटिपक्खहरणतो पटिहारियं, तदेव पाटिहारियं, उत्तरविरहितं वचनं। पाटिहारियमेवेत्थ "पाटिहीरक"न्ति वा वुत्तं। **न** पाटिहीरकं अप्पाटिहीरकं परेहि वुच्चमानउत्तरेहि सउत्तरत्ता, तेनाह "**पटिहरणविरहित**"न्ति। सउत्तरञ्हि वचनं तेन उत्तरेन पटिहारीयति अतिविपरिवत्तीयति। ततो एव निय्यानस्स पटिहरणमग्गस्स अभावतो "**अनिय्यानिक**"न्ति वत्तब्बतं लभति।

४२६. **विलासो** लीळा। **आकप्पो** केसबन्धवत्थग्गहणं आदिआकारविसेसो, वेससंविधानं वा। **आदि**-सद्देन भावादीनं सङ्गहो दट्ठब्बो। "**भावो**"ति च चातुरियं वेदितब्बं।

तयोअत्तपटिलाभवण्णना

४२८. आहितो अहं मानो एत्थाति **अत्ता,** अत्तभावोति आह "**अत्तपटिलाभोति अत्तभावपटिलाभो**"ति। **कामभवं दस्सेति** तस्स इतरद्वयत्तभावतो ओळारिकत्ता। **रूपभवं दस्सेति** झानमनेन निब्बत्तं हुत्वा रूपीभावेन उपलब्भनतो। **संकिलेसिका धम्मा नाम द्वादस अकुसलचित्तुप्पादा** तदभावे कस्सचि संकिलेसस्सापि असम्भवतो। **वोदानिया धम्मा नाम समथविपस्सना** तासं वसेन सब्बसो चित्तवोदानस्स सिज्झनतो।

४२९. पटिपक्खधम्मानं असमुच्छेदे पन न कदाचिपि अनवज्जधम्मानं पारिपूरी, वेपुल्लं वा सम्भवति, समुच्छेदे पन सति एव सम्भवतीति **मग्गपञ्ञाफलपञ्ञा**-ग्गहणं। ता हि सकिं परिपुण्णा परिपुण्णा एव अपरिहानधम्मत्ता। **तरुणपीती**ति उप्पन्नमत्ता अलद्धासेवना दुब्बला पीति। **बलवतुट्ठी**ति पुनप्पुनं उप्पत्तिया लद्धासेवना उपरिविसेसाधिगमस्स पच्चयभूता थिरतरा पीति। "**यं अवोचुम्हा**"तिआदीसु अयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सङ्खेपत्थो – यं वोहारं "संकिलेसिकवोदानियधम्मानं पहानाभिवुद्धिनिट्ठं पञ्ञाय पारिपूरिवेपुल्लभूतं इमस्मिंयेव अत्तभावे अपरप्पच्चयेन ञाणेन पच्चक्खतो सम्पादेत्वा विहरिस्सती"ति कथयिम्ह। **तत्थ** तस्मिं विहारे **तस्स** मम ओवादकरस्स भिक्खुनो **एवं** वुत्तप्पकारेन विहरणनिमित्तं पमोदप्पभाविता **पीति च भविस्सति,** तस्सा च पच्चयभूतं पस्सद्धिद्वयं सम्मदेव उपट्ठिता **सति च** उक्कंसगतं ञाणञ्च तथाभूतो च सो विहारो। सन्तपणीतताय अतप्पको अनञ्ञसाधारणो सुखविहारोति वत्तब्बतं अरहतीति।

पठमज्झाने पटिलद्धमत्ते हीनभावतो पीति दुब्बला पामोज्जपक्खिका, सुविभाविते पन तस्मिं पगुणे सा पणीता बलवभावतो परिपुण्णकिच्चा पीतीति वुत्तं "**पठमज्झाने पामोज्जादयो छपि धम्मा लब्भन्ती**"ति। "**सुखो विहारो**"ति इमिना समाधि गहितो। सुखं गहितन्ति अपरे, तेसं मतेन सन्तसुखताय उपेक्खा चतुत्थज्झाने "सुख"न्ति इच्छिता, तेनाह "**तथा चतुत्थे**"तिआदि। **पामोज्जं निवत्ततीति** दुब्बलपीतिसङ्खातं पामोज्जं छसु धम्मेसु निवत्तति हायति। वितक्कविचारक्खोभविरहेन दुतियज्झाने सब्बदा पीति बलवती एव होति, न पठमज्झाने विय कदाचि दुब्बला। **सुद्धविपस्सना पादकज्झानमेवा**ति उपरि मग्गं अकथेत्वा केवलं विपस्सनापादकज्झानं **कथितं। चतूहि मग्गेहि सद्धिं विपस्सना कथिता**ति विपस्सनाय पादकभावेन झानानि कथेत्वा ततो परं विपस्सनापुब्बका चत्तारोपि मग्गा कथितााति अत्थो। **चतुत्थज्झानिकफलसमापत्ति कथिता**ति पठमज्झानिकादिका फलसमापत्तियो अकथेत्वा चतुत्थज्झानिका एव फलसमापत्ति कथिता। **पीतिवेवचनमेव कत्वा**ति द्विन्नं पीतीनं एकस्मिं चित्तुप्पादे अनुप्पज्जनतो पामोज्जं पीतिवेवचनमेव कत्वा। पीतिसुखानं अपरिच्चत्तत्ता, "**सुखो च विहारो**"ति सातिसयस्स सुखविहारस्स गहितत्ता च **दुतियज्झानिकफलसमापत्ति नाम कथिता।** कामं पठमज्झानेपि पीतिसुखानि लब्भन्ति, तानि पन वितक्कविचारक्खोभेन न सन्तपणीतानि, सन्तपणीतानि च इधाधिप्पेतानि।

४३२-४३७. विभावनत्थोति पकासनत्थो सरूपतो निरूपनत्थो, तेनाह "**अयं सो**"तिआदि। **नन्ति** ओळारिकं अत्तपटिलाभं। **सप्पटिहरणन्ति** परेन चोदितवचनेन सपरिहारं सउत्तरं। **तुच्छोति** मुसा अभूतो। **स्वेवा**ति सो एव अत्तपटिलाभो। **तस्मिं समये होतीति** तस्मिं पच्चुप्पन्नसमये विज्जमानो होति। **अत्तपटिलाभोत्वेव निय्यातेसि,** न नं सरूपतो नीहरित्वा दस्सेसि। **रूपादयो चेत्थ धम्मा**ति रूपवेदनादयो एव एत्थ लोके सभावधम्मा। **अत्तपटिलाभो**ति पन ते रूपादिके पञ्चक्खन्धे उपादाय पञ्ञत्ति, तेनाह "**नाममत्तमेत**"न्ति। **नामपण्णत्तिवसेना**ति नामभूतपञ्ञत्तिमत्ततावसेन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३८. **एवञ्च पन वत्वा**ति "अत्तपटिलाभोति रूपादिके उपादाय पञ्ञत्तिमत्त"न्ति इममत्थं "यस्मिं चित्त समये"तिआदिना वत्वा। **पटिपुच्छित्वा विनयनत्थ**न्ति यथा परे पुच्छेय्युं, तेनाकारेन कालविभागतो पटिपदानि पुच्छित्वा तस्स अत्थस्स ञापनवसेन विनयनत्थं। **तस्मिं समये सच्चो अहोसी**ति तस्मिं अतीतसमये उपादानस्स विज्जमानताय सच्चभूतो विज्जमानो विय वत्तब्बो अहोसि, न पन **अनागतो** इदानि **पच्चुप्पन्नो** वा **अत्तपटिलाभो** तदुपादानस्स तदा अविज्जमानत्ता। **ये ते अतीता धम्मा** अतीतसमये अतीतत्तपटिलाभस्स उपादानभूता रूपादयो। **ते एतरहि नत्थि** निरुद्धत्ता। ततो एव **अहेसुन्ति सङ्ख्यं गता। तस्मा**ति तस्मिंयेव समये लब्भनतो। **सोपि** तदुपादानो **मे अत्तपटिलाभो तस्मिंयेव** अतीत**समये सच्चो** भूतो विज्जमानो विय **अहोसि। अनागतपच्चुप्पन्नान**न्ति अनागतानञ्चेव पच्चुप्पन्नानञ्च रूपधम्मानं उपादानभूतानं **तदा** तस्मिं अतीतसमये **अभावा** तदुपादानो **अनागतो पच्चुप्पन्नो** च अत्तपटिलाभो **तस्मिं** अतीत**समये मोघो** तुच्छो मुसा नत्थीति अत्थो। **नाममत्तमेवा**ति समञ्ञामत्तमेव। **अत्तपटिलाभं पटिजानाति** परमत्थतो अनुपलब्भमानत्ता।

"**एसेव नयो**"ति इमिना ये ते अनागता धम्मा, ते एतरहि नत्थि, "भविस्सन्ती"ति पन सङ्ख्यं गमिस्सन्ति, तस्मा सोपि मे अत्तपटिलाभो तस्मिंयेव समये सच्चो भविस्सति। अतीतपच्चुप्पन्नानं पन धम्मानं तदा अभावा तस्मिं समये मोघो अतीतो मोघो पच्चुप्पन्नो। ये इमे पच्चुप्पन्ना धम्मा, ते एतरहि अत्थि, तस्मा योयं मे अत्तपटिलाभो, सो इदानि सच्चो। अतीतानागतानं पन धम्मानं इदानि अभावा तस्मिं समये मोघो अतीतो मोघो अनागतोति एवं अत्थतो नाममत्तमेव अत्तपटिलाभं पटिजानातीति इममत्थं अतिदिसति।

४३९-४४३. **संसन्दितु**न्ति समानेतुं। **यस्मिं समये खीरं होती**ति यस्मिं काले भूतुपादायसञ्ञितं उपादानविसेसं उपादाय खीरपञ्ञत्ति होति। **न तस्मिं...पे०... गच्छति** खीरपञ्ञत्तिउपादानस्स दधिआदिपञ्ञत्तिया अनुपादानतो। पटिनियतवत्थुका हि एका लोकसमञ्ञा, तेनाह **"ये धम्मे उपादाया"**तिआदि। तत्थ सङ्खायति एतायाति **सङ्खा,** पञ्ञत्ति। निद्धारेत्वा वचन्ति वदन्ति एतायाति **निरुत्ति।** नमन्ति एतेनाति **नामं।** वोहरन्ति एतेनाति **वोहारो,** पञ्ञत्तियेव। **एस नयो सब्बत्था**ति "यस्मिं समये"तिआदिना खीरे वुत्तनयं दधिआदीसु अतिदिसति।

समनुजाननमत्तकानीति "इदं खीरं, इदं दधी"तिआदिना तादिसे भूतुपादायरूपविसेसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोके परम्पराभतं पञ्ञत्तिं अप्पटिक्खिपित्वा समनुजाननं विय पच्चयविसेसविसिट्ठं रूपादिखन्धसमूहं उपादाय "ओळारिको अत्तपटिलाभो"ति च "मनोमयो अत्तपटिलाभो"ति च "अरूपो अत्तपटिलाभो"ति च तथा तथा समनुजाननमत्तकानि, न च तब्बिनिमुत्तो उपादानतो अञ्ञो कोचि अत्थो अत्थीति अत्थो। **निरुत्तिमत्तकानी**ति सद्दनिरुत्तिया गहणूपायमत्तकानि। "सत्तो फस्सोति हि सद्दग्गहणुत्तरकालं तदनुविद्धपण्णत्तिग्गहणमुखेनेव तदत्थावबोधो। **वचनपथमत्तकानी**ति तस्सेव वेवचनं। **वोहारमत्तकानी**ति तथा तथा वोहारमत्तकानि। **नामपण्णत्तिमत्तकानी**ति तस्सेव वेवचनं, तंतंनामपञ्ञापनमत्तकानि। **सब्बमेतन्ति** "अत्तपटिलाभो"ति वा "सत्तो"ति वा "पोसो"ति वा सब्बमेतं **वोहारमत्तकं** परमत्थतो अनुपलब्भनतो, तेनाह **"यस्मा परमत्थतो सत्तो नाम नत्थी"**तिआदि।

यदि एवं कस्मा तं बुद्धेहिपि वुच्चतीति आह **"बुद्धानं पन द्वे कथा"**तिआदि। सम्मुतिया वोहारस्स कथनं **सम्मुतिकथा।** परमत्थस्स सभावधम्मस्स कथनं **परमत्थकथा।** अनिच्चादिकथापि परमत्थसन्निस्सितकथा परमत्थकथाति कत्वा **परमत्थकथा।** परमत्थधम्मो हि "अनिच्चो, दुक्खो, अनत्ता"ति च वुच्चति, न सम्मुतिधम्मो। कस्मा पनेवं दुविधा बुद्धानं कथापवत्तीति तत्थ कारणमाह **"तत्थ यो"**तिआदिना। यस्मा परमत्थकथाय सच्चसम्पटिवेधो, अरियसच्चकथा च सिखाप्पत्ता देसना, तस्मा विनेय्यपुग्गलवसेन सम्मुतिकथं कथेन्तोपि भगवा परमत्थकथंयेव कथेतीति आह **"तस्स भगवा आदितोव...पे०... कथेती"**ति, तेनाह **"तथा"**तिआदि, तेनस्स कत्थचि सम्मुतिकथापुब्बिका परमत्थकथा होति पुग्गलज्झासयवसेन, कत्थचि परमत्थकथापुब्बिका सम्मुतिकथा। इति विनेय्यदमनकुसलस्स सत्थु विनेय्यज्झासयवसेन तथा तथा देसनापवत्तीति दस्सेति। सब्बत्थ पन भगवा धम्मतं अविजहन्तो एव सम्मुतिं अनुवत्तति, सम्मुतिं अपरिच्चजन्तोयेव धम्मतं विभावेति, न तत्थ अभिनिवेसातिधावनानि। वुत्तञ्हेतं "जनपदनिरुत्तिं नाभिनिविसेय्य, समञ्ञं नातिधावेय्या"ति।

पठमं सम्मुतिं कत्वा कथनं पन वेनेय्यवसेन येभुय्येन बुद्धानं आचिण्णन्ति तं कारणेन सद्धिं दस्सेन्तो **"पकतिया पना"**तिआदिमाह। ननु च सम्मुति नाम परमत्थतो अविज्जमानत्ता अभूता, तं कथं बुद्धा कथेन्तीति आह **"सम्मुतिकथं कथेन्तापी"**तिआदि। **सच्चमेवा**ति तथमेव। **सभावमेवा**ति सम्मुतिभावेन तंसभावमेव, तेनाह **"अमुसावा"**ति। परमत्थस्स पन सच्चादिभावे वत्तब्बमेव नत्थि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमेसं पन सम्मुतिपरमत्थानं को विसेसो? यस्मिं भिन्ने, बुद्धिया वा अवयवविनिब्भोगे कते न तंसञ्ञा, सो घटपटादिप्पभेदो सम्मुति, तब्बिपरियायतो परमत्थो। न हि कक्खळफुसनादिसभावे अयं नयो लब्भति। एवं सन्तेपि वुत्तनयेन सम्मुतिपि सच्चसभावा एवाति आह **"दुवे सच्चानि अक्खासी"**तिआदि।

इदानि नेसं सच्चसभावं कारणेन दस्सेन्तो **"सङ्केतवचनं सच्चन्ति** गाथमाह। तत्थ **सङ्केतवचनं सच्चं** विसंवादनाभावतो। तत्थ हेतुमाह **"लोकसम्मुतिकारण"**न्ति। लोकसिद्धा हि सम्मुति सङ्केतवचनस्स अविसंवादनताय कारणं। परमो उत्तमो अत्थो **परमत्थो,** धम्मानं यथाभूतसभावो। तस्स **वचनं सच्चं** याथावतो अविसंवादनवसेन च पवत्तनतो। तत्थ कारणमाह **"धम्मानं भूतलक्खण"**न्ति, सभावधम्मानं यो भूतो अविपरीतो सभावो, तस्स लक्खणं अङ्गनं ञापनन्ति कत्वा।

यदि तथागतो परमत्थसच्चं सम्मदेव अभिसम्बुज्झित्वा ठितोपि लोकसमञ्ञं गहेत्वाव वदति, को एत्थ लोकियमहाजनेहि विसेसोति आह। **"याहि तथागतो वोहरति अपरामास"**न्तिआदि। लोकियमहाजनो अप्पहीनपरामासत्ता "एतं ममा"तिआदिना परामसन्तो वोहरति, तथागतो पन सब्बसो पहीनपरामासत्ता अपरामसन्तो यस्मा लोकसमञ्ञाहि विना लोकियो अत्थो लोके केनचि दुविञ्ञेय्यो, तस्मा ताहि तं वोहरति। तथा वोहरन्तो एव च अत्तनो देसनाविलासेन वेनेय्यसत्ते परमत्थसच्चे पतिट्ठपेति। **देसनं विनिवट्टेत्वा**ति हेट्ठा पवत्तितकथाय विनिवट्टेत्वा विवेचेत्वा देसनं "अपरामास"न्ति तण्हामानपरामासप्पहानकित्तनेन **अरहत्तनिकूटेन निट्ठापेसि**। यं यं पनेत्थ अत्थतो न विभत्तं, तं सुविञ्ञेय्यमेव।

पोट्ठपादसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. सुभसुत्तवण्णना

सुभमाणवकवत्थुवण्णना

४४४. "**अचिरपरिनिब्बुते**"ति सत्थु परिनिब्बुतभावस्स चिरकालतापटिक्खेपेन आसन्नता दस्सिता, कालपरिच्छेदो न दस्सितोति तं परिच्छेदतो दस्सेतुं "**परिनिब्बानतो उद्धं मासमत्ते काले**"ति वुत्तं। तत्थ **मत्त**-ग्गहणेन कालस्स असम्पुण्णतं जोतेति। तुदिसञ्ञितो गामो निवासो एतस्साति **तोदेय्यो**। तं पनेस यस्मा सोणदण्डो विय चम्पं, कूटदन्तो विय च खाणुमतं अज्झावसति, तस्मा वुत्तं "**तस्स अधिपतित्ता**"ति इस्सरभावतोति अत्थो। **समाहार**न्ति सन्निचयं। **पण्डितो घरमावसे**ति यस्मा अप्पतरप्पतरेपि वयमाने भोगा खियन्ति, अप्पतरप्पतरेपि सञ्चियमाने वड्ढन्ति, तस्मा विञ्ञुजातिको किञ्चि वयं अकत्वा आयमेव उप्पादेन्तो घरावासं अनुतिट्ठेय्याति लोभादेसितं पटिपत्तिं उपदिसति।

अदानमेव सिक्खापेत्वा लोभाभिभूतताय **तस्मिंयेव घरे सुनखो हुत्वा** निब्बत्ति। लोभवसिकस्स हि दुग्गति पाटिकङ्खा। **अतिविय पियायति** पुब्बपरिचयेन। **पिण्डाय पाविसि** सुभं माणवं अनुग्गण्हितुकामो। **निरये निब्बत्तिस्ससि** कतोकासस्स कम्मस्स पटिबाहितुं असक्कुणेय्यभावतो।

ब्राह्मणचारित्तस्स भावितत्तं सन्धाय, तथा पितरं उक्कंसेन्तो च "**ब्रह्मलोके निब्बत्तो**"ति आह। **तं पवत्तिं पुच्छी**ति सुतमेतं मया "मय्हं पिता सुनखो हुत्वा निब्बत्तो"ति तुम्हेहि वुत्तं, किमिदं सच्चन्ति पुच्छि। **तथेव वत्वा**ति यथा पुब्बे सुनखस्स वुत्तं, तथेव वत्वा। **अविसंवादनत्थ**न्ति सच्चापनत्थं "तोदेय्यब्राह्मणो सुनखो हुत्वा निब्बत्तो"ति अत्तनो वचनस्स अविसंवादनत्थं अविसंवादभावस्स दस्सनत्थन्ति अत्थो। **सब्बं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस्सेसीति बुद्धानुभावेन सो सुनखो तं सब्बं नेत्वा दस्सेसि, न जातिस्सरताय। भगवन्तं दिस्वा भुक्करणं पन पुरिमजातिसिद्धवासनावसेन। **चुद्दस पञ्हे पुच्छित्वा**ति "दिस्सन्ति हि भो गोतम मनुस्सा अप्पायुका, दिस्सन्ति दीघायुका। दिस्सन्ति बव्हाबाधा, दिस्सन्ति अप्पाबाधा। दिस्सन्ति दुब्बण्णा, दिस्सन्ति वण्णवन्तो। दिस्सन्ति अप्पेसक्खा, दिस्सन्ति महेसक्खा। दिस्सन्ति अप्पभोगा, दिस्सन्ति महाभोगा। दिस्सन्ति नीचकुलीना, दिस्सन्ति उच्चाकुलीना। दिस्सन्ति दुप्पञ्ञा, दिस्सन्ति पञ्ञावन्तो"ति (म० नि० ३.२८९)। इमे चुद्दस पञ्हे पुच्छित्वा, अङ्गसुभताय किरेस **"सुभो"**ति नामं लभि।

४४५. **"एका च मे कङ्खा अत्थी"**ति इमिना उपरि पुच्छियमानस्स पञ्हस्स पगेव तेन अभिसङ्खतभावं दस्सेति। **विसभागवेदना**ति दुक्खवेदना। सा हि कुसलकम्मनिब्बत्ते अत्तभावे उप्पज्जनकसुखवेदनापटिपक्खभावतो "विसभागवेदना"ति। कायं गाळ्हा हुत्वा बाधति पीळेतीति "आबाधो"ति च वुच्चति। **एकदेसे उप्पज्जित्वा**ति सरीरस्स एकदेसे उट्ठितापि **अयपट्टेन आबन्धित्वा विय गण्हाति** अपरिवत्तभावकरणतो, एतेन बलवरोगो आबाधो नामाति दस्सेति। **किच्छजीवितकरो**ति असुखजीवितावहो, एतेन दुब्बलो अप्पमत्तको रोगो आतङ्कोति दस्सेति। **उट्ठान**न्ति सयननिसज्जादितो उट्ठहनं, तेन यथा तथा अपरापरं सरीरस्स परिवत्तनं वदति। **गरुक**न्ति भारियं किच्छसिद्धिकं। **काये बलं न होती**ति एत्थापि "गिलानस्सेवा"ति पदं आनेत्वा सम्बन्धितब्बं। हेट्ठा चतूहि पदेहि अफासुविहाराभावं पुच्छित्वा इदानि फासुविहारसब्भावं पुच्छति, तेन सविसेसो फासुविहारो पुच्छितोति दट्ठब्बो, असतिपि अतिसयत्थजोतने सद्दे अतिसयत्थस्स लब्भनतो यथा "अभिरूपाय देय्यं दातब्ब"न्ति।

४४७. **कालञ्च समयञ्च उपादाया**ति। एत्थ **कालो** नाम उपसङ्कमनस्स युत्तपत्तकालो। **समयो** नाम तस्सेव पच्चयसामग्गी, अत्थतो तज्जं सरीरबलञ्चेव तप्पच्चयपरिस्सयाभावो च। **उपादानं** नाम ञाणेन तेसं गहणं सल्लक्खणन्ति दस्सेतुं **"कालञ्चा"**तिआदि वुत्तं। **फरिस्सती**ति वड्ढिस्सति।

४४८. **चेतियरट्ठे**ति चेतिरट्ठे। य-कारेन हि पदं वड्ढेत्वा वुत्तं। चेतिरट्ठतो अञ्ञं विसुंयेवेकं रट्ठन्ति च वदन्ति। **मरणपटिसंयुत्त**न्ति मरणं नाम तादिसानं रोग वसेनेव होतीति येन रोगेन तं जातं, तस्स सरूपपुच्छा, कारणपुच्छा, मरणहेतुकचित्तसन्तापपुच्छा, तस्स च सन्तापस्स सब्बलोकसाधारणता, तथा मरणस्स च अप्पतिकारताति एवं आदिना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरणपटिसंयुत्तं सम्मोदनीयं कथं कथेसीति दस्सेतुं **"भो आनन्दा"**तिआदि वुत्तं। **न रन्धगवेसी** मारो विय, **न वीमंसनाधिप्पायो** उत्तरमाणवो वियाति अधिप्पायो। **येसु धम्मेसूति** विमोक्खुपायेसु निय्यानधम्मेसु। **धरन्तीति** तिट्ठन्ति, पवत्तन्तीति अत्थो।

४४९. अत्थप्पयुत्तताय सद्दपयोगस्स सद्दप्पबन्धलक्खणानि तीणि पिटकानि तदत्थभूतेहि सीलादीहि धम्मक्खन्धेहि सङ्गय्हन्तीति वुत्तं **"तीणि पिटकानि तीहि खन्धेहि सङ्गहेत्वा"**ति। **सङ्खित्तेन कथितन्ति** "तिण्णं खन्धान"न्ति एवं गहणतो सामञ्ञतो चाति सङ्खेपेनेव कथितं। **"कतमेसं तिण्ण"**न्ति अयं अदिट्ठजोतना पुच्छा, न कथेतुकम्यता पुच्छाति वुत्तं **"वित्थारतो पुच्छिस्सामी 'ति चिन्तेत्वा 'कतमेसं तिण्ण'न्ति आहा"**ति। कथेतुकम्यताभावे पनस्स थेरस्स वचनता सिया।

सीलक्खन्धवण्णना

४५०-४५३. सीलक्खन्धस्साति एत्थ **इति**-सद्दो आदिअत्थो, पकारत्थो वा, तेन "अरियस्स समाधिक्खन्धस्स...पे०... पतिट्ठापेसी"ति अयं एत्तको पाठो दस्सितोति दट्ठब्बं तेनाह **"तेसु दस्सितेसू"**ति, उद्देसवसेनाति अधिप्पायो। **भगवता वुत्तनयेनेवाति** सामञ्ञफलदेसनादीसु भगवता देसितनयेनेव, तेनस्स सुत्तस्स सत्थुभासितभावं जिनवचनभावं दस्सेति। **सासने न सीलमेव सारोति** अरियमग्गसारे भगवतो सासने यथा दस्सितं सीलं सारो एव न होति सारवतो महतो रुक्खस्स पपटिकट्ठानियत्ता। यदि एवं कस्मा इध गहितन्ति आह **"केवलञ्हेतं पतिट्ठामत्तकमेवा"**ति। झानादिउत्तरिमनुस्सधम्मे अधिगन्तुकामस्स अधिट्ठानमत्तं तत्थ अप्पतिट्ठितस्स तेसं असम्भवतो। अथ वा **न सीलमेव सारोति** कामञ्चेत्थ सासने "मग्गसीलं, फलसील"न्ति इदं लोकुत्तरसीलम्पि सारमेव, तथापि न सीलक्खन्धो एव सारो अथ खो समाधिक्खन्धोपि पञ्ञाक्खन्धोपि सारो एवाति एवमेत्थ अत्थो दट्ठब्बो। पुरिमो एव सारो, तेनाह **"इतो उत्तरी"**तिआदि।

समाधिक्खन्धवण्णना

४५४. कस्मा पनेत्थ थेरो समाधिक्खन्धं पुट्ठो इन्द्रियसंवरादिके विस्सज्जेसि, ननु एवं सन्ते अञ्ञं पुट्ठो अञ्ञं ब्याकरोन्तो अम्बं पुट्ठो लबुजं ब्याकरोन्तो विय होतीति ईदिसी चोदना इध अनोकासाति दस्सेन्तो **"कथञ्च माणव भिक्खु...पे०... समाधिक्खन्धं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस्सेतुकामो आरभी''ति आह, तेनेत्थ इन्द्रियसंवरादयोपि समाधिउपकारतं उपादाय समाधिक्खन्धपक्खिकानि उद्दिट्ठानीति दस्सेति **रूपज्झानानेव आगतानि, न अरूपज्झानानि** रूपावचरचतुत्थज्झानदेसनानन्तरं अभिञ्ञादेसनाय अवसरोति कत्वा। रूपावचरचतुत्थज्झानपादिका हि सपरिभण्डा छपि अभिञ्ञायो। लोकिया अभिञ्ञा पन सिज्झमाना यस्मा अट्ठसु समापत्तीसु चुद्दसविधेन चित्तपरिदमनेन विना न इज्झन्ति, तस्मा अभिञ्ञासु देसियमानासु अरूपज्झानानिपि देसितानेव होन्ति नानन्तरियभावतो, तेनाह **''आनेत्वा पन दीपेतब्बानी''**ति। वुत्तनयेन देसितानेव कत्वा संवण्णकेहि पकासेतब्बानीति अत्थो। अट्ठकथायं पन ''चतुत्थज्झानं उपसम्पज्ज विहरती''ति इमिनाव अरूपज्झानम्पि सङ्गहितन्ति दस्सेतुं **''चतुत्थज्झानेन ही''**तिआदि वुत्तं। चतुत्थज्झानञ्हि रूपविरागभावनावसेन पवत्तं ''अरूपज्झान''न्ति वुच्चतीति।

४७१-४८०. न चित्तेकग्गतामत्तकेनेवाति एत्थ हेट्ठा वुत्तनयानुसारेन अत्थो वेदितब्बो। लोकियस्स समाधिक्खन्धस्स अधिप्पेतत्ता **''न चित्ते...पे०... अत्थी''**ति वुत्तं। अरिय-सद्दो चेत्थ सुद्धपरियायो, न लोकुत्तरपरियायो। तथा हेट्ठापि लोकियाभिञ्ञापटिसम्भिदाहि विनाव अरहत्ते अधिगते नत्थेव उत्तरिंकरणीयन्ति सक्का वत्तुं यदत्थं भगवति ब्रह्मचरियं वुस्सति, तस्स सिद्धत्ता। इध पन लोकियाभिञ्ञापि आगता एव। सेसं सुविञ्ञेय्यमेव।

सुभसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. केवट्टसुत्तवण्णना

केवट्टगहपतिपुत्तवत्थुवण्णना

४८१. **पावारिकम्बवने**ति पावारिकसेट्ठिनो अम्बबहुले उपवने। तं किर सो सेट्ठी भगवतो अनुच्छविकं गन्धकुटिं, भिक्खुसङ्घस्स च रत्तिट्ठानदिवाट्ठानकुटिमण्डपादीनि सम्पादेत्वा पाकारपरिक्खित्तं द्वारकोट्ठकसम्पन्नं कत्वा बुद्धप्पमुखस्स सङ्घस्स निय्यातेसि, पुरिमवोहारेन पन "पावारिकम्बवन"न्ति वुच्चति, तस्मिं पावारिकम्बवने। **केवट्टोति इदं तस्स नामं** केवट्टेहि संरक्खितत्ता, तेसं वा सन्तिके संवड्ढितत्ताति केचि। "गहपतिपुत्तस्सा"ति एत्थ कामं तदा सो गहपतिट्ठाने ठितो, पितु पनस्स अचिरकालंकतताय पुरिमसमञ्ञाय "गहपतिपुत्तो" त्वेव वोहरीयति, तेनाह **"गहपति महासालो"**ति। महाविभवताय महासारो, गहपतीति अत्थो र-कारस्स ल-कारं कत्वा "महासालो सुखुमालो अह"न्तिआदीसु (अ० नि० १.३.३९) विय। **सद्धासम्पन्नो**ति पोथुज्जनिकाय सद्धाय वसेन सद्धा समन्नागतो।

समिद्धाति सम्मदेव इद्धा, इद्धिया विभवसम्पत्तिया वेपुल्लप्पत्ताति अत्थो। "एहि त्वं भिक्खु अन्वद्धमासं, अनुमासं, अनुसंवच्छरं वा मनुस्सानं पसादाय इद्धिपाटिहारियं करोही"ति एकस्स भिक्खुनो आणापनं तस्मिं ठाने तस्स ठपनं नाम होतीति आह **"ठानन्तरे ठपेतू"**ति। **उत्तरिमनुस्सानं धम्मतो**ति उत्तरिमनुस्सानं बुद्धादीनं अधिगमधम्मतो। निद्धारणे चेतं निस्सक्कं। इद्धिपाटिहारियञ्हि ततो निद्धारेति। **मनुस्सधम्मतो उत्तरी**ति पकतिमनुस्सधम्मतो उपरि। **पज्जलितपदीपो**ति पज्जलन्तो पदीपो।

४८२. **न धंसेमी**ति गुणसम्पत्तितो न चावेमि, तेनाह **"सीलभेद"**न्तिआदि। **विस्सासं वड्ढेत्वा** भगवति अत्तनो विस्सत्थभावं ब्रूहेत्वा विभूतं पाकटं कत्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इद्धिपाटिहारियवण्णना

४८३-४. **आदीनव**न्ति दोसं। **गन्धारी**ति **चूळगन्धारी,** महागन्धारीति द्वे गन्धारीविज्जा। तत्थ **चूळगन्धारी** नाम तिवस्सतो ओरं मतानं सत्तानं उपपन्नट्ठानजानविज्जा। **महागन्धारी** तम्पि जानाति ततो उत्तरिपि इद्धिविधञाणकप्पं येभुय्येन इद्धिविधकिच्चं साधेति। तस्सा किर विज्जाय साधको पुग्गलो तादिसे देसकाले मन्तं परिजप्पित्वा बहुधापि अत्तानं दस्सेति, हत्थिआदीनिपि दस्सेति, दस्सनीयोपि होति, अग्गिथम्भम्पि करोति, जलथम्भम्पि करोति, आकासेपि अत्तानं दस्सेति। सब्बं इन्दजालसदिसं दट्ठब्बं। **अट्टो** ति दुक्खितो बाधितो, तेनाह **"पीळितो"**ति।

आदेसनापाटिहारियवण्णना

४८५. कामं **"चेतसिक"**न्ति पदं ये चेतसि नियुत्ता चित्तेन सम्पयुत्ता, तेसं साधारणवचनं, साधारणे पन गहिते चित्तविसेसो गहितोव होति, सामञ्ञजोतना च विसेसे अवतिट्ठतीति चेतसिकग्गहणस्स अधिप्पायं विवरन्तो **"सोमनस्सदोमनस्सं अधिप्पेत"**न्ति आह। सोमनस्सग्गहणेन चेत्थ तदेकट्ठा रागादयो, सद्धादयो च दस्सिता होन्ति, दोमनस्सग्गहणेन दोसादयो। वितक्कविचारा पन सरूपेनेव दस्सिता। **एवं तव मनो**ति इमिना आकारेन तव मनो पवत्तोति अत्थो। केन पकारेन पवत्तोति आह **"सोमनस्सितो वा"**तिआदि। **"एवं तव मनो"**ति इदं पन सोमनस्सिततादिमत्तदस्सनं, न पन येन येन सोमनस्सितो वा दोमनस्सितो वा, तं तं दस्सनं। **दुतिय**न्ति "इत्थम्पि ते मनो"ति इदं। **इतिपी**ति एत्थ **इति**-सद्दो निदस्सनत्थो "अत्थीति खो, कच्चान, अयमेको अन्तो"तिआदीसु (सं० नि० १.२.१५; २.३.९०) विय, तेनाह **"इमञ्च इमञ्च अत्थं चिन्तयमान"**न्ति **पि**-सद्दो वुत्तत्थसम्पिण्डनत्थो। परस्स चित्तं मनति जानाति एतेनाति **चिन्तामणि।** तस्सा किर विज्जाय साधको पुग्गलो तादिसे देसकाले मन्तं परिजप्पित्वा यस्स चित्तं जानितुकामो, तस्स दिट्ठसुतादिविसेससञ्जाननमुखेन चित्ताचारं अनुमिनन्तो कथेतीति केचि। अपरे "वाचं निच्छरापेत्वा तत्थ अक्खरसल्लक्खणवसेना"ति वदन्ति।

अनुसासनीपाटिहारियवण्णना

४८६. **पवत्तेन्ता**ति पवत्तनका हुत्वा, पवत्तनवसेनाति अत्थो। **"एव"**न्ति हि पदं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यथानुसिट्ठाय अनुसासनिया विधिवसेन, पटिसेधवसेन च पवत्तिआकारपरामसनं, सा च सम्मावितक्कानं मिच्छावितक्कानञ्च पवत्तिआकारदस्सनवसेन पवत्तति तत्थ आनिसंसस्स आदीनवस्स च विभावनत्थं। **अनिच्चसञ्ञमेव** न निच्चसञ्ञन्ति अत्थो। पटियोगीनिवत्तनत्थञ्हि **एव**-कारग्गहणं। इधापि **एवं** सद्दग्गहणस्स अत्थो, पयोजनञ्च वुत्तनयेनेव वेदितब्बं। **इदं**गहणेपि एसेव नयो। **पञ्चकामगुणिकराग**न्ति निदस्सनमत्तं दट्ठब्बं, तदञ्ञरागस्स, दोसादीनञ्च पहानस्स इच्छितत्ता, तप्पहानस्स च तदञ्ञरागादिखेपनस्स उपायभावतो तथा वुत्तं दुट्ठलोहितविमोचनस्स पुब्बदुट्ठमंसखेपनूपायता विय। **लोकुत्तरधम्ममेवा**ति अवधारणं पटिपक्खभावतो सावज्जधम्मनिवत्तनपरं दट्ठब्बं तस्साधिगमूपायानिसंसभूतानं तदञ्ञेसं अनवज्जधम्मानं नानन्तरियभावतो। **इद्धिविधं इद्धिपाटिहारियन्ति दस्सेति** इद्धिदस्सनेन परसन्ताने पसादादीनं पटिपक्खस्स हरणतो। इमिना नयेन सेसपदद्वयेपि अत्थो वेदितब्बो। **सततं धम्मदेसना**ति सब्बकालं देसेतब्बधम्मदेसना।

इद्धिपाटिहारियेनाति सहयोगे करणवचनं, इद्धिपाटिहारियेन सद्धिन्ति अत्थो। **आदेसनापाटिहारियेना**ति एत्थापि एसेव नयो। धम्मसेनापतिस्स आचिण्णन्ति योजना। "**चित्ताचारं ञत्वा**"ति इमिना आदेसनापाटिहारियं दस्सेति। "**धम्मं देसेसी**"ति इमिना अनुसासनीपाटिहारियं "**बुद्धानं सततं धम्मदेसना**"ति अनुसासनीपाटिहारियस्स तत्थ सातिसयताय वुत्तं। **सउपारम्भानि** पतिरूपेन उपारम्भितब्बतो। **सदोसानि** दोससमुच्छिन्दनस्स अनुपायभावतो। सदोसत्ता एव **अद्धानं न तिट्ठन्ति** चिरकालट्ठायीनि न होन्ति। **अद्धानं अतिट्ठनतो न निय्यन्तीति** फलेन हेतुनो अनुमानं। अनिय्यानिकताय हि तानि अनद्धनियानि। **अनुसासनीपाटिहारियं अनुपारम्भं** विसुद्धिप्पभवतो, विसुद्धिनिस्सयतो च। ततो एव **निद्दोसं**। न हि तत्थ पुब्बापरविरोधादिदोससम्भवो। निद्दोसत्ता एव **अद्धानं तिट्ठति** परवादवातेहि, किलेसवातेहि च अनुपहन्तब्बतो। **तस्मा**ति यथावुत्तकारणतो, तेन सउपारम्भादिं, अनुपारम्भादिं चाति उभयं उभयत्थ यथाक्कमं गारय्हपासंसभावानं हेतुभावेन पच्चामसति।

भूतनिरोधेसकवत्थुवण्णना

४८७. **अनिय्यानिकभावदस्सनत्थ**न्ति यस्मा महाभूतपरियेसको भिक्खु पुरिमेसु द्वीसु पाटिहारियेसु वसिप्पत्तो कुसलोपि समानो महाभूतानं अपरिसेसनिरोधसङ्खातं निब्बानं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नावबुज्झि, तस्मा तानि निय्यानावहताभावतो अनिय्यानिकानीति तेसं अनिय्यानिकभावदस्सनत्थं। ततियं पन तक्करस्स एकन्ततो निय्यानावहन्ति तस्सेव **निय्यानिकभावदस्सनत्थं।**

एवमेतिस्सा देसनाय मुख्यपयोजनं दस्सेत्वा इदानि अनुसङ्गिकम्पि दस्सेतुं **"अपिचा"**तिआदि आरद्धं। **महाभूते परियेसन्तो**ति अपरिसेसं निरुज्झनवसेन महाभूते गवेसन्तो, तेसं अनवसेसनिरोधं वीमंसन्तोति अत्थो। **विचरित्वा**ति धम्मताय चोदियमानो विचरित्वा। धम्मतासिद्धं किरेतं, यदिदं तस्स भिक्खुनो तथा विचरणं, यथा अभिजातियं महापथविकम्पादि। **महन्तभावप्पकासनत्थ**न्ति सदेवके लोके अनञ्ञसाधारणस्स बुद्धानं महन्तभावस्स महानुभावताय दीपनत्थं। **इदञ्च कारण**न्ति सब्बेसम्पि बुद्धानं सासने ईदिसो एको भिक्खु तदानुभावप्पकासनो होतीति इदम्पि कारणं दस्सेन्तो।

कत्थाति निमित्ते भुम्मं, तस्मा **कत्था**ति किस्मिं ठाने कारणभूते। **किं आगम्मा**ति किं आरम्मणं पच्चयभूतं अधिगन्त्वा, तेनाह **"किं पत्तस्सा"**ति। **तेति** महाभूता। **अप्पवत्तिवसेना**ति अनुप्पज्जनवसेन। **सब्बाकारेना**ति वचनत्थलक्खणादिसमुट्ठानकलापचुण्ण-नानत्तेकत्तविनिब्भोगाविनिब्भोगसभागविसभागअज्झत्तिकबाहिरसङ्गहपच्चयसमन्नाहारपच्चय-विभागाकारतो, ससम्भारसङ्खेपससम्भारविभत्तिसलक्खणसङ्खेपसलक्खणविभत्तिआकारतो चाति सब्बेन आकारेन।

४८८. दिब्बन्ति एत्थ पञ्चहि कामगुणेहि समङ्गीभूता हुत्वा विचरन्ति, कीळन्ति, जोतन्ति चाति देवो, देवलोको। तं यन्ति उपगच्छन्ति एतेनाति **देवयानियो। वसं वत्तेन्तो**ति एत्थ **वसवत्तनं** नाम यथिच्छितट्ठानगमनं। चत्तारो महाराजानो एतेसं इस्सराति **चातुमहाराजिका** या देवता मग्गफललाभिनो ता तमत्थं एकदेसेन जानेय्युं बुद्धविसयो पनायं पञ्होति चिन्तेत्वा "न जानामा"ति आहंसु, तेनाह **"बुद्धविसये"**तिआदि। अज्झोत्थरणं नामेत्थ निप्पीळनन्ति आह **"पुनप्पुनं पुच्छती"**ति। **अभिक्कन्ततरा**ति रूपसम्पत्तिया चेव पञ्ञापटिभानादिगुणेहि च अम्हे अभिभुय्य परेसं कामनीयतरा। **पणीततरा**ति उळारतरा, तेनाह **"उत्तमतरा"**ति।

४९१-३. देवयानियसदिसो इद्धिविधञाणस्सेव अधिप्पेतत्ता। **"देवयानियमग्गोति**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा...पे०... सब्बमेतं इद्धिविधञाणस्सेव नाम''न्ति इदं पाळियं अट्ठकथासु च तत्थ तत्थ आगतरुळ्हिवसेन वुत्तं।

४९४. **आगमनपुब्बभागे निमित्त**न्ति ब्रह्मुनो आगमनस्स पुब्बभागे उप्पज्जननिमित्तं। **पातुरहोसी**ति आवि भवि। **पाकटो अहोसी**ति पकासो अहोसि।

४९७. **पदेसेना**ति एकदेसेन, उपादिन्नकवसेन, सत्तसन्तानपरियापन्नेनाति अत्थो। **अनुपादिन्नकेपी**ति अनिन्द्रियबद्धेपि। **निप्पदेसतो** अनवसेसतो। **पुच्छामूळ्हस्सा**ति पुच्छितुं अजानन्तस्स। **पुच्छाय दोसं दस्सेत्वा**ति तेन कतपुच्छाय पुच्छिताकारे दोसं विभावेत्वा। यस्मा विस्सज्जनं नाम पुच्छानुरूपं पुच्छासभागेन विस्सज्जेतब्बतो, न च तथागता विरज्झित्वा कतपुच्छानुरूपं विस्सज्जेन्ति, अत्थसभागताय च विस्सज्जनस्स पुच्छका तदत्थं अनवबुज्झन्ता सम्मुय्हन्ति, तस्मा पुच्छाय सिक्खापनं बुद्धाचिण्णं, तेनाह **''पुच्छं सिक्खापेत्वा''**तिआदि।

४९८. **अप्पतिट्ठा**ति अप्पच्चया, सब्बसो समुच्छिन्नकारणाति अत्थो। **उपादिन्नं येवा**ति इन्द्रियबद्धमेव। यस्मा एकदिसाभिमुखं सन्तानवसेन सण्ठिते रूपप्पबन्धे दीघसमञ्ञा तं उपादाय ततो अप्पके रस्ससमञ्ञा तदुभयञ्च विसेसतो रूपग्गहणमुखेन गय्हति, तस्मा आह **''दीघञ्च रस्सञ्चाति सण्ठानवसेन उपादारूपं वुत्त''**न्ति। अप्पपरिमाणे रूपसङ्घाते अणुसमञ्ञा, तं उपादाय ततो महति थूलसमञ्ञा। इदम्पि द्वयं विसेसतो रूपग्गहणमुखेन गय्हति, तेनाह **''इमिनापी''**तिआदि। **पि**-सद्देन चेत्थ ''सण्ठानवसेन उपादारूपं वुत्त''न्ति एत्थापि वण्णमत्तमेव कथितन्ति इममत्थं समुच्चिनतीति वदन्ति। **सुभ**न्ति सुन्दरं, इट्ठन्ति अत्थो। **असुभ**न्ति असुन्दरं, अनिट्ठन्ति वुत्तं होति। तेनेवाह **''इट्ठानिट्ठारम्मणं पनेवं कथित''**न्ति। दीघं रस्सं, अणुं थूलं, सुभासुभन्ति तीसु ठानेसु उपादारूपस्सेव गहणं, भूतरूपानं विसुं गहितत्ता। **नाम**न्ति वेदनादिक्खन्धचतुक्कं तञ्हि आरम्मणाभिमुखं नमनतो, नामकरणतो च ''नाम''न्ति वुच्चति। हेट्ठा ''दीघं रस्स''न्तिआदिना वुत्तमेव इध रुप्पनट्ठेन ''रूप''न्ति गहितन्ति आह **''दीघादिभेदं रूपञ्चा''**ति। **दीघादी**ति च **आदि**-सद्देन आपादीनञ्च सङ्गहो दट्ठब्बो। यस्मा वा दीघादिसमञ्ञा न रूपायतनवत्थुकाव, अथ खो भूतरूपवत्थुकापि। तथा हि सण्ठानं फुसनमुखेनपि गय्हति, तस्मा दीघरस्सादिग्गहणेन भूतरूपम्पि गय्हतेवाति ''दीघादिभेदं रूप''मिच्चेव वुत्तं। **किं आगम्मा**ति किं अधिगन्त्वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किस्स अधिगमहेतु। "**उपरुज्झती**"ति इदं अनुप्पादनिरोधं सन्धाय वुत्तं, न खणनिरोधन्ति आह "**असेसमेतं नप्पवत्तती**"ति।

४९९. **विञ्ञातब्बन्ति** विसिट्ठेन ञातब्बं, ञाणुत्तमेन अरियमग्गञाणेन पच्चक्खतो जानितब्बन्ति अत्थो, तेनाह "**निब्बानस्सेतं नाम**"न्ति। निदिस्सतीति निदस्सनं, चक्खुविञ्ञेय्यं। न निदस्सनं **अनिदस्सनं,** अचक्खुविञ्ञेय्यन्ति एतमत्थं वदन्ति। निदस्सनं वा उपमा, तं एतस्स नत्थीति **अनिदस्सनं**। न हि निब्बानस्स निच्चस्स एकस्स अच्चन्तसन्तपणीतसभावस्स सदिसं निदस्सनं कुतोचि लब्भतीति। यं अहुत्वा सम्भोति, हुत्वा पटिवेति तं सङ्खतं उदयवयन्तेहि सअन्तं, असङ्खतस्स पन निब्बानस्स निच्चस्स ते उभोपि अन्ता न सन्ति, ततो एव नवभावापगमसङ्खातो जरन्तोपि तस्स नत्थीति आह "**उप्पादन्तो...पे०... अनन्त**"न्ति। "तित्थस्स नाम"न्ति वत्वा तत्थ निब्बचनं दस्सेतुं "**पपन्ति एत्थाति पप**"न्ति वुत्तं। एत्थ हि पपन्ति पानतित्थं। **भ-कारो कतो** निरुत्तिनयेन। विसुद्धट्ठेन वा **सब्बतोपभं,** केनचि अनुपक्किलिट्ठताय समन्ततो पभस्सरन्ति अत्थो। येन निब्बानं अधिगतं, तं सन्ततिपरियापन्नानंयेव इध अनुप्पादनिरोधो अधिप्पेतोति वुत्तं "**उपादिन्नकधम्मजातं निरुज्झति अप्पवत्तं होती**"ति।

तत्थाति "विञ्ञाणस्स निरोधेना"ति यं पदं वुत्तं, तस्मिं। "**विञ्ञाण**"न्ति विञ्ञाणं उद्धरति विभत्तब्बत्ता **एत्थेतं उपरुज्झतीति** एतस्मिं निब्बाने एतं नामरूपं चरिमकविञ्ञाणनिरोधेन अनुप्पादवसेन निरुज्झति अनुपादिसेसाय निब्बानधातुया, तेनाह "**विज्झातदीपसिखा विय अपण्णत्तिकभावं याती**"ति। "चरिमकविञ्ञाण"न्ति हि अरहतो चुतिचित्तं अधिप्पेतं। "**अभिसङ्खारविञ्ञाणस्सापी**"तिआदिनापि सउपादिसेसनिब्बानमुखेन अनुपादिसेसनिब्बानमेव वदति नामरूपस्स अनवसेसतो उपरुज्झनस्स अधिप्पेतत्ता, तेनाह "**अनुप्पादवसेन उपरुज्झती**"ति। **सोतापत्तिमग्गञाणेनाति** कत्तरि, करणे वा करणवचनं। **निरोधेनाति** पन हेतुम्हि। **एत्थाति** एतस्मिं निब्बाने। सेसमेत्थ यं अत्थतो न विभत्तं, तं सुविञ्ञेय्यमेव।

केवट्टसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. लोहिच्चसुत्तवण्णना

लोहिच्चब्राह्मणवत्थुवण्णना

५०१. **सालवतिकाति** इत्थिलिङ्गवसेन **तस्स गामस्स नामं।** गामणिकाभावेनाति केचि। लोहितो नाम तस्स कुले पुब्बपुरिसो, तस्स वसेन **लोहिच्चोति तस्स ब्राह्मणस्स** गोत्ततो आगतं **नामं।**

५०२. "दिट्ठिगत"न्ति लद्धिमत्तं अधिप्पेतन्ति आह **"न पन उच्छेदसस्सतानं अञ्ञतर"**न्ति। न हि उच्छेदसस्सतगाहविनिमुत्तो कोचि दिट्ठिगाहो अत्थि। **"भासति येवा"**ति तस्सा लद्धिया लोके पाकटभावं दस्सेति। अत्ततो अञ्ञो परोति यथा अनुसासकत्तो अनुसासितब्बो परो, एवं अनुसासितब्बतोपि अनुसासको परोति वुत्तं **"परो परस्साति परो यो"**तिआदि। **किं-**सद्दापेक्खाय चेत्थ **"करिस्सती"**ति अनागतकालवचनं, अनागतेपि वा तेन तस्स कातब्बं नत्थीति दस्सनत्थं। **कुसलं धम्म**न्ति अनवज्जधम्मं निक्किलेसधम्मं विमोक्खधम्मन्ति अत्थो। "परेसं धम्मं कथेस्सामी"ति तेहि अत्तानं परिवारापेत्वा विचरणं किं अत्थियं आसयबुद्धस्सापि अनुरोधेन विना तं न होतीति तस्मा **अत्तना पटिलद्धं...पे०... विहातब्बन्ति वदति।** तेनाह "एवं सम्पदमिदं पापकं लोभधम्मं वदामी"ति।

५०४. **सोति** लोहिच्चो ब्राह्मणो।

५०८. **कथाफासुकत्थ**न्ति कथासुखत्थं, सुखेन कथं कथेतुञ्चेव सोतुञ्चाति अत्थो। **अप्पेव नाम सियाति** एत्थ पीतिवसेन आमेडितं दट्ठब्बं। तथा हि तं "बुद्धगज्जित"न्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुच्चति। भगवा हि ईदिसेसु ठानेसु विसेसतो पीतिसोमनस्सजातो होति। तेनाह **"अयं किरेत्थ अधिप्पायो"**तिआदि।

लोहिच्चब्राह्मणानुयोगवण्णना

५०९. समुदयसञ्जातीति आयुप्पादो। अनुपुब्बो कम्पी-सद्दो आकङ्खनत्थो होतीति **"इच्छतीति अत्थो"**ति वुत्तं। सातिसयेन वा हितेन अनुकम्पको अनुग्गण्हनको **हितानुकम्पी। सम्पज्जती**ति आसेवनलाभेन निप्पज्जति बलवती होति, अवग्गहाति अत्थो, तेनाह **"नियता होती"**ति। **निरये निब्बत्तति** मिच्छादिट्ठिको।

५१०-११. दुतियं उपपत्तिन्ति "ननु राजा पसेनदी कोसलो"तिआदिना दुतियं उपपत्तिं साधनयुत्तिं। कारणञ्हि भगवा उपमामुखेन दस्सेति। **ये चिमे**ति ये च इमे कुलपुत्ता दिब्बा गब्भा परिपाचेन्तीति योजना। **असक्कुणन्ता** उपनिस्सयसम्पत्तिया, ञाणपरिपाकस्स वा अभावेन। ये पन "परिपच्चन्ती"ति पठन्ति, तेसं "दिब्बे गब्भे"ति वचनविपल्लासेन पयोजनं नत्थि। अत्थो च दुतियविकप्पे वुत्तनयेन वेदितब्बो। अहितानुकम्पिता च तंसमङ्गिसत्तवसेन। दिवि भवाति **दिब्बा।** गब्भेन्ति परिपच्चनवसेन सन्तानं पबन्धेन्तीति **गब्भा। "छन्नं देवलोकान"**न्ति निदस्सनवचनमेतं। ब्रह्मलोकस्सापि हि दिब्बगब्भभावो लब्भतेव दिब्बविहारहेतुकत्ता। एवञ्च कत्वा "भावनं भावयमाना"ति इदम्पि वचनं समत्थितं होति। भवन्ति एत्थ यथारुचि सुखसमप्पितािति भवा, विमानानि। देवभावावहत्ता **दिब्बा।** वुत्तनयेनेव **गब्भा। दानादयो** देवलोकसंवत्तनियपु**ञ्ञविसेसा। दिब्बा भवा**ति देवलोकपरियापन्ना उपपत्तिभवा। तदावहो हि कम्मभवो पुब्बे गहितो।

तयोचोदनारहवण्णना

५१३. अनियमितेनेवाति अनियमेनेव "त्वं एवंदिट्ठिको एवं सत्तानं अनत्थस्स कारको"ति एवं अनुद्देसिकेनेव। **मान**न्ति "अहमेतं जानामि, अहमेतं पस्सामी"ति एवं पण्डितमानं। **भिन्दित्वा**ति विधमेत्वा, जहापेत्वाति अत्थो। **तयो सत्थारे**ति असम्पादितअत्तहितो अनोवादकरसावको, असम्पादितअत्तहितो ओवादकरसावको, सम्पादितअत्तहितो अनोवादकरसावकोति इमे तयो सत्थारे। चतुत्थो पन सम्मासम्बुद्धो न चोदनारहो होतीति "तेन पुच्छिते एव कथेस्सामी"ति चोदनारहे तयो सत्थारे पठमं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस्सेसि, पच्छा चतुत्थंसत्थारं। कामञ्चेत्थ चतुत्थो सत्था एको अदुतियो अनञ्ञसाधारणो, तथापि सो येसं उत्तरिमनुस्सधम्मानं वसेन "धम्ममयो कायो"ति वुच्चति, तेसं समुदायभूतोपि ते गुणावयवे सत्थुट्ठानिये कत्वा दस्सेन्तो भगवा "अयम्पि खो, लोहिच्च, सत्था"ति अभासि।

अञ्ञाति य-कारलोपेन निद्देसो "सयं अभिञ्ञा"ति आदीसु (दी० नि० १.२८, ३७, ५२; म० नि० १.२८४; २.३४१; अ० नि० १.२.५; ३.१०.११; महाव० ११; ध० प० ३५३; कथाव० ४०५) विय। **अञ्ञायाति** च तदत्थिये सम्पदानवचनन्ति आह **"आजाननत्थाया"**ति। सावकत्तं पटिजानित्वा ठितत्ता एकदेसेनस्स सासनं करोन्तीति आह **"निरन्तरं तस्स सासनं अकत्वा"**ति। **उक्कमित्वा वत्तन्तीति** यथिच्छितं करोन्तीति अत्थो। **पटिक्कमन्तियाति** अनभिरतिया अगारवेन अपगच्छन्तिया, तेनाह **"अनिच्छन्तिया"**तिआदि। **एकायाति** एकाय इत्थिया। **एको इच्छेय्याति** एको पुरिसो ताय अनिच्छन्तिया सम्पयोगं कामेय्य। ओसक्कनादिमुखेन इत्थिपुरिससम्बन्धनिदस्सनं गेहसितअपेक्खावसेन तस्स सत्थुनो सावकेसु पटिपत्तीति दस्सेति। अतिविय विरत्तभावतो **दट्ठुम्पि अनिच्छमानं। लोभेनाति** परिवारवसेन उप्पज्जनकलाभसक्कारलोभेन। **तत्थ सम्पादेहीति** तस्मिं पटिपत्तिधम्मे पतिट्ठितं कत्वा सम्पादेहि। **उजुं करोहि** कायवङ्कादिविगमेन।

५१५. **एवं चोदनं अरहतीति** एवं वुत्तनयेन सावकेसु अप्पोस्सुक्कभावापादने नियोजनवसेन चोदनं अरहति, न पठमो विय "एवरूपो तव लोभधम्मो"तिआदिना, न च दुतियो विय "अत्तानमेव ताव तत्थ सम्पादेही"तिआदिना। कस्मा? सम्पादितअत्तहितताय ततियस्स।

नचोदनारहसत्थुवण्णना

५१६. "न चोदनारहो"ति एत्थ यस्मा चोदनारहता नाम सत्थुविप्पटिपत्तिया वा सावकविप्पटिपत्तिया वा उभयविप्पटिपत्तिया वा, तयिदं सब्बम्पि इमस्मिं सत्थरि नत्थि, तस्मा न चोदनारहोति इममत्थं दस्सेतुं **"अयञ्ही"**तिआदि वुत्तं।

५१७. **मया गहिताय दिट्ठियाति** सब्बसो अनवज्जे सम्मापटिपन्ने परेसं सम्मदेव सम्मापटिपत्तिं देस्सेन्ते सत्थरि अभूतदोसारोपनवसेन मिच्छागहिताय निरयगामिनिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पापदिट्ठिया। **नरकपपात**न्ति नरकसङ्खातं महापपातं। पपतन्ति तत्थाति हि पपातो। **सग्गमग्गथले**ति सग्गगामिमग्गभूते पुञ्ञधम्मथले। सेसं सुविञ्ञेय्यमेव।

लोहिच्चसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. तेविज्जसुत्तवण्णना

५१८. **उत्तरेना**ति एत्थ **एन**-सद्दो दिसावाचीसद्दतो पञ्चमीअन्ततो अदूरत्थो इच्छितो, तस्मा उत्तरेन-सद्देन अदूरत्थजोतनं दस्सेन्तो "**अदूरे उत्तरपस्से**"ति आह। अक्खरचिन्तका पन एन-सद्दयोगे अवधिवाचिनि पदे उपयोगवचनं इच्छन्ति। अत्थो पन सामिवसेनेव इच्छितोति इध सामिवचनवसेनेव वुत्तं।

५१९. **कुलचारित्तादीति आदि**-सद्देन मन्तज्झेनाभिरूपतादिसम्पत्तिं सङ्गण्हाति। **मन्तसज्झायकरणत्थ**न्ति आथब्बणमन्तानं सज्झायकरणत्थं, तेनाह "**अञ्ञेसं बहूनं पवेसनं निवारेत्वा**"ति।

मग्गामग्गकथावण्णना

५२०. "**जङ्घचार**"न्ति चङ्कमतो इतो चितो च चरणमाह। सो हि जङ्घासु किलमथविनोदनत्थो चारोति तथा वुत्तो। तेनाह "अनुचङ्कमन्तानं अनुविचरन्तान"न्ति। **तेना**ति उभोसुपि अनुचङ्कमनानुविचारणानं लब्भनतो। सहाया हि ते अञ्ञमञ्ञ सभागवुत्तिका। "मग्गो"ति इच्छितट्ठानं उजुकं मग्गति उपगच्छति एतेनाति मग्गो, उजुमग्गो। तदञ्ञो अमग्गो, तस्मिं **मग्गे च अमग्गे च**। **पटिपद**न्ति ब्रह्मलोकगामिमग्गस्स पुब्बभागपटिपदं।

निय्यातीति निय्यानीयो, सो एव "**निय्यानिको**"ति वुत्तोति आह "**निय्यायन्तो**"ति। यस्मा निय्यातपुग्गलवसेनस्स निय्यानिकभावो, तस्मा "निय्यायन्तो"ति पुग्गलस्स योनिसो पटिपज्जनवसेन निय्यायन्तो मग्गो "**निय्याती**"ति वुत्तो। **करोती**ति अत्तनो सन्ताने उप्पादेति। उप्पादेन्तोयेव हि तत्थ **पटिपज्जति** नाम। सह ब्येति वत्ततीति सहब्यो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहवत्तनको। तस्स भावो **सहब्यता**ति आह **"सहभावाया"**तिआदि। सहभावोति च सलोकता, समीपता वा वेदितब्बा, तेनाह **"एकट्ठाने पातुभावाया"**ति। **सकमेव आचरियवाद**न्ति अत्तनो आचरियेन पोक्खरसातिना कथितमेव आचरियवादं। **थोमेत्वा पग्गण्हित्वा** "अयमेव उजुमग्गो अयमञ्जसायनो"ति पसंसित्वा उक्कंसित्वा। **भारद्वाजोपि सकमेवा**ति भारद्वाजोपि माणवो अत्तनो आचरियेन तारुक्खेन कथितमेव आचरियवादं थोमेत्वा पग्गण्हित्वा विचरतीति योजना। **तेन वुत्त**न्ति तेन यथा तथा वा अभिनिविट्ठभावेन वुत्तं पाळियं।

५२१-२. अनिय्यानिका वाति अप्पाटिहारियाव अञ्ञमञ्ञस्स वादे दोसं दस्सेत्वा अविपरीतत्थदस्सनत्थं उत्तररहिता एव। अञ्ञमञ्ञस्स वादस्स आदितो विरुद्धग्गहणं **विग्गहो,** स्वेव विवदनवसेन अपरापरं उप्पन्नो **विवादो**ति आह **"पुब्बुप्पत्तिको विग्गहो अपरभागे विवादो"**ति। **दुविधोपि एसो** विग्गहो, विवादोति द्विधा वुत्तोपि विरोधो। **नानाआचरियानं वादतो**ति नानारुचिकानं आचरियानं वादभावतो। **नानावादो** नानाविधो वादोति कत्वा।

५२३. एकस्सापीति तुम्हेसु द्वीसु एकस्सापि। **एकस्मि**न्ति सकवादपरवादेसु एकस्मिम्पि। **संसयो नत्थी**ति "मग्गो नु खो, न मग्गो नु खो"ति संसयो विचिकिच्छा नत्थि। अञ्जसायनभावे पन संसयो। तेनाह "एस किरा"तिआदि। भगवा पन यदि सब्बत्थ मग्गसञ्ञिनो, **एवं सति "किस्मिं वो विग्गहो"ति पुच्छति।**

५२४. "इच्छितट्ठानं उजुकं मग्गति उपगच्छति एतेनाति मग्गो, उजुमग्गो। तदञ्ञो अमग्गो"ति वुत्तो वायमत्थो। **सब्बे ते**ति सब्बेपि ते नानाआचरियेहि वुत्तमग्गा।

ये पाळियं "अद्धरिया ब्राह्मणा"तिआदिना वुत्ता। अद्धरो नाम यञ्ञविसेसो, तदुपयोगिभावतो "अद्धरिया" त्वेव वुच्चन्ति यजूनि, तानि सज्झायन्तीति **अद्धरिया,** यजुब्बेदिनो। ये च तित्तिरिइसिना कते मन्ते सज्झायन्ति, ते **तित्तिरिया,** यजुब्बेदिनो एव। यजुब्बेदसाखा हेसा, यदिदं तित्तिरं। छन्दो वुच्चति विसेसतो सामवेदो, तं सरेन कायन्तीति **छन्दोका,** सामवेदिनो। **"छन्दोगा"**तिपि पठन्ति, सो एवत्थो। बहवो इरयो एत्थाति बव्हारि, इरुब्बेदो। तं अधीयन्तीति **बव्हारिज्झा।**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"बहूनी"ति एत्थायं उपमासंसन्दना – यथा ते नानामग्गा एकंसतो तस्स गामस्स वा निगमस्स वा पवेसाय होन्ति, एवं ब्राह्मणेहि पञ्ञापियमानापि नानामग्गा ब्रह्मलोकूपगमनाय ब्रह्मुना सहब्यताय एकंसेनेव होन्तीति।

५२७-५२९. **व-कारो आगमसन्धिमत्तन्ति** अनत्थको व-कारो, तेन वण्णागमेन पदन्तरसन्धिमत्तं कतन्ति अत्थो। **अन्धपवेणी**ति अन्धपन्ति। **"पण्णासट्ठि अन्धा"**ति इदं तस्सा अन्धपवेणिया महतो गच्छगुम्बस्स अनुपरिगमनयोग्यतादस्सनं। एवञ्हि ते "सुचिरं वेलं मग्गं गच्छामा"ति एवं सञ्ञिनो होन्ति। **नामकंयेवा**ति अत्थाभावतो नाममत्तंयेव, तं पन भासितं तेहि सारसञ्ञितम्पि नाममत्तताय असारभावतो निहीनमेवाति आह **"लामकंयेवा"**ति।

५३०. **यतो**ति भुम्मत्थे निस्सक्कवचनं, सामञ्ञजोतना च विसेसे अवतिट्ठतीति आह **"यस्मिं काले"**ति। **आयाचन्ती**ति पत्थेन्ति। उग्गमनं लोकस्स बहुकारभावतो तथा थोमनाति। अयं किर ब्राह्मणानं लद्धि "ब्राह्मणानं आयाचनाय चन्दिमसूरिया गन्त्वा लोके ओभासं करोन्ती"ति।

५३२. **इध पन किं वत्तब्बन्ति** इमस्मिं पन अप्पच्चक्खभूतस्स ब्रह्मुनो सहब्यताय मग्गदेसने तेविज्जानं किं वत्तब्बं अत्थि, ये पच्चक्खभूतानम्पि चन्दिमसूरियानं सहब्यताय मग्गं देसेतुं न सक्कोन्तीति अधिप्पायो। **"यत्था"**ति "इध पना"ति वुत्तमेवत्थं पच्चामसति।

अचिरवतीनदीउपमाकथावण्णना

५४२. **समभरिता**ति सम्पुण्णा। ततो एव **काकपेय्या। पारा**ति परतीरं। **अपारन्ति** ओरिमतीरं। **एही**ति आगच्छ।

५४४. **पञ्चसील...पे०... वेदितब्बा** यमनियमादिब्राह्मणधम्मानं तदन्तोगधभावतो। **तब्बिपरीता**ति पञ्चसीलादिविपरीता पञ्च वेरादयो। "पुनपी"ति वत्वा **"अपरम्पी"**ति वचनं इतरायपि नदि उपमाय सङ्गण्हनत्थं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४६. **कामयितब्बट्ठेनाति** कामनीयभावेन। **बन्धनट्ठेनाति** तेनेव कामेतब्बभावेन सत्तानं चित्तस्स आबन्धनभावेन। कामञ्चायं **गुण-**सद्दो अत्थन्तरेसुपि दिट्ठप्पयोगो, तेसं पनेत्थ असम्भवतो पारिसेसञायेन बन्धनट्ठेयेव युत्तोति दस्सेतुं **"अनुजानामी"**तिआदिना अत्थुद्धारो आरद्धो, **एसेवाति** बन्धनट्ठो एव। न हि रूपादीनं कामेतब्बभावे वुच्चमाने पटलट्ठो युज्जति तथा कामेतब्बताय अनधिप्पेतत्ता। रासट्ठआनिसंसट्ठेसुपि एसेव नयो तथापि कामेतब्बताय अनधिप्पेतत्ता। पारिसेसतो पन बन्धनट्ठो गहितो। यदग्गेन हि नेसं कामेतब्बता, तदग्गेन बन्धनभावो चाति।

कोट्ठासट्ठोपि तेसु युज्जतेव चक्खुविञ्ञेय्यादिकोट्ठासभावेन नेसं कामेतब्बतो। कोट्ठासे च गुण-सद्दो दिस्सति "दिगुणं वड्ढेतब्ब"न्तिआदीसु, सम्पदाट्ठोपि –

> "असङ्ख्येय्यानि नामानि, सगुणेन महेसिनो।
> गुणेन नाममुद्धेय्यं, अपि नामसहस्सतो"ति।। (ध० स० अट्ठ० १३१३; उदा० अट्ठ० ५३; पटि० म० अट्ठ० ७६)

आदीसु सोपि इध न युज्जतीति अनुद्धटो।

चक्खुविञ्ञेय्याति चक्खुविञ्ञाणेन विजानितब्बा, तेन पन विजाननं दस्सनमेवाति आह **"पस्सितब्बा"**ति। "सोतविञ्ञाणेन सोतब्बा"ति एवमादि **एतेनुपायेनाति** अतिदिसति। गवेसितम्पि "इट्ठ"न्ति वुच्चति, तं इध नाधिप्पेतन्ति आह **"परियिट्ठा वा होन्तु मा वा"**ति। **इट्ठारम्मणभूताति** सुखारम्मणभूता। **कामनीयाति** कामेतब्बा। इट्ठभावेन मनं अप्पायन्तीति **मनापा। पियजातिकाति** पियसभावा।

गेधेनाति लोभेन अभिभूता हुत्वा पञ्चकामगुणे परिभुञ्जन्तीति योजना। **मुच्छाकारन्ति** मोहनाकारं। **अधिओसन्नाति** अधिग्गय्ह अज्झोसाय अवसन्ना, तेनाह **"ओगाळ्हा"**ति। **परिनिट्ठानप्पत्ताति** गिलित्वा परिनिट्ठापनवसेन परिनिट्ठानं उपगता। **आदीनवन्ति** कामपरिभोगे सम्पति, आयतिञ्च दोसं **अपस्सन्ता।** घासच्छादनादिसम्भोगनिमित्तसंकिलेसतो निस्सरन्ति अपगच्छन्ति एतेनाति निस्सरणं, योनिसो पच्चवेक्खित्वा तेसं परिभोगपञ्ञा। तदभावतो **अनिस्सरणपञ्ञाति** इममत्थं दस्सेन्तो **"इदमेत्था"**तिआदिमाह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५४८-९. **आवरन्तीति** कुसलप्पवत्तिं आदितोव निवारेन्ति। **निवारेन्तीति** निरवसेसतो वारयन्ति। **ओनन्धन्तीति** ओगाहन्ता विय छादेन्ति। **परियोनन्धन्तीति** सब्बसो छादेन्ति। **आवरणादीनं वसेनाति** आवरणादिअत्थानं वसेन। ते हि आसेवनबलवताय पुरिमपुरिमेहि पच्छिमपच्छिमा दळ्हतरतमादिभावप्पत्ता वुत्ता।

संसन्दनकथावण्णना

५५०. इत्थिपरिग्गहे सति पुरिसस्स पञ्चकामगुणपरिग्गहो परिपुण्णो एव होतीति वुत्तं **"सपरिग्गहोति इत्थिपरिग्गहेन सपरिग्गहो"**ति। **"इत्थिपरिग्गहेन अपरिग्गहो"**ति च इदं तेविज्जब्राह्मणेसु दिस्समानपरिग्गहानं दुट्ठुल्लतमपरिग्गहाभावदस्सनं। एवंभूतानं तेविज्जानं ब्राह्मणानं का ब्रह्मुना संसन्दना, ब्रह्मा पन सब्बेन सब्बं अपरिग्गहोति। **वेरचित्तेन अवेरो,** कुतो एतस्स वेरप्पयोगोति अधिप्पायो। **चित्तगेलञ्ञसङ्खातेनाति** चित्तुप्पादगेलञ्ञसञ्ञितेन, तेनस्स सब्बरूपकायगेलञ्ञाभावो वुत्तो होति। **ब्यापज्झेनाति** दुक्खेन। **उद्धच्चकुक्कुच्चादीहीति** **आदि**-सद्देन तदेकट्ठा संकिलेसधम्मा सङ्गय्हन्ति। अप्पटिपत्तिहेतुभूताय विचिकिच्छाय सति न कदाचि चित्तं पुरिसस्स वसे वत्तति, पहीनाय पन सिया वसवत्तनन्ति आह **"विचिकिच्छाय अभावतो चित्तं वसे वत्तेती"**ति। **चित्तगतिकाति** चित्तवसिका, तेनाह **चित्तस्स वसे वत्तन्ती"**ति। **न तादिसोति** ब्राह्मणा विय चित्तवसिको न होति, अथ खो वसीभूतज्झानाभिञ्ञताय चित्तं अत्तनो वसे वत्तेतीति **वसवत्ती।**

५५२. **ब्रह्मलोकमग्गेति** ब्रह्मलोकगामिमग्गे पटिपज्जितब्बे, पञ्ञपेतब्बे वा, तं पञ्ञपेन्ताति अधिप्पायो। **उपगन्त्वाति** अमग्गमेव "मग्गो"ति मिच्छापटिपज्जनेन उपगन्त्वा, पटिजानित्वा वा। **पङ्कं ओतिण्णा वियाति** मत्थके एकङ्गुलं वा उपड्ढङ्गुलं वा सुक्खताय "समतल"न्ति सञ्ञाय अनेकपोरिसं महापङ्कं ओतिण्णा विय। **अनुप्पविसन्तीति** अपायमग्गं ब्रह्मलोकमग्गसञ्ञाय ओगाहयन्ति। ततो एव **संसीदित्वा विसादं पापुणन्ति। एवन्ति** "समतल"न्तिआदिना वुत्तनयेन। **संसीदित्वाति** निम्मुज्जित्वा। **सुक्खतरणं मञ्ञे तरन्तीति** सुक्खनदितरणं तरन्ति मञ्ञे। **तस्माति** यस्मा तेविज्जा अमग्गमेव "मग्गो"ति उपगन्त्वा संसीदन्ति, तस्मा। **यथा तेति** यथा ते "समतल"न्ति सञ्ञाय पङ्कं ओतिण्णा। **इधेव चाति** इमस्मिञ्च अत्तभावे। **सुखं वा सातं वा न लभन्तीति** झानसुखं वा विपस्सनासातं वा न लभन्ति, कुतो मग्गसुखं वा निब्बानसातं वाति अधिप्पायो। **मग्गदीपकन्ति** मग्गदीपकाभिमतं। **"इरिण"**न्ति अरञ्ञानिया इदं अधिवचनन्ति आह **"अगामकं**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महारञ्ञ''न्ति। मिगरुरुआदीनम्पि **अनुपभोगरुक्खेहि। परिवत्तितुम्पि न सक्का होन्ति** महाकण्टकताय। ञातीनं ब्यसनं विनासो **ञातिब्यसनं**। एवं **भोगसीलब्यसनानि** वेदितब्बानि। रोगो एव ब्यसति विबाधतीति **रोगब्यसनं**। एवं **दिट्ठिब्यसनम्पि** दट्ठब्बं।

५५४. **जातसंवड्ढो**ति जातो हुत्वा संवड्ढितो। **न सब्बसो पच्चक्खा होन्ति** परिचयाभावतो। **चिरनिक्खन्तो**ति निक्खन्तो हुत्वा चिरकालो। **दन्धायितत्त**न्ति विस्सज्जने मन्दत्तं सणिकवुत्ति, तं पन संसयवसेन चिरायनं नाम होतीति आह ''**कङ्खावसेन चिरायितत्त**''न्ति। **वित्थायितत्त**न्ति सारज्जितत्तं। अट्ठकथायं पन वित्थायितत्तं नाम छम्भितत्तन्ति अधिप्पायेन ''**थद्धभावग्गहण**''न्ति वुत्तं।

५५५. **उ**-इति उपसग्गयोगे **लुम्प**-सद्दो उद्धरणत्थो होतीति ''**उल्लुम्पतू**''ति पदस्स **उद्धरतू**ति अत्थमाह। उपसग्गवसेन हि धातु-सद्दा अत्थविसेसवुत्तिनो होन्ति यथा ''उद्धरतू''ति।

ब्रह्मलोकमग्गदेसनावण्णना

५५६. यस्स अतिसयेन बलं अत्थि, सो ''**बलवा**''ति वुत्तोति आह ''**बलसम्पन्नो**''ति। सङ्खं धमयतीति **सङ्खधमको,** तं धमयित्वा ततो सद्दपवत्तको। **अप्पनाव वट्टति** पटिपक्खतो सम्मदेव चेतसो विमुत्तिभावतो।

पमाणकतं कम्मं नाम कामावचरं पमाणकरानं संकिलेसधम्मानं अविक्खम्भनतो। तथा हि तं ब्रह्मविहारपुब्बभागभूतं पमाणं अतिक्कमित्वा ओदिस्सकअनोदिस्सकदिसाफरणवसेन वड्ढेतुं न सक्का। वुत्तविपरियायतो पन **अप्पमाणकतं कम्मं नाम रूपारूपावचरं,** तेनाह ''**तञ्ही**''तिआदि। तत्थ अरूपावचरे ओदिस्सकानोदिस्सकवसेन फरणं न लब्भति, तथा दिसाफरणं।

केचि पन तं आगमनवसेन लब्भतीति वदन्ति, तदयुत्तं। न हि ब्रह्मविहारनिस्सन्दो आरुप्पं, अथ खो कसिणनिस्सन्दो, तस्मा यं सुविभावितं वसीभावं पापितं आरुप्पं, तं ''**अप्पमाणकत**''न्ति वुत्तन्ति दट्ठब्बं। यं वा सातिसयं ब्रह्मविहारभावनाय अभिसङ्खतेन सन्तानेन निब्बत्तितं, यञ्च ब्रह्मविहारसमापत्तितो वुट्ठाय समापन्नं अरूपावचरज्झानं, तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमिना परियायेन फरणप्पमाणवसेन **अप्पमाणकत**न्ति वत्तुं वट्टतीति अपरे। वीमंसित्वा गहेतब्बं।

रूपावचरारूपावचरकम्मेति रूपावचरकम्मे, अरूपावचरकम्मे च सति। **न ओहीयति न तिट्ठती**ति कतूपचितम्पि कामावचरकम्मं यथाधिगते महग्गतज्झाने अपरिहीने तं अभिभवित्वा पटिबाहित्वा सयं ओहीयकं हुत्वा पटिसन्धिं दातुं समत्थभावे न तिट्ठति। **लग्गितु**न्ति आवरितुं निसेधेतुं। **ठातु**न्ति पटिबलो हुत्वा ठातुं। **फरित्वा**ति पटिप्फरित्वा। **परियादियित्वा**ति तस्स सामत्थियं खेपेत्वा। कम्मस्स परियादियनं नाम तस्स विपाकुप्पादनं निसेधेत्वा अत्तनो विपाकुप्पादनन्ति आह **"तस्स विपाकं पटिबाहित्वा"**तिआदि। **एवं मेत्तादिविहारी**ति एवं वुत्तानं मेत्तादीनं ब्रह्मविहारानं वसेन मेत्तादिविहारी।

५५९. **अग्गञ्ञसुत्ते...पे०... अलत्थु**न्ति अग्गञ्ञसुत्ते आगतनयेन उपसम्पदञ्चेव अरहत्तञ्च अलत्थुं पटिलभिंसु। सेसं सुविञ्ञेय्यमेव।

तेविज्जसुत्तवण्णनाय लीनत्थप्पकासना।

निट्ठिता च तेरससुत्तपटिमण्डितस्स सीलक्खन्धवग्गस्स अत्थवण्णनाय

लीनत्थप्पकासनाति।

सीलक्खन्धवग्गटीका निट्ठिता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दानुक्कमणिका

अ

अकतञ्ञुतं – ४०
अकतविधाना – २०२
अकथिनचित्तता – २९७
अकप्पियत्थरणन्ति – ११०
अकम्पनञाणं – ११९
अकम्पित्थ – १६६
अकम्पियो – ३१७
अकरणसीलोति – २८६
अकल्यतादीनं – २२९
अकामकभावमत्तं – ११६
अकारणन्ति – ४५
अकालवादिता – १०८
अकालुसियो – २४०
अकिच्चकारकसमापत्तितो – ३२६
अकित्तिमो – ६८
अकिरियवादो – १५७
अकुद्धो – १४१
अकुसलकुसलादिधम्मानं – १७८
अकुसलचित्तप्पवत्ति – ५३
अकुसलचित्तुप्पादा – ३३५
अकुसलधम्मो – २५१
अकुसलन्ति – १४४, २४९
अकुसलपक्खो – १८१, १८३
अकोतूहलमङ्गलिको – ७८
अक्कमतीति – ११०
अक्कोसवत्थूनि – १०७
अक्खणभूमियं – १४७
अक्खरचिन्तका – २५३, ३५४
अक्खरप्पभेदा – २५८
अक्खरसन्निवेसादिना – २५
अक्खलितपटिवेधलक्खणा – ६४
अक्खित्तोति – २७८
अक्खिवेज्जकम्मं – ११६
अखण्डितं – २१३
अखण्डं – २१३
अगधितचित्तताय – २११
अगारन्ति – २१३
अगारवं – २८३, ३२१
अग्गञ्ञानि – २९५
अग्गन्ति – २९९, ३२९
अग्गफलसम्पत्तिं – ७६
अग्गमग्गसमुप्पादो – ३३३
अग्गिक्खन्धो – ५७,५८
अग्गिवामअंसकूटतो – ५७
अग्गिसालन्ति – २७१
अग्गिसिखा – १९५
अग्गिहोमं – ११५
अग्गोति – ९१
अग्गं – १९५, २४४, ३२९
अघस्साति – २४३
अङ्कन्ति – २९२
अङ्कुसोति – १८३
अङ्गकिच्चं – २२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गन्ति – ११५, १६५, २८२
अङ्गलट्ठिन्ति – ११५
अङ्गविकारन्ति – ११५
अङ्गुट्ठप्पमाणो – १५२
अचक्खुविञ्ञेय्यन्ति – ३४९
अचलतापच्चुपट्ठानं – ६४
अचलाति – २८९
अचलाधिट्ठानसिद्धितो – ७४
अचेतनोति – २२२, ३३१
अचेतनं – १९६
अचेलकसावकाति – १९९
अच्चन्तछन्दरागप्पवत्तितो – १०९
अच्चन्तप्पहानतो – ६
अच्चन्तसुखुमालकरजकायं – १४१
अच्चन्तसुखुमं – ३२९
अच्चयोति – २५१
अच्छथाति – ११२
अच्छन्नन्ति – २२७
अच्छरियन्ति – ४८
अजातसत्तु – १८८
अजितं – २५९
अजिनचम्मेहीति – ११३
अज्झगा – २३
अज्झत्तवादिनो – १५१
अज्झत्तिकपथवीधातूति – २००
अज्झत्तिकभावप्पत्तिया – २००
अज्झावसताति – २१३
अज्झासयन्ति – १५८
अज्झासयोति – १९०
अञ्ञतित्थियानं – ४८
अञ्ञातन्ति – ९८
अट्ठो – २२७, ३४५
अट्ठकप्पेति – १३७, २९६
अट्ठङ्गसमन्नागतन्ति – २१८
अट्ठङ्गिकोति – ३०१
अट्ठधम्मसमोधानसम्पादितो – ६४
अट्ठपरिसापथविं – ३१७
अट्ठसमापत्तिलाभिनो – १५१
अट्ठानेति – २२३
अट्ठुप्पत्तिको – ५२
अट्ठतेळसहीति – १८५
अट्ठयोगोति – २२६
अणुसमञ्ञा – ३४८
अणुसहगतेति – ९३
अतक्कावचरा – ११९
अतिक्कमित्वाति – १४०
अतिदेवो – १९१
अतिपातो – ९९
अतिवेलं – १४०
अतिहरणं – २१९
अतिहरतीति – २२२
अतीरितन्ति – ९८
अतुरितोति – २६१
अतुलितन्ति – ९८
अतुल्ययोगेपि – २०९
अत्थकवि – ११६
अत्थकिरियासिद्धि – १०१
अत्थचरिया – ८७, ८८, ९०, २५९
अत्थजालं – १६५
अत्थब्यञ्जनसम्पन्नस्साति – ३८
अत्थवादीति – १०८
अत्थवेदं – १३
अत्थसम्पन्नोति – २०६
अत्थसिद्धीति – २६१
अत्थाभिसमयाति – ४१
अत्थिकवादो – २०१
अत्थुद्धारोति – ४४, १८६, १८७
अत्थुप्पत्ति – ५२
अत्तकामाति – २१७
अत्तकिलमथानुयोगो – ३०९
अत्तज्झासयो – ५२
अत्तत्थपरत्थादिभेदेति – २४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्तदिट्ठिं – ३३०
अत्तपटिलाभोति – ३३५, ३३६, ३३७, ३३८
अत्तपरिच्चजनन्ति – २४७
अत्तभावपटिलाभोति – ३३५
अत्तमनाति – १६५
अत्तवादी – ३३०
अत्तसुञ्ञताय – १५८
अत्ताति – ३५, ६७, १२६, १३१, १४२, १४३, १५०, १५१, १५२, १५५, १५६, १८२, १८३, ३३०, ३३१
अत्तानुदिट्ठिं – ९३
अदस्सनन्ति – १५३
अदहन्तोति – ४०
अदिट्ठजोतना – ९८, ३४२
अदिट्ठं – ९८
अदिन्नादानं – १०१
अदुक्खमसुखभूमि – १९८
अदोसकुसलमूलजनितकम्मानुभावेनाति – २६०
अद्दुब्भोति – २०६
अद्धगतोति – १८९
अद्धनियन्ति – २०
अद्धिकाति – २८८
अद्धुवसभावो – २३५
अद्धोट्ठतायाति – २९८
अधम्मकारीति – २८६
अधम्मिकं – २५०
अधिकरूपोति – २७९
अधिगण्हन्तीति – २४८
अधिचित्तसुखं – २१५
अधिचित्तानुयोगो – २१५
अधिच्चसमुप्पन्नन्ति – १४६
अधिच्चसमुप्पन्निकवादो – १२९
अधिट्ठानकिच्चं – ३२७
अधिट्ठानपारमिता – ६३
अधिट्ठानपारमी – ८३
अधिट्ठानलक्खणं – ६४
अधिपञ्ञाधम्मविपस्सना – ९३
अधिपञ्ञासिक्खा – ३२४
अधिवचनपदानीति – १२५
अधिवासनभूमि – ७२
अधिसीलन्ति – ३१६
अधोविरेचनन्ति – ११६
अनग्गिपक्किका – २७१
अनञ्ञथानि – ९५
अनत्थकरोति – २३०
अनत्थसञ्हितांति – २७५
अनत्तकतानीति – १५८
अनधिकं – ९६
अननुलोमत्ताति – १०९
अनन्तन्ति – ३४९
अनन्तोति – १४२, १४३
अनभिरति – १३९
अनभिरतीति – १३९
अनमतग्गसंसारवट्टं – १७५
अनरियो – ३०९
अनलसो – २०४
अनवज्जधम्मं – ३५०
अनवज्जन्ति – ३००
अनवज्जरसं – ६३
अनवज्जानि – ८०
अनवट्ठितचित्ता – ३३१
अनवरोधोति – ५२
अनवसेसनिरोधं – ३४७
अनवसेसपटिवेधो – १२०
अनागामिनो – २४९
अनागामिफले – ३२८
अनाथपिण्डिको – ३०५
अनाराधितचित्तो – १९५
अनावत्तिधम्मो – ७३
अनावरणञाणन्ति – ९१
अनावरणञाणलाभी – ७८
अनाविलोति – २४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनासत्तिपच्चुपट्ठानं – ६३
अनासवोति – ३९
अनिच्चधम्मोति – २३५
अनिच्चन्ति – ९२, ३१२
अनिच्चसञ्ञा – ७७
अनिच्चानुपस्सना – ९२
अनिच्चोति – २०३
अनित्थिगन्धाति – २७३
अनिब्बिसं – २३
अनियमितविक्खेपोति – १४४
अनियमेत्वाति – २६३
अनिय्यानिकत्ता – ११४, ३००
अनिय्यानिकन्ति – ३३५
अनुकम्पकोति – १०३
अनुकुलयञ्ञानीति – २९२
अनुजानामि – ११०
अनुञ्ञातति – ११०, २७१
अनुत्तरभावो – ११
अनुत्तरोति – ११
अनुधम्मं – ३०८
अनुपक्कुट्ठोति – २७८
अनुपघातकोति – २०६
अनुपदधम्मतोति – ३२६
अनुपदधम्मविपस्सनञ्हि – ३२६
अनुपरिगमनयोग्यतादस्सनं – ३५६
अनुपवज्जं – ९६
अनुपस्सना – ९२, ९३
अनुपादानोति – १३४
अनुपादापरिनिब्बानं – १७०
अनुपादाविमुत्ति – १७५, १७७
अनुपादाविमुत्तोति – १३४, १७८, १८०
अनुपादिसेसनिब्बानधातुप्पत्तिया – ६
अनुपादिसेसा – २०
अनुपालेतीति – २२२
अनुप्पत्तिधम्मतं – ५
अनुप्पदाताति – १०६
अनुप्पदेतूति – २८७
अनुप्पादनिरोधो – २४८, ३२४, ३४९
अनुप्पादो – ९५, ३२३, ३२८
अनुबोधपटिवेधसिद्धि – १६७
अनुबोधपटिवेधो – १७०
अनुमतिपुच्छा – ९८
अनुमतियाति – २८८
अनुमतिं – ३३०
अनुमानञाणं – १३१
अनुयुत्तोति – ३१४
अनुयोगो – ५७, १२६
अनुलोमिको – २९
अनुवादो – ३०८
अनुविचरितन्ति – १२९
अनुसङ्गीता – १५
अनुसन्धानं – १५८
अनुसयसमुग्घाटनतोति – २४३
अनुसया – २६
अनुसासनपटिपाटियोति – १८९
अनुसासनीपाटिहारियं – ३४६
अनुस्सरन्तो – २०
अनुस्सरीयन्ति – १९१
अनुहीरमानेति – ९१
अनेककुलजेट्ठकभावं – २०५
अनेकजातिसंसारन्ति – २३
अनेकन्तवादो – १३५
अनेकभेदभिन्नाति – ४९
अन्तरतोति – ४४, ५४
अन्तरधायतीति – १४८
अन्तरधायन्ति – २५८
अन्तराति – ४४, ५०
अन्तरायोति – ५४, ५५, १७२
अन्तरा-सद्दो – ४४, ५०
अन्तरिकायाति – ४४
अन्तानन्तवादाति – १४२
अन्तानन्तसहचरितवादो – १४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तानन्तिकभावो – १४३
अन्तानन्तिकवादे – १५१, १५२
अन्तानन्तिकाति – १४१
अन्तिमवयन्ति – २८०
अन्तोजातो – २०४
अन्तोजालीकता – १६४
अन्तोनिज्झायनलक्खणोति – १५५
अन्धकारतमभवनन्ति – ५४
अन्धतमन्ति – ५४
अन्धपुथुज्जनस्स – २१८
अपकारधम्मा – ३०३
अपचितिकम्मन्ति – २६४
अपनेत्वानाति – १५
अपयिरुपासना – ७९
अपरज्झतीति – ७२
अपरण्णं – २८६
अपरप्पच्चयो – २७६
अपराधोति – २५१
अपरापरन्ति – १२८, ३२९
अपरामसतो – १८०
अपरामासतोति – १३३
अपरामासन्ति – ३३९
अपरिग्गहोति – ३५८
अपरिच्चागो – ६७
अपरिञ्ञामूलिका – २४०
अपरिपक्कतोति – २२३
अपरिपुण्णो – २७२
अपरिमाणो – ८२, २५२, २८०
अपरियन्तविक्खेपताय – १४४
अपरियापन्नता – १६८
अपरियोगाहनन्ति – २३०
अपरियोदातन्ति – २४९
अपरिसुद्धोति – २६९
अपरिसेसनिरोधसङ्खातं – ३४६
अपलिखति – ३१३
अपस्सन्तानन्ति – १५९
अपाकटभावं – ९८
अपापपुरेक्खारोति – २८०
अपापेति – २८०
अपायगामिमग्गो – २४३
अपायभूमिन्ति – २४८
अपारन्ति – ३५६
अपुथुज्जनगोचरा – १५४
अप्पकिच्चोति – २९२
अप्पच्चयोति – ५३, १६९, १७८
अप्पटिघो – २२६
अप्पटिवत्तियनादन्ति – ३१२
अप्पटिहतञाणं – ८, ११९
अप्पट्ठतरोति – २९२
अप्पतिट्ठाति – ३४८
अप्पनालक्खणो – २३२
अप्पनिग्घोसन्ति – २२६
अप्पपुञ्ञतायाति – ३०९
अप्पमत्तकन्ति – ३११
अप्पमाणसञ्ञीति – १५२
अप्पमादाधिट्ठानतो – ६८
अप्पमादो – ६६, १२७, ३१९
अप्पवत्तीति – २३९, ३३३
अप्पसद्दन्ति – ३२१
अप्पसम्भारतरोति – २९२
अप्पहीनोति – २९९
अप्पाटिहीरकं – ३३५
अप्पायुकेति – १३८
अप्पेतीति – ४०
अफलोति – २४९
अबन्धनन्ति – १०७
अब्भन्तरन्ति – २९०
अब्भुदयनिस्सितो – २८४
अब्भेय्यं – ११५
अब्भोकासो – ७०
अब्भोक्किरणं – ११३
अब्यञ्जनाति – २११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्यापज्झन्ति – २९५
अब्यापादेनाति – ९२
अब्यावटमनोति – ४९
अभयगिरिवासिनो – १४०, २१५
अभयदानं – ७७
अभयाति – २८७
अभिक्कन्ततरोति – २४१
अभिक्कन्तेनाति – २५, २१८, २४१
अभिक्कमो – २१५
अभिज्झा – २२८
अभिञ्ञाति – २०९, ३०१, ३५२
अभिञ्ञालाभिनो – २३६
अभिधम्मदेसना – २
अभिधम्मपिटकेति – २२
अभिधम्मसद्दे – २६
अभिनन्दतीति – १६५
अभिनिवेसं – १३१, १४१, १५१
अभिनीहरतीति – २३५
अभिनीहारं – ६७
अभिब्यत्तिवादो – १२७
अभिभूतत्ताति – ३३१
अभिभूति – १४०
अभिराधयतीति – ५३
अभिरूपेति – २४२
अभिलक्खिताति – २५
अभिवदन्तीति – १२६
अभिविनयेति – २५
अभिविसिट्ठञाणन्ति – ११९
अभिसङ्खरणलक्खणन्ति – ९४
अभिसङ्खरणलक्खणा – ९४
अभिसङ्खरित्वाति – ३१७
अभिसङ्खरोतीति – ३२७
अभिसञ्ञानिरोधो – ३२५
अभिसमयट्ठोति – ४१
अभिसम्परायो – १३२
अभिसम्बुद्धभावं – ४८
अभिसम्बुद्धोति – १०, ४८
अभिहरन्तोति – २१५
अभिहरित्वाति – २०५
अभीतनादोति – ३१८
अभेज्जकायो – ७८
अभेदोति – ३०६
अमक्खेत्वाति – २११
अमग्गोति – ३५५
अमतभावेन – १०
अमतं – २३६, २९६
अमराविक्खेपिकवादा – १५३
अमराविक्खेपिका – १४३
अमरं – १२६
अमलीनन्ति – २१३
अमानवत्थुभावपवेदनतो – २६४
अमोहसिद्धि – १८१
अम्बट्ठकुलं – २६१
अम्बट्ठोति – २६९
अम्बरुक्खो – २८५
अम्बलट्ठिकाति – ४७, २८५
अयोनिसोमनसिकारो – १२३, १२९, १७५, १८०
अरञ्ञन्ति – २२७
अरणीति – २७१
अरहतन्ति – २५७
अरहता – ४८, ४९
अरहतीति – २६, १९५, २६०, २७९, २९८, ३३६, ३५२
अरहत्तफलन्ति – ३३०
अरहत्तमग्गं – २३
अरहन्ति – ११, २०८, २६०
अरहाति – २४८
अरियतुण्हिभावसमयो – ४२
अरियधम्मरतनस्स – ११
अरियन्ति – २८०
अरियपुग्गला – ११, २४५
अरियफलधम्मे – ३००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरियभूमिं – ११
अरियमग्गत्तयपञ्ञाति – २१४
अरियमग्गविरति – ३१२
अरियमग्गोति – २७५
अरियविहारा – १८५
अरियसङ्खन्ति – ११, १२
अरियसङ्खं – ११, १२
अरियसच्चधम्मो – २७६
अरियसच्चानि – ९५, २४८
अरीनन्ति – ४८, १९१
अरूपकलापो – २३२
अरूपज्झानन्ति – ३४३
अरूपज्झानलाभीति – २३४
अरूपसमापत्तिनिमित्तं – १५१
अरूपसमापत्तियो – १६, १४७
अरूपावचरज्झानं – ३५९
अरूपावचरलोको – २०९
अरूपीति – १५१, ३३०
अरोगताति – २६२
अरोगोति – १५०, १५१
अलग्गचित्तो – ७७, ७८
अलग्गनट्ठेनाति – २१२
अलङ्कारविधिं – १९४
अलङ्कारो – ५६, ७२
अलब्भनेय्यपतिट्ठाति – ११८
अलोभसिद्धि – १८१
अलोभादोसयुगळसिद्धि – ८३
अवण्णन्ति – १६९, १७९
अवधारणवचनन्ति – १२०
अविक्खेपेनाति – ९२
अविगततण्हं – १४८
अविज्जन्धकारं – ३०३
अविज्जमानपञ्ञत्तिभावोति – ३७
अविज्जमानपञ्ञत्तीति – ३७
अविज्जागतोति – १५८
अविज्जातण्हाकम्मानि – १८०
अविज्जासमुदयोति – १२३
अविज्जासिद्धि – १६७
अवितथानि – ९५
अविद्धाति – १५८
अविपरीतसभावोति – २८
अविपरीताभिलापोति – २७
अविभावितन्ति – ९८
अविभूतन्ति – ९८
अविलोमेन्तोति – १५
अविसिट्ठकारन्ति – १६०
अविसिट्ठं – २६
अविसंवादनलक्खणं – ६४
अवीतरागो – २१७
अवेरन्ति – २९५
असकमनो – २६३
असङ्खतधम्मारम्मणं – २७६
असङ्खतधातु – १३३
असङ्गीतन्ति – २४
असञ्ञसमापत्तिं – १४७
असञ्ञिकभावन्ति – ३२३
असञ्ञीति – १५२
असञ्ञीवादे – १५२
असति – ६६, ७२, ७३, ८५, १२३, १५८, १६०, १७३, १७६, २०१, २५२, ३३०
असद्धम्मस्सवनं – १८०
असद्धम्मो – ४०
असन्निपातोति – २७८
असन्निहितेति – ३०५
असभावधम्मारम्मणन्ति – २९
असमाहितचित्तता – ७९
असम्पजञ्ञकिरिया – १९३
असम्फुट्ठताति – ९४
असम्फुट्ठलक्खणं – ९४
असम्मिस्सन्ति – २१४
असम्मुखाति – १०७
असम्मोसधम्मा – ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असम्मोहपटिवेधोति – २३९
असम्मोहसम्पजञ्ञन्ति – २२१
असम्मोहेनाति – ३८
असस्सतभावावबोधो – १३६
असाधारणकिच्चन्ति – २९६
असामपाकाति – २७१
असुकदिवसेति – ११५
असुकनक्खत्तेनाति – ११५
असुभन्ति – ३४८
असुभभावनानुयोगो – २३०
असुरिन्दो – २८०
असेक्खफलाधिगमो – ३३३
असेक्खा – ११, १२, २७, ३१९
असेट्ठचरियन्ति – १०४
असंवरो – २७, ३१०
अस्समुट्ठिका – २७२
अस्सद्धियेति – ९४
अस्सद्धो – २५०, २८९
अस्सादानुपस्सना – १८०
अस्सुतवा – १३१
अहतेति – ११५
अहीनिन्द्रियो – ३३१
अहेतुकदिट्ठिको – २०१
अहेतुकवादो – १५७
अहंकारममंकाराभावो – ६५
अहं-सद्दो – २०४

आ

आकारन्ति – ३३३
आकारपञ्ञत्तीति – ३६
आकारोति – ३९
आकासोति – ९३
आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञा – ३२७
आकिञ्चञ्ञायतनसमापत्ति – ३२७
आकिञ्चञ्ञायतनं – ३२९
आकुलभावोति – २९७
आगमवरो – १४
आगमाधिगमसम्पत्तिया – २१
आघातोति – ५३, १६९, १७८
आचयगामिनोति – ११२
आचरियपरम्परा – १५
आचरियवादन्ति – ३५५
आचरियाति – २६२
आचारगोचरसम्पन्नोति – २१३
आचारन्ति – १०४
आचारसम्पत्तिन्ति – १९३
आचारसीलमत्तकन्ति – १०३
आचारसीलमेव – १०९
आचिण्णन्ति – ५८, ३३८, ३४६
आजीवकपटिपत्तिं – १९९
आजीवका – १५०
आजीवपारिसुद्धिसीलन्ति – १८२
आजीवोति – २४९
आणाचक्कं – २२
आणारहो – २६
आतङ्कोति – ३४१
आतापनं – १२६
आदानन्ति – ९३
आदिच्चपारिचरियाति – ११६
आदितोति – ३२६
आदिमज्झपरियोसानन्ति – २४१
आदीनवदस्सनपुब्बङ्गमो – ६३
आदीनवदस्सनं – १६६
आदीनवन्ति – ३४५, ३५७
आदीनवोति – २७५
आदीनवं – ५४, ७०, ७९, २७७
आदेसनापाटिहारियं – ३४६
आनन्तरियपरिमुत्ति – २५२
आनन्दमयो – १३७, ३३१
आनन्दोति – ३२२
आनापानचतुत्थज्झानन्ति – ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनिसंसफलं – २००
आनिसंसोति – ८९
आनुभावसम्पत्तिया – २८८
आनुभावेनाति – १३
आनुभावोति – २८७
आनुयन्ता – २८७
आपायिको – २७२
आपोधातूति – २१९
आबाधोति – ३४१
आभताति – १५
आभस्सरसंवत्तनिका – १३७
आभुजतीति – २२२
आभुजित्वाति – २२८
आभोगोति – १५६
आमिसन्ति – ११२
आमिसपूजाति – २१७
आमिसं – ११२
आमुत्तमालाभरणा – ३३
आयतनं – ९४, १६१
आयस्मन्तोति – १११
आयाचनेति – २०६
आयाचन्तीति – ३५६
आयुप्पमाणेनेवाति – १३८
आयुप्पादो – ३५१
आयूहन्ति – १२३
आयोगो – ७१, ३३२
आरकत्ताति – १९१
आरक्खदुक्खमूलं – १६२
आरद्धविपस्सको – १६४
आरम्भसुद्धि – १७९
आरम्मणन्ति – १०२
आरामो – १०६, ३०५, ३२०
आलयरता – ९३
आलयाभिनिवेसोति – ९३
आलयो – ९३
आलोकसञ्ञीति – २२९
आलोकितन्ति – २२०
आवज्जनकिरिया – २२४
आवरणगुत्ति – २०५
आवरणन्ति – १२७
आवरन्तीति – ३५८
आवाहनं – ११६
आवुसोति – २५६
आसत्तखग्गानीति – १९२
आसनन्ति – ३१४
आसनसाला – ३२७
आसप्पनं – २३०
आसयो – २२३
आसवक्खयञाणे – ११९
आसवक्खयञाणं – १३३, १७४, २४१
आसेवनं – १०७
आहनतीति – ५३
आहारोति – १६४
अंसुकोटिवेधको – १४४

इ

इच्छानङ्गलं – २५५
इच्छितलाभी – ७८
इणपलिबोधतो – २२९
इत्थभावन्ति – १३९
इदप्पच्चयाति – ३३०
इद्धिआदेसनानुसासनियो – ३४
इद्धिपाटिहारियन्ति – ३४६
इद्धिमयो – १००, १०३
इद्धिविधकिच्चं – ३४५
इद्धिविधञाणं – २३७
इद्धीति – २१२
इधत्थोति – १६५
इन्दखीला – २२७
इन्दजालसदिसं – ३४५
इन्दजालेनाति – ११३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्रियगोचरोति – १५३
इन्द्रियसंवरो – ३१२
इब्भाति – २६३
इरिणन्ति – ३५८
इरियापथचक्कानं – २५९
इरियापथो – १८५,२२८
इसीति – २६९
इस्सरपजापतिपुरिसकालवादा – १५८
इस्सरवादा – १३५
इस्सरोति – २७८

ई

ईदिसमत्थं – १९५
ईसतीति – १४०
ईसनसीलो – २७८

उ

उक्कट्ठन्ति – २५५
उक्कट्ठपञ्ञा – १३०
उक्कट्ठाति – २५५
उक्कण्ठिता – १३९
उक्कानं – ११५
उक्कारभूमिं – २४८
उक्कुटिकवतानुयोगोति – ३१४
उक्कंसनन्ति – २८०
उग्गच्छनकउदकोति – २३३
उग्गहनिमित्तं – २१६
उग्गहो – ५८, २३०
उग्गिलेत्वाति – २६४
उग्घाटेय्याति – २४३
उच्चाति – ११०
उच्छादनधम्मोति – २३५
उच्छिन्नभवनेत्तिको – १७०, १७५
उच्छेददिट्ठियाति – १५६
उच्छेदवादो – १५४, ३०६
उच्छेदोति – १५३
उजुगतचित्तो – १३
उजुमग्गो – ३५४, ३५५
उञ्छाचरिया – २७१
उण्हन्ति – २९३
उण्हपकतिको – २२२
उतुपुण्णता – १८७
उतुसमुट्ठाना – १३७
उत्तमधम्मानं – १०
उत्तमब्राह्मणोति – २७८
उत्तमोति – २७९
उत्तरिमनुस्सधम्मानं – २१०,३५२
उत्तरिंकरणीयन्ति – ३४३
उत्तानमुखोति – २८१
उत्रासन्ति – २३०
उदग्गचित्तता – २९७
उदपादिन्ति – १३६
उदयन्ति – १२३
उदयब्बयपरिच्छिन्नो – २२१
उदयवयदस्सनतो – ३३१
उदानन्ति – १८८
उदासीनपुग्गलो – ६७
उदीरयीति – २०७
उद्धच्चकुक्कुच्चप्पहानेन – २९७
उद्धच्चदोसो – ६२
उद्धमाघातनाति – १५०
उद्धमाघातनिकाति – १५०
उद्धरणं – ११३, २१९
उद्धारोति – ११६
उद्धंविरेचनन्ति – ११६
उपकरणङ्गजीविततण्हं – ८३
उपकारधम्मा – ३०३
उपकारोति – ७२
उपक्कमो – १००
उपक्खटोति – २८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपचारसमाधिसमधिगमेन – २३२
उपट्ठानन्ति – २४४
उपट्ठासीति – ९६
उपड्ढकम्मन्ति – १९८
उपत्थम्भनरसं – ६४
उपद्दवेथाति – २३०
उपधारणन्ति – ३५
उपनिस्सयकोटियाति – १६२
उपनिस्सयपच्चयोति – २२१
उपनिस्सयसम्पन्नो – २१८
उपनिस्सयोति – १६२
उपपरिक्खन्तीति – २८
उपपारमी – ८२, ८३
उपयोगवचनन्ति – १९०, २१३, २८२
उपरिब्रह्मलोकेसूति – १३७
उपरिविसेसदस्सनत्थन्ति – २३२
उपरुज्झतीति – ३४९
उपलद्धधम्मो – १५५
उपलद्धन्ति – ३७, ३८
उपसमन्ति – १९३
उपसमाधिट्ठानपरिपूरणं – ८६
उपसमाधिट्ठानं – ८४, ८५, ८६
उपसम्पदाति – २७१
उपहतो – २३३, २५२
उपादानन्ति – १४४, १६२, १७३
उपादापञ्ञत्तीति – १२५
उपायकोसल्लं – ६४
उपायासो – १५५, १७७
उपारम्भो – ३०५
उपासकमलं – २५०
उपासकरतनं – २५१
उपासकोति – २४९
उपासनतोति – २५०
उपेक्खकोति – ६३
उपेक्खाति – ७६
उपेक्खानिमित्तं – ६२
उपेक्खापारमिता – ६३
उपेक्खापारमियोति – ८३
उपेक्खापारमी – ७४, ८३
उपेक्खावेदनाय – १३४
उपोसथङ्गानि – १८७
उपोसथोति – १८७, २६६
उप्पज्जनकरागो – ३२५
उप्पण्डेतीति – ३०८
उप्पलानीति – २३३
उप्पादट्ठिति – १२३
उप्पादनिरोधं – ३२४, ३३१, ३३२
उप्पादो – १२३, २००, २३७, ३२३, ३२४
उब्बिलावितत्तं – ५५, १५६
उब्भिदोदको – २३३
उब्भिन्नउदकोति – २३३
उभयन्ति – १८९, २०१, २२९
उभयसिद्धि – १८१
उमङ्गसदिसन्ति – २२७
उरुञ्ञायन्ति – ३०८
उस्सन्नत्ताति – २१२
उस्सन्नधातुकन्ति – २२
उस्साहलक्खणं – ६४
उस्साहितोति – ३२१

ऊ

ऊरुबद्धासनन्ति – २२८

ए

एककोट्ठासाति – ३३४
एकच्चअसस्सतिकाति – १३५
एकच्चसस्सतवादाति – १३४
एकच्चसस्सतिकाति – १३५
एकत्तसञ्ञीति – १५१
एकदिवसलङ्घकोति – ३१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकनिकायम्पीति – २९
एकन्तसुखीति – १५२
एकन्तसूराति – १९४
एकभत्तिकोति – १०९
एकरसो – ९४
एकसालको – ३२०
एकागारिको – १९६, ३१४
एकालोपिको – ३१४
एकाहवारो – ३१४
एकाहिकं – ३१४
एकीभावन्ति – २६१
एकंसायाति – ३००
एतदग्गन्ति – २२
एवंगतिकाति – १३२
एवंसद्दो – ३२

ओ

ओकासन्ति – २०७
ओक्काको – २६७
ओघन्ति – ३१३
ओड्डमुखो – ११९
ओदातवचनं – २३४
ओनन्धन्तीति – ३५८
ओपपातिकोति – ३०१
ओपानभूतो – २८८
ओभासनिमित्तकम्मन्ति – १८८
ओभासयं – २४२
ओरमत्तकन्ति – ५६
ओरसा – ११
ओरसानन्ति – ११
ओसधेहि – ११४
ओळारिकाति – ९३
ओळारिको – ३२९, ३३०, ३३१, ३३८

क

कक्खळत्तं – ९३
कङ्खतीति – २७४
कट्ठन्ति – ५०
कण्णजप्पनन्ति – ११६
कण्हइसितो – २६५
कथङ्कथी – २२९
कथाति – ३२२
कथाधम्मोति – ४८
कथावत्थुपकरणं – ५६
कथाविनिमुत्तो – ३१
कथेतुकम्यताति – ९९
कथेतुकम्यतापुच्छाय – १६५
कन्तारोति – २२९
कन्दरो – ५८
कप्पनाजालस्स – १६९
कप्पन्ति – २९६
कबळन्तरायोति – ३१३
कबळीकारो – १६४
कम्मकरणसीलो – २०४
कम्मकिलेसा – १६८
कम्मजतेजोति – २१७
कम्मजतेजोधातु – २७८
कम्मजरूपं – २३२
कम्मट्ठानन्ति – १३३, २१६
कम्मट्ठानभावेति – ११४
कम्मट्ठानानि – १६
कम्मन्ति – १९८, २५१
कम्मपच्चयउतुसमुट्ठानाति – १३७
कम्मपच्चया – १३७
कम्मस्सकतञ्ञाणं – १३९
कम्मस्सका – १७२
कम्मायतनन्ति – १६१
करजकायन्ति – २३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करणन्ति – ५३, २७९
करणवचनन्ति – १९२, २७८, ३३३
करणसीलो – २१५, २८६
करणीयन्ति – १५, ३८, १७२
करणीयेन – २९८
करमरानीतो – २०४
करुणाविहारेन – ४३
करुणासीतलहदयन्ति – ३, ६, ७
कल्याणधम्मोति – ६८
कल्याणमित्तोति – ६६
कसतीति – २०५
कसिणज्झानानि – ३०६, ३२९
कसिणेनाति – ५५, ३२९
कामनीयाति – ३५७
कामयितब्बट्ठेनाति – ३५७
कामरागो – २४४
कामवितक्कं – १८२
कामसञ्ञाति – ३२५
कामसुखल्लिकानुयोगो – १२५
कामस्सादो – ३२१
कामावचरकम्मं – ३६०
कामावचरदेवानं – १४०
कामूपसञ्हितानीति – २९९
कायगन्थनीवरणलक्खणेन – १७१
कायचित्तानि – २२६
कायचित्तं – ५५
कायपरिहारिका – २२५
कायबलं – २२५
कायसक्खिन्ति – २२०
कायिकाति – १०१
कायोति – १६४, १७०, १७५, २३२, ३५२
कारणन्ति – ३, ४५, ५४, ६६, १२८, १९१, २९०, २९१, ३०८, ३११, ३४७
कारानन्ति – २४५
कालन्ति – १४८
कालयुत्तन्ति – ४९
कालवादीति – १०८
कालुसियभावोति – २७४
काळकं – २२६
किच्चसिद्धि – ३००
किच्छजीवितकरोति – ३४१
किच्छतीति – २७४
कित्तिघोसोति – ३२२
कित्तिसद्दोति – १९०
किरियधम्मं – ६२,२७५
किरियाकप्पो – २५८
किलन्ता।ति – ३०५
किलासुभावो – ४९
किलेसधुननकधम्मा – १६
किलेसवूपसमो – ९५
कुट्ठरोगो – २६७
कुण्डकन्ति – ३१४
कुदण्डकबन्धनन्ति – २८७
कुपितचित्तन्ति – १०७
कुमुदवतिया – १८७
कुम्भदासीकथा – ११४
कुम्भग्गो – २४३
कुसलकिरियं – २५१
कुसलन्ति – १४४
कुसलमूलानि – १८१
कुसलायतनं – ७४
कुसलोति – ३३३
कूटट्ठोति – १२७
कूटो – २४१, ३०३
कूटं – २३, ९५
केवट्टोति – ३४४
केवलपरिपुण्णं – २४
केळनाति – २८०
केळिहस्ससुखं – १४०
कोटिन्ति – ९०
कोटियन्ति – २५१
कोट्ठागारन्ति – २८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोधोति – ५४
कोमारभच्चो – १८५
कोलम्बो – ५८
कोसलका – २९८
कोसेय्यकट्टिस्समयन्ति – ११३

ख

खणठितिया – १३८
खणनिरोधन्ति – ३४९
खणिकनिरोधेति – ३२२
खणोति – ४१
खत्तधम्मो – २८६
खत्ता – २७७
खन्ति – २६, ६१, ६२, ६४, ७२, ७६, ८४, ३३२
खन्तिपारमिता – ६३
खन्तिसम्पदा – ७२, १८०
खन्धानन्ति – ३४२
खमातेजद्वयसिद्धि – ८३
खयञाणं – २३८
खयोति – २३९
खराति – २६४
खारिन्ति – २७१
खारिभरितन्ति – २७१
खिड्डापदोसिका – १४०
खीणाति – २४०
खीणासवो – १६४, २४०, २४८, ३०४
खीरपञ्ञत्ति – ३३७
खुरधारूपमन्ति – २७१
खेत्तलेड्डुनन्ति – २६४
खेत्तविज्जायाति – २७२
खोभेत्वाति – १८६

ग

गज्जितं – १२१
गणसङ्गणिका – २०५
गतन्ति – ९६
गतमलन्ति – १०, ११
गतियोति – ३०३
गतिविमुत्तन्ति – ६
गतोति – ९२, ९७, १९३
गन्धजाता – ५७
गन्धारीति – ३४५
गन्धोति – ५६
गब्भा – ३५१
गम्भीरञाणेहि – १४
गम्भीरन्ति – १२१
गम्भीराति – २७, १७५
गरुकन्ति – ३४१
गरुकुलन्ति – २०
गरुन्ति – १९३
गवेसीति – २७४
गहणी – २७८
गहितचित्ता – १६५
गामोति – १०९
गारवयुत्तोति – ४३
गिलानोति – २२९
गीवायामकन्ति – ११२
गुणकथायाति – १८९
गुणागुणपदानीति – २००
गुणाधिकोपीति – २७१
गुहा – २२७
गूळ्हो – २५
गेहं – २३, २३७, २७२
गोचरसम्पजञ्ञभावतोति – २२१
गोचरसम्पजञ्ञं – २१५
गोचरो – २२
गोत्तवसेनाति – २५६
गोत्रभु – ९३
गोपदकन्ति – २८०
गोमयसिञ्चनन्ति – २८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घ

घटभावो – १३५
घटिकाति – ११३
घट्टनन्ति – ३०५
घट्टेन्तोति – २६४
घनताळं – ११२
घनसञ्ञा – ९३
घरावासो – ७०
घासच्छादनपरमता – २०५
घोरोति – २९३
घोसन्ति – १४६

च

चक्कन्ति – १९
चक्कवत्तीति – २५९
चक्कवाळमहासमुद्दो – ५८
चक्खुदानं – ७६
चक्खुन्ति – २५२
चक्खुमाति – ३३४
चक्खुविञ्ञेय्याति – ३५७
चण्डालेति – २५०
चण्डालं – ११३
चण्डोति – २६४
चतुइरियापथं – २२९
चतुक्कज्झानसमाधिकिच्चं – ३०२
चतुत्थज्झानसमाधि – ३०२
चतुत्थज्झानसुखन्ति – २३४
चतुत्थज्झानिकफलसमापत्ति – ३३६
चतुत्थज्झानं – ३५, १४७, २३४, ३४३
चतुप्पटिसम्भिदाञाणं – ८
चतुब्बिधभावन्ति – ५१
चतुयोनिपरिच्छेदकञाणं – ११९
चतुरङ्गसमन्नागतन्ति – ५८
चतुरधिट्ठानपरिपुण्णन्ति – ८६
चतुरधिट्ठानं – ८५, ८६
चतुरोघनित्थरणाय – ७६
चतुवेस्सारज्जञाणं – ८
चतुसङ्खेपं – १२४
चतुसच्चकम्मट्ठानं – १३३
चतुसच्चञाणं – ८
चतुसच्चपटिवेधभावतो – १७०
चन्दनगन्धो – ५६
चन्दनन्ति – ५६
चन्दसूरियमणिपदीपादीनं – १२७
चन्दिमाति – १००
चम्पकरुक्खा – २७७
चम्पाति – २७७
चरणधम्मा – ७४
चरणन्ति – २७०
चरियाति – २६
चरियाविधानसहितोति – १६
चलितेति – ११४
चागाधिट्ठानं – ८४, ८५, ८६
चातुद्दिसो – २२६
चातुमहाभूतिको – २००
चातुमहाराजिकभवनन्ति – ४९
चातुमासी – १८७
चारित्तसीलं – २३१
चिण्णवसितायाति – ३२३
चित्तक्खणिकम्पि – ३२७
चित्तगतिकाति – ३५८
चित्तगेलञ्ञं – २२९
चित्तचेतसिककलापस्स – १००
चित्तनिरोधेति – ३२२
चित्तन्ति – १३५, २२०, ३०६
चित्तपस्सद्धि – ३
चित्तविकारे – ७४
चित्तुप्पादोति – २४७
चिन्ताकवि – ११५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तामणि – ३४५
चिन्तामयञाणसंवड्ढिता – २३८
चिरकालट्ठितियाति – १६
चिरट्ठितत्थन्ति – १५
चिरनिक्खन्तोति – ३५९
चीनपिट्ठचुण्णं – ४७
चुतिचित्तं – १५४, ३४९
चुतिमत्तमेवाति – १५३
चूळगन्धारी – ३४५
चूळसीलं – १११, २१४
चेतनालक्खणन्ति – ९४
चेतन्ति – १२५
चेतसिकगेलञ्ञन्ति – २२९
चेतसिकदुक्खन्ति – १७७
चेतसिकन्ति – ३४५
चेतसोति – १६९
चेतियङ्गणेति – १८६
चेतियरट्ठेति – ३४१
चेतिरट्ठतो – ३४१
चेतोविमुत्तीति – ३०१
चेतोसमाधिं – १४०,१८४
चेलकाति – १९४
चोरकण्टकेहि – २८६

छ

छकामावचरदेवलोको – २०९
छट्ठाभिञ्ञा – २३६
छत्तेति – ९१
छन्दरागप्पहानं – १३४
छन्दोका – ३५५
छब्बण्णरस्मियो – ४७
छम्भितत्तन्ति – २३०, ३५९
छळभिञ्ञाचतुप्पटिसम्भिदादीनं – २९
छायारूपकमत्तन्ति – २७४
छेकोति – २३३

ज

जनपदत्थावरियप्पत्तो – २५९
जनपदिनोति – २५३
जनसङ्गहत्थन्ति – २१६
जनाति – १२४
जनितस्मिन्ति – २७०
जनेतस्मिं – २७०
जयधजं – १९४
जलन्ति – २४१
जवनं – २२१, २२४
जागरितं – २२४
जागरियानुयोगो – ७४
जातन्ति – ३१४
जातसंवड्ढोति – ३५९
जातिसिद्धन्ति – २९५
जानता – ४८, ४९, ५१
जानतोति – ३३१
जायम्पतिकाति – २१२
जिगुच्छतीति – ३१६
जिण्णोति – २७९
जितन्ति – १९७
जिनचक्के – १९७
जिनोति – ८८, १८८, १९९
जीवको – १९१
जीवन्ति – १९४
जीवितक्खयं – २२३
जीवितपरिच्चागो – ८३
जीवितिन्द्रियन्ति – ९९
जुतीति – २१२
जेगुच्छं – ३१६
जेट्ठकन्ति – २९६
जेतवनविहारं – २२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झ

झानत्तयसम्पयोगिनीति – ८
झानधम्मा – १२७
झानपञ्ञं – २८३
झानपटिलोमतो – २३४
झानरतिया – १३९
झानविमोक्खसमाधिसमापत्तियो – ८०
झानवेगेति – १४८
झानसञ्ञाति – ३२८
झानसमापत्तिया – २९८
झानसमापत्तिलाभोति – १५०
झानसमापत्तिसुखं – ८०
झानसम्पदाय – १०
झानानि – १६, ७४, १४७, २९६, ३३६

ञ

ञाणचरिया – ८, ३२८
ञाणजालं – २५४
ञाणदस्सनन्ति – २३५
ञाणदस्सनं – १५९, २३५, ३३४
ञाणन्ति – २७, १२७, २३८
ञाणबलं – १४४
ञाणभयं – १९२
ञाणसम्पदा – ७, १८०
ञाणसंवरो – १०८, ३१२
ञाणानुपरिवत्तीति – १२१
ञाणं – १५, २३, २६, २७, ५८, ९३, ११८, १२०, १२१, १२३, १२८, १५०, १७३, १७६, १७७, १९२, २३५, २३८, २८३, ३०८, ३२०
ञातत्थचरिया – ९०
ञातपरिञ्ञायं – ९२
ञातिपरिवट्टं – २५७
ञातिब्यसनं – ३५९
ञाती – २१३
ञापकन्ति – १२८
ञायतीति – २७२
ञेय्यन्ति – १२०

ठ

ठपनलक्खणोति – २०६
ठपनाति – २८५
ठपिताति – १५, ३११, ३३४
ठातुन्ति – ३६०
ठानन्तरं – २८७
ठानन्ति – १२८, ३१७
ठानानीति – १२१
ठितिकालनियमो – १३८
ठितोति – १३९

त

तक्कगाहेनेवाति – १५१
तक्कयतीति – १२९, १४३
तक्किको – १४२
तक्की – १३१
तक्कीवादी – १४१, १४२
तक्कोति – १२९
तज्जापुञ्ञञाणसम्भरणं – २१८
तज्जोति – १०५
तण्हागतानन्ति – १५९, १६८
तण्हाचरितो – १८२
तण्हाति – १६८, २३९
तण्हादिट्ठिवसेनाति – १२५
तण्हाधिपतेय्यो – १५९
तण्हापहानं – १७५
तण्हाविज्जा – १८१
तण्हासिद्धि – १६७
ततियज्झानसुखं – २३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथलक्खणं – ५९,९४
तथागतभावं – ९२
तथागत-सद्दो – ५९
तथागतोति – ६०, ९२, ९६, ९७, ९८, १७३, २५१
तदत्थजोतनत्थन्ति – ४३
तदत्थविजाननन्ति – १०५,१०६
तदत्थसिद्धि – २४४
तदुत्तरि – ९५
तन्तावुतानीति – १९०
तन्तिनयानुच्छविकन्ति – १५
तपतीति – ३१६
तपस्सिनोति – १७६
तपस्सिं – ३०८, ३१८
तपोजिगुच्छाति – ३१६
तरुणपीति – २३१, २६२
तसिताति – ३०५
तायतीति – २५, २५६, २६८
तावकालिकानि – २२१
तावतिंसपरिसा – ३१६
तासतस्सना – १३९
तिकपट्ठाने – १२२
तिकमातिका – ५६
तिक्खिन्द्रियो – १८२
तिण्णविचिकिच्छो – ३०४, ३०६
तित्थकरोति – १८९
तित्थकरं – २४८
तित्थायतनेति – १४७
तित्थियवादो – ३१४
तित्तिरिया – ३५५
तिपिटकमहासिवत्थेरवादो – ३२९
तियद्धं – १२४
तिविधदिट्ठिका – २०१
तिविधसीलालङ्कतं – ४७,२४१
तुच्छोति – ३३६
तुण्हीभूतन्ति – १९३
तेजोधातूति – २१९,२२२
तेविज्जा – ३५८
तोदेय्यब्राह्मणो – ३४०
तोदेय्यो – ३४०

थ

थण्डिलसेय्यन्ति – ३१४
थावरो – २८६
थिरभावं – ७३
थुतिघोसो – ५६, १९०, ३२२
थेरवंसपदीपा – १५
थेरवंसपदीपानन्ति – १५
थोमनाति – ३५६

द

दत्ति – २७२, ३१४
दत्तिकं – २७२
दत्तूहि – २०१
दन्तमयसलाका – २९२
दन्तवक्कलिका – २७२
दन्धायितत्तन्ति – ३५९
दसपदं – ११३
दसबलञाणन्ति – ४९, ११९
दस्सनत्थन्ति – ३३४,३४०
दस्सनसम्पत्ति – ७१
दस्सनीयता – १८८
दस्सनीयो – २७९
दस्सुखीलन्ति – २८७
दहरायाति – ३०९
दळ्हमित्तो – ७८
दानउपपारमी – ८३
दानज्झासयोति – ६७
दानपरमत्थपारमी – ८३
दानपारमिता – ६३
दानपारमी – ६६, ८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दानसीलं – २७५
दानसूरो – २८८
दानं – २९, ६१, ६२, ६३, ७०, ७६, ८४, ८७, ८९, २००, २१२, २४९, २५९, २८८, २८९, २९०
दिट्ठधम्मनिब्बानवादाति – १५७
दिट्ठधम्मनिब्बानं – १७३
दिट्ठधम्मिकन्ति – १९५
दिट्ठधम्मोति – १५५,२७६
दिट्ठन्ति – १४८
दिट्ठपुब्बानीति – ३३५
दिट्ठपुब्बानुसारेनाति – १४३
दिट्ठमत्तं – २१८
दिट्ठसंसन्दना – ९८
दिट्ठि – २६, ४१, १२६, १३१, १३२, १३४, १४२, १४६, १६०, १७०, २४४, २४६, ३३२
दिट्ठिगतन्ति – ३३२, ३५०
दिट्ठिजालं – १६५, १७६
दिट्ठिजुकम्मन्ति – २४६
दिट्ठिञ्ञासयं – १५८
दिट्ठिदीपकं – २०१
दिट्ठियोति – १२२
दिट्ठिवेदयितेति – १६०
दिट्ठिसम्पन्नोति – २४८
दिट्ठेकट्ठेति – ९३
दिप्पतीति – २१
दिब्बचक्खुञाणलाभी – १५३
दिब्बचक्खुञाणं – ३००
दिब्बचक्खुनो – २३८
दिब्बचक्खुसमधिगमो – २३७
दिब्बन्ति – ३४७
दिब्बविहारो – १८५
दिब्बसोतञाणं – ३००
दिब्बा – ३५१
दीघसुत्तङ्कितस्साति – १४
दीपङ्करपादमूले – २३
दीपवासीनन्ति – १५
दुक्खक्खन्ध – ७०
दुक्खनिरोधगामिनीपटिपदा – ३३३
दुक्खनिरोधं – ३३३
दुक्खन्ति – २३९, २४५, ३१२
दुक्खवेदना – २२९, ३४१
दुक्खवेदनुप्पत्तिया – २२९
दुग्गताति – २८८
दुट्ठचित्तोति – २४८
दुतियज्झानभूमियं – १३८
दुतियदिवसेति – २२
दुद्दसाति – ११८
दुरनुबोधाति – ११८
दुल्लभदस्सनं – १३
दुल्लभभावं – २०
दुल्लभाति – ४९
दूतेय्यकथा – ११४
दूसितचित्तस्साति – १०६
देय्यधम्मतो – २९०
देवमनुस्सानन्ति – ५
देवयानियो – ३४७
देवलोकेति – १९५
देवसिकभत्तं – २८७
देवाति – १९९, २०९
देसना – १६, २६, २८, ३५, ४५, ५०, ८१, १०२, ११७, १२१, १३०, १३४, १४६, १५४, १५८, १५९, १६०, १६१, १६४, १७२, २०७, २११, २१४, २२६, २३२, २३८, २४२, २८४, २९६, ३०३, ३१९, ३२२, ३३८
देसनाकुसलोति – १०८
देसनाञाणं – १२१, १७०
देसनाति – २८, ११७, २१०, २४२
देसनासीसन्ति – १४६
दोसानन्ति – ११६
दोसाभिसन्नन्ति – १८५
दोसिना – १८८
दोसोति – १९५, ३०९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रवभावो – ९३
द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खण – ९०
द्वीहवारो – ३१४

ध

धनक्कीतो – २०४
धम्मकथिकोति – ४६
धम्मकायतो – ६०
धम्मकायसिरी – ९०
धम्मक्खानं – ९०
धम्मचक्कप्पवत्तनञ्हि – १९
धम्मचक्कं – १९
धम्मचक्खुं – २५२,२६१
धम्मचिन्तन्ति – २९
धम्मजालं – १६५
धम्मट्ठितिञाणन्ति – १२३
धम्मतण्हाति – १६२
धम्मताति – १४१
धम्मतासिद्धं – २९५,३४७
धम्मतोति – २९१,३४४
धम्मदेसनाति – ३४६
धम्मधातु – १७८
धम्मनियामेनाति – ३०१
धम्मनिरुत्तिया – २८
धम्मनेत्ति – ४०
धम्मन्ति – ९, १०, २४८, ३५०
धम्मपटिसम्भिदाति – २७
धम्मपरियायेति – १६५
धम्मपुञ्जे – ४२
धम्मपूजा – ३१७
धम्मभावो – २४४
धम्मरक्खितो – १२८
धम्मराजा – १२४, १३०, १३४, २५९
धम्मरुचीति – २०६
धम्मववत्थानेनाति – ९२
धम्मवादीति – १०८
धम्मवेदं – १३
धम्मसभावं – १३३
धम्मसरीरं – ४३
धम्मसेनापति – १९१
धम्मस्सवनं – २९४
धम्माति – २३, २७, ४०, ६१, ९५, ११७, १८८, ३३६
धम्मानुधम्मपटिपत्ति – ३१७
धम्माभिलापोति – २७
धम्मिको – २५९
धम्मेनाति – २५०,२६०,२६८
धम्मोति – १९३,२४४,२९४
धरन्तीति – ३४२
धातुसमताति – २६२
धारणं – ५९
धुतधम्माति – १६
धुतपापोति – २०३
धुराति – १८५
धुवदानानीति – २९२
धुवन्ति – १२६
धुवसञ्ञन्ति – ९३
धूमरजो – १८८
धोतन्ति – २१३
धोता – २८३
धोवतीति – २८३

न

नग्गो – ३१३
नत्थिकवादो – १५७
नत्ताति – २८३
नथिरकथोति – १०५
नन्दिन्ति – ९३
नमन्ति – ३३७
नरकपपातन्ति – ३५३
नरन्ति – १७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवसत्तावासपरिजाननञाणं – ११९
नाटपुत्तवाद – १५७
नानत्तसञ्ञीति – १५१
नानानयनिपुणन्ति – ३४
नानावेरज्जं – २७७
नानुभोन्तीति – २९
नामन्ति – २६५, ३०८, ३२४, ३४८, ३४९
नाळन्दञ्च – ४५
नाळिका – ११३
निक्कड्ढित्वाति – २२७
निक्किलेसधम्मं – ३५०
निक्खमतीति – १२७
निक्खमनचित्तुप्पादो – ६३
निक्खमन्ता – २३७
निक्खित्तस्साति – ५१
निक्खेपवचनन्ति – १०२
निगण्ठाति – १५१
निग्घोसोति – २०७
निग्रोधो – ३१८
निच्चकालन्ति – १२८
निच्चन्ति – १८२, २४८
निच्चसञ्ञन्ति – ९२, ३४६
निच्चोति – १५१, २४८, ३०६, ३३१
निच्चोलेति – ३१३
निज्झानपञ्ञं – २८
निज्झानं – २८, ७३, ८०
निदानवचनन्ति – ५१
निद्देसोति – २६५, ३०१, ३३५
निधानन्ति – २२३
निन्नेत्वाति – २७४
निपातमत्तन्ति – ४६
निपातोति – २०७, २५६
निपुणस्स – १४
निपुणाति – ११८
निप्पेसिका – ११४
निप्पेसोति – ११४
निबद्धदानानीति – २९२
निब्बत्तिलक्खणन्ति – १३३
निब्बानगामिनिप्पटिपदं – २४
निब्बानधम्मो – २४६
निब्बानधातूति – २०
निब्बानन्ति – २७५, ३३४
निब्बानप्पत्तियं – २०
निब्बानसम्पत्तियं – ७४
निब्बानारम्मणो – २८
निब्बापनीयन्ति – ११६
निब्बिदानुपस्सनायाति – ९३
निमित्तन्ति – ७२, ९३, ११४, ११५, ३४८
निमित्तपटिवेधो – ११८
निम्मलं – २३४
निम्मितरूपं – २४१
नियतोति – २०२
निरामगन्धाति – २७३
निरुज्झनकरूपधम्मानं – २१९
निरुत्ति – १७१, ३३७
निरुत्तिनयेनाति – ९६
निरुत्तिपटिसम्भिदाति – २७
निरुद्धाति – २२४
निरोधकथन्ति – ३२२
निरोधधम्मानन्ति – ३२३
निरोधन्ति – ३२०
निरोधपटिपत्तिया – ३२८
निरोधसच्चं – १३४, १६८, १८१
निरोधसमापत्तिं – २०५
निरोधसम्पत्तिया – १०
निरोधानुपस्सना – ९३
निरोधानुपस्सनायाति – ९३
निरोधोति – १२७, २०५, ३२३
निवारेन्तीति – ३५८
निस्सरणन्ति – १३४, १६८
निस्सरणविमुत्ति – ३१६
निस्सरन्ति – ३५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीवरणकवाटं – ९२
नीवरणसंयोजनद्वयसिद्धि – १६७
नीवरणानि – ७९, ९२
नीहरणन्ति – ११६
नेक्खम्मज्झासया – ६५
नेक्खम्मपारमिता – ६३
नेक्खम्मपारमी – ७९, ८३
नेक्खम्मबलसिद्धितो – ७४
नेक्खम्मसुखप्पत्ति – ८७
नेक्खम्मेनाति – ९२
नेमित्तिका – ११४
नेवसञ्ञानासञ्ञायतनज्झानं – ३२७
नेवसञ्ञानासञ्ञायतननिरोधसमापत्तीनं – ३२७
नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसमापत्ति – ३२७
न्हानियचुण्णानं – २३३
न्हापकाति – १९४

प

पकतिमनुस्सधम्मतो – ३४४
पकतियाति – १३७
पकतिवादं – ३१५
पकतिविपस्सकानं – ३२६
पकतीति – ३३४
पकतूपनिस्सयेनाति – १६२
पकप्पेतीति – ३२७
पकम्पथाति – १६५
पकरणेति – २६९
पकासाति – ४२
पक्खाति – २८८
पग्गण्हन्तेसूति – २८२
पग्गहो – ९४
पग्घरणं – ९३
पच्चग्घन्ति – ३२०, ३२१
पच्चयपरिग्गहे – १२३
पच्चयाकारदेसना – १६
पच्चयोति – ६४, ६५, ७२, ७४, ७५, १६०, १६३, १६४, ३२४
पच्चवेक्खणं – ५९
पच्चासंसरन्तोति – २१५
पच्छिमचक्कद्वयसिद्धियाति – ३९
पञ्चवोकारभवपरियापन्नं – १५४
पञ्चसिखमुण्डकरणन्ति – २८७
पञ्चसीलधम्मेनाति – २६०
पञ्चसीलं – २९६
पञ्ञत्तिदीपकपदानीति – १२६
पञ्ञत्तिभेदो – १७८
पञ्ञत्तीति – २८, १८७
पञ्ञाकरुणा – ६५
पञ्ञाक्खन्धो – ८
पञ्ञाचक्खुनो – ३३३
पञ्ञाणन्ति – २८३
पञ्ञाति – १२३
पञ्ञाधिट्ठानन्ति – ८४
पञ्ञाधिट्ठानपरिपूरणन्ति – ८६
पञ्ञापज्जोतत्ता – ३०३
पञ्ञापज्जोतविहतमोहतमन्ति – ४, ७
पञ्ञापज्जोतोति – ४
पञ्ञापनधम्मो – १६०
पञ्ञापमुखा – २४२
पञ्ञापरिसुद्धा – ८५
पञ्ञापारमिता – ६३
पञ्ञापारिसुद्धियं – ७१
पञ्ञाभावना – ६५
पञ्ञाविमुत्ति – १८१
पञ्ञासङ्कलननिच्छयो – १६
पटलानीति – ११६
पटिकिट्ठोति – २५०
पटिक्कमोति – २१५
पटिक्कूलसञ्ञं – २१८
पटिक्खित्तमेवाति – ५५
पटिघसम्पयुत्ताति – १३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पटिघो – १४४
पटिच्चसमुप्पादाति – १२३
पटिच्चसमुप्पादो – ८०
पटिच्छन्नो – २५, १२७
पटिच्छादिका – २४३
पटिजानन्ति – १५०
पटिनिस्सग्गानुपस्सना – ९३
पटिनिस्सज्जीयन्तीति – ९३
पटिपक्खोति – ७६
पटिपत्ति – ६०, ७६, ८२, ९२, ११२, १३३, १९०, २५५
पटिपत्तिअत्थं – १३२
पटिपत्तिक्कमोति – ३१५
पटिपत्तिदस्सनन्ति – १०८
पटिपत्तिमुखन्ति – २७१
पटिपत्तीति – ७६, ८२, ३५२
पटिपदाञाणदस्सनविसुद्धि – २३२
पटिपदाति – १९८
पटिपन्नोति – ५, ४७, ९७, २८०
पटिप्पस्सद्धि – ३२८
पटिप्पस्सम्भकविज्जा – २६९
पटिभागकिरियन्ति – ३२२
पटिभानकवि – ११६
पटिविरुद्धाति – ५३, १७७
पटिवेदेसीति – १९१, २४५
पटिवेधपञ्ञा – ४
पटिवेधपञ्ञायाति – ४८
पटिवेधोति – २८,१२०
पटिसङ्खानुपस्सना – ९३
पटिसङ्खानं – ९४
पटिसन्धिसञ्ञा – १४८
पटिसम्भिदाति – २७
पटिसंवेदेतीति – १२९, १५८, २१४, २१५, २३२
पटिहञ्ञतीति – २२६, २९३
पटिहन्तीति – २९३
पठमचित्तक्खणेति – १३९
पठमज्झानन्ति – २९६
पठमज्झानसमाधि – ३०२
पठमबुद्धवचनन्ति – २३
पठममग्गो – १७६
पणमन्तीति – २२८
पणिधिन्ति – ९३
पणिपातो – २४७
पणीतन्ति – २४४
पणीता – ११९, ३३६
पण्डिच्चेनाति – १४४
पण्डितवेदनीयाति – १२०
पण्डितोति – १४४, ३१५
पण्डुपलासिका – २७२
पण्डुराजाति – ११५
पतिट्ठपेतब्बाति – २८९
पतिट्ठितचित्तो – १७०, २०३
पतिट्ठितपादो – २१९
पतिरूपदेसोति – १९६
पथविकायो – २०३
पदविभागोति – ३२
पदहनं – १२६
पदानीति – ११३, २००, २२३
पदुट्ठचित्तो – २४८
पधानकारणन्ति – ४
पन्थदुहना – २८६
पपञ्चोति – १००
पब्बतगुहा – २२७
पब्बतन्ति – २२७
पभस्सरन्ति – ३४९
पमुखलक्खणं – ९५
पमोदन्ति – ५४
पयातन्ति – २७२
पयोगसुद्धियाति – ३९
पयोगो – १००, १०३, १०४, ११२, ११३, ११६, २२२, २६३
परत्थोति – १६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमत्थतो – ५, १४, ३७, ४२, १२४, १३२, १३५, १५३, १६७, २०३, २७०, ३३२, ३३४, ३३७, ३३८
परमत्थधम्मो – ३३८
परमत्थपारमीति – ८२,८३
परमत्थब्राह्मणो – १८८
परमत्थसच्चं – ३३९
परमत्थसमणो – १८८
परमत्थसिद्धियं – १०८
परमत्थोति – २५
परमविसुद्धं – ३१६
परमं – ६८, ७४, २०५, २२८, २८३
परसंहरणन्ति – १०३
पराधीनोति – २२९
परामासो – १३३
परायणन्ति – २४३
परिक्खारा – २८५, २८८, २८९, २९०
परिग्गहितत्ताति – १८४
परिग्गहेत्वाति – २१५
परिच्चागचेतना – २८९
परिच्चागलक्खणं – ६३
परिजानाति – ६४
परिञ्ञापञ्ञत्ति – १७७
परिञ्ञं – ८०
परितस्सना – १३९
परित्तसञ्ञीति – १५१
परित्ताभा – १३७
परिदहित्वाति – २१३
परिनिट्ठापिताति – १३२
परिनिब्बानन्ति – २९४
परिनिब्बानपञ्ञत्ति – १७८
परिपततीति – २२८
परिपाकञाणा – २५४
परिपुच्छा – ५८
परिपुण्णकम्मन्ति – १९८
परिपुण्णकिच्च्या – ३३६
परिभोगपञ्ञा – ३५७
परिमद्दनधम्मोति – २३५
परिमुखन्ति – २२८
परियत्ति – २९, २१०
परियत्तिधम्मो – २१०
परियत्तियन्ति – ११७
परियत्तोति – २१
परियन्तोति – २२९
परियादियित्वाति – ३६०
परियायो – ४५, ११२
परियेट्ठि – २७२
परियेसनदुक्खमूलं – १६२
परियोनन्धन्तीति – ३५८
परियोसानन्ति – ८, १३, ९०, २१०
परिवट्टो – २१३
परिवत्तनत्थन्ति – ११६
परिवाराति – २८५
परिवितक्को – ४०, २८२
परिसप्पनं – २३०
परिसुद्धन्ति – २१२, २१५, २३४, २८०
परिसुद्धाजीवोति – २१४
परिसोधेतब्बं – ६९
परिस्सया – २२६, २९३
परिळाहा – ५९
परोलोकोति – १४५
पलिबुद्धनकिलेसोति – १९०
पलिबुद्धाति – ५९
पवत्तफलभोजिनो – २७२
पवत्तमिच्छासञ्ञं – ९३
पवत्तितविपस्सना – २८३
पवत्तिनोति – २१
पवायतीति – ५७
पविसन्ता – २३७
पवुटाति – १९९
पवेणीधम्मो – १९३
पसन्नकारन्ति – २४३, ३१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसन्नचित्तता – २९७
पसन्नाति – ११४
पसवतीति – २५
पसेनदी – ३५१
पस्सता – ४८, ४९
पस्सतीति – ५४, ९६, ११५, १४१, २३५, २४८, ३०२
पस्सद्धि – ९५
पहातब्बकिलेसा – २४०
पहातब्बधम्मानं – ३११
पहानत्तयसिद्धि – १८०
पहानपञ्ञत्ति – १७७
पहाय – ६६, ९७, १०१, १०३, १०८, १११, १८२, २०१, २०५, २२४, २५३, २५७, २७३, ३११
पहूतभावन्ति – २७४
पाकटमन्तनन्ति – २७२
पाटिहारियविजम्भनं – २९९
पाटिहीरकन्ति – ३३५
पाणभूतेति – १०३
पाणातिपातकम्मबद्धोति – १००
पाणातिपातचेतनाति – १००
पाणातिपातभावं – ९९
पाणातिपातो – ९९, १००, १०१
पाणं – ४४, १९७
पातब्यतन्ति – ३०९
पातिमोक्खआजीवपारिसुद्धिसीलानि – ५६
पातिमोक्खसंवरसंवुतोति – २१३
पातिमोक्खसंवरो – १०८
पातेसीति – २७५
पापदिट्ठिया – ३५३
पापधम्मा – २६०
पापन्ति – १९२, १९६, २०१
पापभिक्खूति – २०
पाभतं – २८७
पारिसज्जा – २८८
पारिसुद्धि – ७४
पावारिकम्बवनन्ति – ३४४
पासकं – ११३
पासादिको – २७९
पासादोति – २२६
पिटकसद्दन्ति – २६
पिण्डपातोति – २९०
पितामहयुगाति – २७८
पियजातिकाति – ३५७
पियजातिकानीति – २९९
पियपुग्गले – ६७
पिसुणवाचाति – १०६
पीतिपस्सद्धिसुखं – ८१
पीतिमनस्स – २३१
पीतियाति – ५५
पीतिवचनन्ति – १८८
पीतिसमुट्ठानं – १८८
पीतिसोमनस्सन्ति – ५५
पीळन – ४१
पुग्गलवोहारोति – ३६
पुच्छानुसन्धि – १५८
पुच्छावसिकोति – ५२
पुञ्ञकम्मं – १३८
पुञ्ञकिरिया – ३३
पुञ्ञचरियं – २८५
पुञ्ञन्ति – १९५, २१२, २९४
पुञ्ञफलं – २१२
पुञ्ञवाति – ३०९
पुञ्ञं – १३, ६७, ८०
पुटंसेन – २८२
पुण्डरीकन्तिपि – २३३
पुण्णोति – १८७
पुत्तदानं – ७६
पुत्तोति – २६५
पुथुआरम्मणं – ११९
पुथुज्जनञाणञ्च – १२०
पुथुज्जनाति – ५९
पुथुवचनन्ति – २५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुथूति – ३२९
पुनब्भवोति – ९१
पुनरुत्तिभावतोति – १७, ३२८
पुब्बचरियाति – ९०
पुब्बण्णं – २८६
पुब्बन्तकप्पिका – १२४
पुब्बन्तापरन्तकप्पिका – १५७
पुब्बन्तापरन्तानुदिट्ठिनोति – १५७
पुब्बभागपटिपदाति – ३१२
पुब्बभागभावनापञ्ञा – ८०
पुब्बयोगो – ९०, २५५
पुब्बेनिवासञाणलाभीनं – २३७
पुरस्साति – १०७
पुरातनो – १८४
पुरिमतरन्ति – २९९
पुरिमवेदनाय – १३३
पुरिमवेसारज्जद्वयसिद्धि – ५०
पुरिमसञ्ञानिरोधन्ति – ३२९
पुरिसोति – २२१, २३१
पूरणकथा – १०५
पेक्खा – ११२
पेसाचा – १९९
पेसितचित्तोति – ३१९
पोक्खरसाती – २५५
पोङ्खानुपोङ्खन्ति – २१७
पोट्ठपादाति – ३२८
पोत्थनियन्ति – १८६
पोथुज्जनिकसद्धापटिलाभोति – २५२
पोराणाति – ४३, २८२
पोसावनियं – २५६
पंसुकूलधोवने – १६५

फ

फरणं – ९४, ३५९
फरित्वाति – ३६०
फरुसन्ति – १०६
फरुसवाचा – १०७, २६५
फलतोति – २२३
फलन्ति – ६०, ९०, १२३, २००, २३८, २७५
फलसच्छिकिरियाति – ३३३
फलसमापत्ति – ३३६
फलसमापत्तिनिरोधसमापत्तियो – १६
फलसमापत्तिसुखं – २१०
फलसीलन्ति – ३४२
फस्सनिरोधाति – १६४
फस्सपच्चयाति – १६७, १७०, १७१, १७३, १७६, १७८
फस्ससमुदया – १६४
फस्सायतनादिअपरिञ्ञा – १७६
फस्सोति – १६१, ३३८
फलुबीजन्ति – ११२
फुट्ठोति – २०३
फुसनलक्खणो – १६१
फुस्साति – १६१

ब

बलन्ति – २२५, २२९
बलवतुट्ठीति – ३३५
बलवरोगो – ३४१
बलवाति – २३१, ३५९
बलसम्पन्नोति – ३५९
बलिकम्मकरणं – ११६
बव्हारिज्झा – ३५५
बहुकारोति – ३०३
बहुस्सुता – १९, २९४
बालोति – २०२
बाहियो – २१८
बाहिरपथवीधातुन्ति – २००
बाहिरब्भन्तरमलेहि – २७४
बीजगाम्भूतगामोति – १११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीजबीजन्ति – ११२
बुद्धकम्मसिद्धि – ६४
बुद्धकरधम्मसिद्धि – ८
बुद्धकारको – ६१
बुद्धकिच्चन्ति – १९
बुद्धगज्जितन्ति – ३५०
बुद्धगुणपरिच्छेदनं – ९
बुद्धगुणा – ३, ८, ५८, ८०, ९०, ११७, ११९, १७४, १९१, २४६
बुद्धचक्खु – २१४
बुद्धञाणन्ति – १२०
बुद्धत्थसिद्धीति – २६१
बुद्धधम्मरतनानम्पि – १२
बुद्धधम्मा – ८,७३,१५४
बुद्धभावन्ति – ९, १०
बुद्धभावसिद्धि – ८, ६४
बुद्धभूमियोति – ६५
बुद्धमहन्तता – ८०
बुद्धरस्मियो – २९९
बुद्धरूपं – २७४
बुद्धवचनन्ति – १९
बुद्धविसयोति – १४९
बुद्धसिरिया – ४७
बुद्धसीलं – ३१६
बुद्धसीहनादं – ३१६
बुद्धसुखुमालभावाय – ७६
बुद्धानुबुद्धाति – १४
बुद्धिअत्थो – २७
बुद्धिचरिया – ९०
बुद्धिभेदोति – १२७
बुद्धुप्पादो – ४४
बुद्धोति – २, ९, १५०, २४२, २९४
बेलट्ठपुत्तो – १४५
बोधितन्ति – २२८
बोधिपक्खियधम्मा – १७८
बोधिमूले – ३२१
बोधिसत्तभूमियं – ८२
बोधिसत्तो – ६०,७३,८९
बोधिसम्भारो – ८७
ब्यञ्जनसम्पत्तिया – १६५
ब्यभिचारदस्सनतो – २०९
ब्याकरणन्ति – ३०
ब्याकरणसमत्थोति – २७७
ब्यापारोति – ७३, २१९
ब्रह्मकायिकाति – १३७
ब्रह्मचारिनोति – २७३
ब्रह्मजालन्ति – १८
ब्रह्मजालसदिसं – १८
ब्रह्मञ्ञा – २८१
ब्रह्मत्तभावो – १३९
ब्रह्मदत्तो – ४५
ब्रह्मपरिसाति – ३१६
ब्रह्मभावन्ति – १३९
ब्रह्मलोको – २०९
ब्रह्मवच्छसीति – २७९
ब्रह्मविमानन्ति – १३८
ब्रह्मविहारभावनानुयोगो – १६६
ब्रह्मविहारा – १८५
ब्राह्मणन्ति – १८८
ब्राह्मणभावं – २८२
ब्राह्मणसिद्धन्तं – २८२
ब्रूहेत्वाति – ९०

भ

भगवताति – ५१
भगवतोति – १९०
भगवाति – ९, २०, ४४, १९०, १९१, २०८
भग्गोति – ३२३
भङ्गक्खणो – ३२५
भङ्गानुपस्सनतो – २३५
भङ्गानुपस्सनाय – १३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भङ्गोति – १५०, २३९
भण्डधरा – २७७
भयञाणं – १३९
भयदस्सनसीलो – २१३
भयदस्सावीति – २१३
भयभेरवं – १९२
भयानकन्ति – १३९, १९२
भयं – २, १३९, १९२, २३६, २४५, २९५
भवङ्गसञ्ञाति – ३२७
भवङ्गुपच्छेदा – १३८
भवङ्गं – २२४
भवतण्हायाति – १६३
भवदिट्ठियाति – १६४
भवन्तरसमयन्ति – ३२२
भवरागोति – २४४
भवस्साति – १६३
भवोति – १६३
भस्सं – २७०
भारद्वाजोपि – ३५५
भारियेति – १८५
भारोति – १९३
भावनापञ्ञत्ति – १७७
भावविगमन्ति – १५३
भावितोति – ३००
भावेत्वाति – १०, ११, ९०, २३०
भिक्खाचारगोचरे – २१५
भिक्खुनोति – ३२८
भिक्खूति – १९८, ३२८
भिज्जतीति – १४१, ३०६, ३३०
भिन्नपतिट्ठो – २५२
भुजिस्सो – २२९
भुम्मन्ति – २१४, २५५, ३२०
भुस्सतीति – ३०५
भूतकसिणं – १४७
भूततायाति – ३२५
भूतभब्यानन्ति – १३९
भूतरूपानं – ३४८
भूतलक्खणन्ति – ३३९
भूतिकामोति – २०२
भूतोति – २८८
भूमन्तरन्ति – १२१
भूरिविज्जा – ११५
भेदन्ति – २६
भेदोति – २४९
भेसज्जदानं – ७६
भेसज्जमत्ताति – २२
भेसज्जरुक्खा – ७०
भोगक्खन्धोति – २१३

म

मग्गञाणं – ७, १७५, २७६, ३२९
मग्गट्ठाति – २४४
मग्गदीपकन्ति – ३५८
मग्गधम्मनियामेन – ३०१
मग्गधम्मो – २४६
मग्गपटिपत्तिया – ४५
मग्गफलनिब्बानानं – १६५
मग्गफलसुखेनाति – १८६
मग्गसच्चन्ति – १३४, १८१
मग्गसीलं – ३४२
मग्गसुखं – ३५८
मग्गसोतं – ३०१
मग्गोति – २१०, २४३, २७५, ३१३, ३५४, ३५८
मघदेवोति – २६४
मङ्गलभावतो – १, ६८
मज्जवणिज्जाति – २५०
मज्झभावोति – २१०
मज्झिमपटिपदाभावो – २१०
मज्झिमसीलं – १११, २१४
मञ्ञतीति – २६५, ३३१
मण्डनं – ५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मण्डपोति – २२७
मत्तिककक्कन्ति – ११४
मदनिद्दन्ति – ३२३
मद्दन्ताति – २१७
मधुपायासन्ति – ५८
मधुरन्ति – २९९
मधुरेनाति – ३००
मनसिकारपटिबद्धाति – ३९
मनापाति – ६७
मनुस्सधम्मतो – ३४४
मनुस्सलोके – १४०
मनुस्साति – ३१३
मनेनाति – १४१
मनोति – ३४५
मनोद्वारविञ्ञाणवीथि – ३६
मनोधातूति – ५६
मनोपणिधीति – १३९
मनोपदोसिकाति – १४१
मनोपदोसोति – १७७
मनोपुब्बङ्गमा – १४७
मनोमयन्ति – ३३१
मनोमयवोहारतोति – १३७
मनोमयाति – १३७
मनोमयिद्धिया – २९६
मनोमयोति – १३७
मनोरमं – १५, २९९
मन्तजप्पनं – ३२३
मन्तन्ति – २६९
मन्तपदं – २७३
मन्तबलेन – २६८
मन्तसत्तियोगोति – २६०
मम्मच्छेदको – १०७
मरणग्गिना – ६६
मरतीति – १४३
मरूति – ९१
मलन्ति – २५०
महग्गतज्झानानि – १८५
महच्चाति – १९१
महद्धनो – २७८
महन्तानन्ति – ११५
महन्तं – ६८, ८१, ९९, ११५, १२१, २५७, २७८, २९२
महप्फलतरन्ति – २४९
महप्फलतरो – १७२, २९२
महप्फलाति – २९६
महाकच्चानो – ३०
महाकरुणापदट्ठाना – ६३
महाकरुणाभावं – ३
महाकरुणासमापत्तिविहारं – ८
महाकरुणासमापत्तिं – २५४
महाकस्सपत्थेरो – २१
महाकारुणिको – ८८
महागजा – २२६
महागन्धारीति – ३४५
महागामोति – २८७
महागोविन्दोति – १८४
महाजनन्ति – २२
महाजुतिकन्ति – २४९
महाथेराति – ४७
महानदी – २९२
महानुभावाति – २६०
महापुरिसलक्खणानि – ४७
महापुरिसो – ६१, ८७, ९१
महाबोधि – ५, ८२, १७४
महाबोधियानपटिपदाय – ६०
महाबोधिसत्तं – १९७
महाब्रह्मुनो – २०९, २७९
महामत्ता – १९२
महायसतरोति – १४०
महायागन्ति – १९६
महाराजाति – २६०
महावजिरञाणन्ति – २३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाविप्फारन्ति – २४९
महाविहारवासिनो – १५
महावीरो – २६६
महासतिपट्ठानसुत्ते – २२३
महासमणो – ५९
महासमयोति – ४१
महासमुद्देति – ११८
महासमुद्दो – ५८, २०७
महासालोति – ३४४
महासीलन्ति – २१४
महिन्देन – २६६
महेसक्खतरोति – १४०
महेसोति – १४०
महोघो – २९२
मानद्धजं – २६४
माननिम्मदनत्थन्ति – २६३
मानन्ति – ३५१
मारवाहिनी – १२
मारसेनमथना – १२
मासपुण्णता – १८७
मासुरक्खो – ११५
माळो – २२७
मिगपक्खीनन्ति – २८५
मिच्छत्तधम्मा – २४३
मिच्छाचारो – १०४
मिच्छाजीवा – १८२
मिच्छाञाणं – २४९
मिच्छादस्सनन्ति – १३६
मिच्छादिट्ठि – २४३
मिच्छाधिमानो – ७९
मिच्छामग्गा – २४३
मिच्छावणिज्जाति – २५०
मिच्छावितक्को – ६७
मिच्छासतीति – २०१
मिच्छासमाधि – २०१
मिद्धसुखं – २१७
मुखदोसोति – २३७
मुखमत्तदस्सनं – ५१
मुच्छाकारन्ति – ३५७
मुञ्चितुकम्यता – ९३
मुण्डकाति – २६३
मुत्तचागो – २८८
मुत्तहरीतकन्ति – २२५
मुत्तोति – २३०
मुदिन्द्रियो – १८२
मुदुकायाति – ३०९
मुदुचित्ता – ३१७
मुदुभावो – २७४
मुनाति – ६०
मुसावादलक्खणं – १०५
मुसावादादिभयेन – १४६
मुसावादो – १०५, १९६
मूलचरिया – २६
मूलपरिञ्ञा – २२१
मूलबीजन्ति – ११२
मूलभेसज्जानि – ११६
मूललक्खणं – ९५
मूळ्हपुग्गला – २०१
मेघवण्णन्ति – ३२०
मेत्तचित्तता – १०३
मेत्तचित्तो – १०३
मेत्ताकम्मट्ठानं – ५८
मेत्तादिविहारीति – ३६०
मेत्तापारमिता – ६३
मेत्तापारमी – ८३
मेत्ताभावना – ६५
मेत्ताभावनानुयोगो – २३१
मेत्ताविसुद्धितो – ६३
मेत्ताविहारी – ६३, ७८
मेथुनाति – १०४
मेधावीति – २८९
मोक्खोति – ३३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोघमञ्ञन्ति – ४१, १२६, १५४, १७३
मोमूहो – १४५
मोहतण्हाविगमो – ६५
मोहतमविधमनन्ति – ४
मोहनाकारं – ३५७
मंसवणिज्जाति – २५०

य

यक्खदासीनन्ति – ३२३
यक्खनरिन्ददेवसमण – १९३
यजनकिरियायं – २८२
यतत्तोति – २०३
यथाज्झासयं – १०८
यथाधम्मन्ति – २७
यथानुसन्धीति – १५८
यथापरिच्छिन्नकालन्ति – ३२८
यथाभूतवेदी – १४६
यथाभूतसभावबोधो – ११८
यथावुत्ततण्हासमुच्छेदो – १७६
यथावुत्तसभावो – २२
यथावुत्तसीलसंवरस्सेव – ३१२
यथावुत्तसुद्धिया – १८७
यथासभावपटिजानननिब्बेठनाति – १६८
यथासभावपटिवेधलक्खणा – ६४
यथासभावावबोधो – १३६
यमकपाटिहारियकरणत्थाय – ५७
यमनियमलक्खणं – २७९
यसोति – १८९
यामोति – २०३, २४१
यावदेति – २१
युगाति – २७८
योगतो – १९०
योगावचरो – ३०३
योगिनो – १२७, २३४
योगोति – २६०
योनिसिद्धन्ति – २९५
योनिसोमनसिकारं – ३८, २१७

र

रक्खागुत्ति – २०५
रजोजल्लधरो – ३१४
रञ्जेतीति – १८५
रञ्ञोति – १८५, २९२
रट्ठियपुत्ताति – १९२
रतनत्तयगुणानञ्च – २९४
रतनावेळं – ४७
रतनं – १३, २५१
रतिधम्मो – १४०
रतिसभावो – १४०
रत्तञ्ञानि – २९५
रमणीयोति – ३०८
रम्मेति – २९४
रसायतनं – ९६
रस्मियोति – ५८
रागविरागोति – २४४
रागादिपणिधिं – ९३
राजकुमाराति – २७७
राजगहन्ति – १८४
राजागारकं – ४७
राजामच्चपरिवुतोति – १८७
रासिकतन्ति – २७३
रासिको – २८७
राहूति – १८८
रुक्खमूलन्ति – २२७
रुचि – ९७, ३३२
रुचिताति – ४९
रुप्पनसीलो – १५०
रुप्पनं – ९४, १५०
रूपकलापो – २४१
रूपजीवितिन्द्रिये – ९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपतण्हा – १६२
रूपधम्मा – १८१,२१९,२२०
रूपधातु – ९६
रूपन्ति – २१४, ३४८
रूपवाति – २३५
रूपविरागभावना – १४७
रूपवेदनादयो – १२६, १६०, ३३६
रूपसभावो – १५०
रूपसम्पत्तिं – ६९, ३११
रूपायतनं – ९६
रूपारूपजीवितिन्द्रियं – ९९
रूपारूपधम्मसमूहो – १००,१६४
रूपारूपधम्माति – २१९
रूपारूपावचरज्झानानि – १६
रूपावचरकम्मे – ३६०
रूपावचरचतुत्थज्झानदेसनानन्तरं – ३४३
रूपावचरज्झानानि – १६
रूपीति – १५०, २३५
रोगब्यसनं – ३५९

ल

लक्खञ्ञा – १८८
लक्खणन्ति – ९८, ११५
लक्खणमालाति – ४७
लक्खणानन्ति – १३३
लक्खणं – १३१, १५५, १८८, ३३९
लग्गितुन्ति – २६४, ३६०
लग्गिस्सामाति – २७०
लज्जीति – १०२
लद्धघरमेवाति – ३२७
लद्धोति – २५२, २९०
लपन्तीति – ११४
लळनन्ति – २२१
लाभादिलोकधम्मसन्निपाते – ७१
लाभालाभादिविज्जाति – ११५
लाभीति – १५३
लाभीसस्सतवादो – १४८
लिङ्गन्ति – ११६
लिच्छवीरञ्ञो – ३०३
लुज्जनट्ठेनाति – २२८
लूखाजीविं – ३०८
लेणत्थन्ति – २९३
लेणन्ति – २४६
लोकक्खायिका – ११४
लोकधम्मे – ७६
लोकधातुयोति – ९७
लोकनाथो – १९१
लोकनिरोधगामिनिपटिपदं – ५
लोकनिरोधं – ५
लोकन्ति – २०८
लोक-सद्दोति – २०९
लोकसम्मुतिकारणन्ति – ३३९
लोकसिद्धवादो – ३१५
लोकहितेसिना – २६६
लोकाधिपति – १०२
लोकियन्ति – ५
लोकियपुथुज्जनो – १०३
लोकियलोकुत्तरोति – २८
लोकियलोकुत्तरं – १८३
लोकियसम्पत्तिं – ७४
लोकियाभिञ्ञा – १२७
लोकीयन्ति – १४१
लोकुत्तरधम्मं – १४६
लोकुत्तरन्ति – १०
लोकुत्तरपरियायो – ३४३
लोकुत्तरसरणगमनन्ति – २४६
लोकुत्तरसीलं – ३१६
लोकोति – ५, १२६, १२९, १३७, १४२, १६८, २०७
लोभुप्पत्ति – ३२५
लोमसायाति – ३०९
लोहिच्चोति – ३५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोहिते – ११४

व

वचनब्यतयो – १८८
वचीकम्मन्ति – २१३
वच्छतरसतानीति – २८५
वज्झाति – २०३
वटरुक्खं – ३०५
वड्ढेतीति – १०७, २०५
वणिब्बकाति – २८८
वण्णसम्पत्तिन्ति – २३६
वण्णेति – ३०९
वण्णेनाति – २४१
वत्थूति – १२८
वदमानाति – ११९
वधकचित्तेन – २४८
वधोति – ११०,१११
वनमूलफलाहारा – २७३
वन्दनकिरियाय – ७, ९
वन्देति – ६, ९, १०, १२
वमनन्ति – ११६
वयतीति – २५८
वयधम्माति – २४
वयोअनुप्पत्तोति – १८९, २७९
वरोति – १४
ववत्थापनवचनन्ति – १२०
वसनवनन्ति – १८४
वसिनो – १४
वसुधा – १६५
वाक्करणं – २७९
वाचकोति – २८
वादप्पमोक्खा – २९
वादप्पमोक्खानिसंसा – २९
वादोति – २०१, ३५५
वानविचित्तन्ति – ११३
वायामोति – १०५
वायुखन्धं – २००
वायोकसिणे – १४७
वाळवेधीति – १४४
वाळमिगानीति – २९३
वाळरूपानीति – ११३
विकाराभावतो – १३२, २०३
विकालभोजनाति – १०९
विकालेति – १०९
विक्कमीति – ९१
विक्खम्भनं – २२८
विक्खित्तचित्तो – ७२, २९३
विक्खेपो – १४३
विगतकिलेसो – २४६
विगततण्हं – १४८
विगतदरथोति – २३२
विगतदोसन्ति – १५
विगतमलं – १०
विघातन्ति – २८२
विचयो – १६९
विचारितधम्मे – १६
विचिकिच्छाति – २७६
विचित्तकम्मा – २१६
विजातितायाति – २१२
विजानातीति – २२२
विजितावीति – १८८, २५९
विज्जन्तरिकायाति – ४४
विज्जाचरणसिद्धि – ६५
विज्जामयो – १००, १०३
विज्जं – २६९
विञ्ञाणन्ति – ३४९
विञ्ञाणब्यापारोति – ३७, २२२
विञ्ञातब्बन्ति – ३४९
विञ्ञूति – ३११
वितक्कितं – १५५
वित्थम्भनं – ९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वित्थायितत्तन्ति – ३५९
विदितधम्मोति – २७६
विद्धंसेति – १८३
विनयपिटकन्ति – २३
विनयवादीति – १०८
विनयो – २३, ३१, ४३, ३३२
विनस्सेय्याति – १९२
विनासेतीति – १०६
विनिच्छयलक्खणो – १२९
विपरिणामधम्माति – २७५
विपरिणामो – ९३
विपरिफन्दतीति – १६९
विपल्लासोति – १८२
विपस्सना – १७५, १८१, २३८, २९६, ३३६
विपस्सनाकाले – २२०
विपस्सनाचारो – २३८
विपस्सनाचित्तपरिदमनादीनं – ३२७
विपस्सनाञाणकथावण्णना – २३५
विपस्सनाञाणन्ति – २३६
विपस्सनाञाणं – २३५, २३६, २३८, २४१
विपस्सनापादकज्झानं – ३३६
विपस्सनापादकन्ति – २३८
विपस्सनापुब्बका – ३३६
विपस्सनाभिमुखं – २३५
विपस्सनालाभी – २३६
विपस्सनासहगता – ९०
विपस्सनासातं – ३५८
विपस्सी – ६०
विपाकक्खन्धा – २०
विपाकोति – २००
विप्पलम्भेसीति – १९२
विप्पसन्नोति – २३५
विभज्जवादं – ३०८
विभवसम्पत्तिपच्चया – २७८
विभागोति – १८, ८२
विभावना – ११७, २४५
विमति – ४०, ९८, २७४
विमतिच्छेदना – ९८
विमानानि – १३७, ३५१
विमुच्चतीति – २३९, ३०१
विमुत्तिकिच्चं – २३
विमुत्तिगुणं – २३
विमुत्तिधम्मदेसना – ७
विमुत्तिभावतो – ३५९
विमुत्तियाति – ९५
विमुत्तिरसन्ति – २३
विमुत्तिसुखस्स – ११
विमुत्तो – १७४
विमोक्खधम्मन्ति – ३५०
विमोक्खो – १३२
विम्हापयन्तीति – ११४
विरतिचेतना – १७८, ३०२
विरतिचेतनानं – ३०२
विरतोवाति – १०१
विरत्तचित्तो – ६५
विरत्तभावतो – ३५२
विरागानुपस्सनायाति – ९३
विरुज्झतीति – ३५
विरेचनन्ति – ११६
विरोधाभावो – ४४
विरोधोति – १५५
विलम्बितं – २७९
विलासो – ३३५
विलोकितन्ति – २२०
विवट्टानुपस्सना – ९३
विवरन्ति – २२७
विवाहनं – ११६
विविधपाटिहारियन्ति – ३४,३५
विवेकजं – ३२५
विवेकट्ठकायानन्ति – २०५
विवेकसुखन्ति – २१०
विवेको – २०५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसङ्खतं – २३
विसङ्खारगतानन्ति – २०५
विसभागपुग्गलो – २२
विसभागवेदनाति – ३४१
विसयदस्सनं – १५२
विसयोभासनरसा – ६४
विसवणिज्जाति – २५०
विसारदो – ३९, ३१७, ३१८
विसिखाति – ११४
विसुद्धचित्तताय – १९९
विसुद्धाजीवो – ६७
विसुद्धिदेवापि – ५
विसुद्धिपच्चयन्ति – १९७
विसुद्धिभावना – १८०
विसुद्धियाति – ३१३
विसेसलाभी – १३०, १३६
विसेसलाभीवादो – १५४
विसोधेति – ४७
विसंयुत्तोति – ६
विसंवादनचित्तं – १०५
विस्सकम्मुना – ५७
विस्सज्जननयाति – १२३
विहननं – १४४
विहारोति – ३३६
विहेठनभावतोति – १०२
वीतिक्कमिस्सामीति – १०१
वीतिहरणन्ति – २१९
वीतिहरतीति – २२२
वीमंसा – १२९
वीरियन्ति – १२७, ३०३
वीरियपारमिता – ६३
वीरियबलेनाति – १६५
वीरियमयसरीरा – २६०
वीरियवा – ६२
वीरियसिद्धि – १८२
वीरियसंवरोति – १०८, ३१२
वीरियाधिट्ठानन्ति – ५८
वुट्ठीति – १८
वुद्धसीली – २७९
वुद्धोति – २७९
वूपकट्ठोति – ३१९
वेठकेहीति – २७४
वेदको – ३३२
वेदत्तयविभावनं – २८३
वेदनाकम्मट्ठानन्ति – १६४
वेदनाक्खन्धसङ्खहोति – १७८
वेदनादिक्खन्धचतुक्कं – ३४८
वेदनादीनवानवबोधेन – १६९
वेदनानन्ति – १७१, १७५
वेदनानुभवननिमित्तं – ९५
वेदनापच्चया – ४९, १६८, १७३
वेदनापटिबद्धं – १३४
वेदनासमोसरणाति – ९५, १७४
वेदनासीसेन – १३४
वेदयतीति – २३२
वेदयितन्ति – १५९
वेदयितरागे – १६९
वेदल्लसञ्ञा – ३०
वेदवादिनो – १३७, ३३०, ३३१
वेदानं – २५८
वेदेतीति – २३२
वेदेन – १८६
वेय्याकरणन्ति – ३०, १६५
वेरचित्तेन – ३५८
वेरञ्जकण्डे – २९
वेरन्ति – ३१०
वेरमणियोति – २५०
वेरमणीति – २९५
वेरीपुग्गलो – ६७
वेवचनपञ्ञत्ति – १७८
वेसारज्जप्पत्तोति – २७६
वेसालीति – २९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वोदानन्ति – ७५
वोहारविनिच्छयो – ५०
वोहारो – १४, १४३, ३३७
वंसञ्ञानि – २९५

स

सकटब्यूहादीति – ११३
सकदागामिनो – २४९
सकदागामी – २०७
सकलधम्मपटिपत्तिया – ९८
सकलन्ति – २११
सकसकवादा – १५४
सकसञ्ञीति – ३२६
सकुणोति – २२६
सक्कायदिट्ठिया – ५९, १२६
सक्कुणोति – ७१
सक्खिदिट्ठोति – १४२
सक्यमुनी – ९७
सक्याति – २६४
सखिलोति – २८१
सगारवं – २४१
सग्गमग्गो – ११४
सग्गमोक्खपथेसु – ७७
सग्गमोक्खमग्गं – २४३
सङ्कड्ढित्वाति – २७२
सङ्कप्परागो – १२५
सङ्खतधम्मसभावं – १५९
सङ्खतधम्मारम्मणन्ति – २७६
सङ्खधमको – ३५९
सङ्खलिखितन्ति – २१३
सङ्खारन्ति – २४८
सङ्ख्यावाचीति – ३२४
सङ्गहोति – २२, ८३, २७६
सङ्गामविजयोति – १६५
सङ्गीताति – १४
सङ्घोति – १२, १८९, २४६, २९४
सच्चन्ति – १२६, ३३९, ३४०
सच्चपारमिता – ६३
सच्चपारमी – ८३
सच्चमेवाति – ३३८
सच्चाधिट्ठानं – ८१, ८४, ८५, ८६
सच्चिकट्ठपरमत्थवसेनाति – ३७
सच्छिकत्वाति – ९, १०, ११
सच्छिकिरियाति – ११९
सज्जावुधोति – २३१
सज्झब्भरितन्ति – ३३३
सज्झायन्तीति – २०१, ३५५
सज्झायितं – २७३
सञ्चयवादो – १५७
सञ्चयो – १४५
सञ्ञाग्गन्ति – ३२९
सञ्ञाति – १५०, १५१, ३२६, ३३१
सञ्ञानिरोधेति – ३२२
सञ्ञानिरोधं – ३२०,३२९
सञ्ञीवादवण्णना – १५०
सञ्ञीवादा – १५०
सञ्ञूळ्हं – २७३
सण्ठातीति – १३७
सण्हसुखुमन्ति – ३४
सतिसम्पजञ्ञबलेन – ७८
सतिसम्पजञ्ञाधिट्ठानं – १६६
सतिसम्पजञ्ञानुट्ठानं – १६७
सतिसिद्धि – १८२
सतिसंवरो – १०८
सतीति – ३०, ३५, ४२
सतोति – १५३
सत्थवणिज्जाति – २५०
सत्थुसिद्धिया – ५०,५१
सत्तअरियपुग्गलविभावकञाणं – ११९
सत्तधम्माधिट्ठानं – १८३
सत्तपञ्ञत्ति – ९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तभङ्गदिट्ठि – १४६
सत्तरतनसमुज्जलं – ४३
सत्तलोकग्गहणन्ति – २०९
सत्तवणिज्जाति – २५०
सत्तिपञ्जरन्ति – २२
सत्तोति – ९९, १४०, ३०६, ३३८
सदेवकन्ति – २०८
सद्दनयो – ४८
सद्दनिरुत्तिया – ३३८
सद्दप्पयोगोति – २५६
सद्दविदू – २५६
सद्दसिद्धि – २५५
सद्दायतनं – ३७, ९६
सद्देनाति – २९९, ३००
सद्धम्मचक्कप्पवत्तनतो – २४२
सद्धम्मविमुखं – २४३
सद्धम्मसवनेन – ३८
सद्धम्मं – ९, ११, २०, २९४
सद्धापञ्ञा – ९४
सद्धापटिलाभोति – २४७
सद्धामूलिकाति – २४६
सद्धायिको – १०५, १०६
सद्धावहगुणस्साति – १४
सद्धासम्पन्नोति – ३४४
सद्धिन्ति – ३०२, ३४६
सनरामरलोकगरुन्ति – ५
सनरामरलोकोति – ५
सनिघण्डुकेटुभानन्ति – २५७
सन्तकायचित्तो – ७७
सन्तभावो – ११८
सन्ताति – २६४
सन्तापा – ५९
सन्तारम्मणानि – ११८
सन्तासन्ति – १३९, १९२, २४५
सन्तिपटिस्सवकम्मन्ति – ११६
सन्तुट्ठोति – २२५
सन्दिद्धं – २७९
सन्धाविस्सन्ति – २३
सन्नितोदकं – ३३३
सन्निधिं – ११२
सन्निपतितानन्ति – २०
सपरिग्गहोति – ३५८
सप्पटिहरणन्ति – ३३६
सप्पाटिहारियं – २०
सप्पायन्ति – २०५
सप्पायसम्पजञ्ञं – २१५
सप्पीतिकतण्हं – ९३
सब्बकिच्चकारीति – २१५
सब्बकिलेसप्पहानं – २६१
सब्बकिलेसविमुत्ति – २३९
सब्बकिलेसेति – ९३
सब्बञेय्यधम्मं – ४८
सब्बञ्ञुतञाणं – २३, ४९
सब्बञ्ञुतञ्ञाणधम्मा – १२१
सब्बञ्ञूति – ५४
सब्बदिट्ठिगतिकसञ्ञं – १७०
सब्बदुक्खक्खयोति – २४८
सब्बदोसमलरहितं – १०
सब्बपारमियो – १७५
सब्बलोकुत्तमो – ७६
सब्बविदू – ११९, १९३
सब्बवेदनासुयेव – १३४
सब्बावतो – २३२
सब्यञ्जनोति – २०६
सभावधम्मनिरुत्तिं – २७
सभावनिरुत्ति – २०६
सभावलक्खणावबोधो – १३१
समणकम्मसङ्खाताति – ३१३
समतलन्ति – ३५८
समत्थन्ति – १३
समथनिमित्तं – ६२
समथविपस्सना – १८१, ३३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समथविपस्सनातरुणभावतो – २५४
समथविपस्सनानिप्फत्ति – १६७
समथविपस्सनाभावनापारिपूरी – १८०
समधिगमोति – ९२
समन्तचक्खु – २१४
समन्ततोति – २२८
समन्तानगरन्ति – २७४
समभरिताति – ३५६
समयन्तरन्ति – १२२
समययुत्तन्ति – ४९
समयोति – ४१
समा – ९१, ३१४
समाधिक्खन्धो – ८,१७०
समाधिनोति – २३२
समाधिपञ्ञासिद्धि – १८२
समाधिपदट्ठाना – ६२,६४
समाधिभावना – ३००
समाधीनन्ति – ३००
समानयीति – २७४
समापत्तियो – १६, २१, २७०, ३२७
समाहितचित्तस्स – ३०४, ३०६
समाहितो – ८१, १८२
समिद्धाति – ३४४
समिद्धिकालेति – ११६
समुच्छेदपटिपस्सद्धिविमुत्तियो – ३१६
समुट्ठानट्ठो – १३२
समुट्ठापनलक्खणं – ९५
समुदयभावेन – ३३३
समुदयसञ्जातीति – ३५१
समुदयादियथाभूतवेदनं – १७०, १७५, १७६
समुदयोति – ४१
समुपब्यूळ्हन्ति – २७३
समेनाति – २५०
समोधानन्ति – ४१
समोसरणं – ९५
सम्पजञ्ञभाजनीयं – २१५
सम्पजञ्ञविपस्सनाचारवसेन – २२३
सम्पजञ्ञेन – २१५
सम्पजञ्ञं – २१५, २२३
सम्पजानकारिता – २२३
सम्पजानकारिनोति – ३२८
सम्पजानकारीति – २१५
सम्पजानपदं – ३२८
सम्पजानसद्दस्स – २१५
सम्पजानो – ८५, ८९, २१५
सम्पजानं – २१५
सम्पतिजातोति – ९०
सम्पदाति – २७१
सम्पदानवचनन्ति – २४०, ३५२
सम्पयुत्तधम्माति – ९५
सम्पहंसनन्ति – २९१
सम्पहंसनेति – २०६
सम्पादेत्वाति – ३१९
सम्पापकन्ति – २३९
सम्फन्ति – १०६
सम्बुकाति – २४०
सम्बोधिपरायणो – ४४
सम्भवन्तीति – ३५, ६९
सम्भाराति – १०५
सम्मदेवाति – ३६, ३१९
सम्मसति – २३६, २९६
सम्मसनन्ति – ३२६
सम्माअभिनिरोपनलक्खणो – ३०१
सम्माकम्मन्तो – ३०१, ३०२
सम्मादिट्ठिति – २४६
सम्मापयोगोति – २२२
सम्मामनसिकारो – १२७
सम्मावाचा – ९४, ३०१
सम्मावायामो – ३०२
सम्मासङ्कप्पो – ३०३, ३२४
सम्मासति – ३०२
सम्मासमाधि – १४६,३०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मासम्बुद्धत्तसिद्धि – ५०
सम्मासम्बुद्धभावो – ९०
सम्मासम्बुद्धेनाति – ४९
सम्मासम्बुद्धोति – २६१
सम्मासम्बोधीति – ७
सम्मुतिकथा – ३३८
सम्मोदनीयन्ति – २६२
सम्मोदितन्ति – २६१
सम्मोहविद्धंसनो – २८
सयनं – ११०, २२४
सयम्भू – ९
सयम्भूञाणेन – ९
सयंजातन्ति – २९८
सरणन्ति – १२, २४३, २४५, २४७, २५१
सरणीयन्ति – २६२
सरणं – २४३, २४६, २४८, २५१, २९४
सरीरचलनन्ति – १९२
सरीरन्ति – १५०, १५७, २७९, ३०५, ३०६
सरीरसण्ठानेति – २९९
सरीसपेति – २९३
सलाकवेज्जकम्मन्ति – ११६
सलाकहत्थन्ति – ११३
सल्लक्खणन्ति – ३४१
सल्लेखो – ११२
सवनं – ३८, ५८, १०९
सविकाराति – १६३
ससम्पयुत्तधम्मं – ३०६
ससिलोकं – ३०
सस्सतदिट्ठिनोति – १२६
सस्सतदिट्ठिभावो – १५६
सस्सतवादो – १२७, १२९, १३०, १३२, १४९
सस्सतिसमन्ति – १२८, १४९
सस्सतोति – १२६, १२८, १६०, ३३०
सहकारीकारणन्ति – १३०
सहजातपच्चयोति – २२१
सहतेति – ५४
सहब्यताति – ३५५
सहभावोति – ३५५
सहितन्ति – ११४
सहेतुकोति – २६८, ३२४
सळायतनन्ति – ११०
साणधोवनं – ११३
साणानि – ३१४
सात्थकन्ति – २१६
सात्थकसम्पजञ्ञं – २१५
सात्थोति – २०६
साधुकन्ति – २०६
साधूति – १८९,३१०
सापतेय्यं – ७७, २९१
सामञ्ञफलन्ति – १९५
सामञ्ञफलानि – २४८
सामञ्ञविधि – ३०
सामवेदो – ३५५
सारप्पत्ताति – २०८
सारीरिकचेतियं – २१६
सारोति – ३२९, ३४२
सालाति – ३२२
सावकपारमिञाणन्ति – १२०
सावज्जोति – २४९
सावत्थियन्ति – ३२०
सासनट्ठेन – १८५
सासनन्ति – २१०
सिक्खतीति – ३२६
सिक्खाति – ३२४
सिक्खापदन्ति – १०३, २१३, ३२२
सिक्खापदानीति – ३०२
सिक्खाप्पहानगम्भीरभावं – २६
सिखा – ११०
सिद्धिदस्सनं – ३९
सिद्धो – १५, ९६, १३८, १४३, १५२, २३३, ३१४
सिप्पियोति – २४०
सीलकथाति – १६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीलक्खन्धपुब्बङ्गमो – ८
सीलक्खन्धो – १७०,३४२
सीलझानद्वयेन – ८३
सीलदिट्ठादीनं – १४
सीलन्ति – ६९, १७९, २१४, २४९, २७०, २८३
सीलपञ्ञाकथावण्णना – २८२
सीलपञ्ञाणन्ति – २८३
सीलपारमिता – ६३
सीलपारमियो – ८३
सीलपारिसुद्धिं – ६९
सीलमत्तकन्ति – ५६, १७२
सीलमयन्ति – १३
सीलवतो – ५६, ६८, ६९
सीलवा – ६८, ६९, २७९, २८२, ३३३
सीलवित्थारकथा – १६
सीलविसुद्धि – १६७
सीलविसोधने – ३१९
सीलसमाधिपञ्ञाक्खन्धा – ११
सीलसमाधिपञ्ञावसेनाति – २५५
सीलसमाधिविपस्सनातिआदि – २१०
सीलसम्पदा – ६९, ७१, २९६, ३१५
सीलसम्पन्नो – २४९
सीलसंवरो – ७४, ३१२
सीलादिचतुक्कं – ७५
सीलादिधम्मा – ७३
सीलानीति – ६८
सीलेनधोताति – २८३
सीसविरेचनं – ११६
सीहकुमारो – १५
सीहनादन्ति – ३१२
सीहळट्ठकथायं – ४७
सीहळदीपवासीनं – १५
सीहळभासं – १५
सीहळो – १५
सीहोति – ३१७
सुकुमाराति – १०७
सुक्कपक्खन्ति – १९५
सुक्खविपस्सकखीणासवपरियन्तानं – २१
सुखन्ति – १८२, २१७, २३४, २३७, ३३६
सुखविपाकाति – १९५
सुखविहारोति – ३३६
सुखवेदनाय – २२९
सुखसीलो – ७८
सुखुमसञ्ञा – ३२५
सुखुमाति – ३२५
सुगतियन्ति – २७५
सुगतोति – ३२३
सुगम्भीराति – १२२
सुचिभूतेनाति – १०३
सुजन्ति – २८२
सुजातोति – २७८
सुञ्ञतापकासनं – ११७
सुञ्ञन्ति – १३७, २२६
सुञ्ञभावन्ति – १०६
सुञ्ञागारन्ति – ३१६
सुतकवि – ११५
सुतमयञाणं – ३३०
सुतवोहारो – ३८
सुत्वाति – २९७
सुत्तगुळेति – १९९
सुत्तङ्गसङ्गहो – २९, ३०
सुत्तदेसनाति – ५२
सुत्तनिक्खेपो – ५१, ५२
सुत्तन्ति – १४, २५, ३०
सुत्तसन्धि – १७२
सुत्ताणाति – २५
सुद्धकोसेय्यन्ति – ११३
सुद्धपरियायो – ३४३
सुद्धविपस्सना – ३३६
सुद्धस्साति – १८७
सुधम्मतन्ति – २४७
सुनिपुणविनिच्छया – १५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुन्दरन्ति – १४६, २५७
सुपरिसुद्धो – ३१२
सुप्पटिविद्धाति – ४०
सुप्पतिट्ठितभावोति – २७६
सुभन्ति – १८२, ३४८
सुभोति – २३५, ३४१
सुरापातिन्ति – ३२३
सुवण्णसत्थकेनाति – १८५
सुविहतन्तरायोति – १३
सूचेतीति – २५
सूरन्ति – १९२
सूरभावन्ति – २६१
सूरियरस्मिं – २००
सूरोति – २८८
सेक्खासेक्खधम्मे – १२
सेक्खोति – २१
सेट्ठनादो – ३१८
सेट्ठन्ति – ४३, ३००, ३२६, ३२९
सेट्ठाचरियाति – २१२
सेतम्हि – ९१
सेनासनन्ति – २२७
सेनियो – २७७
सेळन्ति – २२७
सेवनाचित्तं – १०४
सोतब्बाति – ३५७
सोतापत्तिफलसच्छिकिरियाय – ३०१
सोतापत्तिमग्गञाणेनाति – ३४९
सोतापत्तिमग्गेन – ५
सोतापन्नो – २०७, २४८
सोतिन्द्रियविक्खेपवारणं – २०६
सोतुकामोति – १८९
सोत्थिभावोति – ६६
सोधनहारवण्णना – १७९
सोभनकरन्ति – ११३
सोमनस्सन्ति – ५५, १३३
सोमनस्सुप्पत्तियं – १३३
सोळसपरिक्खारन्ति – २८५
संकिलेसधम्मा – ३१५, ३५८
संयतचित्तो – २०३
संयोगाभिनिवेसन्ति – ९३
संयोजनानं – २०७
संवच्छरोति – १८८
संवरन्ति – ३१०
संवरासंवरकथा – २६
संवेगन्ति – १३९, १९२
संवेगुप्पत्तिं – ४६
संसन्दित्वाति – २७०, २७३, ३२०
संसरन्तोति – २१५
संसारतो – १०, ११४, १६२
संसारदुक्खतो – ७१
संसारदुक्खवूपसमं – १५६
संसारमहोघतो – ७, ७१
संसारोघन्ति – १८९
संसुद्धगहणिकोति – २७८
संहताति – २७७
संहतोति – २४५
स्वाक्खातधम्मोति – २१२
स्वागतवादीति – २८१
स्नेहपरेताति – २३३
स्नेहानुगताति – २३३

ह

हतत्ताति – १९१
हत्थकुक्कुच्चन्ति – १९३
हत्थतलं – ८०
हत्थदानं – ७६
हत्थमुद्दा – ११५, १९४
हत्थाचरिया – १९४
हत्थिअस्सरतनानं – २६०
हत्थिघटाति – १९२
हत्थिरतनं – २५९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थिसारिपुत्तोति – ३२०
हदयन्ति – ११०
हदयवत्थु – १०२
हदयवत्थुनिस्सयं – १०२
हदयसीतलभावहेतूति – ३
हदयं – ३, १८८
हम्मियं – २२६, २२७
हरतीति – १८५, २१६
हलिद्दिरागादयो – १०५
हितचरिया – ६५, ८२
हितन्ति – २९१
हितसुखानुचिन्तनं – ८२
हितानुकम्पी – ३१३, ३५१
हिनोति – १२३
हिरिओत्तप्पं – १८०
हिरोत्तप्पसम्पत्ति – १६७
हिंसादिपापधम्मं – २९५
हीनकल्याणभेदेन – ४९
हीनमज्झपञ्ञा – १३०
हेट्ठिमसेक्खञाणं – १२०
हेतुनाति – ३१९
हेतुपच्चयादिभावो – १६
हेतुमूलके – १२२
हेतुलक्खणन्ति – ९४
हेतूति – १७०, १८०, २७८, ३००
होमं – ११५
हंसनं – ३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाथानुक्कमणिका

अ

अच्ची यथा वातवेगेन खित्ता – १७४
अनेकभेदासुपि लोकधातुसु – ९८
अनेकसाखञ्च सहस्समण्डलं – ९१
अरञ्ञे रुक्खमूले वा – २
असङ्खेय्यानि नामानि – ५९, ३५७

आ

आदिच्चकुलसम्भूतो – २६६

इ

इमे धम्मे सम्मसतो – १६५

ए

एकायनं जातिखयन्तदस्सी – ३१३
एवं सब्बङ्गसम्पन्ना – ८९

क

कप्पकसाये कलियुगे – ४४

च

चित्तीकतं महग्घञ्च – १३

ठ

ठपिता येन मरियादा – २६६

त

तथञ्च धातायतनादिलक्खणं – ९७
तथानि सच्चानि समन्तचक्खुना – ९७
तस्स पुत्तो मघदेवो – २६७
तस्स पुत्तो महातेजो – २६६
तस्स पुत्तो महावीरो – २६६
तस्स सूनु महातेजो – २६६
तस्सासि कल्याणगुणो – २६६
तिकञ्च पट्ठानवरं दुकुत्तमं – १२२
तिकञ्च...पे०... – १२२
तेसं पच्छिमको राजा – २६७

द

दानं सीलञ्च नेक्खम्मं – ६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न

नेलङ्गो सेतपच्छादो – १०७

प

पहाय कामादिमले यथा गता – ९७

ब

बुद्धोति कित्तयन्तस्स – २
बुद्धोपि बुद्धस्स भणेय्य वण्णं – ८, ४६

म

महाकारुणिको सत्था – ८८

य

यतो च धम्मं तथमेव भासति – ९८
यतो यंतो सम्मसति – २३६, २९६
यथाभिनीहारमतो यथारुचि – ९८
यसस्सिनं तेजस्सिनं – २६६
येन देवूपपत्यस्स – ६
यो चक्खुभूतो लोकस्स – २६६
यो निन्दियं पसंसति – ४६

व

वरो नाम महातेजो – २६६
विरत्तो सब्बधम्मेसु – ८८

स

सच्चो चागी उपसन्तो – ८८
सब्बदा सब्बसत्तानं – ८८
सस्सतुच्छेददिट्ठि च – २६
सुत्तन्ति सामञ्ञविधि – ३०

—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ-सूची

पालि टेक्स्ट सोसायटी (लंदन) – १९७०

पालि टेक्स्ट सोसायटी पृष्ठ संख्या	पालि टेक्स्ट सोसायटी प्रथम वाक्यांश	वि. वि. वि. पृष्ठ संख्या	वि. वि. वि. पंक्ति संख्या
१	संवण्णणारम्भे	१	१
२	ये भिक्खवे	२	५
३	कम्पनं हदयक्खेदं	३	३
४	ईसकम्पि	३	२१
५	अथ वा भगवतो	४	११
६	समासपदेसु	५	३
७	कायगमनं	५	२०
८	तंतंगतिसंवत्तनकानं	६	१३
९	रूपकायसम्पदा	७	७
१०	सब्बलोकियगुणसम्पत्ति	७	२४
११	सब्बेसञ्च बुद्धगुणानं	८	१७
१२	उपगतो ति	९	११
१३	थोमेमि वा	१०	४
१४	एत्थ च भावेत्वा	१०	२१
१५	मारसेनमथनानन्ति	११	१४
१६	गुणमारणे	१२	४
१७	मारसेनमथनानन्ति	१२	२४
१८	चित्तीकतभावादयो	१३	१७
१९	अग्गसावकादयो	१४	१०
२०	यसत्थेरादीहि	१५	१
२१	महाविहारवासीनं	१५	२२
२२	रूपारूपावचरज्झानानि	१६	१६
२३	वग्गसुतन्तवसेन विभागं	१८	२
२४	यस्सा पठममहासङ्गीतियं	१९	१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५	विनेय्या भगवता	१९	२०
२६	भिक्खूनं उस्साहं	२०	१६
२७	नवानुपुब्बविहारछळभिञ्ञाप्पभेदे ति	२१	८
२८	दट्ठब्बं	२१	२५
२९	पठमं आवुसो	२२	१४
३०	किलेसानं	२३	४
३१	अहञ्च तण्हानं	२३	२४
३२	अत्तत्थपरत्थादिभेदेति	२४	१८
३३	निद्धारेत्वा आपेतब्बो	२५	९
३४	अभिकन्तेनाति एत्थ	२५	२६
३५	उपारम्भनिस्सरणधम्मकोसरक्खणहेतुपरियापुणनं	२६	१५
३६	अत्थदेसनापटिवेधाधारभावोयुत्तो	२७	४
३७	अविज्जासङ्खारादिधम्मो	२७	२१
३८	तदत्थप्पकासको सद्दो	२८	८
३९	यन्ति यं	२८	२६
४०	धम्मचिन्तन्ति	२९	१५
४१	विसेसविधयो परे	३०	९
४२	सुत्तङ्गसङ्गहो न	३०	२७
४३	एवं पठममहासङ्गीतिं	३२	१
४४	अत्थुद्धारक्कमेन	३२	१५
४५	एत्थ पुप्फरासिद्धानियतो	३३	११
४६	दुक्खाय संवत्तनाकारो	३३	२९
४७	भगवतो वेनेय्यगता	३४	२०
४८	एवं वुत्ताय	३५	१२
४९	तेनेवाह	३६	७
५०	परमत्थतो	३७	१
५१	सब्बस्सापि	३७	१९
५२	एव वा	३८	१०
५३	फलभूतेन	३८	२६
५४	आदि पुरिमपच्छिमभावो	३९	१४
५५	अनुसन्धियो	४०	३
५६	अत्तनि अट्ठपेन्तो	४०	१९
५७	एव च समयो	४१	६
५८	समिति सङ्गति	४१	२३
५९	परमत्थतो अविज्जमानो	४२	१४
६०	भगवा विहरति	४३	४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१	वचनतो धम्मस्स	४३	२३
६२	एव उदाहरितब्बा	४४	१४
६३	आदिसु विय	४५	३
६४	तथा उत्तरिमनुस्सधम्म	४५	२१
६५	बुद्धादीनं	४६	११
६६	भगवतो तं मग्गं	४७	७
६७	वदन्ति तेसं	४७	२४
६८	असाधारणञाणविसेसवसेन	४८	१७
६९	हकारो निपातमत्तं	४९	९
७०	आदि देसना	४९	२६
७१	चिरट्ठितिका होति	५०	१६
७२	ञाणकरुणापरिग्गहितसब्बकिरियस्स	५१	४
७३	अट्ठुप्पत्तिया	५१	२०
७४	अज्झासयपुच्छानं	५२	१६
७५	आदिसु उपमाने	५३	४
७६	आदिसु । इधापि	५३	१५
७७	अन्तरायो ति इदं	५४	३
७८	न सब्बञ्ञू ति	५४	२१
७९	तुम्हंयेवस्स	५५	११
८०	तं कथावत्थुप्पकरणं	५६	२
८१	तदेकदेसस्सेव	५६	१५
८२	अभिसम...पे०... मूले	५७	७
८३	उदकं । अङ्गुलन्तरिकाहि	५८	२
८४	द्वत्तिंसदोणगहणप्पमाणं	५८	२०
८५	एत्थ जायतीति	५९	९
८६	येन अभिनीहारेनाति	६०	३
८७	दानसीलादिगुणविसेसयोगेन	६०	१६
८८	कति नु खो भन्ते	६१	६
८९	अपरो नयो	६२	३
९०	परहितकिरियारम्भे	६२	२१
९१	एत्थ अविसेसेन	६३	९
९२	संवेगपदट्ठानं	६४	१
९३	आदीना पवत्तो	६४	१८
९४	तथाउस्साहउम्मग्गावत्थानहितचरिया	६५	९
९५	एते हि	६६	४
९६	एवायं अनुग्गहो ति	६६	२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९७	अतिसङ्गप्पवत्ति	६७	१७
९८	साधूनं अलङ्कारविसेसो	६८	७
९९	अभिजनसापतेय्याधिपतेय्यायुरूपट्ठानबन्धुमित्तसम्पत्तीनं	६८	२०
१००	सुखविसेसाधिट्ठानभावतो	६९	१०
१०१	उपकारकरणसमत्थता	६९	२७
१०२	पि सोमनस्सजाता	७०	१७
१०३	पञ्ञापारिसुद्धियं	७१	१०
१०४	समधिगन्तुं,किमेत्थ	७२	१
१०५	यदि पनस्स	७२	२०
१०६	खमन्ति बुद्धधम्मा	७३	१२
१०७	धम्मसंविभागसहाया	७४	५
१०८	समादानाधिट्ठानपारिपूरिनिप्फत्तियो	७४	२३
१०९	आरम्मणेसु	७५	११
११०	सीलं।	७६	४
१११	किलेसदासव्यविमोचनत्थं	७६	२०
११२	सम्मासम्बोधिया	७७	९
११३	परिच्चागसीलो	७७	२७
११४	बोधिं समयन्तरेसु	७८	२०
११५	अनुभवितब्बा	७९	११
११६	मिच्छाविकप्पो	७९	२५
११७	तथा सम्मासम्बोधिया	८०	१६
११८	विरवन्ते उक्कामुखे	८१	६
११९	तत्थ च अचलता	८१	२४
१२०	दस पारमियो	८२	१३
१२१	जीवितपरिच्चागो	८३	४
१२२	दानखन्तियुगलेन	८३	२३
१२३	उपसमाधिट्ठानं	८४	१४
१२४	अविसंवादनतो	८५	४
१२५	तिक्खत्तुं सीहनादं	८५	२२
१२६	सब्बसङ्खारूपसमेन	८६	१४
१२७	सब्बो पि हि	८७	११
१२८	परिपूरिताभिबुद्धं	८८	१
१२९	अभिनीहारक्खणे	८८	२२
१३०	सतो सम्पजानो	८९	१८
१३१	सुदुक्करभावदस्सनत्थञ्च	९०	११
१३२	वक्खतीति। यथा	९१	३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३३	उप्पज्जनकविसेसा	९१	२३
१३४	ञाणपरिञ्ञाय	९२	१७
१३५	पटिनिस्सज्जनाकारेन पवत्ता	९३	७
१३६	अपेक्खित्वा वुत्तं	९३	२२
१३७	आदि । फरणं	९४	८
१३८	छन्दस्सति	९५	३
१३९	तथाधम्मा नाम	९५	१७
१४०	द्विपञ्ञासाय	९६	१०
१४१	तिरियं विय	९७	१
१४२	तथानि सच्चानि	९७	२३
१४३	अतुलितन्ति : एत्तकमेतन्ति	९८	२१
१४४	महाभूतेसु	९९	१४
१४५	नापि विकोपनीयो	१००	७
१४६	अनुरूपफलुप्पादननियतेसु	१००	२६
१४७	समादिन्नविरतिका पि	१०१	१७
१४८	हि चक्खुविञ्ञाणादीनि	१०२	८
१४९	सच्चमेतं । अयं पन	१०२	२७
१५०	अञ्ञतरकोट्ठासभावतो	१०३	२२
१५१	महासावज्जा ति	१०४	१५
१५२	विसंवादितब्बत्थवाचकत्तसम्भवतो	१०५	३
१५३	हलिद्दिरागादयो	१०५	२१
१५४	पेसुञ्ञं	१०६	१८
१५५	चेतना बलवती	१०७	१४
१५६	कथन्ति आह	१०८	६
१५७	अत्थवित्थारसङ्गाहिकाय	१०८	२४
१५८	याव मज्झन्तिका	१०९	१५
१५९	अत्थरणन्ति	११०	२
१६०	तिलादीनं नाळिअदीहि	११०	२०
१६१	विभजनवसेन	१११	८
१६२	रूपारूपन्ति	११२	५
१६३	पि । योजनमत्तमेवाति	११२	२१
१६४	पदानीति सारिआदीनं	११३	६
१६५	सुद्धकोसेय्यन्ति	११३	२२
१६६	कुम्भट्ठानापदेसे	११४	११
१६७	अङ्गसम्पत्तिविपत्तिदस्सनमत्तेन	११५	६
१६८	अङ्गुलिसङ्कोचनेनेव	११५	२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६९	आदिच्चपरिचरिया	११६	१२
१७०	मूलानि पधानानि	११६	२६
१७१	वेदककारकसभावभावदस्सनमुखेन	११७	१४
१७२	चत्तारो पाराजिका	११८	४
१७३	अपरो नयो	११८	२६
१७४	वदमाना ति एत्थ	११९	१५
१७५	को वा एवमाह	१२०	४
१७६	सब्बधम्मवबोधतो	१२०	१८
१७७	सनिस्सयानं	१२१	१०
१७८	ठानविसेसो कामावचर	१२२	१
१७९	पच्चयानुलोमे	१२२	२५
१८०	वचनतो द्वादसप्पच्चया	१२३	१९
१८१	सम्बन्धानं	१२४	११
१८२	कोट्ठासेसुति	१२५	२
१८३	येन स्वाहं	१२५	१४
१८४	अधिकन्हि	१२६	३
१८५	खन्धं अत्ता	१२६	१९
१८६	उप्पादवन्तता	१२७	१०
१८७	ते च सत्ता	१२८	१
१८८	पक्खन्दनेन दिट्ठिगतिको	१२८	२०
१८९	अनुविचरितन्ति	१२९	१०
१९०	भजेय्याति न खो	१३०	२
१९१	अञ्ञतरभेदसङ्गहवसेनेव	१३०	१९
१९२	सामञ्ञलक्खणावबोधो	१३१	८
१९३	च। सञ्ञा पि	१३१	२४
१९४	उस्सावबिन्दु विय	१३२	८
१९५	वचनं न	१३२	२५
१९६	भूमिदस्सनत्थं	१३३	१५
१९७	अभावट्ठेन	१३४	४
१९८	एकच्चसस्सतिका	१३४	२१
१९९	मकुटभावो	१३५	१६
२००	असस्सतभावावबोधो	१३६	५
२०१	विसेसलाभी	१३६	२४
२०२	तत्थ बाहिरपच्चयेहि	१३७	१४
२०३	कम्मपच्चयो; सो व	१३७	२९
२०४	च वसेन	१३८	१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०५	कम्पनन्ति आह	१३९	६
२०६	उप्पत्तिमत्तपटिबद्धेन सत्तनिम्मानेन	१३९	२२
२०७	भिक्खवे विज्जति	१४०	१३
२०८	मनेनाति	१४१	१
२०९	यस्मा पन	१४१	१९
२१०	वादीनं अन्तञ्च	१४२	९
२११	अन्तताअन्तततातदुभयविनिम्मुत्तो	१४२	२६
२१२	आदिना अत्थतो	१४३	१५
२१३	एवं पि मे नो	१४४	७
२१४	पण्डितो ति	१४४	२३
२१५	सस्सतदस्सनवसेन	१४५	१२
२१६	दिट्ठिगतिकता युत्ता	१४६	२
२१७	च इममत्थं	१४६	१८
२१८	चतुत्थज्झानाधिगमाय	१४७	९
२१९	अरूपविरागभावनापरिकम्मं	१४७	२५
२२०	अन्तरधायतीति	१४८	१५
२२१	गहेतब्बो ति	१४९	३
२२२	वा सन्निट्ठानतो	१४९	२१
२२३	अरोगो परम मरणाति	१५०	१६
२२४	सङ्खारवसेससुखुमभावप्पत्तधम्मा	१५१	१०
२२५	अन्तनन्तिकवादे इध	१५२	२
२२६	अञ्ञाय सञ्ञाय	१५२	१९
२२७	विसेसेन नासो	१५३	१३
२२८	विनेय्यज्झासयानुरूपं	१५४	५
२२९	भगवता वुत्तसत्तकतो	१५४	२४
२३०	दिट्ठधम्मो ति	१५५	१४
२३१	अदुक्खमअसुखेन	१५६	८
२३२	तस्स उभयभागो	१५६	२५
२३३	आदि वचनतो	१५७	१५
२३४	च एवं पकारा	१५८	१
२३५	तेसं वसेन	१५८	१७
२३६	इमस्मिम्पि सुत्ते	१५९	९
२३७	यदेतं सस्सतो	१६०	४
२३८	अज्झत्तिकायतनेहि	१६१	४
२३९	च वुच्चति	१६१	२२
२४०	तण्हा तण्हा व	१६२	१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४१	उपपत्तिभवकारणकम्मभवकारणभावतो	१६३	४
२४२	कारणा आसवपच्चया ति	१६३	२७
२४३	दससहस्सी लोकधातूति	१६४	१६
२४४	अत्थचरताय सकमना	१६५	८
२४५	आवहकिरियानुभावघट्टिता	१६५	२६
२४६	पिण्डत्था पन	१६६	२१
२४७	विक्खम्भनसमुच्छेदप्पहानं	१६७	१६
२४८	छसाराणीयधम्मविभावना	१६८	६
२४९	आघातादीनं	१६८	२४
२५०	संवत्ततीति युज्जति	१६९	१६
२५१	सुपतिट्ठितचित्तो	१७०	७
२५२	आयतनामं	१७०	२५
२५३	अविज्जादीनं पि	१७१	१६
२५४	इमाय देसनाय	१७२	८
२५५	आदिकाय देसनाय	१७२	२०
२५६	तयिदं सङ्कतं	१७३	१४
२५७	ये हि केचि	१७४	७
२५८	आदिपञ्ञापनस्स	१७५	६
२५९	फलं । तेसं	१७५	२५
२६०	तण्हा अनेकविहितं	१७६	१७
२६१	दिट्ठिसस्सतादिवसेन	१७७	१३
२६२	आघातादीनं	१७८	९
२६३	नयो । तथा	१७९	३
२६४	अविसेसेन हेतु	१८०	५
२६५	ति आदिवचनेहि	१८१	३
२६६	कुसलमूलेहि	१८१	२३
२६७	आदिना वुत्तेन	१८२	२३
२६८	राजगहेति एत्थ	१८४	१
२६९	सब्बनिमित्तानं	१८४	१७
२७०	कुमारेन भतो	१८५	१५
२७१	चेतियङ्गने	१८६	९
२७२	पटि सद्दा	१८७	१
२७३	बहुसो अतिसयतो	१८७	१९
२७४	तत्थ अब्भादयो	१८८	९
२७५	पब्बजितसमूहसङ्घातो	१८९	३
२७६	पुब्बे पितरा	१८९	२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७७	गब्भोक्कन्ति-अभिजाति	१९०	१३
२७८	इतिपेतं भूतं	१९१	८
२७९	दुरूपसङ्कमभावदस्सनत्थं	१९१	२४
२८०	भीरुं पसंसन्तीति	१९२	१५
२८१	दस्सेतुं	१९३	५
२८२	तग्घाति एकंसेन	१९३	२२
२८३	इस्सासा धनुसिप्पस्स	१९४	११
२८४	चुण्णविलेपनादीहि	१९४	२५
२८५	मग्गो सामञ्ञं	१९५	१०
२८६	सयं करोन्तस्साति	१९६	३
२८७	वदन्ति	१९६	२०
२८८	अत्तकारो ति	१९७	९
२८९	पे०...वदतीति	१९७	२५
२९०	मनोकम्मं	१९८	१७
२९१	अत्तनो वा	१९९	७
२९२	पण्डितो पि	१९९	२०
२९३	याथावतो	२००	१३
२९४	दत्तूहि बालमनुस्सेहि	२०१	१
२९५	निज्झानक्खन्तिया	२०१	२१
२९६	दिन्ने इतरा	२०२	१०
२९७	अकटविधा	२०२	२४
२९८	न हन्तब्बता	२०३	१४
२९९	अमराविक्खेपे	२०४	३
३००	देति, ततो	२०४	२०
३०१	सप्पायन्ति पथयं	२०५	१८
३०२	अत्थो । सम्पटिच्छने	२०६	८
३०३	चतुपारिसुद्धिसीलादिको । तेन	२०६	२४
३०४	वुत्तत्ता	२०७	१९
३०५	ब्रह्मायुपोक्खरसातिआदिब्राह्मणा	२०८	९
३०६	एव नयो	२०८	२७
३०७	उक्कट्ठपरिच्छेदतो	२०९	१६
३०८	यथापराधादिसासितब्बभावेन	२१०	१२
३०९	किरातभासा	२११	१
३१०	यदत्थं देसितं	२११	२१
३११	पब्बजितानम्पि	२१२	१२
३१२	सङ्गलिखितन्ति	२१३	४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१३	कतमञ्च	२१३	२४
३१४	अविप्पटिसारादिनिमित्तं	२१४	१२
३१५	पटिक्कमनं	२१५	६
३१६	दट्ठब्बो	२१५	२२
३१७	उग्गहेत्वा	२१६	१३
३१८	कम्मजतेजो ति	२१७	५
३१९	मद्दन्ताति	२१७	२२
३२०	तस्मातिह ते	२१८	१५
३२१	दस्सेन्तो	२१९	६
३२२	रूपधम्मानम्पि	२१९	२३
३२३	अञ्ञं उप्पज्जते	२२०	११
३२४	अत्तनो कम्मट्ठानवसेनेव	२२१	३
३२५	सामग्गियं	२२१	१९
३२६	करोन्तो हरति	२२२	१४
३२७	आहारो निचितो	२२३	४
३२८	सब्बम्पि	२२३	२२
३२९	होतीति एवं पन	२२४	१३
३३०	कप्पिये पच्चये	२२५	२
३३१	इच्छतासन्तुट्ठीसु	२२५	१९
३३२	असञ्जातवाताभिघातेहि	२२६	१४
३३३	अभिसङ्खरणाभावतो सयनस्स	२२७	८
३३४	वनपत्थन्ति	२२७	२१
३३५	समानत्थो ति	२२८	११
३३६	या तस्मिं समये चित्तस्स	२२८	२७
३३७	छिन्दन्तो ति	२२९	१२
३३८	उपमोपमेयसम्बन्धो	२३०	२
३३९	नयो व्यापादादिप्पहानकथाय	२३०	२२
३४०	सप्पायकथा ति	२३१	१६
३४१	चित्तं समाधियतीति	२३२	८
३४२	अप्फुटं नाम	२३२	२५
३४३	धारानिपातबुब्बुलकेहीति	२३३	१४
३४४	पनेत्थ उपेक्खा	२३४	११
३४५	अभिनीहरतीति	२३५	७
३४६	तेनाह विप्पसन्नो ति	२३५	२५
३४७	यतो यतो	२३६	१९
३४८	पुब्बेनिवासञाणउपमायन्ति	२३७	१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४९	द्वीसु भवेसूति	२३८	३
३५०	खयगहणेन	२३८	२३
३५१	विमुच्चतीति	२३९	१७
३५२	च नेसं	२४०	९
३५३	पब्बतसङ्खेपो	२४०	२४
३५४	कूटं विय	२४१	१२
३५५	अच्छरे	२४२	७
३५६	रागपरिळाहादिवूपसमनेन	२४२	२४
३५७	मिच्छादिट्ठि परमाहं	२४३	११
३५८	गच्छामीति पदस्स	२४४	१
३५९	एजासङ्खाताय तण्हाय	२४४	१८
३६०	विसयपभेदफलसङ्किलेसभेदानं	२४५	८
३६१	सत्तानं भयं	२४५	२३
३६२	अविसेसेन वा	२४६	१२
३६३	उप्पादस्स	२४७	२
३६४	च तेहि तप्परायनाकारस्स	२४७	१९
३६५	वुत्तं। दिट्ठिविप्पयुत्तचित्तेन	२४८	१०
३६६	चतुरासीतिया	२४९	३
३६७	न होती ति	२४९	२०
३६८	कत्वा वा	२५०	१३
३६९	गुणसोभाकित्तिसद्दसुगन्धताय	२५१	६
३७०	देसनं पन	२५२	१
३७१	अथ पच्चेकबुद्धो	२५२	१५
३७२	अपुब्बपदवण्णना ति	२५३	१
३७३	गमनन्ति	२५३	१५
३७४	लोकधातुया ति	२५४	१६
३७५	ति आदि वुत्तं	२५५	५
३७६	लभीति	२५५	२२
३७७	दायकराजा	२५६	११
३७८	आरम्मणभूतेन	२५६	२६
३७९	...पे०...अरहतन्ति	२५७	१७
३८०	ठानकरणादिविभागतो	२५८	७
३८१	पणिधि...पे०... महतो	२५८	२२
३८२	कोधादीति	२५९	१३
३८३	पभावसम्पत्तिसिद्धितो	२६०	२
३८४	तेन हि	२६०	१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८५	सम्मासम्बुद्धस्स	२६१	४
३८६	अयानभूमिन्ति	२६१	१९
३८७	सभावनिरुत्तिभावेन	२६२	११
३८८	कथापलासन्ति	२६२	२५
३८९	पमाणं यथावतो	२६३	१७
३९०	घट्टेन्तो	२६४	५
३९१	बन्धितुन्ति	२६५	२१
३९२	पसीदिस्सति । न दासी	२६५	१४
३९३	तस्सासि	२६६	१२
३९४	नप्पहेय्याति	२६७	१३
३९५	सहधम्मो	२६८	९
३९६	एवं लद्धनामं	२६९	४
३९७	केवलं सद्धाय	२६९	१७
३९८	अज्झेनज्झापनयजनयाजनादयो	२७०	७
३९९	तिदण्डतिघटिकादिं	२७१	४
४००	खलादिसु	२७१	२१
४०१	अपरिपूरमानो	२७२	१२
४०२	आदिवसेन	२७३	७
४०३	मनुस्सूपचारं	२७३	२३
४०४	सण्ठानसन्निवेससुन्दरताय	२७४	११
४०५	उपनेत्व उपनेत्वा	२७५	२
४०६	पणीतपणीततरादिभेदभिन्ना	२७५	१८
४०७	परियोगाळ्हधम्मो ति	२७६	८
४०८	सुन्दरभावेन	२७७	१
४०९	तेसं तायनतो	२७७	१३
४१०	यथाभूतस्स	२७८	९
४११	तस्स । वदन्ति	२७८	२५
४१२	अत्थो एतेनाति	२७९	१४
४१३	जातिमहल्लकताय	२७९	२७
४१४	कत्थचिकत्थचि	२८०	१६
४१५	एहि सागतवादीति	२८१	९
४१६	अलंसद्दो	२८१	२४
४१७	अथापि सिया ति	२८२	१५
४१८	विपस्सन्तेन	२८३	११
४१९	कोहञ्ञेन परे	२८४	२
४२०	इतो परन्ति... पुरिमसुत्तद्वये ति	२८५	१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४२१	निवारणतो	२८५	१२
४२२	एवं सारगब्भं	२८६	१३
४२३	जनपदानं	२८७	२
४२४	सकम्मपसुता	२८७	१५
४२५	बुद्धकाले	२८८	३
४२६	समितपापा	२८८	१७
४२७	दळिद्दो अप्पेसक्खो	२८९	८
४२८	उळारेसु भोगेसु	२८९	२४
४२९	एकपुत्तकं	२९०	१५
४३०	आदियति, चित्ते	२९१	१
४३१	तज्जिता ति	२९१	१६
४३२	एतस्साति	२९२	५
४३३	किञ्चि अलद्धा	२९२	२२
४३४	सीतुण्हअब्भाहते	२९३	१६
४३५	दस्सेतुं ते	२९४	६
४३६	वक्खमाननयेन च	२९४	२४
४३७	दिट्ठिउजुकरणं	२९५	१५
४३८	पतिट्ठायाति	२९६	३
४३९	निब्बत्तेन्तस्स	२९६	१९
४४०	पुनप्पुन	२९८	१
४४१	तासं वसेन	२९८	१२
४४२	यं यं ओरं	३९८	१५
४४३	आगतनयेन	३००	५
४४४	बहिरा एता	३००	२०
४४५	चित्तं पञ्चञ्च	३०१	९
४४६	मिच्छाकम्मन्तप्पहानेन	३०१	२३
४४७	विरतियोपि	३०२	१५
४४८	अरियमग्गो	३०३	३
४४९	अपकारधम्मा	३०३	१८
४५०	घोसितसेट्ठिना	३०५	१
४५१	उपोसथिकत्ता कम्मं	३०५	१३
४५२	आदिनयप्पवत्तं	३०६	८
४५३	खो ति आदि	३०६	२४
४५४	यस्मिं रट्ठे	३०८	१
४५५	परेहीति ये ते ति	३०८	१३
४५६	इमे द्वे सन्धायाति	३०९	११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५७	तादिसो वाति	३०९	२६
४५८	साधु, तदग्गेन	३१०	१४
४५९	साधिते तं सम्मदेव	३११	७
४६०	रूपप्पमाणा	३११	२४
४६१	अवट्ठानदस्सनत्थं	३१२	१४
४६२	सब्बेसु च	३१३	९
४६३	एकागारं एव	३१४	२
४६४	न थुसोदकं	३१४	२०
४६५	आदिसु विय अप्पत्तं	३१५	१०
४६६	अनञ्ञसाधारणताय	३१६	७
४६७	ति इमासु अट्ठसु	३१६	२५
४६८	पुच्छितक्खणे येव	३१७	१७
४६९	सम्भवतो ।तथा	३१८	८
४७०	दिरत्ततिरत्तं सहसेय्यन्ति	३१९	१
४७१	निट्ठापेतुन्ति	३१९	१६
४७२	सावत्थियन्ति	३२०	१
४७३	उपपरिक्खन्तो ति	३२०	१४
४७४	उपसङ्कमेय्यन्ति	३२१	११
४७५	एतस्मिं अन्तरे का	३२२	५
४७६	भवितब्बं, एत्तकं	३२२	२२
४७७	पयोजेत्वा ति	३२३	११
४७८	घरमज्झे येव	३२४	३
४७९	सम्मादिट्ठिसम्मासङ्कप्पवसेन	३२४	२२
४८०	असमुप्पन्नकामचारो पन	३२५	१४
४८१	तंतंसञ्ञानं	३२६	८
४८२	वुत्तनयेन वेदितब्बो	३२७	१
४८३	सालयस्सेव होति	३२७	१८
४८४	भिक्खु द्वीहि	३२८	८
४८५	सञ्ञा अग्गा	३२९	१
४८६	पठमनये । दुतियनये	३२९	१९
४८७	सारम्भकक्कसादिमलविसोधनतो	३३०	१०
४८८	पच्चागच्छन्तस्स, जानतो	३३१	३
४८९	दुन्निवारो, तथेव	३३१	२२
४९०	परमत्थचिन्तनादि	३३२	१२
४९१	पच्चक्खकरणं एव	३३३	१
४९२	सुखुमञाणगोचरेसु	३३३	१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९३	लोकथूपिकादिवसेनाति एत्थ	३३४	१३
४९४	अप्पाटिहीरकतन्ति	३३५	६
४९५	लद्धासेवना उपरि	३३५	२३
४९६	फलसमापत्ति कथिता	३३६	१७
४९७	तेनाकारेन	३३७	३
४९८	भूतुपादायसञ्ञितं	३३७	२१
४९९	वुच्चति, न	३३८	१३
५००	सम्मुति पि सच्चसभावा	३३९	४
५०१	अचिरपरिनिब्बुते	३४०	१
५०२	तथेव वत्वा ति	३४०	१६
५०३	किच्छसिद्धिकं।	३४१	१५
५०४	तिण्णन्ति अयं	३४२	७
५०५	अभिञ्ञा पन	३४३	४
५०६	पावारिकम्बवने	३४४	१
५०७	उत्तरिमनुस्सानं	३४४	१४
५०८	अत्थो। केन	३४५	१३
५०९	दुट्ठलोहितविमोचनस्स	३४६	७
५१०	अनिय्यानिकभावदस्सनत्थन्ति	३४६	२५
५११	ति एत्थ वसवत्तनं	३४७	१९
५१२	रूपगहणमुखेन	३४८	१४
५१३	निदस्सनं वा	३४९	५
५१४	सालवतिका ति	३५०	१
५१५	हि ईदिसेसु ठानेसु	३५१	१
५१६	अनुद्देसिकेनेव	३५१	१९
५१७	ओसक्कनादिमुखेन	३५२	१२
५१८	उत्तरेनाति एत्थ	३५४	१
५१९	निय्यानभावो,	३५४	१५
५२०	एस किराति आदि	३५५	१६
५२१	नामकं येवाति	३५६	७
५२२	एसेव नयो, तत्थापि	३५७	५
५२३	आवरन्तीति	३५८	१
५२४	महापङ्कं ओतिण्णा	३५८	१९
५२५	नाम होतीति	३५९	६
५२६	फरणप्पमाणवसेन	३६०	१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

May the merits and virtues
earned by the donors and selfless workers of
Vipassana Research Institute, Igatpuri
be shared by all beings.

May all those
who come in contact with
the Buddha Dhamma through
this meritorious deed put the Dhamma
into practice and attain the best
fruits of the Dhamma.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

DEDICATION OF MERIT

May the merit and virtue
accrued from this work
adorn the Buddha's Pure Land,
repay the four great kindnesses above,
and relieve the suffering of
those on the three paths below.

May those who see or hear of these efforts
generate Bodhi-mind,
spend their lives devoted to the Buddha Dharma,
and finally be reborn together in
the Land of Ultimate Bliss.
Homage to Amita Buddha!

NAMO AMITABHA

Printed and Donated for free distribution by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan R.O.C.
Tel: 886-2-23951198 , Fax: 886-2-23913415
Email: overseas@budaedu.org.tw
Printed in Taiwan
1998 , 1200 copies
IN046-2007

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Printed by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11th Floor, 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei, Taiwan, R.O.C.
This book is for free distribution, it is not to be sold.
1998, 1200 copies
IN046-2007

ISBN 81-7414-056-5

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org